निर्मल सुरभि

निर्मल सुरभि

"जिस प्रकार कमल के खिलने पर सारा कीचड़ पूरी तरह से गिर जाता है इसी प्रकार से मेरे बच्चे भी श्री सदाशिव के सुरभित एवं सुन्दर समर्पण बनें।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, हैम्पस्टैड, लन्दन 17.10.1982)

प्राक्कथन

प्रिय सहजी भाइयो एवं बहनों,

परम पूज्य श्रीमाताजी की कृपा एवं आशीर्वाद से, अन्तत:, 'निर्मल सुरभि' का प्रथम संस्करण सर्व-सुरभि की स्रोत हमारी परमेश्वरी माँ के चरण-कमलों में समर्पित है।

परम पावनी श्रीमाताजी के प्रेम सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने की 'सहजयोग विश्व परिषद' की जिम्मेदारी को पूरा करने की दिशा में 'निर्मल सुरभि' पहला कदम है। इस सारगर्भित संकलन की हर पंक्ति और हर पृष्ठ से श्रीमाताजी का प्रेमसौरभ प्रवाहित होता है जो साधक का पथ प्रदर्शन करके उसे तुर्या और अन्तत: तादात्म्य (Integration) *की अवस्था तक पहुँचाने में सहायक है। हर साधक को अपने सभी प्रश्नों तथा समस्याओं का समाधान परम पूज्य श्रीमाताजी की इन सुरभित पंक्तियों से प्राप्त हो सकता है। आशा है आप इससे लाभान्वित होंगे।*

परम पूज्य श्रीमाताजी की निर्मल वाणी से ये कलियाँ चुन कर हम सबके लाभार्थ संकलित करने में कई वर्षों तक निरन्तर प्रयासरत रहे अपने भाई श्री रबिघोष को पूर्ण सहजपरिवार की ओर से बधाई देता हूँ और हृदय से प्रार्थना करता हूँ कि श्री आदिशक्ति उन्हें अपने चरणकमलों में स्थापित करें।

रूपान्तरकार

अनुक्रमणिका

★	श्री चरणों में विनम्र प्रार्थना	8
★	ओ मेरे पुष्प सम बच्चो	11
★	पर्वत	13
★	धूलकण	15
★	श्री यन्त्रम् की व्याख्या	17
★	सूक्ष्म तन्त्र और उसमें चक्रों कि स्थिति	22
★	विराट का भूगोल	32
★	रहस्यमय त्रिकोणाकार अस्थि (कुण्डलिनी)	33
★	दिव्य विज्ञान	35
★	पृथ्वी पर प्रकट हुए कुछ स्वयंभुओं का भूगोल	53
★	हिमालय का आध्यात्मिक महत्व	62
★	शरीर में चक्रों और ग्रन्थियों की स्थिति	71
★	हाथों और पैरों में चक्रों की स्थिति	72
★	स्वयं श्रीमाताजी द्वारा खींचा गया सिर और हाथों पर चक्रों की स्थिति का रेखाचित्र	73
★	चक्रों के सूफी एवं इस्लामिक नाम तथा चक्रों से सम्बन्धित राग	74
★	सहजयोग की अद्वितीय विशेषताएं	75
★	रहस्योद्घाटन	80
★	ज़िगर ठीक रखने के लिए खान-पान	97
★	क्या हम जानते हैं?	102
★	श्रीमाताजी कौन हैं?	141
★	यह स्थान अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग संगोष्ठियों के लिए उपयोग किया जाएगा (गणपतिपुले)	153
★	श्रीमाताजी को मिले अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार एवं मान्यताएं	158
★	परमेश्वरी दिव्य भविष्यवाणियाँ	162
★	नाड़ी ग्रन्थ में की गई भविष्यवाणियाँ	163
★	सत्य का आधार, धर्मग्रन्थों के कथन (सत्य-सिद्ध भविष्यवाणियाँ)	166
★	दिव्य ज्ञान की खोज	193
★	आत्मा और जीवात्मा वोलटेरा, 25.7.86	194
★	भारतीय विद्या भवन, मुम्बई भारत - 22.3.1977	200
★	परम पूज्य श्रीमाताजी से साक्षात्कार, विएना, 5.9.1984	207
★	परम पूज्य श्रीमाताजी से साक्षात्कार, विएना, 6.9.1984	214
★	परम पूज्य श्रीमाताजी से साक्षात्कार, विएना, 9.7.1985	227
★	परम पूज्य श्रीमाताजी से साक्षात्कार, हाँग-काँग - 1992	242
★	परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी से प्राय: पूछे गए प्रश्न एवं उनके उत्तर	259
★	सहजयोग आचारसंहिता पर कुछ कथन तथा परमेश्वरी माँ की कुछ अन्य मधुर कहानियाँ	274

★ सूक्ष्मतन्त्र का शुद्धिकरण, ज्ञानोदय और उत्क्रान्ति की तकनीक 318
★ सहज परियोजनाएं, गतिविधियाँ और समाचार
1. निर्मल ट्रान्सफोरमेशन प्रा.लि. 378
2. छिन्दवाड़ा, श्रीमाताजी के जन्मस्थल (घर) का अभिग्रहण 379
3. विश्व निर्मल प्रेम आश्रम 381
4. अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल, तालनू, धर्मशाला 388
5. अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र, सीबीडी बेलापुर 395
6. श्री पी.के. साल्वे कला प्रतिष्ठान, वैतरणा, महाराष्ट्र 403
7. नारगोल परियोजना–गुजरात (भारत) 409
★ कुछ महत्वपूर्ण संस्थानों तथा परियोजनाओं की उनके सम्पर्क पतों/कम्प्यूटर सूचना/ समाचार पत्रिकाओं/समाचार पत्रों और विश्व भर में नियमित रूप से छपने वाली सहज पत्रिकाओं के सदस्यता शुल्क की सूची 414
★ ऑन–लाइन सहजयोग सम्पर्क पते 416
★ सहजयोग परियोजनाएं एवं प्रकाशित पुस्तकें 417
★ विश्व निर्मल धर्म 426
★ सम्पूर्ण विश्व में सहजयोग 427
★ श्रीमाताजी का विश्व को संदेश 429
★ गुरू पूजा के बाद डब्ल्यू.सी ब्रदर्स के साथ की गयी बातचीत का सारांश 436
★ सहस्रार मंत्र 439
★ आभाराभिव्यक्ति 440

"Sitting in the heart of the Universe,
We know Your love is flowing through us;
Shri Mataji we love You....
Shri Mataji we love You."

श्री चरणों में विनम्र समर्पण

श्री चरणों में विनम्र प्रार्थना

श्रीमाताजी, कोटि कोटि धन्यवाद कि आज
सहज मंच प्रदान किया है आपने
हमें कार्य करने के लिए
अपने आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से
ताकि हम ले सकें आनन्द दिव्याशीष का
प्रणाम करते हैं हम आपको और नतमस्तक हैं श्रद्धापूर्वक
कि इतनी उदार, करुणामय एवं मधुर
हैं आप हमारे प्रति
पृथ्वी पर आप अवतरित हुईं
पापों से हमें उबारने के लिए
भौतिक विश्व के भंवर से
हमें निकालने के लिए
माँ इतनी प्रेम एवं करुणामयी हैं आप
निरानन्द की अभिव्यक्ति कैसे करें
हम नहीं जानते
सहस्र दल कमल खुलने पर
आपके विशाल अंतरिक्ष से
आशीष वर्षा होती है जब
प्रेम एवं शांति के दिव्य अमृत की
ओ माँ
तड़पता है हमारा सामूहिक हृदय
आपके चरण कमलों को
सार्वभौमिक प्रेम एवं खुशी के सागर में बसाने के लिए
इस आशा में कि आपके साम्राज्य का विस्तार हो
विनती एकमात्र करते हैं आपसे
सबको दुआ देना
श्रीमाताजी,
विश्व भर के हम सभी सहजयोगी
आपके चरण कमलों में करते हैं ये प्रार्थना
कि मशाल सहजयोग की
ज्योतित करे विश्व के कोने-कोने को
देख सके ताकि विश्व सारा
सतयुग को आते हुए आपके आशीष की छत्रछाया के जरिए
आमीन!

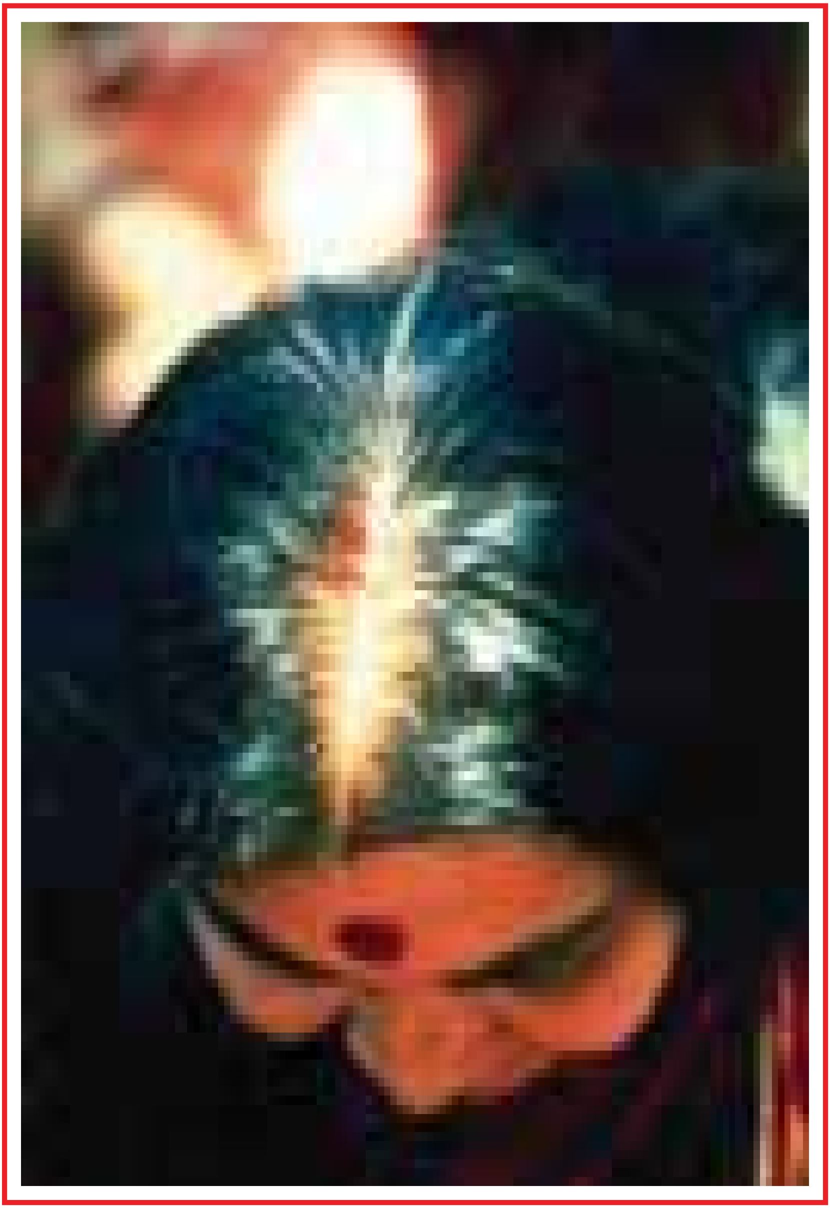

"आप क्या दे सकते हैं? ये बात व्यक्ति को समझनी चाहिए..... आप यदि विनम्र हो जाएं तो यह आपकी है, ये विद्यमान है, ये आपके हृदय में है। एक कहावत है कि जब भी मैं परमात्मा को देखना चाहता हूँ तो सिर झुकाकर अपने हृदय में देख सकता हूँ, मात्र इतना ही।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, सी.जी. युंग सोसायटी हॉल, अमरीका यात्रा 16.9.1983)

मेरे पुष्प सम बच्चो

ओ मेरे पुष्प सम बच्चो,
आप जीवन से नाराज़ हैं,
नन्हें शिशुओं की तरह,
माँ जिनकी अंधेरे में खो गई।

यात्रा के निष्फल अन्त की निराशाभिव्यक्ति के कारण
रुष्ट हो तुम,
सौन्दर्य की खोज में,
असौन्दर्य ओढ़े हो तुम।
सत्य के नाम पर
असत्य का नाम लेते हो तुम।
प्रेम प्याला भरने की खातिर
भावनाएं बहाते हो तुम।

मेरे मधुर-मधुर बच्चो,
स्वयं से, अपने अस्तित्व से,
और साक्षात आनन्द से युद्ध-रत हो,
किस प्रकार शान्ति प्राप्त कर सकते हो तुम?

शान्ति की बनावटी नकाब और
त्याग के प्रयत्न काफी हुए,
अपनी गरिमामय माँ की गोद में,
कमल की पंखुड़ियों पर अब करो विश्राम।

सुन्दर पुष्पों से सजाऊँगी जीवन तुम्हारा,
आनन्द सुगन्ध से भर दूँगी हर पल तुम्हारा।
दिव्य प्रेम से तुम्हारे मस्तक का करूंगी अभिषेक।

कष्ट तुम्हारे अब मुझसे सहन होते नहीं,
आओ डुबो दूं तुम्हें आनन्द सागर में
डुबो दो अपने अस्तित्व को
एक महान अस्तित्व में,

जो आत्मा के बाह्यदल पुंज में मुस्करा रहा,
सदा तुम्हें छेड़ने के लिए,
रहस्यमय ढंग से छुपा हुआ।

चेतन होकर देखो उसे
दिव्य आनन्द से तुम्हारे रोम-रोम को
चैतन्यित करता हुआ,
पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाश से भरता हुआ।

(आपकी माँ निर्मला)

पर्वत

अपनी खिड़की से
एक पर्वत देखती हूँ मैं,
किसी प्राचीन विवेकशील व्यक्ति की तरह खड़ा हुआ,
निरीच्छ, प्रेम से परिपूर्ण
असंख्य पेड़ एवं पुष्प
पर्वत को लूटते हैं निरन्तर
मगर चित्त उसका डोलता नहीं है।

मेघ कुम्भ जब
उड़ेलते हैं उस पर
असीम वर्षा जल
तो हरियाली की चादर ओढ़ लेता है पर्वत
तूफान आएं चाहे उमड़ते हुए
भरता है झील को अपने करुणा जल से
लहराते समुद्र की ओर
कल-कल करती नदियाँ दौड़ती हैं उससे
सूर्य करता है सृष्टि बादलों की,
बिठा कर उन्हें अपने पंखों पर
वायु लाती है वर्षा पर्वत की ओर
शाश्वत लीला है ये,
पर्वत देखता है जिसे,
निरीच्छ साक्षी भाव से

(यह कविता श्रीमाताजी ने कबैला, इटली में अपने कमरे से एक पर्वत को देखते हुए लिखी थी)

धूल-कण

बनना चाहती हूँ
सूक्ष्म धूल-कण की तरह
वायु के साथ चलता है जो
जाता है सर्वत्र और
बैठ सकता है सिर पर सम्राट के
गिर सकता है या
किसी के चरणों पर
कहीं भी जाकर
बैठ सकता है ये
धूल का ऐसा कतरा बनना चाहती हूँ मैं
सुवासित हो जो
पोषक हो जो
प्रबुद्धता दायक भी तथा।

(श्री माताजी के शैशव काल की कविता)

"...जैसे धुलिया का अर्थ है धूल। धूल कण। बचपन में एक दिन मैंने एक कविता लिखी थी। मुझे याद है। यह अत्यन्त दिलचस्प कविता थी—मैं नहीं जानती कि अब यह कहाँ है—परन्तु इसमें कहा था कि मैं उस धूल कण की तरह से छोटी बनना चाहती हूँ जो हवा के साथ उड़ना चाहता है। यह सर्वत्र जाता है, जाकर किसी सम्राट के सिर पर बैठ सकता है, या किसी के चरणों में गिर सकता है। यह नन्हें पुष्प पर भी बैठ सकता है, कहीं भी जाकर बैठ सकता है। मैं धूल का ऐसा कण बनना चाहती हूँ। जो सुरभित हो, पोषक हो तथा ज्ञान प्रदान कर सके। मुझे याद है कि जब मैं लगभग सात साल की थी तब मैंने ये अत्यन्त सुन्दर कविता लिखी थी—"धूल कण बनना।" मुझे स्पष्ट याद है कि "बहुत समय पूर्व मैंने लिखा था, कि मुझे धूल कण होना चाहिए ताकि मैं लोगों के अन्दर प्रवेश कर सकूं, जो बहुत बड़ी बात है—इस प्रकार का धूल कण बनना। जिस भी चीज को आप छुएं वह जीवन्त हो उठे, जिस भी चीज को आप महसूस करें वह सुगन्धित हो जाए। ऐसा बनना महान कार्य है और यही मेरी इच्छा थी और इसे पूर्ण किया जाएगा। उस छोटी आयु में भी मुझे धूल कण बनने का विचार था और आज आपसे बात करते हुए मुझे याद आया है कि मैं वही (धूल कण) बनना चाहती थी और यह स्थान भी वही है।"

परम पूज्य श्रीमाताजी, धुलिया, भारत 14.01.1983

श्री यन्त्रम्

श्री यन्त्रम् की व्याख्या

आदिशक्ति, तीन शक्तियों - महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी की समन्वित (Integrated) शक्ति है जो पूरे ब्रह्माण्ड में सर्वोच्च है। श्री शक्ति यन्त्र में शक्ति-पक्ष को पाँच त्रिभुजों के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है और सीधी अवस्था में दर्शाए गए त्रिभुजों के प्रतीक के रूप में शिवतत्व इन्हें संतुलित करता है। यन्त्रम् के अन्दर बने वृत्त सर्वोच्च शक्ति के प्रतीक हैं, उस शक्ति के जिसका न कोई आदि है न अंत । पंखुड़ियाँ विकास की प्रतीक हैं और पंखुड़ियों के छोर, शक्ति के साम्राज्य में शरण-स्थली की ओर इशारा करते हैं। मध्य बिन्दु, शक्तिपद या आदि शक्ति के चरण कमलों का प्रतीक है जिसे प्राप्त करना साधक का अन्तिम लक्ष्य है। श्री शक्ति यन्त्र की महिमा का प्रासंगिक वर्णन ग्रन्थों में किया गया है जहाँ इनके सभी अवयवों का अपना ही अर्थ है। 43 त्रिभुजों में से 9 त्रिभुज शक्ति के प्रतीक हैं, 10 इन्द्रियों (Senses) के, 5 प्राण वायु (Vital breath) के, 5 प्राकृतिक तत्वों (Natural elements) के, 10 भौतिक पदार्थों (Matter) के एवं 4 कारणात्मकता (Causal) के प्रतीक हैं। चतुष्कोणीय आकार (Quadrilateral) ब्रह्माजी की विशिष्टता (त्रैलोक्यमोहनम्) के प्रतीक हैं। देवी के आशीर्वाद से सभी कामनाओं की पूर्ति (सर्वपरिपूर्कम्) यन्त्र की सोलह पंखुड़ियों के माध्यम से दर्शाई गई हैं और आठ पंखुड़ियों के माध्यम से कठिनाइयों और समस्याओं से मुक्ति-प्राप्ति (सर्वसंशोधनं) को दर्शाया गया है। चौदह त्रिभुज सन्तोष (सर्वसौभाग्यदायकम्) से सम्बन्धित हैं और दस त्रिभुजों द्वारा विरक्ति एवं श्रद्धा (सर्वार्थसाधकम्) को दर्शाया गया है। अन्दर के दस त्रिभुज सभी अनिष्टों से सुरक्षा (सर्वरक्षाकरं) के दाता हैं और आठ त्रिभुज सुन्दर स्वास्थ्य (सर्वरोगहरं) के पूर्ण ज्ञान एवं उपलब्धियाँ (सर्वसिद्धिप्रदां) तथा अखण्ड आशीष (सर्वानन्दमयं) मध्य बिन्दु से जुड़ा हुआ है। शक्ति यन्त्रम् ब्रह्माण्ड की समष्टि का प्रतीक है तथा आदि शक्ति माताजी श्री निर्मला देवी की उपस्थिति में अत्यन्त मंगलमय एवं शक्तिशाली है क्योंकि अपने भक्तों का उद्धार करने के लिए श्रीमाताजी महावतार के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं।

रुचिकर बात ये है कि शक्ति यन्त्रम् में ज्योमिति समरूपता (Geometric configuration) का चित्रण नौ मुख्य आवरकों/आवरणों द्वारा किया गया है। इन आवरणों का चित्रण इस प्रकार है:–

पहले आवरण का वर्णन छः आहातों या छः आवरणों के संघटित समूह के रूप में किया गया है जो 43 आन्तरिक त्रिकोणों (जिनका वर्णन किया जा चुका है) के रूप में प्रकट होते हैं। सातवाँ आवरक अगला वृत्त है जो आठ पंखुड़ियों वाली आन्तरिक परिधि में दिखाई देता है तथा आठवाँ आवरक सोलह पंखुड़ियों वाली बाह्य परिधि पर दिखाई देता है और अन्त में नौवाँ आवरक श्री यन्त्रम् के अन्दर चतुर्भुज के रूप में नजर आता है।

"बीज मन्त्र की अपनी दिव्याभिव्यक्ति में श्रीमाताजी नौ आवरकों के चक्रों के अनुरूप भिन्न शासक देवी-देवताओं के नाम हमें बताती हैं। इन आवरकों को वे नौ 'शक्ति पीठ' या 'आवरक नाम चक्र' के नाम से पुकारती हैं। अपने दिव्य संदेश में उन्होंने सृजन चक्र में इन

आवरकों के निजी गुणों तथा सार का भी वर्णन किया है। भिन्न चक्रों और आवरकों से जुड़े नामों तथा शक्तियों का वर्णन श्रीमाताजी ने इस प्रकार किया है:—

"...इसके अतिरिक्त, पहलुओं पर श्री ललिता जैसे नौ चक्र हैं और उनकी भिन्न योगिनियाँ हैं। योगिनियाँ अर्थात् शक्तियाँ। इन नौ 'शक्ति पीठों' या आप कह सकते हैं 'आवरक नाम चक्रों' की पथ प्रदर्शक शक्तियाँ।

पहली श्री ललिता हैं। देवी श्री ललिता जो सौन्दर्य की देवी हैं।

वे आनन्दप्रदायिनी हैं—'सर्वानन्दमया'—हर चीज से वे आनन्द प्रदान करती हैं। हर सृजित संसार में, हर ज़र्रे में, हर रूप में कोई न कोई शक्ति है जो आनन्द प्रदान करती है। यह शक्ति श्री ललिता की शक्ति है। वे 'महा—त्रिपुरसुन्दरी' हैं।

'परा परा अतिरहस्ययोगिनी', अर्थात् जिसे रहस्यों का ज्ञान है। परा-परा अर्थात् 'सबसे परे'। उस क्षेत्र के रहस्य का ज्ञान श्री ललिता को है, जो कि योगिनी हैं। इस अवस्था में वे 'बिन्दु-सर्वानन्दमयी' हैं। वे बिन्दु हैं जो आनन्ददायी है।

दूसरी शक्ति या आवरण त्रिकोण जैसा है।

वे 'सर्वसिद्धिप्रदा' हैं। वही सभी सिद्धियों की दाता हैं। उनके तीन पक्ष हैं।

वे 'त्रिपुर-अम्बा' कहलाती हैं।

कामेश्वरी, बुद्धेश्वरी और भगमालिनी तीन योगिनियाँ हैं।

तीसरी का नाम 'अष्टार-सर्व-रोगहरा' है। ये एक अन्य आवरण है।

देवी का नाम 'त्रिपुरसिद्ध-अतिरहस्या' है अर्थात् ये देवियाँ सभी सिद्धियों के गहन रहस्यों को जानती हैं।

चक्र 'सर्वरोगहर' कहलाता है तथा आवरण का नाम 'अष्टार' है।

आठ शक्तियाँ वाग्देवता कहलाती हैं अर्थात् 'वाणी की शक्ति'। ये इस प्रकार हैं:—

1. वशिणी — आकर्षित करने वाली
2. कामेश्वरी — उत्तेजित करने वाली
3. मोदिनी — प्रसन्नता प्रदान करने वाली
4. विमला — स्वच्छ करने वाली
5. अरुणा — मुख को आभा प्रदान करने वाली
6. जयनी — विजयानुभव प्रदायिनी
7. सर्वेशी — सबसे सम्बन्ध जोड़ने वाली
8. कौलिनी — वरदा।

चौथा आवरण 'अन्तरदशीर' है। इस आवरक का चक्र 'सर्वरक्षाकर' कहलाता है—अर्थात् रक्षा करने वाला।

देवी का नाम 'त्रिपुरमालिनी' है।

शक्तियाँ निम्नलिखित हैं:—

1. सर्वज्ञा — सर्वज्ञान सम्पन्ना
2. सर्वशक्ति — सर्वशक्तिशालिनी

3. सर्वऐश्वर्यप्रदा — सर्ववैभवप्रदायिनी
4. सर्वज्ञानमयी — सर्वज्ञान की ज्ञाता
5. सर्वव्याधिविनाशिनी — सर्वरोगों को नष्ट करने वाली
6. सर्वाधारस्वरूपा — सभी के लिए आश्रय
7. सर्वपापहरा — सभी पापों का निवारण करने वाली
8. सर्वानन्दमयी — सभी को आनन्द प्रदान करने वाली
9. सर्वरक्षास्वरूपिणी — जो हम सबकी रक्षा करती हैं।
10. सर्वेच्छितफलप्रदा — सभी की कामना पूर्ण करने वाली।

पाँचवा आवरक 'बहिर्दर्शार सर्वार्थसाधक' है ।

बहिर्दर्शार आवरक का नाम है।

'सर्वार्थसाधक' चक्र का नाम है।

'त्रिपुरश्री' देवी का नाम है।

उनकी शक्तियाँ इस प्रकार हैं:—

1. सर्वसिद्धिप्रदा — सभी सिद्धियाँ प्रदान करने वाली
2. सर्वसम्पतप्रदा — सभी वैभव प्रदान करने वाली
3. सर्वप्रियंकरी — सभी की प्रिय
4. सर्वमंगलकारिणी — मंगलमयता प्रदान करने वाली
5. सर्वकामप्रदा — सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाली
6. सर्वदु:खविमोचिनी — सभी दु:खों को नष्ट करने वाली
7. सर्वमृत्युशमणी — मृत्यु को शान्त करने वाली
8. सर्वविघ्ननिवारिणी — सभी बाधाओं को दूर करने वाली
9. सर्वांगसुन्दरी — जीवन के सभी पक्षों को सुखी बनाने वाली
10. सर्वसौभाग्यदायिनी — सौभाग्य प्रदान करने वाली

छठा आवरक 'चतुर्दशारसर्वसौभाग्या' कहलाता है।

आवरक का नाम चतुर्दशार है।

चक्र का नाम सर्वसौभाग्यदायक: है।

देवी का नाम त्रिपुरवासिनी है।

शक्तियाँ निम्नलिखित हैं:—

1. सर्वसंक्षोभिणी — सभी कुछ जला डालने वाली
2. सर्वविद्राविणी — सभी कुछ विकृत करने वाली
3. सर्वआकर्षिणी — हर चीज को आकर्षित करने वाली
4. सर्वआह्लादिनी — सर्वानन्द प्रदायक
5. सर्वसम्मोहिनी — सबको सम्मोहित करने वाली
6. सर्वस्तम्भिनी — सबको चौकस करने वाली
7. सर्वजंभिणी — खंडन करने वाली
8. सर्ववशकरी — सभी को नियंत्रित करने वाली

9. सर्वरंजनी — सबको मनोरंजन प्रदान करने वाली
10. सर्वउन्मादिनी — सभी को विशेष आनन्द प्रदान करने वाली
11. सर्वार्थसाधिनी — हर चीज को अर्थ प्रदान करने वाली
12. सर्वसम्पत्तिपूर्णी — सभी सुखसमृद्धि प्रदान करने वाली
13. सर्वमन्त्रमयी — सभी मन्त्रों में निवास करने वाली
14. सर्वद्वंदक्षयंकरी — जीवन के सभी द्वन्द नष्ट करने वाली।

सातवाँ आवरक 'अष्टदल' कहलाता है।

इस आवरण के चक्र का नाम सर्वसंक्षोभनकारक है।

यहाँ वे 'त्रिपुरसुन्दरी' कहलाती हैं।

वे महिलाओं को आकर्षक पत्नियाँ बनने के लिए सौन्दर्य प्रदान करती हैं। इनकी शक्तियाँ निम्नलिखित हैं:—

1. अनंगकुसुमादेवी — भिन्न पुष्पों की सुगन्ध वाली
2. अनंगमैखलादेवी — जो परिवार में चट्टान की तरह से दृढ़ है।
3. अनंगमदनादेवी — जो आकर्षक हैं।
4. अनंगमदनातुरादेवी — जो पूर्ण होने के लिए इच्छाएं प्रदान करती हैं।
5. अनंगरेखा देवी — जो भिन्न सीमाएँ बनाती हैं।
6. अनंगवेगिनी देवी — जो वेग प्रदान करती हैं।
7. अनंगअंकुशादेवी — अंकुश की शक्ति प्रदान करने वाली अर्थात् मानव को नियन्त्रित करने की शक्ति
8. अनंगमालिनी देवी — जो अत्यन्त गरिमामय हैं।

आठवाँ आवरक 'षोडश दल' कहलाता है।

इसके चक्र का नाम 'सर्वशपरिपूरक' है।

देवी का नाम त्रिपुरेश्वरी है।

उनकी सोलह शक्तियाँ निम्नलिखित हैं:—

1. कामः — अर्थात् शरीराकर्षण
2. बुद्धयाः — बुद्धि से आकर्षित करने वाली
3. अहंकारः — अहं का आकर्षण
4. शब्दः — शब्दों का आकर्षण
5. स्पर्शः — स्पर्शाकर्षण
6. रूपः — सौन्दर्याकर्षण
7. रसः — रसाकर्षण
8. गन्धः — सुगन्धाकर्षण
9. चित्तः — चित्ताकर्षण
10. धैर्यः — धैर्याकर्षण
11. स्मृत्यः — स्मृतिआकर्षण

12. नाम: — नाम का आकर्षण
13. बीज: — बीज का आकर्षण
14. आत्मा: — आत्माकर्षण
15. अमृता: — शाश्वत आकर्षण
16. शरीरा: — शरीराकर्षण

देवी में ये सूक्ष्म आकर्षण हैं जो इस प्रकार प्रभावित करते हैं कि साधक उनकी ओर आकर्षित होता है।

नौवां आवरक 'भूपुर' है।

'त्रैलौक्यमोहन' इसके चक्र का नाम है।

देवी का नाम 'त्रिपुरा' है।

इस चक्र में दस शक्तियाँ हैं:—

1. सर्वसंक्षोभिणी — सभी कुछ राख कर देने वाली
2. सर्वविद्राविणी — सभी कुछ विकृत कर देने वाली
3. सर्वाकर्षिणी — सबको आकर्षित करने वाली
4. सर्ववशकरी — सभी कुछ नियंत्रित करने वाली
5. सर्वउन्मादिनी — उत्तेजित करने वाली
6. सर्वमहांकुशा — सभी कुछ नियंत्रित करने वाली; यहाँ पर अंकुश का अर्थ महावत द्वारा उपयोग किये जाने वाला अंकुश है। जिस प्रकार महावत गज को नियंत्रित करता है, वैसे ही देवी सभी को नियंत्रित करती है।
7. सर्वखेचरी — सभी को उत्क्रान्ति प्रदान करने वाली
8. सर्वबीज: — जो बीज रूप हैं।
9. सर्वयोनि: — सभी योनियों में विद्यमान
10. सर्वत्रिखण्ड: — जो तीनों आयामों में विद्यमान है। योनि अर्थात् दीर्घवृत्त—जो माँ की शक्ति है।

इनके अतिरिक्त और भी देवियाँ हैं जो 'मुक्तशक्त्या' नाम से प्रसिद्ध पीलीलाइन के रूप में विद्यमान हैं।

ये माँ रूप देवियाँ—महेन्द्री, चामुण्डा और महालक्ष्मी कहलाती हैं।

साधक जो सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं इनके नाम हैं:—अणिमा, लघिमा, महिमा, ईशत्व, वशीत्व, प्रक्रम्या, प्रकटन या आरम्भ, भुक्ति-आनन्द, इच्छा-इच्छापूर्ति, प्राप्ति-उपलब्धि, मुक्ति-मोक्ष।

'ये सभी सिद्धियाँ हैं जो सहजयोगी प्राप्त कर सकते हैं।'

परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 14.10.1978

सूक्ष्म तन्त्र

उत्क्रान्ति का मध्यमार्ग
सामूहिक चेतन

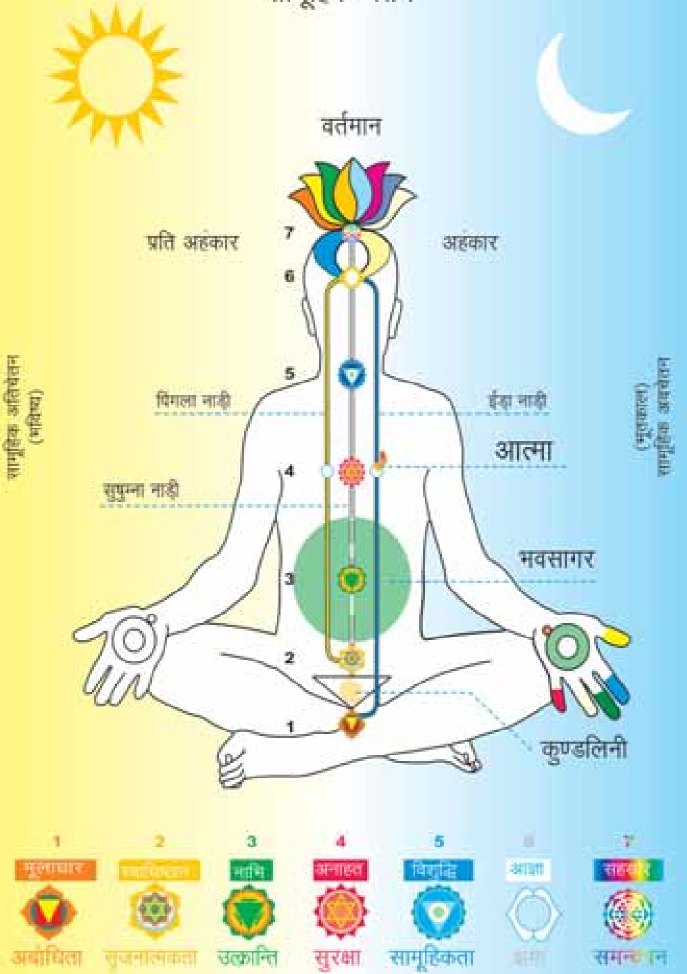

सिर पर स्थिति

हाथों में स्थिति

पैरों में स्थिति

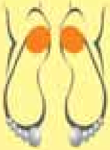

मेरुदण्ड में
स्थूल अभिव्यक्ति

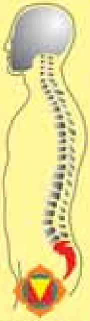

श्रोणीय चक्र

सूक्ष्म तंत्र में स्थिति

पहला चक्र

अबोधिता

मूलाधार चक्र

चार पंखुड़ियों वाला ये चक्र मूलाधार कहलाता है। यह रीढ़ के अन्त में स्थित त्रिकोणाकार पावन अस्थि के नीचे स्थित है। इस चक्र को रीढ़ की हड्डी के बाहर बनाया गया है और स्थूल रूप में यह श्रोणीय केन्द्र के अनुरूप है और हमारी मल विसर्जन की क्रियाओं, जिनमें यौन गतिविधियाँ भी सम्मिलित हैं, को चलाता है। यद्यपि कुण्डलिनी को छः केन्द्रों को ही पार करना होता है फिर भी मूलाधार चक्र कुण्डलिनी जागृति के समय उसकी पावनता एवं सतीत्व की रक्षा करता है।

मूलाधार हमारी अबोधिता के लिए है और हमें समझना चाहिए कि अबोधिता को नष्ट नहीं किया जा सकता। कामुक विचार इस चक्र को दुर्बल करते हैं। प्राकृतिक नियमों के निरंकुश त्याग के बावजूद भी मूलाधार की शक्ति सुप्त या सुप्त अवस्था में बनी रहती है और इसे कुण्डलिनी जागृति द्वारा रोग मुक्त करके इसकी वास्तविक अवस्था में लाया जा सकता है।

अनुरूपता	
रंग	मूंगा (लाल)
तत्व	पृथ्वी
ग्रह	मंगल
दिन	मंगलवार
रत्न	मूंगा
प्रतीक	स्वस्तिक
गुण	पावनता, विवेक, अबोधिता, मर्यादा
नियंत्रित अंग	मूत्रक ग्रंथि, गर्भ, यौन, मल विसर्जन, गर्भ-निरोध

सूक्ष्म तन्त्र में स्थिति

सिर में स्थिति

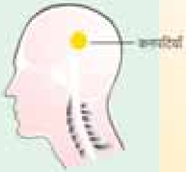

हाथों में स्थिति

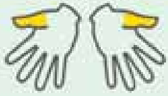

पैरों में स्थिति

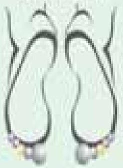

मेरुदण्ड में स्थूल अभिव्यक्ति

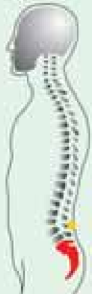

महाधमनी चक्र

दूसरा चक्र — सृजनात्मकता

स्वाधिष्ठान

छः पंखुड़ियों वाला ये केन्द्र स्वाधिष्ठान कहलाता है तथा ये पेट में स्थित है। ये चक्र महाधमनी चक्र (Aortic Plexus) के अनुरूप है जो हमें सृजनात्मकता तथा भावमय विचारों (Abstract thoughts) के लिए शक्ति प्रदान करता है। चर्बी के अणुओं को मस्तिष्क कोषाणुओं में परिवर्तित करके ये चक्र मस्तिष्क को ऊर्जा प्रदान करता है। बहुत अधिक सोच-विचार और भविष्य के लिए योजनाएं बनाना इस चक्र को दुर्बल करता है और व्यक्ति का चित्त बहुत दुर्बल हो जाता है। चित्त की पीत (जिगर) का यही चक्र संचालन करता है। अग्न्याशय, गर्भाशय तथा बड़ी आन्त्र (Intestine) के कुछ हिस्सों को भी यही चक्र नियंत्रित करता है।

कुण्डलिनी जागृत होकर जब व्यक्ति के इस चक्र को खोलती है तो व्यक्ति अपनी गतिविधियों में अत्यन्त सृजनात्मक, गतिशील एवं स्वाभाविक हो जाता है।

अनुरूपता	
रंग	[illegible]
तत्व	अग्नि
ग्रह	[illegible]
दिन	[illegible]
रत्न	[illegible]
प्रतीक	[illegible]
गुण	[illegible]
नियन्त्रित अंग	[illegible]

सिर में स्थिति

हाथों में स्थिति

पैरों में स्थिति

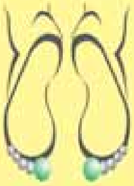

मेरुदण्ड में
स्थूल अभिव्यक्ति

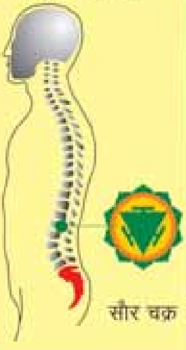

सूक्ष्म तन्त्र में स्थिति

नाभि

नाभि क्षेत्र के पीछे स्थित दस पंखुड़ियों वाला चक्र नाभि चक्र कहलाता है। यह केन्द्र सूर्य चक्र के अनुरूप है जो हमें अपने अन्दर चीज़ों को संभालने की शक्ति प्रदान करता है।

ये चक्र पचाने, स्वीकार करने और पेट, आन्त्र एवं जिगर के कुछ भागों की देखभाल करने के कार्य के लिए जिम्मेदार है। प्लीहा द्वारा नियमित की जाने वाली जैविक लय (Biological Rhythm) को भी नाभि चक्र नियंत्रित करता है।

ये चक्र मानव की सुख-समृद्धि एवं उत्क्रान्ति को भी देखता है। साधक की कुण्डलिनी जागृत होकर जब इस चक्र का भेदन करती है तो उसके अन्दर संतोष आ जाता है और वह अत्यन्त उदार हो जाता है।

अनुरूपता	
रंग	हरा
तत्व	जल
ग्रह	बृहस्पति
दिन	बृहस्पतिवार
रत्न	पन्ना
प्रतीक	चिन-चैंग (माया और नर)
गुण	उत्क्रान्ति, उदारता, धर्मपरायणता, भरण-पोषण
नियन्त्रित अंग	पेट, प्लीहा, आंत, जिगर (कुछ भाग) स्वाद

सूक्ष्म तन्त्र में स्थिति

सिर में स्थिति

हाथों में स्थिति

पैरों में स्थिति

आदिगुरु

राजा जनक	19,000-18,000 BC	भारत
अब्राहम	2000 BC	मैसोपोटामिया
मोज़िज़	1300 BC	मिस्र
ज़ोरास्ट्र	1000 BC	पर्शिया
लाओत्से	600 BC	चीन
कन्फ्यूशियस	551 BC	चीन
सुकरात	469 BC	ग्रीस (यूनान)
मुहम्मद साहब	570 AD	मक्का
गुरुनानक	1469 AD	भारत
शिरडी सांईनाथ	1838 AD	भारत

गुरु सिद्धान्त

भवसागर

नाभि चक्र के चहुँ ओर भवसागर है। जीवन के सभी पक्ष जैसे व्यक्तित्व, धर्म एवं गुरुत्वाकर्षण शक्ति का हमारी व्यवहार प्रणाली एवं शारीरिक भरण-पोषण पर प्रभाव आदि के लिए यह जिम्मेवार है। यह बाह्य प्रभावों का क्षेत्र है। जब हम अंधकारमय अवस्था में होते हैं (आत्मसाक्षात्कार से पूर्व) तब यह उस शून्यता का प्रतीक है जो हमारी चेतना के स्तर को सत्य से पृथक करती है। इस रिक्ति को जब कुण्डलिनी भर देती है तब हमारा चित्त भ्रम-सागर से निकलकर चेतना की वास्तविकता में प्रवेश करता है।

ये दस आदिगुरुओं का चक्र है जो मानवता को वास्तविकता एवं सत्य के साम्राज्य में ले जाने के लिए अवतरित हुए। कुण्डलिनी जब इस रिक्ति को भर देती है तो व्यक्ति स्वयं का गुरु बन जाता है और उसके अन्तर्गत प्राकृतिक मर्यादाएं जागृत हो जाती हैं। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त ईमानदार एवं योग्य अगुआ बन जाता है और उसकी सभी अभिव्यक्तियों में गम्भीरता होती है।

अनुरूपता	
रंग	हरा
तत्व	जल
ग्रह	बृहस्पति
दिन	बृहस्पतिवार
गुण	गाम्भीर्य धर्ममर्यादित संतोष
नियन्त्रित अंग	पेट आन्त्र पाचन जिगर (एक भाग)

सिर में स्थिति

हाथों में स्थिति

पैरों में स्थिति

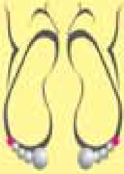

मेरुदण्ड में
स्थूल अभिव्यक्ति

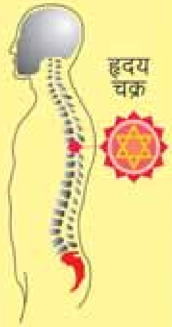

सूक्ष्म तन्त्र में स्थिति

अनाहत

बारह पंखुड़ियों वाला ये चक्र अनाहत कहलाता है और मेरुरज्जु में उरोस्थि (sternum bone) के पीछे इसका स्थान है। ये चक्र हृदय चक्र के अनुरूप है जो बारह वर्ष की आयु तक रोग प्रतिकारक (Antibodies) पैदा करता है। तत्पश्चात् ये रोग प्रतिकारक हमारे शरीर तन्त्र में फैल जाते हैं और शरीर या मस्तिष्क पर होने वाले किसी भी आक्रमण का मुकाबला करते हैं। व्यक्ति पर भावनात्मक या शारीरिक आक्रमण की स्थिति में उरोस्थि के माध्यम से रोग प्रतिकारकों को सूचना दी जाती है क्योंकि उरोस्थि ही सूचना प्रसारण का दूरस्थ नियंत्रण केन्द्र (Remote Control) है। हृदय तथा फेफड़ों की कार्य प्रणाली का नियमन करते हुए ये केन्द्र श्वास प्रक्रिया को नियंत्रित करता है।

कुण्डलिनी जब इस चक्र का भेदन करती है तो व्यक्ति अत्यन्त आत्म-विश्वस्त, सुरक्षित, चारित्रिक रूप से जिम्मेदार एवं भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्तित्व बन जाता है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त हितैषी एवं बिना किसी स्वार्थ के मानवता प्रेमी एवं सर्वप्रिय बन जाता है।

अनुरूपता	
रंग	माणिक लाल
तत्व	वायु
ग्रह	शुक्र
दिन	शुक्रवार
रत्न	माणिक
प्रतीक	अग्नि शिखा
गुण	प्रेम, सुरक्षा करुणा हितैषिता
नियंत्रित अंग	हृदय, फेफड़े रक्तप्रवाह स्पर्श

सिर में स्थिति

हाथों में स्थिति

पैरों में स्थिति

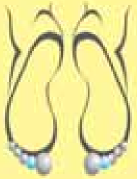

मेरुदण्ड में स्थूल अभिव्यक्ति

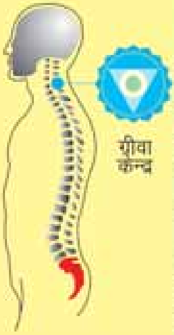

सूक्ष्म तंत्र में स्थिति

पाँचवा चक्र

विशुद्धि

सामूहिकता

मेरुरज्जु के ग्रीवा क्षेत्र (Neck region) में स्थापित सोलह पंखुड़ियों वाला ये चक्र विशुद्धि चक्र कहलाता है। यह ग्रीवा चक्र (Cervical Plexus) के अनुरूप है जो नाक, कान, गला, गर्दन, दाँत, जिह्वा, हाथ एवं भाव भंगिमाओं (Gestures) आदि के कार्यों को नियमित करता है। ये चक्र अन्य लोगों से सम्पर्क के लिए जिम्मेदार है क्योंकि इन्हीं अंगों के माध्यम से हम अन्य लोगों से सम्पर्क स्थापित करते है।

शारीरिक स्तर पर यह गल-ग्रन्थि (Thyroid) के कार्य को नियंत्रित करता है। कटुवाणी, धूम्रपान, बनावटी व्यवहार एवं अपराध-भाव इस केन्द्र को अवरोधित करते है।

कुण्डलिनी जब इस चक्र का भेदन करती है तो व्यक्ति अपने व्यवहार में अत्यन्त सारगर्भित, कुशल एवं मधुर हो जाता है और व्यर्थ के तर्क-वितर्क में नहीं फंसता। बिना अहं को बढ़ावा दिए परिस्थितियों पर नियंत्रण करने में वह अत्यंत युक्ति-कुशल हो जाता है।

अनुरूपता	
रंग	नीला
तत्व	आकाश
ग्रह	शनि
दिन	शनिवार
रत्न	नीलम
प्रतीक	कमल-चक्र
गुण	सम्पर्क कुशलता, सारगर्भित व्यवहार कुशलता, विनम्रता, कूटनीतिज्ञता
नियंत्रित अंग	मुँह, कान, नाक, दांत, जीह्वा, मुखाकृति, ग्रीवा तथा वाणी

सिर में स्थिति

हाथों में स्थिति

पैरों में स्थिति

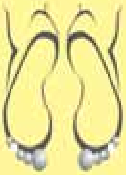

मेरुदण्ड में स्थूल अभिव्यक्ति

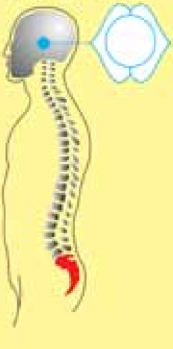

सूक्ष्म तंत्र में स्थिति

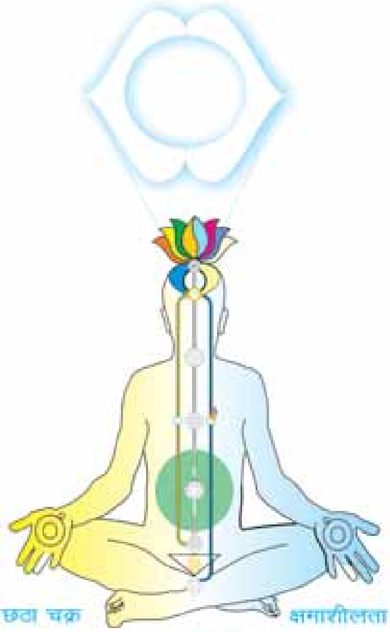

आज्ञा

दो पंखुड़ियों के इस चक्र का नाम आज्ञा चक्र है। मस्तिष्क में (Optic Nerves) जहाँ एक दूसरे को पार करती है वह आज्ञा चक्र का स्थान है। ये चक्र पीयूष तथा शंकुरूप (Pituitary and Pineal) ग्रन्थियों की देखभाल करता है। ये ग्रन्थियाँ शरीर तन्त्र में अहं तथा प्रतिअहं नाम की संस्थाओं की अभिव्यक्ति करती हैं।

क्योंकि ये चक्र आँखों की भी देखभाल करता है इसलिए सिनेमा, कम्प्यूटर, टेलिविज़न, पुस्तकों आदि पर हर समय दृष्टि गड़ाए रखना इस चक्र को दुर्बल करता है। बहुत अधिक मानसिक व्यायाम (Callisthenics) एवं बौद्धिक कलाबाजियाँ इस चक्र को अवरोधित करती है और व्यक्ति के अन्दर अहं–भाव विकसित हो जाता है।

कुण्डलिनी जब इस चक्र का भेदन करती है तो व्यक्ति एकदम से निर्विचार और क्षमाशील बन जाता है। निर्विचारिता एवं क्षमाशीलता इस चक्र का सार है, अर्थात ये चक्र हमें क्षमा की शक्ति प्रदान करता है।

अनुरूपता	
रंग	सफेद
तत्व	प्रकाश
ग्रह	सूर्य
दिन	रविवार
रत्न	हीरा
प्रतीक	फूल
गुण	क्षमाशीलता
नियंत्रित अंग	दृकअन्त पुर (Optic Thalamus) अल्पअन्त पुर (Hypo Thalamus) दृष्टि

सिर में स्थिति

हाथों में स्थिति

पैरों में स्थिति

मेरुदण्ड में स्थूल अभिव्यक्ति

सूक्ष्म तंत्र में स्थिति

सातवाँ चक्र — समन्वयन

सहस्रार

मस्तिष्क या तालू क्षेत्र स्थित हजार पंखुड़ियों वाला ये महत्वपूर्ण चक्र सहस्रार कहलाता है। वास्तव में इसमें एक हजार नाड़ियाँ हैं। अगर यदि मस्तिष्क को आड़ा काटें तो सुन्दर पंखुड़ियों की शक्ल में सजावट कमल बनाती हुई इन नाड़ियों को आप देख सकते हैं। आत्म-साक्षात्कार के पूर्व, बन्द-कमल की तरह से ये चक्र मस्तिष्क के तालू क्षेत्र को आच्छादित करता है।

जागृत होकर कुण्डलिनी जब इस चक्र का भेदन करती है तो सारी नाड़ियाँ भी जागृत हो जाती हैं और सभी नाड़ी केन्द्रों को ज्योतिर्मय करती हैं और तब कहते हैं कि व्यक्ति आत्म-साक्षात्कारी (ज्योतिर्मय) है। तालू क्षेत्र का अंतिम भेदन करके कुण्डलिनी ब्रह्मरन्ध्र में एक मार्ग खोलती है और इसे हम सिर पर शीतल चैतन्य-लहरियों के रूप में अनुभव करते हैं। यह योग का वास्तवीकरण है, परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति से एकाकारिता (आत्म-साक्षात्कार)।

अनुरूपता	
रंग	इन्द्रधनुषी
तत्त्व	पंचतत्त्व
ग्रह	चन्द्रमा
दिन	सोमवार
रत्न	मोती
प्रतीक	कमल
गुण	एकाकारिता आत्म-साक्षात्कार
नियंत्रित अंग	तालू-क्षेत्र

"...उनकी शीतल चैतन्य लहरियों को बहने दो
ताकि हमारा विश्व उन्नत हो सके..."

"श्रीमाताजी, पृथ्वी को वैकुण्ठ बनाने के लिए आपने वैकुण्ठ से पृथ्वी पर उतरने का निर्णय किया...ताकि हम मानव आपकी कृपा से देवदूत बन सकें।

...श्रीमाताजी, हम सहजयोगियों को आशीर्वाद दें ताकि हम आपके प्रभावशाली माध्यम बन सकें और आपके स्वप्न को साकार करना ही हमारे जीवन का एकमात्र उद्देश्य बन जाए और आपके प्रेम एवं करुणा से जब तक पृथ्वी का हर मनुष्य देवदूत न बन जाए तब तक हम इस कार्य में लगे रहें।"

—तथास्तु (Amen)

विराट का भूगोल

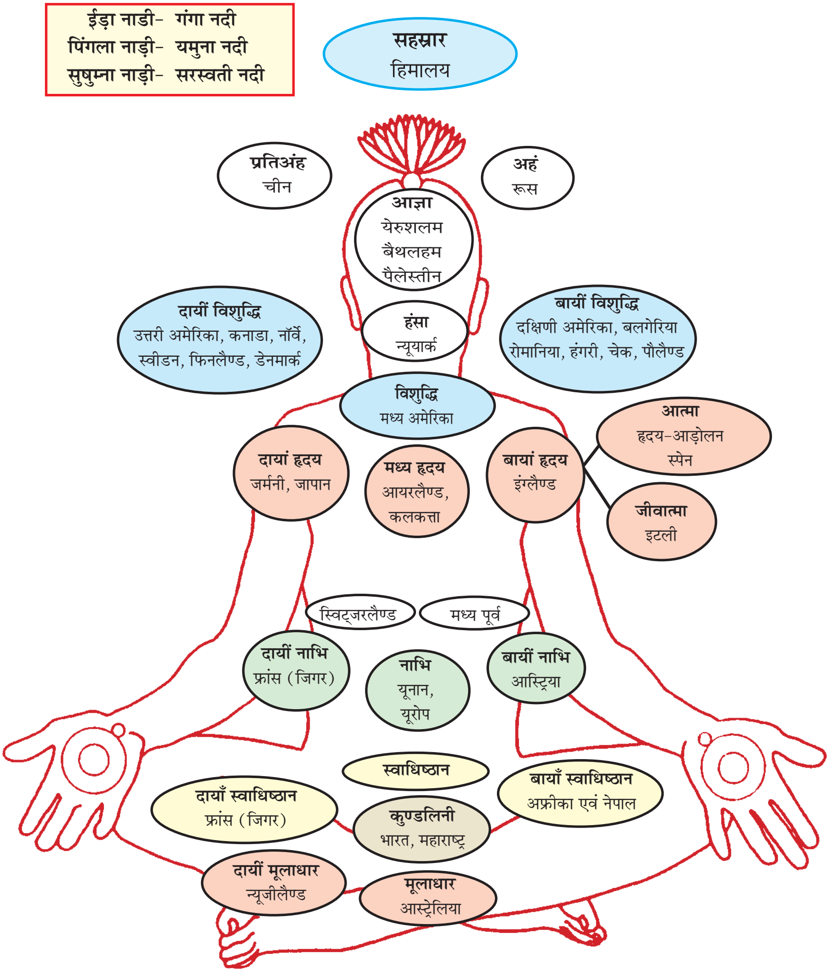

ईड़ा नाडी- गंगा नदी
पिंगला नाड़ी- यमुना नदी
सुषुम्ना नाड़ी- सरस्वती नदी
सहस्रार
हिमालय
प्रतिअंह
चीन
अहं
रूस
आज्ञा
येरुशलम
बैथलहम
पैलेस्तीन
दायीं विशुद्धि
उत्तरी अमेरिका, कनाडा, नॉर्वे,
स्वीडन, फिनलैण्ड, डेनमार्क
हंसा
न्यूयार्क
बायीं विशुद्धि
दक्षिणी अमेरिका, बलगेरिया
रोमानिया, हंगरी, चेक, पौलैण्ड
विशुद्धि
मध्य अमेरिका
आत्मा
हृदय-आड़ोलन
स्पेन
दायां हृदय
जर्मनी, जापान
मध्य हृदय
आयरलैण्ड,
कलकत्ता
बायां हृदय
इंग्लैण्ड
जीवात्मा
इटली
स्विट्जरलैण्ड
मध्य पूर्व
दायीं नाभि
फ्रांस (जिगर)
नाभि
यूनान,
यूरोप
बायीं नाभि
आस्ट्रिया
स्वाधिष्ठान
दायाँ स्वाधिष्ठान
फ्रांस (जिगर)
बायाँ स्वाधिष्ठान
अफ्रीका एवं नेपाल
कुण्डलिनी
भारत, महाराष्ट्र
दायीं मूलाधार
न्यूजीलैण्ड
मूलाधार
आस्ट्रेलिया

रहस्यमय त्रिकोणाकार अस्थि (कुण्डलिनी)

पावन अस्थि की ऊपर छपी यह तस्वीर (Taber's Encyclopaedic Medical Dictionary, Edition 17) ताबेर की सर्वज्ञान सम्पन्न चिकित्सीय शब्दकोष के सत्रहवें संस्करण से ली गयी है। आश्चर्य की बात है कि यह तस्वीर हाथी की मुखा ति एवं सूँड जैसी है, अर्थात् श्री गणेश पावन अस्थि के रूप में माँ कुण्डलिनी की रक्षा कर रहे हैं।

ईसामसीह और श्रीगणेश कार्बन के अणुओं में

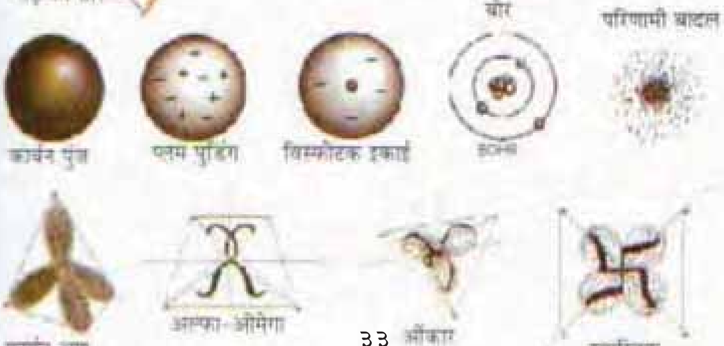

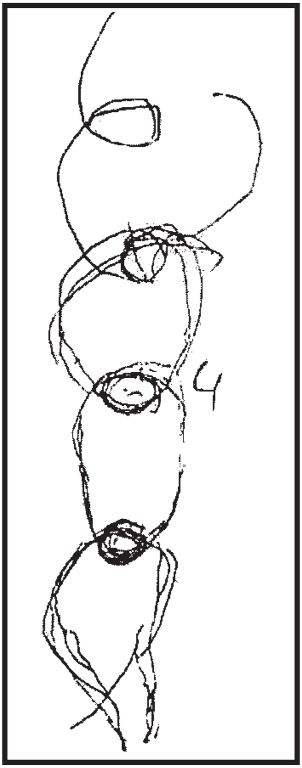

श्रीमाताजी द्वारा अपने हाथ से खींचा गया रेखाचित्र जिसमें छल्लों के रूप में कुण्डलिनी को हर चक्र से उठता हुआ दिखाया गया है।
(निर्मला योग, खण्ड-4, अंक 22, जुलाई-अगस्त 1984)

पार-झिल्ली ग्राही में सात चक्रों से मिलता जुलता सात कुण्डल मूल-भाव।
(ज्योतित चिकित्सा विज्ञान, प्रो. यू.सी. राय-1993)

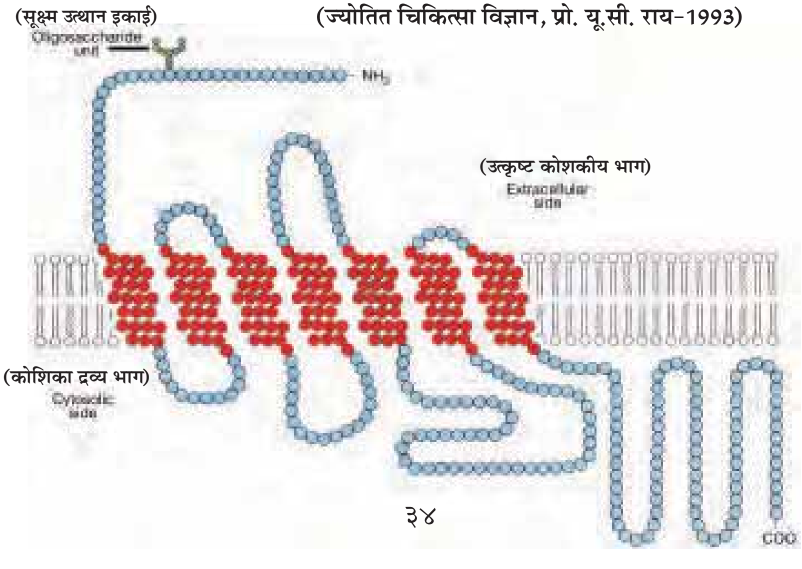

दिव्य विज्ञान

★ पावन अस्थि के रहस्य

रीढ़ के अन्त के समीप स्थित 'पावन अस्थि' (मूलाधार) में सुप्त सूक्ष्म आध्यात्मिक ऊर्जा, कुण्डलिनी, की जागृति द्वारा आत्म-साक्षात्कार (ज्योतिर्मय अवस्था) प्राप्त किया जा सकता है।

यहाँ पर पावन अस्थि की कथा का संक्षिप्त विश्लेषण किया जा रहा है। शरीर शास्त्र में यह नाम Hieronostoun *(रहस्य व्याख्या - पवित्र अस्थि) का उपयोग* 400 B.C. *के करीब* Hippocrates *के समय से आरम्भ हुआ और रोमन लोगों ने इसका अनुवाद लेटिन शब्द* Sacred *(पावन) के माध्यम से किया।* Halyah *हलया - परमात्मा का नाम* (God Yah, Yahweh *का संक्षिप्त रूप) इसका मूल है। इस अस्थि को पावन क्यों कहा गया? ये बात सदियों तक रहस्य बनी रही। कुछ लोगों ने ये सोचा कि इस अस्थि का उपयोग बलि चढ़ाने के कर्मकाण्डों में होता है, कुछ अन्य ने ये माना कि पवित्र माने जाने वाले जननांगों की सुरक्षा में इस अस्थि की भूमिका है और अन्तिम निर्णय के समय पुनर्जन्म* (Resurrection) *के आधार के रूप में इस अस्थि का सही-सलामत होना आवश्यक होगा। प्राचीन विश्व का ये मानना था कि पावन अस्थि* (Sacrum) *वह अन्तिम अस्थि है जिसका विनाश मृत्यु के बाद होता है (यहूदी लोक कथा पर आधारित धारणा) (1)।*

ये धारणा मुसलमानों में भी बनी हुई है और इसका वर्णन Hadith (Abu Hauraira *वर्णित) में किया गया है : पैगम्बर ने कहा, 'शरीर का हर अंग नष्ट हो जाएगा' नष्ट हो जाएगा, या सड़ जाएगा, अन्तिम अस्थि* Coccyx Bone (Al-ajb, Arab) *के सिवाए और उसी अस्थि से अल्लाह पूरे शरीर की पुनःरचना करेंगें''(2)। अतः योगी जन जब कुण्डलिनी जागृति की तुलना पुनर्जन्म से करते हैं तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए।*

Etzam *(अस्थि), सार* (Hebr; tz' vertebra Egypt) *को* Etz *(वृक्ष) की जड़ों का एक कारण, जिस पर बल दिया गया है, ये बताया गया है कि जीवन वृक्ष का ये बीज रूप है।* (Chapter IV [3] । Etzem *शब्द का दोहरा महत्व हमारे विचार से मादा सिद्धान्त* (Eve) *में वर्णित आदम के वाक्य की शुद्ध व्याख्या को सम्भव बनाता है: इस बार ये मेरी अस्थियों की अस्थि है......इसे महिला कहा जाएगा''*(Genesis 2; 23) *। एक ऐसा वाक्य जिसका अर्थ ये निकलता है कि ''वह मादा शक्ति जो मेरी अस्थियों का सार तत्व है'' क्योंकि मादा शक्ति कुण्डलिनी ग्राही अस्थि का पावन सार है। (पृष्ठ 31)*

भारतीय प्रतिमा विज्ञान (Iconography) *के अनुसार श्री शिव के दिव्य पुत्र गजानन श्री गणेश को मूलाधार का शासक देव बताया गया है। वास्तव में शरीर विज्ञान की सभी विश्लेषक पुस्तकें* (Anatomy Books) *पावन अस्थि को गज के सिर के रूप में दर्शाती हैं। (गज की त्रिकोणाकार मुखाकृति) जिसके दोनों ओर कानों के रूप में श्रोणि फलक अस्थियाँ*

(Iliac Bones) *हैं और इसके छोर पर सूँड के रूप में मुड़ी हुई गुदा अस्थि* (Coccyx) *है। इसी प्रकार से ॐ शब्द का आकार भी श्री गणेश सम है, जिसमें रूपरेखा से गज का सिर, बाईं ओर कान तथा दाईं ओर सूँड देखे जा सकते हैं।*

संदर्भ *:* [1] Oscar Sugar, *Journal of the American Medical Association* 257, PP 2061 - 2063 (1982) [2]

Sahih Al-Bukhari, Vol. 6, Hadith 338 [3] Annick de Souzenelle, Le Symbolisme du corps humain, Albin Michel, Paris 1991, Ch. XII.

★ हमारी चेतना में एक छोटा-सा भेदन

हमारे सात चक्र होते हैं जिसमें से छः हमारे मध्य नाड़ी तंत्र पर हैं। रीढ़ की हड्डी के निचले भाग में एक त्रिकोणाकार अस्थि है जिसे अंग्रेजी में सेक्रम (Sacrum) *कहा जाता है। यह एक यूनानी शब्द है। जब मैंने यूनान में एक संग्रहालयाध्यक्ष* (Curator) *से पूछा कि आप उसे 'सेक्रम' क्यों कहते हैं तो उन्होंने पूछा कि क्या आप नहीं जानते कि ये एक पवित्र अस्थि है? उसने यह भी बताया कि उन्हें यह ज्ञान भारतीयों द्वारा प्राप्त हुआ है कि यह पवित्र अस्थि है। इसी अस्थि के भीतर वह शक्ति होती है जिसे हम कुण्डलिनी कहते हैं। कुण्डल का अर्थ है छल्ला और यह एक स्त्री-सुलभ शक्ति है जो हमें पुनर्जन्म प्रदान करती है। यह वास्तव में आपकी माँ है, आपकी अपनी व्यक्तिगत माँ जो आपके विषय में सभी कुछ जानती है। यह आपके भूतकाल को भी जानती है, आपकी आकांक्षाओं को जानती है। परन्तु ये आपकी माँ है, और माँ होने के कारण बिना कोई कष्ट दिए यह आपको जन्म देती है।*

कुण्डलिनी जागरण के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है कि जब कुण्डलिनी जागृत होती है तो यह होता है, वह होता है आदि। परन्तु मैंने कुण्डलिनी जागृति के बाद किसी के साथ कुछ गलत घटित होते नहीं देखा। परन्तु यदि कोई इस के साथ जबरदस्ती करता है तो हो भी सकता है क्योंकि यह हमारे विकास की जीवन्त प्रक्रिया है। जब तक हम इसको प्राप्त नहीं कर लेते हम शान्त व सन्तुष्ट नहीं हो सकते। हमें यह विकास प्रक्रिया, जो कि हमारी चेतना में एक छोटा सा भेदन मात्र है, को प्राप्त करना है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, ओबराय होटल, 27.02.1996)

★ कुण्डलिनी छोटे-छोटे तन्तुओं से बनी ज्योतित रस्सी सम है।

"सहजयोग अत्यन्त सूक्ष्म प्रक्रिया है। इस तथ्य को बहुत थोड़े लोग जानते हैं। सुषुम्ना नाड़ी अत्यन्त छोटी है, अत्यन्त पतली, ब्रह्म नाड़ी के ठीक मध्य में। कारण मनुष्य का अपने कर्मों से लिप्त होना है। ये अत्यन्त सूक्ष्म ब्रह्म नाड़ी, पापों और बुराइयों के कारण इतनी संकीर्ण हो जाती है कि कुण्डलिनी के अत्यन्त सूक्ष्म तन्तु ही इसमें से गुजर सकते हैं। कुण्डलिनी के पतले तन्तुओं से बनी प्रकाशमय रस्सी सम होने की कल्पना करें! ब्रह्म नाड़ी से इसके अत्यन्त बारीक तन्तु ही गुजर सकते हैं। यह स्थिति है। आप सबने देखा है कि यह अत्यन्त सूक्ष्म एवं गहन प्रक्रिया है। आपमें से अधिकतर ने कुण्डलिनी की हिलडुल और धड़कन को देखा है।

नीचे-सतह पर ये किसी प्रकार एक छोटा-सा मार्ग बनाने का प्रयत्न करती है ताकि ब्रह्म नाड़ी के इस अत्यन्त संकीर्ण मार्ग से कम से कम एक तन्तु को गुजारा जा सके, और उसी एक तन्तु से ये ब्रह्मरन्ध्र का भेदन करती है। आरम्भ में अधिकतर लोगों में यह घटना आसानी से घट जाती है। परन्तु बोझ के दबाव ये यह पुनः नीचे की ओर खिंच जाती है तथा लोग उस शान्ति, चैन और शीतल लहरियों को भूल जाते हैं जो उन्हें एक बार प्राप्त हुईं थीं और अब उनके पास नहीं है। प्रकाश में देखने पर जब उन्हें लगता है कि ये सब चीजें उनके अन्दर निहित हैं तो उन्हें झटका लगता है। तब घबराकर वे संशयालु बन जाते हैं।

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी, दिल्ली, भारत—18.08.1979)

★ कार्बन के अणुओं में ईसा मसीह एवं श्री गणेश

''जहाँ तक कार्बन अणुओं का सम्बन्ध है इनमें विद्युत अणु आँसुओं की चार बूंदों के चतुष्फलक (Tetra Hedron) *का आकार धारण करते हैं। ये बादल उन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें विद्युत अणु अपना अधिकतर समय बिताते हैं। इस क्षेत्र में ये इतनी तेजी से विचरण करते हैं कि कोई विशेष उड़ान पथ बनाने के स्थान पर ये बादलों का आकार धारण कर लेते हैं। हाल ही में बहुत से शोधकर्ताओं ने राय दी है कि इन बादलों के भीतर कुछ विशिष्ट क्षेत्र हैं जो विद्युत अणुओं* (Electron) *को पसन्द हैं। ये क्षेत्र, आसुँ की बूंदों के आकार वाले सभी, बादलों की सतह के इर्द-गिर्द कुण्डलों की रचना करते हैं।"*

एक महान भारतीय सन्त एवं गूढ़ ज्ञानी का चित्त भी इस नए विकास की ओर गया। शिष्यों को ये सिद्धान्त विकसित करने के लिए प्रेरित किया गया क्योंकि इसका सम्बन्ध कार्बन अणुओं से था। गहन ध्यान में एक शिष्य ने, जो कि रसायनज्ञ (Chemist) *था, स्वतः ही इस सिद्धान्त के सच्चे महत्व को महसूस किया। विद्युत अणुओं के उच्च सम्भावित क्षेत्र ने कार्बन अणुओं के नाभिक* (Nucleus) *के इर्द-गिर्द कुण्डलाकार स्थायी तरंगों की रचना की। जब इस आकृति को भिन्न कोणों से देखा गया तो कुण्डलों को पहचान योग्य प्रतीक बनाते हुए देखकर भौतिक विज्ञानी हैरान हो गया।*

पहली नजर में त्रि-आयामी ओंकार (ॐ) दिखाई दिया (Three Dimensional Omkara) *। सपाट होकर ओंकार (ॐ) द्विआयामी स्वास्तिक बन गया। वह इस परिणाम पर पहुँचा कि वास्तव में स्वास्तिक त्रि-आयामी ओंकार (ॐ) का द्वि-आयामी रूप है। इस मॉडल को घुमाकर जब एक दूसरे कोण से देखा गया तो पाया कि वे प्रतीक यूनानी अल्फा ओमेगा में परिवर्तित हो गए। ब्रह्माण्डीय स्तर पर पूर्वी आध्यात्मिकता के प्रतीक (ओंकार और स्वास्तिक) मूलतः पश्चिमी आध्यात्मिकता के प्रतीक (अल्फा और ओमेगा) द्वारा अभिव्यक्त किए गए, उसी आध्यात्मिक सत्य के ही भिन्न पक्ष हैं। सभी लोग, पदार्थ और ऊर्जा भी, उसी दिव्यत्व की अभिव्यक्ति हैं जिन्हें बहुत से धर्मों, संस्कृतियों और दर्शनों ने केवल अपना होने का दावा किया है।*

कार्बन के अणु, जो कि अपने अन्दर इन शाश्वत प्रतीकों को समेटे हुए हैं, ये दर्शाते हैं कि

भौतिक पदार्थ भी उसी दिव्य चेतना की अभिव्यक्ति हैं जिसे इतिहास में बहुत से सन्तों एवं सिद्ध पुरुषों ने अनुभव किया है। अन्तर्जात रूप से पदार्थ भी आध्यात्मिक है। ब्रह्माण्ड का ब्रह्माण्डीय-चेतना से अलग कोई अस्तित्व नहीं है, यह उसकी सीधी अभिव्यक्ति है। जीवन्त पदार्थ, जो कार्बन पर आधारित हैं, की इस अभिव्यक्ति में अद्वितीय भूमिका होगी। **सच्चा सन्त वही है जो सर्वव्यापी दिव्य उद्देश्य के शाश्वत अनुभव में जीवित है।** सभी लोग, पदार्थ और स्वयं ऊर्जा भी इसी दिव्यत्व की अभिव्यक्तियाँ हैं।

पारम्परिक रूप से अल्फा और ओमेगा होने का श्रेय ईसा-मसीह को दिया जाता है। भारत में श्री गणेश, स्वास्तिक और ओंकार (ॐ) प्रतीकों के शासक देवता हैं।

★ वे ही ओंकार थे, वे ही नाद (Logos) थे और वे ही आत्मा थे

"ईसा मसीह के पुनर्जन्म की महान घटना को समझना सहजयोगियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस घटना द्वारा उन्होंने समझाया कि आत्मा की मृत्यु नहीं होती। वे ओंकार (ॐ) थे, वे शब्द (Logos) थे और वे ही आत्मा थे। इसी कारण वे जल पर चल सके। अब हमने एक फिल्म बनाई है जिसमें दर्शाया है कि मूलाधार जो कि कार्बन के अणुओं को दिखाता है इसे यदि दाएं से बाएं को देखें तो स्वातिस्क (卐) दिखाई देगा और यदि बाएं से दाएं देखेंगे तो ओंकार (ॐ) दिखाई देगा। नीचे से ऊपर को देखने पर अलफा (α) और ओमेगा (Ω) दिखाई देंगे। इससे निश्चित रूप से वही साबित होता है जो ईसा ने कहा है: 'मैं ही अल्फा (α) हूँ और मैं ही ओमेगा (Ω) हूँ। इससे स्पष्ट पता चलता है कि वे श्री गणेश के अवतरण थे। अब हमारे पास वैज्ञानिक प्रमाण भी है और हम लोगों को बता सकते हैं कि यह सत्य है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, मैगलेनो, इटली 11.04.1993)

★ मैं ही 'आदि' (Alpha) हूँ, और मैं ही 'अन्त' (Omega) हूँ।

"बुद्धिप्रस्त लोग नहीं समझ सकते कि श्री गणेश हमारे विशिष्ट देवता क्यों हैं। समस्या ये है कि सूक्ष्म बने बग़ैर वो ये नहीं जान सकते कि सभी देवी-देवता हमारे अन्दर हैं। श्री गणेश के चार हाथ हैं और कार्बन के अणुओं में चार संयोजकताएँ होती हैं। कार्बन के अणु को बाईं ओर से देखने पर आपको स्वास्तिक (卐) दिखाई देता है, दाईं ओर से देखने पर ओंकार (ॐ), नीचे से देखने पर आपको 'अल्फा' और 'ओमेगा' के प्रतीक (α और Ω) दिखाई देंगे। ईसा मसीह ने कहा है कि : मैं ही 'अल्फा' (आदि) हूँ और मैं ही 'ओमेगा' (अन्त) हूँ। 'अल्फा'—अर्थात् आरम्भ और 'ओमेगा'—अर्थात् अन्त। अल्फा और ओमेगा के प्रतीक (α और Ω) अणुओं से मिले हैं। ये बात जब मैंने विदेशियों को बताई तो उन्होंने पूर्ण सत्यनिष्ठा पूर्वक इस विषय पर शोध किया। उन्होंने तीन भिन्न कोणों से कार्बन अणुओं के चित्र लिए और बिल्कुल वही परिणाम पाया जो मैंने बताया था। इससे यह प्रमाणित होता है कि ये बात करने वाले ईसामसीह ही वास्तव में साक्षात श्री गणेश हैं और ओंकार तथा स्वास्तिक (ॐ, 卐) भी।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत—05.12.1993)

"ईसा मसीह के पुनर्जन्म की महान घटना को समझना सहजयोगियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस घटना द्वारा उन्होंने समझाया कि आत्मा की मृत्यु नहीं होती। वे ओंकार (ॐ) थे, वे शब्द (Logos) *थे और वे ही आत्मा थे। इसी कारण वे जल पर चल सके। अब हमने एक फिल्म बनाई है जिसमें दर्शाया है कि मूलाधार जो कि कार्बन के अणुओं को दिखाता है इसे यदि दाएं से बाएं को देखें तो स्वातिस्क (卐) दिखाई देगा और यदि बाएं से दाएं देखेंगे तो ओंकार (ॐ) दिखाई देगा। नीचे से ऊपर को देखने पर अलफा* (α) *और ओमेगा* (Ω) *दिखाई देंगे। इससे निश्चित रूप से वही साबित होता है जो ईसा ने कहा है: 'मैं ही अल्फा* (α) *हूँ और मैं ही ओमेगा* (Ω) *हूँ। इससे स्पष्ट पता चलता है कि वे श्री गणेश के अवतरण थे। अब हमारे पास वैज्ञानिक प्रमाण भी है और हम लोगों को बता सकते हैं कि यह सत्य है।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, मैगलेनो, इटली 11.04.1993)

★ Cerritos, लॉस एंजलिस (U.S.A) की प्रयोगशाला में वैज्ञानिक प्रमाण

"...कार्बन अणुओं के विषय में परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ने Cerritos*, लॉस एंजलिस, अमेरिका के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ० विनोद राव वार्लिकर के सम्मुख अपने दिव्यदर्शन के रहस्यों का उद्घाटन किया। इनका विस्तृत वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया गया है:-*

अपने एक संवाद में Cerritos *लॉस एंजलिस* U.S.A *में डॉ० विनोद राव वार्लिकर ने कहा कि "वर्ष 1987 में परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ने हॉस्टन* (Houston) *यात्रा में रहस्योद्घाटन किया कि कार्बन के अणुओं को नीचे की ओर से देखने पर उनमें क्रूस (†) दिखाई पड़ता है। बाएं से देखने पर ओंकार (ॐ) दिखाई पड़ता है और दाएं से देखने पर स्वास्तिक (卐)। उनकी बात सुनकर एकदम से विश्वास कर पाना कठिन था। जो भी हो, लॉस एंजलिस* (Cerritos) *वापिस पहुँचकर अपनी प्रयोगशाला में मैंने इस रहस्य का सत्यापन करना चाहा और ये जानकर मुझे हैरानी हुई कि परिणाम बिल्कुल वही थे जैसे श्रीमाताजी ने मुझे बताए थे। कार्बन अणुओं के मॉडल में तीन द्विमुंड* (Dumbbell) *आकार की संयोजकताओं और एक गोलाकार* (Sp^3 Hybridization) *संयोजकता के स्थान पर चार द्विमुण्ड* (Dumbbell) *आकार की संयोजकताएं थीं।*

इस बिन्दु पर अपना पूर्ण ध्यान केन्द्रित करके जब मैंने व्यवस्था को ज़रा सा बदला तो पाया कि एक संयोजकता गोलाकार कक्षा का प्रतिनिधित्व कर रही है। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही क्योंकि कार्बन अणुओं के मॉडल को जब मैंने बाएं उठाव से देखा तो मुझे ॐ दिखाई दिया, दाईं ओर के उठाव से जब मैंने इसे देखा तो स्वास्तिक (卐) त्रि-आयामी (ॐ) के प्रतीक की द्वि-आयामी अभिव्यक्ति के रूप में दिखाई दिया। श्री गणेश और ॐ उस सृजन नाद का प्रतिनिधित्व करते हैं जो कार्बन अणुओं में ओम् (ॐ) के त्रि-आयामी प्रतीक के रूप में दिखाई देता है, जिसकी द्वि-आयामी अभिव्यक्ति स्वास्तिक (卐) के आकार में दिखाई पड़ती है।"

(Medical Science Enlightened, Prof. U.C. Rai 1993, pp-150)

★ पदार्थों में ऊर्जा नियंत्रण कौन करता है?

''सोचें कि पदार्थ के अणु में एक ऊर्जा कार्यरत है। प्रश्न किया जा सकता है कि पदार्थ में ये ऊर्जा क्यों है? पदार्थ में यदि ऊर्जा न होती तो ये सारे रसायनिक मिश्रण आपको कहाँ से प्राप्त होते? पदार्थों में कौन ये मिश्रण डालता है जैसे सोडियम क्लोराइड, सोडियम और क्लोराइड एक दूसरे से जुड़े हुए हैं परन्तु यदि क्लोराइड को किसी अन्य अणु में जाना हो तो ये कार्य कौन करता है? ये कार्य करने के लिए पदार्थ के अन्दर ही कोई अन्तर्जात शक्ति होनी आवश्यक है। हम जानते हैं कि जल में शक्ति है। इसी प्रकार से हमें द्रवस्थैतिकी (Hydrostatics) *प्राप्त हुई। यहाँ तक कि पत्थरों, सोना आदि में भी अन्तर्जात एक ऊर्जा है। श्री गणेश का सिद्धान्त इसका नियंत्रण करता है।*

वे यद्यपि इतने नन्हे शिशु हैं फिर भी उनका कार्य कितना बड़ा है! उन्हें सब कार्यान्वित करना पड़ता है। पदार्थ, जीवन्त पौधों के रूप में विकसित होता है फिर पशुओं के रूप में और फिर मानव के रूप में और सर्वत्र उनकी (श्री गणेश) ये शक्ति कार्य करती है। द्रव्य स्थिति में हम इसे विद्युत-चुम्बकीय शक्ति या ऊर्जा कह सकते हैं। निश्चित रूप से यह श्री गणेश की ही शक्ति है जो उस बिन्दु (स्थिति) में विद्युत-चुम्बकीय है। विकसित होकर जब ये बढ़ने लगती है तो हमें ऊर्जा के भिन्न स्तर प्राप्त होते हैं जिन्हें हम भिन्न विकास प्रक्रियाओं में देख सकते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी कबैला, इटली 19.09.1993)

★ सन्तुलित (Symmetric) और असन्तुलित (Asymmetric) लहरियों का सृजन कौन करता है?

*"...अत: दाईं ओर भी अणुओं (*Molecules*) पर हमें चैतन्य लहरियाँ मिलती हैं, जैसा आप जानते हैं, हमें सल्फर डाई ऑक्साइड की तरह अणु प्राप्त होते हैं। यदि सल्फर मिल जाए तो इसे ऑक्सीजन देनी होगी और ये ऑक्सीजन इसी प्रकार धड़कती जाएगी। ये असन्तुलित, सन्तुलित प्रकार की लहरियाँ हैं, आप सबको इसका ज्ञान होगा। तो इन असन्तुलित, सन्तुलित लहरियों का सृजन किसने किया? ये बात कोई नहीं जानना चाहता। कोई ये नहीं जानना चाहता कि किसी अणु या परमाणु की गहनता में कौन कार्यरत है? अपने सूक्ष्म तरीकों से ये कार्य श्री हनुमान करते हैं।*

उनके पास एक अन्य महान-महान सिद्धि है, जिसे हम 'अणिमा' के नाम से जानते हैं। अणिमा-अर्थात अणु। इसका अर्थ ये है कि वे किसी भी अणु-रेणु में प्रवेश कर सकते हैं। आज वैज्ञानिक सोचते हैं कि उन्होंने इस आधुनिक काल में अणु-परमाणु खोज निकाले हैं। ऐसा नहीं है, क्योंकि हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों में भी 'अणिमा' का वर्णन है-अणु-रेणु का वर्णन है। इनका वर्णन पहले से ही है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Schwetzinge, Germany ***31.08.1990)***

★ सभी वायवीय सम्बन्ध (Ethereal Connections) भी इन्हीं महान् अभियन्ता श्री हनुमान की देन है

"...तथा संसर्ग-सम्पर्क भी (Communications) ...हम जानते हैं कि ये जो हमारे सम्वाद हैं—हम कर सकते हैं कि यहाँ हमारे पास लाउडस्पीकर है-परन्तु हमारे पास दूरदर्शन है, आकाशवाणी है, तथा अन्य सभी उपकरण हैं। जब हम आकाशतत्व से जुड़ जाते हैं तो सभी उपलब्धियाँ श्री हनुमान जी का आशीर्वाद होती हैं और ये राजसिक प्रवृत्ति (दाईं ओर के) लोगों को उपलब्ध होती हैं। आकाश तत्व से जुड़ी सभी वस्तुओं की खोज दाईं ओर के व्यक्ति करते हैं—जैसे बेतार टेलिफोन तथा अन्य चीजें-टेलिग्राफ भी ऐसा ही उपकरण है जिसमें तार का उपयोग नहीं होता। अत: बिना किसी तार के, आकाश तत्व द्वारा वे प्रबन्धन करते हैं। अत: सभी वायवीय सम्पर्क इसी महान् अभियन्ता श्री हनुमान की देन हैं। उनका कार्य इतना उत्तम होता है कि आप न तो इसे चुनौती दे सकते हैं और न ही इसमें दोष निकाल सकते हैं। हो सकता है कि आपके उपकरण ठीक न हों, परन्तु अपने आकाशीय कार्यों में वे सम्पूर्ण (श्रेष्ठ) हैं। वैज्ञानिक जब अविष्कार करते हैं तो सोचते हैं कि ये तो प्रकृति में विद्यमान हैं। परन्तु वे कभी नहीं सोचते कि "ऐसा कैसे हो सकता है?" आकाशतत्व में हम कुछ बोलते हैं और ये शब्द दूसरी ओर कैसे पकड़े जाते हैं? वे स्वीकृत रूप से मान लेते हैं कि हम जो भी यहाँ कहेंगे या यहाँ से दूरदर्शन पर प्रसारित करेंगे तो वह दूसरे छोर पर देखा तथा सुना जा सकेगा। कभी वे पता लगाने का प्रयत्न नहीं करते कि यह किस प्रकार होता है, इसका तरीका क्या है। यह श्री हनुमान जी का कार्य है जिन्होंने इतने सुन्दर तन्त्र (Network) की रचना की है, इसी के माध्यम से ये सभी कार्य होते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Schwetzingen, Germany ***31.08.1990)***

★ पराअनुकम्पी नाड़ी तन्त्र में रिक्त स्थान क्यों है?

''सहजयोग परिकल्पनाओं के अनुसार पराअनुकम्पी नाड़ी-तन्त्र मेरुरज्जु स्थित सुषुम्ना नाड़ी के अनुरूप है। पराअनुकम्पी नाड़ी तन्त्र में कपाल से बहने वाला पावन-चैतन्य अन्तर्निहित है। कपाल से प्रवाह तीसरी, सातवीं, नौंवी और दसवीं नाड़ी के माध्यम से होता है। तीसरी नाड़ी का नियंत्रक (Occumulator) *मस्तिष्क के मध्य में है, सातवीं नाड़ी का* Pons (*सिर में गोलार्द्धों को जोड़ने वाला तत्व)में तथा नौंवी और दसवीं कपाल (सिर में गोलार्द्धों को जोड़ने वाला तत्व) नाड़ियों के नियंत्रक मस्तिष्क के तने* (Stem) *के निचले भाग में* (In medulla Oblongata) *है। कपाल पावन प्रवाह मेरुरज्जु के* S.2 *से* S.4 *भागों से होता है।* (PP 152) *बच्चा जब जन्म लेता है और नाभि नाड़ी को काटा जाता है तो उसके कारण सुषुम्ना नाड़ी और उससे बाहर भी रिक्त स्थान बन जाता है। इस रिक्ति को सौर केन्द्र और संवेदना नाड़ी* (Vagus Nerve) *के बीच में देखा जा सकता है* (pp 49)*। वास्तव में ये अजीब बात है कि पराअनुकम्पी नाड़ी तन्त्र पर यह रिक्ति क्यों है! इसका रहस्य क्या है? चिकित्सा वैज्ञानिकों के पास इसका कोई उत्तर नहीं है। जो भी हो, ज़ैन दर्शन* (Zen Philosophy) *में इसे* Void *कहा गया है और हिन्दू-दर्शन शास्त्र में इसे 'भवसागर' नाम दिया गया है। पराअनुकम्पी*

नाड़ी तन्त्र (सुषुम्ना नाड़ी) के नाभि क्षेत्र पर इस रिक्ति ने पराअनुकम्पी में प्रवेश और इसके विषय में शोध कार्य को अत्यन्त कठिन एवं निष्फल बना दिया है।...

सहजयोग परिकल्पना के अनुसार पराअनुकम्पी नाड़ी तन्त्र नाड़ियों, वाहिकाओं एवं मांस-पेशियों को शक्ति देता है और उन्हें विश्राम प्रदान करता है। पराअनुकम्पी की गतिविधि को अनुकम्पी नाड़ी तन्त्र की तरह से प्रायः न तो क्रियान्वित किया जा सकता है और न ही रोका जा सकता है। ऐसा नाभि क्षेत्र (भव-सागर में) रिक्ति के कारण से है। सहजयोग ही इस रिक्ति को भरने का सहज उपाय है। (P.P. 152-153)”

(Medical Science Enlightened, U.C. Rai 1993)

★ ईड़ा पिंगला से उठते हुए कुण्डलिनी का चार छल्लों में-विरोधी दिशाओं से दो—दो रचना करना

परमात्मा ने हमारे अन्दर चौदह स्तर बनाए हैं। आप यदि इनकी गिनती करें तो आप जान सकते हैं कि हमारे अन्दर सात चक्र हैं। इसके अतिरिक्त दो और चक्र हैं जिनके बारे में बहुत कम बात की जाती है - ये चक्र हैं चन्द्रमा (ललिता) और सूर्य (श्री) चक्र। इनके अतिरिक्त हँसा चक्र है, इस प्रकार से तीन और चक्र हैं। सात जमा तीन दस होते हैं। फिर सहस्रार के ऊपर चार चक्र हैं। और इन चक्रों के ऊपर भी, मैंने आपको बताया है, अर्धबिन्दु, बिन्दु, वलय और प्रदक्षिणा हैं। ये चार हैं। सहजयोग में आने और सहस्रार चक्र खुलने के पश्चात् आपको ये चार चक्र पार करने होते हैं - अर्धबिन्दु, बिन्दु, वलय और प्रदक्षिणा। इन चारों चक्रों को पार करने के बाद ही आप कह सकते हैं कि आप सहजयोगी बन गए हैं।

एक अन्य कोण से यदि आप देखें तो सहस्रार तक पहुँचने के लिए हमें चौदह अवस्थाएं (चक्र) पार करनी होती हैं। इनका यदि आप विभाजन करें तो सात चक्र ईड़ा नाड़ी पर स्थित हैं और सात पिंगला नाड़ी पर। जागृति के समय व्यक्ति एकदम सीधी दिशा में नहीं उठता, वह पहले बाएं को आता है फिर दाएं को आता है, पुनः बाएं को जाता है और फिर दाएं को जाता है। कुण्डलिनी भी उठते हुए ऐसा ही करती है। इन दोनों (बाएं और दाएं) के बीच स्वयं को विभाजित करती है। दो रस्सियों के उदाहरण द्वारा इसका कारण समझा जा सकता है। दो रस्सियाँ यदि एक दूसरे के समानान्तर हों तो ऊपर नीचे जाने की प्रक्रिया में वे एक दूसरे को दो बार क्रॉस करती है। (ईड़ा पिंगला नाड़ियों के रास्ते सभी चक्रों पर कुण्डलिनी के उत्थान को श्रीमाताजी चार छल्ले बना कर समझाती हैं - दो दो छल्ले एक दूसरे की विपरीत दिशा में बनाकर (सीधी परिक्रमा में और उल्टी परिक्रमा में (clockwise and anticlockwise*) कुण्डलिनी जब उठती है तो आप चक्र पर महसूस करते हैं कि इसका बायाँ भाग पकड़ा हुआ है या दायाँ। यद्यपि कुण्डलिनी केवल एक है परन्तु सभी चक्रों पर आप दो पक्ष देखते हैं और इस प्रकार जान जाते हैं कि बायाँ पक्ष पकड़ा हुआ है या दायाँ।*

अतः हमारे अन्तर्स्थित हर एक चक्र को यदि हम बाएं और दाएं में विभाजित कर दें तो 7x2=14*, हमें चौदह अवस्थाओं को पार करना होता है। ये बात यदि हम समझ जाएं कि ये*

सात और ऊपर के सात – तो इस प्रकार से चौदह चक्रों के मार्ग की रचना होती है। इसलिए कुण्डलिनी शास्त्र में चौदह अत्यन्त महत्वपूर्ण अंक है। अत्यन्त महत्वपूर्ण! हमें पूरी तरह से समझ लेना चाहिए कि चौदह अवस्थाओं को पार करने के पश्चात् ही हम सहजयोग के आशीर्वाद प्राप्त करने के योग्य बनते हैं। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, बम्बई 05.05.1983)***

★ ...तब भिन्न चक्रों के रूप में पृथ्वी पर इसकी अभिव्यक्ति हुई

"...परन्तु हम उस बिन्दु पर आएंगे जहाँ आदिशक्ति माँ ने पृथ्वी माँ पर कार्य करना आरम्भ किया। एक बात हमें अवश्य जान लेनी चाहिए कि उन्होंने पृथ्वी माँ के अन्दर ही कुण्डलिनी का सृजन किया और पृथ्वी माँ के बाहर श्री गणेश का। यह बात बहुत दिलचस्प है। अत: पृथ्वी माँ हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण बन जाती है। यदि आप पृथ्वी माँ का सम्मान करना नहीं जानते तो हम ये भी नहीं जानते कि अपना सम्मान किस प्रकार करना है। नि:सन्देह आपके अन्दर कुण्डलिनी आदि-शक्ति की ही अभिव्यक्ति है। वे आपके अन्दर आदि-शक्ति का प्रतिबिम्ब हैं। परन्तु चक्रों तथा आदिशक्ति के सृजन की अभिव्यक्ति के रूप में भिन्न देशों, भिन्न स्थानों और भिन्न नगरों में पृथ्वी माँ के प्रतिबिम्ब की अभिव्यक्ति भी हुई है। सर्वप्रथम परम पावनी पृथ्वी माँ की रचना करनी आवश्यक थी ताकि इस पावन पृथ्वी पर मानव जन्म ले सके।

अत: सर्वप्रथम कुण्डलिनी के रूप में आदिशक्ति पृथ्वी माँ पर प्रतिबिम्बित हुईं, हमें कहना चाहिए कि कुण्डलिनी आदिशक्ति का एक नन्हा-सा हिस्सा है या हम कह सकते हैं कि वे (कुण्डलिनी) आदिशक्ति की इच्छा हैं – शुद्ध इच्छा मात्र। तो आदि-शक्ति इच्छा है – सदाशिव की पूर्ण इच्छा, और कुण्डलिनी, आदि-कुण्डलिनी, आदिशक्ति की इच्छा है – उनकी पूर्ण इच्छा। इसकी अभिव्यक्ति सर्वप्रथम पृथ्वी माँ में हुई। इस प्रकार से कुण्डलिनी बाहर आई। इससे पृथ्वी माँ का आन्तरिक हिस्सा काफी सीमा तक शीतल हो गया और तब भिन्न चक्रों के रूप में पृथ्वी की सतह पर इसकी अभिव्यक्ति हुई। तो इस प्रकार विराट, पृथ्वी माँ और मानव में बहुत बड़ी समरूपता है। ये सभी यदि आदिकुण्डलिनी द्वारा प्रतिबिम्बित हैं तो इनमें गहन सम्बन्ध भी अवश्य होना चाहिए। परन्तु मानव यह नहीं जानता कि किस प्रकार वह पृथ्वी माँ से जुड़ा हुआ है! पृथ्वी माँ के भिन्न चक्रों में से गुजरती हुई कुण्डलिनी अन्तत: कैलाश का भेदन करके बाहर आई। मैं नहीं जानती कि आपमें से कितने लोग कैलाश गए हैं? कैलाश में से आपको अत्यन्त तीव्र चैतन्य बहता हुआ मिलेगा।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली 25.05.1997)

★ ये कहना आसान है कि परमात्मा का कोई अस्तित्व नहीं है, परन्तु उनके अस्तित्व को माने बिना बहुत से तथ्यों की व्याख्या कर पाना अत्यन्त कठिन है।

"...हर उदार मस्तिष्क वैज्ञानिक स्वयं देख सकता है कि यह ब्रह्माण्ड अत्यन्त सुन्दर है, भली-भांति आयोजित है तथा सुचारु रूप से चालित है, और वह निष्कर्ष निकाल सकता है कि इस ब्रह्माण्ड के सृजन के कारण ही पृथ्वी माँ का सृजन करना पड़ा।

पाँच अरब वर्ष पूर्व ये पृथ्वी माँ, जो सघन गैस के रूप में अंगारे की तरह तपी हुई थीं, यह इतनी शीतल कैसे हो गईं जैसे आज ये हैं? वैज्ञानिक इस तथ्य को यूँ ही स्वीकार कर लेते हैं। अपनी सीमाओं के होते हुए वे इसके कारणों का पता नहीं लगा पाते। ऐसा क्यों हुआ? किस प्रकार इसका आरम्भ हुआ?

ये कहना आसान है कि परमात्मा का कोई अस्तित्व नहीं है, परन्तु परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार किए बिना बहुत सी चीजों की व्याख्या कर पाना अत्यन्त कठिन है। ये है-मानव के सृजन के लिए ब्रह्माण्ड सृजन में इतना समय लगना-यह समय इतना कम है कि किसी भी अन्य तरीके से इसका व्याख्या नहीं की जा सकती।

अवसर के नियम का भी यदि आप उपयोग करें, तो हम पता लगा सकते हैं कि एक जीवन्त कोषाणु के सृजन के लिए कितनी बार संयोजन और क्रम परिवर्तन को कार्य करना पड़ता है। उदाहरण के रूप में किसी टेस्ट ट्यूब में यदि आप पचास लाल रंग की गोलियाँ तथा पचास सफेद रंग की गोलियाँ इस प्रकार डाल लें कि लाल रंग की गोलियाँ नीचे हों और सफेद रंग की ऊपर, तथा इस ट्यूब को हिलाते चले जाएँ तो गोलियों की व्यवस्था पूरी तरह बिगड़ जाएगी। गोलियों को पुनः पूर्व स्थिति में लाने के लिए, कितनी बार ट्यूब हिलानी पड़ेगी?

*उन्होंने एक सूत्र खोज निकाला जो घात शक्ति (*Raised to power*) बढ़ाने जैसा नहीं है। इस सूत्र के अनुसार मानव का सृजन संयोगवश हो गया है। यह असम्भव प्रतीत होता है क्योंकि इस पर लगा समय इतना कम है कि इस समय में तो अधिक से अधिक कुछ जीवन्त कोषाणुओं का ही सृजन हो पाता।*

इतने जटिल मानव का सृजन क्यों किया गया और क्यों इसके अन्दर इतनी सुन्दर व्यवस्था की गई? ये विश्वास करना कठिन है कि इस सारे तमाशे के पीछे कोई भी मदारी नहीं है। कोई तो ऐसा वैज्ञानिक होता जिसने ये कार्य किया होता। कोई विशेष हाथ ही इस कार्य को कर सकते थे। कहने का अभिप्राय ये है कि बिना किसी आयोजन, बिना किसी सोच-विचार, बिना किसी योजना तथा शक्तिशाली व्यक्तित्व के, किसी सर्वशक्तिमान के पीछे हुए बिना, यह कार्य हो पाना सम्भव न हो पाता।

विज्ञान की भी क्योंकि सीमाएं हैं, हम पता नहीं लगा सकते कि किस प्रकार इतनी जल्दी ये कार्य हो पाया और किस प्रकार घटित हुआ? किसी तरीके से विज्ञान के क्षेत्र में हमने कुछ उपलब्धियाँ पा ली हैं, सम्भवतः उसी तरीके से जिसका उपयोग हमारी विकास प्रक्रिया की गति बढ़ाने के लिए किया गया।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कोवालम, कैरला, भारत, फरवरी 1979)

★ केवल वही (श्री हनुमान) आपके लिए वर्षा, धूप और शीतल वायु का सृजन करते हैं।

"...तो, केवल वही मूसलाधार वर्षा या वेगवान तूफान की तरह जाकर चीजों को नष्ट कर सकते हैं। सभी कार्य वे अपनी विद्युत चुम्बकीय शक्तियों के माध्यम से करते हैं। अतः पूर्ण

'पदार्थ' (matter) उनके नियन्त्रण में हैं। वे ही आपके लिए वर्षा, धूप और शीतल वायु का सृजन करते हैं। वे ही सभी कार्य करते हैं ताकि पूजा ठीक प्रकार हो सके, संगोष्ठी ठीक प्रकार हो सके। अत्यन्त सुन्दर ढंग से वे सभी कुछ करते हैं और किसी को पता भी नहीं चलता कि श्री हनुमान ने ये सब कार्य किया है। हमें हर समय उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Schwetzingen, **जर्मनी, 31.08.1990)**

★ गुर्दे से सम्बन्धित (Adrenergic) ग्रन्थि के ग्राही (Receptors) के सात विस्तृत छल्ले, सात चक्रों के समान हैं

सभी जीवन्त कोषाणुओं की कोषाणु सतहों में एक विशेष प्रकार का प्रोटीन होता है जो ग्राही (Receptor) *कहलाता है। बहुत से ग्राहियों के बीच अन-अधिवृक्क* (Non-Adrenaline) *हारमोन मानव शरीर के हर कोषाणु में से प्राप्त होते हैं। डोपेमिन* (Dopemine) *और सेरोटोनिन* (Serotonins) *रसायन मस्तिष्क के कोषाणुओं तथा अन्य कोषाणुओं में भी मिलते हैं...।*

ऊपर वर्णित सभी ग्राही (Receptors) *कोषाणु की पतली सतह (झिल्ली) में मिलते हैं और ये कई सौ अमिनो एसिडों* (Amino Acids) *से बनते हैं। इन अमिनो एसिडों की व्यवस्था का जब अमरीका, कनाडा, यू.के. तथा अन्य देशों के वैज्ञानिकों ने परीक्षण किया तो ये स्पष्ट हो गया कि उनमें एक आम लक्षण है, और वह है "सात प्रदेश"* (Seven Domains) *या "सात विकुंच* (spanning) *छल्ले"* (Seven spanning loops) *। ग्राही प्रोटीन इस प्रकार तहों में लगा होता है कि यह सात छल्लों की रचना करता है। हर विकुंच छल्ले का एक विशेष कार्य होता है। इन ग्राहियों का सम्बन्ध* "G-Protein" (Guanyl-Necleotide Binding Protein) *से जोड़ा गया है जो ग्राही और आन्तरिक कोषाणु के बीच सम्पर्क स्थापक का कार्य करता है। रसायन ग्राही में अन्तर्प्रक्रिया पर इतने अधिक शोध करने के बाद भी ये बात स्पष्ट नहीं हो पाई कि इन महत्वपूर्ण ग्राहियों को इस प्रकार क्यों तहबद्ध किया गया है कि ये हमेशा सूक्ष्म आवरण* (Membrane) *में सात छल्ले बनाते हैं।*

दिसम्बर 1988 में डॉ० मिश्रा ने आगे कहा, "मैंने परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का सहजयोग पर एक प्रवचन सुना और तुरन्त कोषाणु-झिल्ली में रहस्यमय व्यवस्था समझ आने लगी। सहजयोग में बताए गए मानव शरीर के अन्दर बने सात सूक्ष्म चक्रों के वर्णन में न केवल ग्राही प्रोटीन के सात विकुंचित प्रदेशों (Spanning domains) *की व्याख्या है बल्कि औषध शास्त्र और दैहिकी* (Pharmacological and Physiological) *सिद्धान्त, उदाहरण के रूप में परानुकम्पी एवं अनुकम्पी नाड़ी प्रणाली* (Parasympathetic and Sympathetic Nervous System) *की भी व्याख्या है। आज भी चिकित्सा वैज्ञानिक इस बात को निश्चित रूप से नहीं जानते कि किस प्रकार ये दो प्रणालियाँ परस्पर सम्पर्क करती हैं। सहजयोग के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के बाद ही मैं इन दो प्रणालियों में परस्पर सम्पर्क को महसूस कर पाया और मैं इन दोनों प्रणालियों में परस्पर समन्वयन तन्त्र को जान पाया।"*

गुर्दा ग्रन्थि ग्राही (Aderenergic Receptors) *के विकुंचित* (Spanning) *छल्लों की शरीर के सात चक्रों से समानता है। युगों पूर्व इन चक्रों का वर्णन हमारे उपनिषदों तथा मार्कण्डेय पुराण में किया गया था। शायद ये कहना भी तर्कसंगत होगा कि ग्राही* (Receptor) *स्वयं भी सात विकुंचित छल्लों के आकार में, सात सूक्ष्म चक्रों का लघु प्रतिनिधित्व* (Mini Representation) *है। इन सात-छल्लों में से किसी एक में भी परिवर्तन या विकृति कोषाणु के कार्य में परिवर्तन या असामान्यता के लिए जिम्मेदार हो सकती है, जो मानसिक, स्नायु सम्बन्धी या मनौदैहिक व्याधियों का कारण बन सकती है।*

(ज्योतित चिकित्सा विज्ञान, प्रो. डॉ० यू.सी. रॉय, फरवरी-1993, पृ.सं. 150-153)

★ आत्म-साक्षात्कार के पश्चात् आप चक्रों की तरह से घूमते हुए बहुत से छल्ले देख सकते हैं

"भौतिक विज्ञान में शायद आपने इसके बारे में न सुना हो। आत्मा सभी तत्वों के कारण-कार्य-सम्बन्धों से लीला कर रही है। छल्लों के रूप में ये हमारे शरीर के पिछले हिस्से से जुड़ी है। सभी चक्रों और पावन अस्थि में इसका निवास है। ये सात छल्ले बनाती है। आत्म-साक्षात्कार के पश्चात् आप चक्रों के इर्द-गिर्द घूमते हुए और एक छल्ले को दूसरे छल्ले में जाते हुए बहुत से छल्लों को देख सकते हैं। कभी-कभी तो एक छल्ले में बहुत से छल्ले और कभी कभी एक छल्ले में चिंगारियों जैसे अर्ध विराम चिन्ह (Commas) *भी आप देख सकते हैं। ये चैतन्य होता है। ये मृत आत्माएं होती हैं। ये आत्माएं हमारे ऊपर ग्राही-क्षेत्र* (Receptor Area) *में प्रतिबिम्बित होती हैं। हाल ही में अमेरिका में एक कोषाणु* (Cell) *के ग्राही* (Receptor) *का फोटो लिया, ये बिल्कुल वैसा ही दिखाई देता है जैसा आप आत्म-साक्षात्कार के बाद देखते हैं। परन्तु जब व्यक्ति पर कोई अन्य आत्मा बैठती है तो वह* (Cell) *कोषाणु पर प्रतिबिम्बित होती है, यह ग्राही* (Receptor) *को भी प्रभावित करती है। ये आत्मा किसी भी एक चक्र से जुड़ सकती है या सभी चक्रों से। ये कोषाणुओं को भी प्रभावित करती है जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति अचेतनता की ओर जाता है और ये मादकता, मिर्गी, मस्तिष्क रोग तथा कैंसर आदि रोगों का कारण बनती है। यदि ये वायरस हों तो इतने हानिकारक नहीं होते, केवल एक ही वायरस प्रवेश करके प्रभावित करेगा, परन्तु ये वायरस भी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक यात्रा करते हैं। परन्तु यदि मानव आत्मा की पकड़ होगी तो बहुत कठिनाई होती है।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, चिकित्सा सम्मेलन, मास्को, रूस 29.06.1990)

★ ऊर्जाणु शक्ति (Quantum Energy):- प्रवाहित होते हुए ये दिखाई नहीं देती परन्तु इसमें प्रकाश है

"जब कुण्डलिनी सहस्रार का भेदन करती है, तो व्यक्ति का योग दिव्य प्रेम-सर्वव्यापी शक्ति से हो जाता है। परन्तु चैतन्य-लहरियाँ क्या हैं? आप यदि अपना चित्त सहस्रार पर

रखें तो एक अत्यन्त सूक्ष्म ऊर्जा प्रवाहित होने लगती है, ये ऊर्जाणु शक्ति (Quantum Energy) *कहलाती है। प्रवाहित होते हुए यह अदृश्य होती है परन्तु इसमें प्रकाश है। प्रेम की ये आध्यात्मिक शक्ति बण्डलों में प्रवाहित होती है। ये साकार रूप में कार्य करती हैं - परमात्मा से मेरा सम्बन्ध। ये बस कार्य करती हैं— आप अपनी शक्तियों को कार्यान्वित कर सकते हैं। सभी लोगों को आत्म-साक्षात्कार दिया जाना है— आत्म-साक्षात्कार— सम्पूर्ण ज्ञान।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबैला 06.05.2001)

★ ये स्वयं चतुर्भुजी स्वास्तिक-अबोधिता के प्रतीकों का रूप धारण करते हैं

"...आप एक नई चेतना प्राप्त करते हैं, नई चेतना जिसकी वर्षा आपके तालू क्षेत्र पर होती है। इन चैतन्य किरणों की कार्यशैली अत्यन्त दिलचस्प है। प्राय: ये छोटे-छोटे अर्धबिन्दुओं का रूप धारण करते हैं परन्तु ये बहुत से अन्य आकार भी धारण करते हैं। अबोधिता के प्रतीक चतुर्भुजी स्वास्तिकों का रूप भी ये धारण करते हैं या हमारे अस्तित्व के प्रतीक ओंकार का रूप भी। स्वास्तिक रूप धारण करके ये हमारे तन्त्र के बाएं पक्ष का पोषण करने का प्रयत्न करते हैं और ओंकार रूप में ये हमारे दाएं पक्ष को पोषण प्रदान करते हैं। इस प्रकार ये हमारे बाएं और दाएं अनुकम्पी तन्त्रों का पोषण करते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Ischia , इटली 05.05.1991)

★ ...उन्होंने प्रकाश की इन चमत्कारिक लहरों को देखा है

"ये ज्ञान समझने में अत्यन्त सुगम है। नि:सन्देह ये अत्यन्त सूक्ष्म है। जैसा मैंने आपको बताया, ये लोग अब उस ऊर्जाणु सिद्धान्त की बात कर रहे हैं, ये वैज्ञानिक, कि इन्होंने प्रकाश की इन चमत्कारिक लहरियों को देखा है और ये इनके विषय में कुछ खोज निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं।" ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबैला - 03.06.2001)***

★ हमारे अन्दर से चैतन्य लहरियाँ तभी बहने लगती हैं जब हमारी कुण्डलिनी ब्रह्मरन्ध्र को पार कर लेती हैं

"हमारे हृदय में प्रकाश की एक टिमटिमाती लपट है जो हर समय जलती रहती है। ये आत्मा है - हमारे हृदय में परमात्मा का प्रतिबिम्ब। कुण्डलिनी जब उठती है तो ये ब्रह्मरन्ध्र को खोलती है। सदा शिव का स्थान, उनकी पीठ सहस्रार में है। परन्तु आत्मा रूप में सदाशिव, हृदय में प्रतिबिम्बित हैं। पीठ का सृजन इसलिए किया गया है क्योंकि यह सर्वव्यापी सूक्ष्म ऊर्जा को ग्रहण करती है।

इसी प्रकार से मस्तिष्क में भी पीठ है और सदाशिव की पीठ ब्रह्मरन्ध्र में है जिसे खोला जाता है ताकि सूक्ष्म वाहिका के माध्यम से सूक्ष्म तत्व हृदय में प्रवेश कर सके। गैस के प्रकाश की तरह इसमें लपट होती हैं। गैस जब खुलती है तो प्रकाश दैदीप्यमान होता है। चैतन्य लहरियाँ हमारे अन्दर से बहने वाली सूक्ष्म ऊर्जा का प्रवाहित होना है। कुण्डलिनी जब ब्रह्मरन्ध्र

से पार होती है केवल तभी ये चैतन्य- लहरियाँ हमें पूर्ण सन्तुलन प्रदान करती हैं, हमारी शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक समस्याओं का निवारण करती हैं। ये हमें परमात्मा से पूर्ण आध्यात्मिक एकाकारिता का विवेक प्रदान करती हैं। ये हमें परमात्मा से पूर्णतः एकरूप कर देती हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, 1980)

★ **वे इतने अन्तर्बेधी (Penetrating) हैं कि हर चीज में व्याप्त हो जाते हैं-पदार्थों, पशुओं, मानवों तथा साक्षात्कारी लोगों में भी वे प्रवेश कर जाते हैं।**

*"श्री कृष्ण का एक अन्य महान गुण ये है, कि वे गोचर हैं अर्थात् उनका तत्व 'आकाश' है और वे हर चीज में प्रवेश कर जाते हैं। जैसे आप कहते हैं वे अणु, रेणु, परमाणु तीनों प्रकार के अणुओं में प्रवेश कर सकते हैं। छोटे-छोटे अणुओं का भेदन करके वे उन्हें हिलाते हैं। अब यदि आप किसी वैज्ञानिक से पूछें तो वह बताएगा कि अणु में असंतुलित और संतुलित प्रकार का चैतन्य (*Vibrations*) है। किस प्रकार यह ऊर्जा वहाँ बनी हुई है? क्योंकि वे (हनुमान) हर चीज में प्रवेश कर सकते हैं, इस कारण से वे इतने बेधनशील हैं कि वे हर चीज में व्याप्त हो जाते हैं। पदार्थों में, पशुओं में, मानवों में आत्मसाक्षात्कारी लोगों में वे प्रवेश कर जाते हैं। भौतिक पदार्थों में यह मात्र चैतन्य है और पशुओं में पथप्रदर्शक शक्ति है। यह ज़बरदस्त पथप्रदर्शक शक्ति है।*

जैसे साइबेरिया से उड़कर पक्षियों का आस्ट्रेलिया आना; उन्हें दिशा का ज्ञान कौन देता है? इसके बारे में हम कभी नहीं सोचते। पशु बहुत सारे कार्य करते है, उनमें इतनी सूझ-बूझ, विवेक होता है—जैसे जंगल में शेर। सभी पशु जानते हैं कि जंगल में शेर है, अपने राजा का सम्मान करते हुए वे शान्त हो जाते हैं। शेर किसी एक गाय या पशु का वध करता है, सभी पशु उसका सम्मान करते हैं। जिस भी पशु का वध वह करता है वह एक दिन तक पड़ा रहता है, कोई उसे छूता नहीं, मर्यादा देखें! अगले दिन वापिस आकर शेर इस शिकार को भरपेट खाता है, फिर शेरनी खाती है, फिर बच्चे खाते हैं। जब शेर परिवार खा चुकता है तब मर्यादा के अनुसार बाकी के पशु उस शिकार को खाते हैं। अन्त में कौए इसे खाते हैं, जो, मुझे कहना चाहिए, शाकाहारी हैं। परन्तु मर्यादा को बनाए रखा जाता है। शेर यदि बैठा हुआ हो तो आप अन्दाज़ा लगा सकेंगे क्योंकि जंगल में जरा सा भी शोर नहीं होगा।

अतः पशुओं का पथप्रदर्शन होता है और वे मर्यादा को बनाए रखते हैं। वे मनुष्यों की तरह से नहीं हैं। उदाहरण के रूप में, साँप साँप है और शेर शेर है। परन्तु मनुष्य साँप भी हो सकता है, शेर भी हो सकता है और चीता भी। एक साथ कोई भी चीज। वे कुत्ते भी हो सकते हैं, तुच्छ कीड़े हो सकते हैं, कुछ भी हो सकते हैं। बहुत सी चीजों का मिश्रण क्योंकि वे इन योनियों में से निकलकर आए हैं, जैसे कहते हैं कि इन जातियों में से। अतः सभी प्रकार का सम्मिश्रण, क्रम परिवर्तन और संयोजन भूतकाल (संस्कारों में) के अन्दर विद्यमान है। कोई यदि आपको आपके अवचेतन में ले जा सके तो, मैंने ऐसा देखा है, लोग कुत्तों की तरह से भौंकने लगते हैं,

कभी शेरों की तरह से बर्ताव करते हैं, ऐसा हो सकता है। ये सब हमारे अन्दर निहित है, भूतकाल, जिसमें ये सभी जटिल व्यक्तित्व निहित हैं। कुछ लोग उल्लुओं की तरह से हैं, हमेशा गम्भीर, कुछ बाज की तरह से हैं और कुछ चहचहाते पक्षियों की तरह से। परन्तु उनमें इतने सम्मिश्रण हैं कि उन्हें जरा सा सरल बनाना भी कठिन है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यू जर्सी, यू.एस.ए. 02.10.1994)

★ ...सहस्रार को आप दहकते हुए शोलों के समूह के रूप में देख सकते हैं।

"यह अन्तिम चक्र, सहस्रार (मस्तिष्क) के तालू क्षेत्र में विद्यमान है। हमारा सिर नारियल की तरह से है। नारियल पर बाल होते हैं, फिर सख्त ढिबरी (Hard nut) होती है, इसके बाद काले रंग की परत होती है, और अन्दर नारियल की सफेद गरी होती है तथा अन्दर के खाली स्थान में पानी होता है। हमारा मस्तिष्क भी इसी प्रकार बनाया गया है। इसी कारण से नारियल को श्री फल कहा जाता है अर्थात् 'श्री शक्ति' का फल। 'श्री' शक्ति दाईं ओर की शक्ति है और 'ललिता' बाईं ओर की शक्ति है। अतः हमारे दो चक्र हैं—बाईं ओर पर 'ललिता चक्र' है और दाईं ओर 'श्री चक्र'। ये दोनों चक्र दाईं ओर की महासरस्वती शक्ति और बाईं ओर महाकाली शक्ति को कार्यान्वित कर रहे हैं। कुण्डलिनी मध्य शक्ति है। जागृत होकर भिन्न चक्रों का बेधन करके इसे तालू क्षेत्र में प्रवेश करना होता है और सात पीठों—सात चक्रों की पीठों को—ज्योतिर्मय करना होता है। अतः छः चक्रों का बेधन करके यह तालू क्षेत्र में प्रवेश करती है और मस्तिष्क स्थित सात पीठों को ज्योतिर्मय करती है। ये पीठ तालू क्षेत्र की मध्य रेखा के साथ-साथ स्थित है। तो हम पीछे से इसका आरम्भ करते हैं, यहाँ पीछे (सिर के) मूलाधार चक्र है। इसके इर्दगिर्द (कनपटियों का क्षेत्र) स्वाधिष्ठान है, फिर नाभि, फिर हृदय, फिर विशुद्धि और उसके बाद आज्ञा। तो ये छहों चक्र मिलकर सातवाँ चक्र बनाते हैं। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है जिसका ज्ञान हमें होना चाहिए। अब 'श्री' चक्र दाईं ओर की गतिविधि है और 'ललिता' चक्र बाईं ओर की। जब तक कुण्डलिनी नहीं उठती तब तक हम अपनी दाईं ओर की, शारीरिक और मानसिक गतिविधियों से कार्य करते हैं। तो हमारा मस्तिष्क दाईं ओर की (राजसिक) गतिविधियाँ कर रहा है, इसीलिए यह 'श्री फल' की तरह से है।

सहस्रार वास्तव में इन छः चक्रों का संग्रह है और यह खाली स्थान है। इसके दोनों ओर एक हज़ार नाड़ियाँ हैं। प्रकाश जब तालू क्षेत्र को ज्योतिर्मय करता है तो ये नाड़ियाँ भी प्रकाशरंजित हो उठती हैं और आप इन्हें लपटों के रूप में देख सकते हैं—जलते हुए बहुत ही कोमल शोले जिनमें ये सातों रंग होते हैं जो इन्द्रधनुष (VIBGYOR) में देखे जा सकते हैं। परन्तु अन्ततः अन्तिम चक्र पुनः संघटित हो कर यह पारदर्शी शोले की तरह बन जाता है। ये सभी सातों ज्योतियाँ अन्ततः पारदर्शी हो जाती हैं। अतः सहस्रार की, जैसे कहा जाता है, एक हजार पंखुड़ियाँ हैं। परन्तु यदि आप इसे आड़ा (Transverse) या सपाट (Horizontal) खण्डों में काटें तो आप देख पाएंगे कि ये नाड़ियां तालू क्षेत्र के साथ-साथ इसी प्रकार बनी

होती है। सभी पंखुड़ियों की तरह से हैं और यदि आप इन्हें ऊपर से नीचे की ओर काटें तो पाएंगे कि नाड़ियों के हर गुच्छे में बहुत सी नाड़ियाँ होती हैं। अतः ज्योतिर्मय होने पर सहस्रार को जलते हुए शोलों के समूह के रूप में देखा जा सकता है।

यह अत्यन्त गहन विषय है। मस्तिष्क में जब कुण्डलिनी का प्रकाश आता है तो मस्तिष्क के माध्यम से सत्य को समझा जा सकता है। इसी कारण ये यह 'सत्यखण्ड' कहलाता है अर्थात् मस्तिष्क द्वारा समझे गए सत्य को आप देखने लगते हैं क्योंकि अभी तक मस्तिष्क द्वारा जो भी कुछ आप देखते थे वह सत्य नहीं था। जो भी कुछ अभी तक आपने देखा वह मात्र बाह्य पक्ष था। जैसे आप रंग देख सकते हैं। रंगों का भिन्न सौन्दर्य देख सकते हैं। चीज की गुणवत्ता देख सकते हैं। परन्तु ये नहीं देख सकते कि किसी सन्त ने इस कालीन का प्रयोग किया है या नहीं! आप ये भी नहीं बता सकते कि इसे किसी असुर ने बनाया या दिव्य पुरुष ने। आप ये भी नहीं बता सकते कि यह व्यक्ति अच्छा है या बुरा। आप ये नहीं कह सकते कि यह देवी-देवता स्वयंभू है या नहीं। अपने सम्बन्धी के विषय में भी आप नहीं बता सकते कि ये अच्छा सम्बन्धी है या बुरा। या ये कैसा व्यक्ति है, या वह अच्छे लोगों के पास जाता है या बुरे, या उसका सम्बन्ध अच्छे पक्ष से है या बुरे से! यहाँ अच्छे का अर्थ दिव्य है। तो अपने मस्तिष्क द्वारा आप दिव्यता के विषय में कुछ नहीं जान पाते, कुछ भी नहीं। किसी भी व्यक्ति की दिव्यता के विषय में जान पाना तब तक असम्भव है जब तक कुण्डलिनी इस भाग में नहीं पहुंच जाती, इस तालू क्षेत्र में। आप ये नहीं समझ सकते कि कोई व्यक्ति सच्चा है या नहीं, कोई गुरु सच्चा है या नहीं। क्योंकि दिव्यता को मस्तिष्क के माध्यम से तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक आत्मा का प्रकाश इसमें चमकने न लगे।

आत्मा की अभिव्यक्ति हृदय में होती है, यह हृदय में प्रतिबिम्बित होती है। हम कह सकते हैं कि आत्मा का केन्द्र हृदय में है। परन्तु वास्तव में आत्मा की पीठ यहाँ ऊपर है (श्रीमाताजी अपना दायाँ हाथ सहस्रार पर रखती हैं), और यही आत्मा है जिसे हम 'सर्वशक्तिमान परमात्मा' कहते हैं; जिसे आप 'परवरदिगार' कहते हैं। परमात्मा को आप सदाशिव कहकर बुलाते हैं, अल्लाह कहते हैं, रहीम कहते हैं तथा अन्य बहुत से नामों से बुलाते हैं जिनसे भगवान को बुलाया जाता है। कुछ लोग 'निरंजन' कहते हैं, 'निराकार' कहते हैं, बहुत से ऐसे शब्दों से जिनका आरम्भ निरा, निः से होता है।

शरीर के हर चक्र पर आपको भिन्न प्रकार का आनन्द प्राप्त होगा। जब कुण्डलिनी उठती है और जो भिन्न प्रकार के आनन्द आपको प्राप्त होते हैं, हर चक्र पर उनका भिन्न नाम है। परन्तु जब कुण्डलिनी सहस्रार पर आती है तो जो आनन्द प्राप्त होता है उसका नाम 'निरानन्द' है। निः का अर्थ आनन्द के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, निरानन्द! आश्चर्य की बात है कि मेरा नाम भी 'नीरा' है—मेरे परिवार के लोग मुझे 'नीरा' कहकर बुलाते थे। नीरा का अर्थ 'मेरी', 'मरिया' भी है क्योंकि इसका अर्थ है समुद्री बेड़ा (Marine)। नीर अर्थात् जल, संस्कृत भाषा में जल को नीर कहते हैं। मस्तिष्क में यह 'निरानन्द' कहलाता है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, हनुमान रोड, नई दिल्ली, 04.02.1983)

★ **बिल्कुल आर्किमिडीज (Archimedes) के सिद्धान्त की तरह से है यदि आपको आर्किमिडीज के सिद्धान्त का ज्ञान है**

"...श्री राम के प्रति वे इतने समर्पित थे कि बड़े होने तक उन्हें नौ सिद्धियाँ प्राप्त हो चुकी थीं, 'नवधा सिद्धियाँ'—उन्हें नौ सिद्धियाँ मिल गईं थीं। नौ सिद्धियाँ इस प्रकार से हैं: वे विशालकाय बन सकते थे, अपना वजन इतना बढ़ा सकते थे कि उन्हें कोई उठा न सके, इतने सूक्ष्म हो सकते थे उन्हें कोई देख न सके। वे इतने सूक्ष्म हो सकते थे!

उन्हें नौ सिद्धियाँ प्राप्त हो गईं। जिस व्यक्ति का दायां पक्ष बहुत अधिक बढ़ जाए (व्यक्ति आक्रामक हो जाए) तो वे उसे इन नौ सिद्धियों से नियंत्रित करते हैं। किसी ऐसे व्यक्ति को आप किस प्रकार नियंत्रित करेंगे जो जीवन में बहुत तेज दौड़ा चला जा रहा हो? इस गतिविधि को नियन्त्रित करने के लिए श्री हनुमान ऐसा कुछ करते हैं कि उसे अपनी गति घटानी पड़े। वे उसके पैर भारी कर देते हैं, और अब वह बहुत अधिक कार्य नहीं कर पाता, या वे उस व्यक्ति के हाथ बहुत भारी कर देते है और वह अपने हाथों से अधिक काम नहीं कर पाता। बहुत अधिक आक्रामक व्यक्ति को वे अत्यन्त आलस्यमय भारीपन दे सकते हैं। उन्हें एक अन्य अत्यन्त रुचिकर सिद्धि भी प्राप्त है—वे अपनी—उनके पास बहुत अधिक शस्त्र नहीं हैं, उनके हाथों में सिर्फ एक गदा है और अपनी पूँछ को वे किसी भी सीमा तक लम्बा कर सकते हैं तथा पूँछ से लोगों को नियन्त्रित कर सकते हैं, हाथों का उन्हें उपयोग करना ही नहीं पड़ता। अपने स्थान पर बैठे हुए वे कहीं भी अपनी पूँछ पहुँचा सकते हैं। यदि वे चाहें तो अपनी पूँछ का पर्वत बनाकर उस पर बैठ सकते हैं। इस प्रकार, आप कह सकते हैं कि उनके पास ये सारी बन्दरचालें हैं। ये सारी चालाकियाँ जो उनके अन्दर हैं ये उस व्यक्ति को नियंत्रित करने के लिए हैं जो बहुत आक्रामक हो।

*वे आकाश में उड़ सकते हैं। उनके पंख नहीं हैं फिर भी वे उड़ सकते हैं। इसका अर्थ ये हुआ कि वे इतने विशाल बन सकते हैं कि जितनी हवा वे काटते हैं, उस हवा का वजन उनके अपने वजन से ज्यादा होता है। बिल्कुल आर्किमिडीज के सिद्धान्त की तरह। यदि आपको आर्किमिडीज के सिद्धान्त का ज्ञान हो तो आप समझ सकते हैं कि वे इतना विशाल रूप धारण करते हैं कि उनका शरीर हवा में तैरने लगता है। आप कह सकते हैं कि एक नाव की तरह से, और वे हवा में उड़ सकते हैं। हवा में उड़कर वे आकाश तत्व के माध्यम से संदेश एक से दूसरे तक ले जा सकते हैं। आकाश तत्व का सूक्ष्म श्री हनुमान जी के नियन्त्रण में है। वे ही इसे नियंत्रित करते हैं या वे आकाश तत्व के, आकाश तत्व की सूक्ष्मता के स्वामी हैं या कह सकते हैं कि आकाश तत्व के कारणत्व (*Causal*) के, और इसी के माध्यम से वे संचार (*Communicate*) करते हैं। जो भी संसर्ग आप देखते हैं जिन्हें आप अपने अन्दर पाते हैं—जिन्हें पीयूष (*Pituitary*) ग्रन्थि उपयोग करती है, वो वाहिकाविहीन ग्रन्थियाँ भी श्री हनुमान जी की गतिविधि के माध्यम से कार्यान्वित हैं। क्योंकि वे निराकार में जा सकते हैं।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी,** Schwetzingen**, जर्मनी, 31.08.1990)

★ ...एक प्रकार से स्वप्न भी आपको कुण्डलिनी से आते हैं।

"एक अन्य नज़रिए के लिए, मैं युँग के दृष्टिकोण से बताना चाहूंगी कि उन्होंने स्वप्नों को अचेतन की अभिव्यक्ति के बहुत विशाल अनुभवजन्य सत्य की अभिव्यक्ति के रूप में अपनाया। परन्तु होता क्या है? किस प्रकार आपको स्वप्न आते हैं? आइए देखते हैं। स्वप्न आपको, एक प्रकार से, कुण्डलिनी से आते हैं। तो होता क्या है—कुण्डलिनी मध्य मार्ग से जुड़ी हुई नहीं है, परन्तु यह लेखा-जोखा है, हमारा बीता हुआ समय है, हमारा पूरा लेखा-जोखा इसके अन्दर है जैसे टेपरिकार्डर में टेप होता है। ऐसे ही वहाँ पर है। जब आप बहुत गहन सुषुप्ति में चले जाते हैं, यह अवस्था आपके अन्दर बहुत गहराई में है, तब नीचे से प्रतीक उभरते हैं और नीली लाइन (ईड़ा नाड़ी) से होते हुए आपके मस्तिष्क से गुजरते हैं, और इस प्रकार से आप स्वप्न देखने लगते हैं। परन्तु जो आप देखते हैं उसमें से गुजरते हुए आप अपने पूरे अचेतन क्षेत्र में से गुजरते हैं, अतः सारे स्वप्न विकृत हो जाते हैं। उनमें अजीबोगरीब प्रतीकात्मकता आ जाती है। कभी-कभी तो आपको समझ ही नहीं आता कि क्या हो रहा है, यह एक प्रकार की मिली-जुली अभिव्यक्ति बन जाती है। हो सकता है इस पर निर्भर करना, अच्छा न हो।

इसकी अपेक्षा हमें चाहिए कि वास्तविकता तक पहुँचें। वास्तविकता ये है कि आप सामूहिक-चेतन हो जाते हैं और आपके अन्दर चैतन्य-चेतना विकसित हो जाती है जिसके माध्यम से आप सर्वव्यापक शक्ति को महसूस कर सकते हैं। परन्तु इस अहसास की गहनता मस्तिष्क की चेतना के अनुरूप होती है। सोचने की बात ये है कि वास्तव में यह करता क्या है? जब घटित होता है तो क्या घटित होता है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, सी.जी. युंग, सोसायटी सभागार, अमरीका, 16.09.1983)

पृथ्वी पर प्रकट हुए कुछ स्वंयभुओं का भूगोल

पृथ्वी माँ की गोद में भूमि तथा जल तत्व से प्रकट हुए कुछ विशेष स्वयंभू

★ **पृथ्वी माँ के गर्भ से स्वत: जन्मी चीजें ही पृथ्वी माँ का सृजन हैं—सभी स्वयंभू।**

श्रीमाताजी वर्णित पृथ्वी (स्वर्ग) पर प्रकट हुए कुछ दिलचस्प स्थान जिन पर पृथ्वी माँ और जल तत्व ने ऐसे स्वयंभुओं की रचना की है जिनसे चैतन्य आत्मसात किया जा सकता है : "दस धर्मादिशों में कहा गया है कि पृथ्वी और स्वर्ग द्वारा जिसका सृजन किया गया हो उनका पुनर्सृजन और पुनरुत्पादन नहीं किया जाना चाहिए, उनकी पूजा की जानी चाहिए। अत: अवतरणों का सृजन स्वर्ग से होता है। केवल इस आधुनिक युग में ही इन अवतरणों के फोटो ले पाना सम्भव हुआ है। बीते हुए युग में ऐसा न हो पाता था। जिस चीज का सृजन पृथ्वी माँ ने किया है, जो पृथ्वी माँ के गर्भ से निकली है अर्थात स्वयंभू है, उसका सृजन पृथ्वी माँ ने ही किया है। ये स्वयंभू हमें सर्वत्र मिलते हैं। कुछ आत्म-साक्षात्कारी लोगों ने भी अत्यन्त सुन्दर मूर्तियाँ बनाई हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, मैडरिड, स्पेन, 24.05.1986)

★ **उन्होंने पृथ्वी माँ के अन्दर कुण्डलिनी का सृजन किया और पृथ्वी माँ के बाहर श्री गणेश का**

"परन्तु हम उस बिन्दु पर आएंगे जहाँ आदिशक्ति ने पृथ्वी माँ पर कार्य आरम्भ किया। पहली चीज़ जो हमें जाननी आवश्यक है वो ये है कि उन्होंने पृथ्वी माँ के अन्दर ही कुण्डलिनी का सृजन किया और पृथ्वी माँ के बाहर श्री गणेश का। ये अत्यन्त दिलचस्प बात है। इस प्रकार पृथ्वी माँ हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण बन जाती हैं। हम यदि पृथ्वी माँ का सम्मान करना नहीं जानते तो हमें अपना सम्मान करना भी नहीं आता। नि:सन्देह कुण्डलिनी आपके अन्दर आदिशक्ति की अभिव्यक्ति हैं। आपके अन्दर यह आदिशक्ति का प्रतिबिम्ब है। परन्तु जैसा आप जानते हैं भिन्न स्थानों, देशों तथा नगरों में भी चक्रों तथा आदिशक्ति के सृजन के रूप में पृथ्वी माँ में इस प्रतिबिम्ब की अभिव्यक्ति हुई है। सर्वप्रथम एक अत्यन्त पावन पृथ्वी माँ का सृजन आवश्यक था जिस पर मनुष्य जन्म ले सके।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, लीग्रे, 25.05.1997)

★ **क्या हम कह सकते हैं कि अष्टविनायक जीवन्त देव हैं?**

निर्विकल्प अवस्था में सामूहिक चेतना सूक्ष्मतम हो जाती है, उस अवस्था में आप चीज़ों के गहन महत्व को समझ सकते हैं क्योंकि तब वास्तविकता स्पष्ट होने लगती है.....

आप उसे किसी देवी-देवता की प्रतिमा दें और उसके विषय में पूछें कि ये ठीक है या गलत? हो सकता है वो कह दे कि ये ठीक नहीं है। आप सूक्ष्म चैतन्य लहरियाँ महसूस कर सकते हैं चाहे यह धर्म के विषय में हों चाहे वैसे। क्या हम कह सकते हैं कि अष्ट-विनायक

जीवन्त देव हैं? आप इस बात को कैसे जान सकते हैं? ज्योतिर्लिंग जीवन्त हैं? इन सभी महान् आत्माओं के समन्वय के बिना आप इस बात को कैसे जान पाएंगे और किस प्रकार उनका आँकलन करेंगे? इसलिए आवश्यक है कि आप आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करें।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, नई दिल्ली, भारत, फरवरी 15, 1977)

★ मेरे फोटो पृथ्वी माँ द्वारा सृजित बहुत से स्वयंभुओं से भी कहीं अधिक शक्तिशाली हैं।

"पहले फोटोग्राफ नहीं होते थे। मेरे जीवन काल में ही आपको सूचित करने के लिए फोटोग्राफ आरम्भ हुए। इन्हें भी आपने स्वयं विकसित किया है, नि:सन्देह आदिशक्ति की मदद से। इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु आप ही ने इसे विकसित किया है। मैं स्वयं भी नहीं जानती थी कि ये फोटोग्राफी मुझे इस प्रकार से पकड़ पाएगी! मैं स्वयं भी नहीं जानती थी। आप हैरान होंगे कि मुझे लगने लगा कि ये फोटोग्राफ प्रतिमाओं से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं, उन प्रतिमाओं से जो मैं पहले थी। क्योंकि ये फोटोग्राफ मेरे वर्तमान के हैं, ये मेरा वर्तमान अस्तित्व हैं। मेरे फोटोग्राफ इतने अच्छे हैं कि मैं हैरान थी कि इनसे चैतन्य और जीवन-प्रवाह हो रहा है...।

...आप सोचते हैं कि फोटोग्राफ मेरा प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। मेरे विचार से आप इसे पूरी तरह से अभिव्यक्त नहीं कर रहे हैं। मैं हैरान थी कि पृथ्वी माँ द्वारा सृजित सारे स्वयंभुओं को भी यदि मिला लिया जाए तो मेरे फोटोग्राफ उनसे भी कहीं अधिक शक्तिशाली हैं क्योंकि फोटोग्राफी में बहुत से तत्व हैं। उदाहरण के रूप में, आप देखें कि इसमें प्रकाश तत्व है, जल तत्व है, पृथ्वी तत्व है और वायु तत्व है। यदि वायु तत्व ठीक न हो तो आप फोटो नहीं ले सकते।

इसमें आकाश तत्व भी है। इन सभी तत्वों के साथ आप प्रतिमा नहीं बना सकते। इसमें आकाश तत्व है क्योंकि फोटोग्राफ को आप प्रसारित कर सकते हैं, परन्तु प्रतिमा को प्रसारित नहीं किया जा सकता, प्रतिमा के फोटोग्राफ को प्रसारित किया जा सकता है। तो इसमें आकाश तत्व भी है। इस प्रकार फोटोग्राफ प्रतिमा से कहीं अधिक शक्तिशाली है..।

अत: प्रतिमा और फोटोग्राफ में बहुत अन्तर है क्योंकि मेरा चित्त वहाँ (फोटोग्राफ में) है। नि:सन्देह पृथ्वी माँ द्वारा सृजित प्रतिमाओं में भी चैतन्य होता है और वो दर्शाती भी हैं कि उनमें चैतन्य है परन्तु वे आपकी कुण्डलिनी जागृत नहीं कर सकतीं जो मेरा फोटोग्राफ कर सकता है, क्योंकि मेरे फोटोग्राफ के अन्दर मेरी इच्छा भी निहित होती है। प्रतिमाएं ऐसा नहीं कर सकतीं। वे यदि ऐसा कर सकतीं तो सारी पाषाण प्रतिमाएं कर लेतीं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Old Alresford, England 18.05.1980)

★ जो लोग नासिक गए हैं उन्होंने अवश्य सप्तशृंगी देखी होगी

"...इस मातृ सिद्धान्त के विषय में भारत के लोग अत्यन्त विश्वस्त हैं कि माँ ही सभी कार्य करती हैं। और इस प्रकार भारत में बहुत से स्वयंभु हैं अर्थात पृथ्वी माँ द्वारा सृजित चीज़ें। उदाहरण के रूप में हम जानते हैं कि हमारे यहाँ महाराष्ट्र में महाकाली का स्थान है, महासरस्वती,

महालक्ष्मी का स्थान है और आदिशक्ति का भी स्थान हमारे यहाँ है। कुछ लोग, जो नासिक गए थे, उन्होंने अवश्य सप्तश्रृंगी देखी होगी। (आपमें से कितने लोग सप्तश्रृंगी गए हैं? ... बहुत बढ़िया) ये सप्तश्रृंगी आदिशक्ति का प्रतिनिधित्व करती है जो कि उस शक्ति का चौथा आयाम है जो आपको उत्थान प्रदान करती है, और अन्ततः महालक्ष्मी वाहिका (सुषुम्ना के) माध्यम से ही आपको आत्म-साक्षात्कार प्राप्त होता है। ये एक प्रक्रिया है - हर चीज़ का सृजन आदिशक्ति की शक्ति द्वारा होता है। ये बहुत बड़ा कार्य है। पहले किए गए कार्य कठिन न थे क्योंकि प्रकृति के लिए सृजन कार्य करना अत्यन्त सुगम था। पृथ्वी माँ आदिशक्ति से एकरूप है, सारा वातावरण आदिशक्ति से एकरूप है। अतः बिना किसी कठिनाई के वे हर चीज़ का सृजन कर सकीं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली 21.06.1998)

★ ये सप्तश्रृंगी हैं क्योंकि उनके (आदिशक्ति के) सिर पर सात चक्र हैं

वह बहुत बुद्धिमान व्यक्ति था उसने कहा : "नहीं, मैं किसी को नहीं जानता हूँ, मैं आदिशक्ति को जानता हूँ।" और वह उस स्थान पर गया जहाँ आप सप्तश्रृंगी देखने के लिए जाते हैं। वहाँ जाकर उसने देवी की पूजा की। किसी ने भी आज तक आदिशक्ति की पूजा नहीं की थी। लोग जगदम्बा की पूजा करते थे, अन्य सभी की पूजा करते थे। आदिशक्ति जो साक्षात् परमात्मा है उनकी पूजा उसने की। वे (आदिशक्ति) वहाँ प्रकट हुई और उनका मुख बिल्कुल मेरे जैसा था। ये सप्तश्रृंगी हैं क्योंकि उनके सिर पर सात चक्र हैं। 'श्रृंग' अर्थात् सिर के ऊपर, जैसे आप 'शिखर' कहते हैं, चोटी—'सात चोटियाँ।' उनका जन्म सात शिखरों के साथ हुआ था। वे वहाँ आईं, पृथ्वी माँ से प्रकट हुईं, और उसने उनकी पूजा की। पूजा करते ही पूरा स्थान इतना चैतन्यित हो उठा कि श्री शिव भी उसे छू न सके।

तब उसने यह मार्कण्डेय पुराण लिखा। मेरा अभिप्राय ये है कि आदिशक्ति के बारे में लिखने वाले वे पहले पुरुष थे। शंकराचार्य के विषय में जो कुछ भी आप पढ़ते हैं ये सब उन्होंने मार्कण्डेय से लिया। कुण्डलिनी और आत्मसाक्षात्कार के विषय में लिखने वाले वो पहले व्यक्ति थे। वो पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ये सब किया। आज भी लोग कहते हैं कि दो पहाड़ियों के बीच में दूरी है जिसे लोग बैलगाड़ियों द्वारा तय किया करते थे और बैलगाड़ी को दूसरी ओर ले जाया जाता था। अब निःसन्देह आपके लिए ऊपर जाने का स्थान है परन्तु उस समय ऐसा कुछ न था। अतः वे बैलगाड़ी से जाया करते थे और बिना किसी तनाव के बैलगाड़ी आदिशक्ति द्वारा ऊपर ले जाई जाती थी। केवल वही पूर्ण हैं क्योंकि आप जानते हैं कि महाराष्ट्र में हमारे यहाँ महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती तीनों हैं। महाकाली तुलजापुर में हैं, महालक्ष्मी कोल्हापुर में और तीसरी—महासरस्वती माहुर में हैं। माहुर में भी एक पर्वत पर महासरस्वती हैं। और सर्वोपरि आदिशक्ति अर्द्धमात्रा हैं, ये बात है। वास्तव में मार्कण्डेय आदिशक्ति के प्रियतम पुत्र थे क्योंकि उन्हीं के कारण आदिशक्ति अवतरित हुईं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, आस्ट्रिया 09.06.1988)

★ **पुणे में भी सप्तशृंगी हैं, परन्तु सप्तशृंगी केवल वही है जहाँ, नासिक के समीप आप लोग जाते हैं।**

"...इस प्रकार से, मैं कहना चाहूंगी कि भारत को इन चीजों का बहुत बड़ा आशीर्वाद प्राप्त है, परन्तु सन्तों और आम जनता में इतना ज्यादा अन्तर है कि लोग कभी इसे नहीं समझ पाए। लोग जानते हैं कि यह बहुत महान स्थान है। सप्तशृंगी ऐसा ही स्थान है। पुणे में भी सप्तशृंगी हैं, परन्तु वास्तव में सप्तशृंगी केवल वहीं हैं जहाँ नासिक के समीप आप सब लोग जाते हैं, वही स्थान है।" ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, आस्ट्रिया 09.06.1988)***

1. ***अष्ट विनायक**, महाराष्ट्र, भारत – **आठ स्वयंभू श्रीगणेश।***

   (http://www.astavinayaktemples.com) *। रुचिकर बात ये है कि ये अष्टविनायक—आठ गणेश भौगोलिक रूप से पुणे नगर के चहुँ ओर हैं। मानो आठ दिशाओं से माँ कुण्डलिनी की रक्षा कर रहे हों। महाराष्ट्र में प्रकट हुए अष्टविनायक निम्नलिखित हैं:—*

1.	*श्री मोरेश्वर*	*मोरगाँव*
2.	*श्री चिन्तामणि*	*थेऊर*
3.	*श्री सिद्धिविनायक*	*सिद्धतेक*
4.	*श्री महागणपति*	*रंजनगाँव*
5.	*श्री विघ्नेश्वर*	*ओझर*
6.	*श्री गिरिजामाता*	*लेन्याद्री*
7.	*श्री वरदविनायक*	*माद*
8.	*श्री बलालेश्वर*	*पाली*

2. ***सिद्धि विनायक मन्दिर,** मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत — **श्रीगणेश का स्वयंभू (जिसकी स्वयं श्रीमाताजी ने प्राण प्रतिष्ठा की)।***

2ए. ***महालक्ष्मी मन्दिर,** मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत — साक्षात् श्रीमाताजी ने इस मन्दिर में श्रीमहालक्ष्मी, श्री महासरस्वती और श्री महाकाली की प्रतिमाओं को चैतन्यित किया।*

3. **कुण्डलिनी के साढ़े तीन पीठ (श्री आदिशक्ति के स्वंयभू)**

   ***श्री भवानी (महाकाली** – शोलापुर के समीप, तुलजापुर, जिला ओसामाबाद, महाराष्ट्र, भारत,*

   ***श्री महालक्ष्मी** – कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत।*

   ***श्री महासरस्वती** – माहुरगढ़, अकोला के समीप, जिला किनवर, महाराष्ट्र, भारत।*

   ***श्री सप्तशृंगी** – नासिक के समीप, जिला वाणी, महाराष्ट्र, भारत।*

4. **डेल्फी- यूनान- स्वयंभू श्री गणेश। *(अथेना के हाथ में जो कुण्डलिनी है वही आदिशक्ति है)*** *संस्कृत भाषा में 'अथ' का अर्थ है आदि* (Primordial) *। क्योंकि भारतीयों और यूनानी लोगों में कोई सम्बन्ध बाकी न बचा था, इसलिए भाषा का रूपान्तरण न हो पाया*

और लोग अथेना का अर्थ न जान पाए। भारतीय जानते हैं कि ये आदि-शक्ति की अभिव्यक्ति का स्थान है क्योंकि देवीमहात्म्यम में यूनान को 'मणिपुर द्वीप' कहा गया है, अर्थात नाभि चक्र का टापू जिसमें देवी निवास करती हैं। जब मैं अथेना के मन्दिर गई तो पाया कि वहाँ शिशु देवता का एक छोटा-सा मन्दिर है। ये शिशु देवता श्रीगणेश हैं। डेल्फी में कहा जाता है कि यह स्थान पूरे ब्रह्माण्ड की नाभि है। जब मैंने घूमकर देखा तो वहाँ श्री गणेश की प्रतिमा दिखाई दी। आप नाभि हैं। पूरे ब्रह्माण्ड की नाभि में आप बैठे हुए हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, यूनान 1993)

5. **उलूरू तथा मध्य एशिया में चट्टानों में बने स्वयंभू- *स्वयंभू श्रीगणेश।***

6. **मैटरहार्न *(Matterhorn)* स्विटज़रलैण्ड –*श्री गणेश के स्वयंभु।***
(चित्र में देखिए—श्रीमाताजी स्वयंभू के सामने खड़ी हैं)।

7. **स्टोनहैंज, इंग्लैण्ड-** *स्वयंभू श्रीगणेश ("आप नहीं जानते कि परमात्मा ने इस देश में कितना कार्य किया है! उदाहरण के लिए मैं स्टोनहैंज देखने के लिए गई। ये स्टोनहैंज (पाषाण प्रतिमाएं) पृथ्वी माँ की रचना है। आप चैतन्य देख सकते हैं, चैतन्य महसूस कर सकते हैं। इस देश में बहुत से कार्य किए गए हैं। मैं हैरान थी कि किंग्स्टन में भी बहुत चैतन्य है!")*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, किंग्स्टन 11.06.1980)

8. **गणपति पुले- रत्नागिरि, महाराष्ट्र भारत- स्वयंभू श्री गणेश**

भारत में, जैसे आप जानते हैं, ''हम आपमें से कुछ लोगों के साथ गणपति पुले गए, वहाँ श्री गणेश-महागणेश, ईसा-मसीह के रूप में पृथ्वी माँ से प्रकट हुए हैं। शरीर का नीचे का हिस्सा वहाँ दिखाई देता है और पूरा पर्वत उनका सिर है। वहाँ समुद्र का पानी भी मीठा है और मीठे पानी के बहुत से कुएं भी हैं।" ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, मैडरिड, 24 मई 1986)***

9. **अमरनाथ गुफा** — *श्रीनगर, कश्मीर, भारत (जलतत्व)* ***स्वयंभू श्री शिव।***

10. **मक्केश्वर-मक्का- स्वयंभू श्री शिव।** *"...मोहम्मद साहब ने क्यों कहा था कि आपको उस पत्थर की परिक्रमा करनी चाहिए? वहाँ पत्थर की बहुत सी प्रतिमाएं थीं और लोगों ने सभी प्रकार की प्रतिमाओं की पूजा वैसे ही करनी शुरु कर दी थी जैसे भारत में करते हैं। परन्तु ये पत्थर स्वयंभू था। भारतीय धर्म ग्रन्थों में मक्केश्वर शिव का वर्णन किया गया है। भारत में सर्वत्र स्वयंभू शिव हैं, बारह ज्योतिर्लिंग हैं। मेरी बात पर विश्वास करने की आपको जरूरत नहीं है, आप इन्हें देख सकते हैं और चैतन्य लहरियों पर सत्यापन कर सकते हैं कि यह शिव हैं या नहीं। मक्का के काले पत्थर के साथ भी आप ऐसा ही कर सकते हैं। मोहम्मद साहब भी जान गए थे कि ये मक्केश्वर शिव हैं और शिव का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए लोगों को उनकी परिक्रमा करनी चाहिए।* ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, इस्तम्बूल, टर्की, 23.04.2000)***

"...मक्का के विषय में क्या है? मक्का मक्केश्वर शिव हैं—ये शिव हैं। मोहम्मद साहब ने लोगों से पत्थर की पूजा करने को क्यों कहा? वो बुतपूजा में विश्वास नहीं करते थे, मूर्ति पूजा के वे विरुद्ध थे, फिर भी उन्होंने वहाँ मौजूद काले पत्थर की पूजा करने के लिए क्यों

कहा? क्या कारण था? क्योंकि वे इसकी चैतन्य लहरियाँ महसूस कर सके, वे महसूस कर सके कि ये स्वयंभू हैं इसलिए।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, लीग्रे, 25.05.1997)

11. शेर-स्वयंभू (प्रहरी)- वैंकूवर- कनाडा- वैंकूवर की जुड़वाँ पहाड़ी चोटियाँ— *इन पहाड़ियों को* (Lions) *के नाम से जाना जाता है क्योंकि ये इंग्लैण्ड वासियों को लन्दन के ट्रफाल्गर स्क्वैयर में बने शेरों की प्रतिमाओं की याद कराती थीं। यहाँ के मूल निवासी उन्हें प्रहरी* (Sentinels) *कहते थे क्योंकि यह बन्दरगाह और (अब) नगर की रक्षा करते हैं। ये शेर वैंकूवर के उत्तर में है और लगभग पूरे शहर से दिखाई देते हैं। हम जानते हैं कि ये स्वयंभु हैं क्योंकि श्रीमाताजी ने 1980 में अपनी वैंकूवर यात्रा में हमें इनके विषय में पहली बार बताया था।*

12. एल्पस के माऊंट ब्लैंक ***(Mount Blanc) –स्वयंभू (सम्भवत: श्रीगणेश का आज्ञा चक्र)***

13. ओल्गा- आस्ट्रेलिया- *स्वयंभू श्री गौरी।*

14. कन्नाजौहारी- न्यूयार्क, अमेरिका- *स्वयंभू श्री गणेश।*

15. कैलाश पर्वत- भारत- *स्वयंभू श्री शिव*—*"...तो आदिशक्ति का प्रतिबिम्ब, कुण्डलिनी, सर्वप्रथम पृथ्वी माँ पर पड़ा। कुण्डलिनी के विषय में हम कह सकते हैं कि ये आदिशक्ति का एक छोटा सा भाग है या कि ये आदिशक्ति की छोटी सी इच्छा है, उनकी शुद्ध इच्छा। आदिशक्ति इच्छा है, सदाशिव की पूर्ण इच्छा और कुण्डलिनी, आदिकुण्डलिनी, आदिशक्ति की पूर्ण इच्छा है। इसकी प्रथम अभिव्यक्ति पृथ्वी माँ में हुई थी, इस प्रकार से कुण्डलिनी प्रकट हुई कि इसने बहुत बड़ी सीमा तक पृथ्वी माँ के आन्तरिक हिस्से को ठण्डा कर दिया। तत्पश्चात् यह भिन्न चक्रों के रूप में पृथ्वी की सतह पर प्रकट हुई। अत: विराट, पृथ्वी माँ और मानवों में यह जबरदस्त समानता हम देख सकते हैं। यदि आदि कुण्डलिनी ही इन सबमें प्रतिबिम्बित हो रही हैं तो इनमें गहन सम्बन्ध होना भी आवश्यक है। परन्तु मानव ने ये बात नहीं समझी है कि किस प्रकार वह पृथ्वी माँ से जुड़ा हुआ है। पृथ्वी माँ के भिन्न चक्रों में से गुजरती हुई कुण्डलिनी ने अन्तत: कैलाश का भेदन किया। मैं नहीं जानती कि आपमें से कितने लोग कैलाश गए हैं? कैलाश पर्वत से आप ज़बरदस्त चैतन्य लहरियाँ प्रवाहित होते हुए पाएँगे।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, लीग्रे, 25.05.1997)

16. दार्जलिंग- भारत- *स्वयंभू श्रीगणेश (श्रीमाताजी ने इसका वर्णन किया है, हिमालय वर्णन देखें)।*

17. अरुणाचल, तिरुवन्नामलय, तमिलनाडु भारत (स्वयंभू - श्री शिव) — *कहा जाता है कि यह स्वयंभू नहीं है, साक्षात श्री शिव हैं। ये बिल्कुल भिन्न हैं क्योंकि 'अरुणाचल' शब्द का अर्थ है 'शिव'। तिरुवन्नामलय का मन्दिर बहुत प्राचीन है, 1400 वर्ष से भी अधिक। इस मन्दिर में बहुत से सन्तों ने ध्यान धारणा की और यहाँ पर शिव और देवी के स्वयंभू हैं। लोकप्रिय कथा इस प्रकार है कि अहंकार से परिपूर्ण होकर ब्रह्मा और विष्णु जब परस्पर लड़ने लगे तो भगवान शिव अग्निस्तम्भ के रूप में उनके सम्मुख प्रकट हुए और उनके अहंकार को*

शान्त किया तथा उन्हें सच्चा ज्ञान सिखाया। (यह तिरुवन्नामलय में घटित हुआ) जब शक्ति, देवी पार्वती ने ऐसी अवस्था प्राप्त करनी चाही जिसमें उनसे कोई गलती न हो तो भगवान शिव ने उन्हें अरुणाचल भेजा। वहाँ श्री पार्वती को एकरूपता प्राप्त हुई और वे भगवान शिव से एकरूप हो गई। इस प्रकार ब्रह्मा और विष्णु के लिए श्री अरुणाचल गुरु था और पार्वती के लिए यह वह स्थान था जहाँ उनका अलग व्यक्तित्व (द्वैत) समाप्त हो गया। नगर से कुछ किलोमीटर दूर एक प्राचीन मन्दिर है जो हज़ारों वर्ष पुराना है। यह मन्दिर अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके अन्दर स्थापित लिंग का सृजन साक्षात् ब्रह्मा जी ने किया था।

सर्वोपरि, मानव इतिहास की महानतम आध्यात्मिक घटना का एकमात्र साक्षी।

18. नारगोल का महान वृक्ष, गुजरात, भारत

यह वह वृक्ष है जिसके नीचे 5 मई 1970 को श्री माताजी ने आराम किया। ये वृक्ष आज भी दृढ़तापूर्वक खड़ा हुआ है और करुणा पूर्वक छाया प्रदान करने के लिए अपनी डालियाँ फैलाए हुए है। ("...हम सब साधकों के लिए ये महान् दिवस है कि महानतम् आदिमानव का अन्तिम चक्र खोलने का अन्तिम दिव्य कार्य '5 मई 1970' को किया गया, ब्रह्माण्ड में घटित होने वाली आध्यात्मिक घटनाओं में यह महानतम् घटना है। अत्यन्त सावधानी एवं समन्वयपूर्वक ये कार्य किया गया। यह जान पाना मानव बुद्धि से परे की बात है कि स्वर्ग में किस प्रकार चीज़ें कार्यान्वित होती हैं। ये आपका सौभाग्य तथा परमात्मा का प्रेम है कि यह आश्चर्यजनक चमत्कार घटित हुआ। इस घटना के बिना लोगों को सामूहिक आत्म-साक्षात्कार देने की कोई सम्भावना न होती। कहीं इक्के-दुक्के व्यक्ति को ही आत्मसाक्षात्कार दिया जा पाता। इस प्रकार से सामूहिक आत्म-साक्षात्कार सम्भव न होता")। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, ले रेन्सी फ्रांस, 5 मई 1982)***

इससे आगे रूसी सहजयोगियों द्वारा बनाई गई वैबसाइट पर दिए गए इन स्वयंभुओं के कुछ चित्र दिए जा रहे हैं। URL: http//eng.library.sahajyoga.ru/f-indiasva.htm
http://eng.library.sahajyoga.ru/f-sva.htm ●

स्वयंभुओं के चित्र

शेर (प्रहरी) - जुड़वा चोटियाँ वैंकुवर, स्वयंभू

ओल्गा, आस्ट्रेलिया, श्री गौरी स्वयंभू

स्टोनहैंज, यू.के. इग्लैण्ड स्वयंभू-श्री गणेश

उलूरु, आस्ट्रेलिया, श्री गणेश के स्वयंभू

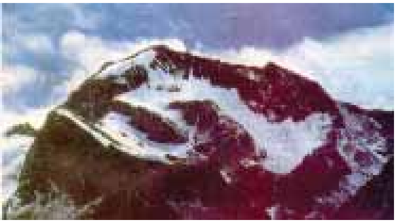

कैलाश के समीप ओम पर्वत
हिमालय, भारत

कन्नाजोहारी, न्यूयार्क, यू.एस.ए., गणेश स्वयंभु

नारगोल का महान वृक्ष, गुजरात, भारत,
सहस्रार भेदन का स्थान 5 मई 1970

मैटरबोर्न, स्विट्जरलैण्ड, श्री गणेश के स्वयंभू

सिद्धि विनायक मंदिर
मुम्बई, भारत,
श्री गणेश स्वयंभू

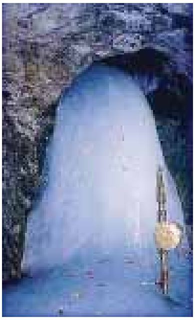

अमरनाथ, भारत
श्री शिव, स्वयंभू

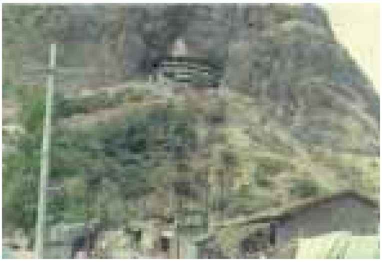

सप्तशृंगी, नासिक, भारत, श्री आदिशक्ति
(कुण्डलिनी) स्वयंभू

डेल्फी, यूनान
श्री गणेश के स्वयंभू

हिमालय का आध्यात्मिक महत्व

कहा जाता है कि हिमालय पर तपस्या करने से अज्ञानान्धकार दूर होता है और सत्य ज्ञान प्राप्ति के रूप में मुक्ति मिलती है। यह सर्वोच्च अवस्था प्राप्त करने में भी साधक का सहायक है। हिमालय केवल विवेक की पीठ और प्राणदायी जल का स्रोत मात्र ही नहीं है। यह स्मृति (संज्ञानात्मक स्मरण शक्ति तथा ज्ञान) का भी मुख्य स्रोत है। जैसे कहा गया है कि सूर्योदय के साथ ओस लुप्त हो जाती है वैसे ही महान हिमालय के दर्शन मात्र से सारे पाप धुल जाते हैं।

पूरे हिमालय को भगवान शिव का निवास माना जाता है। भिन्न पर्वतों पर भिन्न रूपों में वे विश्राम करते हैं और कैलाश पर्वत उनका स्थायी निवास है। उनका विवाह भी हिमालय पुत्री 'सती' या हिमावति (हिम+पुत्री) से हुआ।

हिमालय के दिव्य सृजन की असंख्य कथाएं इसकी प्राचीन बर्फ में गहरी दबी हुई हैं। कहा जाता है कि महाभारत के शूरवीर पांडव भगवान शिव के दर्शनों के लिए हिमालय पर आए। भगवान शिव ने जब उन्हें आते हुए देखा तो भैंस का रूप धारण करके उनसे दूर भागने का प्रयत्न किया। पाँचों भाइयों ने उस भैंस को पकड़ तो लिया पर वो केवल उसके पिछले हिस्से को ही पकड़ पाए। आज यह मान्यता है कि केदार देश में भगवान शिव का केवल पीछे का ही हिस्सा है। उनका शरीर पाँच हिस्सों में बंट गया और पूरे हिमालय पर फैल गया। इन पाँचों स्थानों को 'पंच केदार' का नाम दिया गया है। कहते हैं कि स्वर्ग का मार्ग हिमालय से होकर गुजरता है। युधिष्ठिर इन चोटियों पर चढ़े और स्वर्गरोहिणी चोटी से होकर स्वर्ग की ओर बढ़े। 'स्वर्ग + आरोहिणी' अर्थात उत्थान प्रदान करने वाली। चोमोलुंगमा, तिब्बत स्थित, पृथ्वी की देवी माँ हैं।

श्रीमाताजी के दामाद श्री रोमेल वर्मा ने अपने हिमालय पथ के अनुभव का वर्णन करते हुए एक बार अर्जुन की बात की। अर्जुन को एक बार अकेले उत्तरी भारत में यात्रा करनी पड़ी थी क्योंकि उसके चारों भाई अन्य तीन दिशाओं की ओर गए थे। हिमालय की यात्रा में अर्जुन का सामना शिकारी के रूप में प्रकट हुए भगवान शिव से हुआ और भगवान शिव ने उन्हें अपनी विशेष शक्तियों का वरदान दिया। परिणामस्वरूप इन शक्तियों के कारण अर्जुन पृथ्वी का सबसे अधिक महान शक्तिशाली व्यक्ति बना और हम सब जानते हैं कि किस प्रकार उसने कौरवों को आसानी से हरा दिया। अर्जुन के भगवान शिव से इस मिलन के और विशेष शक्तियाँ प्राप्त करने का वर्णन करते हुए श्री वर्मा ने कहा कि हम भी भगवान शिव की विशिष्ट शक्ति को आत्मसात कर सकते हैं, अर्जुन जैसे गुण प्राप्त कर सकते हैं, तथा श्री शिव की सम्पूर्ण शक्ति से किसी भी नकारात्मकता का सामना कर सकते हैं। भगवान शिव का निवास, हिमालय पर्वत, शक्ति के जीवन्त डाइनेमाइट की तरह से है।

(14.02.2004, शिवपूजा 2004 की संध्या)

प्राचीन काल से ही हिमालय की चोटियाँ सत्य साधकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनी रही हैं और साधक भौतिक संसार को त्याग कर विशाल पर्वत के एकान्त में तपस्या करने के लिए आते रहे हैं। चाँदी जैसी बर्फ से ढकी हिमालय पर्वत की आकर्षक सौन्दर्य-पूर्ण चोटियाँ इसे पृथ्वी पर मनमोहक स्वर्ग बनाती हैं। हिमालय क्षेत्र में इस रमणीक आकाश को छूते हुए मैदान के अतिरिक्त पृथ्वी के अन्य कौन-से स्थान पर इस प्रकार की दो वास्तुशिल्पीय प्लेटें (पर्वत शिखर) देखी जा सकती हैं? हिमालय की ये शानदार पर्वत मालाएं एशिया उपमहाद्वीप में स्थित हैं। ये पर्वत नेपाल, तिब्बत, भारत, पाकिस्तान, भूटान आदि देशों के लिए प्रहरी का कार्य करते हैं। हिमालय पर्वत श्रृंखलाएं विश्व की सबसे ऊँची 26000 फुट (8000 मीटर) बर्फ से ढकी ऊँची चोटियाँ हैं। दक्षिण एशिया में 1500 मील के क्षेत्र में गोलाकार लिए हुए हिमालय पर्वत फैला हुआ है। गोलीय (Curved) *आकार के हिमालय पर्वत भारत की उत्तरी सीमा तक फैले हुए हैं और भारतीय उपमहाद्वीप में तराशी हुई दीवार की तरह से खड़े हैं जिसके चारों ओर जीवन व्याप्त है। इन पर्वतों पर आने वाले प्राचीन भारतीय तीर्थ-यात्रियों ने संस्कृत शब्द 'हिम' (बर्फ) और 'आलय' (घर) से 'हिमालय' शब्द की रचना की, इसका अर्थ है 'बर्फ का घर'। सदियों से भारत-वासियों पर हिमालय का बहुत ही गहन प्रभाव रहा है और सम्मान, आश्चर्य एवं भय-बोध के सम्मिश्रण ने उनकी भावनाओं की रक्षा की है।*

भारतीय हिमालय श्रृंखला पश्चिमी भारत से पूर्वी भारत तक फैली हुई है और इसमें पाँच भारतीय राज्य सम्मिलित हैं - जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश। दोहरी मोटी महाद्वीपीय प्लेटों के आधार पर स्थित हिमावत की चोटियाँ ढाई किलोमीटर ऊपर की ओर चली गई हैं और विश्व की सबसे ऊँची, '29,028 फुट', चोटी एवरेस्ट (Lapchi Kang) *की रचना की है। तिब्बत के पठार को दक्षिण तक घेरे हुए हिमालय की महान चोटियाँ बर्फ को अपने में समेटे हुए हैं और मैदानी क्षेत्रों के लिए जल के स्रोत के रूप में नदियों का सृजन करती हैं। तिब्बत भी अपने आप में चमत्कारिक स्थान है - देव भूमि, एवं कथाओं में वर्णित शंग्री-ला* (Shangri La) *का स्थान। हिमालय की अधिकतर चोटियाँ समुद्र तल से तीन मील से भी अधिक ऊँची हैं। भारत की महानतम पावन नदियाँ गंगा, सिंध और ब्रह्मपुत्र हिमालय की तलहटियों से हिमाच्छादित पर्वतों से बहती हैं जो मुख्य मूल स्रोत* (Rhizome) *हैं। ये साहसपूर्ण पर्वतारोहण अभियानों, हरी भरी चरागाहों के भी खजाने हैं और शाही शक्ति, भव्यता एवं उत्साह को भी दर्शाती हैं।*

ऋग्वेद और अथर्ववेद में हिमालय को 'हिमावत' नाम से पुकारा गया है। अतः भारतीय पौराणिक कथाओं में यह माना जाना कि इस स्थान की एक दिव्य आत्मा है, कोई आश्चर्य की बात नहीं है। संस्कृत के कवि कालिदास ने अपनी कविताओं में इसे 'देवात्मा' कहा है। दिव्यता सर्वव्याप्त धारणा है जिसे इस तथ्य में भी देखा जा सकता है कि एक सन्त ने श्री कृष्ण के पेट में पर्वत श्रृंखलाओं के दर्शन किए!

पाँचवी शताब्दी A.D. के सुप्रसिद्ध भारतीय कवि कालिदास ने अपनी कविता 'कुमारसम्भव' में इस प्रकार लिखा है:-

अस्तुरस्यम! दिशिदेवात्मा,
हिमालोनाम नागादिराजा
पूर्वपरो तोयानिधो वागूह्या
स्थिता पृथीव्या इवा, मन्दनदाह।

अर्थात उत्तरी भाग में हिमालय नाम का एक विशाल पर्वत है जो सदैव बर्फ से ढका रहता है और पर्वतों का राजा कहलाता है। यह परमेश्वरी प्रकाश से ज्योतिर्मय है। पूर्वी सागर से पश्चिमी सागर तक फैली हुई भारतीय प्रायद्वीप में भय उत्पन्न करने वाली ऊँची चोटियाँ ऐसे प्रतीत होती हैं मानो पृथ्वी की धुरी (Rod) को नाप रही हों।

इस प्रकार हिमालय हमेशा प्रेरणा एवं जीवन के निरन्तर स्रोत बने रहे। इन पर्वतों का वर्णन असम्भव है, इनकी भव्यता और विशालता के कारण नहीं विश्व इतिहास में इनकी सशक्त भूमिका के कारण।

प्राचीन काल में 'मिलिन्द' नाम का राजा हुआ करता था। उसने 'नागसेना' नामक सन्त से हिमालय के विषय में पूछा। उस सन्त ने एक अन्तरे की कविता में इसका उत्तर दिया जिसका रूपान्तरण इस प्रकार है :-

''हिमालय पर्वतों का राजा है।" परिधि पर इसका फैलाव पन्द्रह हजार मील (5,000 Leagues - 5000 x 3) है और इसकी पर्वत मालाएं - 840 हजार चोटियाँ, 500 नदियों का स्रोत हैं, अनगिनत विशालकाय जन्तुओं के रहने का स्थान हैं, अनगिनत सुगन्धियों को जन्म देती हैं और सैकड़ों आश्चर्यजनक जड़ी- बूटियों से सम्पन्न हैं। पृथ्वी की धुरी पर इन चोटियों को अकेले बादलों की तरह से उठते हुए देखा जा सकता है। वास्तव में सामवेद ने उन पर्वतमालाओं को पृथ्वी का मध्यबिन्दु कहा है।

इस सन्त के वर्णन में ये भी जोड़ा जाना आवश्यक है कि भारतीय हिमालय पर्वत श्रृंखलाएं विश्व के अत्यधिक युवा पहाड़ हैं, बहुत सी चोटियों का तो अभी तक नामकरण किया जाना बाकी है।

हिमालय का भौगोलिक महत्व भारतीय उपमहाद्वीप और यूरेशियन द्वीप के बीच संघर्ष का वर्णन करता है। ये संघर्ष आदि-मानव (Paleogene) के समय से आरम्भ हुआ और आज तक चल रहा है और इसी के कारण हिमालय और तिब्बत के पठार बने जो पठारीय वास्तुकला के प्रभाव के दर्शनीय आधुनिक उदाहरण हैं। तिब्बत का पठार भी सूक्ष्म पट्टिकाओं या द्वीपीय भागों से बना है (Collage of Microplates or Continental Fragments) जो पैलोजोइक (Paleozoic) और मैसोज़ोइक (Mesozoic) युगों में निरन्तर यूरेशियन पट्टिका में जुड़ते चले

गए। चट्टान चुम्बकीय (Paleomagnetic) *विश्लेषण बताते हैं कि ये प्राचीन सूक्ष्म पट्टिकाएं पैलोजोइक* (Paleozoic) *युग में दक्षिणी गोलार्द्ध में थीं। जिस प्रकार विशाल भारतीय पट्टिका ने प्रभावित करने वाले* (Tethyan Regime) *की तरह से उत्तर की ओर लम्बी यात्रा की और अपने स्थान से हटकर यूरेशियन द्वीप में जुड़ गया वैसे ही सभी प्राचीन पर्वतीय हिस्सों के साथ भी हुआ। परिणामस्वरूप बनी एक-एक सन्धि (चट्टान-*Suture*) पर कहीं-कहीं समुद्री तल तत्व अहिरश्म* (Ophiolite) *बने हुए हैं। ये समुद्री तल तत्व वह है जो सहवर्द्धन* (Accretion) *के समय पपड़ीदार पिण्डों* (Crustal Blocks) *में फंस गए थे। संघटन की घटनाओं की इस लम्बी शृंखला में हिमालय को जन्म देने वाली घटना अन्तिम थी, यद्यपि यह जलवायु के कारण भी घटित हुई।*

भारतीय पट्टिका लगातार पाँच सेमी० प्रतिवर्ष की गति से उत्तरी एशिया की ओर बढ़ती चली जा रही है। पृथ्वी के चट्टानी पिण्डों की विशालता को यदि देखें तो यह गति काफी अधिक है, आपकी अंगुलियों के नाखुनों के बढ़ने की गति से लगभग दुगुनी। इस हलचल के कारण भारतीय पट्टिका के किनारों की चट्टानें विकृत होने लगीं और टूटने लगीं। भारतीय चट्टानों के बड़े-बड़े भाग दक्षिण की ओर धकेले गए और हिमालय पर्वत को जन्म देने वाले ढेरों में परिवर्तित हो गए।

नेपाल के आध्यात्मिक सार के विकास और हिमालय की गगन चुम्बी ऊँचाइयों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए श्रीमाताजी कहती हैं.......:-

"ने+पाल नाम के ऋषि के नाम पर नेपाल का नामकरण किया गया। ईसा-मसीह भी नेपाल आए थे। पृथ्वी माँ द्वारा रचित यह एक विशेष देश है। यहाँ केवल समुद्र हुआ करता था। अमृत-मंथन के पश्चात हिमालय ऊपर की ओर उठने लगे और एवरेस्ट की ऊँचाई तक ऊपर खिंचते चले गए। ब्रह्माण्ड की कुण्डलिनी - भारत-की रक्षा करने के लिए हिमालय का सृजन किया गया। कुण्डलिनी की रक्षा की जानी आवश्यक थी। यह विराट का मस्तिष्क है। प्राचीन संस्कृति को बनाए रखने के लिए कुछ देशों का सुरक्षित किया जाना आवश्यक था। श्रीगणेश को भारत में स्थापित करना पड़ा। इसी कारण से मुझे भी इस देश में जन्म लेना पड़ा - कर्क रेखा के उष्ण कटिबंध (Tropic) *पर।"*

(काठमाँडू आश्रम पूजा, 30.03.1989)

प्राचीन काल से ही भारतीय उपमहाद्वीप के जीवन पर हिमालय का भिन्न प्रकार से गहन प्रभाव पड़ा है। इसकी मध्यद्वीपीय भौगोलिक स्थिति उत्तरीय ठण्डे प्रदेश एवं, दक्षिणी उप-उष्ण-कटिबंध क्षेत्र के बीच दीवार का कार्य करती है और मानसून को हिमालय की ऊँचाईयाँ लाँघकर तिब्बत की ओर चले जाने से रोकती है। हिमालय का यह शक्तिशाली योगदान आर्द्रहवाओं को अपनी आर्द्रता इसी की आगोश में छोड़ने के लिए मजबूर कर देता है और परिणामस्वरूप ये आर्द्रता उन सभी नदियों का स्रोत बनती है जो मानव सभ्यता के आरम्भ

से ही पावन कहलाती हैं। पौराणिक कथा के अनुसार महाराज भागीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर प्रकट होने के लिए गहन तपस्या की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर गंगा दिव्य संसार छोड़ने के लिए तैयार हो गई। परन्तु पृथ्वी, गंगा के तीव्र बहाव को सहन करने में समर्थ न थी। अत: भागीरथ ने एक बार फिर तपस्या करके श्री शिव को प्रसन्न किया और उन्हें इस बात पर राज़ी किया कि वे अपनी जटाओं में गंगा के प्रवाह को रोकें। तत्पश्चात् दस धाराओं में भिन्न दिशाओं से श्री शिव की जटाओं से गंगा पृथ्वी पर उतरीं। ये सारी धाराएं, अन्तत: देव प्रयाग पर एक हो गईं और श्री गंगा बंगाल की खाड़ी के लिए अपनी आनन्द यात्रा पर निकल पड़ीं। उच्चतम BOD शारीरिक आवश्यकता के लिए ऑक्सीजन (Biological Oxygen Demand) के अपने मूल्यों के कारण श्री गंगा प्राय: पूरे भारत और विशेष रूप से भारतीय उत्तरी पठार की जीवन रेखा कहलाती है। **सूक्ष्म स्तर पर श्री गंगा शुद्ध इच्छा तत्व की प्रतीक हैं। स्थूल स्तर पर गंगा के तट पर भिन्न तीर्थ स्थान बनाए गए हैं।**

बर्फ से ढकी हुई ऊँची पहाड़ियाँ, गहरी घाटियाँ, वेग से बहते झरने, आकर्षक हरे रंग के जंगल, स्वास्थ्यवर्धक जलवायु, आकर्षक मौन – ये सभी गुण मिलकर हिमालय को दिव्यतम, शान्त, सौन्दर्य की प्रतिमा बनाते हैं। विकास प्रक्रिया में हिमालय पृथ्वी पर प्रकृति के सृजन की पराकाष्ठा है! जैसे एक बार श्रीमाताजी ने कहा था :

''भारत को उत्तर की ओर खिसकना पड़ा ताकि कैलाश पर्वत ऊँचा उठकर ब्रह्माण्ड के सातवें चक्र (सहस्रार) को पूर्ण कर सके।''

(सहजियों से बातचीत, देहरादून, मार्च-1979)

श्रीमाताजी का ये कथन न केवल वर्तमान विज्ञान के हिमालय के उत्थान की इस धारणा को बल देता है, यह साधकों के आध्यात्मिक साम्राज्य को भी गहन अर्थ प्रदान करता है। सहजयोग की भाषा शैली में हिमालय सहस्रार चक्र के अनुरूप है–मानव अस्तित्व का शिखर।

इसी कारण से श्रीमाताजी ने एक बार इस रहस्य का उद्घाटन करते हुए कहा, ''हिमालय ही वह सहस्रार है जिसका सृजन पृथ्वी माँ ने आपके लिए किया है। सहस्रार की पूजा की जानी चाहिए। सहस्रार अत्यन्त महान है। मैं नहीं जानती कि आप इसमें से निकलती हुई चैतन्य-लहरियों को देख सकते हैं या नहीं। मैं तो इनकी चैतन्य लहरियों में इस प्रकार से डूब जाती हूँ कि कुछ अन्य देख ही नहीं पाती। केवल चैतन्य लहरियाँ ही होती हैं। कुछ और नहीं। यहाँ (सहस्रार) रहने वाले लोग चैतन्य-लहरियों में तैरते हैं और ऐसा लगता है मानो चैतन्य-सागर में मछलियाँ तैर रही हों! यहाँ फैली हुई सुन्दर चैतन्य लहरियों के सौन्दर्य को मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती। एक से दूसरी लहरी में आप भेद नहीं कर सकते। ये वास्तव में हिमालय का ही आशीर्वाद है।

सबसे बड़ी बात तो ये है कि हम अपने गुरु को सागर के रूप में मानते हैं। सागर हमारे पिता हैं। विश्व द्वारा डाली गई गन्दगी को अपने अन्दर डुबोकर बादलों के रूप में जब समुद्र

आकाश में उठता है तो यह अत्यन्त शुद्ध एवं सुन्दर बन जाता है। इस अवस्था में विचरण करते हुए सागर हिमालय के चरणों तक पहुँच जाता है और वहां स्वयं को फैला देता है। 'धौला' शब्द का अर्थ है पूर्णतः शुद्ध निर्मल, 'धार' अर्थात श्रृंखलाएं (ये पर्वत श्रृंखलाएं धौला-धार कहलाती हैं) हिमालय में स्थित इन पावन श्रृंखलाओं की तरह से हमारे मस्तिष्क में भी ये श्रृंखलाएं मिलती हैं, जहाँ वे सहस्रार के खुलने में सहायक होती हैं। इससे आगे मैं कुछ वर्णन नहीं कर सकती केवल इतना कह सकती हूँ कि आज योग प्राप्ति का शुभ अवसर आ गया है, इसका लाभ उठाने का प्रयत्न करें, इसकी गहराईयों में उतरें। सोचें कि इसके सम्मुख हम रेत के कण के समान हैं, अबोध बच्चे। हमारे अन्दर ऐसा कुछ विशेष नहीं है जो इसकी तेजस्विता का मुकाबला कर सकें। हम क्या हैं? यह तो इतना भयावह है!

हिमालय पूरे ब्रह्माण्ड का सहस्रार है। इन्होंने ब्रह्माण्ड को इतना सुख और आनन्द प्रदान किया है कि इसके बाद प्राप्त करने के लिए कुछ भी नहीं बचता। **इस सहस्रार (हिमालय) की सहायता से मैंने यह महसूस किया है कि जब तक आपके अन्दर हिमालय की शान्ति स्थापित नहीं होती, आपके आचरण में जब तक इसकी महानता प्रवेश नहीं कर जाती, सहस्रार का खोलना व्यर्थ है। इस शान्ति के बिना आपके सहस्रार भट्टी की तरह से जलेंगे।** *कुछ लोगों के अन्दर भट्टी जलते हुए देखकर मैं हैरान होती हूँ, हे, परमात्मा! क्यों मैंने इसके सहस्रार को खोला? सहस्रार में से इतना धुआं और नकारात्मकता निकलती है कि लगता है कि उसके सहस्रार को बन्द ही कर दिया जाए। पेन्डोरा* (Pandora) *(यूनानी पौराणिक कथाओं की एक महिला) के बक्से की तरह से, व्यक्ति नहीं जानता कि किसके सहस्रार में से क्या निकलेगा! सहस्रार में से निकलते हुए साँपों, बिच्छुओं और सभी प्रकार की नकारात्मकता (के विष) को देखकर धक्का लगता है!*

आज हम हिमालय की और उन सातों शक्तियों की पूजा करते हैं जिनके आशीर्वाद यहाँ पर हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे हमें दैवी शक्ति का वरदान दें। माँ से हमने देवी शक्ति का आशीष पाया है। अतः आइए माँ का रूप मानकर हम हिमालय के शरणागत हो जाएं।

".....हिमालय की चोटियाँ हमें सुरक्षित कर रही हैं। इनसे हमें गंगा, यमुना और सरस्वती की धाराएं प्राप्त हुई हैं और इनमें फेंके जाने वाले सारे कचरे के बावजूद भी ये नदियाँ हमारे अन्दर अत्यन्त निर्मल बह रही हैं! चाहे हम इनका जिस प्रकार भी अपमान करते रहें, इस सबके बावजूद भी हिमालय इन नदियों में पावनता प्रवाहित करता है। परन्तु ये सब चीज़ें शीघ्र समाप्त हो जाएंगी, ये हमेशा नहीं चलती रह सकती।"

(देवी पूजा, तालनू, धर्मशाला, मार्च 26, 1985)

आदि मानव से वर्तमान अवस्था तक विकसित होते हुए मानव ने निश्चित रूप से हिमालय के विकास को देखा है। समय के गर्भ में मानव और हिमालय की उत्क्रान्ति एक संयोग था और आध्यात्मिक उत्थान के नजरिए से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जैसे श्रीमाताजी

ने बताया है, पृथ्वी माँ और हिमालय की उत्पति में गहन सम्बन्ध है:

"हज़ारों हज़ार सहस्राब्दियों पूर्व पृथ्वी माँ ने अपने श्री गणेश को जन्म देना आरम्भ किया था। आज जहाँ हिमालय स्थित है वहाँ विशाल सागर था। शनैः शनैः उस सागर से शिवलिंग की तरह से हिमालय सपाट रूप में बाहर आने लगा जो उन पशुओं के प्रकट होने की अभिव्यक्ति है, जिनका मस्तिष्क बिल्कुल सपाट है। परन्तु जब हिमालय समुद्र से बाहर आने लगा तो पृथ्वी माँ भिन्न दिशाओं में धकेली गईं! तब पृथ्वी माँ अपनी साड़ी में तहें लगाने लगीं, आप ऐसा कह सकते हैं कि जब ये क्रिया आरम्भ हुई तो साड़ी ने इस प्रकार से चैतन्य लहरियाँ दीं कि कुछ स्थानों पर ये उठीं और श्री गणेश का रूप धारण कर लिया। आरम्भ में ये भी सपाट आकार के थे।

बाद में जब मानव मस्तिष्क में अहं विकसित होने लगा तो इस साड़ी में और तहें बनती चली गईं। तो वह पूरी भूमि धकेली गई और दूसरी भूमि इस प्रकार से उसके साथ जुड़ गई कि इसने शिखर का आकार ले लिया। प्रति अहं को अन्दर धकेल दिया गया और इसे पराकाष्ठा तक लाया गया। इसकी समता हमारे मानवीय मस्तिष्क से हैं क्योंकि हमारे शरीर में भी पूरे ब्रह्माण्ड का प्रतिनिधित्व है। पृथ्वी की मध्यधुरी ने मेरुदण्ड का कार्य किया। हिमालय में घटी इस घटना से श्री गणेश के रूप में सृजित होने वाले पर्वत एक बार फिर धकेले गए और उन्होंने अपने अन्तिम रूप धारण कर लिए और इस प्रकार शिखर का सृजन हुआ।

अतः गौरी रूप में पृथ्वी माँ ने ही सभी गणेशों का सृजन किया। इन शृंखलाओं के दूसरे छोर पर सबसे ऊँचे पर्वत होने ही चाहिएं क्योंकि इन्हें बहुत अधिक धकेला गया था। ब्लैंक पर्वत (Mount Blanc) *इससे ऊँचा होना चाहिए। उदाहरण के रूप में आप देखिए कि जब दाईं ओर को अधिक धकेला गया तो ब्लैंक पर्वत* (Mount Blanc) *के रूप में अहं की अभिव्यक्ति हुई। दूसरी ओर धकेलने पर दार्जलिंग के समीप दूसरे छोर पर एक अन्य गणेश का सृजन हुआ। तो दार्जलिंग में भी श्री गणेश की अभिव्यक्ति हुई और उसका रंग भी वैसा ही लाल है। डेल्फी में भी, जिसे पृथ्वी माँ की नाभि कहते हैं, मैंने स्वयंभु गणेश देखा है।*

अमरनाथ में भी जब शिवलिंग का सृजन किया गया तो वहाँ भी श्री गणेश का सृजन हुआ। अमरनाथ में एक-एक बूंद जल गिरता है और शिवलिंग का सृजन करता है। इसी के साथ-साथ दूसरी ओर गिरने वाली जल की बूँदे हू-बहू श्री गणेश की मुखाकृति का सृजन करती हैं। तो सागर पिता हैं और पृथ्वी माँ आपकी माँ हैं। परन्तु पृथ्वी माँ जब पर्वत का रूप धारण करती हैं तो वह पिता कहलाती हैं। कारण ये है कि उस ऊँचाई पर वे पिता को बर्फ या बारिश के रूप में अपने सिर पर धारण कर सकती हैं।

''इस प्रकार से माँ पिता बन जाती हैं और माता और पिता दोनों के कार्यों को कर सकती हैं। केवल उसी अवस्था में पर्वत-पुत्री गौरी ने, बिना पिता की सहायता के, पावन श्री गणेश का सृजन किया। बर्फ की पावनता शत्-प्रतिशत है, यही पृथ्वी माँ को ढके हुए है और पावनता

का सृजन कर रही है। सारा कचरा और गंदगी समुद्र में जाती है, उसे सूर्य जो कि श्री गणेश भी है, स्वच्छ कर देते हैं और पुनः समुद्र का जल पर्वतों की चोटियों पर लाया जाता है ताकि उन्हें आच्छादित कर ले।''

*(**परम पूज्य श्रीमाताजी,** Riffleberg, Switzerland, **02.09.1984**)*

हिमालय की दिव्य स्तुति अवर्णनीय है। देव-भूमि हिमालय पर सन्त, साधु, दार्शनिक, परोपकारी, संन्यासी, रहस्यवादी, यात्री, तीर्थ-यात्री तथा धर्म-गुरु सदा सर्वदा से आते रहे हैं और अब आत्म-साक्षात्कारी सहजयोगी भी विश्व के सहस्रार के रूप में हिमालय के महत्व को अत्यन्त सम्मान देते हैं। चैतन्य से परिपूर्ण हिमालय तथा पवित्र गंगा पर जाने की गहन इच्छा सभी सहजयोगियों में है।

मोक्ष स्थान :

तिब्बत के विशाल एवं उच्च शिखर गगन चुम्बी हैं। मानो एक पर्वतीय परत दूसरी परत पर बैठी हो और इस प्रकार से विशाल चैंग तैंग (Chang Tang) *पठार की रचना कर रही हो। यदि तुलना की जाए तो अमरीका की पर्वतीय चोटियाँ और पश्चिमी यूरोप के एल्प्स पर्वत के शिखर किसी भी प्रकार से तिब्बत के पठार से ऊँचे नहीं हो सकते। इस स्थान की महानता की झलक तो उन तीर्थ यात्रियों की दृष्टि से प्राप्त की जा सकती है जो नीचे की घाटियों से चढ़कर तिब्बत में पैर रखते हैं।*

कहा जाता है कि भारत में बहने वाली पावन नदी गंगा जब स्वर्ग से प्रवाहित होती है तो पहले भगवान शिव की जटाओं में गिरती है जिससे उसके प्रवाह की तीव्रता शान्त होती है। इस कथा के अनुसार हिमालय की पर्वत श्रृंखलाएं श्री शिव का रूप हैं। पर्वतीय शिखरों पर पिघलने वाली बर्फ छोटी-छोटी नदियों का रूप धारण करती हैं जो विशाल नदियाँ बन जाती हैं और मैदानी क्षेत्रों में प्राण फूँकती हैं। सभी नदियों में पावनतम गंगा नदी को 'पावन तीर्थ' माना जाता है अर्थात परमात्मा द्वारा 'चैतन्यित जल'। यहाँ जल को चैतन्यित करने वाले भगवान शिव हैं जो कि त्रि-देवों में से एक हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार श्री शिव विश्व विख्यात कैलाश पर्वत पर रहते हैं। कैलाश पर्वत को सुमेरु पर्वत (Mount Meru) *भी कहा जाता है। ये विश्व का केन्द्र बिन्दु है तथा अपने आकर्षण में अद्वितीय है। तिब्बत की भौगोलिक स्थिति को यदि गौर से देखें तो ये पता चलता है कि कैलाश पर्वत इस क्षेत्र के मध्य में अतुलनीय रूप से स्थित है।*

कैलाश पर्वत अद्वितीय है क्योंकि यह तिब्बत के पठार में इस प्रकार से ऊँचाई पर स्थित है मानो विशाल पहिए की धुरी हो। इस धुरी से चार बड़ी नदियाँ निकलती है जो पहिए की धुरी से निकलने वाली 'अर' (Spokes) *की तरह से चार भिन्न दिशाओं में बहती हैं। दक्षिण की ओर फैले हुए हिमालय के शिखरों से बिल्कुल भिन्न कैलाश पर्वत अकेला तिब्बत के पठार पर खड़ा हुआ है ताकि तीर्थ यात्री एक सप्ताह से भी कम समय में इसकी परिक्रमा कर सकें।*

सम्राट सम पूरा पर्वत चहुँ ओर के परिदृश्य में बर्फ की चाँदी से पुते किसी मन्दिर के मीनार की तरह से खड़ा है।

पर्वत की तलहटी में स्थित दो झीलें पावन स्थान के रूप में पर्वत के प्रतीकात्मक रहस्यवाद को और आगे बढ़ा रही हैं। ऊंचाई पर स्थित मानसरोवर झील सूर्य की तरह से गोल है और नीचे की ओर स्थित (Rakastal) *रक्सताल झील अर्ध चन्द्राकार है। ये दोनों झीलें सूर्य और चन्द्र शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। मानव की अन्तर्चेतना (सूर्य शक्ति) की तुलना हमेशा मानसरोवर झील से की जाती है। मस्तिष्क में विचार जब शान्त हो जाते हैं तो उच्च बौद्धिक मस्तिष्क प्रतिबिम्बित होता है और आत्मिक चेतना दिखाई पड़ती है। संस्कृत में 'मन' का अर्थ है मस्तिष्क। अर्धचन्द्राकार झील 'रक्सताल' बाईं ओर की या काली बाधाओं को दूर करती है और ये बात इसके नाम से ही प्रतिबिम्बित होती है क्योंकि 'रक्सताल' शब्द की उत्पत्ति राक्षस शब्द से हुई है, ऐसे जीव जो मलेच्छ होते हैं तथा मनोवेग के प्रभाव में कार्य करते हैं (बाईं ओर की शक्तियाँ)।*

बाह्य विश्व हिमालय को इसकी एवरेस्ट, अन्नपूर्णा आदि ऊँची चोटियों के लिए जानता है जिन्हें आधुनिक युग का अहंकारी मस्तिष्क विजय करना चाहता है। परन्तु प्राचीन विचारों के लोग तथा धार्मिक तीर्थ यात्री एवं शिवभक्त लोग कैलाश पर्वत की परिक्रमा करके उसे श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं। पर्वत पर चढ़कर इसे अपवित्र करने की बात वे कभी सोच भी नहीं सकते। कहा जाता है त्रिदेवों में से प्रलय के देवता श्री शिव कैलाश पर्वत पर विराजते हैं। परम्परा के अनुसार श्री शिव मृत लोगों की अस्थियों से शृंगार करते हैं और शरीर पर भभूत धारण किए रहते हैं। 'भभूत' मल-इच्छाओं पर विजय प्राप्ति का प्रतीक है। उनका प्रलयंकर रूप इसलिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि वे अहं के बन्धनों को काटकर आत्मा को अज्ञानान्धकार से मुक्त करते हैं। मृत्यु के इस विषय की समरूपता कैलाश पर्वत पर बने दो विशाल खोखले स्थानों से है जिनमें एक कोण विशेष से बर्फ से ढका हुआ कैलाश गुम्बद नज़र आता है, जिसके खोपड़ीनुमा गुम्बद में दो विशाल चक्षुरन्ध्र (Eyeholes) *ताकते दिखाई देते हैं।*

शरीर में चक्रों और ग्रन्थियों की स्थिति

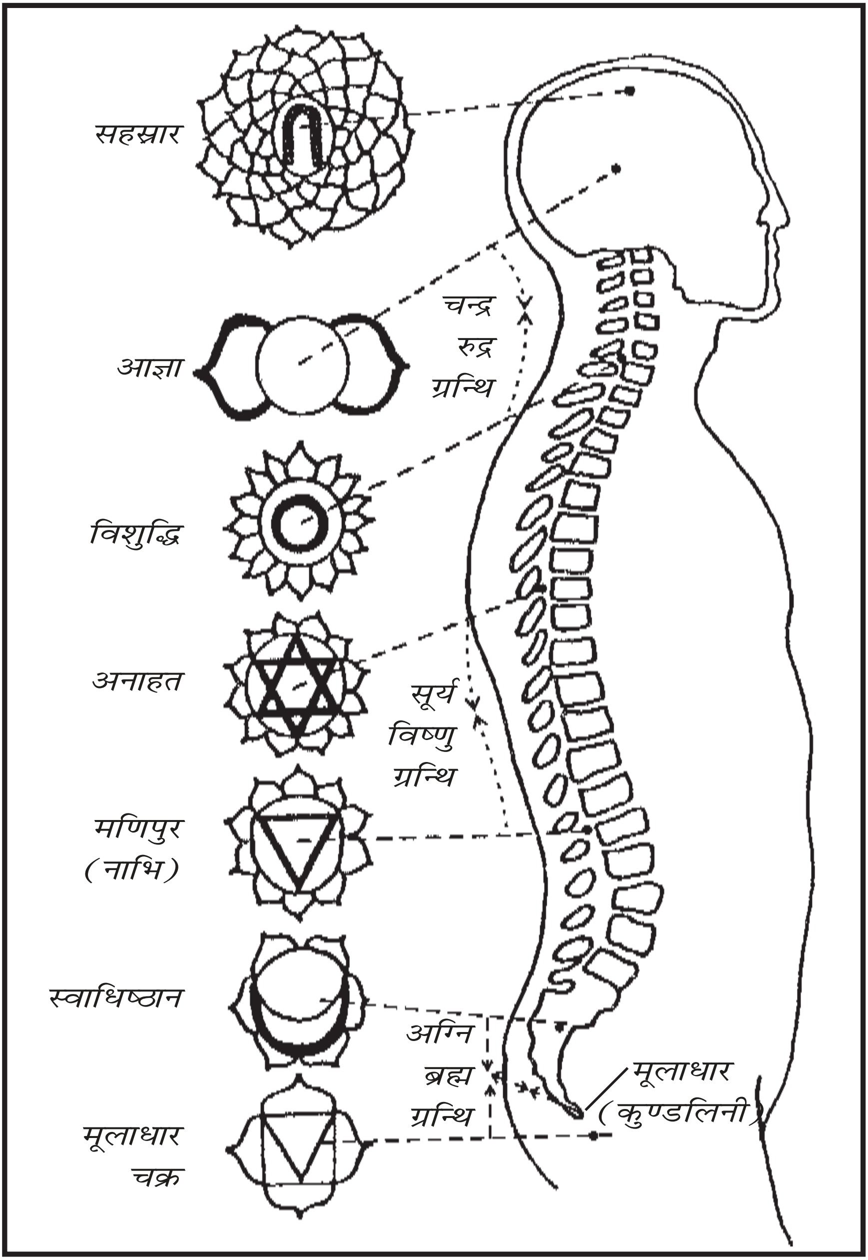

हाथों और पैरों में चक्रों की स्थिति

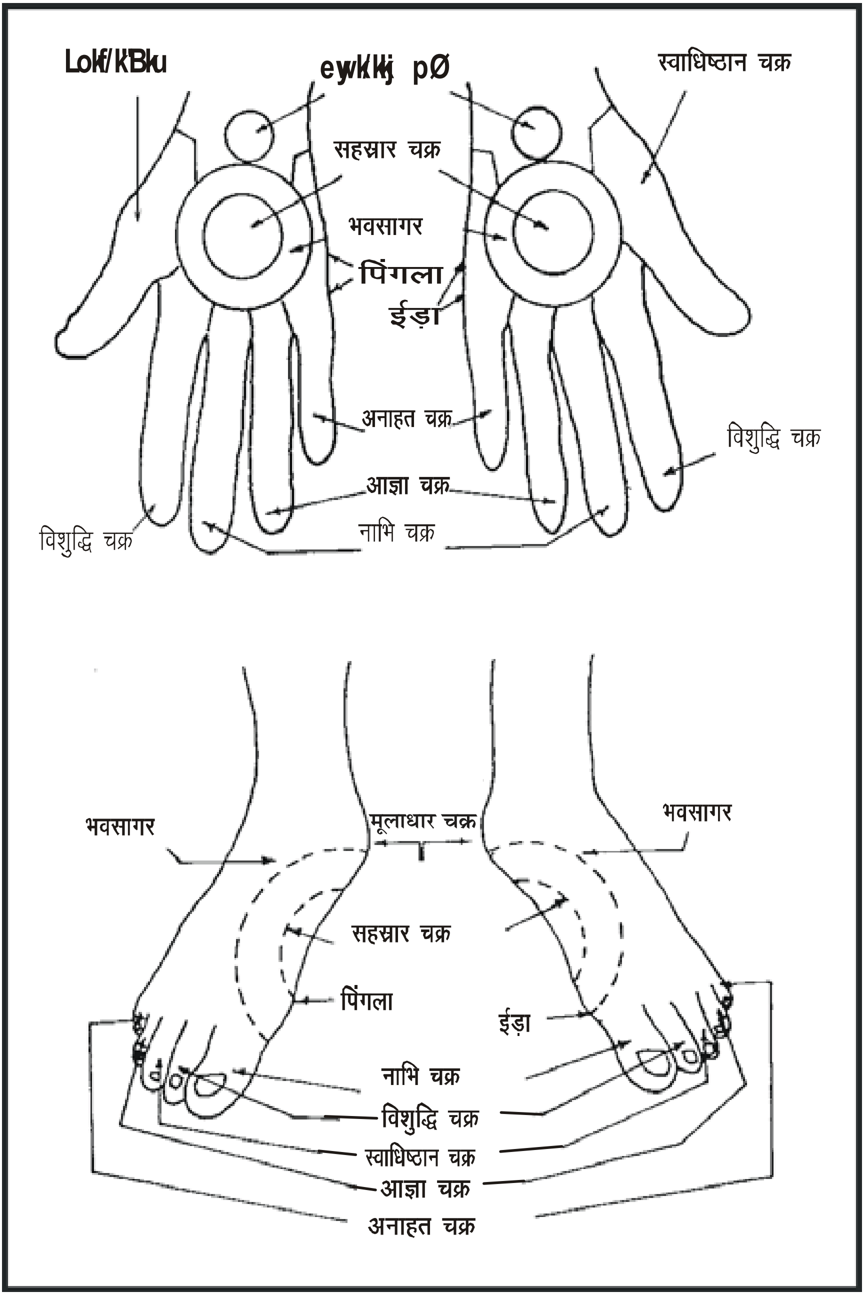

स्वयं श्रीमाताजी द्वारा खींचे गए चित्र में सिर और हाथों पर चक्रों की स्थिति का रेखा चित्र

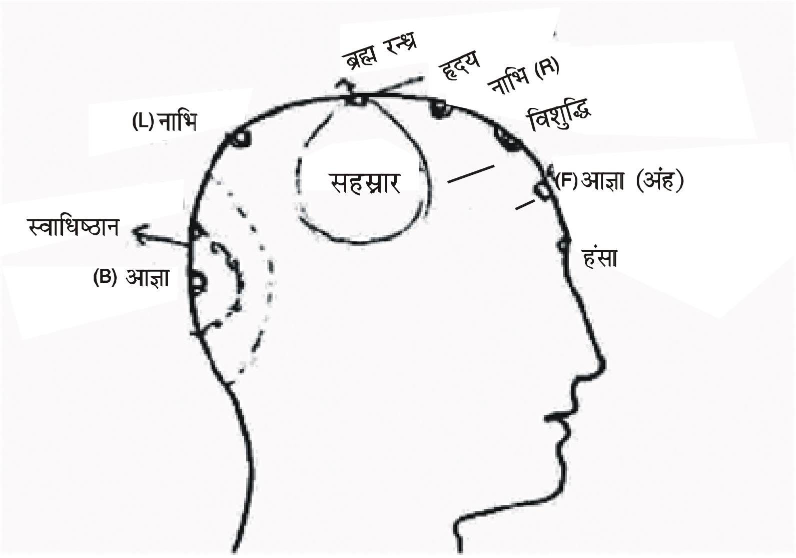

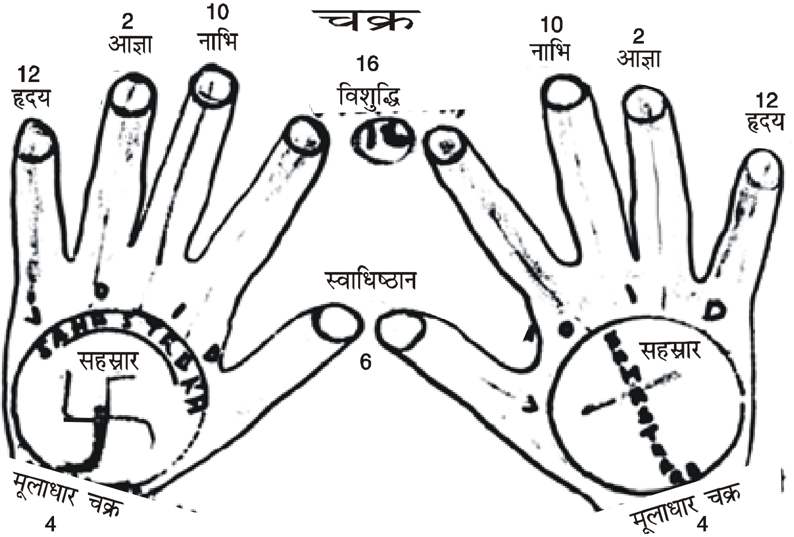

चक्रों के सूफी एवं इस्लामिक नाम

चक्र का नाम	सूफी मतानुसार	इस्लामिक नाम
1. सहस्रार	लतीफा-हक्क़िया (Haqqiyah)	आलम-ए-लाहौत (Lahout)
2. आज्ञा चक्र	लतीफा-काफीयुहा (Kafiyuah)	आलम-ए-जब-रौत (Jab-Rout)
3. विशुद्धि	लतीफा-रुहीया (Ruhiyah)	आलम-ए-मलाखौत (Malakhout)
4. अनाहत	लतीफा-सिरीया (Sirriyah)	आलम-ए-साहौत (Sahout)
5. नाभि	लतीफा-क्वालबियाह् (Qalhbiyah)	आलम-ए-लाहौत (Lahout)
6. स्वाधिष्ठान	लतीफा-नफसियाह् (Nafsiyah)	आलम-ए-मसौत (Masout)
7. मूलाधार	लतीफा-क्वालबियाह् (Qalhbiyah)	आलम-ए-फानी (Fa'ani)

इस्लाम में इन चक्रों को आलम और सूफी मत में लतीफा कहा जाता है। अल्लाह का एक नाम अल-लतीफ़ है जिसका अर्थ है सूक्ष्म या जिसे सूक्ष्म का ज्ञान है। अतः चक्रों के लिए लतीफा शब्द का उपयोग किया गया है जिसका अर्थ है 'सूक्ष्म केन्द्र'।

(ज्योतित इस्लाम (Islam Englightened) से उद्धृत)

परम पूज्य श्रीमाताजी द्वारा बताए गए चक्र एवं उनसे सम्बन्धित राग

	चक्र		राग		वाद्य यन्त्र
1.	मूलाधार	–	श्याम कल्याण/बिलावल	–	शहनाई
2.	स्वाधिष्ठान	–	तोड़ी / यमन	–	वीणा
3.	नाभि	–	ललित / गुनकली	–	सन्तूर
4.	भवसागर	–	मालकौंस	–	
5.	हृदय (अनाहत)	–	भैरवी / दुर्गा / भैरव	–	तबला-मृदंग
6.	विशुद्धि	–	जय-जयवन्ती	–	बाँसुरी
7.	आज्ञा	–	भूप / बागेसरी	–	सरोद
8.	सहस्रार	–	दरबारी / भैरवी	–	सितार

सहजयोग की अद्वितीय विशेषताएं

('चैतन्य लहरियों के अनुरूप दिव्य ज्ञान' पुस्तक से उद्धृत)

यद्यपि मूलत: कार्यविधियाँ भिन्न हैं फिर भी सभी चक्रों की वाहिकाओं, नाड़ियों, पंखुड़ियों की संख्या आदि का वर्णन सार रूप में एक हैं। इसके बावजूद भी कुछ दिलचस्प अन्तर हैं। ऐसे ही कुछ उदाहरण चुने गए हैं।

(क) सूक्ष्म यन्त्र – मूलाधार

- *अधिकतर शास्त्रीय पुस्तकों में कुण्डलिनी के निवास स्थान (त्रिकोणाकार अस्थि) तथा मूलाधार चक्र (मूलाधार चक्र के शासक देवता भी) श्री गणेश के स्थान को एक ही दर्शाया गया है। सहजयोग के अनुसार मूलाधार त्रिकोणाकार अस्थि में है और मूलाधार चक्र इससे थोड़ा सा नीचे है (स्थूल अभिव्यक्ति के अनुसार इसकी अभिव्यक्ति गुदा और जननांगों के बीच में है) (संदर्भ के लिए चित्र देखें)*

  परमपूज्य श्री माताजी ने मूलाधार चक्र के विषय में इस प्रकार बताया है :

- *"गौरी श्री गणेश की माँ है और उन्होंने अपने पावित्र्य की रक्षा करने के लिए श्री गणेश का सृजन किया। इसी प्रकार से कुण्डलिनी गौरी हैं और श्री गणेश मूलाधार पर बैठे हुए हैं। गौरी, कुण्डलिनी, के निवास के लिए मूलाधार है और उनकी सुरक्षा के लिए श्री गणेश हैं। वे हमारी अबोधिता के देवता हैं। केवल श्री गणेश ही इस स्थिति में हो सकते हैं क्योंकि वे ही श्रोणीय चक्र की देखभाल करते हैं और हमारी मलविसर्जन आदि क्रियाओं को नियन्त्रित करते हैं, वातावरण से दूषित हुए बिना केवल श्री गणेश ही वहाँ रह सकते हैं। वे इतने पावन, इतने अबोध हैं और कुण्डलिनी श्री गणेश की कुँवारी (पावन) माँ हैं।" (**परम पूज्य श्रीमाताजी, ऑकलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, 08.04.1991**)*

- *सहजयोग के अनुसार नाभि चक्र का तत्व जल है और स्वाधिष्ठान चक्र का अग्नि। परन्तु अन्य साधकों की राय इसके विपरीत है। जैसे श्रीमाताजी ने हमें बताया है स्वाधिष्ठान चक्र भवसागर में नाभि के चहुँ ओर घूमता है।*

- *"श्री गणेश की सहायता के बिना कुण्डलिनी को जागृत नहीं किया जा सकता। कुण्डलिनी 'गौरीशक्ति' हैं और उत्क्रान्ति के हर क्षण उनकी रक्षा करने के लिए श्री गणेश वहाँ होते हैं। केवल इतना ही नहीं, परन्तु कुण्डलिनी के चक्र भेदन करने के बाद श्री गणेश उस चक्र को बन्द कर देते हैं ताकि कुण्डलिनी पुन: नीचे न चली जाए। हमारे अन्दर श्री गणेश मूलाधार चक्र पर विराजमान हैं। यही कारण है कि बहुत से लोगों ने गलती की है क्योंकि त्रिकोणाकार मूलाधार में तो केवल कुण्डलिनी का निवास है और इससे नीचे मूलाधार चक्र पर श्री गणेश विराजमान हैं। उनके कार्यों के विषय में तो आप सब जानते हैं... ।"*

★ *"...सहजयोगियों को चाहिए कि श्री गणेश का आह्वान करें, उनके विषय में सोचें और जब-जब भी गलत विचारों का सामना करना पड़े तो इन विचारों को नियन्त्रित करने के लिए उनसे उनकी शक्तियों की याचना करें और उनकी सहायता के लिए प्रार्थना करें। उनके कठोर परिश्रम और पावनता के कारण ही मनुष्य इतनी महान ऊँचाइयों को पार कर पाता है जो व्यक्ति को वास्तव में स्वप्नसम दिखाई पड़ती हैं। आरम्भ में जिन लोगों ने मूलाधार चक्र पर श्री गणेश को देखा तो उन्हें गलतफहमी हुई तथा उन्होंने स्वीकार कर लिया कि यही मूलाधार है, कुण्डलिनी का निवास। इसी कारण से तान्त्रिकों ने बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न कर दीं।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत, 05.12.1993)

★ *"...मूलाधार चक्र सभी चक्रों से कहीं अधिक कोमल तथा सबसे अधिक शक्तिशाली है। इसकी बहुत सी सतहें हैं और बहुत से आयाम। यदि आपका मूलाधार ठीक नहीं है तो आपकी याददाश्त खराब हो जाएगी। यदि मूलाधार ठीक नहीं है तो आरम्भ में आपका विवेक बिगड़ जाएगा, आपमें दिशा विवेक नहीं रहेगा। अमेरिका के अन्दर चालीस वर्ष की आयु से पूर्व जिस प्रकार पागलपन रोग आ रहा है उसका कारण उनके मूलाधार का खराब होना है। शारीरिक स्तर पर भी, बहुत से असाध्य रोग दुर्बल मूलाधार के कारण आते हैं। मानसिक स्तर पर भी मैंने देखा है कि अधिकतर मानसिक रोग, मैं कहूंगी 90%, दुर्बल मूलाधार के कारण होते हैं। किसी व्यक्ति का मूलाधार यदि दृढ़ है, शक्तिशाली है तो उसे इस प्रकार की तकलीफ नहीं होती। यहाँ पीछे मूलाधार का पूर्ण नियंत्रण है। मस्तिष्क जब कार्य नहीं करता तब आप मस्तिष्क को दोष देते हैं, परन्तु यह मस्तिष्क के कारण नहीं होता मूलाधार के कारण होता है। अतः शारीरिक एवं भावनात्मक सुरक्षा के लिये मूलाधार के प्रति आपका दृष्टिकोण अत्यन्त विवेकशील होना चाहिये।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, बर्मिंघम सेमिनार, इंग्लैण्ड, 20.04.1985)

★ *"मैं आपको एक चक्र के विषय में बताऊंगी, स्वाधिष्ठान चक्र के, जो भवसागर में चहुँ ओर घूमता रहता है। शारीरिक स्तर पर महाधमनी चक्र की उत्पत्ति या रचना के लिये यही चक्र जिम्मेदार है। जब हम सोचते हैं तो हमारी 'सोचने की शक्ति' का ह्रास होता है। हर समय हम अपने दिमाग का उपयोग कर रहे हैं। यह केन्द्र मस्तिष्क की शक्ति की कमी को पूरा करता रहता है। आप जानते हैं कि मस्तिष्क चर्बी के कोषाणुओं से बना है। ये चक्र पेट की चर्बी को मस्तिष्क के उपयोग के लिये परिवर्तित करता है और जो लोग बहुत अधिक सोचते हैं, वो असन्तुलन में चले जाते हैं। भविष्यवादी लोग हर समय योजनायें बनाने में लगे रहते हैं। बिचारा केन्द्र जिसने ज़िगर, अग्नाश्य, प्लीहा, गुर्दे, आंतड़ियों आदि की देखभाल करने का कार्य भी करना होता है, अतिगतिशील हो*

उठता है और दाईं ओर से भविष्यवादी व्यक्ति को जिस पहली समस्या का सामना करना पड़ता है, वह है ज़िगर की समस्या। चिकित्सा विज्ञान को, मेरे विचार से ज़िगर का कोई अधिक ज्ञान नहीं है। ये शरीर का अत्यन्त महत्वपूर्ण अवयव है...''

(परम पूज्य श्रीमाताजी, चिकित्सक सम्मेलन, मैरीडियन होटल, दिल्ली-25.03.1993)

- ⋆ *नाभि के इर्द-गिर्द भवसागर आदिगुरुओं का निवास स्थान है - ये तथ्य श्रीमाताजी की देन है। इसी क्षेत्र में सुषुम्ना नाड़ी में रिक्ति है। सम्भवतः प्राचीनकाल में कोई गुरु ही इस रिक्ति को दूर कर सकता था। सहजयोग, साधक को स्वयं का गुरु बना देता है क्योंकि परम पूज्य श्रीमाताजी की कृपा से आत्म-साक्षात्कार का आशीर्वाद प्राप्त होने पर कुण्डलिनी जब मूलाधार से सहस्रार तक उठती है तो सुषुम्ना के अन्दर की यह रिक्ति दूर हो जाती है।*

- ⋆ *हर चक्र के बाईं और दाईं ओर के गुणों तथा देवी-देवताओं की अभिव्यक्ति सहजयोग की अद्वितीय विशेषता है। चक्रों के इन गुणों तथा इन पर विराजमान देवी-देवताओं का ज्ञान, चक्रों के शुद्धिकरण और सन्तुलन में सहायक है।*

(ख) *मानव के एकमात्र कोषाणु (अमीबा) से उत्पति को सहजयोग स्वीकार करता है। ओंकार'(ओऽम्) (बाइबल इसे 'शब्द' कहती है) से पूरी सृष्टि का आरम्भ हुआ, श्री गणेश इसी ओंकार के प्रतीक हैं। बीज रूप में मूलाधार चक्र की चार पंखुड़ियों में ऐसे गुण निहित हैं जो विकसित होकर स्वयं को ऊपर के चक्रों में अभिव्यक्त करतेहैं।*

(ग) *आज्ञा चक्र (छठा चक्र) पर श्री ईसा मसीह का स्थान होना सहजयोग के लिए विशिष्ट है। उनका पुनर्जन्म कुण्डलिनी के स्थूल से आध्यात्मिक विश्व तक उत्थान का प्रतीक है। आज्ञा चक्र के संकीर्ण द्वार के वे प्रहरी हैं। उन्होंने घोषणा की थी : 'मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ और जीवन हूँ। मेरे सम्मुख आए बिना कोई भी परम पिता परमात्मा तक नहीं पहुँच सकता।'' श्रीमाताजी के शब्दों में......*

- ⋆ *''ये आज्ञा चक्र स्वर्ग का द्वार है और सभी को इसमें से गुजरना पड़ता है। इसी चक्र पर हमारे महान अवतरण भगवान् ईसामसीह का निवास है। हमारे भारतीय शास्त्रों में उन्हें महाविष्णु—राधाजी के पुत्र—कहा गया है। उनके तत्व ग्यारह रुद्रों से बने हैं, अर्थात् ग्यारह विनाशकारी शक्तियाँ। परन्तु शासक तत्व, मुख्य तत्व श्री गणेश का है अर्थात् अबोधिता। तो वे अबोधिता की प्रतिमूर्ति हैं। अबोधिता अर्थात् पूर्ण पावनता। उनका शरीर पृथ्वी तत्व से नहीं बनाया गया था अर्थात् उनका शरीर विनाशशील नहीं था। वे ओंकार हैं। मृत्यु के समय वे उत्क्रान्त हुए। यह सच्चाई है कि वे उत्क्रान्त हो गए क्योंकि वे ओंकार से बने थे। क्योंकि वे राधाजी के पुत्र हैं, अन्य देवी-देवताओं के साथ उनके सम्बन्धों को आप आसानी से देख सकते हैं। महाविष्णु के विषय में देवी भागवतम् में वर्णन है...''*

★ *"...क्योंकि देवी भागवत में ईसामसीह का वर्णन बहुत स्पष्ट किया गया है और हम इसे कुण्डलिनी में भी सिद्ध कर सकते हैं, कि जब कुण्डलिनी उठती है और यहाँ आज्ञा पर, रुकती है तो आपको भगवान ईसामसीह की स्तुति कहनी पड़ती है। इसके बिना आज्ञा चक्र नहीं खुलता। बिना उनका नाम लिए आज्ञा चक्र का न खुलना इस बात को प्रमाणित करता है कि ईसामसीह ही यहाँ शासक हैं या महाविष्णु का नाम लेने पर भी यह चक्र खुल जाता है। अतः महाविष्णु और ईसामसीह एक ही हैं। आप इस प्रमाण को अवश्य देखें। आपका केवल अपने आपको ईसाई मानकर अन्य लोगों को काफ़िर कहकर तिरस्कार करना, बहुत बड़ी गलती है। आप बहुत बड़ी गलती के शिकार हैं.... ?"* ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत, 03.02.1983)***

(घ) *सिर क्षेत्र की पीठ में सभी चक्रों का स्थान भी सहजयोग की अद्वितीय देन है। (जैसे श्रीमाताजी द्वारा बनाए गए चित्र में दर्शाया गया है।)*

*"सर्वप्रथम वे सिर में चक्रों का सृजन करती हैं जिन्हें हम चक्रों की पीठ कहते हैं। तत्पश्चात् नीचे आकर इन चक्रों का सृजन करती हैं, जो विराट के शरीर में है। एक बार ऐसा हो जाने के बाद वे मानव का सृजन करती हैं परन्तु सीधे से (*Directly*) नहीं।"* ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली, 26.06.98)***

(च) *मस्तिष्क (माया) क्षेत्र में विध्वंसक ग्यारह एकादश रुद्रों के स्थान की खोज भी नई एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण खोज है। सहजयोग में परमपूज्य श्रीमाताजी के आशीर्वाद से कुगुरुओं के प्रभाव के कारण कुपित एकादश रुद्रों के साए से होने वाली घातक बीमारियों से भी मुक्ति प्राप्त होती है। एकादश रुद्र के सार और मानव की आध्यात्मिक उत्क्रान्ति में उनके योगदान के विषय में, श्रीमाताजी के अपने शब्दों में :*

★ *"...जब ये कुण्डलिनी यहाँ (आज्ञा के स्तर पर) आती है तो सहस्रार में प्रवेश करने के लिये इसके मार्ग में जो पहली बाधा आती है वह 'एकादश रुद्र' हैं। ये ग्यारह शक्तियाँ हैं, ग्यारह विध्वंसक शक्तियाँ, जो यहाँ स्थापित हैं। पाँच इस ओर, पाँच इस ओर (बायां और दायां) और एक मध्य में। हमारे अन्दर ये बाधाएँ दो प्रकार के अपराधों के करने से बनी हैं। यदि हम अपना सिर गलत गुरुओं के सम्मुख झुकाएँ, उनके गलत मार्गों के प्रति समर्पित हो जाएँ तो हमारे अन्दर दाएँ ओर की रुद्र बाधा विकसित हो जाती है—ये पाँचों शक्तिहीन हो जाते हैं। आप यदि नतमस्तक हुए हैं—क्योंकि मैं कभी किसी गलत तथा परमात्मा विरोधी व्यक्ति के सम्मुख नतमस्तक नहीं हुई—तब इस ओर समस्या खड़ी हो जाती है, दाईं ओर को। आप यदि सोचते हैं कि "मैं अपनी देखभाल स्वयं कर सकता हूँ, मैं स्वयं का गुरु हूँ, मुझे कौन सिखा सकता है? मैं किसी की बात नहीं सुनना चाहता, मैं परमात्मा को नहीं मानता, परमात्मा कौन है? मुझे परमात्मा की कोई चिन्ता नहीं है", तब आपका दायाँ पक्ष नहीं पकड़ता, परन्तु बायाँ*

पक्ष पकड़ जाता है क्योंकि दायां पक्ष इस ओर घूमता है और बायाँ इस ओर। अतः ये दस हैं और एक विराट हैं-विष्णु, क्योंकि हमारे पेट में भी दस गुरुओं के स्थान है और एक विष्णु का। तो जब साधना गलत हो, और दस गुरु शक्तिहीन हो जायें तो एकादशरुद्र विकसित हो जाते हैं। आपके अन्दर जब ये चीज़ शुरू हो जाती है जैसे मैंने कहा एक इस ओर और एक उस ओर (दाएं-बाएं)। तो जिन लोगों ने गलत गुरुओं के सम्मुख सिर झुकाया है उनकी प्रकृति ऐसी बन जाती है कि उन्हें कैंसर आदि असाध्य रोगों का खतरा होता है— उन लोगों को जो गलत गुरुओं के सम्मुख नतमस्तक हुए हैं।

⋆ *अब जो लोग सोचते हैं, "मैं अन्य सभी से बेहतर हूँ, मुझे परमात्मा की कोई चिन्ता नहीं है, मैं परमात्मा को नहीं चाहता, परमात्मा से मुझे कुछ नहीं लेना-देना। ऐसे सभी लोगों को बाईं ओर के एकादश की समस्या हो जाती है। बाईं ओर का एकादश बहुत खतरनाक भी है क्योंकि ऐसे लोगों को दाईं ओर के हृदयाघात, शारीरिक रूप से मैं कह रही हूँ, समस्या हो जाती है तथा अन्य सभी प्रकार की दायें पक्ष की समस्यायें। अतः कुण्डलिनी के सहस्रार में प्रवेश करने में एकादश रुद्र, सबसे बड़ी समस्या हैं। ये समस्या भवसागर से आती है जो मेधा को आच्छादित किए हुए है (जो मस्तिष्क की सतह है)। इस प्रकार से यह तालू क्षेत्र में भी प्रवेश कर सकती है। जो लोग गलत गुरुओं के पास गए हैं परन्तु बाद में सही निष्कर्ष पर पहुंचकर स्वयं को सहजयोग के प्रति समर्पित कर देते हैं, अपनी गलतियों को स्वीकार करके कहते हैं कि 'मैं स्वयं का गुरु हूँ' तो वे ठीक हो सकते हैं। जो लोग ये कहते चले जाते हैं कि "मैं सबसे ऊपर हूँ, मैं परमात्मा में विश्वास नहीं करता, परमात्मा कौन हैं? मैं किसी पैगम्बर को नहीं मानता या कुछ और— परमात्मा या किसी अवतरण के विरोध में— परमात्मा विरोधी व्यक्ति जो इस तरह की बातें करता है— उसके अन्दर की समस्याएं भी निवारण हो सकती हैं यदि वह विनम्र होकर सहजयोग को 'परमचेतना' (Superconsciousness) में प्रवेश करने का एकमात्र मार्ग स्वीकार कर लें।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, हनुमान रोड, नई दिल्ली, 04.02.1983)

(छ) *सहजयोग के अनुसार व्यक्ति के बाजू, हथेलियों, टाँगों, पैरों तथा स्थूल शरीर में ऐसे बिन्दु हैं जो भिन्न चक्रों के अनुरूप हैं (जैसा चित्र में दर्शाया गया है।) चक्र जब स्वस्थ अवस्था में होते हैं तो इन बिन्दुओं पर शीतलता का एहसास होता है। (आरम्भिक अवस्था में ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी) चक्र यदि बाधित हों तो इन बिन्दुओं पर चुभन, भारीपन और गर्मी की संवेदना होती है।*

मानव ऐसा जीवन्त एन्टीना बन जाता है कि वह ये सभी संकेत प्राप्त करता है जिनका रहस्य केवल सहजयोग में श्रीमाताजी के आशीर्वाद से ही जाना जा सकता है।

रहस्योद्‌घाटन

"...इस बात का पता लगाया जा चुका है और जैसा अब मैं आपको बता रही हूँ, आपको अपने अन्दर उन सभी देवी-देवताओं को पूजा द्वारा जागृत करना होगा जो अभी तक सुप्तावस्था में हैं, परन्तु क्योंकि ये देवी-देवता, आदिदेव, मेरे साथ हैं, आप मेरी पूजा करें और मेरे अन्दर के सभी देवी-देवता जागृत हो जाएंगे और इस प्रकार आपके अन्दर के देवी-देवता भी जाग जाएंगे। अत: ग्रहण करने के लिये आपकी चैतन्य-लहरियों का सुधरना अत्यन्त आवश्यक है।"

—परम पूज्य श्रीमाताजी, ब्राइटन, इंग्लैण्ड, 19.05.1980

★ **...जब आप संस्कृत भाषा या देवनागरी में मन्त्रोच्चारण करते हैं तो आप मेरे चक्रों को बेहतर ढंग से उद्दीप्त कर सकते हैं।**

"क्या सभी लोग मेरी हिन्दी समझ सकते हैं? मैं यदि अंग्रेजी में बोलूं तो क्या आप समझ पाएंगे? मैं अंग्रेजी भाषा के विरुद्ध नहीं हूँ परन्तु आत्मा की भाषा तो संस्कृत है। उन्होंने (अंग्रेज़ों) कभी आत्मा की चिन्ता नहीं की। अत: हमें कोई ऐसी भाषा उपयोग करनी होगी जो आत्मा के विषय में बोले। अंग्रेजी भाषा पर्याप्त नहीं है। उनके पास वे अनुभव नहीं हैं क्योंकि अब तक वे पर्याप्त गहनता में नहीं उतरे हैं। हम अत्यन्त प्राचीन लोग हैं। परमात्मा को जानना हमारी संस्कृति है। सभी कुछ संस्कृत में आया है, क्योंकि संस्कृत वास्तव में देववाणी है। इसके अतिरिक्त जब कुण्डलिनी उठती है तो वह चैतन्य-लहरियाँ बनाती हैं। उससे विशेष स्वर निकलते हैं जो भिन्न चक्रों पर देवनागरी स्वर हैं। यदि मेरे पास समय हुआ तो मैं आपको इनके विषय में बताऊंगी।

जब आप संस्कृत भाषा या देवनागरी में मन्त्रोच्चारण करते हैं केवल तभी आप इन्हें बेहतर ढंग से उद्दीप्त कर सकते हैं। सीखने का प्रयास करें, यदि संस्कृत नहीं तो कम से कम हिन्दी, क्योंकि ध्वन्यात्मक भाषा होने के कारण इसमें स्वर होता है और वह स्वर चैतन्य प्रभाव प्रदान करता है। आप ये भाषा सीखने का प्रयत्न करें। हिन्दी मेरी मातृभाषा नहीं है। मेरी मातृभाषा मराठी है। मैं हिन्दी इसलिए बोलती हूँ क्योंकि मैं इसके महत्व को जानती हूँ। थोड़ी बहुत अंग्रेजी भी मुझे आती है। अत: हिन्दी का थोड़ा-सा ज्ञान प्राप्त कर लेना बेहतर होगा। मैं कहना ये चाह रही हूँ कि मराठी में बोलना मेरे लिये सुगम है। मैं थोड़ी बहुत बंगाली भी जानती हूँ। आप तमिल या तेलगू या इस योगभूमि की किसी अन्य भाषा में भी इसके विषय में बात कर सकते हैं।

ये महान देश 'योग' का है। इस भूमि का हर ज़र्रा, आप हैरान होंगे, चैतन्यित है। वैज्ञानिक ये बात नहीं समझ सकते। पश्चिमी विचारों को यदि हम स्वीकार करने लगेंगे तो हम अपना सभी कुछ खो देंगे, वह सभी कुछ जो अत्यन्त महान है। नि:सन्देह ये नष्ट तो नहीं होगा परन्तु हम इसे अपने लक्ष्य के लिए उपयोग नहीं कर पायेंगे। एक ओर तो हमें ये सब अनदेखा करना पड़ेगा और दूसरी ओर हमें वह सब स्वीकार करना होगा जो मात्र विदेशी है तथा जिसमें बोध का भी अभाव है। ये समग्र नहीं है। इसमें सभी कुछ निहित नहीं है। अत: मैं आपसे प्रार्थना करूंगी कि थोड़ी-सी हिन्दी भाषा भी अवश्य सीखें। मेरा एक अंग्रेजी प्रवचन मराठी में रूपान्तरित किया गया, वह कितना आश्चर्यजनक था। अंग्रेजी में वही कितना उथला लग रहा था! हो सकता है ऐसा मेरी दुर्बल अंग्रेजी के कारण हो!"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, नई दिल्ली, 15.02.1977)

चक्रों से सम्बन्धित संगीत-स्वर

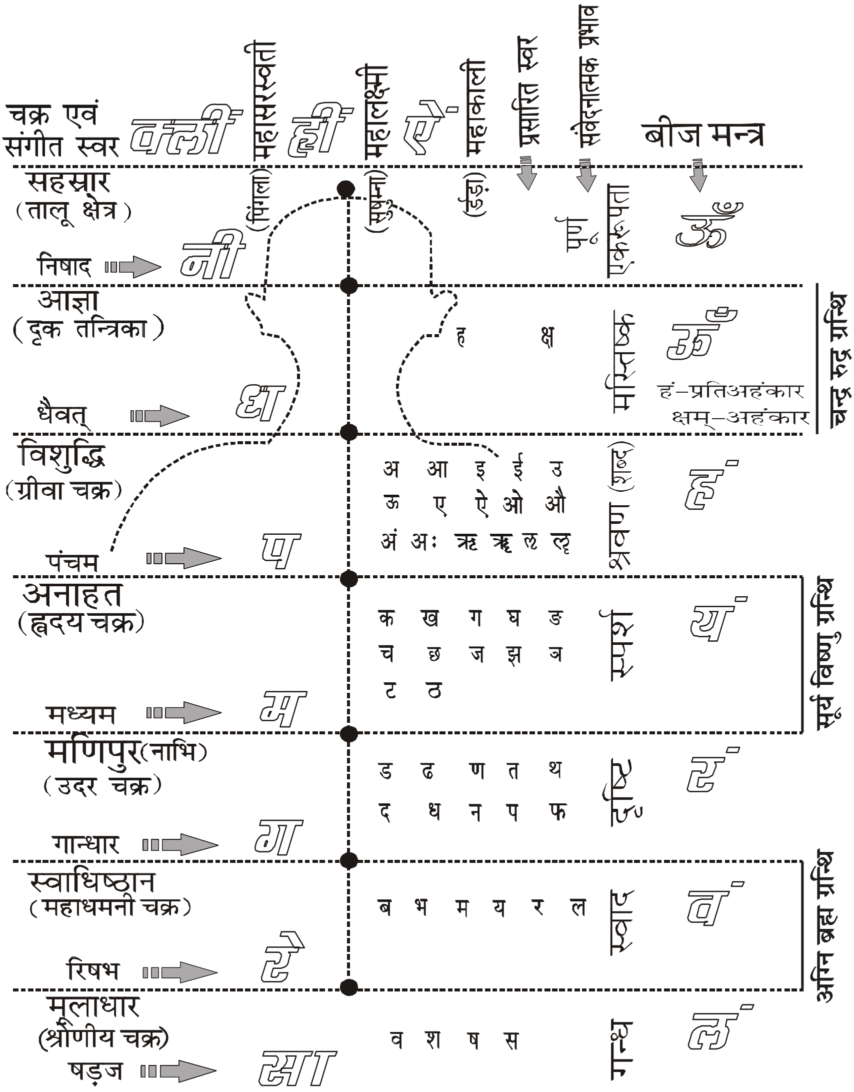

संदर्भ

1. ***परम पूज्य श्री माताजी,*** *3 फरवरी 1978 दिल्ली, 18 दिसंबर 1978 लंदन*
2. ***देवी भागवत,*** *पुस्तक-7 अध्याय-35,* ***निर्मला योग*** *-मार्च-अप्रैल 1983 जनवरी फरवरी 1984 (हिन्दी)*
3. ***संगीत और सहजयोग:*** *आप्टे अरुण - 1997*
4. ***चैतन्य-लहरियों के माध्यम से दिव्य ज्ञान,*** *राज शेखरन - 1992*

★ **जब तक आप संस्कृत में श्लोक-उच्चारण नहीं करते तब तक मेरे चक्र प्रतिक्रिया नहीं करते**

"...संस्कृत भाषा की विशेषता ये है कि उसके सभी अक्षर मंत्र-रूप हैं। जैसे देवनागरी लिपि में अक्षर, अ+क्ष+र... जिनका हम अ, आ, इ, ई आदि उच्चारण करते हैं। वे सब संस्कृत के अक्षर हैं जो कुण्डलिनी के अन्दर गतिशील हैं तथा जिनकी उत्पत्ति वहीं से होती है। इस वर्ण-माला और अक्षरों को हमने अपनी गहन ध्यान-धारणा तथा अन्तर-अवलोकन में सीखा है और फिर इन्हें लिपिबद्ध किया है.......

.......मानव के अन्दर कुण्डलिनी के प्रवाह से हमें भाषा का ज्ञान प्राप्त हुआ है। कुण्डलिनी जब इस प्रकार से चलती है तो यहाँ मध्य में शा (Sha) ..... *श* (Sh) ... *जैसी आवाजें उत्पन्न करती है (श्रीमाताजी मूलाधार चक्र की ओर इशारा करती हैं) हर चक्र पर यह भिन्न स्वर निकालती है - भिन्न आवाजें। (आज्ञा चक्र की ओर इशारा करते हुए) जैसे यहाँ पर द्विअक्षरीय शब्दों की उत्पत्ति हुई है जैसे 'हं' और 'क्षं'' (इनके स्वर ह और क्ष हैं) ऐसा घटित होता है! संस्कृत भाषा में जिस शब्द का हम 'ओऽम्' उच्चारण करते हैं और 'ए' की तरह से जिसे हम 'ओऽम्' लिखते हैं, उसी शब्द ओऽम को आप साकार रूप में अपने अंदर देख सकते हैं। जागृत होने पर कुण्डलिनी का प्रकाश इस चक्र-विशेष पर पड़ता है, तब आप वहाँ 'ओऽम्' को वैसे ही खुदा हुआ देख सकते हैं जैसे यह लिखा जाता है, यह इस चक्र पर प्रतिबिम्बित भी होता है।*

वर्ण-माला के अक्षरों अ, आ, इ, ई आदि को जैसे आप संस्कृत भाषा की देवनागरी लिपि में लिखते हैं, वह भी हमारे अन्त: स्थित चक्रों पर कुण्डलिनी का प्रकाश पड़ने पर और इन स्वरों से उत्पन्न होने वाले निनाद से प्रतिबिम्बित होते हैं। इस क्षण अक्षर के आकार के साथ-साथ निनाद भी घटित होता है।

ये अत्यन्त सूक्ष्म है (ये बात आपको समझनी चाहिए) कि आपकी परम्पराएं क्या हैं और वो कहाँ से आई हैं? इनकी उत्पति गहन ध्यान धारणा एवं अन्तर-अवलोकन के माध्यम से हुई है। ये कोई बनावटी चीज़ नहीं है जिसे हमने कहीं बाहर से सीखा हो। परन्तु वास्तव में यहाँ पर तो संस्कृत भाषा पण्डितों, मूर्खों और गधों की भाषा बन गई है जो न तो इसका ठीक उच्चारण जानते हैं और न ही इसके सार को समझते हैं। कारण ये है कि हम सब शैली और कीट्स को पढ़ने वाले अंग्रेज बन गए हैं।

भाषा की उत्पत्ति होती है और यह हमारे अन्दर खुद भी जाती है। हर अक्षर और इसके आकार का कोई अर्थ होता है। 'ओऽम्' शब्द का सृजन किस प्रकार हुआ? किस प्रकार इसका सृजन हुआ? 'ओऽम' शब्द के सृजन का तंत्र (Mechanism) *क्या है? शब्द के अभिलेख की अभिव्यक्ति बिल्कुल वैसी है जैसे शब्द 'ओऽम्'। देखो, मैं अपनी उंगली घुमा रही हूँ और इसके साथ-साथ तुम्हारा आज्ञा चक्र भी घूम रहा है! ये इतना विज्ञानानुकूल* (Scientific) *है क्योंकि इसका सम्बन्ध वास्तविकता* (Reality) *से है। इससे अधिक यथार्थ (वैज्ञानिक) और क्या हो सकता है?*

मेरे चक्र तब तक अनुक्रिया (Respond) *नहीं करते जब तक आप संस्कृत में श्लोक नहीं बोलते। नि:सन्देह ये आश्चर्यजनक बात है। अंग्रेजी में यदि आप श्लोक बोलते हैं तो ये कार्य नहीं करते, इनका असर केवल आज्ञा पर होता है जहाँ ईसा-मसीह ने स्वयं लिखा था। यह चक्र उनका स्थान है और यहाँ पर उन्होंने इब्रानी* (Hebrew) *भाषा में परमात्मा के प्रति प्रार्थना* (Lord's Prayer) *लिखी है। फिर भी इसका अंग्रेजी उच्चारण भी कार्य करता है क्योंकि वे तो (देवी) क्षमास्वरूपिणी हैं। इस चक्र पर व्यक्ति को 'क्षमा' का शब्द बोलना चाहिए क्योंकि इस चक्र के स्वर 'क्ष' (क+श) है। अत: व्यक्ति को क्षमा करना चाहिए, 'क्षमा' शब्द का उच्चारण करना चाहिए। इन सभी को बोलने या उच्चारण करने पर भी व्यक्ति को 'क्षमा' का मन्त्र बोलना चाहिए। हमारी संस्कृत भाषा और इसके मूल को देखें कि ये कितनी गहन एवं सूक्ष्म है!*

अब इन तीन (देवियों)....... जिनके विषय में मैंने आपको बताया - महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती, हमारे अन्दर विराजमान हैं। हमारे अन्दर इन तीनों की तीन शक्तियाँ भी मौजूद हैं। जिन्हें हम ऐं (Aeim)*, ह्रीं* (Hreem)*, क्लीं* (Kleim) *कहते हैं क्योंकि इनके समरूप निनाद 'ऐं, ह्रीं, क्लीं' हैं।*

'री' (Ree) *......र.........र........शब्द शक्ति का है। र जैसे राधा- 'रा' अर्थात 'शक्ति' और 'धा' अर्थात धारण करने वाली। 'राधा'-'राम' 'कृष्ण'! कृष्ण शब्द की उत्पत्ति, जैसे मैंने आपको बताया था, कृषि शब्द से हुई है। 'कृष्ण' के 'कृ' का उच्चारण करते ही विशुद्धि चक्र कार्यान्वित हो उठता है। अत: व्यक्ति को कृष्ण शब्द उच्चारण करना चाहिए क्योंकि श्री कृष्ण का.... इस स्थान (विशुद्धि) से सीधा सम्बन्ध है। ये शब्द सीधा विशुद्धि चक्र से जुड़ा हुआ है। अत: कृष्ण केवल उसी का नाम हो सकता है। कल्पना करें कि ये विषय कितना वैज्ञानिक और कितना सूक्ष्म है! परन्तु सहजयोग मूलत: हमारे प्रेम का पथ है और प्रेम में विश्लेषण करने की और अधिक गहनता में जाने की आवश्यकता नहीं होती। छोटे से शब्द 'प्रेम' को समझ लेने मात्र से ही व्यक्ति पण्डित बन जाता है (एक ही आखर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय - कबीर)। ये हमारा सहजयोग है। आपको बहुत बड़ा पण्डित (बुद्धिवादी) बनने की आवश्यकता नहीं है। श्रीमाताजी पुन: हिन्दी में कहती हैं 'पढ़ि-पढ़ि पण्डित मूर्ख भए' - बहुत अधिक पढ़-पढ़कर पण्डित मूर्ख बन जाते हैं। अत: इन पण्डितों से परमात्मा ही बचाएं! बहुत अधिक बुद्धिवादी और विद्वान लोगों से भी, जो सहज में आए हैं, परमात्मा हमारी रक्षा करें।*

(परम पूज्य श्री माताजी, दिल्ली, भारत - 03.02.1978)

★ 'कुण्डलिनी जब उठती है तो स्वर उत्पन्न करती है'

"कुण्डलिनी जब उठती है तो स्वर उत्पन्न करती है और चक्रों पर जो स्वर सुनाई देते हैं उनका उच्चारण इस प्रकार है।

देवनागरी की ध्वन्यात्मक भाषा में इन उच्चारणों का उपयोग हो रहा है, देवनागरी अर्थात् देवताओं द्वारा बोली जाने वाली भाषा।

⋆ *मूलाधार पर, जहाँ चार पंखुड़ियाँ हैं निम्नलिखित स्वर हैं:*

व, श, ष, स। इनमें से अन्तिम, 'ष' और 'स' स्वर बहुत मिलते जुलते हैं परन्तु जब साँप फुँफकारता है तो 'ष', तीसरा स्वर निकलता है। अत:—

1. *'व', जैसे श्री गणेश अथर्**व**शीर्षम*
2. *'श' जैसे **श्री** गणे**श** अथर्व**शी**र्षम*
3. *'ष' जैसे अथर्वशीर्**ष**म*
4. *'स' जैसे **सा**क्षात, **स**त्य*

⋆ *स्वाधिष्ठान, जिसमें छ: पंखुड़ियाँ हैं, से छ: स्वर निकलते हैं :*

1. *'ब' जैसे **बा**ग या श्री **ब्र**ह्मदेव*
2. *'भ' जैसे **भू**मि, **भ**लाई*
3. *'म' जैसे न**म**स्ते, **म**न*
4. *'य' जैसे **यो**गी*
5. *'र' जैसे **र**थ, **र**त्न*
6. *'ल' जैसे **ल**म्बोदर, **ल**लाट*

⋆ *मणिपुर की दस पंखुड़ियाँ हैं और इसमें से दस स्वर उत्पन्न होते हैं—*

1. *'ड' जैसे कुण्**ड**लिनी, **ड**मरू*
2. *'ढ' जैसे **ढो**लक, **ढ**लान*
3. *'ण' जैसे ग**णे**श, धर**णी***
4. *'त' जैसे गणप**ति**, **त**र्क*
5. *'थ' जैसे **थ**म्भ, **थ**मना*
6. *'द' जैसे **दा**ता, **द**त्तात्रेय, **द**क्ष*
7. *'ध' जैसे **ध**नुष, **ध**र्म, **ध**न*
8. *'न' जैसे **न**मो**न**म:*
9. *'प' जैसे **प्र**थम, **प**रोक्ष, **प**ति-**प**त्नी, **प**रम*
10. *'फ' जैसे **फ**ल, **फ**णीश्वर*

⋆ *अनाहत चक्र की बारह पंखुड़ियाँ हैं जिनमें से निम्नलिखित आवाजें निकलती हैं:*

1. *'क' जैसे **क**र्ता, **क**था, **कै**वल्य*
2. *'ख' जैसे **ख**लविदम्, **ख**गोलशास्त्री*
3. *'ग' जैसे **ग**णेश, **ग**र्भ*
4. *'घ' जैसे **घो**ररूपा, **घ**न**घो**र*
5. *'ङ' जैसे वाङ्मुख*

6. *‘च’ जैसे **च**तुरहस्तम्, **चा**णक्य*
7. *‘छ’ जैसे शुद्धइ**च्छा**, **छ**तरी*
8. *‘ज’ जैसे **ज**गत्**ज**ननी, **ज**नक*
9. *‘झ’ **झ**न **झ**न **झिं झि**त*
10. *‘ञ’ नासिका उच्चारित-निर**ञ्**जन*
11. *‘ट’ जैसे संक**ट**मोचन, विक**ट***
12. *‘ठ’ जैसे नीलक**ण्ठ***

★ *विशुद्धि चक्र की सोलह पंखुड़ियाँ होती हैं और उसी संख्या में स्वर (vowels) उत्पन्न होते हैं।*

1. *‘अ’ जैसे **अ**वश्रोतारम्, **अ**वदातारम्, **अ**थर्वशीर्षम्*
2. *‘आ’ जैसे **आ**कार, **आ**कृति, **आ**धार*
3. *‘इ’ जैसे **इ**च्छा*
4. *‘ई’ जैसे **ई**श्वर, **ई**ड़ा नाड़ी*
5. *‘उ’ जैसे **उ**न्माद, **उ**त्क्रान्ति, **उ**त्थान*
6. *‘ऊ’ जैसे **ऊँ**चा, **ऊँ**ट, **ऊ**तक, **ऊ**धम, **ऊ**न*
7. *‘ऋ’ जैसे **हृ**दय, **कृ**पा*
8. *‘ॠ’ लम्बा उच्चारण—**रू**प*
9. *‘लृ’ लृटलकार*
10. *‘ॡ’ लम्बा उच्चारण*
11. *‘ए’ जैसे **ए**कदन्तम्, **ए**कमेव*
12. *‘ऐ’ जैसे अ**तै**व, **वै**भव*
13. *‘ओ’ जैसे **ओं**कार, **श्रो**त्रम*
14. *‘औ’ जैसे **गौ**री*
15. *‘अं’ जैसे एकदन्त**म्** चतुर्हस्त**म्***
16. *‘अः’ जैसे ईश्व**रः**, अन्**तः**पुर*

★ *आज्ञा चक्र में से निम्नलिखित स्वर उत्पन्न होते हैं।*

1. *‘ह’—चतु**र्ह**स्तम्, **ह**तः*
2. *‘क्ष’—श्री ल**क्ष्**मी, **क्ष**मा*

सहस्त्रार पर पहुँचकर साधक निर्विचार हो जाता है और कोई स्वर नहीं निकलता, शुद्ध ‘अनाहत’ होता है। अर्थात् शुद्ध रूप से स्पन्दन—जैसे हृदय में होता है—लप-टप, लप-टप, लप-टप।

जब ये सारे स्वर एकत्र होकर शरीर के घुमाव (Spinal) में से गुजरते हैं, यदि शरीर शंख जन जाए, तो इस समन्वय से उत्पन्न होने वाला स्वर ओं..........होता है। जैसे सूर्य के

सातों रंग अन्ततः सफेद किरणें बन जाते हैं या आप कह सकते हैं कि स्वर्णिम रंग की किरणें।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 14.10.1978)

★ तीन ग्रन्थियाँ हैं—अर्थात् गाँठें

"ग्रन्थियाँ तीन हैं—ब्रह्म ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि और रुद्र ग्रन्थि। कुण्डलिनी, मूलाधार चक्र और स्वाधिष्ठान के बीच अग्नि के साथ जब ब्रह्म ग्रन्थि मिलती है अर्थात् मूलाधार चक्र, मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्र, तब 'अग्नि-ब्रह्म-ग्रन्थि' की स्थापना होती है। विष्णु ग्रन्थि जब नाभि और हृदय चक्र के बीच सूर्य से मिलती है तो 'सूर्य-विष्णु-ग्रन्थि' की स्थापना होती है। विशुद्धि और आज्ञा के परिमल (Auras) जब मिलते हैं तो 'चन्द्र-रुद्र-ग्रन्थि' की स्थापना होती है।" ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 14.10.1978)***

★ मनुष्य को शक्ति विशुद्धि चक्र के माध्यम से प्राप्त होती है

"आइये देखें कि विशुद्धि चक्र किस प्रकार बना है। जिन स्वरों का उपयोग हम करते हैं वे सब विशुद्धि चक्र से आते हैं और जैसे देवनागरी भाषा में है.........अ आ, इ ई, उ ऊ, ए ऐ, ओ औ, अं अः। जैसा आप जानते हैं कि स्वरों के बिना कोई भी शब्द नहीं बनाया जा सकता, स्वर इतने महत्वपूर्ण हैं। स्वर के बिना व्यंजन बहुत दुर्बल होते हैं, शक्तिविहीन। अतः मनुष्य की वाणी में शक्ति विशुद्धि चक्र के माध्यम से आती है परन्तु यह पूर्णतया सख्त भी हो सकता है, शक्ति पूर्णतः सख्त भी हो सकती है। मान लो आपके पास बहुत मज़बूत आयुध है परन्तु यदि आप उसे उठा ही नहीं सकते तो ऐसे शस्त्र का क्या लाभ है?

(परमपूज्य श्रीमाताजी, विएना, 04.09.1983)

★ हं और क्षं बीज मन्त्र हैं

क्षमा प्रार्थना (Lord's Prayer) आज्ञा चक्र का मन्त्र है। हं और क्षं इसके दो पक्ष हैं। 'हं' अर्थात 'मैं हूँ' और 'क्षं' अर्थात 'मैं क्षमा करता हूँ'। अतः जब आज्ञा चक्र पकड़ता है तो आपको कहना पड़ता है 'मैं क्षमा करता हूँ'। आपके अन्दर यदि अहं है तो भी आपको कहना चाहिए, 'मैं क्षमा करता हूँ'। यदि हमारे अन्दर प्रतिअहं है तो हमें कहना चाहिए 'मैं हूँ, मै हूँ' तो 'हं और क्षं' बीज मन्त्र हैं। ये प्रार्थना के - क्षमा प्रवचन (Lords Prayer) के बीज हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यूयार्क 30.9.1981)

★ ...अहं केवल एक है और वो हैं सर्वशक्तिमान परमात्मा, 'महत्अहंकार'।

"वास्तव में जब आप अपनी दृष्टि इधर-उधर घुमाते हैं, जब आपका चित्त इधर-उधर होता है तो केवल आपका 'अहं' आप पर काबू पाने का प्रयत्न कर रहा होता है। परन्तु वास्तव में 'अहं' पूर्ण मिथ्या है क्योंकि 'अहं' तो केवल एक है और वो हैं सर्वशक्तिमान परमात्मा 'महत्अहंकार'। वास्तव में अहं का अस्तित्व ही नहीं है, ये मिथक (Myth) है। ये बहुत बड़ा मिथक है क्योंकि यदि आप ये सोचने लगे कि आप ही सभी कुछ कर रहे हैं आप ये कर रहे हैं, आप वो कर रहे हैं—जो आप नहीं कर रहे, तब यह दुष्ट अहं प्रवेश कर जाता है और आप

इसे कार्यान्वित करने लगते हैं और इसका प्रक्षेपण सभी दिशाओं में होने लगता है। इसका प्रक्षेपण जब सामने की ओर होता है तो यह दूसरों को नियंत्रित करता है, दूसरों पर प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न करता है, उनका वध करने का प्रयत्न करता है, हिटलर बन बैठता है। अहं जब दाईं ओर को जाता है तो यह अतिचेतन बन जाता है। तब यह अटपटी मूर्खतापूर्ण और मिथ्या चीजों को देखने लगता है। जब ये बाईं ओर को जाता है तो ये बोलने लगता है—कहने का अभिप्राय है स्वयं को अति महान व्यक्ति, साक्षात ईसामसीह या साक्षात् देवी या आदिगुरु के रूप में देखने लगता है और सोचता है कि 'मैं महान व्यक्ति हूँ', ये बाईं ओर की समस्या है। जब ये पीछे को जाता है तब बहुत खतरनाक हो जाता है। ऐसी स्थिति में लोग ऐसे गुरु बन बैठते हैं जो लोगों के जीवन नष्ट कर रहे हैं, उनके अहं जब पीछे की ओर जाते हैं तो वो गुरु बन बैठते हैं, उनके अपने अन्दर अनगिनत दोष होते हैं फिर भी वे लोगों को ऐसी निकृष्टतम स्थिति में ले जाने का प्रयत्न करते हैं जिसे पूर्ण 'नर्क' कहा गया है। **अहं की सभी दिशाओं में गतिशीलता ही नर्क है।**

★ श्वास लेना, देखना, सुनना, सूँघना, स्वाद लेना.... सभी कुछ यहाँ से घटित हो सकता है

"...परन्तु आत्म-साक्षात्कार के पश्चात् ये समस्याएं नहीं बनी रहतीं। आत्म साक्षात्कार के पश्चात् यहाँ से (सहस्रार) जिस स्थान का भेदन मैंने किया है, सभी बाधाएं बाहर चली जाती हैं। आज यदि आप किसी चीज़ को त्यागते हैं (अपने मोह का त्याग करते हैं) तो यह वहाँ से बाहर निकल जाता है। स्वयं। ज्यों ही आप इसे छोड़ते हैं, यह वहाँ से स्वत: ही बाहर चला जाता है। इस प्रक्रिया में यह कहीं अन्यत्र प्रवेश नहीं करता। **तालू क्षेत्र का भेदन होने का ये लाभ है। यदि आपकी कोई आदत हो या कोई बन्धन हो तो मस्तिष्क में विचार प्रक्रिया में इसे डाल लें। एक बार यहाँ डालकर इसे बाहर फेंक दें।** *कोई भी बन्धन यदि होगा, तो यह आपको भारीपन का एहसास देगा। हो सकता है नाभि पर। किसी व्यक्ति को बहुत ज्यादा खाने की आदत है। बहुत ज्यादा........ किसी को इतना ज्यादा खाते हुए देखना अच्छा नहीं लगता। आपको चाहिए कि अपने चित्त को नाभि पर डालें - नाभि पर। नाभि यहाँ है। व्यक्ति को चाहिए कि नाभि से उठाकर इसे ऊपर ले जाएं और धीरे-धीरे बाहर निकाल दें। सारी गन्दगी यहाँ से बाहर फेंकी जा सकती है। अब ये विपरीत दिशा में है। विपरीत दिशा से हवा बह रही है..... विपरीत दिशा से।*

अभी-अभी बेवड़े साहब ने मुझे बताया कि मैं यहाँ से साँस ले सकता हूँ। ये सत्य है। साँस लेना, देखना, सुनना, सूँघना, स्वाद लेना.... सभी कुछ यहीं से है। आखिरकार सभी कुछ चेतना (चेतनावस्था) के कारण ही घटित होता है। ज्यों ही चेतना (संवेदना) स्वत: ऊपर इस स्थान पर आती है, सभी कुछ यहीं से घटित होगा। हृदय-स्पन्दित होता है...... शरीर की सभी क्रियाएं यहीं से होती हैं। यहीं से। अपने अन्दर से किसी भी दोष को निकालने की इच्छा यदि आपमें है, तो इसे दबाएं और यहाँ से निकाल दें। ये दोष आपके अन्दर से निकल जाएगा। यहाँ

से निकलने के पश्चात् आपकी सभी आदतें और बन्धन समाप्त हो जाएंगे।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, मुम्बई, 03.09.1973)

★ मैं जब बोलती हूँ तो सभी शब्द मन्त्र होते हैं

"मैं जब बोलती हूँ तो सभी शब्द मन्त्र होते हैं। ज्यों ही मैं बोलने लगती हूँ, लोग ठीक होने लगते हैं। अब सभी प्रकार के लोग उत्क्रान्ति की ओर बढ़ने लगे हैं। कुछ लोग बहुत तेजी से बढ़ने लगे हैं। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है उन्होंने देवी रूप में मुझे अपने अन्दर स्थापित कर लिया है और मुझ तक तो पहुँचा ही नहीं जा सकता। अब आपमें से ही कोई एक ऐसा व्यक्ति होगा जो खड़ा हो जाएगा, जिसे लोग देखेंगे और सहज में आएंगे।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, मुम्बई, 27.02.1987)

★ ...देवी-देवताओं का आह्वान हम कैसे करते हैं...

"...तो इस प्रकार से आपको समझना चाहिए कि इन छोटे-छोटे कार्यों को करके, उच्चारण करके, उनके मन्त्रोच्चारण आदि द्वारा किस प्रकार हम अपने अन्दर विराजमान देवी-देवताओं का आह्वान करते हैं। अब आप जागृत (आत्म- साक्षात्कारी) हैं। आपके मन्त्र अब 'सिद्ध-मन्त्र' हैं।" **(परम पूज्य श्रीमाताजी, ब्राइटन 19.05.1980)**

★ ...जब भी मैं बोलती हूँ तो यह मन्त्र है, जब मैं नहीं बोलती तब भी मन्त्र प्रवाहित हो रहा होता है।

"जब आप मुझसे बात करते हैं तो एक अन्य तरीका है, जैसे कहना....'नहीं श्रीमाताजी।' ये आम बात है, जब मैं कुछ कहती हूँ तो लोगों की प्रतिक्रिया ये हो सकती है, 'नहीं श्रीमाताजी।' आप समझें कि आखिरकार एक पाठ्यक्रम चल रहा है, और जब भी मैं बोलती हूँ तो यह मन्त्र है, और जब मैं नहीं बोल रही होती तब भी मन्त्र प्रवाहित हो रहा होता है। अचानक आप कह उठते हैं 'नहीं श्रीमाताजी', और इस प्रकार आप पूर्ण प्रणाली में पीछे की ओर ले जाने वाली एक लहर का सृजन कर देते हैं। उस समय यदि आप मात्र मुझे सुनें कि मैं क्या कर रही हूँ, तो मेरा कथन स्वयं कार्य कर देगा, आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, 04.09.1983)

★ मेरे अन्दर के देवता जागृत होने पर आपके अन्दर विराजमान देवता भी जागृत होते हैं

"...ये पाया गया है और अब मैं आपको बता रही हूँ कि सर्वप्रथम उनकी पूजा द्वारा आपको अपने अन्दर के सुप्त देवी-देवताओं को जागृत करना होगा। परन्तु ये देवी-देवता, आदि देवी-देवता क्योंकि मेरे साथ हैं, आप मेरी पूजा करें और मेरे अन्दर के सभी देवी-देवता जागृत हो जाएंगे और उनके जागृत होने पर आपके अन्दर के देवी-देवता भी जाग जाएंगे। अत: सबसे पहले आपकी चैतन्य लहरियों का सुधरना आवश्यक है ताकि आप चैतन्य को आत्म-सात कर सकें।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, ब्राइटन 19.05.1980)

★ श्रीमाताजी द्वारा की गई 'बीज मन्त्र' के सार की व्याख्या

"...बीज मंत्र का अर्थ, हम कह सकते हैं 'वैखरी' है। वैखरी वाणी की शक्ति है। जिन लोगों के पास आत्म-साक्षात्कार की शक्ति है वे वाणी की इस शक्ति को मंत्र बना सकते हैं। उन लोगों ने यदि सुधरना हो, मान लो वे किसी चक्र को सुधारना चाहते हैं या बाएं या दाएं को सुधारना चाहते हैं, तो उन्हें 'बीज मन्त्र' बोलने पड़ेंगे। बीज मन्त्र बोलने पर सम्बन्धित क्षेत्र को बीज मिल जाता है और उस बीज को अंकुरित होकर बढ़ना पड़ता है। तो पहला कदम बीज मन्त्र बोलना है और भिन्न चक्रों के लिए भिन्न मन्त्र बोलने पड़ते हैं। तो एक तो बीज का पड़ना है और फिर वृक्ष का बनना। सर्वप्रथम यदि आपको बीज का ज्ञान है तब उच्चारण करने से आप अपने अन्दर उसका आरोपण कर सकते हैं और फिर अन्य सभी मन्त्र भी बोलने लगते हैं। इस प्रकार से आप इसे उन्नत करते हैं।

'संस्कृत' शब्द की उत्पति भी कुण्डलिनी की गतिविधि से हुई है। उठती हुई कुण्डलिनी की आवाज को महान सन्तों ने रिकार्ड किया। इसी प्रकार से सभी चक्रों के, उनके उपचक्रों या पंखुड़ियों की संख्या के अनुसार स्वर तथा व्यंजन हैं, और चक्रों की ये पंखुड़ियाँ संस्कृत भाषा की वर्ण-माला का सृजन करती हैं।" **(परम पूज्य श्रीमाताजी पुणे, भारत—1988)**

★ संस्कृत को पावन बनाया गया

"ये भाषा पावन बनाई गई। सर्वप्रथम एक भाषा थी जिससे दो भाषाएं उत्पन्न हुई - पहली लैटिन और दूसरी, जिस भाषा को पावन बनाया गया, वह थी संस्कृत। संस्कृत भाषा सन्तों से आई है। उन सन्तों से जिन्होंने कुण्डलिनी की आवाज़ को सुना और इस भाषा को बनाया। यह 'वैखरी' की शक्ति है। अब लिपि भी है और वैखरी भी है। शक्ति या, आप कह सकते हैं यन्त्र, परन्तु दिव्य विधि से कार्यान्वित करने के लिए आपको इसे मन्त्र में परिवर्तित करना होगा। इसका मन्त्र बनाने के लिए, जो भी मन्त्र आप बनाना चाहते हों, बीज मन्त्र का ज्ञान होना आवश्यक है। मान लो आप कुण्डलिनी उठाना चाहते हैं तो बीज मन्त्र है 'रीं' और 'रीं' से आपको 'ओऽम त्वमेव साक्षात् श्री रीं साक्षात्..... की ओर बढ़ना चाहिए। तत्पश्चात् आपको सभी विराजमान देवी देवताओं के मन्त्र कहने चाहिए। अब आप सब विद्यावान बन गए हैं।

अब समझने का प्रयत्न करें कि किस प्रकार से ये 'विद्या' धीरे-धीरे आपके अन्दर पेंठ रही थी। इसके लिए कोई अध्यापक या कोई अन्य व्यक्ति हाथ में छड़ी लिए नहीं बैठा था। सारी विद्या व्यक्ति के अन्दर और बाहर से निकली। जो कुछ भी मैं कह रही हूँ इसे आप अपनी चैतन्य-लहरियों पर देख सकते हैं। तो यह आपके हाथों में भी जाती है। आप इसे इसलिए स्वीकार नहीं करते क्योंकि मैं ऐसा कह रही हूँ, परन्तु इसलिए स्वीकार करते हैं क्योंकि यह बात सत्य है। मान लो मैं कहती हूँ कि यह जल है, तो क्या, आप जल को पीकर देखेंगे कि क्या यह प्यास बुझाता है? केवल तभी आप विश्वास करेंगें कि यह जल है, अन्यथा आप विश्वास नहीं करेंगे। ये ऐसा ही है। हम सब 'स्वयं-सिद्ध' हैं।

'रा' अर्थात शक्ति (राधा), शक्ति को धारण करने वाली राधा हैं। वे महालक्ष्मी हैं, इसीलिए कुण्डलिनी को धारण करती हैं। 'ई' आदिशक्ति है और 'र' कुण्डलिनी शक्ति है। अत: 'रीं' का अर्थ ये हुआ कि शक्ति आपकी सुषुम्ना (महालक्ष्मी) में से आदि-पुरुष (Primodial-Being) *की ओर जा रही है। इसलिए 'रीं' मन्त्र है। क्योंकि योगी लोग योग प्राप्ति (जुड़े रहने) में ही विश्वास करते हैं। अत: उन्हें शक्ति (कुण्डलिनी) की तथा आदि-शक्ति* (Primodial-Mother) *की देखभाल करनी पड़ती है। ऐसा करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐसा करने से ही कुण्डलिनी तथा आदि-शक्ति की शक्ति बनी रह सकती है। चौदह हजार वर्ष पूर्व ये सब लिखा गया था और यह सब पूर्णत: सत्य है जिसे आपने अब जाना है। जब आप इस पुस्तक (देवी-सप्तशति) को पढ़ेंगे तो समझ जाएंगे।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, पुणे, भारत-1988)

★ 'परा' ....पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी एवं परावाणी का ज्ञान (स्वर-प्रवाह)

"...'परावाणी' यहाँ से आरम्भ होती है (श्रीमाताजी अपना हाथ अपनी नाभि पर रखते हुए व्याख्या करती हैं)। यहाँ शब्द है, जो कि मौन है। तत्पश्चात् ये हृदय पर आती हैं और अनाहत बनने पर 'पश्यन्ति' कहलाती है क्योंकि तब ये केवल साक्षी होती है। 'वाणी', वाणी की शक्ति, उस स्वर की शक्ति केवल साक्षी होती है और यह अनाहत अवस्था है। तत्पश्चात् यह यहाँ (विशुद्धि स्तर) पर आती है और 'मध्यमा' कहलाती है-अभी तक मध्यम अवस्था, गले तक। परन्तु जब यह मुँह तक पहुँचती है तो ये वैखरी बनती है, अर्थात तब ये बोलती है। तो इस प्रकार से परावाणी का अर्थ ये है - जैसे यदि परमात्मा ने कुछ कहना हो तो वे इसे परावाणी में कहते हैं जिसे आप सुन नहीं सकते। इसी प्रकार से आप लोगों ने भी अपने अन्दर परावाणी को प्राप्त कर लिया है जिसे हम उसी परावाणी का मानवीय प्रतिबिम्ब कह सकते हैं। आप भी इसे नहीं सुन सकते। अपने पेट के अन्दर की वाणी को आप सुन नहीं सकते, परन्तु आपको कुछ कष्ट हो सकते हैं, विशेष रूप से कैंसर रोग या ऐसी ही कोई अन्य बीमारी की समस्या आपको हो सकती है। इससे स्पन्दन होता है, ये आपको प्राप्त होने वाली लहरियाँ हैं, यह परावाणी का प्रभाव है जो आपको बताता है कि कोई कष्ट है। इस कष्ट को आप देख सकते हैं, तब ये धड़कने लगता है। कुण्डलिनी भी, जब उठने लगती है कोई आवाज़ नहीं करती, परन्तु सहस्रार पर पहुँचकर, यदि कोई समस्या हो, तो यह धड़कती है। जब तक बाधा समाप्त नहीं होती कुण्डलिनी धड़कती ही रहती है। यह जल के सुगम प्रवाह की तरह से है। जल जब तक निर्बाध बहता है, कोई आवाज़ नहीं करता, परन्तु बाधा आते ही ये आवाज करने लगता है। अत: अन्तर्जात आवाज़ है। किसी चीज़ से टकराने के कारण जल आवाज करता है, परन्तु अन्तर्जात आवाज वाणी का रूप धारण करती है, ये आवाज जो कि मौन है, जो इन चार अवस्थाओं से निकलती है और मुँह तक पहुँचने के बाद यह 'वैखरी' बन जाती है। जहाँ तक परमात्मा का सम्बन्ध है, जब परमात्मा बोलते हैं जो कुछ भी बोलते हैं, बिना परावाणी की अवस्था तक पहुँचे, कोई भी इसे सुन नहीं सकता। बिना 'परावाणी' का अनुभव किए आप इसे नहीं सुन सकते।"

तो होता क्या है कि आपके सम्मुख ज्ञान की व्याख्या करने के लिए पृथ्वी पर अवतरित होकर परमात्मा को अपनी वैखरी का उपयोग करना पड़ता है। परमात्मा की वैखरी से आप गहनता में उतरने लगते हैं। तब आप 'मध्यमा' अवस्था में पहुँचते हैं जहाँ आप अपने मौन का आनन्द लेते हैं। तत्पश्चात् आप 'पश्यन्ति' पर पहुँचते हैं जहाँ अपनी साक्षी अवस्था का आनन्द लेते हैं। इससे आगे आप 'परावाणी' पर पहुँचते हैं जहाँ आपको आवाज़ (Sound) *मिलती है या कह सकते हैं, कि आपको सूचना मिलती है, केवल सूचना। परन्तु इसमें न तो कोई आवाज़ होती है न शोर होता है, कुछ नहीं होता। केवल सूचना मिलती है, विचार की तरह से। विचारों का कोई स्वर नहीं होता। अतः प्रेरणा आपको परावाणी से प्राप्त होती है। विचार में आवाज़ नहीं होती। इसी प्रकार से आपको एक बेआवाज़ अनुभव आता है।*

सहजयोगी : *ये अनुभव कहाँ होता है - भवसागर में, नाभि में या किसी अन्य विशेष स्थान पर ?*

श्रीमाताजी : *नाभि। इससे लक्ष्मी तत्व, महालक्ष्मी का आरम्भ होता है और सभी कुछ कार्यान्वित होता है। परन्तु जब आप आज्ञा चक्र की बुलन्दी पर पहुँचते हैं तो वाणी अनाहत में परिवर्तित हो जाती है।*

अनाहत अर्थात चैतन्य लहरियों की आवाज़, मैं इन्हें सुन सकती हूँ। मेरा अभिप्राय ये है कि कोई व्यक्ति अपना हाथ मुझ पर रखे तो वह भी ये आवाज़ सुन सकता है। आप सभी प्रकार के स्वर सुन सकते हैं। सहस्रार तक जब ये पहुँचती है तो धड़कने लगती है। तब 'ब्रह्मरन्ध्र' खुलता है, वाणी स्वर (Sound) *बनकर परमात्मा से एकरूप हो जाती है। परन्तु इस अवस्था तक ये ऊपर आती है और मानव में प्रायः यह यहाँ (ब्रह्मरन्ध्र) से बाहर आती है। यह, इसका एक हिस्सा, परमात्मा से है, परन्तु जब आत्म-साक्षात्कार दिया जाता है तो आज्ञा खुलती है, और जब कुण्डलिनी सहस्रार का भेदन करती है तब ये वाणी, चैतन्य लहरियों का स्वर बाहर आता है। मुख्य बात तो यह समझना है कि जब व्यक्ति निर्विकल्प अवस्था में पहुँचता है तो उसके मस्तिष्क में वाणी के माध्यम से प्रेरणा मिलती है। यही वाणी आपके मस्तिष्क में भी प्रेरणा देती है और ये प्रेरणा आपको समझाती है - जैसे मैं कहती हूँ कि आपको गूढ़ अर्थ समझना चाहिए। अब क्योंकि आप सूक्ष्म संवेदनशील व्यक्ति बन गए हैं इसलिए आप भी सूक्ष्म को समझने लगते हैं और सूक्ष्म बातें कहने लगते हैं। जैसे कुछ लोग कवि बन गए हैं।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी पुणे, भारत, 1988)

★ मन्त्र वाणी का सार तत्व हैं

"...कुगुरुओं द्वारा दिए गए मन्त्रों का सबसे बुरा प्रभाव बाईं विशुद्धि पर होता है, क्योंकि यह सार-तत्व है। मन्त्र व्यक्ति की वाणी का सार तत्व है। तो होता क्या है कि **यदि आपकी बाईं विशुद्धि खराब है तो आपके मन्त्र बोलने का भी कोई प्रभाव नहीं होता। बाधित बाईं विशुद्धि से बोले गए मन्त्र अधपके होते हैं, बाईं विशुद्धि की समस्या के कारण उनमें पूरा चैतन्य नहीं होता। बाईं विशुद्धि यदि ठीक हो तो आपके द्वारा कहे**

गए मन्त्र पूर्ण एवं अत्यन्त प्रभावशाली होते हैं क्योंकि इनमें पूर्णत्व है। इन मन्त्रों का पूरा प्रभाव पड़ता है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, शुडीकैम्प, इंग्लैण्ड, 20.08.1988)

★ मन्त्र आपकी कुण्डलिनी के शब्द हैं

"पूजा या प्रार्थना आपके हृदय से निकलती है। मन्त्र आपकी कुण्डलिनी के शब्द हैं। परन्तु यदि पूजा हृदय से न की गई हो या मन्त्रोच्चारण में कुण्डलिनी का साथ न हो तो पूजा केवल कर्मकाण्ड बन जाती है। हृदय में पूजा करना ही सर्वोत्तम है। पूजा में आप मन्त्र कहें परन्तु अत्यन्त श्रद्धा-पूर्वक। **पूजा उस समय करनी चाहिए जब आपके अन्दर गहन श्रद्धा की स्थिति हो ताकि आपका हृदय ही पूजा करे।** *ऐसे समय पर आशीर्वाद की लहरियाँ (चैतन्य) बहने लगती हैं क्योंकि आपकी आत्मा ही सभी कुछ कर रही होती है।*

लोग गिलास में शराब डालते हैं। आपकी पूजा भी ऐसी ही है। इसमें श्रद्धा शराब है, मन्त्रोच्चारण और पूजा करना गिलास है। सभी कुछ भुलाकर जब आप वह शराब पी रहे होते हैं तो किस प्रकार कोई विचार आपके मन में आ सकता है? केवल इसी स्थिति में आप आनन्द के सागर में स्नान करते हैं। इस शराब को पीने का आनन्द शाश्वत होता है और सदैव बना रहता है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी के कथन, निर्मला योग खण्ड 5, अंक 29, सितम्बर, अक्टूबर 1985)

★ मन्त्र चैतन्य से परिपूर्ण विचार मात्र होता है

"मन्त्र क्या है? यह आत्मा की अभिव्यक्ति करने वाले शब्द की शक्ति है। मन्त्र मात्र एक विचार होता है जो चैतन्यित है। चैतन्य से परिपूर्ण कोई भी विचार मन्त्र है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, 04.09.1983)

★ मन्त्र ऐसे होने चाहिएं कि जो मशीनवत (Mechanical) न हों

आपको चाहिए कि मन्त्रों को देखें। मन्त्र मशीनवत नहीं होने चाहिएं कि आप मशीन की तरह से बोले चले जा रहे हैं। मन्त्र हृदय से कहे जाने चाहिएं। **मन्त्र यदि हृदय से नहीं कहे गए तो ये सिद्ध नहीं होते अर्थात सौ बार उच्चारण करने पर भी इनका कोई प्रभाव न होगा।** *सिद्ध मन्त्र वह होता है, उच्चारण करने पर जिसका प्रभाव हो, जो कार्य करे। मन्त्र यदि कार्य नहीं करता तो आपका मन्त्र अर्थहीन है।* ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, 06.11.1983)***

देवी-देवताओं को जागृत करने के लिए आवश्यक है कि आपका मन्त्रोच्चारण शुद्ध हो और आपका हृदय इसमें लिप्त हो।

(परम पूज्य श्रीमाताजी का मराठी में लिखा गया बिना तारीख का पत्र)

★ ये मन्त्र अत्यन्त शक्तिशाली हैं

आपकी माँ का नाम अत्यन्त शक्तिशाली है। आप जानते हैं कि अन्य सभी नामों की अपेक्षा ये कहीं शक्तिशाली है, इससे अधिक शक्तिशाली कुछ भी नहीं। आवश्यक ये है कि

इसको बोलने का ज्ञान आपको हो। पूर्ण श्रद्धा से आपको ये नाम लेना होगा। किसी अन्य मन्त्र की तरह नहीं। आप जानते हैं कि भारत में यदि किसी ने अपने गुरु का नाम लेना हो तो वह अपने कान पकड़कर गुरु का नाम लेता है। अर्थात नाम लेते हुए यदि मैं गलती कर रहा हूँ तो ''कृपया मुझे क्षमा कर दें।'' इसके लिए आपको केवल श्रद्धा की आवश्यकता होती है-गहन (विस्फोटक) श्रद्धा की। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी कौलेमेनॉर सेमिनार, इंग्लैण्ड-31 जुलाई 1982)***

★ मन्त्र प्राप्ति के लिए किसी गुरु की आवश्यकता क्यों है?

आपको समझना है इस मामले में बहुत सावधान रहना होगा कि हमें सत्य के सिवाए कुछ भी स्वीकार नहीं करना। परन्तु आपको सम्मोहित भी किया जा सकता है। हर चीज़ का ज्ञान न होने के कारण आपको बेवकूफ भी बनाया जा सकता है। कोई यदि संस्कृत का कोई शब्द बोलता है तो आप इतने प्रभावित हो जाते हैं मानो संस्कृत भाषा आसमान से टपकी हो! उदाहरण के रूप में कुछ तथाकथित गुरुओं ने चेलों को ऐसे मन्त्र दिए जिनके बारे में यदि किसी भारतीय को बता दिया जाए तो हँसते-हँसते उसके पेट में बल पड़ जाएंगे। जैसे एक मंत्र था 'इंगा'। यह किसी भारतीय को बताइए तो वह जोर-जोर से हँसेगा और इसके लिए, उस मूर्खता के लिए, उस चेले ने तीन सौ पौंड उस गुरु को दिए - इस अर्थहीन नाम के लिए जो मन्त्र हो ही नहीं सकता। मन्त्र के लिए आपको गुरु की आवश्यकता क्यों है? इसका एक विज्ञान है। इसको समझने का प्रयास किए बिना ही हम इसमें कूद पड़ते हैं! ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, किंग्स्टन, 11.06.1980)***

★ 'इंगा, पिंगा, ठिंगा' जैसे भयानक शब्द मन्त्र नहीं हैं

"...इस देश में एक बहुत बड़ी संस्था है, अन्य सभी स्थानों पर भी ऐसी संस्थाएं हैं जो मन्त्र देती हैं। इसके बारे में सोचें! छः चक्र हैं, जो मूलभूत हैं। इसके अतिरिक्त भी बहुत से चक्र हैं जिनके बारे में मैं आपको बताना नहीं चाहती नहीं तो आप हैरान हो जाएंगे। परन्तु छः मुख्य चक्र और दाएं और बाएं के दो चक्र सूर्य और चन्द्र के। रीढ़ के निचले छोर पर सातवाँ चक्र है। अतः आप देख सकते हैं कि नौ चक्र हैं जो मूल रूप से हमें समझने हैं। और इन नौ चक्रों पर विराजमान नौ देवी-देवता हैं। हरेक व्यक्ति को आप एक ही मन्त्र कैसे दे सकते हैं? मानलो आपको छः दरवाजों से गुजरना है परन्तु आपके पास केवल एक ही दरवाज़ा पार करने के लिए आज्ञा पत्र (Pass) *है-पाँचवें दरवाजे का, और आप पहले दरवाज़े पर हैं-तो किस प्रकार आप पहले दरवाज़े को पार करेंगे? इन लोगों को इसकी कोई समझ नहीं है। इन्होंने ऐसे भयानक मन्त्र दिए कि मैं हैरान थी! एक है ठिंगा, जिसका मतलब है अंगूठा दिखाना। ऐसे मन्त्रों की क्या आप कल्पना भी कर सकते हैं? ऐसा शब्द बोलना भी कितना हास्यास्पद है। इंगा, पिंगा, ठिंगा जैसे भयानक शब्द मन्त्र हो ही नहीं सकते। ये सारी मूर्खता है। ये सब लुटेरे बैठे हुए हैं। आपके कान में वे मन्त्र देते हैं और कहते हैं कि इसे किसी अन्य को नहीं बताना। मैं आश्चर्यचकित थी कि अन्त में तो वे 'डिम्बवाही नली'* (Fellopian Tube) *का मन्त्र देने से भी नहीं हिचकिचाए। मैंने कहा, क्या? डिम्बवाही नली! ये मन्त्र कैसे हो सकता है? और हम ये मन्त्र लेते हैं, इनके लिए पैसे देते हैं! लोग इन मन्त्रों के लिए तीन हजार पौंड तक दे चुके*

थे। तीन हजार पौंड के बदले में उन्हें एक हफ्ते तक खाने के लिए उबले आलुओं का पानी दिया गया। पाँच दिनों तक सिर्फ वो पानी पीने को दिया गया। एक दिन आलुओं के छिलके और एक दिन उबले हुए आलू ताकि वे दुर्बल हो जाएं और उनका मस्तिष्क काम न करे तथा आसानी से उन्हें सम्मोहित किया जा सके! इन भयानक गुरुओं से आप लोग सावधान रहें।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, मैकेबियन हॉल, आस्ट्रेलिया 22.03.1981)

★ साकार को निराकार में परिवर्तित करने के उपायों में पूजा एक है

"...क्योंकि किसी विग्रह, पृथ्वी माँ की चैतन्य-लहरियों से बने स्वयंभु की पूजा करने से लोगों को बड़ी-बड़ी समस्याएं झेलनी पड़ीं। सर्वप्रथम उन्हें ध्यान धारणा करनी पड़ी जो सविकल्प समाधि कहलाती थी। इसका अर्थ है कि उस अवस्था में आपको ऐसी स्वयंभु मूर्ति 'विग्रह' पर ध्यान केन्द्रित करना पड़ता था। **विग्रह का अर्थ है वह मूर्ति जिससे चैतन्य बहता हो।**

ऐसा करते हुए साधक को कुण्डलिनी उठाने का प्रयत्न करना पड़ता था। और कुण्डलिनी आज्ञा चक्र तक आ जाया करती थी, परन्तु **इससे आगे सहस्रार तक पहुँच पाना असम्भव कार्य था क्योंकि इसके लिए व्यक्ति को साकार से निराकार में जाना पड़ता है। और निराकार पर ध्यान केन्द्रित करना भी एक अन्य असम्भव कार्य था**- *जैसे मुसलमानों तथा बहुत से अन्य लोगों ने करने का प्रयत्न किया। ऐसी परिस्थितियों में ये आवश्यक था कि निराकार साकार रूप धारण करे ताकि जटिलताएं समाप्त हो जाएं। ज्यों ही आप साकार पर ध्यान केंद्रित करें आप ही निराकार हो जाएं। मान लो आपके सम्मुख बर्फ है, इसे छूते ही यह पिघलने लगती है और आप इसकी शीतलता महसूस करने लगते हैं।*

तो अब समस्या आसानी से हल हो गई। पूजा उन विधियों में से एक है जिनसे आप साकार को निराकार बना सकते हैं। आपके चक्र ऊर्जा के चक्र हैं, परन्तु उन सभी चक्रों पर भी पथ प्रदर्शक देवता विराजमान हैं। उन्हें भी साकार से निराकार बनाया गया है। जब आप पूजा करते हैं तो आकार पिघलकर निराकार ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है तथा ये निराकार ऊर्जाएं प्रवाहित होने लगती हैं और वायु बहने लगती हैं। और इस प्रकार आत्मा से असत्य तादात्म्य (Misidentification) *और आत्मा पर ये व्यर्थ का बोझ लादने* (Super impositions) *के भ्रम दूर हो जाते हैं।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, पेरिस, 18 जून, 1983)

★ श्रीमाताजी आपकी बहन न होकर संगीत की पराकाष्ठा हैं

इन परिस्थितियों में आम के एक वृक्ष के नीचे खड़ा हुआ मैं डॉक्टर रुस्तम बरजोर जी और राजेश शाह की बातचीत को सुन रहा था। वे सहजयोग में अपनी उन्नति और श्रीमाताजी द्वारा उत्थान-मार्ग पर प्रदान की गई गति के विषय में बात कर रहे थे। मेरे चेहरे पर प्रश्नमय मुस्कान देखकर राजेश शाह ने मुझे बताया कि क्योंकि मैं आत्मसाक्षात्कारी नहीं हूँ इसलिए

उनकी बातचीत को समझ पाना मेरे लिए कठिन होगा। यह जानकर रुस्तम हैरान था कि मैंने आत्म-साक्षात्कार नहीं लिया है। उसने मुझसे पूछा कि मुझे आत्म-साक्षात्कार क्यों नहीं मिल रहा? मैंने मुड़कर उससे प्रश्न किया कि क्या उन्होंने मेरी बहन को आदिशक्ति या परमेश्वरी के रूप में स्वीकार कर लिया है? उन्होंने कहा कि वो मुझे दो मिनट में आत्म-साक्षात्कार दे देंगे। मैंने सोचा कि वह अहंवश बात कर रहे थे क्योंकि तेरह वर्षों में श्रीमाताजी स्वयं, प्रयत्न करने के बावजूद भी, मुझे आत्म-साक्षात्कार देने में सफल न हुई थीं। जो भी हो उनके शब्दों को स्वीकार करते हुए मैंने उन्हें चुनौती दी कि वो मुझे आत्म-साक्षात्कार दें। उन्होंने मुझे पेड़ के नीचे बैठने को कहा और मेरे खुश्क बालों को मचोड़ते हुए उन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा। उनका ऐसा करना मुझे अच्छा न लगा। मैंने उनसे कहा कि उनकी असफलता मेरी विजय होगी। मुझे पूर्ण-विश्वास था कि मुझे आत्म-साक्षात्कार देने में वे असफल होगें। राजेश शाह मुझसे प्रश्न पूछने लगे। उनका पहला प्रश्न ये था कि मेरी प्रियतम चीज़ क्या है? स्पष्ट है कि मेरा उत्तर था 'श्रीमाताजी'। उन्होंने कहा कि श्रीमाताजी के अतिरिक्त मुझे क्या प्रियतम है? मेरा उत्तर था 'संगीत'। उन्होंने अत्यन्त अबोधितापूर्वक मुझसे प्रश्न किया कि संगीत का सार-तत्व, इसका परमोत्कर्ष, इसकी पराकाष्ठा क्या है? क्षण भर सोचने के पश्चात् मैंने उत्तर दिया, ''कलाकार द्वारा सृजित स्वर जिसे श्रोता पूरी तरह से स्वीकार कर लें और जिस सृजित स्वर से संगीत को कोई हानि न पहुँचे। मैंने सोचा था कि मैंने अत्यन्त चमत्कारिक उत्तर दिया है और इस उत्तर से रुस्तम धराशायी हो गए होंगे। परन्तु अचानक रुस्तम ने कहा कि **"आप ये सोचें कि श्रीमाताजी आपकी बहन नहीं है। वे संगीत की वो पराकाष्ठा हैं जिसका वर्णन अभी आपने इतने सुन्दर शब्दों में किया है।"** उसके इस वाक्य ने कार्य किया। भाई-बहन सम्बन्धों का तार इतना दृढ़ था, मेरा ये बन्धन इतना अडोल था कि मैं सम्बन्धों के बन्धन से मुक्त ही न हो पा रहा था। परन्तु श्रीमाताजी को संगीत की पराकाष्ठा रूपी स्वर के रूप में पहचानते ही यह बन्धन टूट गया। बेड़ियाँ खुल गईं और अचानक मैंने श्रीमाताजी का एक नया रूप देखा जोकि निराकार था, जिसके आगे पीछे कुछ जुड़ा हुआ न था (Prefixes or Suffixes) तथा जिस पर किसी सम्बन्ध या बन्धन का दाग न था। अपने अन्दर मुझे एक अजीब अनुभव हुआ मानो संगीत का निराकार स्वर मेरी बहन की पहचान को समाप्त कर रहा हो। वहीं मुझे इस बात का आभास हो गया कि मेरे अन्दर परिवर्तन घटित हो रहा है। अचानक मुझे सर्वत्र शीतलता का आभास होने लगा, विशेष रूप से मेरे हाथों में और सिर पर तथा मेरी आँखों की पुतलियाँ फैलने लगी। बिना किसी इच्छा के मैं निर्विचार हो गया था और मुझे कुछ भी सूझ न रहा था मानो किसी और संसार में मैं समाधि में चला गया हूँ।

(मेरे संस्मरण-बाबा मामा-2000, पृ.178-179)

ज़िगर ठीक रखने के लिए खान-पान

बहुत से महत्वपूर्ण कार्यों को करने के लिए शरीर ज़िगर पर निर्भर करता है। ये महत्वपूर्ण कार्य निम्नलिखित मूल श्रेणियों में बांटे जा सकते हैं:-

1. *रक्तशोधन—*
   - *चयापचय* (Metabolising)*, मदिरा, दवाएं और रसायन।*
   - *विषैले तत्वों को नष्ट करना एवं निष्प्रभावित करना।*
2. *शारीरिक ऊर्जा आपूर्ति एवं व्यवस्था —*
   - *उत्पादन, भण्डारण, शरीर एवं मस्तिष्क को चुस्त रखने के लिए तुरन्त ऊर्जा की आपूर्ति।*
   - *चर्बी का उत्पादन, भण्डारण एवं बाहर भेजना।*
3. *शरीर के भिन्न कार्यों में लिप्त आवश्यक प्रोटीन बनाना—*
   - *रक्त में भिन्न तत्वों का प्रसारण।*
   - *रक्त के थक्के* (Clotting) *बनना।*
   - *संक्रमण का मुकाबला करना।*
4. *शरीर से विषैले तत्वों को दूर करने वाले तथा पाचन प्रक्रिया को बढ़ाने वाले पित्तरस बनाना।*
5. *उत्तेजक रस* (Hormones) *का नियमन एवं संतुलन—*
   - *यौन हॉरमोन्स।*
   - *गलग्रन्थि हॉरमोन्स।*
   - *उत्तेजन विरोधी* (Cortisone) *एवं अन्य गुर्दे से सम्बन्धी हॉरमोन।*
6. *शरीर में कॉलेस्ट्रोल का उत्पादन एवं विसर्जन और इन्हें अन्य आवश्यक तत्वों में परिवर्तन करना।*
7. *शरीर में आवश्यक विटामिन, खनिज जैसे लौह एवं ताँबा की पूर्ति एवं नियमन।*
8. *इसी प्रकार के अन्य सैकड़ों कार्यों का होना।*

वास्तव में जो भी चीज़ हम खाते या पीते हैं उसे रक्त प्रवाह में मिलने के लिए इसी महत्वपूर्ण अवयव में से गुजरना होता है। शरीर का सबसे बड़ा अवयव होने के कारण केवल यही एक ऐसा अवयव है जो अपना सम्पोषण करने में सशक्त है।

यद्यपि ज़िगर के पूरे कार्यों के बारे में बहुत कुछ जानना अभी शेष है फिर भी ये कहना उपयुक्त होगा कि शरीर के चयापचयन में इसकी मुख्य भूमिका है या उन कार्यों में जिनमें जीवन्त तत्व उत्पन्न होता है, नष्ट होता है या सुरक्षित रखा जाता है।

पारम्परिक औषध

शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने से इस अवयव (ज़िगर) के स्पष्ट महत्व को देखते हुए और आयुर्वेद एवं चीनी भेषज विशारदों का ज़िगर को शारीरिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य बनाए रखने के क्षेत्र में इतना अधिक महत्व देना कोई अतिशयोक्ति न थी। जिगर का मुख्य कार्य शरीर तथा मस्तिष्क को हानिकारक हॉरमोन प्रवाह से मुक्त रखना है। अधिकतर प्राचीन चिकित्सक ज़िगर को पूरे शरीर के संचालन के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। रक्तशर्करा के स्तर

में या हॉरमोन असन्तुलन के कारण होने वाले उतार-चढ़ाव तथा पाचन क्रिया से लार के सम्बन्ध व्यक्ति को भिन्न मनोदशाओं में डाल देते हैं। अत: ऊर्जा के सभी स्तर और विषैले रसायनों को दूर करने के ज़िगर के कार्य, शरीर और मन के पारस्परिक सम्बन्धों को स्पष्ट करते हैं।

परन्तु ज़िगर की गर्मी एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें आधुनिक पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति प्राचीन चिकित्सा पद्धति से भिन्न है। भारतीय और चीनी चिकित्सा पद्धति व्यक्ति पर जिगर की गर्मी के प्रभाव को स्वीकार करती है और ऐसे उपाय सुझाती है जिनसे इस महत्वपूर्ण अवयव को शीतल किया जा सके। 'प्रसन्नता बूटी' कहलाने वाली (Gardenise Jasminoidis) zhi-zi) बूटी ज़िगर की आन्तरिक गर्मी को दूर करने के लिए अत्यन्त प्रभावशाली मानी गई है। ज़िगर की ये गर्मी, चिड़चिड़ेपन, अशान्ति और अनिद्रा का कारण बन सकती है।

भारत में आयुर्वेदिक भेषज (Liv-52) *जिगर के लिए अत्यन्त लाभकारी मानी जाती है। सहजयोग भी ज़िगर के महत्व को पूरे सूक्ष्म तन्त्र में मान्यता देता है क्योंकि हमारी ध्यान-धारणा को प्रभावित करने के साथ ज़िगर हमारे जीवन में शाश्वत सन्तुलन प्राप्त करने का विवेक भी प्रदान करता है। इस कारण से श्रीमाताजी ने बहुत समय पूर्व ज़िगर को ठण्डा रखने के लिए एक विशेष आहार-सूची बताई थी।*

श्रीमाताजी ने कहा था कि ज़िगर चित्त की पीठ है। अत: ज़िगर हमारे चित्त को विक्षिप्त कर सकता है। चित्त-विक्षेप के कारण व्यक्ति अपना ध्यान किसी एक बिन्दु पर लगातार केन्द्रित नहीं कर सकता और परिणामस्वरूप ऐसा व्यक्ति ध्यान की गहनता में नहीं जा पाता। ज़िगर की समस्या का पहला प्रभाव ध्यान-धारणा के समय बहुत अधिक विचारों का आना होता है।

श्रीमाताजी ने ये भी कहा है कि ज़िगर हृदय में विराजमान आत्मा से प्रवाहित होने वाले आनन्द का पोषण करता है। और यदि ज़िगर क्षति-ग्रस्त हो तो व्यक्ति के अन्दर आनन्द-भाव या तो जागृत हो ही नहीं पाता और यदि जागृत होता भी है तो वह आनन्द क्षणिक होता है। इसी कारण से श्रीमाताजी ने इस शारीरिक समस्या की ओर विशेष ध्यान दिया है और बाधित ज़िगर वाले साधकों को एक विशेष प्रकार का भोजन लेने का सुझाव दिया है जिससे ज़िगर बहुत शीघ्र रोग—मुक्त हो जाता है।

ज़िगर की समस्याओं वाले लोगों के प्राय: दायाँ स्वाधिष्ठान चक्र और नाभि चक्र पकड़ते हैं (ये दोनों चक्र शरीर में इस अवयव की देखभाल करने के लिए जिम्मेदार हैं)। ज़िगर की अधिक खराबी की अवस्था में ऐसे लोगों को ज़िगर क्षेत्र में (शरीर के दाएं भाग में काँख के लगभग सात इंच नीचे) गर्मी या दर्द का एहसास होता है। उन्हें भूख की कमी या मितली की शिकायत भी हो सकती है।

ज़िगर-आहार सुझाने के अतिरिक्त श्रीमाताजी ने हमें ये भी बताया है कि अपने बाएं हाथ से स्वयं ज़िगर को चैतन्य देना भी ज़िगर की समस्याओं से मुक्ति पाने का एक कारगर उपाय है। श्रीमाताजी की फोटो के सम्मुख दीप जलाकर दायाँ हाथ श्रीमाताजी की ओर करके बायाँ हाथ ज़िगर पर रखकर ज़िगर को चैतन्य दिया जा सकता है। जब-जब भी हम ध्यान में बैठते हैं या

प्रतिदिन एक बार कुछ देर ऐसा करने पर ज़िगर की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

ये स्मरण रखना आवश्यक है कि व्यक्ति द्वारा बीते समय में किए गए अपराध कार्य ही आवश्यक रूप से ज़िगर की खराबी का कारण नहीं हो सकते। आज हमारा वातावरण इतना खराब है कि वह ज़िगर को असन्तुलित कर देता है। तुरन्त-भोजन (Fast food)*, तनाव पूर्ण नौकरी, छुट्टियाँ बिताने की जटिल योजनाएं बनाना आदि ज़िगर के कार्य को और जटिल बना देते हैं। समस्या के चिन्हों को पहचानना और उन्हें दूर करने के आवश्यक कदम उठाना समस्या समाधान की कुँजी है ताकि हमारी ध्यान धारणा को हानि न पहुँचे तथा हम पूर्ण सन्तुलन में बने रहें।*

यदि आपको लगता है कि आपकी ध्यान धारणा वांछित रूप से नहीं चल रही तो एक दिन ज़िगर पर बर्फ बाँधकर ध्यान करके स्थिति का परीक्षण किया जा सकता है। ध्यान धारणा में यदि सुधार है तो ये समझ लेना चाहिए कि ज़िगर ही समस्या का कारण है। इसके बावजूद भी यदि ज़िगर की समस्या बनी रहे या बढ़ जाए तो समाधान के लिए ज़िगर आहार के उपयोग के बारे में सोचने का ये उपयुक्त समय है। इस आहार को सात या दस दिनों तक आज़माने के बाद आप पाएंगे कि आपकी ध्यान-धारणा एवं सन्तुलन की अवस्था में बहुत अन्तर आया है।

"ज़िगर-समस्या को दूर करने के लिए नीचे दी गई आहार सूची कि कौन से पदार्थ ज़िगर को ठण्डा करते हैं और कौन से पदार्थ निषेध हैं, कोई स्थायी व्यवस्था नहीं है।"

ज़िगर आहार

जिगर के लिए शीतलता प्रदायक एवं लाभदायक प्रमाणित हुए खाद्य पदार्थः

चीनी : *श्रीमाताजी ने बताया है कि चीनी ज़िगर की खुराक है। गन्ने की चीनी, चुकन्दर की नहीं।* Tate & Lyle *और* Sainsbury *की चीनी गन्ने की है, बाकि सभी चुकन्दर की चीनियाँ हैं। शुगर कैन्डी या रॉक शुगर नाम की चीनी भी अधिकतर भारतीय दुकानों पर उपलब्ध है। काले कोकम के ऊपर डालकर इसका उपयोग भी बताया गया है।*

चीनी मिथक : *मिठास की वजह से चीनी का आपके लिए लाभदायक होना आवश्यक नहीं है। केक और आइसक्रीम खाना छोड़ दें।*

मिठाईयाँ : *चीनी की चाशनी में बनाया गया आँवला मुरब्बा लाभदायक है। अन्य भारतीय मिठाइयों में बंगाली रसगुल्ला ज़िगर के लिए हितकर है।*

सफेद चावल : *सफेद चावल, ज़िगर के लिए लाभदायक हैं-चावल, चावल, चावल। चावल भिन्न प्रकार से पकाया जा सकने वाला खाद्य है। मूँगदाल या चना के साथ यदि चावल खाया जाए तो पूरा प्रोटीन भी प्राप्त होता है। श्रीमाताजी की पुस्तक में सर्वोत्तम चावल पकाने की विधियाँ वर्णित हैं।*

दही : *ज़िगर के लिए दही सम्भवतः सबसे अधिक प्रभावशाली शीतलता प्रदायक पदार्थ है। परन्तु ठण्डी जलवायु या सर्दी/बसन्त के मौसम में दही नहीं खानी चाहिए। खीरा भी बहुत अच्छा खाद्य है जो ज़िगर को ठण्डा करता है। दही, लहसुन मिलाकर यदि चावल और मूँग के साथ खाया जाए तो यह दुगुना प्रभावशाली है। यह अत्यन्त शीतलता दायक है परन्तु रात के समय और सर्दियों में इसके उपयोग से बचना चाहिए। दही में चीनी मिला लेनी चाहिए। गर्मियों के दिनों में लस्सी का बहुत शीतल प्रभाव होता है। दही को मथते हुए इसमें पानी और*

चीनी मिला लेनी चाहिए। छाछ भी ज़िगर के लिए हितकर है।

सोंठ : *चाहे जैसे खाई जाए सोंठ ज़िगर के लिए हितकर है। खास तौर पर प्रातःकाल थोड़ी-सी सोंठ और चीनी मिलाकर पानी के गिलास के साथ ले लेने पर लाभदायक है। शोधित सोंठ* (Crystalised Ginger) *भी बहुत लाभदायक है। परन्तु सोंठ का उपयोग गर्म जलवायु या ग्रीष्म ऋतु में नहीं किया जाना चाहिए।*

फल : *नाभि चक्र के लिए अधिकतर फल लाभदायक होते हैं विशेष रूप से अंगूर और अंगूरों का रस बहुत ही लाभदायक है। सभी रसीले फल* (Berries) *अच्छे हैं। अंगूर-अंगूरों का रस,* Elder berry *का रस भी बहुत लाभदायक है। अम्ल बनाने वाले फलों से - जैसे नींबू, सन्तरा आदि से दूर रहना चाहिए। अम्ल हर तरह से ज़िगर को बिगाड़ता है। नारियल का पानी भी लाभदायक है।*

ताजी सब्जियाँ और सलाद : *प्रायः सभी लाभदायक है। मूली और उसके पत्ते उबालकर और उसमें बताशे मिलाकर पीने से ज़िगर को बहुत लाभ पहुँचता है। टमाटर अम्ल पैदा करते हैं। अतः या तो बिल्कुल न खाएं या बहुत कम खाएं। सभी सब्जियाँ या तो उबालकर या भाप देकर खानी चाहिए। सलाद दोपहर के समय खानी चाहिए क्योंकि इन्हें पचाने में ज़िगर को बहुत मेहनत करनी पड़ती है।*

मूली के पत्तों की चाय : *हो सके तो देसी खाद से उत्पन्न की गई मूली का उपयोग करें। मूली के पत्तों में बताशे डालकर उबाल लें और ठण्डा करके पूरा दिन पीएं। ज़िगर की बहुत अधिक खराबी में भी इसे केवल तीन दिन पीना चाहिए।*

चना : *यह* Chick Peas *के नाम से भी जाना जाता है। इसकी दाल या सूप बनाया जा सकती है। चना पूरे नाभि चक्र के लिए बहुत अच्छा है।*

चना और मूँग दाल : *ये दोनों फलियों में होने वाली दाले हैं जो ज़िगर के लिए लाभदायक है। बाकी सभी दालें ज़िगर के लिए गर्म होती है। चनों को धोकर नमक वाले पानी में रात-भर भिगो दें। सुबह ताज़ी अदरक डालकर पकाएं (अदरक पेट में वायु बनने से बचाता है)। पककर जब चना नरम हो जाए तो इसमें अपनी पसन्द की सब्जियाँ या बूटियाँ मिला लें।*

काला कोकम : *कोकम भारतीय दुकानों से खरीदा जा सकता है। ये आलू बुखारे जैसे दिखाई देते हैं, परन्तु ये खट्टे होते हैं। मुटठ्ी भर कोकम बराबर के बताशे बर्तन में डालकर उसके ऊपर गर्म पानी डालकर इसका शरबत बनाया जा सकता है। इसे बनाकर रात-भर रख दिया जाना चाहिए और सुबह चाय-कॉफी के स्थान पर पेय के रूप में पीना चाहिए।*

सिरका : *नमक का बहुत अच्छा विकल्प है। सलाद पर थोड़ा सा जैतून का तेल डालकर मिला लें और इस पर नमक छिड़क लें। इसका स्वाद बहुत बढ़ जाता है।*

जैतून का तेल : *ठण्डा जैतून का तेल पके हुए भोजन पर डाला जा सकता है। कोई भी खाना तेल या मक्खन में न बनाएं। खाना या तो उबाल लें या भाप में बनाएं। फिर भी बहुत कम मात्रा में सूरजमुखी का तेल चल सकता है।*

ज़िगर के लिए हानिकारक चीजें

शराब, तली हुई चीजें, बहुत ज्यादा घी, तेल चिकनाई वाले भोजन, मूँगफली या मूँगफली का तेल, लाल माँस, मक्खन, क्रीम, आइसक्रीम, मसालेदार भोजन, मछली और

खुम्भें (Mushroom)

डबलरोटी : *मैदे की डबलरोटी बिल्कुल नहीं, परिष्कृत* (Refined) *आटा, सफेद डबलरोटी, केक और कुकियों से बचना चाहिए। बिना मेवों की सम्पूर्ण आटे की डबलरोटी लाभदायक होती है।*

चाय : *हरी चाय या लाल पौधे की चाय का उपयोग करें। ये दोनों ऊर्जा प्रदान करती हैं, जिगर को हानि नहीं पहुँचाती।*

परहेज

अचार और मसाले – *सभी प्रकार की तेजाबी चीज़ों से बचना चाहिए।*

खुम्भें— *कभी नहीं।*

चीज़— *बकरी के दूध से बना चीज़ बहुत कम मात्रा में लिया जा सकता है। बेहतर होगा कि बिल्कुल न लें।*

कॉफी— *कॉफी, बिना दूध की चाय, कोला, चॉकलेट, आदि ज़िगर को हानि पहुँचाते हैं। इनसे दूर रहना चाहिए।*

दूध से बने पदार्थ, *ज़िगर के लिए हानिकारक हैं इनसे दूर रहें।*

डेरी उत्पाद, *जैसे पुराना पनीर आदि।*

बहुत अधिक दूध।

बहुत अधिक नमक।

कोला और सोडा आदि........ *इन सारे पदार्थों से पूरी तरह बचें। इनमें ऐसे रसायन हैं जो जिगर के लिए हानिकारक हैं और दाँतों को भी सड़ाते हैं।*

बहुत कम मात्रा में लिए जाने वाले खाद्य :

चिकन : *ज़िगर आहार जब आप ले रहे हों तो इसके साथ थोड़ा सा चिकन, सफेद चावल (बिना अधिक चटनियों और मसालों के) लिया जा सकता है। इसके साथ सलाद, फल या दही ली जा सकती है। ज़िगर आहार लेते हुए बेहतर होगा कि सभी हानिकारक चीज़ों को त्याग दिया जाए, लाभकारी भोजन लिए जाएं और ध्यान के समय ज़िगर पर विशेष रूप से चित्त डाला जाए। चिकन माँस न तो गर्म है न ठण्डा, इसे पीसा जा सकता है। जड़ी-बूटियों और दही लगाकर रखने से इनकी खुशबू माँस के अन्दर प्रवेश कर जाती है और इसे अधिक स्वाद बना देती है।*

अंडा – *हल्का, पूरा या सख्त उबला हुआ।*

सर्वोपरि ज़िगर के लिए लाभदायक :—

प्रातः चार बजे ध्यान धारणा : *अत्यन्त सहायक है क्योंकि इस समय पक्षी चहचहा रहे होते हैं और ज़िगर अत्यन्त शान्त होता है। अतः ध्यान की गहनता में जाना सुगम हो जाता है।*

भोजन : *थोड़ा-थोड़ा खाने से जिगर पर जोर नहीं पड़ता। बेहतर होगा कि शाम को बहुत कम खाएं और सोने से कुछ समय पूर्व। चिन्ता और विचारों में उलझे रहने की आज्ञा नहीं है।*

"ध्यान-धारणा ज़िगर का सर्वोत्तम आहार है।"

क्या हम जानते हैं?

"विज्ञान एक छोटे से भाग के विषय में बताता है, मैं भी आपको ये बताऊंगी कि इस शक्ति का कौन-सा भाग हमारे शारीरिक अस्तित्व (Physical Being) को देखता है और उसके विषय में वैज्ञानिकों को कितना ज्ञान है। ज्ञान यदि सागर है तो, आप हैरान होंगे, वैज्ञानिकों को केवल एक बूँद के बराबर ज्ञान है और समुद्र का पूर्ण ज्ञान पाने के लिए बूँद को सागर में विलीन होना पड़ेगा। केवल अपने प्रयत्न मात्र से बूँद सागर नहीं बन सकती-सागर को बूँद अपने अन्दर विलय करनी होगी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, फरवरी 1979)

★ **'जाकर सृजन करो' उन्होंने कहा...**

ये घटना फ्रेंकफर्ट में वर्ष 1988 की है, श्री माताजी पहली बार वहाँ आई थीं। हमारा आश्रम इतना छोटा था कि संकोच होता था। शाम को जनकार्यक्रम के पश्चात् जब श्रीमाताजी आश्रम लौटीं तो हम सब उनके साथ थे।

"मुझे एक कागज और पैन दो," श्रीमाताजी ने कहा। "मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहती हूँ।" तब उन्होंने कुछ रेखाएँ खींचनी आरम्भ कीं। एक बिन्दु से उन्होंने ये सब शुरु किया।

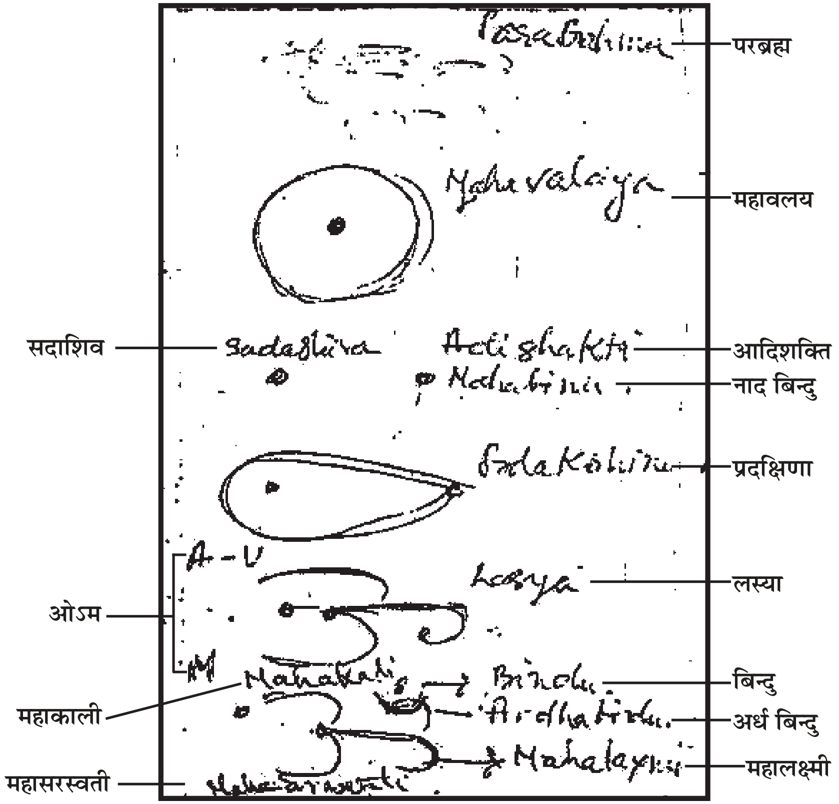

ब्रह्माण्ड और ओंकार की उत्क्रान्ति की व्याख्या करने के लिए
श्रीमाताजी के अपने करकमलों द्वारा बनाया गया रेखाचित्र

"देखो ये श्री शिव हैं," उन्होंने आरम्भ किया। 'जब तक केवल एक हैं तो केवल बिन्दु मात्र हैं। किसी अन्य चीज का अस्तित्व न था। परन्तु श्री शिव स्वयं के साक्षी होना चाहते थे, अर्थात् किसी अन्य की भी आवश्यकता थी। अत: दर्पण हो सकता है और उन्होंने स्वयं को अपनी शक्ति से अलग किया। परन्तु क्योंकि श्री शिव और श्री शक्ति में अत्यन्त गहन प्रेम है।

इसलिए बाहर धकेले जाने पर श्री शक्ति प्रसन्न नहीं हुईं।' अत: श्रीमाताजी ने उस बिन्दु के चहुँ ओर एक वृत्त खींचा, और कुछ बार और गोल घुमाते हुए अण्डाकार दीर्घवृत्त (Ellipse) बनाया। और यह दीर्घवृत्त बना हुआ है क्योंकि शक्ति श्रीशिव के पास वापिस आना चाहती हैं और वे उन्हें पुन: बाहर धकेल देते हैं।

"जाकर सृजन करो!" उन्होंने कहा। यही कारण है कि ब्रह्माण्ड में होने वाली 'वृत्तीय गतिविधियाँ विशुद्ध वृत्त न होकर अण्डाकार दीर्घवृत्त हैं और यही श्री शिव और श्री शक्ति के बीच गहन प्रेम की पहली अभिव्यक्ति हैं।

एक बार जब उन्होंने (श्री शक्ति ने) उस कार्य को स्वीकार कर लिया तो उन्होंने स्वयं को तीन शक्तियों के रूप में अलग किया—श्री महाकाली, श्री महासरस्वती, श्री महालक्ष्मी। उन्होंने सूक्ष्म स्तर पर कार्य आरम्भ कर दिया, सूक्ष्म स्तर पर अभिव्यक्ति करने लगीं, अभिव्यक्ति

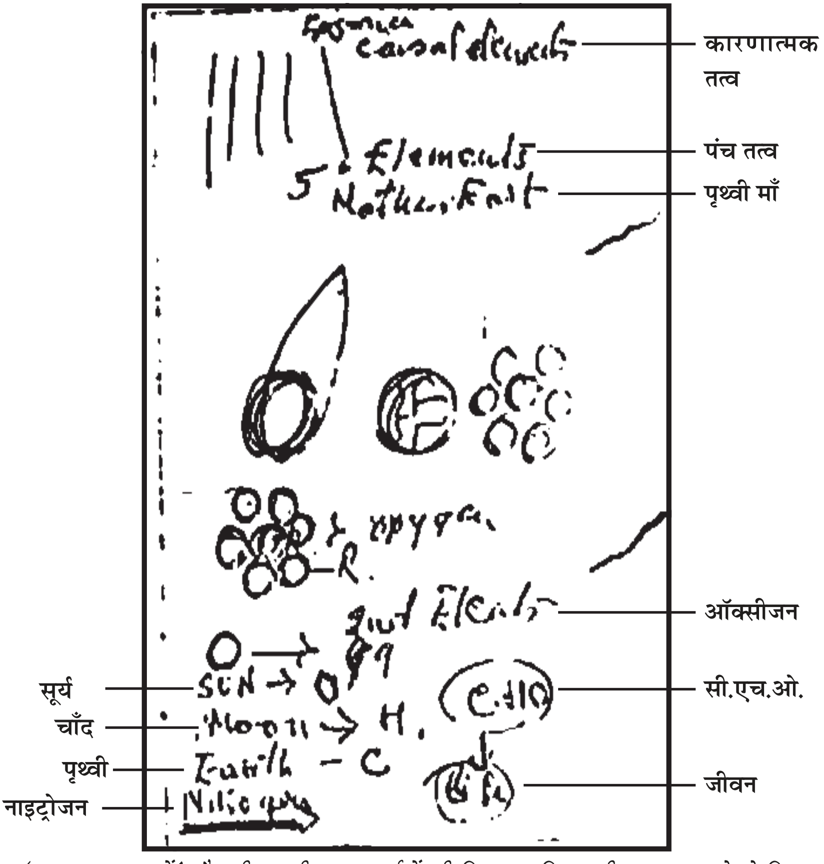

'कारणात्मक तत्वों' और जीवन की मूल इकाईयों की विकास प्रक्रिया की व्याख्या करने के लिए श्रीमाताजी के अपने करकमलों द्वारा बनाया गया रेखाचित्र

*आरम्भ हो गई। अभी तक कोई भौतिक सृजन नहीं हुआ था। किसी भी चीज़ के कारणात्मक शरीर (*Causal Body*) का यदि कोई अस्तित्व है तो ये तीन शक्तियाँ हैं। तत्पश्चात् श्री आदिशक्ति ने, चौथी शक्ति श्री गणेश का सृजन किया।*

*सर्वप्रथम श्रीमाताजी ने 'ओ३म्' की व्याख्या की। एक रेखा श्री महाकाली हैं, नीचे की रेखा श्री महासरस्वती हैं और दूसरी श्री महालक्ष्मी हैं, ओंकार में लगाया गया बिन्दु श्री शिव को अभिव्यक्त करता है। तब उन्होंने बताया कि यह सृजन भौतिक सृजन में भी प्रवेश कर गया है। आप देखते हैं कि बाईं ओर को हाइड्रोजन है, दाईं ओर आक्सीजन है और मध्य नाड़ी तन्त्र में नाइट्रोजन है तथा मूलाधार में कार्बन। इन चारों अणुओं से अमीनो एसिड्स बनाए जा सकते हैं और यही अमीनोएसिड जीवन के मूल निर्माणकर्त्ता पिण्ड (*Basic Building Blocks of Life*) हैं। श्रीमाताजी ने यह सब कागज़ पर लिखा।*

(Eternally Inspiring Recollections of our Holy Mother– East European Vol.-III में छपी Herbert Reninger की स्मृतियों से उद्धृत, श्रीमाताजी द्वारा बनाया गया हस्तरेखा चित्र ब्रजबाला (Brigitta) ने उपलब्ध कराया

★ **तब आदिशक्ति ने तीन रूप धारण किए और एक रूप से उन्होंने सभी तत्वों का सृजन किया।**

एक सहजयोगी के प्रश्न के उत्तर में—

श्रीमाताजी—*"आरम्भ में जब सदाशिव और आदिशक्ति अलग हुए तो जो टंकार हुई वह आरम्भ होने वाली मुख्य चीज़ थी। तब आदिशक्ति ने तीन रूप धारण किए और उनमें से एक से सभी तत्वों का आरम्भ किया। वह टंकार (ओंकार नाद), जो पूरे वातावरण में फैल गई वह मंगलमयता है और पावनता है, यह मंगलमयता और पावनता हर सृजित वस्तु में प्रवेश कर गई। परन्तु इसका सृजन दाईं ओर से हुआ था। अतः यद्यपि यह मंगलमयता और पावनता हर चीज के चहुँ ओर व्याप्त है, जैसे ये घर बनाया गया है परन्तु इसका प्रतिवेश (*Surrounding*) भिन्न है। अतः मान लो कि परिवेश वायु 'ओंकार' है, तब ये घर बनाया गया है। ऐसा नहीं है कि ओंकार ने इस बनाया है, परन्तु यह इसके चहुँ ओर व्याप्त है तथा व्याप्त होने के कारण यह उसे ढालता है, चलाता है, क्योंकि हमें कहना चाहिए कि चैतन्य जो कि वास्तव में ओंकार है हर समय पथ प्रदर्शक, व्यापक, आयोजक तथा हर चीज़ का सुधारक है।"*

सहजयोगी—*"श्रीमाताजी, क्या केवल देवी ही ये कार्य करती हैं?"*

श्रीमाताजी—*"वे सभी कार्य करती हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है। वे सब कुछ करती हैं। वे ही कर्ता हैं। सर्वप्रथम उन्होंने श्रीगणेश का सृजन किया, जिनके माध्यम से मंगलमयता और पावनता नियंत्रित है और जिनके माध्यम से वे (आदिशक्ति) पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त होती हैं। वे हर चीज़ में प्रवेश भी करती हैं, जैसे मान लो मैं किसी चीज को छू देती हूँ तो यह पावन हो जाती है, क्योंकि चैतन्य इसमें प्रवेश कर जाता है और यह पावन हो जाती है, मंगलमय हो जाती है। तो यह किसी भी चीज के अन्दर से गुजर सकती है, किसी भी चीज़ के अन्दर से। परन्तु*

किसी मृत चीज में ओंकार नहीं होता, इसके अन्दर विद्युत चुम्बकीय शक्तियाँ हैं और विद्युत चुम्बकीय शक्तियाँ उच्च अवस्था केवल तभी प्राप्त करती हैं जब नाइट्रोजन इनमें प्रवेश कर जाता है, तब ये 'प्राण' बन जाती हैं।

*अतः भिन्न अवस्थाओं से गुजरने के बाद मानव बनता है। अभी तक भी वह मानवमात्र है, जब तक वह आत्मसाक्षात्कारी नहीं बन जाता। इसके बाद कहानी बिल्कुल अलग है। अतः उत्क्रान्ति अवस्था, ओंकार की सभी अवस्थाएं जिसे आप चैतन्य कहते हैं वह हर चीज में व्याप्त होती हैं। इसी चैतन्य का उपयोग ये तीनों शक्तियाँ भी करती हैं। इसी कारण से इसे ओंकार कहा गया है: ॐ (*A-U-M*) क्योंकि कार्य करने के लिये देवी चैतन्य की भिन्न प्रकार की शक्तियों का उपयोग करती हैं। अतः पूरे ॐ का उपयोग नहीं होता। बहुत जटिल विषय है, बेहतर होगा कि इसमें न ही उलझें। इसकी जटिलता में जितना अधिक जाने का प्रयत्न करेंगे उतनी ही अधिक आपकी आज्ञा पकड़ेगी। आज्ञा को नीचे रखना बेहतर है। मैं कहना चाहूंगी कि 'आज्ञा' की अपेक्षा 'भक्ति' में अधिक बने रहें। ये सब आपको बहुत जल्दी मिल जाएगा।* ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, पुणे, भारत 1988)***

★ ...श्रीमाताजी द्वारा इतने कम समय में रेखा चित्रों द्वारा त्रिदेवों, वृहत् ब्रह्माण्डों, ब्रह्माण्ड और विश्व के सृजन के रहस्योद्घाटन ने मुझे अवाक् कर दिया।

तब उन्होंने कहा कि यदि हम बाइबल के 'उत्पत्ति-ग्रन्थ' अध्याय को पढ़ें तो इसमें लिखा है कि आत्मा सर्वत्र घूम रही थी। इस आत्मा को सदाशिव या सर्व व्याप्त सृष्टा कहा जा सकता है या इसे सर्वव्याप्त सुप्त सदाशिव या सृष्टा की चैतन्य-लहरियाँ भी कहा जा सकता है। सुप्त सदाशिव की चैतन्य लहरियों की शक्ति ब्रह्माण्ड के चहुँ ओर घड़ी की सुई की दिशा में (सीधे चक्कर में) मंडरा रही थीं। सदाशिव के अन्दर स्थित इच्छा शक्ति इस परिक्रमा से थक चुकी थी और इसने सदाशिव से मुक्त होने की इच्छा व्यक्त की। अतः सदाशिव ने अपनी शक्ति की इस प्रार्थना को इस शर्त पर स्वीकार किया कि वह अपनी परिक्रमा में बनीं रहेंगी और सदाशिव की इच्छा के बिना उनके पास लौटकर नहीं आएँगी। इच्छा शक्ति इस बात से सहमत हो गईं और सदाशिव ने उन्हें सीधे चक्कर में परिक्रमा में स्थापित कर दिया। लाखों वर्षों उपरान्त शक्ति अपने अकेलेपन के कारण परेशान हो गईं और सदाशिव के पास वापिस लौटना चाहा। उन्होंने उस शर्त को भी अनदेखा किया कि वे सदाशिव के पास केवल तभी लौट सकती हैं जब सदाशिव चाहें, अपनी स्वतन्त्र इच्छा से नहीं। इच्छा शक्ति जब शिव के समीप आने लगीं तो उन्होंने उसे रोकने के लिये अपना हाथ उठाया जो चूड़ी के आकार में बनी परिक्रमा से जा टकराया। यह परिक्रमा तब तेज आवाज़ के साथ तीन हिस्सों में टूट गई और फिर ॐ का आकार धारण करके परस्पर एक हो गईं।

*नाद का यह सृजन पहली बार हुआ था या जैसा श्रीमाताजी ने बताया यह स्वर (*Musical Note*) का ये प्रथम सृजन था।*

जब श्रीमाताजी बता रहीं थीं तो मैं पूरे ध्यान से सुन रहा था। उन्होंने बताया कि ओंकार के ऊपर लगने वाला बिन्दु वास्तव में स्वयं सदाशिव हैं। श्रीमाताजी कहते गए कि वास्तव में ये तीनों खण्डित भाग तीन शक्तियाँ हैं-महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी जिन्हें त्रिगुणात्मिका के नाम से भी जाना जाता है। ये तीनों शक्तियाँ ब्रह्माण्ड के हित में कुछ करना चाहती थीं। अत: इन्होंने सदाशिव से प्रार्थना की कि इन्हें अभिव्यक्त होने की आज्ञा दें। परिणामस्वरूप भगवान शिव, भगवान विष्णु और भगवान ब्रह्मदेव तथा देवी सरस्वती, देवी लक्ष्मी और देवी पार्वती की इन तीनों शक्तियों के माध्यम से अभिव्यक्ति हुई। भगवान् शिव ने पार्वती से, भगवान विष्णु ने लक्ष्मी से तथा भगवान् ब्रह्मा ने सरस्वती से विवाह किया। इन छ: देवी-देवताओं के सृजन के बाद भी इनके पास कोई कार्य न था जिससे वो किसी को लाभ पहुँचा सकते। अत: आदिशक्ति ने मानव का सृजन करने का निर्णय किया।

श्रीमाताजी बताती चली गईं कि इन सभी शक्तियों के साथ आदिशक्ति गोल-गोल घूमती रहीं और ये शक्तियाँ एक रूप हो गईं। बहुत जोर की आवाज के साथ यह वृत्त टूटा (इससे नाद, Big Bang*, के सिद्धान्त का वर्णन होता है) और जिस टुकड़े में महालक्ष्मी शक्ति थी इसे अब पृथ्वी कहा जाता है, एक ओर गिरा और तेजी से घूमता रहा। यही पृथ्वी का धुरी पर घूमना है। सूर्य और चाँद की तरह के अनेक टुकड़े भी महासरस्वती और महाकाली शक्तियों के साथ गिरे। सूर्य नामक टुकड़ा अत्यन्त गर्म था, परन्तु दूरी के कारण यह सहन करने योग्य हो गया। परन्तु चाँद नामक अन्य टुकड़ा अत्यन्त ठण्डा था। चाँद तथा तारे पृथ्वी से देखे जा सकते थे यद्यपि वे ब्रह्माण्ड के ही भाग थे। पृथ्वी सूर्य से चाँद की तरफ चली। चाँद की ठण्डक ने पृथ्वी को शीतल किया और इस प्रकार बर्फ जमी। घूमते हुए पृथ्वी का जो भाग सूर्य की ओर आया वहाँ से बर्फ पिघली और जल का सृजन हुआ। पृथ्वी का मध्य भाग सूर्य के समीप होने के कारण गरम हो गया और दोनों सिरे (*Poles*) बर्फ से ढक गए।*

*सदाशिव ने आदम और हौवा (*Adam and Eve*) का सृजन अपने रूप में किया। परमात्मा के अधूरे रूप में होने के कारण उन्होंने नव विश्व प्रणाली में धर्म का ज्ञान नहीं डाला। आदम और हौवा के पास स्वतन्त्र इच्छा शक्ति न होने के कारण वे श्रेष्ठ पशुओं सम थे। आदि शक्ति कुण्डलिनी या सर्पिणी के रूप में उनके पास गईं और उनसे ज्ञान का वर्जित फल खाने की प्रार्थना की। मानव की बहुत सी जातियाँ नष्ट हो गई क्योंकि उनके अन्दर धर्म का ज्ञान स्थापित न किया गया था। परिणामस्वरूप प्रसिद्ध प्रलय का सृजन हुआ और सभी जीवों की एक-एक जाति को छोड़कर सभी नष्ट कर दिए गए। एक बार फिर इसका अर्थ यही हुआ कि देवी-देवताओं के पास कोई कार्य न था क्योंकि जीव की सभी जातियों के पास ज्ञान का पूर्ण अभाव था। आदि शक्ति ने मानव का सृजन करने के स्थान पर उसे विकसित करना चाहा। देवी-देवता कार्य में लग गए। उन्होंने मानव में भिन्न चक्र स्थापित किए जो पूर्व पशुवत मानव का विकास सम्भव करते हैं।*

*श्रीमाताजी बतातीं चली गई कि कार्बन के एक अणु से लेकर आज के मानव की स्थिति तक पहुँचने के लिये लाखों वर्ष लगे होंगे। वास्तव में उन्होंने स्पुतनिक प्रक्षेपास्त्र (*Sputnik Missile*) विकास प्रक्रिया का स्पष्ट वर्णन किया। एक कैप्सूल के अन्दर कई अन्य कैप्सूल रखे होते हैं। शरीर के एक कैप्सूल का उन्होंने नक्शा खींचा। इसके अन्दर भावनाएं घूम रहीं थीं और एक अन्य में बुद्धि। पहला कैप्सूल जब फटता है तो दो अन्य कैप्सूलों को तीव्र गति से अंतरिक्ष की ओर धकेलता है। तत्पश्चात् दूसरा कैप्सूल फटता है और तीसरे कैप्सूल को और अधिक गति से एक ऐसे क्षेत्र में धकेल देता है जहाँ गुरुत्वाकर्षण नहीं होता। अन्ततः विकास की इस प्रक्रिया के माध्यम से मानव का सृजन हुआ और उसके साथ धर्म का ज्ञान भी विकसित हुआ।*

श्रीमाताजी के अनुसार धर्म का अर्थ एक मर्यादा में रहते हुए कार्य करना है। पशुओं में भी धर्म है परन्तु वे इसके विषय में नहीं जानते। बात को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने वृक्ष का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि पेड़ कभी नीचे की ओर नहीं बढ़ सकता और न ही कभी एक सीमा से ऊँचा जा सकता है क्योंकि उसका धर्म ऐसा करने की आज्ञा नहीं देता। परन्तु वृक्ष को इस बात का ज्ञान नहीं है। इसी प्रकार मानव को भी धर्म और उसका ज्ञान प्रदान किया गया और इसकी अभिव्यक्ति आरम्भ में चेतना, अवचेतना और पराचेतना द्वारा हुई तथा बाद में विवेक तथा आध्यात्मिक ज्योति द्वारा। धर्म के सर्वश्रेष्ठ ज्ञान को जानने के लिए कुण्डलिनी, जो कि आदिशक्ति का प्रतिबिम्ब है, को सुप्तावस्था से जगाया गया। यह कुण्डलिनी जब जागृत होती है तो सर्वव्यापी चैतन्यलहरियों (परम-चैतन्य) से सीधा सम्बन्ध स्थापित करती है। प्रथमावस्था में व्यक्ति निर्विचार हो जाता है फिर भी आस-पास की सभी चीजों का ज्ञान उसे होता है। प्रेम की दिव्य शक्ति होने के कारण इस शक्ति को यदि निरन्तर बहने दिया जाए तो यह मानवीय रूप में असम्भव लगने वाले कार्य को कर सकती है।

त्रिदेवों, ब्रह्माण्ड और विश्व के इतने थोड़े समय में रेखाचित्रों समेत इतने विस्तृत स्पष्टीकरण ने मुझ मौन कर दिया।

(बाबा मामा (श्री एच.पी. साल्वे) के 'मेरे संस्मरण' से उद्धृत अध्याय-9, पृष्ट 187-191)

★ ॐ की शक्ति से श्री आदिशक्ति ने पूरे ब्रह्माण्ड का सृजन किया

"संगीत स्वर चैतन्य के वाहन हैं और इनके माध्यम से साधकों ने आध्यात्मिक ज्ञान एवं उत्क्रान्ति प्राप्त करनी है....

*आदिशक्ति एवं ओंकार की अभिव्यक्ति, क्षणभर में एक साथ घटित हुई। जब आदिशक्ति ने स्वयं को अभिव्यक्त किया तो एक विशेष प्रकार के पावन नाद का सृजन हुआ जिसे सही अर्थों में ओंकार (ॐ) कहा जा सकता है। ॐ की शक्ति से श्री आदिशक्ति ने पूरे ब्रह्माण्ड का सृजन किया। ॐ तीन आदिशक्तियों की अभिव्यक्ति है–'*A*','*U*','*M*' इन्हीं शक्तियों ने ब्रह्माण्ड का सृजन किया–*

'A '—शुद्ध इच्छाशक्ति—श्रीमहाकाली।

'U '—क्रियाशक्ति—श्री महासरस्वती।

'M '—विकास की प्रारम्भिक शक्ति—श्री महालक्ष्मी।

यही ओंकार संगीत का श्री गणेश हैं और इसी कारण से संगीत 'सार्वभौमिक भाषा' (Universal Language) बन गया है। यही ओंकार आदिसंगीत है जो श्री आदिशक्ति ने भगवान ब्रह्मा को दिया था। चारों वेद इसी आदिसंगीत की निरन्तर अभिव्यक्ति मात्र हैं।

भगवान ब्रह्मा ने ये संगीत देवी सरस्वती को दिया, उनके हाथों में वीणा संगीत का प्रतीक है। देवी सरस्वती केवल विद्या ही नहीं वे संगीत भी हैं। देवी सरस्वती से यह संगीत महर्षि नारद को गया तथा यह एक संगीतात्मक विडम्बना प्रतीत होती है कि दोनों को परस्पर जोड़ने वाली कड़ी है वीणा। गुरु नारद ने गंधर्वों, अप्सराओं और किन्नरों को संगीत सिखाया।

संगीत का मानव तक आना नियति थी। संगीत अभी तक स्वर्ग में था और जो लोग इसे पृथ्वी पर लाए वे महान ऋषि मुनि थे जो संगीत के महान विद्वान, महान आविष्कारकर्ता और महान शोधकर्ता भी थे। इस स्वर्गीय संगीतगंगा को पृथ्वी पर लाने वाले लोग भी तुल्य स्वर्गीय शक्ति एवं ज्ञान सम्पन्न प्राचीन लोग थे। उन्हें भागीरथ कहा जा सकता है। प्रतिभाशाली संगीतकारों का अथक एवं निरन्तर प्रयास इसका मूल कारण है। परमात्मा ने ऋषियों-मुनियों को संगीत दिया और उन्होंने मानव को संगीत प्रदान किया। प्रतिभाशाली और गुणी पुरुषों ने इस पर सोच विचार और ध्यानधारणा की। एक प्रकार से यह संगीत की देवी की पागलों की तरह से पूजा थी। संगीत विशारदों ने, संगीत विज्ञान, वैज्ञानिक नियम और तरीके खोज निकाले और शास्त्रीय संगीत इसका उदाहरण है। शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत का वैज्ञानिक रूप है....।

'नाद', 'नकार' अर्थात् प्राणवायु और 'डकार' अर्थात् अग्नि या ऊर्जा का सम्मिश्रण है। इस प्रकार से श्वास को जब शक्ति दी जाती है तो इससे संगीतस्वर उठते हैं और इसीलिए संगीत स्वर को 'नाद' कहा जाता है। मानव स्वर की व्याख्या करने के लिए इस परिभाषा को विशुद्ध एवं पूर्ण माना जाना चाहिए क्योंकि कम से कम भारत में तो मानवस्वर को संगीत का मुख्य स्रोत तथा उद्भव माना जाता है।

अपनी अभिव्यक्ति करने के लिए आत्मा मस्तिष्क को या इच्छा को उद्यत (तैयार) करती है। मस्तिष्क, अपनी बारी में, शरीर में उष्णता या ऊर्जा को जागृत करता है जो ब्रह्मग्रन्थि में निवास करने वाले श्वास को उद्यत करती है। इस प्रकार उद्यत हुआ यह श्वास ऊँचे और ऊँचे स्वर तक जाता है, सीने और गले के माध्यम से संगीत लय में बाहर आता है। इस प्रकार मनुष्य की आवाज ही सारे संगीत का मुख्य स्त्रोत है।"

('संगीत एवं सहजयोग', पं० अरुण आप्टे, 1997, पृ. 2-3, एवं 30)

★ अब देखें, स्वयं धरा माँ का सृजन किस प्रकार हुआ?

"...आज जब हम आधुनिक सहजयोग में हैं, हम वास्तव में पृथ्वी माँ के स्तर पर हैं,

क्योंकि यह कुम्भ (Aquarius) युग है—कुम्भ अर्थात् पृथ्वी माँ। अतः हम पृथ्वी माँ के स्तर पर हैं। मानव की चेतना में भी आप देख सकते हैं—मेरा अभिप्राय केवल पुरुषों की चेतनाएं ही नहीं महिलाओं की चेतनाएं भी हैं। चेतना जीवन की स्त्री सुलभ अभिव्यक्ति की ओर अधिक गतिशील है...।

...कुम्भ युग में ये सारी तैयारी कुण्डलिनी को ऊपर लाने के लिये की गई है ताकि सभी कुछ इस प्रकार कार्यान्वित हो सके कि बायाँ और दायाँ मिलें और आप सब प्रज्ज्वलित हो उठें, प्रबुद्ध बन जाएं। यह हमारे अस्तित्व का, पूरी सूझ-बूझ से मिलकर पूरे कार्य को करने का प्रश्न था।

अब देखें, स्वयं पृथ्वी माँ का सृजन किस प्रकार हुआ है। वह भी बहुत साधारण चीज है। सर्वप्रथम, ऊर्जा प्रवाह चालू हो गया। अब यह ऊर्जा सम्मिश्रित ऊर्जा है, ठीक है? तत्पश्चात् सम्मिश्रित ऊर्जा इस प्रकार से गोल, गोल, गोल घूमती रही और जब ये ठोस हो गई तो टंकार हुई। जब टंकार घटित हुई—यह पुरुषोचित कार्य है, एक प्रकार से मैं कहना चाहूंगी, पुरुषोचित शैली, क्योंकि अभी तक पृथ्वी माँ तो उत्पन्न ही नहीं हुई—तो ये नन्हें टुकड़े पुनः गोल-गोल घूमने लगे। संवेग (Momentum) के कारण ये गोलाकार हो गए। इनमें से पृथ्वी माँ को एक कार्य के लिए चुना गया...।

...पृथ्वी माँ पर जीवन पानी से आया—कार्बन का उद्भव हुआ, सभी ने इसमें सहायता की और मानव का सृजन हुआ, तब पुरुष अपने समाज को सुधारने के लिये निकल पड़े, और जो भी कुछ वो कर सके; अपने अहं से जो भी सम्भव था, उन्होंने किया। अब बस! अब वे अपना कार्य कर चुके हैं, अब वे अनुदान (Dole) पर हैं। अब महिला की बारी है या हम कह सकते हैं कुण्डलिनी की, जो इन सभी वर्षों में प्रतीक्षा कर रही थी, विश्राम कर रही थी, समय आने की प्रतीक्षा कर रही थी, क्या ऐसा नहीं है? अतः हम कहते हैं कि 'पुष्पीकरण का समय आ गया है'। उस समय कुण्डलिनी को उठकर प्रज्ज्वलन करना होता है, इस प्रकार से कि पूरा कार्य पूर्ण हो सके—ये सामान्य बात है। क्या अब आप समझ पाए?"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, सर्बिटन, 21.08.1983)

★ **जब हम पशु थे तो हमारा मस्तिष्क बिल्कुल चपटा (Flat) था, हिमालय भी ऐसा ही था।**

मानव मस्तिष्क अद्भुत है। अंग्रेजी का शब्द 'Mind' मस्तिष्क के अर्थ की व्याख्या नहीं कर पाता। परन्तु सहजयोग में स्पष्ट व्याख्या की गई है कि मानव मस्तिष्क क्या सृजन करता है। यहाँ, जैसे आप स्पष्ट देखते हैं कि सिर के शिखर (तालू) पर कमल दिखाई पड़ता है। आप कह सकते हैं कि श्रीमाताजी सिर के शिखर पर कमल कैसे हो सकता है? यह बात अत्यन्त काव्यात्मक और काल्पनिक प्रतीत होती है, यह अद्भुत कल्पना है! काश, कि हर व्यक्ति का ये कमल खिल पाता! परन्तु बहुत कम लोगों को ये सौभाग्य प्राप्त हुआ है, फिर भी

उन्हें कोई सन्देह नहीं है। अब, जब आप कमल को देखते हैं, उससे पूर्व सहजयोग में मस्तिष्क को खोखली चीज की तरह से दिखाया गया है। मस्तिष्क ऊतक (Brain Tissue) जैसी कोई चीज नहीं है। परन्तु दो हैं, एक नीला है और एक पीला—मस्तिष्क के अन्दर गुब्बारों जैसे दो ढाँचे। पहले जब केवल एक गुब्बारा था, जब हम मात्र पशु थे, हमारा मस्तिष्क चपटा था, हिमालय भी ऐसा ही था। स्थूल जीवन में हिमालय हमारे मस्तिष्क का प्रतिनिधित्व करता है। अतः हिमालय भी चपटा था और हमारा मस्तिष्क भी। जब पशुओं ने मानव पर आक्रमण करना आरम्भ किया तो मनुष्यों ने पेड़ों की डालियों से उन्हें मारना सीखा, उन्होंने मुकाबला करना सीखा ओर एक अन्य रेखा (तत्व) का आरम्भ हुआ जिसे हम सूर्य तत्व भी कहते हैं। परन्तु हम देखते हैं कि एक अन्य रेखा विकसित होने लगी और मस्तिष्क त्रिकोण के आकार में परिवर्तित हो गया...। अब ये त्रिकोणाकार मस्तिष्क सूचीस्तम्भ (Pyramid) की तरह से है, मैंने देखा है, और कभी-कभी तो मैं पाती हूँ कि यह एक ओर को सूजा हुआ है!

अतः हमारी सारी समस्याओं का आरम्भ उस बिन्दु से हुआ जहाँ हमने यह निर्णय किया कि हम इसे कर सकते हैं, हमें करना होगा और फिर वैसे ही हमने करना आरम्भ कर दिया। इस पीले पदार्थ ने, जिसे हम अहं (Ego) कहते हैं, प्रतिअहं को इस प्रकार से धकेलना आरम्भ कर दिया कि मस्तिष्क का आकार समपार्श्वीय (Prism-like) हो गया। परन्तु यह आवश्यक था, (अस्पष्ट) यह समपार्श्व। निःसन्देह इस घटना के साथ हिमालय ने भी त्रिकोणाकार आकार धारण किया। मानव मस्तिष्क में भी यह घटित होना आवश्यक था क्योंकि हमारे अन्दर भी अहं विकसित हो चुका था। आदम और हौवा की अवस्था में यदि हमने गलती न की होती तो हम इससे बच जाते परन्तु हमने गलती की, अब उसका फल मिल रहा है, और इस लघु-मण्डल (Short circuit) की लम्बाई बढ़ जाने के कारण हमारा विकास भिन्न दिशा की ओर विकसित होने लगा जहाँ हमने स्वयं को खोजना चाहा, कि सत्य क्या है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, हैम्पस्टैड टाऊन हॉल, 02.07.1984)

★ श्रीमाताजी ने इस परिवार में जन्म लेना पसन्द किया

"...तत्पश्चात् मैंने उनसे प्रश्न किया कि उन्होंने साल्वे परिवार में ही क्यों जन्म लिया? इसके उत्तर में उन्होंने कहा कि मुझे इस बात का ज्ञान नहीं है कि हमारे परिवार में कितने गुण एवं मानवीय विशेषताएं हैं। हमारे माता-पिता की पहली प्राथमिकता बच्चों का उचित पालन-पोषण था। वे अत्यन्त निःस्वार्थ थे। आत्म-सम्मान एवं गौरव का उनमें गहन विवेक था तथा आध्यात्मिकता और सांसारिक ज्ञान का उनमें भण्डार था। वे अत्यन्त पावन एवं चरित्रवान मानव थे। हमारा परिवार शाही वंश से सम्बन्धित था, वे चित्तौड़गढ़ के योद्धा थे जहाँ पद्मिनी ने बत्तीस हजार महिलाओं के साथ अपने पावित्र्य की मुसलमान राजा आदिल शाह खिलजी से रक्षा करने के लिये जौहर किया। अतः वे अत्यन्त राष्ट्रवादी एवं देशभक्त थे और संस्कृति की ये जड़ें उनमें बहुत गहन थीं। मेरे माता और पिता दोनों सहज जीवन और उच्च विचारों के प्रतीक थे, उनकी ईमानदारी तथा अन्याय के प्रति असहनशीलता उनके महान गुण

थे। मानसिक और चारित्रिक रूप से उन्हें कभी भ्रमित नहीं किया जा सकता था क्योंकि इन मूल्यों के साथ वे कभी समझौता नहीं करते थे। वे अत्यन्त कुशाग्र एवं विनम्र थे। किसी भी कार्य को करते हुए वे अत्यन्त सूक्ष्म थे तथा इसी गुण की आशा वे अपने बच्चों से भी करते थे। सभी लोगों से वे अपने बच्चों की तरह से प्रेम करते थे तथा इसी प्रेम तथा स्नेहपूर्वक सभी से मिलते थे। संगीत तथा खेलकूद उन्हें पसन्द था। किसी प्रकार के नशे आदि की बुरी आदतें उन्हें न थीं। सभी धर्मों का वे गहन सम्मान करते थे क्योंकि सभी धर्मों का उन्हें ज्ञान था। अपने बच्चों को ईसाई धर्म समेत कोई धर्म विशेष स्वीकार करने के लिये उन्होंने कभी विवश नहीं किया। दोनों बहुत अच्छे पढ़े-लिखे थे और उनकी आदतें भी विद्वानों सी थीं। हमारे पिताजी महान भाषाविद् थे और उनकी स्मरण-शक्ति भी बहुत तीव्र थी।

इस प्रकार वे पूर्ण व्यक्ति थे जिनका चरित्र बेदाग था। श्रीमाताजी ने इन्हीं पावन एवं पूर्ण माता-पिता के परिवार में जन्म लेने का निर्णय किया।"

('मेरे संस्मरण' बाबामामा कृत अध्याय-9, 1986—'ब्रह्माण्ड का सृजन')

★ हमें 'हम' (We) कहकर बात करनी चाहिए, 'मैं' (I) सम्बोधन से नहीं।

"...अन्त में आपका अपने बच्चों से, पत्नी से मोह आता है, तुम्हारे, तुम्हारे, तुम्हारे...जो भी 'मेरा' है 'मैं' नहीं है। मेरा घर यह 'मैं' नहीं है। मेरा, मेरा, मेरा, मेरा, त्याग देना आवश्यक है, इसको नष्ट कर देना आवश्यक है। इसकी अपेक्षा आपको कहना चाहिए, 'हम'। बहुत अच्छा शब्द है। 'मैं' के स्थान पर 'हम' कहें। और लोग आश्चर्य करने लगते हैं। किसी ने मुझसे पूछा, "श्रीमाताजी, जब आप 'हम' कहते हैं तो इसका क्या अर्थ होता है? किस प्रकार आप हमें एहसास करवा सकते हैं कि हम सब एक हैं, जिस प्रकार आप 'हम' कहती हैं। 'मैंने कहा क्यों नहीं? आप सब मेरे शरीर के अंग-प्रत्यंग हैं। क्या हम 'हम' नहीं हैं? क्या मैं अपनी उंगली हृदय से अलग कर सकती हूँ? आप जब मेरे शरीर के अंग-प्रत्यंग हैं तो मुझे 'हम' कहकर ही बात करनी होगी, क्योंकि मैं यहाँ बैठे हुए सामूहिक-अस्तित्व (शक्ति) के प्रति चेतन हूँ।'

अतः हमें 'हम' कहकर बात करनी चाहिए, 'मैं' और 'मेरा' कहकर नहीं। अपने विषय में भी जब आपने बात करनी हो तो तृतीय पुरुष में आप बात करें जैसे आप कह सकते हैं—"ये निर्मला लन्दन जा रही है।" ये वास्तव में सच्ची बात है क्योंकि यह शरीर बाहर जा रहा है, मेरा हृदय यहीं रहेगा। अतः ये कहना कि 'मैं जा रही हूँ', सत्य नहीं है—मैं यदि आदिशक्ति हूँ, तो मैं कहाँ जा रही हूँ? मैं कहीं नहीं जा रही। मैं सर्वत्र हूँ। मैं कहाँ जा सकती हूँ? कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ मेरा निवास नहीं है और यदि मुझे ऐसे किसी स्थान पर जाना है तो वह केवल नर्क है जहाँ मैं जाना नहीं चाहती। अतः मैं कहती हूँ कि 'यह निर्मला अब जा रही है, आस्ट्रेलिया छोड़ रही है।' कल मैं विदा हूँगी। तो क्या होता है? केवल शरीर ने जाना है—बस इतना ही। इसी प्रकार से आप भी अपने शरीर के बारे में कहना आरम्भ करें। ये मेरा मस्तिष्क, ये श्रीमान फलां फलां का मस्तिष्क। बेहतर होगा कि स्वयं को श्रीमान, श्रीमती या सुश्री कहकर

सम्बोधित करें। 'अतः सुश्री, क्या आप उठेंगी?' बेहतर होगा कि स्वयं को इस प्रकार सम्बोधित करें। बच्चे इसी प्रकार बोलते हैं, तृतीय पुरुष में। आप हैरान होंगे, आप स्वयं पर हँसना सीख जाएंगे। 'ओ श्रीमान फलां-फलां, अब रास्ते पर आ जाओ, वो इस प्रकार बर्ताव कर रहा है।' और आप वास्तव में अपने स्वामी बन जाएंगे क्योंकि अब आपने इस बच्चे को सम्भालना सीख लिया है। यह वही परिवक्वता-विवेक प्रदान करेगा।

अतः यह कहना कि ये मेरा बच्चा है, ये मेरी पत्नी है—निःसन्देह आपने अपनी पत्नी और बच्चों की देखभाल करनी है क्योंकि वे आपकी जिम्मेदारी हैं परन्तु जितना आप अपने बच्चों के लिए करते हैं, अन्य बच्चों के लिए उससे कहीं अधिक करें। अतः अपने बच्चों से इतनी अधिक एकरूपता, उनके लिए अत्यधिक सुरक्षाभाव आपको कष्ट देगा। आपको विश्वास करना होगा कि आपका परिवार आपके 'पिता' (परमात्मा) का परिवार है और आपकी 'माँ' (आदिशक्ति) इसकी देखभाल कर रही हैं। यदि आप सोचते है कि आप अपने परिवार की देखभाल स्वयं कर सकते हैं—तो आगे बढ़कर देखें! अतः अवांछित रूप से सुरक्षात्मक न हों, बहुत अधिक चिन्तित न हों, अपने परिवार के विषय में बहुत अधिक परेशान न हों।' ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, सिडनी, आस्ट्रेलिया 21.08.1983)***

★ हम सबके अन्दर परम चैतन्य ने किस प्रकार कार्य किया

"...ये ऐसे है जैसे आपको एक परिकल्पना स्वीकार करनी होती है कि मानव मस्तिष्क से ऊपर एक सर्वव्यापी शक्ति भी है। केवल यही परिकल्पना (Hypothesis) *है। मानव मस्तिष्क स्तूपाकार* (Pyramid) *होता है। माँ के गर्भ में बच्चा जब भ्रूण का रूप धारण करता है तो चहुँ ओर से आने वाला परमचैतन्य मस्तिष्क की ओर से उसमें प्रवेश करता है। वास्तव में होता है क्या है कि स्तूपाकार मस्तिष्क के शिखर से बिना किसी रोक-टोक के परम चैतन्य प्रवेश करता है और रीढ़ के छोर पर स्थित औंधी त्रिकोणाकार अस्थि में साढ़े तीन कुण्डलों में कुण्डलिनी शक्ति के रूप में स्थापित हो जाता है। इस प्रक्रिया में यह रीढ़ में अपना चिन्ह छोड़ता है, जिसे रिक्त वाहिका* ("Vaccum Channel") *कहते हैं। अब त्रिकोणाकार मस्तिष्क को भिन्न दिशाओं से टकराते हुए परम चैतन्य को भूरे एवं सफेद तत्व में प्रवेश करना होता है। इन तत्वों का अपना ही घनत्व* (Density) *होता है और शरीर विज्ञान के 'अपर्वतन नियम'* (Laws of Refraction) *के अनुसार स्तूपाकार मस्तिष्क से टकराकर परम चैतन्य तिरछा होकर बाएं से दाएं की ओर और दाएं से बाएं की ओर परावर्तित होता है। इसे समपार्श्वीय* (Prismatic) *परावर्तन-प्रभाव कहते हैं। ये घटना प्रायः मानव मस्तिष्क के साथ ही घटित होती है। पशुओं के मस्तिष्क में ये प्रायः घटित नहीं होती।*

परावर्तन प्रक्रिया में मानव चित्त दोनों ओर को (बाएं और दाएं) खिंच जाता है और बाहर की ओर चलायमान होता है। बाहर निकलते हुए चित्त और चैतन्य, दोनों, आज्ञा चक्र पर एक दूसरे को दोनों ओर से पार करते हैं। इस खिंचाव के परिणाम स्वरूप परिणामी शक्ति कहलाने वाली एक अतिरिक्त शक्ति का सृजन होता है। अब शक्तियों के समानान्तर चतुर्भुजीय

सिद्धान्त (शरीर विज्ञान) गतिशील हो उठता है। 'परिणामी शक्ति' दो हिस्सों में बँट जाती है। दोनों एक दूसरे के बाएं और दाएं ओर 90° पर होते हैं। परिणामी शक्ति अपने दोनों प्रतिपक्षों के मध्य में कार्य करती है। शरीर में नीचे की ओर अपना मार्ग बनाते हुए एक भाग गर्भस्थित भ्रूण में बाएं और दाएं अनुकम्पी नाड़ी तन्त्र का सृजन करता है। दूसरा भाग इन्द्रियों के मार्ग से अपने साथ मानवीय चेतना को बाईं ओर खींचते हुए अपना मार्ग बनाता है। बाह्य विश्व में दूसरा भाग क्रिया कहलाता है। बाह्य जगत से ये क्रिया प्रतिक्रिया लाती है (शरीर विज्ञान का एक अन्य प्रसिद्ध नियम)। क्रिया और प्रतिक्रिया दोनों एक ही मार्ग पर चलते हैं। बाईं ओर की प्रतिक्रिया 'बन्धनों' को जन्म देती है तथा दाईं ओर को यह 'अहं' की रचना करती है।

*संक्षिप्त में, परिमाणीय ब्रह्म चैतन्य की जीवन्त शक्ति के साथ मिलकर हमारा चित्त बाह्य जगत में गया, एक प्रतिक्रिया एकत्र की और अपने साथ बाईं ओर से बन्धनों को वापिस लाया, जिसके द्वारा '**मनस**' या '**मन**' की रचना हुई। क्रिया और प्रतिक्रिया, दोनों, आज्ञा और विशुद्धि चक्रों में से गुजरते हैं। चित्त क्योंकि प्रकृति में बिखरा हुआ है, इसमें पूरे शरीर से प्रवाहित होने की शक्ति है। बाईं ओर की प्रतिक्रिया 'इच्छा तत्व' है जिसकी अन्तःशक्ति बाईं अनुकम्पी वाहिका पर ईड़ा नाड़ी को जन्म देती है। इसी प्रकार दाईं ओर की प्रतिक्रिया क्रिया- तत्व है, जिसकी अन्तःशक्ति पिंगला नाड़ी की रचना करती है। ईड़ा नाड़ी का अत्यधिक प्रवाह आज्ञा चक्र के पीछे की ओर गुब्बारे के आकार के 'प्रतिअहं' की रचना करता है और पिंगला नाड़ी का अनियंत्रित प्रवाह ऐसा ही एक बादल 'आज्ञा चक्र' के सामने की ओर बनाता है जिसे 'अहं' नाम दिया गया है। आज्ञा इन दोनों गुब्बारों के बीच में फँसा रहता है। आज्ञा चक्र के सामने का हिस्सा मस्तिष्क की 'पीयूषग्रन्थि'* (Piturtary Gland) *से एवं पीछे का भाग 'शंकुरूप'* (Pineal-Gland) *ग्रन्थि से नियंत्रित होता है।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी की डा. तलवार से बातचीत 26, 27 फरवरी 1987)

★ अपने चित्त को मध्य में रखें

"...कपड़े के टुकड़े का एक अन्य उदाहरण लें। ये चित्त का द्योतक है। आत्म-साक्षात्कार से पूर्व यह सभी दिशाओं में पूर्णतः फैला हुआ होता है। कपड़े के टुकड़े को मध्य में अपनी एक उंगली से ऊपर की ओर उठाएं। क्या होता है। एक सीमा तक कपड़ा ऊपर को उठता है और इस प्रक्रिया में या तो यह उंगली पर लिपट जाता है या उंगली के चहुँ ओर लटक जाता है। इसी प्रकार से **जब कुण्डलिनी उठती है तो यह चित्त को ऊपर उठाती है, चित्त को सहस्रार तक ले जाती है जहाँ ब्रह्मचैतन्य के प्रकाश से चित्त ज्योतिमर्य हो उठता है। तत्पश्चात् मध्य में यह सुषुम्ना नाड़ी पर या तो कुण्डलिनी के चहुँ ओर लिपट जाता है या लटक जाता है। आत्म-साक्षात्कार के पश्चात् हुआ यह कि बाह्य जगत में जहाँ कहीं भी हमारा चित्त फैला हुआ था वह अन्दर की ओर खिंच कर ज्योतिर्मय हो गया। यही वह अवस्था है। परन्तु वास्तव में हम मानव अपनी आदतों के गुलाम हैं। आदत की वजह से हम अपने चित्त को स्थायी रूप से उस अवस्था में नहीं रहने देते। वास्तव में चित्त बाहर नहीं जाना**

चाहिए। यही एक साधारण अवस्था है जिसमें मैं स्वयं आपके अन्दर रहना चाहती हूँ। आगे बढ़ने के लिए मैं आपको नाव में बिठा रही हूँ, परन्तु आप लोग अपना एक पैर पानी में डालकर लगातार मेरी सहायता का प्रतिरोध कर रहे हैं। आपका चित्त तुच्छ चीज़ों पर है, आप भली भांति जानते है कि आपको पार करने के लिए मैं अन्दर बैठी हुई हूँ परन्तु फिर भी आदतन आप अपनी टाँग अड़ाते हैं। मैं ये भी देख रही हूँ कि प्रतिरोध करने वाली आपकी टाँग को कभी भी कोई मगरमच्छ चबा लेगा। परन्तु आदतों की पट्टी अपनी आँखों पर बाँधे हुए आप उस मगरमच्छ को नहीं देख पा रहे हैं। अब क्या आप मेरे कष्ट की कल्पना कर सकते हैं? कल्पना करें कि मुझे कैसा लगता होगा!

इसीलिए मै कहती हूँ कि **सत्संग करें – अर्थात अपने चित्त को मध्य में रखने के लक्ष्य से अन्य सहजयोगियों के साथ समय बिताएं।** *निरन्तर अपने चित्त को मध्य में बनाए रखना अत्यन्त आवश्यक है। आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् दिव्य ऊर्जा प्राप्त करके हमारे बाएं और दाएं की नाड़ियों का तनाव समाप्त हो जाता है। तनाव–मुक्त होने पर चक्र और अधिक खुलते हैं। यह घटना चक्र* (Cycle) *है। तब कुण्डलिनी के और अधिक तन्तु ऊपर की ओर उठते हैं। इस अवस्था में चित्त में मध्य में बने रहने का गुण विकसित हो जाता है।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी की डा. तलवार से बातचीत 26, 27 फरवरी 1987)

★ श्री आदिशक्ति ने किस प्रकार ब्रह्माण्ड का सृजन किया!

"जिस वातावरण को हम जानते हैं वह सारा का सारा बनावटी है। परन्तु जब आप उनके कार्य को समझ जाते हैं – पहला कार्य जो उन्होंने किया (अपनी पुस्तक में भी मैंने इसके विषय में लिखा है परन्तु मैं आपको बताना चाहूंगी) या, हम कह सकते हैं, उनकी पहली अभिव्यक्ति हमारे बाएं पक्ष पर है। यह महाकाली की अभिव्यक्ति है। तो वे महाकाली रूप में बाईं ओर को आती हैं जहाँ उन्होंने श्री गणेश का सृजन किया। श्री गणेश का सृजन उनकी पावनता, अबोधिता और मंगलमयता के कारण किया गया। ब्रह्माण्ड का सृजन करने से पूर्व आदिशक्ति को श्री गणेश का सृजन करना पड़ा। श्री गणेश का सृजन करके वे स्थापित हो जाती हैं। तत्पश्चात् वे ऊपर की ओर गईं, निःसन्देह विराट के शरीर में और वहाँ गोलाकार घूमकर दूसरी ओर दाएं पक्ष में गईं जहाँ उन्होंने सभी भुवनों – 'ब्रह्माण्ड' का सृजन किया। भुवन चौदह हैं अर्थात एक भुवन कई ब्रह्माण्डों के बराबर होता है। इन सभी चीजों का सृजन वे दाईं ओर पर करती हैं। तब ऊपर जाकर वे पुनः नीचे की ओर आती हैं और इन सभी चक्रों – आदि चक्रों या पीठों का सृजन करती हैं। नीचे आकर वे इन सभी पीठों को बनाती हैं और फिर कुण्डलिनी रूप में इनमें स्थापित हो जाती हैं यद्यपि कुण्डलिनी उनका एक हिस्सा मात्र है। बाकी का कार्य इससे कहीं अधिक है। तो यह सारी अवशिष्ट ऊर्जा – कहने का अभिप्राय ये है कि यह सारी यात्रा करने के पश्चात् वह वापिस आती है और कुण्डलिनी रूप में ऊपर जाती है। इस कुण्डलिनी और चक्रों के कारण वह शरीर के अन्दर एक ऐसा क्षेत्र बनाती हैं जिसे हम चक्र कहते हैं। ये चक्र वे सर्वप्रथम सिर में बनाती हैं, इन्हें हम चक्रों की पीठ का नाम देते हैं,

और फिर नीचे की ओर आकर उन चक्रों का सृजन करती हैं जो विराट के शरीर में हैं। जब ये सारा कार्य हो जाता है तो वे मानव का सृजन करती है, परन्तु सीधे से (Direct) *नहीं – विकास प्रणाली के माध्यम से। वे विकास प्रणाली से गुजरती हैं और इस प्रकार से उत्क्रान्ति आरम्भ होती है। जल में छोटे से जीवाणु की उत्पति होती है और उससे विकास प्रक्रिया आगे बढ़ती है। तो जब वे जल का सृजन करती हैं और ब्रह्माण्डों का सृजन करती है तो इस सारी विकास लीला को करने के लिए पृथ्वी माँ को ही चुनती हैं तथा पृथ्वी पर ही इस सूक्ष्मदर्शी अणु की रचना करती है।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबैला, इटली, 26.06.1998)

★ मादा शक्ति (Feminine Ghost) सर्पिणी के रूप में आईं और बताया कि बेहतर होगा कि आप ज्ञान के फल को चखें...

"...आदम और हौवा (Adam and Eve) *का सृजन जब हुआ तो आदिशक्ति ने सोचा कि वे भी अन्य पशु और देवदूतों की तरह से ही होंगे। इसका क्या लाभ है? उन्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि वे क्या कर रहे हैं, उनको ये भी समझ होनी चाहिए कि क्यों कर रहे हैं। ज्ञान को समझने की स्वतंत्रता उन्हें होनी चाहिए। क्यों वे मशीन की तरह से नियमित या पशुवत जीवन बिताएं? तो उन्हें प्राप्त स्वेच्छाशक्ति की शक्ति से वे सर्पिणी के रूप में आईं और आदम और हौवा को ज्ञान रूपी फल चखने को कहा। जो लोग सहजयोगी नहीं हैं उन्हें ये बात नहीं बताई जा सकती। ऐसी बात से उन्हें सदमा पहुँचेगा। परन्तु उनकी परीक्षा लेने के लिए और उन्हें ये बताने के लिए कि वे इस फल को चखें ये सर्पिणी वहाँ आई और उसने महिला को बताया, पुरुष को नहीं, क्योंकि महिला किसी भी बात को आसानी से स्वीकार कर लेती है, वह भूतों को भी स्वीकार कर सकती है, किसी मूर्खता को स्वीकार कर सकती है परन्तु हमेशा महिला ही स्वीकार करती है। पुरुष आसानी से स्वीकार नहीं करता, वह बहस करता है वाद-विवाद करता है, इसी कारण से वह शक्ति आई और महिला को बताया। ये आदिशक्ति भी वास्तव में महिला हैं, इसलिए महिलाओं के ज्यादा समीप हैं। तो ये मादा शक्ति सर्पिणी के रूप में आईं और बताया कि बेहतर होगा कि आप ज्ञान के फल को चखें। अब महिला की बारी थी कि अपने पति को इस बारे में समझाए क्योंकि ऐसा करना महिला अच्छी तरह से जानती है। कई बार तो महिलाएं गलत कार्यों के लिए भी पतियों को कायल कर देती हैं, उन्हें बिल्कुल गलत, अत्यन्त पापमय चीज़ों के लिए मना लेती हैं – आप जानते हैं कि मैकबैथ में क्या घटित हुआ! बहुत से स्थानों पर हमने देखा है कि पत्नियों ने अपने पतियों को किस प्रकार भ्रमित किया। यदि सही पत्नी हो तो पुरुषों को भ्रमित किया जा सकता है या रास्ते पर लाया जा सकता है या मुक्त किया जा सकता है। तो आदम को अपनी पत्नी पर पूरा विश्वास था और उस पर भरोसा करके आदिशक्ति (सर्पिणी) जो कि परमात्मा का मादा रूप थी, के पथ प्रदर्शन में उन्होंने ज्ञान का फल चखा। ईसा मसीह, मोहम्मद साहब या नानक साहब की झलक भर पा लेने वाले लोग इस बात को न समझ पाएंगे। वे इसे नहीं समझ सकते। उन्हें तो इनकी केवल एक झलक मात्र ही प्राप्त हुई थी। इन अवतरणों ने स्वयं*

आकर भी यदि उनसे बताया होता तो भी लोग कहते, 'वाह! ये क्या है?' उन्होंने कभी उन अवतरणों की बात न सुनी होती। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबैला, इटली, 06.06.1993)***

★ **आदिशक्ति द्वारा खेले जाने वाले खेल को परमात्मा साक्षी भाव से देख रहे हैं ...**

"...आइए अब देखें कि ये परमात्मा कौन हैं और मैं किसके विषय में बात कर रही हूँ। आरम्भ में केवल निस्तब्धता थी, पूर्ण निस्तब्धता (Silence) *। और उस निस्तब्धता में से, जब यह जागृत हुई, निस्तब्धता जागृत हुई थी, निस्तब्धता 'परब्रह्म' कहलाती है। मुझे खेद है कि मुझे संस्कृत भाषा का उपयोग करना पड़ रहा है, इसका अर्थ ये नहीं है कि ये हिन्दुत्व है। ये विचार आप अपने दिमाग से निकाल दें। भारत के लोगों ने बहुत अधिक ध्यान धारणा की। उन्हें प्रकृति से भी लड़ना नहीं पड़ा, जिस प्रकार से आज हमें इस सभागार की ओर आते हुए भी लड़ना पड़ा। वहाँ की जलवायु बहुत अच्छी है, उष्ण है। पेड़ के नीचे बैठकर भी लोग ध्यान धारणा कर सकते हैं। प्रकृति से उन्हें बहुत अधिक नहीं लड़ना पड़ा। उनके पास ध्यान धारणा करने के लिए बहुत लम्बा समय था। अपनी ध्यान धारणा में उन्होंने बहुत सी चीज़ें खोज़ निकालीं और इसके लिए संस्कृत भाषा का उपयोग किया। तो, यह परब्रह्म, या आप कह सकते हैं, यह 'पूर्ण निस्तब्धता' जागृत हुई। जागृत हुई, स्वयं जागृत हुई, जैसे हम सोते हैं और स्वयं जाग जाते हैं। तब निस्तब्धता ने सदाशिव का रूप धारण कर लिया। जब ये जागृत हुए या जब ये सदाशिव टूटने लगे, क्योंकि उनकी ऐसी इच्छा हुई, सृजन करने की इच्छा। जैसे हम कहते हैं कि पौ फटने के कारण प्रातः का सूर्य टूट रहा है, इसी प्रकार से जब सदाशिव की ये इच्छा व्यक्त होने लगी तो उनकी इच्छा 'शक्ति' बनकर उनसे अलग हो गई। जो भी कुछ मैं कह रही हूँ यह आपके लिए मात्र एक कथा है, इस पर विश्वास करने की आपको कोई आवश्यकता नहीं। परन्तु मैं एक ऐसे निष्कर्ष (बिन्दु) पर पहुँचूंगी जिस पर आप विश्वास कर सकेंगे और फिर धीरे-धीरे आप इस सिद्धान्त पर विश्वास कर सकेंगे। अभी ये आपके लिए परिकल्पना मात्र है। जब इस इच्छा ने शक्ति का रूप धारण कर लिया तो सदाशिव ने इसका उपयोग किया। यह 'शक्ति' या 'महाशक्ति' या 'आदिशक्ति' कहलाई - अर्थात आद्यशक्ति। इस आद्यशक्ति ने एक व्यक्तित्व धारण किया - एक अस्तित्व। कार्य करने के लिए इसे यह व्यक्तित्व धारण करना पड़ा।* **व्यक्ति के हृदय में यदि केवल इच्छा हो तो ये व्यर्थ है। हमें इस इच्छा को किसी रूप में परिवर्तित करना होगा नहीं तो इच्छा बनती बिगड़ती ही रहेगी।** *तो सदाशिव की इच्छा ने भी एक आकार धारण किया, एक अस्तित्व जिसे बाइबल में* 'Holy Ghost' *कहा गया और संस्कृत भाषा में 'आदि-शक्ति'। तत्पश्चात् इस इच्छा ने अपने अन्दर से दो और शक्तियों का सृजन किया-एक कार्य करने के लिए और दूसरी बनाई गई सृष्टि को सुधारने के लिए। तो इन तीन शक्तियों का सृजन हुआ और ये गतिशील हुई। जैसा हम जानते हैं, बाइबल में लोगों ने 'आदिशक्ति'* (Holy Ghost) *के बारे में बहुत कम बात की हैं। बहुत से धर्म ग्रन्थ जिन्होंने परम पिता की बातें की हैं, वे आदिशक्ति* (Holy Ghost) *के विषय में कुछ भी न कह पाए - विशेष रूप से जबकि ईसामसीह की माँ स्वयं आदिशक्ति* (Holy

Ghost) का अवतार थीं। ईसामसीह उनका जीवन खतरे में नहीं डालना चाहते थे। उन्होंने ये बात कही तक नहीं कि वे आदि-शक्ति (Holy Ghost) का अवतरण हैं, क्योंकि अगर लोगों ने उनकी माँ को सूली पर चढ़ा दिया होता तो ईसा-मसीह अपनी विध्वंसक शक्तियों के साथ खड़े हो गए होते। परन्तु नाटक खेला जाना था और वे (Mother Mary) मौन बनी रहीं। अब हमारे लिए ये आदिशक्ति (Holy Ghost) महत्वपूर्ण हैं क्योंकि परम पिता (Father) तो साक्षी मात्र हैं। वो तो आदिशक्ति द्वारा की जाने वाली लीला को साक्षी भाव से देख रहे हैं। आदिशक्ति द्वारा बनाई गई सृष्टि का वे आनन्द ले रहे हैं। सदाशिव इस लीला के साक्षी मात्र हैं और उन्हें प्रसन्न करने के लिए आदि शक्ति इस सृष्टि का सृजन कर रही हैं क्योंकि सृष्टि का सृजन सदाशिव की इच्छा थी। तो आदिशक्ति ने इन शक्तियों से, जो हमें प्राप्त हो गई हैं, सृष्टि का सृजन किया। ये शक्तियाँ इच्छा (महाकाली), क्रिया (महासरस्वती), और तीसरी पुष्टि / उत्क्रान्ति (महालक्ष्मी) शक्ति कहलाईं। इन तीनों शक्तियों ने हम मनुष्यों के सृजन के लिए कार्य किया। अब हम उत्क्रान्ति की उस अवस्था तक पहुँच गए हैं कि अब इनके विषय में बात कर सकते हैं। ईसामसीह के युग में भी आदिशक्ति (Holy Ghost) की बात नहीं की जा सकती थी। मछुआरों से हम क्या बात करते? आप मुझे बताइए कि इन गूढ़ चीज़ों के बारे में उन्हें कैसे बताया जा सकता था? वो तो एक तैयारी मात्र थी। परन्तु आप जानते हैं कि यहाँ कितनी भ्रान्ति है! स्वयं को धार्मिक कहने वाले लोगों को भी जनता पहचान नहीं सकती। धार्मिक लोग धर्मान्धि कैसे हो सकते हैं? धर्मान्धिता और धर्म तो एक दूसरे के शत्रु हैं दोनों चीज़ें एक नहीं हो सकतीं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, ब्राइटन यू.के., 15.11.1979)

★ किस प्रकार हमारा सरस्वती तत्व महासरस्वती तत्व बनता है

हिन्दु, मुसलमान, ईसाई, ब्रह्मसमाजी आदि होने की भावनाएं आधारहीन हैं। आप मानव के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। मानव रूप में ही आपका जन्म हुआ है। आप ने अपने नामों के साथ अलग-अलग ठप्पे लगा लिए हैं। न आप बंगाली हैं, न आप मराठी हैं, केवल मानव हैं। नाम पर ठप्पे लगाकर आप समस्याओं को बढ़ावा देते हैं। ये ठप्पा आपके लिए इतना महत्वपूर्ण हो जाता है कि इससे आगे आपको कुछ दिखाई नहीं देता। ये बन्धन जब तक समाप्त नहीं होता ये अन्धता नहीं जा सकती क्योंकि आप हर चीज़ को ऐसे देखते हैं मानो केवल आपका ही रास्ता ठीक है। पश्चिम में तो ये समस्या और भी अधिक है। उनके मस्तिष्क में यदि कुछ डाला जाए और बताया जाए कि वे अच्छे हैं तो आँखें बन्द करके वे उनका अनुसरण करने लगते हैं। वहाँ के आलोचक भी सभी प्रकार की कला की अन्धाधुन्ध आलोचना करते हैं। एक आलोचक दूसरे आलोचक को नकारता है, आपके अन्दर से, आपके मस्तिष्क से कुछ भी नहीं निकलता। बाहर के लोग जो आपके दिमाग में भर देते हैं वही आप स्वीकार कर लेते हैं। सभी ने ठप्पे लगाए हुए हैं। इसके द्वारा अहं बढ़ता है और व्यक्ति सोचता है कि उसका व्यक्तित्व अत्यन्त महान है और वह अद्वितीय है। सामूहिकता से हटकर वह व्यक्ति मात्र बन जाता है। सच्चाई ये है कि हम सब एक हैं, एक विराट, एक पूर्णत्व। जब आप इसके विपरीत चलते हैं तो

व्यक्तिवादी बन जाते हैं तथा सामूहिकता से और अधिक दूर हो जाते हैं। यह ठीक है कि एक पत्ता दूसरे पत्ते से भिन्न होता है परन्तु सभी पत्ते एक ही पेड़ पर होते हैं, वे सभी विराट के अंग-प्रत्यंग होते हैं। जब हम स्वयं को सामूहिकता से अलग कर लेते हैं तो सरस्वती तत्व महासरस्वती तत्व नहीं बनता।

महासरस्वती तत्व में जब आप रहते हैं तो देखने लगते हैं कि आप विराट हैं और हम सब एक हैं। कलाकार जब कोई सृजन करता है तो व्यक्ति उसे हृदय से स्वीकार करता है। सरस्वती का कोई भी कार्य जब हम करते हैं तो यह परमात्मा को समर्पित होना चाहिए। जब ऐसी भावना होगी तो वह कलाकृति अमर हो जाएगी। परमात्मा को समर्पित की गई सभी कविताएं, संगीत, भजन एवं कलाकृतियाँ आज भी जीवित हैं। आधुनिक फिल्म संगीत आता है और चला जाता है परन्तु कबीर और ज्ञानेश्वर की कृतियाँ आज भी याद की जाती हैं। अपने आत्म साक्षात्कार के कारण उन्हें महासरस्वती शक्ति प्राप्त हो गई थी। उसके प्रकाश में उन्होंने जो भी सृजन किया वह अद्वितीय बन गया। ये ऐसी रचनाएं थीं जिन्होंने विश्व को एक सूत्र में बाँधा। व्यक्ति को केवल सरस्वती तत्व पर ही नहीं चलते रहना चाहिए क्योंकि यह व्यक्ति को सीमित करता है। सरस्वती तत्व से उसे महासरस्वती तत्व तक पहुँचना चाहिए। सरस्वती तत्व यदि बीज हैं तो महासरस्वती पेड़ है। इस बीज को जब तक आप महासरस्वती नहीं बनाते तब तक आप महालक्ष्मी से एक रूप नहीं हो सकते। महालक्ष्मी के वरदान से आप आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करते हैं। ये तीनों, अर्थात महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली आज्ञा चक्र पर मिलती हैं। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, कलकत्ता, 03.02.1992)***

★ हृदय मस्तिष्क के चंगुल में कैसे फँस जाता है? आध्यात्मिकता और दिव्यत्व किस प्रकार प्राप्त करें

...एक अन्य तरीका ये है कि आप आशीर्वादों को देखने लगें और ये भी देखें कि शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से आपको कैसा लगता है। बहुत से लोग बुद्धि से पहचानते हैं, परन्तु पहचान जब तक हृदय से नहीं होगी ये पहचान नहीं है। **हृदय सात चक्रों के सात परिमलों से घिरा हुआ है और इसके अन्दर आत्मा निवास करती है। आपके सिर के शिखर पर सर्वशक्तिमान सदाशिव का निवास है। कुण्डलिनी जब इस बिन्दु को छूती है तो आपकी आत्मा प्रसारित होने लगती है और आपके मध्य नाड़ी तन्त्र पर कार्य करने लगती है क्योंकि स्वतः चैतन्य लहरियाँ आपके मस्तिष्क में प्रवाहित होने लगती हैं और आपकी नाड़ियों को ज्योतिर्मय करती हैं। परन्तु अभी भी हृदय में पहचान नहीं आई। इसके बिना ही आप शीतल लहरियाँ महसूस करने लगते हैं, दूसरों की कुण्डलिनी उठा सकते हैं, लोगों को रोगमुक्त कर सकते हैं तथा और भी बहुत से कार्य कर सकते हैं। परन्तु अभी भी यह पहचान नहीं है क्योंकि पहचान तो आपके हृदय की मानसिक गतिविधि है।** *हृदय मानसिक गतिविधि कैसे कर सकता है? ये एक अन्य समस्या है जिसका आपको सामना करना पड़ता है - हृदय की मानसिक गतिविधि। मान लो आप ईसाई परिवार*

में जन्में ईसाई हैं। ईसा मसीह का फोटो देखते ही आपके हृदय में कुछ होने लगता है। आप यदि हिन्दु हैं तो श्रीराम का फोटो देखते ही एक दम आपका हृदय इसे पहचानता है।

परन्तु एक ऐसे व्यक्ति को पहचानना बहुत कठिन है जो आपके साथ रह रहा है, और आप तो अपनी मस्तिष्क की लहरों के सिरे पर बैठे हुए हैं। **हृदय की गहनता में जाने के लिए क्या किया जाना चाहिए? हृदय के माध्यम से दिमाग के कार्य को किस प्रकार किया जा सकता है? आपको याद रखना होगा कि हृदय पूरी तरह से मस्तिष्क से जुड़ा हुआ है। हृदय जब रुक जाता है तो मस्तिष्क भी रुक जाता है। सारा शरीर बेकार हो जाता है।** *हृदय की मानसिक गतिविधि को इस प्रकार से समझना चाहिए कि ज्यों ही आपको कोई खतरा दिखाई पड़ता है बिना कुछ सोचे, प्रतिक्रिया स्वरूप आपका हृदय जोर से धड़कने लगता है और अधिक रक्त संचार करने लगता है। यह प्रतिवर्ती क्रिया* (Reflex Action) *है। ये गतिविधि होती है क्योंकि ये आप में अन्तर्जात है। कोई भी खतरा देखते ही आपका अनुकम्पी नाड़ी तन्त्र गतिशील हो उठता है और आपको भय का आभास हो जाता है। इसके बारे में आप कुछ करना चाहते हैं, सोचते नहीं रहते, दौड़ पड़ते हैं। मध्य नाड़ी तन्त्र पर ये भय बना हुआ है। इसकी प्रतिक्रिया तथा उत्तर भी अन्तर्रचित है। परन्तु आध्यात्मिकता के प्रति प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति अभी नहीं हुई है। इसकी अभिव्यक्ति होगी। अपने भूतकाल से आपने सीखा है कि इस चीज़ से डरना है, उस चीज़ से डरना है। अनुभव से धीरे-धीरे आपके अन्दर प्रतिवर्ती प्रतिक्रिया की रचना होती है ताकि आप अपनी रक्षा करने का प्रयत्न करें। अपने हृदय में इसकी रचना करने के लिए आपको क्या अनुभव होना चाहिए। ये आपके अपने दिव्यत्व और आध्यात्मिकता का अनुभव है। एक बार जब आपमें यह अनुभव विकसित होने लगता है तब आप जान पाते हैं कि आप दिव्य व्यक्ति हैं।*

जब तक आप पूर्ण रूपेण विश्वस्त नहीं हैं कि आप दिव्य व्यक्ति हैं तो चाहे जितनी श्रद्धा आपमें हो यह पहचान अधूरी है क्योंकि मुझे पहचानने वाला व्यक्ति अन्धा व्यक्ति है। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, Ischia, Italy, 05.05.1991)***

★ पहली बार कुण्डलिनी जागृति के समय इसके केवल एक या दो तन्तु ही बाहर आते हैं

"हम कहते हैं कि ये शुद्ध इच्छा है परन्तु हमें शुद्ध इच्छा के अर्थ का ज्ञान नहीं है। इसका अर्थ है आपकी पावन इच्छा जिसमें कामुकता, लालच आदि का कोई स्थान नहीं। वह शक्ति स्वयं आपकी माँ है जो आपकी त्रिकोणाकार अस्थि में स्थापित है। वह आपकी अपनी माँ है। आपके बारे में वो सभी कुछ जानती हैं। ये टेपरिकार्डर की तरह है। वो आपके विषय में सभी कुछ जानती हैं। वे पूर्ण ज्ञान हैं क्योंकि वे अत्यन्त पावन हैं। और जिन चक्रों को भी वे छूती हैं उनकी कमियों के बारे में वे पहले से जानती हैं। अतः वे पूरी तरह से तैयार हैं और पूरी तरह से व्यवस्था करती हैं कि उनकी जागृति से आपको कोई तकलीफ न हो। कोई चक्र यदि संकुचित हो तो वे प्रतीक्षा करती हैं और उस चक्र को खोलते हुए धीरे-धीरे ऊपर जाती हैं।

ये कुण्डलिनी आद्य-शक्ति हैं जो आपके अन्दर प्रतिबिम्बित हैं - आपके अन्दर, एक मानव के अन्दर यह बहुत सारे ऊर्जा तन्तुओं जैसी होती है। तो ये रस्सी की तरह से है और ये सारी शक्तियाँ इस कुण्डलिनी में गुँथी हुई हैं। मनुष्य के अन्दर ये तन्तु तीन × सात अर्थात इक्कीस - घात 108 (Raised to power 108) (3 x 7 = 21^{108}) *। परन्तु जब कुण्डलिनी उठती है तो इनमें से एक या दो तन्तु ऊपर उठते हैं और तालू अस्थि क्षेत्र का भेदन करते हैं। केवल एक या दो, क्योंकि इन्हें सबसे अन्दर की सूक्ष्म नाड़ी, जिसे ब्रह्म नाड़ी कहते हैं, में से गुजरना होता है। यह सब पूरी तरह से कुण्डलाकार है क्योंकि कुण्डलिनी भी कुण्डल रूप में है और ये नाड़ियाँ भी, इसी की तरह से कुण्डल के आकार में हैं। तो अन्तर्तम* (Inner Most) *नाड़ी 'ब्रह्म नाड़ी' है। बाह्यतम* (Outer Most) *दाईं ओर की (पिंगला) नाड़ी है और दूसरी अन्तर्तम नाड़ी (ईड़ा) है।*

अत: ब्रह्म नाड़ी के माध्यम से कुण्डलिनी उन तन्तुओं को भेजने लगती है। इससे चक्र शान्त होते हैं। चक्रों के शान्त होने से अनुकम्पी नाड़ी तन्त्र भी शान्त होने लगता है और जब कुण्डलिनी के ये तन्तु आज्ञा चक्र पर पहुँचते हैं तो आपकी आँखें शान्त होने लगती हैं, पुतलियाँ फैलने लगती हैं और आपकी आँखें मेरी आँखों की तरह से अत्यन्त काली और पूरी तरह से शान्त हो सकती हैं।

अत: आप आसानी से देख सकते हैं कि किसी व्यक्ति की कुण्डलिनी कहाँ तक पहुँचती है। यदि इसने आज्ञा का भेदन कर दिया है तो आँखों की पुतलियाँ पूरी तरह से फैल जाएंगी और आँखों में चमक आ जाएगी। इसके पश्चात् कुण्डलिनी सहस्रार में प्रवेश करती है।

अब यह प्रेम, करुणा, ज्ञान एवं चित्त का पूर्णत: पावन प्रकाश है। अब इस शक्ति में तीनों चीज़ें हैं। हमें बहुत सी ऊर्जाओं का ज्ञान है जैसे विद्युत ऊर्जा, प्रकाश ऊर्जा के बारे में भी हम जानते हैं। कई अन्य ऊर्जाओं का भी हमें ज्ञान है। परन्तु ये सभी ऊर्जाएं सोच नहीं सकतीं। समायोजन नहीं कर सकतीं, अपने आप ये कार्य नहीं कर सकतीं। हमें इनका संचालन करना पड़ता है। परन्तु यह शक्ति, स्वयं, जीवन्त शक्ति है और अपना संचालन करना जानती है। ये सोचती है। किसी बीज को यदि आप अंकुरित होते हुए देखें तो पाएंगे कि बीज के सिरे पर एक छोटा-सा अणु है जो ये जानता है कि पृथ्वी के नरम हिस्से में कैसे पेंठना है और यदि कोई पत्थर आ जाए तो किस प्रकार उसके गिर्द-घूमकर अपने स्रोत का रास्ता खोजना है। जिस प्रकार ये चलता है उसे देखकर मैं कहूंगी कि उसमें भी एक छोटी सी कुण्डलिनी होती है। परन्तु आपके अन्दर तो अथाह शक्तिशाली कुण्डलिनी विद्यमान है।

तो आपके अन्दर करुणा का भण्डार है जिसे आत्मा द्वारा ज्योतिर्मय किया जा सकता है। आपमें प्रेम, करुणा और ज्ञान का भण्डार है और क्षमा का सागर है। लोग जब आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करते हैं तो उन्हें इस बात की समझ नहीं होती कि अब उन्हें उन्नत होना है। **वे उन्नत क्यों नहीं होते? क्योंकि वो इन शक्तियों के लिए याचना नहीं करते।** *कोई साक्षात्कारी व्यक्ति यदि कहे कि ''मुझे अधिक करुणा प्राप्त करनी है, मेरी करुणा ठीक नहीं है, अन्य लोगों के*

लिए मेरी भावना ठीक नहीं है, मेरी उदारता ठीक नहीं है, मैं अन्य लोगों का अनुचित लाभ उठा रहा हूँ, मैं उनके प्रेम का अनुचित लाभ उठा रहा हूँ'' तो ये शक्ति चलायमान हो जाती है और आपको प्रेम एवं करुणा का महान आयाम प्रदान करती है। परन्तु यदि आप अपनी चेतना में उन्नत नहीं होना चाहते तो वह कहती है, ''ठीक है, ये अधपका सहजयोगी है। इसे ऐसे ही रहने दो।'' तब वह आपके भण्डार में पड़ी शक्ति आपको मुहैया नहीं कराती। मैंने आपको बताया है कि तीन गुणा सात = इक्कीस-घात 108 ($3\times7=21^{108}$)।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, जर्मनी, 11 अगस्त 1991)

★ सभी वायरस मृत पौधे या मृत पशु (जीव) हैं हो सकता है, यह बहुत सूक्ष्म हो, जो विकास प्रक्रिया के दौरान संचरण (Circulation) से बाहर हो गए हैं।

"...तीसरी प्रकार की बीमारियाँ मनोदैहिक हैं। मनोदैहिक रोगियों को शरीर की अपेक्षा मन (Psyche) की समस्याएं अधिक होती हैं। कैंसर मनोदैहिक रोग है। सभी वायरस (विषाणु) मृत पौधे या मृत पशु (जीव) होते हैं, हो सकता है, ये बहुत सूक्ष्म हो जो विकास प्रक्रिया के दौरान संचरण से बाहर हो गए हैं। इनका निवास सामूहिक अवचेतन कहलाने वाले क्षेत्र में हैं। चिकित्सक एक विशेष सूझ-बूझ तक पहुँचे हैं और वो कहते हैं कि सदमा पहुँचने पर व्यक्ति को कैंसर होता है और ये आक्रमण बाईं ओर से आता है—उस क्षेत्र से जिसका निर्माण हमारे अन्दर सृजन के समय हुआ था। यह वही सामूहिक अवचेतन क्षेत्र है जहाँ सभी मृत अस्तित्व मौजूद हैं। तो मृत मानव (आत्माएँ) भी हमारे आस-पास लटक रहे हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, चिकित्सा सम्मेलन, मास्को रूस, 29.06.1990)

★ ...बाईं नाभि अत्यधिक उत्तेजित हो जाने पर रक्त कैंसर हो सकता है

"...पुरुषों के इस दुराचरण के परिणामस्वरूप महिलाओं में असुरक्षा की भावना आ जाती है और इस कारण से पुरुष कष्ट उठाते हैं और महिलाएँ भी। जो पुरुष अपनी पत्नी की उपेक्षा करता है और उपेक्षापूर्वक उससे व्यवहार करता है परिणामस्वरूप उसे रक्त कैंसर हो जाएगा तथा जो महिला इस प्रकार से व्यवहार करती है और अपने पति से दुव्यर्वहार करती है उसे अस्थमा हो जाएगा या बहुत ही भयंकर किस्म का स्कलरोसिस (Sclerosis) रोग हो जाएगा—मस्तिष्क रोग हो सकता है, पक्षाघात हो सकता है, पूरे शरीर में निर्जलन (Dehydration) रोग भी हो सकता है...क्योंकि बाईं नाभि अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हर समय इधर-उधर दौड़कर, उछल-कूद करके या उत्तेजित रहने से बाईं नाभि उत्तेजित हो जाती है और व्यक्ति को रक्त कैंसर हो सकता है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, सेन्टजार्ज, स्विट्जरलैण्ड, 14.08.1988)

★ पूरा ब्रह्माण्ड कुण्डल की तरह से चल रहा है

"अब, कुण्डलिनी इस प्रकार से चलती है, उदाहरण के रूप में हृदय से ये इस प्रकार ऊपर जाती है। ये साढ़े तीन वलय हैं। साढ़े तीन लपेटों का एक कुण्डल यदि आप बनाएं और इसे बीच से काटें तो इसके सात हिस्से बन जाएंगे-साढ़े तीन लपेटों के। आप एक कुण्डल लें...

..... ये हृदय से चलता है। एक......दो......तीन...... और आधा जो मूलाधार पर समाप्त होता है। अब इसे बीच से काटें तो आपको सात टुकड़े मिलेंगे। क्या आप मेरी बात समझ पाए? और इस प्रकार से हमारे अन्दर एक के बाद एक ये सभी चक्र हैं।

तो स्वयं कुण्डलिनी ने पृथ्वी माँ पर अपना प्रतिनिधित्व किया और अब इसका पुनर्समायोजन (Readjustment) *हुआ है, हमारे अन्दर इसका समायोजन इस प्रकार से हुआ है कि इसने इस पिण्ड, इस शरीर का अपने ही आकार में सृजन किया है। परन्तु अब भी यह अवशिष्ट* (Residual) *शक्ति है क्योंकि अभी भी यह गतिशील नहीं है, ये जागृत नहीं हुई है। अतः अब भी यह अवशिष्ट है। परन्तु जैसे मैंने आपको बताया, इसी कुण्डलिनी ने इस प्रकार से सात चक्रों का सृजन किया है।*

किसी समय पर पृथ्वी को इसी प्रकार से स्थापित किया गया था, और इसी प्रकार से बनाया गया था। परन्तु बाद में इसका परिवर्तन हुआ। बिना आवश्यक चिन्ह दर्शाए यह इसकी व्याख्या नहीं कर सकती। आप कह सकते हैं कि "श्रीमाताजी किस प्रकार आस्ट्रेलिया वहाँ है, भारत वहाँ है, आदि-आदि?" परन्तु यदि आप कुण्डल को इस प्रकार से जाते हुए देखें तो यह अंकुरित होता है इसका अपना व्यक्तित्व एक बिन्दु पर पहुँचता है जहाँ ये अटपटा लगता है, परन्तु यह कुण्डल रूप में अन्दर स्थापित किया गया है। ये पूरा विश्व भी कुण्डल की तरह से चल रहा है, पूरा ब्रह्माण्ड कुण्डल की तरह से चल रहा है। एक उत्थान है, उत्क्रान्ति भी आप इसी प्रकार से पा सकते हैं। ये पृथ्वी यदि केवल गोल-गोल ही घूमती रहती तो इसका विकास न हो पाता। ऊपर जाने (उत्क्रान्ति) के लिए यह गोल घूमती है.....परन्तु इसका उत्थान हो रहा होता है।

मुझे विश्वास है कि विज्ञान भी शीघ्र ही इस तथ्य को खोज निकालेगा कि पूरा ब्रह्माण्ड कुण्डल की तरह से चल रहा है। मैं नहीं जानती कि इस खोज में विज्ञान कहाँ तक पहुँचा है। क्या इस प्रकार की कोई खोज हो चुकी है?"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, बिर्मिंघम, इंग्लैण्ड, 20.04.1985)

★ भवसागर के चहुँ ओर घूमने वाला स्वाधिष्ठान

"दायां पक्ष हमारी बुद्धि एवं विचारों आदि की देखभाल करता है और बायाँ भाग हमारे भावनात्मक पक्ष का। मैं तुम्हें एक चक्र के बारे में बताऊंगी, स्वाधिष्ठान चक्र के बारे में, जो भवसागर के इर्द-गिर्द घूमता है। भौतिक शरीर के अन्दर यही चक्र 'महाधमनी चक्र' को बनाता है। जब हम सोचते हैं तो इन विचारों में ऊर्जा का उपयोग होता है। हर समय हम अपने मस्तिष्क का उपयोग करते हैं, हमारे मस्तिष्क की शक्ति खर्च होती रहती है। ये केन्द्र इस कमी को पूरा करता है। आप जानते हैं कि मस्तिष्क चर्बी के कणों से बना है। ये चक्र पेट की चर्बी को मस्तिष्क के उपयोग के लिए परिवर्तित करता है। यही कारण है कि बहुत ज्यादा सोचने वाले लोग असन्तुलन में चले जाते हैं। भविष्यवादी लोग हर समय योजनाएं बनाने में लगे रहते हैं। ये बेचारा चक्र, जिसे ज़िगर, अग्न्याशय, प्लीहा, गुर्दे, बड़ी आँत की भी देखभाल करनी

होती है, हड़बड़ा जाता है और परिणामस्वरूप भविष्यवादी व्यक्ति को सर्वप्रथम ज़िगर की समस्या हो जाती है। मेरे विचार से चिकित्सा विज्ञान को ज़िगर का कोई ज्यादा ज्ञान नहीं है। यह शरीर का अत्यन्त महत्वपूर्ण अवयव है। शरीर के सारे ज़हर को सोखकर ज़िगर इसे ऊर्जा में परिवर्तित करने का कार्य करता है। जब आप सोचते हैं तो ये ऊर्जा रक्त में प्रवाहित होती है। परन्तु जब व्यक्ति बहुत अधिक सोचता है, योजनाएं बनाता है तो ज़िगर बौखला जाता है और इसे समझ नहीं आता कि किस प्रकार अपना कार्य करूं! ऐसे लोगों में जिगर की उपेक्षा हो जाती है। सभी कुछ पेट में भरा हुआ है। व्यक्ति के पेट में गर्मी है, ये गर्मी दाएं हृदय के माध्यम से ऊपर की ओर बढ़ने लगती है और इससे जो समस्या उत्पन्न होती है वह अस्थमा (दमा रोग) कहलाती है। दाएं हृदय से ये गर्मी गले में पहुँचती है और वहाँ इस तरह की ठण्ड पैदा करती है कि सुबह-सुबह आप बीस बार छींकते हैं। ज़िगर दो प्रकार के होते हैं - आलसी ज़िगर और दूसरा अवांछित रूप से गतिशील। मैं अत्यधिक गतिशील ज़िगर की बात कर रही हूँ जिसके कारण व्यक्ति को जुकाम, छींके, क्रोध, तनाव, अम्लता (Acidity) *आदि की समस्याएं हो जाती हैं। तब ये गर्मी, बहुत छोटी आयु में ही यह हृदय तक पहुँच जाती है। मान लो लड़के टेनिस खेलते हैं या कोई कठोर वर्जिश करते हैं और वो शराब आदि भी पीते हैं तो इसका दुष्प्रभाव उन पर हो सकता है जिसके कारण युवा-अवस्था में ही उन्हें भयंकर हृदयाघात हो सकता है। यही गर्मी जब गले में पहुँचती है तो हमें गले के रोग, आवाज़ की कर्कशता आदि समस्याएं हो सकती हैं। जब ये गर्मी नीचे अग्न्याशय* (Pancreas) *पर पहुँचती है तो ज़िगर से ऊर्जा प्राप्त न होने के कारण यह मुसीबत में फँस जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को शक्कर रोग हो जाता है। बहुत ज्यादा सोचने से शक्कर रोग होता है। लोग सोचते हैं कि अधिक शक्कर खाने से शक्कर रोग होता है। महाराष्ट्र में लोग चाय में इतनी चीनी डालते हैं कि चम्मच गड़ जाए, परन्तु गाँवों में सादा जीवन-यापन करने वाले और कम सोचने वाले लोगों को शक्कर रोग नहीं होता। वे सादा जीवन जीते हैं और कल के विषय में नहीं सोचते। अपनी कुर्सियों पर बैठे रहने वाले, सोचने और योजनाएं बनाने वाले तथा चिन्ता करने वाले लोगों को शक्कर रोग होता है।* ***(परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी, दिल्ली, 25.03.1993)***

★ ...मस्तिष्क विराट है, हृदय शिव हैं और जिगर ब्रह्मदेव हैं

*"...आयोजन का सर्वोत्तम भाग, जो बनाया गया है, ये है कि चेतना को ऊर्ध्व अवस्था में (*Vertical*) रखा गया है। अवचेतन और अतिचेतन की तरह। अतिचेतन आपके दाईं ओर है और अवचेतन बाईं ओर और बीच में मार्ग छोड़ा हुआ है। ये सुषुम्ना मार्ग है। यह महालक्ष्मी मार्ग है। ये वो मार्ग है जो आपको विराट की अवस्था में, आपके मस्तिष्क की अवस्था में पहुँचाता है।*

अत: अब तीन चीजों का मिश्रण कार्यान्वित होता है। मस्तिष्क विराट है, हृदय शिव हैं और ज़िगर ब्रह्मदेव। ये तीनों शक्तियाँ मौजूद हैं। परन्तु जिस समय आप आत्मसाक्षात्कार पाते हैं तो आपका मस्तिष्क श्री शिव के समक्ष समर्पित हो जाता है—शिव तत्व के प्रति जो की

आत्मा है। मस्तिष्क समर्पित हो जाता है, किसी विवशता आदि के कारण नहीं, परन्तु आत्मा की शक्ति को आत्मसात करने के लिए, मस्तिष्क पूर्णत: आत्मा के समक्ष समर्पित हो जाता है, ताकि आत्मा मस्तिष्क को ज्योतिर्मय कर सके। मस्तिष्क का ज्योतिर्मय होना ही आपको सारी सूझ-बूझ प्रदान करता है। आपके मस्तिष्क को समझाने के लिये बहुत सी दिव्य घटनायें घटित होती हैं। लोगों को आशीर्वाद मिलते हैं—एक बार, दो बाद, तीन बार—तब वो हैरान होते हैं और मस्तिष्क सोचने लगता है—"किस प्रकार मैंने ये आशीर्वाद प्राप्त किया, मेरे साथ यह कैसे घटित हुआ, मेरा अन्तर्परिवर्तन किस प्रकार हुआ?" तो धीरे-धीरे वे अपने हृदय पर भरोसा करने लगते हैं, अर्थात् अपनी आत्मा पर विश्वास करने लगते हैं, अपनी श्रद्धा पर विश्वास करने लगते हैं। और इस प्रकार बिना किसी इच्छा के, बिना किसी माँग के, बिना किसी बन्धन के, केवल तादात्म्य में, भक्ति होने लगती है। क्योंकि हम कह सकते हैं, मस्तिष्क का समन्वय हृदय से हो गया है, अब ब्रह्मदेव भी समर्पित हो जाते हैं। परिणामस्वरूप क्या होता है: आपका जिगर मस्तिष्क के समक्ष समर्पित हो जाता है। जब ऐसा होता है— जब आपका जिगर मस्तिष्क के सम्मुख समर्पित होता है तो जो भी कार्य आप करते हैं वह प्रकाशरंजित होता है। जो भी कुछ आप करते हैं: चाहे आप गाते हैं, चाहे आप सरकारी नौकरी करते हैं, जो चाहे करते हों, जो भी कुछ आप अपने मस्तिष्क से करते हैं, स्वाधिष्ठान या ब्रह्मदेव के माध्यम से कोई भी कार्य, वह प्रकाशरंजित कार्य होता है।

क्योंकि अब मस्तिष्क, जो ज्योतित हो चुका है, सर्वव्यापक शक्ति से जुड़ गया है, तो जो भी कार्य आप कर रहे हैं, जो भी आपके विचार हैं, वे पूर्णत: ज्योतित हैं अर्थात् आप उन्हें प्राप्त करते हैं। प्रबुद्ध मस्तिष्क जो कुछ भी सोचता है, जो भी कुछ यह सोच रहा होता है, वह प्राप्त भी कर रहा होता है—दोनों चीजें साथ-साथ होती हैं। ये समझने की चीज है कि प्रबुद्ध व्यक्ति के पास कुछ भी प्राप्त करने की शक्ति होती है। परन्तु हमेशा उसकी इच्छा परमेश्वरी (दिव्य) इच्छा होगी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यूजर्सी, यू.एस.ए., 02.10.1993)

★ ...श्री गणेश यदि हमें बुद्धि प्रदान करते हैं तो श्री हनुमान हमें सद्सद्विवेक (Conscience) प्रदान करते हैं

"तो अब, जहाँ भी और जब भी आप विद्युत-चुम्बकीय शक्ति को कार्य करते हुए देखते हैं तो ऐसा श्री हनुमान के आशीर्वाद से होता है। वे ही विद्युत चुम्बकीय शक्तियों का सृजन करते हैं। अत: अब हम देख सकते हैं कि श्री गणेश के अन्दर चुम्बकीय शक्तियाँ है, वे चुम्बक हैं, उनमें चुम्बकीय शक्ति है। तो हम कह सकते हैं कि विद्युत चुम्बकीय शक्ति भौतिक पक्ष में श्री हनुमान की शक्ति है, परन्तु पदार्थ की अवस्था से वे मस्तिष्क तक जाते हैं। अत: स्वाधिष्ठान से उठकर वे मस्तिष्क तक जाते हैं, मस्तिष्क के भिन्न पक्षों में सहसम्बन्धों का सृजन करते हैं। तो वे हमें कितना कुछ देते हैं? कहने से अभिप्राय है कि हम कह सकते हैं, यदि श्री गणेश हमें बुद्धि प्रदान करते हैं तो श्री हनुमान हमें सोचने की शक्ति देते हैं। वो हमारी

इस बात से रक्षा करते हैं कि हम बुरी बातें न सोंचे। हम कह सकते हैं कि यदि श्री गणेश हमें बुद्धि प्रदान करते हैं तो श्री हनुमान हमें सद्सद्विवेक देते हैं।

मुझे आशा है कि आप दोनों में अन्तर समझते हैं। समझदारी में सद्सद्विवेक की इतनी अधिक आवश्यकता नहीं होती क्योंकि आप बुद्धिमान हैं, जानते हैं क्या अच्छा है क्या बुरा। परन्तु व्यक्तित्व में सद्सद्विवेक आवश्यक है क्योंकि उसे नियन्त्रित किया जाना है, और नियन्त्रण श्री हनुमान से आता है। मानव के अन्दर यह सद्सद्विवेक है। यह सद्सद्विवेक जो श्री हनुमान हैं, उन्हीं का सूक्ष्मरूप है। यही हमें सद्सद्विवेक बुद्धि प्रदान करता है अर्थात् सत्य-असत्य में भेद समझने के लिए बुद्धि। तो यह सद्सद्विवेक बुद्धि हमें श्री हनुमान जी प्रदान करते हैं।

सहजयोग प्रणाली में यदि हम कहते हैं कि श्री गणेश सर्वप्रदायक हैं, वे अध्यक्ष हैं अर्थात् जैसे मैं कहती हूँ कि वे विश्वविद्यालय के कुलपति हैं। वही हमें प्रमाणपत्र दिए चले जाते हैं—"अब आपने ये चक्र पार कर लिया है, अब वो चक्र, अब वो चक्र।" तथा वे ये जानने में हमारी मदद करते हैं कि हमारी अवस्था क्या है। तो श्री गणेश हमें 'निर्विचार समाधि' प्रदान करते हैं तथा 'निर्विकल्प समाधि'। वे हमें ये सब प्रदान करते हैं और आनन्द भी देते हैं।

*परन्तु ये समझना कि, "ये अच्छा है, ये हमारे हित के लिए है"—दिमागी सूझ-बूझ—हमें श्री हनुमान से आती है। पश्चिमी लोगों के लिए यह बहुत आवश्यक है, बुद्धिपरस्त होना-अन्यथा वो समझेंगे ही नहीं। यदि यह बुद्धि को सन्तुष्ट नहीं करेगा तो वे अमूर्त (*Abstract*) में आ ही न पाएँगे। इसे बुद्धिपरस्त होना पड़ता है। अतः क्या अच्छा है और क्या बुरा, यह सूझ-बूझ हमें श्री हनुमान प्रदान करते हैं। उनके बिना, चाहे आप सन्त भी बन जाएँ—निःसन्देह आप सन्त हैं और आप सन्तपन का आनन्द लेंगे— परन्तु क्या यह सन्तपना ठीक है कि आप हिमालय पर रहें या यह सन्तपना कि आप लोगों के पास जा-जाकर उन्हें आत्मसाक्षात्कार दें? यह सारी छानबीन; यह विवेकबुद्धि, यह सद्सद्विवेक बुद्धि, सारा पथ प्रदर्शन, ये सारी सुरक्षा, हमें श्री हनुमान प्रदान करते हैं।"* ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, Schwetzingen, Germany, 31.08.1990)***

★ मेरे मस्तिष्क से जो भी चीज गुजरती है वे उसे संभाल लेते हैं, और कार्य हो जाता है।

*"ईसाई मत या कहना चाहिए कि बाइबल के अनुसार वे देवदूत हैं, गैबरील (*Gabriel*) नाम के देवदूत। अब गैबरील ही सन्देश लाए थे क्योंकि वे हमेशा मरिया के दूत हैं, और आश्चर्य की बात है कि जो शब्द उन्होंने उपयोग किए वो थे (*Immaculata Salve*) "निर्मला साल्वे"। ये मेरा नाम है, मेरा पहला नाम निर्मला है अर्थात् '*Immaculata*' और कुल नाम 'साल्वे' है। उन्होंने ये शब्द उनसे कहे और आज भी जब मुझे उपहार देने की बात आई तो उन्होंने एक चाय सैट और रात्रि भोज सैट खोजा जिसका नाम 'मरिया' है। अतः, मरिया को जीवन पर्यन्त हनुमान के साथ बहुत कुछ करना पड़ता है। इसका अर्थ ये है कि मरिया महालक्ष्मी हैं। महालक्ष्मी सीता बनी और फिर राधा रूप में आईं। श्री हनुमान को*

उनकी सेवा के लिए वहाँ होना पड़ता है। यही कारण है कि कभी-कभी लोग कहते हैं, "श्रीमाताजी आपको कैसे पता चला? श्रीमाताजी, आपने किस प्रकार सन्देश भेजा? श्रीमाताजी, किस प्रकार आपने यह कार्यान्वित किया?" क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यह श्री हनुमान की जिम्मेदारी है। वो ये कार्य करते हैं। जो भी चीज मेरे मस्तिष्क से गुजरती है, वो उसे सम्भाल लेते हैं और कार्य हो जाता है, क्योंकि जैसा मैंने आपको बताया उनकी पूरी व्यवस्था बहुत अच्छी तरह से योजनाबद्ध है। ये सारे सन्देश, ये कहाँ से पहुँचते हैं?"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Schwetzingen, Germany, 31.08.1990)

★ विश्व निर्मला धर्म क्या है?

"अपने शाम के ध्यान में आपको पूछना चाहिए, ''मैंने सहजयोग के लिए क्या किया?" केवल एक यही प्रश्न। मेरे जैसा या श्री कृष्ण जैसा व्यक्ति ये भी नहीं सोचता कि हम कुछ कर रहे हैं। तो हम क्या पूछ सकते हैं? मैं यदि अपने बारे में विश्लेषण करूं या सोचूं तो मैं खो जाती हूँ। ये मेरी शक्ति से परे है। परन्तु बेहतर होगा कि आप अपने आप को समझें। **जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं सोचती हूँ कि जब तक मेरा जीवन है, मैं नहीं जानती – हो सकता है मैं हमेशा जीवित रहूँ, मैं हमेशा भी जीवित रह सकती हूँ, परन्तु जब तक मैं पृथ्वी पर हूँ, मैं ये देखूंगी कि सहजयोग पूर्णतः स्थापित हो गया है। आप लोगों से मेरा ये वचन है।** *'संस्थापनार्थाय:', धर्म को पुन: स्थापित करने के लिए परमात्मा बार-बार अवतरित होते हैं, केवल धर्म ही नहीं, विश्व निर्मला धर्म, जो मानव रचित सामान्य धर्मों से कहीं अधिक ऊँचा धर्म है। विश्व निर्मला धर्म बहुत कम समय में संसार में स्थापित हो जाएगा।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Ipewich, U.K. 19.08.1990)

★ तनाव क्या है?

"आधुनिक युग में एक ऐसी चीज़ है जो तनाव (Tension) *कहलाती है। इससे पूर्व कभी इसका अस्तित्व न था। लोग कभी तनाव की बात नहीं किया करते थे, आज हर आदमी कहता है मैं तनाव में हूँ। आप मुझे तनाव दे रहे हैं।''* **तनाव क्या है? ये मेरे अवतरण के कारण है। तालू क्षेत्र मेरे बारे में जानना चाहता है। ज्यों-ज्यों सहजयोग फैल रहा है कुण्डलिनी अन्य लोगों में उठने का प्रयत्न कर रही है क्योंकि आप लोग यन्त्र (वाहिकाएँ) बन गए हो। जहाँ भी आप जाते हैं चैतन्य- लहरियों का संचार करते हैं और ये चैतन्य लहरियाँ कुण्डलिनी को चुनौती देती है या संदेश देती हैं और कुण्डलिनी बहुत से लोगों में उठती है। पहचान की कमी के कारण हो सकता है कि कुण्डलिनी सहस्रार तक न उठे या उठकर फिर नीचे आ जाए। तो जितनी बार वे कुछ करते हैं कुण्डलिनी ऊपर आती है और उन्हें तनाव देती है क्योंकि उनके सहस्रार बन्द हैं, ये एक बन्द दरवाजा है। दरवाजा बन्द होने के कारण यह उनके सिर में एक प्रकार का खिंचाव देती है जिसकी समझ उन्हें नहीं है। वे इसे तनाव कहते हैं। वास्तव में कुण्डलिनी अपने आप को बाहर खींचने का प्रयत्न**

करती है परन्तु वह ऐसा कर नहीं पाती। जिन लोगों को आत्म-साक्षात्कार मिल जाता है और वे अपने सहस्रार को खुला (ठीक) नहीं रखते उन्हें भी इसी प्रकार के तनाव का सामना करना पड़ता है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, सोरेंटो, 06.05.1989)

★ आत्मा जब आपके मस्तिष्क में पहुँचती है तो आप पंच-आयामी हो जाते हैं

"'शिव' आत्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं और आत्मा का निवास आप सबके हृदय में है। सदा-शिव का स्थान आपके सिर के शिखर पर है परन्तु वे आपके हृदय में प्रतिबिम्बित होते हैं। आपका मस्तिष्क विट्ठल है। आत्मा को आपके मस्तिष्क में लाने का अर्थ आपके मस्तिष्क का ज्योतिर्मय होना है। ''मस्तिष्क का ज्योतिर्मय होना'' अर्थात परमात्मा का साक्षात्कार करने की आपके मस्तिष्क की 'सीमित' क्षमता का 'असीमित' बनना। मैं 'समझना' (Understand) *शब्द का उपयोग नहीं करूंगी। "परमात्मा को महसूस करना।" वे कितने शक्तिशाली हैं, कितने चमत्कारी हैं, कितने महान हैं! दूसरी बात ये है कि मानव मस्तिष्क निःसन्देह मृत चीजों से रचना कर सकता है, परन्तु जब आत्मा मस्तिष्क में आती है तो आप जीवन्त चीज़ों का सृजन कर सकते हैं, कुण्डलिनी का जीवन्त कार्य कर सकते हैं। मृत भी जीवित की तरह से व्यवहार करने लगते हैं क्योंकि 'मृत के अन्दर की आत्मा' को आप छू लेते हैं।*

सभी अणुओं और परमाणुओं के 'केन्द्रक' (Nucleus) *के अन्दर उस परमाणु की आत्मा होती है। और आप यदि अपनी आत्मा बन जाते हैं-हम कह सकते हैं कि अणु या परमाणु का मस्तिष्क केन्द्रक की तरह होता है, केन्द्रक का शरीर। परन्तु केन्द्रक को नियंत्रित करने वाली शक्ति उस केन्द्रक के अन्दर निवास करने वाली आत्मा होती है।*

तो अब आपके पास चित्त है या शरीर-अणु (Atom) *का पूर्ण शरीर है, केन्द्रक* (Nucleus) *है और इस केन्द्रक के अन्दर आत्मा है।*

इसी प्रकार से हमारे पास ये शरीर है और शरीर में चित्त है। उसके बाद मस्तिष्क हमारा केन्द्रक हैं। आत्मा हृदय में है। अतः आत्मा के माध्यम से मस्तिष्क का नियंत्रण होता है। कैसे? हृदय के चहुँ ओर सात-परिमल हैं जिन्हें किसी भी संख्या तक गुणा किया जा सकता है। सात घात सोलह हजार (7 Raised to Power 16000) *ही सातों चक्रों को देखती है - सात चक्र घात सोलह हजार।*

इस परिमल के माध्यम से आत्मा देख रही है-'देख रही है'। मैं पुनः कह रही हूँ कि इस परिमल के माध्यम से 'देख रही है'.....ये परिमल आपके मस्तिष्क में सातों चक्रों के आचरण को देख रहा है। मस्तिष्क को चलाने वाली सभी नाड़ियों को भी देख रहा है। पुनः 'देख रहा है'। परन्तु जब आप आत्मा को अपने मस्तिष्क में लाते हैं तो आप दो कदम आगे बढ़ जाते हैं। क्योंकि आपकी कुण्डलिनी जब उठती है तो वह सदाशिव को छूती है और सदाशिव आत्मा को सूचना देते हैं। सूचित करते हैं अर्थात आत्मा में प्रतिबिम्बित करते हैं। तो ये प्रथम अवस्था है

जहाँ देखने वाले परिमल मस्तिष्क में भिन्न चक्रों से सम्पर्क करते हैं और इसका संघटन (Integration) *करते हैं।*

परन्तु जब आप अपनी आत्मा को मस्तिष्क में लाते हैं – ये दूसरी अवस्था है–तो वास्तव में आप आत्म–साक्षात्कारी हो जाते हैं, पूरी तरह से, पूर्णतया। क्योंकि तब आपका स्व, अर्थात आपकी आत्मा ही आपका मस्तिष्क बन जाती है। ये कार्य अत्यन्त गतिशील है। तब यह मानव के अन्दर पाँचवें आयाम को खोलता है।

पहला जब आप आत्म–साक्षात्कारी बनते हैं, सामूहिक चेतन होते हैं और कुण्डलिनी उठाने लगते हैं, तब आप चौथे आयाम को पार करते हैं। परन्तु जब आपकी आत्मा आपके मस्तिष्क में आती है तब आप पंच–आयामी बन जाते हैं – अर्थात आप 'कर्त्ता' बन जाते हैं। अब हमारा मस्तिष्क, उदाहरण के रूप में, कहता है ''ठीक है, इस चीज को ऊपर उठाओ।'' तब आप इसे अपने हाथ से छूते हैं, इसे ऊपर उठाते हैं। आप कर्त्ता हैं। परन्तु जब मस्तिष्क आत्मा बन जाता है तो 'आत्मा ही कर्ता' है।

और जब आत्मा कर्त्ता है, जब आप पूर्ण शिव बन जाते हैं, आत्म–साक्षात्कारी, तो उस अवस्था में आप यदि नाराज हैं तो भी आप लिप्त नहीं है। किसी भी चीज़ में आप लिप्त नहीं है। आपके पास यदि कोई चीज़ है तो भी आप उससे लिप्त नहीं होते। आप लिप्त हो ही नहीं सकते क्योंकि आत्मा तो निर्लिप्तता है। पूर्ण निर्लिप्तता। किसी भी प्रकार की लिप्तता की आपको चिन्ता नहीं होती। क्षण भर के लिए भी आप लिप्त नहीं होते।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, पंढरपुर, 29.02.1984)

★ आपको ऐसी अव्यवस्था में नहीं फँसना चाहिए, जहाँ आत्माएं आपको पकड़ लें।

*"अत: ये सभी अनुभव जिनमें लोग सोचते हैं कि वे वायुमण्डल में उड़ रहे हैं या उनकी गतिविधियाँ आलौकिक हैं या वायुमण्डल में जाकर वे चीजों को देख रहे हैं–ये सारी चीजें बहुत भयंकर हैं। ऐसा व्यक्ति अन्तत: पूर्णत: विक्षिप्त हो सकता है। पूर्णत: विक्षिप्त। क्योंकि उसका स्वयं पर नियन्त्रण पूर्णत: समाप्त हो जाता है। अमरीका में इन अनुभवों को 'परा–मनोवैज्ञानिक–अनुभव' कहा जाता है और इसे बहुत बड़ा नाम देने के लिए 'परा मनोविज्ञान' कहते हैं। नि:सन्देह यह 'परा' है क्योंकि यह व्यक्ति के मन (*Psyche*) से परे हैं, परन्तु यह बहुत भयंकर हैं। आपको इस सारी अव्यवस्था में नहीं फँसना चाहिए जहाँ आत्माएँ आपको पकड़ लें और आप इस प्रकार व्यवहार करने लगें जिसकी आप व्याख्या नहीं कर सकते।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत, 02.03.1983)

★ ...अतिचेतना अत्यन्त भयानक है, इसमें कोई सन्देह नहीं, परन्तु अवचेतन भी अत्यन्त भयानक है

"तो यह ऐसा आड़ोलन है जो आज्ञा चक्र को तो पार नहीं करता परन्तु बाएं या दाएं ओर गतिमान होता है, प्रवाहित होता है, चाहे आप अवचेतन में जाएं या अतिचेतन में, इनके प्रभाव

अलग-अलग हो सकते हैं परन्तु सहजयोग में ये एक ही चीज हैं। अतिचेतन में जाने वाले लोग मुझे भी भिन्न रूपों में देखने लगते हैं वैसे ही जैसे LSD लेने वाले मुझे नहीं देख सकते। वे केवल मुझसे प्रकाश निकलते हुए देखते हैं और जो लोग अवचेतन में चले जाते हैं वो इस प्रकार के आकार और चीजें देखने लगते हैं कि वे सोचते हैं कि स्वर्ग में पहुंच गए हैं। परन्तु वे विकास प्रक्रिया के भूतकाल को, हर चीज के भूतकाल को देखते हैं। अत: यह अतिचेतनता तो अत्यन्त भयानक है, इसमें कोई सन्देह नहीं, परन्तु अवचेतना भी अत्यन्त भयानक है, क्योंकि कैंसर, मैलाइटिस (Malaitis) आदि सभी असाध्य रोग चित्त के बाईं ओर गतिमान होने से होते हैं। अत: व्यक्ति को तान्त्रिकों के पास जाने के विषय में बहुत सावधान रहना चाहिए, या ऐसे लोगों के पास जो आपको नियंत्रित करने का प्रयत्न कर रहे हैं या जो भूत और भविष्यकाल के विषय में बताने का प्रयत्न कर रहे हैं।

भूत या भविष्य के बारे में जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्या आवश्यकता है? इससे क्या लाभ होता है? मैं यदि आपको ये बताने लगूं कि मैं किस प्रकार यहाँ पहुँची, किस प्रकार जाम में फंसी रही आदि तो क्या आपको यह सब सुनने में दिलचस्पी होगी? अपनी पूर्व गरिमा या पूर्व जीवन में, जो आज मूल्यहीन है, आपको किस प्रकार रुचि हो सकती है? परन्तु ये मानव की दुर्बलता है कि वह अपने व्यक्तित्व में कुछ ऐसा जोड़ना चाहता है जो अत्यन्त बनावटी, अस्तित्वहीन और मूल्यहीन है। फिर वह कहता है कि मैंने ऐसा किया, मैंने ऐसा किया, मैं ऐसा कर पाया, मुझे कभी नहीं प्राप्त हुआ।

भारत में इस आज्ञा के कारण प्राय: लोग बाईं ओर को चले जाते हैं क्योंकि वो कहते हैं परमात्मा की पूजा करो। अब यदि इन्हें परमात्मा की पूजा करनी है तो उनका योग तो परमात्मा से है नहीं। देखें, कि माइक्रोफोन से जब मेरा योग नहीं था तो मैं आप लोगों से बात नहीं कर पाई। अत: परमात्मा से योग प्राप्त किए बिना लोग परमात्मा की पूजा करने लगते हैं! वे सभी प्रकार की आरतियाँ करते हैं, उपवास करते हैं, आदि-आदि, और स्वयं को सताते हैं! ये बाईं ओर के लोग हैं। और स्तुतिगान आदि सभी कुछ। अति में जाना, चौबीसों घण्टे, वो ऐसे ही हैं।

यदि वे इस प्रकार से राम, राम, राम, राम कहे चले जाते हैं तो कोई उन्हें बाईं ओर को खींच लेता है। आप कह सकते हैं कि वाल्मिकी को भी तो राम, राम कहने के लिए कहा गया था। परन्तु उसे किसने कहा? नारद ने। नारद, एक अवतरण थे। आप नारद नहीं हैं। इस प्रकार आप स्वयं से किस प्रकार ये कह सकते हैं या कोई अन्य व्यक्ति किस प्रकार आपको ये नाम लेने के लिए कह सकता है? आप कोई भी नाम लें, परमात्मा तक नहीं पहुँच सकते। तो आप कहाँ पहुँचते हैं? आप कहीं जायेंगे और वहाँ यदि राम नाम के किसी नौकर की आत्मा होगी तो वह आपको पकड़ लेगी और लोग तो इतने अटपटे ढंग से व्यवहार करने लगते हैं कि वे पागलों सम बिल्कुल उबाऊ प्रतीत होते हैं।

अतिचेतन के बारे में भी ऐसा ही है। जो लोग बहुत ज्यादा महत्वाकांक्षी हैं वो भी विक्षिप्तावस्था में जा सकते हैं जहाँ वे पूर्ण सामूहिकता के बारे में नहीं सोचते, वे केवल अपने

ही विषय में सोचने लगते हैं और जब ऐसी स्थिति आती है तब उन्हें ये समझाना असम्भव होता है कि वे गलत हैं और अपने वाटरलू (युद्ध के मैदान) में पहुँचकर वो समाप्त नहीं हो जाते हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत, 03.02.1983)

★ परिमल देखना सहजयोग में अच्छा चिन्ह नहीं है

"...आपको रंग नज़र आ सकते हैं जिन्हें आप परिमल कहते हैं। परन्तु व्यक्ति को समझना होता है कि ये परिमल हमें तब दिखाई देते हैं जब हम 'स्व' से हटते हैं, जब हम विघटित होते हैं। इस प्रकार से हम अपने से अलग हुई कोई अन्य चीज़ देखने लगते हैं। सहजयोग में परिमल देखना अच्छा चिन्ह नहीं है। आपको यदि परिमल नज़र आते हैं तो हमें आपको पूर्व स्थिति में वापिस लाना पड़ता है क्योंकि आपको वर्तमान में होना पड़ता है, भविष्य में नहीं। आप विघटित हो जाते हैं। उदाहरण के रूप में यदि कोई मशीन जो परिमल लेती है - मैं किसी व्यक्ति से परिमलों के बारे में बात कर रही थी, किसी ऐसे व्यक्ति से जिसने परिमलों की तस्वीरें बनाई हैं। आत्म-साक्षात्कार के बाद किसी भी व्यक्ति में आप परिमल नहीं देख सकते, किसी भी आत्म-साक्षात्कारी में आप परिमल नहीं देख सकते क्योंकि वह समन्वित (Integrated) *होता है। पूर्णत: समन्वित। परन्तु जब वह डावाँडोल स्थिति में होता है तो उसे परिमल दिखाई देने लगते हैं। जैसे कैंसर रोग वाले व्यक्ति को परिमल दिखाई देंगे। शराबी व्यक्ति को परिमल दिखाई देते हैं। एक प्रकार के अटपटे परिमल। सामान्य व्यक्ति में भी परिमल हो सकते हैं परन्तु वह अटपटे नहीं होते। पूर्ण समन्वय यदि हो तो आप परिमल नहीं देख सकते। प्रकाश में आप देख सकते हैं कि यदि यह स्थिर होगा तो इसका अर्थ है कि यह अच्छा प्रकाश है, यदि अस्थिर है तो यह अच्छा प्रकाश नहीं है। सारे सात रंग, प्रकाश के रंगों को केन्द्रित होना होगा, समन्वित होना होगा। यदि वे समपार्श्वीय* (Prismatic) *हैं अलग-अलग रंग बिखेर रहे हैं, तो ये समन्वित नहीं हैं। प्रकाश जब समन्वित होगा तो आपको अलग-अलग सात रंगों का प्रकाश नज़र नहीं आएगा। तो परिमल वाला व्यक्ति भी समन्वित नहीं होता।*

ये सारे परिमल हमें इसलिए दिखाई देते हैं क्योंकि हम सात प्रकार के तत्वों से बने हुए हैं। परन्तु दाईं ओर के लोग केवल पाँच तत्वों में ही विश्वास रखते हैं। वे इन्हें कोष कहते हैं। मैं इन्हें कोई नाम नहीं दे सकती। परन्तु पहला, दूसरा और तीसरा चक्र इन कोषों का सृजन करता है। ये शारीरिक शब्द (भौतिक शब्द) चौथे चक्र से हैं। पाँचवां, छठा और सातवाँ चक्र बाहर की ओर परिमल नहीं बनाते, ये हमारे अन्दर, हृदय के समीप, परिमलों का सृजन करते हैं। इन परिमलों की रचना हृदय के समीप होती है परन्तु आत्म-साक्षात्कार के बाद ये सब एक हो जाते हैं। ये एक ही में विलय हो जाते हैं, एक ही आत्मा में। अत: आप कह सकते हैं कि आत्मा जब समपार्श्वीय (Prismatic) *स्थिति में होती है तो व्यक्ति को सात प्रकार के परिमल आते हैं परन्तु जब ये आत्मा समन्वित हो जाती हैं तो आप एकरूप हो जाते हैं। अत: संघटन (समन्वय) ही सहजयोग का लक्ष्य है, जैसा मैं सोचती हूँ कि मैंने आपको बताया है, इसी प्रकार से आप लोग अवचेतन* (Sub-conscious) *क्षेत्र में भी जा सकते हैं। अवचेतन क्षेत्र बाएं पक्ष में है।*

यदि आप समूहिक अवचेतन क्षेत्र में चले गए तो आप कैंसर के शिकार भी हो सकते हैं। अवचेतन की ओर इस प्रवर्तन के कारण आपको हृदयाघात हो सकता है या शक्कर रोग जैसी कोई अन्य समस्या भी हो सकती है।" ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यूयार्क, 30.09.1981)***

★ पुरुष अवतरण गतिज (Kinetic) पक्ष है। अन्तर्निहित (सम्भाव्य) (Potential) ऊर्जा मादा-शक्ति है

"व्यक्ति को महसूस करना है कि पुरुष गतिमूलक (Kinetic) *है, कहने से अभिप्राय ये है कि पुरुष अवतार गतिज पक्ष है। सम्भाव्य ऊर्जा मादा-शक्ति है। इसी कारण से कंस का वध करने के लिए श्री कृष्ण को श्री राधा की सहायता माँगनी पड़ी। शक्ति ऐसी ही होती है। शक्ति के बिना उनका कोई अस्तित्व नहीं, वैसे ही जैसे प्रकाश के बिना दीपक का अस्तित्व नहीं है। तो ये अवतरण हैं परन्तु इनके पीछे शक्तियाँ हैं जिन्होंने सारे कार्यों को अन्जाम दिया।*

इसी प्रकार से श्री शिव क्रोधित होकर राक्षसों का वध करते हैं क्योंकि वह शक्ति उनमें प्रवेश कर जाती है। अपने अन्दर कोई नर शक्ति लेकर वे कभी अवतरित नहीं हुईं और न ही कहा कि यदि तुम इस कार्य को कर दो या कोई अच्छा कार्य कर दो, तो उसके लिए तुम्हें तमगा पहनाया जायेगा। इसीलिए जिन राक्षसों का वध उन्होंने (देवी) किया उन्हीं के मुंडों की माला उन्होंने पहन ली ताकि अन्य राक्षस भयभीत हों कि मैं तुम्हारा भी वध कर दूंगी और तुम्हारे सिर की भी माला बनाकर पहन लूंगी। केवल उन्हें डराने के लिए।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, पुणे, भारत-1988)

★ ...क्योंकि वे ही सम्भाव्य (Potential) हैं और वो ही गतिज (Kinetic) हैं

*"पुरुष के बिना महिला स्वयं को अभिव्यक्त नहीं कर सकती, वह ऐसा नहीं कर सकती क्योंकि वह सम्भाव्य (*Potential*) है और पुरुष गतिज (*Kinetic*)। यह पूर्णतः प्रासंगिक शब्दावली है। पुरुष के बिना आप जीवित नहीं रह सकतीं, नहीं रह सकती। मान लो यदि पृथ्वी माँ में सभी प्रकार की सुगन्ध है परन्तु जब तक फूल नहीं होते आप किस प्रकार जानेंगे कि पृथ्वी माँ में सुगन्ध है। पुरुष अत्यन्त महत्वपूर्ण है, अन्यथा वे क्या करेंगे उनकी पूरी शक्ति नष्ट हो जाएगी।*

यदि महिलायें पृथ्वी माँ का रूप हैं तो आप पुष्प हैं। ...सभी आपको देखते हैं (हंसी)।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Holzkirchen, Germany, 13.07.1986)

★ राधाशक्ति थीं और कृष्ण उनकी अभिव्यक्ति करने वाले

"...यह सन्तुलन बहुत समय पूर्व बना दिया गया था—बहुत समय पूर्व। कह सकते हैं कि राधा-कृष्ण के समय पर भी, राधा शक्ति थीं और कृष्ण उनकी अभिव्यक्ति करते थे। जैसे आप कहते हैं यह 'सम्भाव्य' और 'गतिज' हैं। लोग केवल कृष्ण के बारे में जानते हैं परन्तु राधा शक्ति थीं। कंस का वध करने के समय उन्हें राधा को यह कार्य करने के लिए कहना पड़ा। राधा ने यह सारा कार्य किया। राधा को नृत्य करना पड़ा और कृष्ण ने उनके पैर दबाए और कहा कि अब तुम

थक गईं होंगी। राधा ने नृत्य क्यों किया? क्योंकि उनके नृत्य के बिना चीजें कार्यान्वित न होतीं। तो ये सभी कुछ परस्पर निर्भर हैं, एक-दूसरे पर इतना निर्भर हैं—वैसे ही जैसे दीपक और बत्ती को अलग करके प्रकाश नहीं मिल सकता। इन दो चीजों को अलग नहीं किया जा सकता। ये बात यदि आप समझ सकते हैं तो सन्तुलन पूर्ण सुव्यवस्थित हो जाएगा, यह परमात्मा और उनकी शक्ति के बीच है, ये पूर्णत: एक है, आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि परमात्मा और उनकी शक्ति में यह एकरूपता कैसे है? उनकी इच्छा भी वैसी ही है जैसे परमात्मा हैं, बिल्कुल कोई अन्तर नहीं है। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी डॉलिस हिल, लन्दन, 08.05.1980)***

★ पशुओं में नौ संयोजकताएं होती हैं, जबकि मानव में दस संयोजकताएं (Valences) हैं

"...तो धर्म क्या है, हम इस बात पर आते हैं कि धर्म मानव की संयोजकता है। जैसे कार्बन में चार संयोजकताएं होती हैं, मनुष्य में दस संयोजकताएं हैं। परन्तु पदार्थ में ये संयोजकताएं नहीं होती। पशुओं में नौ संयोजकताएं होती हैं परन्तु मानव में दस। इन संयोजकताओं का सन्तुलन बिगड़ने पर मानव अपनी मानवता के गुण से भटक जाता है। परन्तु पूछा जा सकता है कि हमारे अन्दर दस संयोजकताएं क्यों हैं? क्योंकि आपने उत्क्रान्ति प्राप्त करनी है, क्योंकि विकास प्रक्रिया में आपने वह उत्क्रान्ति प्राप्त करनी है जिसे प्राप्त किए बिना कभी भी आप अपने आप से सन्तुष्ट नहीं हो सकते। विशेष रूप से साधक, इसीलिए मैं कहती हूँ कि वे विशेष श्रेणी के लोग हैं क्योंकि इसी विशेष श्रेणी में परमात्मा के बन्दों को पैगम्बर बनना होगा और जैसे विलियम ब्लेक ने कहा था उनके पास अन्य लोगों को पैगम्बर बनाने की शक्तियाँ भी होंगी।" ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, साऊथ बैक पॉलिटैक्निक, लन्दन, यू.के., 22.06.1984)***

★ सहजयोगी को कभी मृत्यु से नहीं डरना चाहिए

"अत: वास्तव में यदि आप देखें तो मृत्यु में ही जीवन का निवास है। यदि मृत्यु न हो, कल्पना करें कि आदिकाल से जन्मे हुए लोग आज जीवित होते, तो हम यहाँ न होते। इन लोगों के साथ जीना दूभर हो जाता।

बहुत से पशुओं की मृत्यु हुई और उन पशुओं ने भी मानव रूप में जन्म लिया है। बहुत से अन्य लोगों को मरना होगा ताकि अन्य लोग पृथ्वी पर आ सकें। पृथ्वी पर पुन: आने से पूर्व व्यक्ति को कुछ समय आराम करना होगा। अत: मृत्यु मात्र जीवन-परिवर्तन है। मृत्यु के बिना जीवन का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। दोनों के बीच यह सन्तुलन है।

अत: सहजयोगी को कभी भी मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। उसे मृत्यु से कभी नहीं डरना चाहिए क्योंकि यदि उसकी मृत्यु होगी तो यह दूसरे जीवन में जाने के लिए होगी जिससे पूर्व वह कुछ समय आराम करेगा तथा और अधिक उत्साह तथा अधिक शक्ति के साथ लौट सकेगा। अत: प्रकृति में पूर्ण सन्तुलन है। आप देखें, यदि सन्तुलन न होता तो हम जीवित न रह पाते। मान लो पृथ्वी तेज गति से घूम रही होती तो आप जीवित न रह पाते। प्रशान्त महासागर यदि कुछ और फुट गहरा होता तो आप जीवित न रह पाते। इतनी सारी चीजें पूर्ण

सन्तुलन में हैं। सूर्य से दूरी, चाँद से दूरी सभी कुछ इतने सन्तुलन में हैं। ये सन्तुलन यदि टूट जाए तो हम कहीं के नहीं रहेंगे।

अतः हमें समझना है कि ये सारा कार्य श्री गणेश करते हैं। वे ही सारे भौतिक पदार्थों तथा सृजित वस्तुओं की देखभाल करते हैं। उदाहरण के तौर पर, पहले चक्र का सृजन पृथ्वी माँ द्वारा किया गया है और इसके बाद पूरे ब्रह्माण्ड का सृजन दूसरे चक्र द्वारा। परन्तु पहला चक्र सन्तुलन प्रदायक पावनता और मंगलमयता प्रवाहित करता है। मंगलमयता केवल सन्तुलन के माध्यम से ही आती है। अतः मैं देखती हूँ कि जब लोग अपना सन्तुलन खो देते हैं तो वे या तो दाएं को चले जाते हैं या बाएं को।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, पर्थ, आस्ट्रेलिया, 09.02.1992)

★ इसी कारण से आप सबको विवाहित होना पड़ता है

"जैसा कि आप जानते हैं, श्री गणेश मूलाधार पर हैं। वे हमारी सारी इन्द्रियों को नियन्त्रित करते हैं। जहाँ तक मूलाधार का सम्बन्ध है विशेष रूप से वे मलविसर्जन क्रियाओं को नियन्त्रित करते हैं। अतः हम वो लोग हैं जो न तो लिप्त होने में विश्वास करते हैं न ही त्याग करने में, हम सन्तुलन में विश्वास करते हैं। इसी कारण से आप सबको विवाहित होना पड़ता है, यथोचित शारीरिक जीवन बिताना पड़ता है, आपके बच्चे होने चाहिएं और आपको अत्यन्त विवेकशील, गरिमामय विवाहित जीवन बिताना चाहिए। यह बहुत आवश्यक है। परन्तु प्रेम होना चाहिए। पति-पत्नी, बच्चों और माता-पिता, सभी के बीच प्रेम होना चाहिए। एक व्यक्ति भी यदि असंतुलित हो जाए तो पूरा परिवार असन्तुलित हो जाता है। परिवार को प्रेम एवं मधुरता से स्थापित करना भी कला है। यदि पति-पत्नी दोनों इस बात से सहमत हो और दोनों ये कहें कि ऐसा करेंगे, तो मुझे विश्वास है, यह कार्य कठिन नहीं है क्योंकि आप सहजयोगी हैं। सन्तुलन के गुण को आप पहले से जानते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी पर्थ, आस्ट्रेलिया, 09.02.1992)

★ कुछ प्रकार के फूल पूजा के लिए उपयोग नहीं किए जाने चाहिएं

"...आप यदि चीजों के लिए लड़ते हैं तो आप बिल्कुल भी सहजयोगी नहीं हैं। इन वस्तुओं का कोई मूल्य नहीं। मैं कभी किसी चीज के लिए कुछ नहीं कहती, क्या मैं ऐसा कहती हूँ कि मेरे पास ये होना चाहिए, मेरे पास वो होना चाहिए, तुमने ये कैसे तैयार किया, यद्यपि कई बार यह वास्तव में गलत और मर्यादाविहीन होता है? मैं कभी नहीं कहती कि आप ये केले क्यों लेकर आए, ये किसी काम के नहीं हैं, मैं नहीं खाऊंगी। क्या मैंने कभी ऐसा कहा? कहने से अभिप्राय ये है कि जो फूल आप अर्पण करते हैं, मैं जानती हूं कुछ फूलों का उपयोग पूजा के लिए नहीं होना चाहिए, फिर भी मैं अपना मुँह नहीं खोलती। मैं यदि आपको कुछ बताती हूँ तो केवल इसलिए क्योंकि आपको अपने हित के लिए यह जानना आवश्यक है, मेरे हित के लिए नहीं। ***(परम पूज्य माताजी, चैलशम रोड, लन्दन, 15.08.1982)***

★ कठिनाई ये है कि मेरे फोटोग्राफ में चैतन्य है

"मानव की अपेक्षा कैमरा कहीं अधिक संवेदनशील है। बहुत सी ऐसी चीजें जिसे मानव नहीं पकड़ पाए उन्हें कैमरे ने पकड़ा है...।

कैमरा इतना अधिक संवेदनशील, ईमानदार और गहन है...ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति आपको इतना अधिक प्रेम करता हो कि उसका फोटोग्राफ भी आपको उतना ही प्रेम कर सके। ऐसा हो सकता है। हम किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में नहीं सोच सकते जो मात्र प्रेम है, तथा उसके फोटोग्राफ के अन्दर भी उतना ही प्रेम है...।

मेरे से पूर्व किसी भी व्यक्ति के चित्र नहीं लिए गए। ईसामसीह का फोटो कभी नहीं लिया गया, बुद्ध का कभी फोटो नहीं लिया गया, मोहम्मद साहब का भी कभी फोटो नहीं लिया गया। पहली बार आपने ये 'कैमरा' नामक उपकरण विकसित किया है और मेरा फोटोग्राफ विद्यमान है। क्या करें...।

फोटोग्राफ को स्वीकार करना कुछ कठिन है क्योंकि कहा जाता है कि किसी के सामने झुकना नहीं है। ये इसलिए कहा गया था क्योंकि इससे पहले फोटोग्राफ थे ही नहीं। कुछ भी नहीं था। फोटोग्राफ इतनी सच्ची चीज है। बाद में आप स्वयं ये बात देखेंगे। तब आप छोड़ेंगे नहीं, यह बात मैं जानती हूँ। यह आपको अच्छा लगेगा...।

फोटोग्राफ का प्रतीकात्मक मूल्य भी हो सकता है। देखें हमारे पास रानी के फोटोग्राफ हैं, उस फोटोग्राफ पर कभी हम थूकेंगे नहीं, क्या आप ऐसा करेंगे, वह वहाँ नहीं है, क्या आप उसके फोटोग्राफ पर थूकेंगे? आपमें से कोई भी? आप ऐसा नहीं करेंगे। क्योंकि आखिकार वह फोटो किसी चीज़ का प्रतिनिधित्व करता है। यह प्रतीक है, क्या ऐसा नहीं है? हो सकता है इससे चैतन्य न आता हो, परन्तु निश्चित रूप से यह किसी चीज़ का प्रतीक है।

किसी चीज़ का गुणांक ही इसे कार्यान्वित करता है। मैं जब आपसे बात रही हूँ, आप हैरान होंगे, तब भी अपके अन्दर कुछ कार्यान्वित हो रहा होगा। आवाज भी चैतन्य-लहरियों का वाहन है। (फोटोग्राफ लेते समय आपको चाहिए कि ठीक समय और ठीक कोण से फोटोग्राफ लें मैं देखती हूँ कि बहुत से लोग गलत समय पर गलत कोण से फोटोग्राफ लेते हैं।)

हाँ, जब आप चैतन्य लहरियाँ प्राप्त करते हैं, वह समय होता है जब आप कैमरे का बटन दबाएं, क्योंकि आप गलत समय पर फोटो लेते हैं, कुछ लोगों के फोटो अच्छे नहीं आते। चैतन्य लहरियाँ आपको बताएंगी कि कब फोटो लेना चाहिए?

मैंने कुछ लोगों का फोटो खींचा और उनकी चैतन्य लहरियाँ प्रवाहित होने लगीं। यह सब सापेक्षिक (Relative) है।" ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, हेग, नीदरलैण्ड, जुलाई, 1985)***

★ परमात्मा के नजरिए से तीस या चालीस प्रतिशत लोग अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं

"मैंने ऐसे लोगों को देखा है जिनकी कुण्डलिनियाँ पूर्णतः जमी (Frozen) हुई हैं, मैंने ऐसे लोगों को देखा है जिनका कुण्डलिनी से कुछ लेना देना नहीं है। हम कह सकते हैं कि वे

असुरों सम हैं, किसी प्रकार उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं हो सकता। परन्तु इस विश्व के 99 प्रतिशत लोग अच्छे और बढ़िया हैं, और मैं सोचती हूँ कि उनमें से 30 या 40 प्रतिशत लोग परमात्मा को खोज रहे हैं। सभी नहीं, कुछ धन खोज रहे हैं, कुछ सत्ता और कुछ अन्य अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति। परन्तु निश्चित रूप से पृथ्वी पर सच्चे साधक भी हैं। ये 30 या 40 प्रतिशत लोग परमात्मा के दृष्टिकोण से महत्वपूर्णतम हैं।

आप चाहे जो हों, आपकी चाहे जो संस्था हो, चाहे जो पद हो, चाहे आप कितने ही महान व्यक्तित्व हों, इससे परमात्मा को कोई अन्तर नहीं पड़ता। महत्वपूर्ण बात तो ये है कि क्या आप साधक हैं? यदि आप साधक नहीं हैं—वचन के अनुसार दरवाजा खुलेगा, परन्तु यदि आप सोचते हैं कि आपने पहले ही पा लिया है, पहले ही आप वहाँ हैं, तो यह किस प्रकार कार्यान्वित होगा? अतः इस सम्बन्ध में व्यक्ति को विनम्र होना होगा तथा कुण्डलिनी को अपनी गरिमा में उठने देना होगा ताकि वह आपको आपका सच्चा सौन्दर्य प्रदान कर सके। अब जो चीज़ हमने समझनी है वो ये है कि कुण्डलिनी की उत्क्रान्ति के साथ-साथ हमें शक्तियाँ भी प्राप्त होने लगती हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, बोस्टन, यू.एस.ए., 05.11.1983)

★ सहजयोग में इस बात का कोई महत्व नहीं कि आप कितने पुराने हैं, महत्व इस बात का है कि आप कितने विकसित हुए हैं

*"आप क्या कह सकते हैं? आप क्या जानते हैं? किस प्रकार आप विश्लेषण (*Reflect*) कर सकते हैं? आपको क्या ज्ञान है? रसायनशास्त्र का अध्यापक जब आपसे कहता है कि हाइड्रोजन में एक अणु है तो क्या आप उस पर प्रश्न उठाते हैं? अपने अहं के कारण जब आप ऐसा करने लगते हैं तो आपको उत्क्रान्ति प्रक्रिया से बाहर फेंक दिया जाता है। अतः विचारों में न उलझें, केवल सुनें और अपने अन्दर उतारने का प्रयत्न करें, ये सब मन्त्र हैं। इन्हें अपने अन्दर उतारें।* **अन्दर रहते हुए भी आप प्रश्न करने लगते है, अपने अगुआओं से बहस करते हैं, उन्हें परामर्श देते हैं। कृपा करके ऐसा न करें। अब ऐसा करना बन्द कर दें, ये राजनीति नहीं है जहाँ सभी लोग परामर्श दे सकते हैं, जहाँ सभी को कुछ न कुछ कहना होता है। अधिकतर भूत, भूतों जैसे लोग भी परामर्श देते चले जाते हैं और अपनी हाँके चले जाते हैं।**

हमेशा वे अपने अगुआ के विरोध में जाते हैं, मैं कहना-चाहूंगी, विशेष रूप से बड़ी आयु के लोग क्योंकि कभी-कभी तो वे अपने अगुआओं से ज्यादा परिपक्व होते हैं। तब आप सोचते हैं कि अपने अगुआ को सुधारने का आपको अधिकार है। ऐसा नहीं है। सहजयोग में इस बात का महत्व नहीं है कि आप कितने विकसित हैं। अतः जब आप अपने अगुआओं पर प्रश्न करने लगते हैं, और उनके आचरण की समीक्षा करने लगते हैं, या ऐसा ही कुछ और, तथा पलट कर उन्हें जवाब देते हैं, या उन्हें अपने विचार बताने लगते हैं, तो आप गए। ये एक कड़ी की तरह से है, कह सकते हैं कि चक्रों और कोषाणुओं के बीच की कड़ी, ऐसा कह सकते हैं। यदि आप

चक्रों की उपेक्षा करेंगे तो वे किस प्रकार कार्य करेंगे? क्योंकि मैं उनसे जुड़ी हुई हूँ और उनके माध्यम से आप जुड़े हुए हैं।

जब भी आप उनकी उपेक्षा करते हैं, तब आपका पतन हो सकता है। मैं जानती हूँ कि अगुआओं के साथ क्या करना है, मैंने उन्हें चुना है, उनका प्रबन्धन करती हूँ, उनका आयोजन करती हूँ, उन्हें बदल देती हूँ, मैं जानती हूँ कि क्या करना है। आप लोग उन्हें चुनौती न दें। ऐसा करना आपके अहं के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Alpe Motta, Italia, 04.05.1986)

★ मैं स्वयं एकादश हूँ...

प्रायश्चित करने के लिए भारत में बहुत से लोग एकादशी के (ग्यारहवें) दिन व्रत करते हैं। यह आम बात है, "एकादशी के दिन अवश्य व्रत करो।" सभी हिन्दू तथा अन्य लोग एकादशी व्रत रखते हैं। ग्यारहवें दिन वो बिल्कुल कुछ नहीं खाते। परन्तु आपकी माँ के अवतरण के पश्चात् आपको ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि मैं स्वयं एकादश हूँ। जब मैं साक्षात आ गई हूँ तो आपको ये व्रत क्यों करना चाहिएं? जब मैं पृथ्वी पर नहीं आई थी तो मेरा आह्वान करने के लिए यह व्रत किया जाता था। जब मैं वापिस आ गई हूँ, तो अब आपको ये व्रत करने की आवश्यकता नहीं है, एकादश की तपस्या करने की। परन्तु आपको सावधान रहना होगा।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यूयार्क नगर, 17.09.1983)

★ ...सकारात्मकता (अच्छाई) के माध्यम से, बिना सकारात्मकता को हानि पहुँचाए, नकारात्मकता को दूर करने के लिए, यह प्रवेश करती हैं

"......अब, ग्यारह में से.......एकादश, अर्थात ग्यारह..... पाँच आपके भवसागर के दाईं ओर से और पाँच भवसागर के बाईं ओर से आते हैं.......। एकादश रुद्र में विध्वंस की सारी शक्तियाँ होती हैं। ये श्री गणेश की विध्वंसक शक्ति है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की विध्वंसक शक्ति है। यह 'माँ' (आदिशक्ति) की विध्वंसक शक्ति है, श्री गणेश की विध्वंसक शक्ति है और इनमें से चार भैरव, हनुमान, कार्तिकेय और गणेश हैं। श्री सदाशिव और आदिशक्ति की भी शक्तियाँ हैं। सभी अवतरणों की विध्वंसक शक्तियाँ एकादश हैं। 'हिरण्यगर्भ', जोकि सामूहिक ब्रह्मदेव हैं, की विध्वंसक शक्ति अन्तिम शक्ति है। यद्यपि इनके साथ इन शक्तियों का अन्त नहीं होता। ये शक्ति जब गतिशील होती है तो हर अणु फट जाता है, पूर्ण आणविक शक्ति विध्वंसक शक्ति बन जाती है। इस प्रकार से एकादश रुद्र सम्पूर्ण विध्वंसक शक्ति हैं।

ये अत्यन्त शक्तिशाली और विस्फोटक है परन्तु अन्धी नहीं है। ये अत्यन्त विवेकशील है और अत्यन्त कोमलता पूर्वक गुंथी हुई। सारी अच्छाई को यह छोड़ देती है और बुराई पर आक्रमण करती है। उचित समय और उचित स्थान पर बीच में आने वाली किसी अच्छी चीज़ को हानि पहुँचाए बिना, यह सीधे आक्रमण करती है। एकादश रुद्र की दृष्टि जब किसी पर पड़ती है और यदि बीच में कोई दिव्य या सकारात्मक तत्व आ जाए तो यह दिव्य तत्व को हानि

पहुँचाए बिना उसी के अन्दर से प्रवेश करके नकारात्मकता को चोट पहुँचाती है। किसी व्यक्ति को तो ये शीतल कर देती है जलाती नहीं और किसी को भस्म कर देती है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कोमो, इटली, 16.09.1984)

★ जैसे मैंने आपको बताया, एकादश रुद्र भवसागर से निकलते हैं

"जैसा मैंने आपको बताया, ये एकादश रुद्र भव-सागर से निकलते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि इसका विनाशकारी भाग मुख्यतः भवसागर से आता है। परन्तु ये सारी शक्तियाँ केवल एक अवतरण, महा-विष्णु को दी गई हैं, जो भगवान 'ईसामसीह' हैं, क्योंकि वे ही पूरे ब्रह्माण्ड का आधार हैं। वे ही ओंकार की प्रतिमूर्ति हैं, वे ही चैतन्य लहरियों की प्रतिमूर्ति हैं। वे जब कुपित होते हैं तो ब्रह्माण्ड टूटने लगता है। वे क्योंकि माँ (आदिशक्ति) की शक्तियों का मूर्तिरूप हैं, उन शक्तियों का, जो हर अणु में, परमाणु में, मानव में और हर जीवित और निर्जीव चीज़ में प्रवेश कर रही हैं, और एक बार जब वे कुपित होते है तो सभी कुछ संकट में पड़ जाता है। अतः ईसामसीह को प्रसन्न रखना अत्यन्त आवश्यक है। ईसामसीह ने कहा था, ''आपको छोटे से बच्चे के समान होना होगा," अर्थात अबोध होना होगा। हृदय की पावनता उनको प्रसन्न करने का सर्वोत्तम मार्ग है।" ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, कोमो, इटली, 16.09.1984)***

★ इन सारे देवताओं की पीठ हमारे मस्तिष्क में है

गणपति पुले सहजयोगियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। (कोल्हापुर 30/31.12.87).....ये वो स्थान है जहाँ श्री गणेश महागणेश बनते हैं। जहाँ पिता तत्व, गुरुतत्व.....समुद्र..... हिन्द महासागर उन्हें घेरे हुए है। अर्थात यहाँ (गणपति पुले) वे गुरु बन जाते हैं। गणपति पुले में श्री गणेश अपने परिपक्व रूप में हैं...यहाँ हमारी दृष्टि पवित्र, शक्तिशाली एवं दिव्य हो जाती हैं। (गणपति पुले 850000.1)

महागणेश...श्री गणेश हैं...क्योंकि वह मस्तिष्क में निवास करते हैं (Alpe Motta, Milan, 4.5.86) *। पीछे की आज्ञा के लिए यही मन्त्र है। (महागणेश)...जैसे महाभैरव भी है, (ब्रह्माकोर्ट 4.9.81)। मस्तिष्क में इन सारे देवताओं की पीठ हैं...ये पीठ है क्योंकि ये इनके नैमित्तिक* (Casual) *हैं...। तो पहले नैमित्तिकों* (Casuals) *का सृजन किया जाता है...फिर देवी-देवताअें का...तो हिरण्यगर्भ ब्रह्मदेव का नैमित्तिक है। ये नैमित्तिक यहाँ है...हमारे मस्तिष्क में। यहाँ पीछे की ओर (पीछे की आज्ञा)...महागणेश हैं...ठीक मध्य बिन्दु पर...। ये सूक्ष्मतम बिन्दु है...और इनके इर्द-गिर्द महाभैरव घूमते हैं...और इसके गिर्द हिरण्यगर्भ हैं...ये स्वाधिष्ठान है। स्वाधिष्ठान दो हिस्सों में बँटा हुआ है...बायाँ और दायाँ...दोनों हिरण्यगर्भ हैं...यहाँ पीछे की ओर। अब आगे की ओर...यहाँ, मध्य में कार्तिकेय हैं...ईसामसीह स्वयं यहाँ मध्य में हैं जहाँ दृकतन्त्रिका है...परन्तु यहाँ, बाहर कार्तिकेय हैं जो ईसामसीह के रक्षक हैं...और कार्तिकेय के चहुँ ओर महाहनुमान घूमते हैं और उनके चहुँ ओर एकादश रुद्र घूमते हैं।* **अब एकादश रुद्र क्या है ...?** *आइए एक-एक करके देखते हैं...***बुद्ध...महावीर...ईसामसीह...महा-भैरव... महागणेश...कार्तिकेय...महाहनुमान ....हिरण्यगर्भ...लक्ष्मी-विष्णु (नारायण)...शिव**

पार्वती...शिवशक्ति। *शिव पार्वती...दोनों को क्यों लिया जाना चाहिए? क्योंकि शिव गुरु हैं और पार्वती शक्ति हैं।* **(ब्रह्मकोर्ट 04.09.1981)**

(परम पूज्य श्रीमाताजी की वार्ता के अनुरूप उपरोक्त कोष्ठकों में लिखा गया है)

★ ...हमारे पास एक ऐसा व्यक्ति है जिसने वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित किया है कि श्रीमाताजी क्या हैं...

"श्रीमाताजी ने मुझे कहा है कि मैं उनकी रूस की दिव्य यात्रा के अनुभव के विषय में आपसे बात करूं और मैं ये कहने से नहीं चूकूंगा कि यह नाटकीय रहस्य-उद्‌घाटन था क्योंकि मास्को में उनके विज्ञान सम्मेलन में एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक, एक भौतिक वैज्ञानिक सम्मिलित हुए, इनका नाम अनातोली अकीमोव है। ये पूरे रूस एवं पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। वे उस सिद्धान्त के साथ आए जिसका अध्ययन वे कई वर्षों से कर रहे थे और जो रिक्त-शरीर (Vacuum) *पर आधारित है। उन्होंने ऐंठन-क्षेत्र* (Torsion Fields) *का अध्ययन किया है और वे अत्यन्त स्पष्ट एवं वैज्ञानिक रूप से श्रीमाताजी से प्रवाहित होने वाली चैतन्य लहरियों की व्याख्या कर सकते थे। आरम्भ में वे ध्यान धारणा करने वाले कुछ योगियों का अध्ययन करते रहे और उन्होंने पाया कि उनसे चैतन्य प्रवाहित हो रहा था तथा उनके इर्द-गिर्द एक परिमल था। परन्तु जब वह श्रीमाताजी के पास आये, उनकी तस्वीर देखी, चमत्कारिक तस्वीर, तब वह वास्तव में जान पाये कि यह क्या है। उन्होंने बताया कि जहाँ तक श्रीमाताजी का सम्बन्ध है वे अनन्त हैं, असीम हैं। सबसे अच्छी बात जो लगी वो उनका ये कहना था : ''वैज्ञानिक के रूप में मैं स्वीकार करता हूँ कि जितने भी वैज्ञानिकों ने अब तक कोई विशेष, अद्वितीय खोज की है..., मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि उनकी खोजों के परिणाम किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया से नहीं आए थे। हम कह सकते हैं मस्तिष्क के माध्यम से नहीं आए। ये अद्वितीय शोध परिणाम किसी दिव्य प्रेरणा के माध्यम से प्राप्त हुए। हम न्यूटन का नाम ले सकते हैं, आइन्स्टाइन का नाम ले सकते हैं,.....।'' उन्होंने कहा कि ''मेरे मामले में भी, जब मैं इस सिद्धांत पर कार्य कर रहा था, तो जब मैंने श्रीमाताजी की तस्वीर देखी तो मुझे प्रेरणा मिली।'' अब श्रीमाताजी ने उन्हें सितम्बर में आने का निमंत्रण दिया है। उन्होंने रूस में एक पुस्तक लिखी है जिसका अंग्रेजी रूपांतरण किया जाएगा। वे एक नई पुस्तक भी तैयार कर रहे हैं जिसका मुख्य विषय यह अद्वितीय आविष्कार होगा। तो अब हमारे पास एक ऐसा व्यक्ति भी है जिसने वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित कर दिया है कि श्रीमाताजी क्या हैं? (तालियाँ)"*

(ग्वीडो लान्जा द्वारा मास्को में हुए वैज्ञानिक सम्मेलन के विषय में कबैला में 21 जून 1998 को परम पूज्य श्रीमाताजी के प्रवचन से पूर्व दिया गया परिचय)

★ 'मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही आदिशक्ति हूँ, मैं ही आदिशक्ति हूँ, मैं ही वह पावन आत्मा हूँ जो आपको आत्म-साक्षात्कार देने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुई है।'

"प्राय: मैं अपने विषय में नहीं बताया करती परन्तु आज ज्यों ही मैं यहाँ आई इन्होंने मुझे ये घोषणा करने के लिए विवश कर दिया। यद्यपि ऐसा करना व्यवहारिक नहीं है। अपने विषय

में कुछ भी कहना व्यवहारिक नहीं होता। बेहतर होता कि पहले आप मुझे पहचान (Discover) *पाते और तब मैं आपको बताती। इसी कारण से ईसामसीह को सूली पर चढ़ा दिया गया तथा अन्य बहुत से लोगों को सताया गया। मैं अपने कार्य को बाधित नहीं करना चाहती, और आत्म- साक्षात्कार से पूर्व आपको कुछ बताने का कोई लाभ भी नहीं है। आत्म- साक्षात्कार के बाद आपको बताना बेहतर होगा कि ''मैं ही आदिशक्ति हूँ। निःसन्देह मैं ही आदिशक्ति हूँ, वो शक्ति जिसके विषय में ईसामसीह ने बताया था।'' मैंने उन्हें बताया कि इससे पूर्व किसी भी मंच से मैंने ये घोषणा नहीं की। परन्तु वे हमेशा मुझसे कहते रहे कि 'श्रीमाताजी एक बार आप ये घोषणा अवश्य करें।' मैंने कहा, "अमेरिका में मैं यह घोषणा करूंगी।'' तो आज, 'मैं यह घोषणा करती हूँ कि मैं ही आदिशक्ति हूँ, मैं ही आदिशक्ति हूँ, मैं ही वह पावन आत्मा हूँ जो आपको आत्म-साक्षात्कार देने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुई है।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यूयार्क, 30.09.1981)

श्रीमाताजी कौन हैं?

"...... आज मैं स्पष्ट बता रही हूँ कि जब तक आप मुझे पहचान नहीं लेते ये कार्य नहीं होगा। इससे पूर्व कभी मैंने ये बात नहीं कही। जैसे श्री कृष्ण ने कहा था, **'सर्व धर्माणां परित्यज्य मामेकम् शरणं व्रज,** *वैसे ही मेरे शब्द भी हैं। जैसे ईसामसीह ने कहा था, ''मैं ही प्रकाश हूँ, मैं ही मार्ग हूँ', मेरे शब्द भी वैसे ही हैं।* **"मैं लक्ष्य हूँ, केवल पथ नहीं।''**

परन्तु ये बात मैंने इससे पूर्व आपको कभी नहीं बताई, क्योंकि पूर्व अनुभव इतने खराब थे कि मैंने ये बात आपसे नहीं कही। आपको मेरी शरणागत होना होगा। आपको मुझे माँ रूप में स्वीकार करना होगा और मुझे आपको पुत्र रूप में लेना होगा। इसके बिना आपका कार्य नहीं होगा।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, बम्बई 29.03.75)

दिव्य घोषणा

- ★ *..."परन्तु आज के दिन मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही वह (शक्ति) हूँ जिसने मानवता को बचाना है। मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही वह हूँ जो आदि-शक्ति है (आदिशक्ति या अल्लाह की रूह), जो सभी माताओं की माँ हैं, जो आदि-माँ हैं। परमात्मा की इच्छा की शक्ति जो स्वयं को, इस सृष्टि को और मानवमात्र को अर्थ देने के लिए इस पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं। और मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपने प्रेम, धैर्य और शक्तियों के माध्यम से मैं ये उपलब्धि प्राप्त करूंगी।*
- ★ *मैं ही वह (शक्ति) हूँ जो बार-बार अवतरित हुई। परन्तु अब मैं अपनी पूर्ण कलाओं और पूरी शक्तियों के साथ आई हूँ। मैं पृथ्वी पर केवल मानव का उद्धार करने के लिए, उसे मुक्त करने के लिए, ही नहीं आई हूँ, मैं तो मानव को स्वर्ग का साम्राज्य, वह आनन्द एवं आशीर्वाद देने के लिए आई हूँ जो आपके परमपिता (परमात्मा, अल्लाह, सदाशिव) आप पर बरसाना चाहते हैं।"* ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, यू.के., 02.12.1979)***
- ★ *"मैं ही आदिशक्ति हूँ (पावन आत्मा या अल्लाह की रूह)। इस आश्चर्यजनक कार्य को करने के लिए पहली बार मैं इस रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुई हूँ। इस बात को आप जितनी अच्छी तरह से समझेंगे उतना बेहतर होगा। आप भी आश्चर्यजनक रूप से परिवर्तित होंगे।"*
- ★ *"मैं जानती थी कि एक दिन मुझे स्पष्ट रूप से यह बात कहनी होगी, आज मैंने यह बात कह दी है। अब आप लोगों ने साबित करना है कि मैं ही वह (शक्ति) हूँ।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, सिडनी, आस्ट्रेलिया, 21.03.1983)

★ आज हजारों-लाखों लोगों की कुण्डलिनी जागृत करने के लिए शक्ति की आवश्यकता है

"कोई ऐसा मार्ग नहीं है जिससे आप वास्तव में ये महसूस कर सकें कि मैं महान हूँ, मैं असाधारण हूँ, मैं हूँ, मैं असाधारण हूँ। ये एक ऐसी बात है जो लोग नहीं समझते। जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं उनके लिये तो ठीक है—क्षम्य है। परन्तु आप लोगों ने अपना आत्मसाक्षात्कार, अपनी चैतन्य लहरियाँ मुझसे प्राप्त की हैं। मैं कुछ तो हूँगी। समझने के लिए अपना चित्त इस प्रकार डालें। इस शरीर के अन्दर अवश्य कुछ तो विशेष (आश्चर्यजनक) होगा। अन्यथा ये सब सम्भव न हो पाता। आप लोगों के सम्मुख ये बात अत्यन्त स्पष्ट है।

ये बात समझ ली जानी चाहिए कि कृष्ण, ईसामसीह, राम और बाकी सब अवतरणों में से किसी ने भी लोगों को सामूहिक आत्मसाक्षात्कार नहीं दिया। उनमें अन्य शक्तियाँ थीं, जैसे श्रीकृष्ण में 'संहार शक्ति', वो किसी का भी वध कर सकते थे। मुझमें भी ये सब शक्तियाँ निहित हैं, परन्तु प्रत्यक्ष रूप से मैं अत्यन्त सामान्य, सांसारिक भारतीय महिला हूँ। ईसामसीह में स्वयं को क्रूसारोपित करवाने की शक्ति थी। मुझमें भी ये शक्ति हैं। परन्तु मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाली। मुझमें पुनर्जन्म लेने की शक्ति भी है। परन्तु इन शक्तियों का उपयोग क्यों नहीं

किया गया? ये बात व्यक्ति को समझनी है। क्योंकि अब मुख्यत: ध्यान कुण्डलिनी उठाने पर है और उसके लिए इन शक्तियों की आवश्यकता नहीं है। अधिक से अधिक लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें। क्रूसारोपित होने का क्या लाभ है? कुण्डलिनी जागृति कौन करेगा? मैं यही काम करना पसन्द करूंगी। कहने से अभिप्राय ये है कि यदि मैं उस समय होती तब भी यही कहती कि "कुछ देर के लिए अपने क्रास को एक तरफ रख दो, मैं इसे बाद में लूंगी।" अभी लोगों को नष्ट करने का क्या लाभ है? देखते हैं कितने लोग समझ पाते हैं! अत: इन शक्तियों की आवश्यकता नहीं है। आज हजारों-लाखों लोगों की कुण्डलिनियाँ जागृत करने के लिए शक्ति की आवश्यकता है।

"जीवन पर्यन्त मैं आप लोगों की तरह से बनी रहूंगी—अर्थात् मैं भी आप ही की तरह से वृद्ध होऊंगी। कहने का मतलब है कि मुझे भी वृद्ध होना चाहिए, मैं वृद्ध होऊंगी और आप ही लोगों की तरह से बनूंगी। इससे बाहर मैं कुछ नहीं बनूंगी...।"

"...मेरा आकलन न करें, क्योंकि मुझे समझने का ये तरीका नहीं है। एहसास करें और मान लें कि कुछ तो असाधारण होना ही चाहिए। इस विस्मयकारी कार्य को करने के लिए ऐसे किसी व्यक्ति की आवश्यकता थी। मेरी सहायता करने के लिए आपका जन्म लेना भी आवश्यक था। जिन लोगों ने मेरे साथ जन्म लिया है मैं उन्हें जानती हूँ। वो हमेशा मेरे साथ डटे रहेंगे। यहाँ-वहाँ, मैं उनकी थोड़ी बहुत परीक्षा ले सकती हूँ परन्तु मैं जानती हूँ कि वो परिवर्तित हो जाएंगे। आप लोगों को मुझमें पूर्णनिष्ठा रखनी है। जो दौड़ जाना चाहते हैं, दौड़ जाएंगे—आज या कल। जहाँ तक सम्भव हो सकेगा मैं उन्हें समझाने का प्रयत्न करूंगी...।"

अत: हम सामूहिकता पर आते हैं। ये समझ लें कि आप मेरे शरीर के कोषाणु हैं और मैंने आपको जागृत किया है। यदि आपका ह्रास होता है तो मेरे शरीर का ह्रास होता है। आपने ये सब देखा है। जब आप बीमार होते हैं तो मैं बीमार होती हूँ, क्योंकि मैं बहुत अधिक चैतन्यलहरियाँ छोड़ती हूँ और इसके कारण बीमार हो जाती हूँ, क्योंकि इन चैतन्य लहरियों को आप आत्मसात नहीं कर पाते। जब आप चैतन्यलहरियाँ आत्मसात कर लेते हैं तो मुझे अच्छा लगता है। जिन लोगों को स्वयं पर विश्वास है केवल वही ये बात समझ सकते हैं, श्रेष्ठता या हीनता की भावना से ग्रस्त लोग नहीं। *इस प्रकार के भाव होना ये दर्शाता है कि आपको स्वयं पर विश्वास नहीं है कि आपको चुना गया है। वास्तव में आप लोगों को ये महान कार्य करने के लिए विशेष रूप से बनाया गया है। आप सबका जन्म लेना अत्यन्त विशेष बात है। एक बार जब आप इसका एहसास कर लेंगे, इसे पहचान लेंगे तब आप जीवन की छोटी-छोटी चीजों की चिन्ता नहीं करेंगे। सामूहिकता के माध्यम से इस गुण का पोषण किया जाना चाहिए, देखभाल की जानी चाहिए। परन्तु सहजयोगियों की सामूहिकता के माध्यम से।* ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, Plaw Hatch seminar, England, 15.11.1980)***

पहली बार मानव को देवी के पूर्ण ज्ञान का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है क्योंकि स्वयं श्री आदिशक्ति ने उस दिव्य क्षण का रहस्योद्‌घाटन किया, जिसके विषय में केवल

आदिशक्ति ही जानती थीं क्योंकि सृजन की उनकी लीला के इतिहास की भव्य घटना के साक्षी केवल देवी-देवता ही थे।

* *"सहस्रार दिवस, जिसके विषय में मेरे अवतरण से भी बहुत समय पूर्व निर्णय कर लिया गया था, की कहानी मुझे आपको बतानी है। पैंतीस करोड़ देवी- देवताओं ने स्वर्ग में बहुत बड़ी सभा की, ये निर्णय करने के लिए, कि क्या किया जाए, सभी देवी-देवता वहाँ उपस्थित थे। सहस्रार को खोलना मानव को दिया जा सकने वाला सर्वश्रेष्ठ वरदान है - मानव को आत्मा और परमात्मा के सच्चे ज्ञान के प्रति चेतन करना, उसके अज्ञानान्धकार को दूर करना। और ये सारा कार्य स्वत: होना चाहिए क्योंकि इसने परमात्मा की जीवन्त शक्ति को कार्यान्वित करना है। ये कार्य बहुत शीघ्र भी किया जाना था। तो सभी देवी-देवताओं ने प्रार्थना की कि अब मुझे, आदिशक्ति को, जन्म लेना होगा।"*

उन सबने अपना पूरा जोर लगाया। जो भी कुछ सम्भव था वो उन्होंने किया। उन्होंने सन्त बनाए परन्तु उनकी संख्या बहुत कम थी। अवतरित होकर उन्होंने धर्म बनाए परन्तु वे विकृत कर दिए गए और इस कारण उनकी बदनामी हुई। उन धर्मों में कोई सच्चाई न थी। ये सारे धर्म धन एवं सत्ता-अभिमुखी थे। उनमें कोई दिव्य शक्ति न थी, वास्तव में ये परमेश्वर- विरोधी थे। किस प्रकार मानव को इन सतही धर्मों एवं विनाश की ओर अग्रसर विकृत मार्ग से दूर मोड़ा जाए? इन संस्थापित संस्थाओं के बारे में उन्हें किस प्रकार बताया जाए? युगों से ये संस्थाएं शासन कर रही थीं, धन और सत्ता हथिया रही थीं।

ये बहुत कठिन कार्य था जिसे अत्यन्त धैर्य एवं प्रेम पूर्वक किया जाना था। ये कार्य अत्यन्त नाजुक भी था क्योंकि सीधे-सादे अबोध लोग इन धर्मों पर विश्वास करते थे। उन्हें ये कहना कि ये सब बेवकूफी है, ये धर्म नहीं हैं, ये सभी अवतरणों, पैगम्बरों और सन्तों के विरुद्ध हैं, इन्हीं धर्मों के कारण सभी सच्चे सन्तों को कष्ट उठाना पड़ा। ये शक्तिशाली कार्य किया जाना था, इसीलिए आदिशक्ति को पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ा। ये कार्य 6 मई से पूर्व होना आवश्यक था क्योंकि उस वर्ष का ये दिन प्रलय का दिन था। अन्तिम समय पर, 5 मई (1970) को ये कार्य किया गया।

इस सब का निर्णय पहले ही कर लिया गया था और सभी देवी-देवताओं को उनका कार्य बता दिया गया था। ये देवी-देवता अत्यन्त कार्यकुशल एवं आज्ञाकारी हैं और मुझे भली-भांति जानते हैं, मेरे बाल की नोक तक पहचानते हैं। मुझे उन्हें मर्यादाएं नहीं सिखानी पड़ीं, प्रेम स्वयं आपको मर्यादित करता है - परन्तु केवल दिव्य प्रेम, स्वार्थमय प्रेम नहीं। ये ऐसा प्रेम नहीं है, जो हम अपने बच्चे, अपने पति, अपने देश और अपने वस्त्रों से करते हैं, ये दिव्य प्रेम है जो आपके हृदय, से आपकी आत्मा से प्रवाहित होता है, जैसे ज्ञान का प्रकाश। ये कितना जबरदस्त कार्य है। तो मैंने कहा, ''सहस्रार पर मुझे महामाया बनना होगा, महामाया होना होगा। मुझे कुछ ऐसा बनना होगा ताकि देवताओं के अतिरिक्त कोई मुझे पहचान न सके। अब इस महामाया को पृथ्वी पर आना था। अपने वास्तविक रूप में आदिशक्ति को नहीं। आदिशक्ति

का शुद्ध रूप बहुत बड़ी बात है। अत: आदिशक्ति ने महामाया का आवरण पहन लिया।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Fregene Italy, 8 मई 1988)

जिस प्रकार 5 मई 1970 को श्री आदिशक्ति ने नारगोल, भारत में ब्रह्माण्ड का सहस्रार खोला, उस रहस्य को उन्होंने स्वयं अपने ही शब्दों में मानव के सम्मुख प्रकट किया।

- *"ज्यों ही सहस्रार खुला, पूरा वातावरण अद्‌भुत चैतन्य से भर गया और आकाश में तेज रोशनी हुई तथा सभी कुछ मूसलाधार वर्षा या झरने की तरह पूरी शक्ति से पृथ्वी की ओर आया मानो मैं इसके प्रति चेतन ही नहीं थी, संवेदन शून्य हो गई थी।"*

ये घटना इतनी अद्‌भुत थी और इतनी अनापेक्षित थी कि मैं स्तब्ध रह गई और इसकी भव्यता ने मुझे एक दम से मौन कर दिया।

आदि कुण्डलिनी को मैंने एक बहुत बड़ी भट्टी की तरह से ऊपर उठते देखा, ये भट्टी एक दम शान्त थी परन्तु ये अग्नि की तरह से लाल थी, मानो किसी धातु को तपाकर लाल कर लिया हो और इसमें से नाना प्रकार के रंग विकीर्णित हो रहे हों।

इसी प्रकार से कुण्डलिनी भी सुरंग के आकार की भट्टी सम दिखाई दी, जैसे आप कोयला जलाकर बिजली बनाने वाले संयंत्रों में देखते हैं, और ये दूरबीन से दिखाई देने वाले दृश्य की तरह से फैलती चली गई, एक के बाद एक विकीर्णन होता चला गया (Shoot Shoot, Shoot) *इस प्रकार से।*

देवी-देवता आए और अपने सिंहासनों पर बैठते चले गए-स्वर्णिम सिंहासनों पर, और फिर उन्होंने पूरे सिर को इस तरह से उठाया मानो गुम्बद हो और इसे खोल दिया। तत्पश्चात् इस मूसलाधार वर्षा ने मुझे शराबोर कर दिया।

मैं ये सब देखने लगी और आनन्द-मग्न हो गई। ये सब ऐसा था मानो कोई कलाकार अपनी ही कृति को निहार रहा हो और मैंने महान सन्तुष्टि के आनन्द का अहसास किया।

इस सुन्दर अनुभव के आनन्द को प्राप्त करने के बाद मैंने अपने चहुँ ओर देखा और पाया कि मानव कितना अंधकार में है, और मैं एकदम चुप हो गई। मेरे मन में इच्छा हुई कि मुझे कुछ ऐसे प्याले (पात्र) मिलने चाहिएं जिनमें मैं यह अमृत भर सकूं। केवल पत्थरों पर इसे न डालूं। **(परम पूज्य श्रीमाताजी, सहस्रार दिवस पूजा, Le Raincy, फ्रांस, 5 मई 1982)**

तीस वर्षों से भी अधिक समय से श्रीमाताजी अत्यन्त शान्तिपूर्वक निरन्तर कठोर परिश्रम कर रही हैं। उनकी अत्यन्त विशिष्ट कुण्डली है जिससे बहुत कुछ प्रकट होता है। श्रीमाताजी और सहजयोग की कुण्डली बनाने वाले एक भारतीय ज्योतिषविद् का कहना है कि अगले कुछ ही वर्षों में उनका संदेश विश्व भर में फैल जाएगा। संभवत: गोपनीयता का समय समाप्त हो गया है।

कवच वस्त्र धारण किए हुए

आस्ट्रेलिया में अल्बर्ट लेविस एक कहानी का वर्णन करते हैं जो दर्शाती है कि श्रीमाताजी जो दिखाई देती हैं उससे कहीं अधिक हैं।

मई 1983 में आस्ट्रेलिया प्रवचन यात्रा समाप्त करके भारत जाते हुए श्रीमाताजी कुलालम्पुर रुकीं जहाँ उन्होंने कुछ जन कार्यक्रम करने थे। सिंगापुर हवाई अड्डे पर मुझे और मेरे एक मित्र को मुम्बई की उनकी उड़ान पर उनके साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हवाई जहाज पर चढ़ने से पहले धातु खोजी यन्त्र के सामने से निकलने के लिए खड़े लोगों की लाइन में हम प्रतीक्षा कर रहे थे। ज्यों ही श्रीमाताजी धातु खोजी यन्त्र के बीच में से निकलने लगीं सारी बत्तियाँ जलने लगीं और सभी गुंजक (Buzzers) *आवाजें करने लगे। सुरक्षा परिचर ने श्रीमाताजी को एक ओर बुलाया। ध्वनि सुरक्षा द्वार में से पार होने के बाद हम वहाँ गए जहाँ श्रीमाताजी को रोका हुआ था।*

श्रीमाताजी एक विशेष प्रकार के पारम्परिक भारतीय साड़ी और ब्लाऊज पहने हुए थीं। सुरक्षा परिचर अपने हस्त-धातु-खोजी यन्त्र से पता लगाने का प्रयास कर रहा था कि श्रीमाताजी के पास कोई धातु पदार्थ तो नहीं है। श्रीमाताजी पर यन्त्र उपयोग करते हुए लगातार गुन्जन की आवाज़ होती रही, उनकी नंगी बाजुओं से भी यन्त्र आवाज़ करता रहा जिससे उस सुरक्षाकर्मी के आश्चर्य की सीमा न रही। अपनी बाजु पर लगाकर उसने अपने यन्त्र को जाँचा और यन्त्र ने केवल तभी आवाज़ की जब वह केवल उसकी घड़ी पर से निकला। थोड़ा सा झेंपते हुए एक बार फिर श्रीमाताजी के सम्मुख वह उस यन्त्र को ले गया, विशेष रूप से उनकी नंगी बाजुओं के समीप और यन्त्र लगातार गुंजन करता रहा।

धातु खोजी यन्त्र के अनुसार रेशमी साड़ी और छोटी बाजुओं वाला ब्लाऊज पहने हुए वह भारतीय महिला कवच सूट पहने हुए थी। अपनी आँखों के सम्मुख घटित होने वाली इस घटना तथा यात्रियों की बढ़ती हुई पंक्ति, जो बिना किसी रोक-टोक के धातु खोजी द्वार में से निकलती जा रही थी, से विचलित होकर उसने श्रीमाताजी को आगे बढ़ने के लिए अपना हाथ हिलाया। दबी हँसी हँसते हुए श्रीमाताजी हवाई जहाज पर चढ़ने वाले कक्ष की ओर चल पड़ीं।

ये सारा कार्य दस या पन्द्रह सैकण्ड में ही हो गया। हम दोनों ने इसे देखा और पूर्णतः आनन्दित हो उठे। मुझे सन्देह है कि उस प्रातःकाल व्यस्त हवाई अड्डे के उस कक्ष में किसी अन्य को इस घटना का ज़रा भी एहसास हुआ हो!

सभी अवतरणों का समन्वयन

श्रीमाताजी ने मुझे औरंगाबाद के एक भारतीय लड़के के बारे में बताया जिसने किसी जन कार्यक्रम में उनसे एक बहुत अच्छा प्रश्न पूछा था। उस लड़के को उत्तर देने के पश्चात् उन्होंने इसे अपनी डायरी में लिख लिया। डायरी उनसे परे एक मेज पर पड़ी हुई थी। मैं उठकर उन्हें डायरी देना चाहती थी परन्तु इसके लिए उन्होंने इन्कार कर दिया। वे स्वयं बाईं ओर को झुकीं

और डायरी अपनी ओर खींच ली। श्रीमाताजी के शब्दों को मैं लिखना चाहती थी परन्तु श्रीमाताजी ने केवल सुनने के लिए कहा।

उन्होंने मुझे बताया, ''कि औरंगाबाद जन-कार्यक्रम में एक लड़के ने मुझसे बहुत अच्छा प्रश्न पूछा था जिसे मैंने अपनी डायरी में लिख लिया है, वही मैं तुम्हें बताऊंगी।''

प्रश्न यह था, **''यह परम चैतन्य अनुभव से परे है। आज कल हम इसे कैसे महसूस कर लेते हैं?''**

श्रीमाताजी ने उसे बताया कि समय-समय पर बारी-बारी से अवतरण पृथ्वी पर आए और अपना दिव्य संदेश दिया। परन्तु ये अवतरण, जो श्रीमाताजी हैं (इस बिन्दु पर श्रीमाताजी ने दाईं विशुद्धि की उंगली अपनी ओर उठाई, उन्होंने लाल बार्डर वाली हल्के सफेद रंग की साड़ी पहनी हुई थी और मैं उन्हें विराट के रूप में देख सकी) सभी अवतरणों का पूर्णीकरण हैं और पृथ्वी पर अवतरित होकर परमेश्वरी कार्य कर रही हैं। इसी कारण से हम चैतन्य लहरियों को अपनी नस-नाड़ियों पर महसूस करते हैं, यद्यपि ये चैतन्य लहरियाँ मानव की संवेदना से परे की चीज़ हैं। ***(शकुन्तला तान्दले)***

ज्ञान का पावन स्रोत

फेलिसिटी पेमेंट, जो अब वैंकूवर कनाडा में हैं, वो अपना एक अनुभव बताती हैं जिसे श्रीमाताजी को पहचानने वाले हममें से बहुत से लोगों ने भी महसूस किया होगा। चाहे जिस क्षेत्र में हम प्रवीण रहे हों, श्रीमाताजी उसके विषय में हमसे ज्यादा जानती हैं।

हम लोग श्रीमाताजी के साथ शेरबोन, डॉरसेट, इंग्लैण्ड (Sherbourne, Dorset, England) *के तेरहवीं शताब्दी के एक सुन्दर मठ के मध्य में खड़े थे। हमने अपने घर मिलफार्म डॉरसेट इंग्लैण्ड में सप्ताहान्त गोष्ठी समाप्त की ही थी और उन दिनों श्रीमाताजी जहाँ भी होतीं उस क्षेत्र को चैतन्यित करने के लिए बाहर जाया करती थीं। उन्होंने ऊपर की ओर मठ की चूना-पत्थर की छत में महराबदार पुश्ते* (Vaulted Buttresses) *की ओर देखा।*

''आपके ख्याल से उन्होंने ये महराब कैसे बनाए?'' अपने हाथों से इशारा करते हुए उन्होंने कहा, ''मानों स्वयं पर ही हैरान हों! मैंने एक पथ प्रदर्शक पुस्तिका पकड़ी हुई थी।

''हो सकता है इसमें इनके बारे में बताया गया हो,'' मैंने कहा, परन्तु इससे पूर्व की मैं कुछ खोजता, श्रीमाताजी ने वहाँ की पूरी वास्तुकला का वर्णन कर दिया, मानो अपने प्रश्न का उत्तर वो पहले से ही जानती हों!

बाद में जामेल मैतोरी *ने कहा कि उसने श्रीमाताजी से एक बार वायु-गतिकी* (Airodynamics) *पर चर्चा की थी और श्रीमाताजी ने वायु-गतिकी सिद्धान्त की सूक्ष्म से सूक्ष्म तकनीकों के बारे में भी बताया। इस घटना ने मुझे एहसास करवाया कि निःसन्देह श्रीमाताजी ज्ञान का पावन स्रोत हैं। वे हर चीज़ के विषय में सभी कुछ जानती हैं।*

दैवी वरदान (Charisma)

वैंकूवर में किसी और वक्त, एक अन्य सहजयोगी ने अपना अनुभव बताया जिसमें श्रीमाताजी के करिश्में की ओर इशारा किया गया है।

वैंकूवर में हवाई-अड्डे से आश्रम, जहाँ श्रीमाताजी ने रातभर ठहरना था, जाते हुए मैं श्रीमाताजी के साथ था। ज्यों ही हम पहुँचे, एक बहुत बड़ा तूफान आया और श्रीमाताजी ने कहा कि यह श्रीकृष्ण की बहन श्री विष्णु माया का कार्य है। बिजली और बिजली का कड़कना दोनों इसकी शक्तियाँ हैं। आश्रम पहुँचकर जब श्रीमाताजी बैठीं तो उनके चरण-कमलों पर नमस्कार करने के लिए कुछ और सहजयोगी आए। ज्यों ही उन्होंने नमस्कार किया, कमरे के अन्दर बिजली की एक चमक श्रीमाताजी के चरण-कमलों तथा उन लोगों के बीच में कौंध गई। वहाँ आश्चर्यजनक चैतन्य फैल गया!

आलौकिक शक्ति

श्रीमाताजी यदि चाहें तो उनमें आलौकिक शक्ति है। रूथ फ्लिंट, डविलियो कारटोसी और जिओवनी अलबेनेसी, जिन्होंने कभी न खत्म होने वाली सीमेंट की बोरी तथा अन्य कथाएं सुनाई थी उससे यही प्रमाणित होता है।

जिस सप्ताहान्त में कभी न खत्म होने वाले सीमेंट का चमत्कार हुआ उसी में लन्दन के ब्राम्पटन स्कवैयर वाले घर में कुछ लोगों ने आना था, बहुत से लोग फर्नीचर आदि को हटा रहे थे। इटली के कुछ युवाओं को श्रीमाताजी ने ठोस लकड़ी से बने हुए अपने पलंग को हटाने के लिए कहा, वो लोग पलंग को ढकेल रहे थे परन्तु पलंग एक सेंटीमीटर भी न हिल पाया।

रूथ (Ruth)

हम तीनों को एक अत्यन्त भारी लकड़ी का पलंग हटाना पड़ा। पलंग के पैरों की ओर घुटनों पर बैठकर हमने पलंग को धकेला परन्तु पलंग बिल्कुल न हिला। ***(Duilio)***

मैं कमरे में श्रीमाताजी का सूटकेस बन्द कर रही थी। श्रीमाताजी पलंग के पास आईं और घुटने से उसे धकेला और पलंग एकदम से आगे चला गया। ***रूथ (Ruth)***

उसी क्षण मैंने अपना सिर घुमाया तो देखा कि श्रीमाताजी पैरों की ओर से पलंग को अपने घुटने से छू रही थीं। तुरन्त पलंग दीवार की ओर ठीक स्थान की ओर इस प्रकार भागा कि हम जमीन पर जा गिरे। ***(Duilio)***

अत्यन्त हैरानी और सदमे के कारण इटली के सहजयोगियों के मुँह से निकला, "आह!" श्रीमाताजी हँसी और कहा, "ठीक है, आखिरकार मैं आदिशक्ति हूँ, तो इस पलंग को धकेल देना मेरे लिए आम बात है।" उनके सम्मुख सभी लोग भयमुद्रा में खड़े हुए थे!

रूथ (Ruth)

उसी दिन, कपड़ों की एक बहुत बड़ी अलमारी थी। पुरुषों ने उसे खिसकाना चाहा परन्तु

कोई भी उसे खिसका न पाया। परन्तु श्रीमाताजी के एक अंगुली छुआने मात्र से वह अलमारी खिसक गई। **जिओवनी**

आस्ट्रेलिया के Kay McHugh *ने श्रीमाताजी के शरीर से विकीर्णित होने वाली असाधारण रोगहर (*Heeling*) शक्ति का एक अन्य उदाहरण दिया:–*

भारत में पुणे से मुम्बई जाने वाली रेलगाड़ी में मैं श्रीमाताजी के सम्मुख बैठा हुआ था। वे खिड़की के साथ वाली सीट पर थीं और मैं उनके सामने बैठा हुआ था। हमारे साथ एक आस्ट्रेलिया के और एक भारतीय व्यक्ति थे। श्रीमाताजी ने आस्ट्रेलिया के व्यक्ति को खड़ा होने को कहा, वे स्वयं बैठी रहीं और वह व्यक्ति उनके सिर के तालू (सहस्रार चक्र) को अपने हाथ से नीचे की ओर दबा रहा था। वे उसका सहस्रार चक्र खोलने का प्रयत्न कर रही थीं, परन्तु वह नीचे की ओर दबा रहा था। वह छः फुट लम्बा था और पूरी ताकत से श्रीमाताजी के तालू को नीचे की ओर दबा रहा था और श्रीमाताजी कह रही थीं:

"और जोर से!" "और ज़ोर से, और ज़ोर से दबाओ!" वे हँस रही थीं क्योंकि वह व्यक्ति और अधिक ज़ोर से उनका सिर न दबा पा रहा था। वह इतने ज़ोर से दबा रहा था कि उसे पसीने आ गए। वे वहाँ आराम से बैठी हुई थी, हँस रही थीं बातें कर रहीं थीं और सिर को घुमा रहीं थी, इस प्रकार से मानो उनके सिर पर एक हल्का-सा पंख रखा हुआ हो। वह व्यक्ति खड़ा हुआ पूरी ताकत से सिर को दबा रहा था और पसीने-पसीने हो रहा था, परन्तु श्रीमाताजी पर बिल्कुल असर न हुआ। वे रेल में बैठे हुए लोगों से बातचीत करते हुए अत्यन्त सुन्दर लग रही थीं।

एक अन्य अवसर पर हम श्रीमाताजी के साथ एक अस्पताल गए जहाँ आत्म-साक्षात्कार पाने के पश्चात् एक सहजयोगी की माँ किसी कुगुरु के पास गई और उसे अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। वह अन्धी हो गई थी और करुणामयी माँ उसे देखने के लिए अस्पताल गईं थीं।

"अब आप अन्दर न आएं," उन्होंने मुझसे कहा, और अस्पताल के अन्दर चली गईं और कुछ समय पश्चात् पुनः बाहर आ गईं। मैं हैरान था क्योंकि वे कार में मेरे सामने आगे वाली सीट पर बैठीं और, क्योंकि उन्होंने उस महिला के अन्धेपन पर कार्य किया था, उनकी पीछे की आज्ञा, सिर का पिछला भाग पूरी तरह से पकड़ गया था और यह डेढ़ इंच बाहर की ओर धड़क रहा था। इस धड़कन को देखा जा सकता था। मैं वहाँ बैठा हुआ था और श्रीमाताजी की आज्ञा को ऊपर-नीचे धड़कते हुए देखकर आश्चर्य से मेरा मुँह खुल गया था। स्पष्ट था कि वे पीछे की आज्ञा पर कार्य कर रहीं थीं। इसे देखना, पीछे की आज्ञा की हड्डी को ऊपर नीचे होते हुए और धड़कते हुए देखना, वास्तव में आश्चर्यजनक अनुभव था।

सूर्य के प्रकाश सम होना

यूगोस्लाविया के Miodrag Radosaljevic, *जो अब लन्दन में रहते हैं, बताते हैं कि किस प्रकार श्रीमाताजी ने स्वयं अपने सूर्य सम होने की व्याख्या की। इंग्लैण्ड के देहात में जब*

हमने गोष्ठी की तो उस समय एक चमत्कार का अनुभव किया। बहुत पहले, 1979 की बात है, जब श्रीमाताजी आईं तो घने बादल छाए हुए थे, सूर्य का प्रकाश न था। बहुत ही धुँधलापन और भारीपन था। उस समय सहजयोग में सन्देहों की भरमार थी। हमसे बातचीत करते हुए श्रीमाताजी कह रहीं थी कि वे श्री कृष्ण और भगवान ईसामसीह की शक्तियों तथा सभी दिव्य पक्षों की अभिव्यक्ति करती हैं।

उन्होंने कहा, कि यह प्रकाश सम है। उसी क्षण न जाने कहाँ से एक सूर्य किरण आई, उनके सिर पर चमकी और चली गई। इसे प्रमाणित करने के लिए उन्होंने कहा कि सूर्य किरण को पुन: उनके सिर पर आना चाहिए। ऐसा दो-तीन बार घटित हुआ। किसी अदृश्य दिशा से सूर्य आ जाता। वहाँ उपस्थित लगभग पचास सहजयोगियों के साथ मैं भी इस दृश्य का साक्षी था।

सभी ब्रह्माण्ड मेरे शरीर में चक्र बन जाते हैं

श्रीमाताजी से एक बातचीत ने ग्रेगोर डी कलबरमैटन को भय एवं विस्मय से भर दिया। ये एक असामान्य बात-चीत थी, परन्तु ये घटित हुई। संभवत: इसके शब्द पूरी तरह से वही न हों, परन्तु इसके अर्थ के विषय में मुझे कोई सन्देह नहीं है :-

''........परन्तु श्रीमाताजी, यह वास्तव में घोर कलियुग है। क्या पहले भी कभी ऐसे कलियुग आए?''

''इससे पूर्व भी बहुत से कलियुग आए परन्तु यह (उनमें से) निकृष्टतम है।''

''परन्तु पहले स्वर्णिम युग भी तो आए होंगे?''

''नि:सन्देह। युगों की श्रृंखला कल्प की रचना करती है, जो आपका ब्रह्माण्ड है।''

''हमारे ब्रह्माण्ड का अन्त कब होगा?''

''यदि सदाशिव तांडव नृत्य कर उठें तो परमात्मा के बन्दे वापिस परमात्मा के पास चले जाएंगे और बाकी सभी कुछ नष्ट हो जाएगा। परन्तु सहजयोग के कारण, मैं नहीं सोचती, अब ऐसा होगा।''

''यदि हमारे ब्रह्माण्ड इसी प्रकार जाते हैं तो इसका अर्थ ये हुआ कि इससे पूर्व भी अन्य ब्रह्माण्ड रहे होंगे?''

''हाँ, बहुत से।''

''परन्तु श्रीमाताजी, समाप्त होने के बाद ये ब्रह्माण्ड कहाँ जाते हैं?''

''वे मेरे शरीर (विराट) में चक्र बन जाते हैं''

मुझ पर विश्वास करें कि इस प्रश्न के बाद कोई अन्य प्रश्न न बचा था। व्याप्त मौन दुग्ध-सरिता (आकाश गंगा) सम स्पष्ट था।

आनन्द ताण्डव

आनन्द ताण्डव के विषय में श्रीमाताजी की टिप्पणी का वर्णन करते हुए स्वर्गीय श्री हरीश

कोली (जिसने मुम्बई में 1979 में आत्म- साक्षात्कार प्राप्त किया था) की पुत्री ने इस प्रकार बताया :-

सहजयोग में आने के पश्चात् श्री कोली ने सभी देवी-देवताओं की तस्वीरें समुद्र में प्रवाहित कर दीं। उन्होंने कहा, ''यदि श्रीमाताजी आदिशक्ति हैं तो मुझे अन्य तस्वीरों की आवश्यकता नहीं है,'' परन्तु आदिशक्ति के चरणों में नाचते हुए वर्तमान मन्त्र पुस्तिका में छपी देवी-देवताओं की तस्वीरें फेंकने की हिम्मत उनमें न थी। अलीबाग में एक दिन दोपहर के भोजन के पश्चात, जब श्रीमाताजी वहाँ हमारे साथ थीं, श्री हरीश ने उनसे पूछा, ''श्रीमाताजी मुझे ऐसे लगता है कि आप ही वहाँ बैठी हुई हैं, परन्तु इस तस्वीर का क्या अर्थ है?''

श्रीमाताजी ने उत्तर दिया :—

''सभी देवी-देवताओं ने स्वर्ग में एक सभा की क्योंकि वे ये न जानते थे कि मानव का क्या किया जाए। परमात्मा के जिस भी अंश (अवतरण) को पृथ्वी पर भेजा गया लोगों ने उसे सताया जैसे ईसामसीह, श्री राम, श्री कृष्ण। तो उस समय आदिशक्ति ने कहा, ''मैं मानव-मात्र की माँ के रूप में, एक सर्वसामान्य व्यक्ति के रूप में, पृथ्वी पर जाऊंगी, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसे जीवन की सभी चिंताएं, उदासियाँ और खुशियाँ हों। मैं हर स्थिति को सहन करूंगी और माया को भी सहन करूंगी। श्री आदिशक्ति की ये घोषणा देवी-देवताओं के लिए वरदान थी। यह तस्वीर उसी आनन्ददायी घटना के समय की है जब देवी-देवता नृत्य कर रहे हैं। आदि-शक्ति यहाँ उनकी सहायता के लिए हैं।''

इस तस्वीर को 'आनन्द ताण्डव' अर्थात 'आनन्दमय नृत्य' नाम श्रीमाताजी ने दिया। (तस्वीर का आनन्द लेने के लिए निर्मल सुरभि के अन्दर के आवरण पृष्ठ को देखें)

इस घोषणा के बाद श्री माताजी ने कहा कि श्री कोली को चाहिए कि इस तस्वीर की हज़ारों प्रतियाँ बनाए और विश्वभर के सहजयोगियों में बाँटें ताकि सभी के घर में इसकी एक प्रति अवश्य हो। ये तस्वीर सभी के लिए आनन्द एवं प्रेमदात्री है।

“बोलो आदिशक्ति श्रीमाताजी श्री निर्मला देवी की जय...
महालक्ष्मी ... महासरस्वती ... महाकाली की जय...

“इस महामाया को पृथ्वी पर अवतरित होना पड़ा, अपने पावन रूप में आदिशक्ति को नहीं, ये अगम्य हैं। अत: उन्होंने महामाया रूप धारण कर लिया।”

(परम पूज्य श्रीमाताजी, **Fregene, Italy**, 08.05.1988)

यह स्थान अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग संगोष्ठियों के लिए उपयोग किया जाएगा

गणपति पुले

"ठीक है अब देखो मैं लहरों की दिशा परिवर्तित करूंगी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी अरब सागर तट, गणपति पुले में सहजयोगियों को प्रबुद्ध करते हुए)

परम पूज्य श्रीमाताजी के साथ गणपति पुले में

कुछ समय पूर्व गणपति पुले कार्यक्रम आरम्भ होने से पहले श्री चव्हाण और सात योगी रत्नागिरि में जन-कार्यक्रम करने के लिए श्रीमाताजी के साथ गए। कार्यक्रम समाप्त होने के पश्चात् बम्बई वापिस जाने के लिए उन्होंने एक नाव पकड़नी थी। ये बताने के बाद भी कि नाव बहुत देर से आयेगी, श्रीमाताजी ने कहा कि उन्हें नाव के लिए चल देना चाहिए। जयगढ़ नामक स्थान से नाव पर सवार होना था। श्री चव्हाण कहते हैं कि 'मैं जानता था कि हम बहुत जल्दी कर रहे हैं और वहाँ जाकर समय बिताने का कोई साधन नहीं है।'

मैंने श्रीमाताजी से कहा, ''श्रीमाताजी यहाँ श्री गणेश का एक मन्दिर है जो समुद्र में भी है और पृथ्वी पर भी, हम जाकर उसे देख सकते हैं। ये केवल आधे घण्टे की दूरी पर है, अत: हम आसानी से समय पर वापिस भी आ जाएंगे।

श्रीमाताजी ने कहा, ठीक है। हम सब कारों में लद गए और इस गणेश मन्दिर को देखने के लिए गए।

ये गणेश मन्दिर समुद्र के स्तर पर है और जब भी समुद्र में ज्वार आता है तो समुद्र की लहरें मन्दिर में घुस जाती हैं। श्रीमाताजी ने मन्दिर के अन्दर प्रवेश किया, जहाँ समुद्र स्तर पर स्वयंभू स्थापित थे और लगभग दस मिनट तक वहाँ की चैतन्य-लहरियाँ जाँचती रहीं।

बाहर आकर श्रीमाताजी ने हमें बताया कि ये स्वयंभू अत्यन्त जागृत एवं शक्तिशाली हैं। वास्तव में यह महाराष्ट्र के अष्टविनायक से भी अधिक शक्तिशाली है। महाराष्ट्र में आठ स्वयंभू गणेश हैं जो पृथ्वी के गर्भ से स्वयं प्रकट हुए हैं।

तब श्रीमाताजी ने चव्हाण से पूछा, ''इससे पूर्व तुम्हारी दृष्टि इस पर क्यों नहीं पड़ी?'' चव्हाण ने कहा कि सहजयोग में आने के बाद वो पहली बार यहाँ आया है। श्रीमाताजी ने कहा कि ये स्थान हमारी अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियों के लिए उपयोग किया जाएगा। तब श्रीमाताजी ने स्वंयभू के विषय में बताया। इसमें श्री गणेश की शक्तिशाली चैतन्य लहरियाँ हैं और समुद्र, भवसागर, आदिगुरुदत्तात्रेय का अत्यन्त शक्तिशाली चैतन्य भी है। अत: यहाँ आने पर कम से कम दो चक्र मूलाधार और भवसागर तो स्वच्छ हो ही सकते हैं।

तब चव्हाण ने ये सोचना शुरु किया कि यहाँ संगोष्ठी आयोजन किस प्रकार किया जाए-"इस कार्य को करने के लिए यहाँ मैं किसी को पहचानता भी नहीं"।

तब श्रीमाताजी ने कहा, "तो अब तुम इस बात की चिन्ता में पड़ गए हो कि किस प्रकार इस कार्य को किया जाए। चिन्ता मत करो। मैं सभी कुछ करूंगी और उपयुक्त समय आने पर बताऊंगी कि क्या करना है और स्वत: ही सभी कुछ कार्यान्वित हो जाएगा।

तत्पश्चात् हम सबने निर्णय किया कि चलकर सूर्यास्त देखें और पानी पैर क्रिया करें। तभी श्रीमाताजी ने कहा कि ''अब मैं तुम्हें एक चमत्कार दिखाऊंगी। समुद्र की ओर देखें और मुझे बताएं कि आपको क्या दिखाई दिया?

''नहीं,! श्रीमाताजी चहुँ ओर से, सभी दिशाओं से, लहरें हमारी ओर आती दिखाई दे रही हैं। लहरें हमारी ओर आ रही हैं।

तब श्रीमाताजी ने कहा, ''अच्छा अब देखो। मैं लहरों की दिशा बदल दूंगी।''

तब श्रीमाताजी दक्षिण की ओर चल पड़ीं और लहरें भी उसी दिशा में मुड़ गईं। इसके बाद श्रीमाताजी दूसरी दिशा की ओर मुड़ीं और लहरें भी उसी ओर मुड़ गईं। तब श्रीमाताजी शान्त खड़ी हो गईं, सभी लहरें भी रुक गईं। ऐसा लगा मानो रुककर वे अगले आदेश की प्रतीक्षा कर रही हों।

श्रीमाताजी ने पुन: कहा, ''हो सकता है कि आपको ये सन्देह हो कि शायद हवा के कारण ऐसा हुआ है, इसलिए मैं आपको पुन: दिखा ऊंगी।''

तब उन्होंने वही सब पुन: किया। श्रीमाताजी ने कहा कि दूसरी बार वे यह चमत्कार कर रही हैं। पहली बार उन्होंने ऐसा अमेरिका में किया था।

गणेश मन्दिर देखने के बाद वे सब नाव की प्रतीक्षा के लिए जयगढ़ गए। तब तक सूर्यास्त हो चुका था और वे बन्दरगाह पर प्रतीक्षा कर रहे थे।

तब श्रीमाताजी ने कहा, ''अब मैं आप सबको एक और चमत्कार दिखाऊंगी। गणेश मन्दिर उस दिशा में है।'' और उन्होंने एक ओर उंगली उठाई, ''अब देखो, वहाँ तुम्हें कुछ दिखाई दे रहा है?''

सभी ने कहा, ''नहीं श्रीमाताजी, हमें कुछ दिखाई नहीं दे रहा।''

श्रीमाताजी ने पुन: उसी ओर इशारा किया और कहा, ''पुन: देखो।''

ज्योंही उन्होंने देखा, एक विशाल प्रकाश किरण धीरे-धीरे उनके सम्मुख प्रकट हो रही थी। यह बहुत बड़ा बेलनाकार प्रकाश का कुछ था, मानों हजारों वोल्ट प्रकाश पृथ्वी माँ से निकलकर सीधे आकाश में जा रहा हो।

''यहाँ आस-पास कोई और प्रकाश नहीं है, चाँद का प्रकाश भी नहीं है, अत: यह प्रकाश गणेश मन्दिर से आ रहा है,'' श्रीमाताजी ने कहा। ''ये प्रकाश तब तक नहीं रुकेगा जब तक मैं इसे रुकने के लिए नहीं कहती। ये प्रकाश श्री गणेश के स्वयंभू में से आ रहा है और मैं इसे निकाल रही हूँ। तब श्रीमाताजी ने हमसे पूछा, कि क्या हम सबने यह प्रकाश देख लिया है और क्या वे इसे बन्द कर दें?

सभी उपस्थित सहजयोगियों ने कहा कि उन्होंने वह प्रकाश देख लिया है और अब श्रीमाताजी गणेश मन्दिर से निकलने वाले उस प्रकाश को रोक सकती हैं। दस मिनट तक वह प्रकाश वहाँ पर था।

हम सब अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं कि ऐसा चमत्कार देख पाए, इसके पश्चात् मैं कभी ऐसा कुछ और न देख पाया। ***(पी. डी. चव्हाण)***

इतिहास का एक हिस्सा

कुछ वर्षों तक हममें से बहुत से लोग श्रीमाताजी की अपनी व्यक्तिगत स्मृतियों को सामूहिक रूप से संकलित करने की संभावना के विषय में सोचते रहे, पिछले लगभग बीस वर्षों या इससे भी अधिक समय तक। वास्तव में श्रीमाताजी ने भी कुछ लोगों को ये कार्य करने के लिए कहा था, उन लोगों को ये सब बताने के लिए जो इसके विषय में न जानते थे।

दिसम्बर 1999 में श्रीमाताजी ने गणपति पुले एम.टी.डी.सी. के अपने बंगले पर मुझे बुलाया। यह, 44, चैलशेम रोड के विषय में था जिसे मैं दस वर्ष पूर्व बेच चुकी थी। इस मुलाकात में मैं कुछ अधिक न कह पाई क्योंकि कमरे में श्रीमाताजी के साथ बहुत से अन्य लोग थे और वे किसी समस्या के समाधान में लगी हुईं थीं। मैं उनके सुन्दर मुख को देखने, उनकी स्वर्गीय चैतन्य लहरियों में स्नान करने तक ही सीमित रही।

तब मैंने महसूस किया कि यद्यपि मैंने उन लोगों को जाते हुए न देखा था, अन्य लोग चले गए थे और मैं अकेली श्रीमाताजी के पास थी। मैंने अवसर का लाभ उठाया और कहा, "श्रीमाताजी मैं आपसे एक प्रश्न पूछूं? श्रीमाताजी ने उत्तर दिया, "हाँ।" मैंने कहा कि क्या हम उनकी व्यक्तिगत स्मृतियों और उनके अवतरण के मानवीय पक्ष की एक पुस्तक बना सकते हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि यह इतिहास का एक हिस्सा है तथा यह कार्य किया जाना चाहिए। इस प्रकार से यह आरम्भ हुआ क्योंकि इस प्रकार की परियोजना को करने के लिए हमें उनकी आज्ञा लेना आवश्यक था। ***(लिन्डा विलियम्स)***

('श्रीमाताजी कौन हैं तथा कुछ भारतीय संस्मरण' के अध्याय-25 से उद्धृत)

"यदि आप मुझसे एकरूप हैं तो मैं सदा आपके माध्यम से कार्य करती हूँ।
जब भी मैं बोलती हूँ, आप बोलते हैं।
और जब आप बोलते हैं, मैं बोलती हूँ, ये बात आप जानते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 25.09.1984)

"मैंने घोषणा की है कि यह विश्व धर्म है, निर्मल-धर्म, जिसे मेरी प्रेम शिक्षा से बनाया गया है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, बोर्डी, भारत, 06.02.1985)

माँ को पहचानो

"...मुझे महामाया बनना पड़ा। मुझे कुछ ऐसा बनना पड़ा ताकि लोग मुझे आसानी से न पहचान सकें........।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, फ्रेजीन, इटली, 08.05.1988)

श्रीमाताजी को मिले अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार एवं मान्यताएं

सहजयोग के माध्यम से आध्यात्मिक शिक्षाओं, जिनके अद्‌भुत परिणाम प्राप्त हुए हैं, तथा अपने नि:स्वार्थ कार्य के कारण विश्वभर की बहुत सी सम्माननीय संस्थाओं ने श्रीमाताजी को पुरस्कृत किया है एवं मान्यता प्रदान की है। इनमें से कुछ पुरस्कार एवं मान्यताएं निम्नलिखित हैं :-

संयुक्त राष्ट्र, न्यूयार्क 1989-94

संयुक्त राष्ट्र ने लगातार चार वर्षों तक 'विश्व शान्ति प्राप्ति' विषय पर भाषण देने के लिए श्रीमाताजी को आमन्त्रित किया।

ब्राजील-1994

ब्राजीलिया नगर के मेयर ने हवाई-अड्डे पर श्रीमाताजी का स्वागत किया, उन्हें नगर की चाबी भेंट की तथा नगर में होने वाले उनके कार्यक्रम अनुदानित किए।

इटली-1986

इटली की सरकार ने उन्हें ''वर्ष का सर्वोत्तम व्यक्ति'' (Personality of the Year) *घोषित किया।*

रोमानिया-1995

'सम्मानार्थ संज्ञानात्मक विज्ञान के डॉक्टर' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

योंकर्ज (Yonkers) न्यूयार्क-1996

योंकर्ज न्यूयार्क के मेयर ने स्वागतपत्र प्रदान किया। 26 सितम्बर को 'श्रीमाताजी निर्मला देवी दिवस' घोषित किया गया।

न्यूयार्क, यू.एस.ए.-1994

महात्मा गाँधी के साथ उनके साहचर्य का उत्सव मनाते हुए और श्रीमाताजी के सम्मान में स्वागत परेड के लिए पुलिस मार्गरक्षी (Police Escort) *प्रदान किए गए। पाँचवें एवेन्यू से आरम्भ होकर आधे दिन की इस परेड ने सेन्ट्रल पार्क की परिक्रमा की।*

लॉस एंजलिस, यू.एस.ए.-1993-94

लॉस एंजलिस जनता की ओर से मेयर रिचर्ड रियोर्डन ने स्वागत एवं निरन्तर मित्रता का पत्र भेंट किया।

ब्रिटिश कोलम्बिया, कनाडा–1994

ब्रिटिश कोलम्बिया के जिला प्रधान श्री माइक हरकोर्ट ने कनाडा के लोगों की ओर से स्वागत पत्र भेंट किया।

वैंकूवर, कनाडा–1994

कनाडा की जनता की ओर से मेयर फिलिप डब्ल्यू ओवेन ने स्वागत पत्र भेंट किया।

फिला–डैल्फिया, यू०एस०ए०–1993

15 अक्टूबर को "श्रीमाताजी निर्मला देवी दिवस" घोषित किया गया।

सिनसिनाटी, ओहिओ, यू०एस०ए०–1992

10 सितम्बर को 'श्रीमाताजी निर्मला देवी दिवस' घोषित किया गया।

सेंटपिट्र्सबर्ग, रूस–1993

पेट्रोवास्किया कला एवं विज्ञान अकादमी की स्थायी समिति का अवैतनिक सदस्य नियुक्त किया। (Member of the Presidium of Petrovskaya Academy of Art and Science) *अकादमी के इतिहास में केवल बारह लोगों को ये सम्मान दिया गया है। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टाइन भी इन्हीं में से एक हैं।*

सेंटपिट्र्सबर्ग, रूस–1993

"भेषज एवं आत्मज्ञान" के वार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारम्भ किया। हर वर्ष अब ये सम्मेलन रूस में होता है।

मास्को–1989

श्रीमाताजी यू.एस.एस.आर. के स्वास्थ्य मंत्रालय के मुखिया से मिलीं। इस मुलाकात के बाद सहजयोग के प्रसार एवं वैज्ञानिक शोध के लिए पूर्ण सरकारी अनुदान एवं सहायता प्रदान की गई।

भारत–1995

भारत सरकार ने दूरदर्शन शृंखला में उत्कृष्ट समय पर एक घण्टे का समय प्रदान किया।

चीन–1995

चीन के लोगों को सम्बोधित करने के लिए चीन सरकार की सरकारी मेहमान।

105वीं कांग्रेस, 1997 और 106वीं कांग्रेस-2000, यू०एस०ए०

मानव हितार्थ श्रीमाताजी के समर्पित एवं अथक कार्य के लिए कांग्रेस सदस्य Eliot Engle *ने कांग्रेस के रिकार्ड में सम्मान वक्तव्य पढ़ा।*

Claes Nobel (Alfert Nobel) *के (नोबेल शान्ति पुरस्कार संस्था, पोते-भतीजे) यूनाइटिड अर्थ आरगेनाइजेशन के अध्यक्ष ने कहा–*

"श्रीमाताजी की खोज मानव को सच्ची आशा प्रदान करती है"

भारत, 2001; पुणे में मानव-रत्न पुरस्कार।

इटली की सम्माननीय नागरिक-2006

कबेला लीग्रे अलेजान्ड्रिया, इटली के निगम दफ्तर की स्थानीय सभा ने 'इटली की सम्माननीय नागरिक' पुरस्कार के लिए परम पूज्य श्रीमाताजी को सर्वसम्मति से चुना। उनके महान कार्य और जीवन सम्पन्न करने वाले अनुभव को मान्यता देते हुए उत्कृष्टतम सम्मान के साथ श्रीमाताजी को यह पुरस्कार भेंट किया गया। वर्ष 1991 में, कबेला लीग्रे में परम पूज्य श्रीमाताजी के निवास लेने के पश्चात् Val Borberra *घाटी में महान सम्पन्नता एवं शान्ति का साम्राज्य फैल गया है।*

8 जुलाई 2006 को सरकारी सभा में कबेला लीग्रे के मेयर ने श्रीमाताजी को 'अवैतनिक नागरिकता' सम्मान भेंट किया। इसके बाद मानवता के उद्धार के लिए सहजयोग के 'श्रीमाताजी निर्मला देवी विश्व संस्थान' की आधारशिला का अनावरण किया गया। इस संस्था का स्थान कबेला में ही होगा...इस सम्मानाभिव्यक्ति से श्रीमाताजी बहुत प्रसन्न थीं और उन्होंने अपने सभी शुभचिन्तकों और स्थानीय नागरिकों को, जिन्होंने पिछले वर्षों में सहजयोग गतिविधियों को समर्थन दिया था, अपना प्रेम भेजा। सर सी.पी. ने सभी को धन्यवाद दिया और सहजयोग तथा श्रीमाताजी के सन्देश को विश्वभर में फैलाने के लिए अनुरोध किया।

हैंगर में बैठे हुए सहजयोगी इस महत्वपूर्ण क्षण की गहन ऐतिहासिक संवेदना से परिपूर्ण थे। उन्होंने इतिहास को बनते हुए तथा इटली के लिये 'श्रीमाताजी निर्मला देवी विश्व संस्थान' के बनने में एक नए युग के आरम्भ को देखा था। ये संस्थान इटली की सारी बाधाओं से मुकाबला करते हुए यूरोप तथा पूरे विश्व में सहजयोग प्रचार-प्रसार के लिए केन्द्रबिन्दु बनेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय उपलब्धियाँ

मानवता के लिये अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की भिन्न संस्थाओं की स्थापना के अतिरिक्त, श्रीमाताजी ने बहुत सी गैर सरकारी संस्थाओं NGOs *की स्थापना की है जो निम्नलिखित हैं :-*

विश्व भर के सहजयोगियों को सहजयोग विधियों द्वारा रोग मुक्ति पाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय अस्पताल। कैंसर, मिर्गी रोग और साइरोसिस जैसे असाध्य रोगों को दूर करने में इस अस्पताल

ने बहुत अच्छे परिणाम दिए हैं। इसकी स्थापना बेलापुर वाशी, मुम्बई में की गई है।

निर्मल प्रेम आश्रम, ग्रेटर नोएडा – अनाश्रित और बेसहारा महिलाओं और बच्चों के लिए–यह संस्थान दिल्ली के समीप ग्रेटर नोएडा में बनाया गया है। यहाँ पर इच्छानुरूप इन्हें हस्तकला तथा सहजयोग सीखने का अवसर दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय संगीत अकादमी–वैतरणा, महाराष्ट्र–शास्त्रीय संगीत, नृत्य एवं ललित कलाओं की शिक्षा एवं विकास करने के लिए।

एक अन्तर्राष्ट्रीय नाटक कम्पनी जिसके अन्तर्राष्ट्रीय कलाकारों एवं कार्यकर्ताओं ने यूरोप, आस्ट्रेलिया, इज़राइल, भारत एवं अमेरिका में सफल कार्यक्रम किए हैं। इसका लक्ष्य इस प्रकार की कृतियाँ विकसित करने का है जिनसे विश्व भर में सांस्कृतिक एवं प्रजातीय सूझ–बूझ को बढ़ावा मिले (TEV)।

बच्चों में संस्कृति, नैतिक शास्त्र एवं चारित्रिक मूल्यों की स्थापना करने के लिए आई. एस.पी.एस. धर्मशाला, भारत तथा कान्ना जौहरी, अमेरिका में और बहुत से अन्य स्थानों पर कई शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की।

यूरोप में विश्व निर्मल धर्म की स्थापना

ये घोषणा करते हुए स्पेन की सहजयोग सामूहिकता को गर्व है कि 31 मई 2006 को 'विश्व निर्मल धर्म' को स्पेन में धर्म के रूप में कानूनी तौर पर पंजीकृत किया गया तथा मान्यता प्रदान की गई। स्पेन के सहजयोगी आशा करते हैं कि परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी और विश्व निर्मल धर्म को यूरोप तथा पूरे विश्व में कानूनी तथा अधिकारिक मान्यता प्राप्त करने के पथ पर पहला कदम होगा।

परमेश्वरी दिव्य भविष्यवाणियाँ

"मैंने ही बार-बार जन्म लिये, परन्तु अब मैं अपनी पूर्ण कलाओं एवं पूरी शक्तियों के साथ आई हूँ। मैं पृथ्वी पर केवल मानव का उद्धार करने के लिए, मानव को मुक्ति प्रदान करने के लिए नहीं आई। मैं तो मानव को स्वर्ग का साम्राज्य, आनन्द, वह परमानन्द प्रदान करने के लिए आई हूँ, आपके परमपिता (परमात्मा, अल्लाह, सदाशिव) जिसकी वर्षा आप पर करना चाहते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, यू.के., 2 दिसम्बर 1979)

नाड़ी ग्रन्थ में की गई भविष्यवाणियाँ

(वर्ष 1982 के पूर्वाद्ध में शोलापुर में नाड़ी ग्रन्थ के मराठी संस्करण का रूपान्तरण करते हुए श्रीमाताजी के कथनों एवं टिप्पणी की प्रतिलिपि)

.......यहाँ पर उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि ज्योतिष किस प्रकार से ठीक है और चौदह हजार वर्ष पूर्व जो भविष्यवाणियाँ की गईं थी वह सत्य साबित हुई हैं।

परन्तु यह दो हजार वर्ष पूर्व की बात है जब इस स्थान (शोलापुर नहीं कर्नाटक) के एक महान ज्योतिषज्ञ ने इसका वर्णन किया, इतना स्पष्ट वर्णन किया, कि आप हैरान होंगे, उन्होंने स्पष्ट बताया कि यह महान योगी पृथ्वी पर मीन राशि पर अवतरित होंगे। मैं मीन और मेष राशि के छोर पर हूँ। परन्तु इसका इतना महत्व नहीं है। तत्पश्चात् वह ज्योतिषज्ञ कहते हैं कि धीरे-धीरे हमें चमत्कार दिखाई देने लगेंगे, वर्ष 1964 से 66 तक, चाहे ये बहुत कम ही क्यों न हो। परन्तु वास्तविक परिवर्तन, युग मनवंतर, नया युग वर्ष 1970 से आरम्भ होगा। वर्ष 1980 तक यह अपनी पकड़ सर्वत्र बना लेगा। ठीक है? उस समय इस नई विधि से नए युग की रचना होगी और पुरानी व्यवस्था.......हमारी पुरानी युग-व्यवस्था समाप्त हो जाएगी, और यह समाप्त होने वाला समय कलियुग है। तो इस प्रकार से वर्ष 1970 से कलियुग का अन्त आरम्भ होगा, कलियुग का पतन होने लगेगा और गतिशील दिव्यत्व का नया युग-कृतयुग आरम्भ होगा। उस समय सूर्य नए ढंग से शासन करेगा। पृथ्वी की धुरी कम हो जाएगी और धीरे-धीरे इसकी गति भी कम हो जाएगी। उस समय एक महायोगी जन्म लेंगे, जो 'पूर्णपरब्रह्म' होंगे। 'पूर्णपरब्रह्म', वह मैं हूँ? उनमें करने या न करने की सभी शक्तियाँ होंगी अर्थात महाकाली, महालक्ष्मी, सभी शक्तियाँ, सभी शक्तियाँ।

इससे पूर्व लोग भक्ति, श्रद्धा, ज्ञान अर्थात अध्ययन, पातांजल योग आदि के मार्ग से मोक्ष प्राप्त किया करते थे। परन्तु ये महायोगी जो नई विधि सिखाएंगे, उससे आपके अन्दर की शुद्ध शक्ति, आपके चक्र जागृत होंगे और परिणामस्वरूप कुण्डलिनी शक्ति जागृत होगी और आपको ज्योतिर्मय करेगी। महायोग की इस नई विधि से आप आत्म-साक्षात्कार को अपनी आँखों से देखेंगे और अपने जीवन में ही इसे अपने शरीर में प्राप्त करेंगे। आपको आत्म-साक्षात्कार का आनन्द मिल जाएगा। (प्रश्न :-श्रीमाताजी उनका नाम क्या है?) उसका नाम 'भुजेन्द्र काका' है। उसका नाम 'काका भुजेन्द्र है, आचार्य काका भुजेन्द्र सत्वाचार्य।

आपको ये शरीर होम (बलिदान) नहीं करना। बहुत से महान सन्तों ने जीते जी अपने शरीर बलिदान कर दिए, उन्होंने स्वयं को गुफाओं में बन्द कर लिया और वहीं उनकी मृत्यु हो गई। नई विधि (सहजयोग) से ये सब आवश्यक नहीं है और न ही कभी आपकी मृत्यु होती है अर्थात आप अपनी आत्मा को पा लेंगे।

इस नए योग से सभी आत्म-साक्षात्कारी लोग, जिन सन्तों को आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो गया है, वे 'ब्रह्मानन्द' (ब्रह्म के आनन्द) को पा लेंगे। उन्हें समाधि में जाने की जरूरत नहीं

पड़ेगी। ऐसा कुछ किए बिना ही उन्हें आत्म-साक्षात्कार मिल जाएगा और वे 'ब्रह्म का आनन्द' पा लेंगे - 'सहज समाधि'। यह सहज समाधि है.... लाखों लोगों में से सबसे पहले किसी एक को आत्म-साक्षात्कार प्राप्त होगा। आप अपनी पदवी को समझें। कभी-कभी जिस प्रकार से मूर्खतापूर्ण चीज़ों पर हम अपना चित्त नष्ट करते हैं, आप महसूस करें कि आप लाखों में से एक हैं। ये बात यहाँ (नाड़ी ग्रंथ) लिखी हुई है। और हम अपने चित्त को बेकार की चीज़ों जैसे मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरे बच्चे, ये, वो आदि पर व्यर्थ नष्ट करते हैं। यहाँ ये बात लिखी हुई है कि लाखों में से किसी एक को चुना जाएगा। क्या आप इस बात को समझे?

इस योग से पूरी मानव जाति मृत्यु और विनाश से मुक्ति पा लेगी। आप लोगों को सामान्य विवाहित जीवन बिताना होगा, चाहे विवाहित न हों फिर भी सामान्य गृहस्थ का जीवन बिताना होगा। अन्यथा आप यह योग सिद्धि नहीं पा सकते। जैसे यदि आप बहुत बड़े साधु बाबा, गुरु या कुछ और महान चीज़ बनकर बैठ जाएं तो आप इसे नहीं पा सकते। आपको सामान्य गृहस्थ होना होगा। विवाहित या अविवाहित, ये आवश्यक नहीं है। संसारी अर्थात पृथ्वी पर रहने वाले, वास्तविकता का सामना करने वाले, जड़ों के मूल से जुड़े हुए। इस योग से लोगों की बीमारियाँ इतनी जल्दी ठीक होंगी कि उन्हें अस्पताल जैसे किसी स्थान की आवश्यकता न होगी।

आरम्भ में ये महान योगी-आप लोग भी स्पर्श मात्र से लोगों के रोग निवारण कर सकेंगे। ये सच्चाई है, जैसे शिव अर्द्ध-नारी-नटेश्वर हैं, वही अवस्था होगी। मानव में वृद्धावस्था समाप्त हो जाएगी, उनका शरीर वैसा का वैसा बना रहेगा, और उनके दिव्य शरीर होंगे। क्या वचन है? अतः अपने शारीरिक सुखों की चिन्ता बहुत अधिक न करें। ठीक है। तब आपमें से कुछ लोग यदि चाहेंगे तो, इसी शरीर के साथ हवा में उड़ सकेंगे। हँसी। वे इतने सूक्ष्म बन सकते हैं कि अन्य लोगों के शरीर में प्रवेश करके उन्हें रोग मुक्त कर सकें-आप लोग ये कार्य पहले से कर रहे हैं। इस कार्य को आप कर ही रहे हैं। अग्नि और अस्त्र उन्हें छू भी न सकेंगे। आप लोग इन सूक्ष्म चीज़ों को अपनी आँखों से देख सकेंगे। आप इन्हें देख सकते हैं। ऐसा केवल भारतवर्ष में ही नहीं, पूरे विश्व में घटित होगा। भारत महान पुण्यवान देश है, इसी कारण से इसमें ऐसी शक्तियाँ हैं जो इस देश की रक्षा करेंगी और शनैः शनैः ये देश उन्नत होगा।

वह (ज्योतिषज्ञ) कहता है कि तृतीय विश्व युद्ध....ये लोग तीसरा विश्व- युद्ध लड़ सकते हैं और इसका खामियाजा इन्हें भुगतना पड़ेगा। तत्पश्चात् इस महान अवतरण के हस्तक्षेप से सभी देश सूझ-बूझ एवं सामूहिकता पूर्वक परस्पर समीप आएंगे। उनकी समझ में आ जाएगा कि युद्ध कितना भयानक होता है। एक बहुत बड़े नगर में (मैं नहीं जानती कौन-सा) इन सभी देशों का सम्मेलन होगा। यहाँ पर योगीगण इनका निर्देशन करेंगे राजनीतिज्ञ नहीं। योगी...... पूरी भविष्यवाणी में वे आपको योगी कहकर बुलाते हैं। हाल ही में चीन के साथ जो हमारा युद्ध हुआ है, संभवतः यही तीसरा विश्वयुद्ध था, क्योंकि चीन की आक्रामक नीतियों एवं तृतीय विश्व युद्ध के कारण हमें बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। परन्तु प्रार्थना के माध्यम से हम सभी देशों को संगठित कर पाएंगे। विज्ञान के नए अविष्कार द्वारा परमेश्वरी ज्ञान और विज्ञान एक हो जाएंगे। विज्ञान के माध्यम से हम आत्मा और

परमात्मा के अस्तित्व को स्थापित कर पाएंगे। इस प्रकार से विज्ञान, आत्मा और परमेश्वरी ज्ञान में समन्वय हो जाएगा। अब भी ऐसा हो रहा है क्योंकि आप देखते हैं कि मेरी तस्वीर से सभी को चैतन्य-लहरियाँ प्राप्त होती हैं। ये विज्ञान है। दूरदर्शन पर, मन्त्रों आदि से वैज्ञानिक तरीकों के माध्यम से यदि आप लोगों के रोग ठीक करने लगें, वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करने लगें तो ये विज्ञान है। आप ये सिद्ध कर सकते हैं कि चुम्बकीय शक्तियों से, आवाज के माध्यम से आप इनका संचार कर सकते हैं। इसके बाद ज्योतिषज्ञ कहता है कि अज्ञान एवं माया के वशीभूत होकर, सामूहिक चेतना, ब्रह्मानन्द की स्थिति को पाने के लिए, योगियों को बहुत कष्ट उठाने पड़ेंगे। उस समय योगियों को बहुत तपस्या करनी पड़ती थी और ये कार्य बहुत कठिन था, परन्तु आज आप लोग सहज हो गए हैं। यही 'सहज' शब्द है। सह-ज प्राप्त हुआ अर्थात सहज। ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए आपको कुछ त्यागना नहीं पड़ता।

नई योग प्रणाली जब भिन्न देशों में स्थापित होगी, नए युग में, तो जिन लोगों को योग-शक्तियाँ प्राप्त होंगी वही अपनी शक्तियों एवं यौगिक गुणों के अनुरूप, वहाँ के प्रशासन को चलाएंगे। वह निर्णायक तत्व होगा। वे लोग ऐसे समाज का सृजन करने के योग्य होंगे जो उनकी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्णतः पूर्ति कर सके। लोगों को अपने पास धन के अम्बार लगाने की आवश्यकता न रहेगी। गरीबी और रोग पूरी तरह समाप्त हो जाएंगे और इनकी अनुपस्थिति में देश और समाज स्वस्थ, शान्त एवं खुशहाल होंगे।

उन्होंने जेक्लीन मर्रे (Jacqueline-Murray) का नाम भी लिखा है। जैकलीन मर्रे अमेरीकन महिला हैं। इस महिला ने भी मेरे विषय में भविष्यवाणी की थी और कहा था कि भारत में एक महान व्यक्ति, एक महिला का वर्ष, 1924 के लगभग जन्म होगा। मेरा जन्म 1923 में हुआ। लगभग, उनकी भविष्यवाणी के अनुरूप।

परन्तु चीयरो (Cheiro) ने कहा है कि वर्ष 1980 तक, एक नया अवतार, नए युग का आरम्भ करेगा। भविष्यवाणी और नए युग के आरम्भ में दस वर्ष का अन्तर है।

एलिस बेले (Alice-Bailey) नाम की एक महिला है, मेरे विचार से यह अतिचेतन अवस्था में है। अतिचेतन अवस्था में उसने कहा है कि एक नया योग आएगा, जिसके माध्यम से लोग आदि-शक्ति (Holy-Ghost) से जुड़ जाएंगे।

तीसरे विश्व युद्ध का भय है, यह युद्ध अवश्यम्भावी है, परन्तु इस योग से लोग यदि परस्पर प्रेम विकसित कर लें तो युद्ध से बचा जा सकता है।

अब ये एक अन्य बात है, हाँ, ये एक टेप है जिसमें ज्ञानेश्वर जी ने बताया है कि ''इस नए युग में क्या घटित होगा। इस टेप का अनुवाद मराठी भाषा में है। मुझे इसका अंग्रेजी रूपान्तरण करना होगा, कि किस प्रकार लोग आत्म-साक्षात्कारी होंगे, क्या घटित होगा और किस प्रकार लोग परस्पर प्रेम करेंगे। ज्ञानेश्वर जी ने ये सारी बातें बताई हैं और इस टेप में यही सब गाया गया है....।''

सत्य का आधार

धर्मग्रन्थों के कथन

(सत्य-सिद्ध भविष्यवाणियाँ)

"इससे परे भी कुछ है, जो आपने खोजना है। निःसन्देह इससे परे भी कुछ है जो पैगम्बरों, सभी धर्मग्रन्थों और पृथ्वी पर अवतरित सभी अवतरणों ने बताया है। इस बात का भी वचन दिया गया था कि एक दिन आपके गुण, दोषों का आँकलन किया जाएगा। परन्तु प्रथम निर्णय तो आप स्वयं करेंगे। आप स्वयं फैसला करेंगे कि आप परमात्मा को खोज रहे हैं या तुच्छ चीज़ों को। यदि आप वास्तविकता और सत्य को खोज रहे हैं केवल तभी आपको चुना जाएगा, केवल तभी आप परमात्मा के साम्राज्य के नागरिक बन पाएंगे।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, 1979)

पैगम्बर–भविष्यवाणियाँ
परमात्मा को खोजने के लिए विवेकवाणी

साक्षात्कारी व असाक्षात्कारी व्यक्ति में अन्तर

"...आपको अपनी टाँगों पर खड़ा होना होगा और समझना होगा कि यहाँ पर आप सत्य से एकरूप हैं, सत्य के साक्षी हैं, इस बात के कि आपने सत्य को देखा है। आप जानते हैं कि सत्य क्या है और असत्य से समझौता नहीं कर सकते। कर ही नहीं सकते। इसके लिए आपको किसी को हानि पहुंचाने की आवश्यकता नहीं है। आपको बस घोषणा करनी है। खड़े होकर आपने कहना है कि आपने सत्य को देखा है और यही सत्य है, तथा सत्य के साथ आपको एकरूप होना है ताकि आपके अन्दर लोग सत्य के प्रकाश को देख सकें और इसे स्वीकार करें।

ये केवल अन्य लोगों के बताने की बात नहीं है कि आपको सत्यनिष्ठ होना है कि यही सत्य हमने देखा है तथा यही परमेश्वरी नियम हैं और ये किस प्रकार कार्य करते है। चैतन्य चेतना के माध्यम से हम देख पाए हैं कि यही सत्य है। इस पर पूर्ण विश्वास करें। इसके लिए सर्वप्रथम भलीभांति अपना निरीक्षण करें, अन्यथा आपके आसुरी प्रवृत्तियों के हाथ में चले जाने की पूरी सम्भावना है। सहजयोग में आने वाले बहुत से लोगों के साथ आरम्भ में ऐसा होता है। अतः सावधान रहें, निश्चित करें कि आप 'सत्य' बता रहे हैं, कुछ अन्य नहीं, तथा आपने सत्य को पूरी तरह से महसूस किया है। जिन्हें चैतन्य लहरियाँ महसूस नहीं हुई हैं उन्हें सहजयोग के विषय में नहीं बोलना चाहिए। उन्हें इसका अधिकार नहीं है। उन्हें चैतन्य लहरियाँ प्राप्त करनीं होंगी। चैतन्य लहरियाँ को अपने अन्दर पूरी तरह से आत्मसात करने के बाद ही कह सकते हैं कि हाँ हमने महसूस किया है। इस आधुनिक युग में सहजयोगियों के लिए ये अत्यन्त आवश्यक कार्य है—अर्थात् ऊँची आवाज में कहना कि उन्होंने सत्य को प्राप्त कर लिया है। यह पक्ष बहुत दुर्बल है।

आप, जिस तरह चाहें सत्य की घोषणा कर सकते हैं। पुस्तकें लिख सकते हैं, अपने मित्रों और सम्बन्धियों तथा किसी भी अन्य से बातचीत करके उन्हें बता सकते हैं कि, "ये बात सत्य है कि आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर गए हैं। परमात्मा की कृपा से आप आशीर्वादित हुए हैं, कि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं, और परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति को आपने महसूस किया है तथा आप अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं।" ये बात आपने अन्य लोगों को बतानी है और समझना है कि आपने सत्य को स्वीकार करके सत्य पर कोई उपकार नहीं किया है, आप अपनी ही शोभा बढ़ा रहे हैं।

सत्य का आनन्द उठाने के लिए व्यक्ति को साहस की आवश्यकता होती है। कभी–कभी लोग आपका मजाक भी उड़ा सकते हैं, आप पर हँस सकते हैं, आपको सता भी सकते हैं। परन्तु इस बात की आपको कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि परमात्मा की कृपा से आपका

सम्बन्ध परमेश्वरी विधान से है। आपका सम्बन्ध जब ऐसा हो जाए तब आपको अन्य लोगों की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि वे इसके बारे में क्या कहते हैं। आपको खड़े होना है, सत्य से स्वयं को अलंकृत करना है और लोगों से बातचीत करनी है। तब लोग समझ जाएंगे की आपने सत्य प्राप्त कर लिया है। इतने अधिकारपूर्वक जब आप लोगों से बातचीत करेंगे तो वे जान जाएंगे कि आपने पा लिया है।

साक्षात्कारी और असाक्षात्कारी व्यक्ति में मूलतः यह अन्तर है कि साक्षात्कारी व्यक्ति अपने कष्टों तथा परमात्मा से दूरी की बात नहीं करता। वो कहता है, 'मैंने अब पा लिया है। यही सत्य है।' जैसे ईसामसीह ने कहा था, "मैं ही प्रकाश हूँ, मैं ही मार्ग हूँ।"

कोई अन्य व्यक्ति भी ऐसा कह सकता है परन्तु आप ये जान सकते हैं कि उसका कथन सत्य नहीं है। आत्मविश्वास के साथ, पूर्ण सूझ-बूझ के साथ जब बात आपके हृदय से निकलेगी तो लोग जान जाएंगे कि यही पूर्ण सत्य है, और तब सभी प्रकार के असत्यों की निन्दा की जाएगी। कोई बात नहीं, यदि किसी को बुरा लगे क्योंकि ऐसा बताकर आप उनकी रक्षा कर रहे हैं, उन्हें हानि नहीं पहुँचा रहे। परन्तु सत्य सही ढंग से बताया जाना चाहिए, छिछोरे ढंग के नहीं। अत्यन्त आकर्षक ढंग से उन्हें बताएं कि ये बात गलत है। उस समय की प्रतीक्षा करें जब पूर्ण अपनत्व के साथ आप लोगों को बता सकें। उन्हें बताएं, "ये बात गलत है, ये गलत है, आप नहीं जानते। हमने भी ऐसा ही किया था।"

इस प्रकार से आप अपने गुरुतत्व की अभिव्यक्ति करेंगे। आपको सत्यनिष्ठ होना है। सर्वप्रथम और सर्वोपरि बात ये है कि आपको सत्य का ज्ञान होना चाहिए और इसका साक्ष्य बनना चाहिए और इसकी घोषणा करनी चाहिए।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 29 जुलाई 1980)

गुरु नानक

गुरु ग्रन्थ साहिब

जपजी -30

उस परमात्मा को जो पुरातन है, निष्कलंक है, जिसका न कोई आदि है न अन्त, जो युग युगों से शाश्वत है, उसे कोटि-कोटि प्रणाम।

रहस्यमय ढंग से केवल एक माँ (आदि शक्ति) विद्यमान थीं। उन्होंने तीन देवताओं का सृजन किया।

एक सृजनकर्त्ता हैं, एक पालक और एक संहारक।

उनकी आज्ञा एवं खुशी के अनुसार ये विश्व चलता है। वह (परमात्मा) सभी को देखते हैं परन्तु उन्हें कोई नहीं देख सकता। ये महान आश्चर्य है।

वर्ष 1995 में श्रीमाताजी ने जपजी के इस अंतरे की इस प्रकार व्याख्या की:

तब किसी ने मुझे गुरु नानक देव जी का वह शबद (लेखांश) दिया जिसमें उन्होंने अबोधिता एवं अबोधिता के देवता श्री गणेश जी का भी वर्णन किया है। उन्होंने बताया है कि सारा सृजन माँ ने किया है, पिता ने नहीं। उनका ऐसा कहना आश्चर्य की बात है क्योंकि जो लोग परमात्मा के साकार रूप को नहीं मानते वो हमेशा पिता की बात करते हैं माँ की नहीं। ईसाई धर्म, इस्लाम तथा यहूदियों के लिए भी ये बात सत्य है।

गुरु नानक देवजी ने सहज की भी बार-बार बात की है। सिद्ध-गोष्ठ (योगियों से बात-चीत) में भी सहज के बारे में कहा है:-

सहज गुफा की शान्ति में बैठकर आप सत्य (परमात्मा) को खोज सकते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि सच्चे लोग सत्य को प्रेम करते हैं। सहज के सुगम पथ से शुद्धातिशुद्ध परमात्मा को प्राप्त करें।

केवल अपने गुरु की सेवा करने वाला शिष्य ही सफल होगा, नानक देव जी को इसके बारे में कोई सन्देह नहीं है।

जपजी श्लोक :

पवणु गुरु, पाणी पिता, धरति महतु।।
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु।।

पवन गुरु हैं, पानी पिता, महान पृथ्वी सभी की माँ है। नर और मादा दाईयाँ (Nurses) *दिन, रात पृथ्वी माँ की गोदी में सृष्टि से खेलते रहते हैं।*

गुरु ग्रन्थ साहिब-473

हम महिला से उत्पन्न हुए हैं, महिला ने हमें अपने गर्भ में धारण किया,
महिला से सगाई हुई, महिला से विवाह हुआ।
महिला को हम मित्र बनाते हैं, महिला से ही सभ्यता बनी रहती है,
महिला की मृत्यु होने पर एक अन्य महिला खोजी जाती है।
महिला के कारण ही मर्यादा पालन होता है,
तो सभी महान पुरुषों को जन्म देने वाली महिला को क्यों घटिया कहा जाए?
महिला, महिला से जन्म लेती है,
महिला के अतिरिक्त कोई मानव को जन्म नहीं दे सकता।
जो शाश्वत है, अजन्मा है,
गुरुनानक देवजी कहते हैं, कि केवल उसी की स्तुति करने वाली जिह्वा धन्य है।
उस सत्यपुरुष (परमात्मा) के दरबार में केवल ऐसा पुरुष ही स्वीकार्य है।

गुरु ग्रन्थ साहिब में गुरु नानक जी ने 'कुण्डलिनी जागृति के विषय में बार-बार कहा है। 'कुण्डलिनी' को 'सुरति' कहा है और 'ब्रह्मरन्ध्र' को दशमद्वार कहा - तालू क्षेत्र के खुलने को 'जागृति' कहा है।

पावन हृदय वह सोने का घड़ा है जिसमें ईड़ा, पिंगला, दो नाड़ियों द्वारा दशम द्वार से खींचा गया दिव्य अमृत भरा जाना चाहिए। ***(गुरु ग्रन्थ साहिब पृष्ठ 286)***

सद्‌गुरु की कृपा से जब आपका दशम् द्वार खुलता है, केवल तभी आप परमात्मा को जान सकते हैं। ***(गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 953)***

परमात्मा ने मानव शरीर के रूप में छः चक्रों वाला भवन बनाया है जिसमें आत्मा का प्रकाश स्थापित किया है। ***(गुरुग्रन्थ पृष्ठ 947)***

माया के सागर को पार करके उस परम पिता परमात्मा से एक रूप हो जाओ जिसका न कोई आदि है न अन्त है और जो जन्म मरण से परे है, जो शाश्वत है। जब आपके छः चक्र सीधी रेखा में आ जाएंगे (स्वच्छ हो जाएंगे) तो सुरति (कुण्डलिनी) आपको सभी बाधाओं से दूर ले जाएगी। ***(गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 928)***

जिस व्यक्ति के कार्यकलाप उसे उच्च आध्यात्मिक जीवन में ले जाते हैं, जो वासना समेत पाँचों शत्रुओं को काबू कर लेता है और जिसने परमात्मा को सत्य के रूप में अपने हृदय में स्थापित कर लिया है, ऐसे व्यक्ति की कुण्डलिनी जागृत हो जाती है और वह परमात्मा से एकरूप हो जाता है। ***(गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 535)***

श्रीमाताजी के शब्दों में संक्षिप्त विवेचन कुण्डलिनी जागृति विषय पर प्रकाश डालता है। इस जागृति को किसी ने पुनर्जन्म कहा है, किसी ने पुनर्उत्थान किसी ने बप्तीज़्म, परमात्मा से एकीकरण और किसी ने ताओ (लोओत्से) कहा है। परन्तु विश्व के सभी धर्मों में इसके बारे में अवश्य कहा गया है। वास्तव में यह सभी धर्मों का सार तत्व है, यद्यपि समय और स्थान की रुकावटों के कारण भूतकाल में इस विज्ञान को रहस्य बनाए रखा।

महदी की भविष्यवाणियाँ

बारह इमामों में से अन्तिम इमाम महदी हैं। पहले इमाम, अली मोहम्मद साहब के दामाद थे। इस्लाम धर्म के अनुसार, विशेष रूप से शिया लोगों के अनुसार, विश्व की रक्षा करने के लिए महदी अन्तिम निर्णय के समय आते हैं। सहजयोग में हमारा मानना है कि श्रीमाताजी ही महदी हैं। हम ये भी देखते हैं कि हिन्दुओं की आदि-माँ, मुसलमानों के महदी का पृष्ठभाग (Reverse) *हैं।*

('पैगम्बर मोहम्मद' बिहार के अलअनवर से अबुअल-हज़ाफ खण्ड-51 पृष्ठ 74 से उद्धृत)

महदी के विषय में शुभ समाचार को सुनो। जब लोग गहन संघर्षों का सामना कर रहे होंगे और जब पृथ्वी पर विध्वंसक भूचाल आया होगा तब वे प्रकट होंगे। अन्याय और अत्याचार से

पीड़ित पृथ्वी को वे न्याय एवं निष्पक्षता से भर देंगे। अपने अनुयायियों के हृदय वे श्रद्धा से भर देंगे और सर्वत्र न्याय का प्रसार करेंगे।

'पैगम्बर मोहम्मद' (बिहार के अल-अनवर खण्ड-51 पृष्ठ 65 और इथबत अलहुदात, खण्ड-6, पृष्ठ 382 से उद्धृत)

सच्चे कैईम(Qa'im) *के अवतरण से पूर्व पुनरुत्थान दिवस नहीं आएगा। ये तभी होगा जब परमात्मा उसे इसकी आज्ञा देंगे। उनका अनुसरण करने वाले सभी लोगों की रक्षा होगी और उनका विरोध करने वाले नष्ट हो जाएंगे। हे परमात्मा के चाकरो, परमात्मा में चित्त को लगाए रखो और उनकी ओर बढ़ो, चाहे ये घटना बर्फ (बर्फीले क्षेत्र) पर ही क्यों न हो, क्योंकि वे, वास्तव में, परमात्मा के खलीफा हैं जो अत्यन्त प्रतिष्ठावान एवं महिमामण्डित* (Exalted and Glorified) *हैं और मेरे उत्तराधिकारी हैं।*

'पैगम्बर मोहम्मद' (बिहार के अल अनवर से खण्ड 51-पृष्ठ-74 अबू सईद अल खुदारी तथा इथबत अल हुदात खण्ड-7 पृष्ठ-9 से उद्धृत)

समय के अंत में जब आकाश उनके लिए वर्षा करेगा और पृथ्वी हरी-हरी घास उगाएगी तब मेरे वंशजों, मेरे परिवार में से एक महदी अवतरित होगा। अन्याय एवं जुल्म से परिपूर्ण पृथ्वी को वह न्याय एवं समानता से भर देगा।

महदी के अनुयायियों के पास इमाम से संसर्ग (Communication) *(चैतन्य-चेतना) की विशेष शक्तियाँ होंगी।*

(अल-कुलायनी, अल रावदा, 2/49 में ज़फर द्वारा प्रकाशित)

हमारे कैईम, के अवतरण के समय, हे परमात्मा कृपा करके उन्हें प्रतिष्ठावान एवं गरिमामय बना देना, उनके श्रद्धावान लोगों में इस प्रकार की दृष्टि एवं श्रवण- शक्ति होगी कि कैईम और उनके बीच, बिना किसी दूत की उपस्थिति के, वे उनसे बात करेंगे और वे श्रद्धावान लोग उनके दर्शन करेंगे और उनकी बात को भी सुनेंगे जबकि कैईम अपने सिंहासन पर ही आरूढ़ रहेंगे। (उन्होंने वह स्थान छोड़ा भी न होगा)

पैगम्बर मोहम्मद की चैतन्य-चेतना सम्बन्धी एक अन्य भविष्यवाणी :

मेरे उम्माह (Ummah) *के अन्तिम काल में एक खलीफा होगा जो लोगों को बिना गिने ओक* (Hands-full) *भर-भर के धन प्रदान करेगा।* ***(पावन कुरान)***

उस दिन हम उनके मुँह पर,
मौन बन्धन (Seal) लगा देंगे
परन्तु उनके हाथ बोलेंगे
हमसे, और उनके पैर
गवाही देंगे, इस सबकी, उनके कार्यों की

कुण्डलिनी जागृति एवं आत्म-साक्षात्कार की घटना घटित होने पर हाथों से शीतल चैतन्य लहरियों के रूप में शक्ति प्रवाह होने लगता है। उपरोक्त अनुच्छेद (पैरा) में यही बात कही गई है। यहाँ पैगम्बर मोहम्मद आने वाले समय, पुनर्उत्थान के समय की बात कर रहे हैं जो वास्तव में कुण्डलिनी जागृति या कुम्भराशि का वर्तमान समय है।

नव-विधान (New Testament)

जॉन का सिद्धान्त अध्याय 14 -छन्द 15 (यह अन्तिम रात्रि भोज का वर्णन है)

14:15 यदि आप मुझसे प्रेम करते हैं, तो मेरे धर्मादेशों को मानें।

14:16 और मैं परमपिता से प्रार्थना करूंगा, तथा वे आपको एक अन्य सुखदाता प्रदान करेंगे, जो हमेशा आपके साथ बने रहेंगे।

14:17 सत्य की आत्मा को भी, जिसे विश्व प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि वह उसे देख नहीं सकता, न ही उसे जानता है: परन्तु आप उसे जानते हैं, क्योंकि वह आपके साथ बनी रहती है, और आपमें बनी रहेगी।

14:18 मैं आपको तकलीफ में (Comfortless) *नहीं छोडूंगा :मैं आपके पास आऊंगा।*

14:19 यद्यपि थोड़ी देर, और अब विश्व मुझे नहीं देख पाएगा, परन्तु आप मुझे देखेंगे, क्योंकि मैं जीवित हूँ। आप भी जीवित होंगे।

14:20 उस दिन आप जान जाएंगे कि मैं अपने पिता (Father) *में हूँ, तुम मुझमें हो और मैं तुममें हूँ।*

14:21 जिसने मेरे धर्मादेश लिए और उनके अनुसार चला, केवल वही व्यक्ति मुझसे प्रेम करता है : और जो मुझे प्रेम करता है वही मेरे पिता (Father) *का प्रिय होगा और मैं उसे प्रेम करूंगा और उसके सम्मुख स्वयं को प्रकट करूंगा।*

14:22 मैं ही द्वार हूँ, यदि कोई व्यक्ति मुझसे प्रवेश करेगा तो उसकी रक्षा की जाएगी।

(नवसिद्धान्त-New Testament)

रहस्योद्‌घाटन पुस्तक

एक दिन मैं एशले गार्डन स्थित श्रीमाताजी के फ्लैट में गया और पाया कि वे भोजन कक्ष में दो लोगों के साथ बैठी हुईं थीं, एक नवविवाहित जोड़े के साथ जिन्होंने रात वहीं बिताई थी। श्रीमाताजी ने मुझे भी उनके साथ मेज़ पर बैठने के लिए आमन्त्रित किया। बातचीत बाइबल पर आ पहुँची, हममें से एक के पास बाइबल थी। हम 'रहस्योद्‌घाटन' की पुस्तक का बारहवाँ अध्याय देख रहे थे। श्रीमाताजी इस पर टिप्पणी कर रहीं थीं। एक सहजयोगी द्वारा सुनाई गई इस वार्ता का मेरा स्मरण कुछ इस प्रकार है :

छन्द 1 : *और आकाश में एक अजूबा दिखाई दिया : सूर्य सम कपड़े पहने हुए एक*

महिला, चन्द्रमा जिसके पैरों में था और जिसके सिर पर बारह सितारों का मुकुट था। **वर्णित *महिला श्रीमाताजी हैं।***

छन्द 2 : *बच्चे के साथ होने के कारण वह महिला चिल्लाई, प्रसव पीड़ा के कारण, प्रसव के दर्द से।*

यह सहजयोग और सहजयोगियों की सामूहिक चेतना है। हमारे स्थान पर श्रीमाताजी ने बहुत पीड़ा सहन की है।

छन्द 3 : *और स्वर्ग में एक अन्य अजूबा दिखाई दिया : और लो! एक बहुत बड़ा परदार साँप, जिसके सात सिर और दस सींग थे और जिसके सिर पर सात मुकुट थे।* **ये परदार साँप कुगुरुओं का सामूहिक रूप है,** *श्रीमाताजी ने अपनी अंगुलियों पर गिनती करके कहा, हाँ, इस क्षण ये सब यहाँ हैं।''*

छन्द 4 : *और उसकी पूँछ आकाश के सितारों के एक-तिहाई हिस्से के बराबर थी और उसकी परछाई पृथ्वी पर पड़ रही थी और वह साँप उस महिला के सम्मुख खड़ा हुआ था जिसकी प्रसूति होने वाली थी, ताकि बच्चे का जन्म होते ही वह उसे निगल ले।*

सितारों का एक-तिहाई हिस्सा वास्तव में वो साधक हैं जो खो जाते हैं *(एक अन्य समय पर श्रीमाताजी ने कहा था कि अमरीका के साठ प्रतिशत लोग वास्तव में साधक हैं परन्तु उनमें से बहुत से पूरी तरह से खो जाते हैं।) साधक का जन्म होते ही कुगुरु उन्हें पकड़ने, धोखा देने और नष्ट करने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार से वे सहजयोग की सामूहिक चेतना के जन्म को नष्ट करने का प्रयत्न करते हैं।*

छन्द 5 : *और उसने एक नर बालक को जन्म दिया, जिसने लोहे की छड़ से सभी राष्ट्रों पर शासन करना था और उसके बच्चे की पहुँच परमात्मा तथा उसके सिंहासन तक थी।*

नर बालक - कल्कि - सामूहिक चेतना - उस सामूहिक चेतना की छड़ी कुण्डलिनी— से शासन करता है।

आदि शंकराचार्य

आत्माष्टकम् (आत्म-ज्ञान)

मनोबुद्ध्यहंकार चित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिव्हें न च घ्राणनेत्रे।
न च व्योमभमिर्न तेजो न वायु:
चिदानन्दरूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥ 1॥

न च प्राणसंज्ञो न वै पच्चवायु:
न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोश:
न वाक् पाणिपादं न चोपस्थपायू
चिदानन्दरूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥ 2॥

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभाव:।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष:
चिदानन्दरूप: शिवोऽहम शिवोऽहम् ॥ 3 ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दु:खं
न मन्त्रौ न तीर्थं न वेदा न यज्ञा:
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्दरूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ 4 ॥

न मे मृत्युर्नशङ्का न मे जाति भेद:
पिता नैव मे नैव माता न जन्म:।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य:
चिदानन्दरूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ 5 ॥

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
विधुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्ध:
चिदानन्दरूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ 6 ॥

इसके विषय में श्रीमाताजी कहती हैं..... आप लोग यही हो, शाश्वत, आनन्द एवं चेतना, – चेतना, शुद्ध चेतना। **मैं सोचती हूँ यही हमारा अन्तर्भाव होना चाहिए – अन्तर्भाव जिसे हर व्यक्ति कंठस्थ करे और सभी आश्रमों में इसका गान किया जाए। अपनी वास्तविकता को याद रखने का यह बहुत अच्छा तरीका है।**

(गुरु पूजा, आस्ट्रिया, जुलाई 1986)

सौन्दर्य लहरी में श्री शंकराचार्य नौवें श्लोक में कुण्डलिनी की उत्क्रान्ति का वर्णन इस प्रकार करते हैं–

मूलाधार में स्थित पृथ्वी तत्व का, मणिपुर में जलतत्व का, स्वाधिष्ठान चक्र में अग्नितत्व का, अनाहत चक्र में वायु तत्व का, विशुद्धि चक्र में आकाश तत्व का और भ्रूमध्य (आज्ञा चक्र) में मनस का भेदन करके और इस प्रकार से पूरे 'कुलपथ' (सुषुम्नानाड़ी) को भेदते हुए चुपके-चुपके अपने परमेश्वर के साथ आप स्वयं को सहस्रार दल कमल में भिन्न दिशा में ले जा रही हैं।

(सौन्दर्य लहरी)

(61) देवी का वर्णन करते हुए : "अत्यन्त शीतल लहरियों द्वारा अपने रिक्त अन्तस में अपने-अपने स्थानों पर स्थापित मोतियों को धारण करने वाली" कहा है।

सन्त ज्ञानेश्वर

पसायदान-1290

ज्ञानेश्वरी में कुण्डलिनी जागृति एवं आत्म-साक्षात्कार प्राप्ति के लिए संक्षिप्त हिदायतें दी हुई हैं। ज्ञानेश्वरी के उपसंहार के रूप में लिखी गई पस्यादान पुस्तक में ज्ञानेश्वर जी पूरे विश्व के लिए सामूहिक आत्म-साक्षात्कार की इच्छा करते हैं। वे सहजयोगियों के आगमन की भविष्यवाणी करते हैं जो पूरे विश्व को अपना आशीर्वाद (आत्म-साक्षात्कार) देंगे।(अन्तरा 1-6)

हे सर्वव्यापी परमात्मा! आप मेरे इस साहित्यिक बलिदान से प्रसन्न हों।

और प्रसन्न होकर मुझे निम्नलिखित वरदान दें।

परमात्मा करे कि दुष्ट अपनी दुष्टता त्याग दें और अच्छाई के लिए उनमें रुचि विकसित हो। परमात्मा करे कि सभी जीवों में परस्पर मित्रता भाव हो।

परमात्मा करे कि बुराई का अन्धेरा मिट जाए।

पूरा ब्रह्माण्ड प्रकाश को देखे, एक सार्वभौमिक धर्म के सूर्य को,

सभी मनुष्यों की इच्छाएं पूर्ण हों।

परमात्मा की कृपा से निरन्तर सच्चे सन्त विश्व में अवतरित होते रहें।

जो पृथ्वी पर अपनी आशीष वर्षा करते रहें। (अन्तरा-1)

ऐसे व्यक्ति कल्पतरु वृक्षों के चलते फिरते जंगल हैं (अन्तरा-2)

वे इच्छा पूर्ण करने वाले जीवन्त रत्नों की खान हैं।

वे वचनामृतों के सागर हैं (अन्तरा-3)

वे दागरहित चन्द्रमा हैं (अन्तरा-4)

तपन विहीन सूर्य। (अन्तरा-5)

हे परमात्मा, ऐसे सन्त सभी के मित्र बनें। (अन्तरा-6)

श्रीमाताजी की व्याख्या :-

1. **जब आप हमसे मिलेंगे** *तो चैतन्य एवं आशीष की वर्षा होगी, जब आप हमसे मिलेंगे-***'वह मैं हूँ।'**
2. **यह सहजयोगियों का वर्णन है,** *आप अवश्य इसे सुने। वे ही जंगल होंगे, जंगल की तरह - हजारों को आप देखेंगे। आशीष देते हुए विशाल पेड़ों के चलते-फिरते जंगलों की तरह से। ऐसे वृक्ष जो आशीष दे सकते हैं - कल्पतरु वे वृक्ष होते हैं जो आपकी सभी इच्छाएं पूर्ण कर सकते हैं। तो वे चलते-फिरते जंगलों की तरह से होंगे, अर्थात आप सभी लोग*

ऐसे होंगे–महान। आप लोग महान वृक्षों की तरह से होते हैं जैसे ये वृक्ष हैं – महान वृक्ष – जो चलते–फिरते हैं, परन्तु जो अन्य लोगों को आशीर्वादित करते हैं, उनकी मनोकामना पूर्ण करते हैं – कल्पतरु।

3. *वे लोग – अब 'आप लोग है।' वे प्रवचनों के सागर होंगे – प्रवचनों के सागर या अमृत उड़ेलने वाले सागर। अमृत जीवन को अमर बनाता है।* ***आप उफनते हुए अमृत के ऐसे सागर होंगे जो बोलेंगे*** *– जैसे यहाँ ये समुद्र है। वृक्षों और समुद्र को देखें। सागर इस प्रकार से बात करता है मानो अमृत प्रवाहित कर रहा हो, आशीर्वाद का अमृत, वे आप लोग हैं।*
4. *वे दाग़ विहीन चाँद की तरह से होंगे – निष्कलंक चन्द्रमा – जिस पर कोई धब्बा नहीं है, निष्कलंक, किसी भी दाग़ के बगैर।*
5. *ऐसे सूर्य की तरह जिसमें तपन बिल्कुल नहीं है, वे आप लोग हैं।*
6. *ऐसे सभी लोग धर्मपरायण होंगे – जो धर्म का साथ देंगे, सत्य का साथ देंगे – और वे परस्पर सम्बन्धित होंगे। उनमें सम्बन्ध स्थापित होंगे – पूरे विश्व में।*

महाकाव्य ज्ञानेश्वरी में छठे अध्याय के श्लोक कुण्डलिनी जागृति को समर्पित हैं।

कुण्डलिनी महानतम शक्ति है। कुण्डलिनी के उत्थान से साधक का पूरा शरीर तेजोमय हो उठता है। इसके कारण शरीर के अवांछित दोष एवं अवांछित चर्बी समाप्त हो जाती है। अचानक साधक का शरीर अत्यन्त सन्तुलित एवं आकर्षक दिखाई देने लगता है। आँखें चमकदार और पुतलियाँ तेजोमय दिखाई देती हैं।

(6:14) ज्ञानेश्वर जी सुषुम्ना में से उठती हुई कुण्डलिनी का वर्णन करते हुए कहते हैं कि कुण्डलिनी द्वारा बाहर छिड़का गया जल अमृत का रूप धारण करके उस प्राणवायु की रक्षा करता है जो : "उठती है, और अन्दर तथा बाहर शीतलता का अनुभव प्रदान करती है।"

पसायदान और ज्ञानेश्वरी पर प्रकाश डालते हुए श्रीमाताजी बताती हैं :

"...मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो गीता पर लगातार घण्टों भाषण देते हैं परन्तु उनके दिमाग पूरी तरह से बन्द हैं। कहा जा सकता है कि उन्होंने कुण्डलिनी के बारे में कुछ नहीं कहा। इसी कारण से ज्ञानेश्वर जी ने बारहवीं शताब्दी में अपने भाई तथा गुरु से आज्ञा माँगी, "कम से कम मुझे कुण्डलिनी के विषय में कुछ कहने की आज्ञा तो दे दें।" इस प्रकार से इसके विषय में थोड़ा बहुत पता चला। नि:सन्देह इससे पूर्व भी हमारे यहाँ छठी शताब्दी में आदिशंकराचार्य जैसे लोग हुए हैं और उनसे भी पूर्व श्री मार्कण्डेय जैसे लोग हुए हैं। परन्तु उन्होंने कुण्डलिनी की केवल बात ही की, कुण्डलिनी की प्रशंसा की—कि ये छ: केन्द्रों में से गुजरती है, किस प्रकार ये उठेगी, आदि–आदि। इसके भविष्य के विषय में कि एक दिन ऐसा घटित होगा, कुछ नहीं बताया। नि:सन्देह बहुत से लोगों ने इसके विषय में बताया है

परन्तु संक्षेप में, मैं ये कहूँगी कि, जिस व्यक्ति ने सहजयोग का पूरा वर्णन किया है वे ज्ञानेश्वर जी थे। उन्होंने पसायदान में ठीक प्रकार से बताया है कि क्या घटित होगा, और कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार मिलेगा। उन्होंने कहा कि, "आप लोग जो वृक्षों के जंगल हो—वर देने वाले वृक्षों के, 'कल्पतरु', वर देने वाला वृक्ष—आप उन्नत हों और ये वरदान अन्य लोगों को भी दें।" तत्पश्चात् वे कहते हैं कि "आप वो सागर हैं जो अमृत-प्रवचन दे रहे हैं।" उन्होंने आपका वर्णन इतने सुन्दर ढंग से किया है कि आपको चाहिए कि पसायदान का रूपान्तरण पढ़ें, तब आप जानेंगे कि आप क्या हैं, और किस प्रकार उन्होंने आपकी प्रशंसा की है! उन्होंने कहा है कि आपके अन्य सभी सम्बन्ध समाप्त हो जाएंगे, केवल यही सम्बन्ध रहेंगे। यही आपके सच्चे सम्बन्धी होंगे। ये सब चीजें कहने वाला, इस प्रकार का दृष्टा स्वयं भी अवश्य ही कोई महान अवतरण रहा होगा। अत: इस प्रकार से ज्ञानेश्वरी, जो कि गीता का विवेचन मात्र है, इसके छठे अध्याय में उन्होंने लिखा है। ये गीता का विवेचन मात्र है परन्तु इसके छठे अध्याय में उन्होंने वर्णन किया है कि किस प्रकार आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने लिखा है कि कुण्डलिनी किस प्रकार कार्यान्वित होगी। तो शनै:-शनै: ये सारा रहस्य खुला तथा धीरे-धीरे लोगों में ये सब समझने के लिए आध्यात्मिक अवस्था विकसित हुई।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी न्यूजर्सी, यू.एस.ए., 02.10.1994)

जोरॉस्ट्र (Zarathustra)

ज़ोरास्ट्र का वर्णन करते हुए श्रीमाताजी ने बताया है कि हमारे भव-सागर की देखभाल करने वाले, बाईं ओर (भवसागर में) विराजमान दस आदिगुरुओं में से वे एक हैं। बहुत से लोग इस सत्य को नहीं जानते कि वे अन्य गुरुओं से बहुत पहले पर्शिया में अवतरित हुए और विश्व के प्रति उनकी धारणाओं ने यहूदी और ईसाई मत को प्रभावित किया। यहूदीमत और ईसाईमत उनसे बहुत बाद में आए। आज विश्व में ज़ोरास्ट्र के अनुयायियों की संख्या बहुत कम है, परन्तु मानवीय आध्यात्मिक विचारों की वैभवशाली धरोहर, जो ज़ोरास्ट्र ने अपने पीछे छोड़ी है वह, आज के विश्व के लिए अत्यन्त उपयुक्त एवं विशेष है। ज़ोरास्ट्र की मूल शिक्षाएं उनकी प्रकाशना (Revelations) *का सार तत्व प्रदान करती है। विश्व के बारे में उनका स्वप्न तथा उनके द्वारा स्थापित किया गया ज़ोरास्ट्रियन धर्म मानव को दी गई उनकी धरोहर है।*

बहुत से अन्य पैगम्बरों की तरह से ज़ोरास्ट्र ने एक ईश्वर का सिद्धान्त स्थापित किया, और अपने विश्वास के आधार के रूप में इसे औरा-माज़दा (Ahura Mazda) *नाम दिया। जंगलों के एकान्त में एक अर्से तक तपस्या करने के बाद उन्होंने एक आत्मा (उपनिषदों में वर्णित एकमेव) का अनुभव किया और चाहा कि लोग भी अपना चित्त विक्षिप्त करने वाले तत्वों से हटाकर इस एकमेव आत्मा पर लगाएं। परन्तु यह एकमेव आत्मा* (Monad) *नीरस पत्थर की*

मूर्ति (Monolith) नहीं थी, यह एक बहुमुखी रत्न की तरह से थी। विश्व के सृजन एवं रखरखाव के लिए इन्होंने छ: दिव्य हस्तियाँ (Amesha Pentas के नाम से प्रसिद्ध) दीं जिनमें स्वयं को मिला लेने पर यह सात तहों वाली सृष्टि बनाती हैं। प्राचीन ईरानी देवी-देवता, जो आद्य रूप (Archetypes) हैं, वे प्राचीन बहुधर्मीय विश्व में - मिस्त्र से भारत तक सर्वत्र पाए जाते हैं। उन्हें पूरी तरह से नहीं त्यागा गया था, उन्हें इन सातों देवदूतों के साथ एक रूप कर दिया गया था। ज़ोरास्ट्र की सबसे हृदयस्पर्शी स्तुतियाँ अरामैती (Aramaiti) नामक देवी के प्रति हैं:-

"ओ, माज़दा कब
आपकी प्रेममय भक्ति, अरामैती,
सत्य के साथ समाविष्ट होकर
आपके साम्राज्य द्वारा हमें शानदार घर और हरी-भरी चरागाहें प्रदान करेगी?"

"ओ, माज़दा, जब Khashathra और Vohuman के साथ मिलकर आपका शुद्ध विवेक हमारी ओर आएगा तो ये भौतिक संसार सत्य एवं धर्मपरायणता की ओर बढ़ेगा और देवी अरामैती उदार पुरुषों और महिलाओं के हृदय प्रेम एवं श्रद्धा के प्रकाश से ज्योतिर्मय करेंगी और उन्हें सत्य का मार्ग दिखाएंगी। तब विवेक एवं ज्ञान के प्रतीक सर्वशक्तिमान परमात्मा को धोखा देने की शक्ति किसी में नहीं होगी।" "ओ, मेरे भगवान मुझे उस सत्य एवं पावनता का पथ दिखलाओ जिसकी कामना मैंने हमेशा की है। श्रद्धा एवं प्रेम की प्रतीक अरामैती का अनुसरण करके, मुझे आशा है, मैं यह पूर्णत्व पा लूँगा।"

(Ushtavad Gatha, Yasna 43)

गाथाओं में पृथ्वी माँ के साथ मिलकर यह परामर्शदाता हस्ती बहुत महत्वपूर्ण है। ये सारी गाथाएं और भजन पैगम्बर के प्रति अर्पित हैं और ज़ोरास्ट्र धर्म का निचोड़ हैं। यहूदी धर्म और ग्नोस्टिक ईसाई-मत में खोजी गई परमात्मा की मादा विवेक-शक्ति से ये बुहत मिलती जुलती हैं और संभवत: इन धर्मों को इन्होंने प्रभावित भी किया है। प्राचीन ईरानी भाषा 'अवेस्तान' (Avestan) और भारतीय वेदों की 'संस्कृत' बहुत ही मिलती जुलती भाषाएं हैं। 'गाथा' 'गीता' का पर्याय है, जैसे 'भगवद्-गीता में है।' शब्दों से कहीं अधिक दो संस्कृतियों में आध्यात्मिक धारणाओं की भी एकरूपता है, इन धारणाओं में पंचतत्वों का सम्मान भी सम्मिलित है, विशेष रूप से अग्नितत्व का, जिसे परम तत्व माना गया है। इन तत्वों के प्रति ज़ोरास्ट्र के अनुयायियों को इतनी श्रद्धा थी कि अपने मुर्दों का संस्कार करके पंचतत्वों को प्रदूषित करने के स्थान पर मुर्दों को 'शान्ति स्तम्भों' पर रखकर, जहाँ गिद्ध इन मृत शरीरों को खा लें, उन्होंने अपने मुर्दों की अन्त्येष्टि करना पसन्द किया।

आठवीं शताब्दी में ज़ोरास्ट्रियन शरणार्थी भारत के गुज़रात क्षेत्र में पहुँचे और, आश्चर्य की बात नहीं है कि हिन्दु संस्कृति के सम्बन्धित रूप से सहिष्णु वातावरण में पारसी चिन्तनकर्त्ताओं

ने पाया कि ब्रह्माण्ड की उत्पति की हिन्दु तथा पारसी धारणाएं एक समान हैं। कुछ भारतीय पारसियों ने गाथाओं में वर्णित ज़ोरास्ट्र के सात अमेषाज़ स्पेन्तास (Seven Amesha Spentas) *की तुलना योग परम्परा के सात सूक्ष्म चक्रों से की है, इनमें से हरेक चक्र सृजन के एक पक्ष को दर्शाता है। ज़ोरास्ट्र के अमरत्व और चक्रों की तुलना निम्नलिखित है। दोनों को उत्क्रान्ति की भिन्न अवस्थाएं माना जा सकता है।*

चक्रों के गुण परम पूज्य श्रीमाताजी श्री निर्मला देवी द्वारा बताए हुए हैं—

1. **वोहूमना (Vohu Mana)** — **मूलाधार चक्र** *(मूल केन्द्र)*
   वोहूमना विवेक का प्रतीक है। पावनता और विवेक मूलाधार के गुण हैं।
2. **अशावहिस्ता (Asha vahista)** — **स्वाधिष्ठान चक्र** *(श्रोणीय केन्द्र)*
   अशावहिस्ता अर्थात 'भला सत्य'। शुद्ध विद्या और सृजनात्मकता स्वाधिष्ठान के गुण हैं।
3. **खषत्रा/वैरया (Khashatra Vairya)** — **नाभि चक्र** *(नाभि केन्द्र)*
   ख़षत्रा/वैरया प्रकृति में ताल-मेल को दर्शाती है। नाभि शान्ति, सामंजस्य एवं संतुलन का केन्द्र है।
4. ***स्पेन्ता अरामैती* (Spenta Aramaiti)** — **अनाहत् चक्र** *(हृदय केन्द्र)*
   स्पेन्ता अरामैती धर्मपरायणता एवं प्रेम है।हृदय केन्द्र प्रेम एवं ज़िम्मेदारी है।
5. **हौरवताता (Haurvatata)** — **विशुद्धि चक्र** *(ग्रीवा केन्द्र)*
   हौरवताता पूर्णता का प्रतीक है। विशुद्धि का अर्थ है 'शुद्ध'।
6. **अमेरेतात (Ameretat)** — **आज्ञा चक्र** *(भ्रू केन्द्र)*
   अमेरेतात अर्थात अमरत्व (लैटिन शब्द ईरानी भाषा से सम्बन्धित है, और संस्कृत भाषा के 'अमृत' से भी) अगन्य चक्र मानव उत्थान के उस बिन्दु का प्रतीक है जहाँ ईसामसीह ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी।
7. **अहुरामाज़दा *(AhuraMazda)*** — **सहस्रार चक्र** *(तालु केन्द्र)*
   अहुरा माज़दा दिव्य योग का प्रतीक है। सहस्रार समन्वय का केन्द्र है। यही आत्म-साक्षात्कार, परमात्मा से 'योग' का स्थान है।

जोरास्ट्रियन प्रणाली में ज्ञान प्राप्ति के लिए विवेक, प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने के लिए ज्ञान, प्रेम एवं धर्मपरायणता की स्थिति पाने के लिए, प्रकृति से सामंजस्य प्राप्त करना, आवश्यक है। ये सामंजस्य पूर्णता, अमरत्व और फिर आत्म-साक्षात्कार की ओर अग्रसर करता है। ज़ोरास्ट्र ने एक ही परमात्मा के सात गुणों का वर्णन केवल बहुदेवी-देवताओं वाले प्राचीन धर्म से समझौता करने के लिए नहीं किया। वो चाहते थे कि उनके अनुयायी अपने अन्दर इन गुणों को जागृत करने के लिए संघर्ष करें। ईश्वरत्व की उनकी धारणा ग्नोस्टिक इसाई धर्म का आधार बनी तथा यहूदी धर्म - कबालाह (Kabbalah) *के रहस्यवादी पक्ष के विकास को प्रभावित किया।*

अन्य लोगों का हित पैगम्बर की शिक्षाओं का सार-तत्व है जिसे उन्होंने ''सद्विचार, सद्भाषा और सदाचरण'' शब्दों में सम्पुट कर दिया है। बाद में अवतरित होने वाले पैगम्बरों ने भी समान शिक्षाएं दी हैं, जिनके कारण ज़ोरास्ट्र के विचारों की क्रान्तिकारी प्रकृति के महत्व को कम करना आसान है। उनकी धारणाओं में से महत्वपूर्णतम धारणा ''स्वतन्त्र-इच्छा'' थी। एक देवी-देवता वाले धर्मों के अनुयायी ज़ोरास्ट्र के ऋणी हैं, और उनके एकमेव-परमात्मा, जिसके नर एवं मादा दोनों प्रकार के बहुत से सृजनात्मक पक्ष हैं, से लाभ उठा सकते हैं। योग में इनकी सात पुष्पसम आध्यात्मिक केन्द्रों के रूप में संकल्पना की गई है, एकमात्र जीवन वृक्ष के हर चक्र का एक शासक देवता या आत्मपक्ष है। एक देवी-देवता वाले अन्य धर्मों की तरह से ज़ोरास्ट्रियन धर्म भी पितृ-सत्तात्मक धर्म बना, परन्तु ज़ोरास्ट्र की परमात्मा के मादा पक्ष की आरामैती के रूप में मान्यता, उसकी शाश्वत् सम्पदा है।

ओ, अहुरामाज़दा, अरामैती आप ही की हैं,
आप ही का है जीवन, सृजन विवेक।
हमारे अन्दर लोथड़े में जान डाली है तुम्हीं ने,
पथ-प्रदर्शन के लिए दिए हैं शब्द और कार्य करने के लिए शक्ति
ताकि स्वतंत्रता से चुन सकें हम मार्ग चलने के लिए।
हममें से हरेक, साक्षात्कारी या असाक्षात्कारी,
सच में या झूठे से,
उठाता है अपनी आवाज बोलने के लिए।
परन्तु सभी के हृदय और मस्तिष्क तक,
सीधे आत्मा से, आती है अरामैती।
संदेह होता जब हमें तो रुकती हैं वे
परामर्श देने के लिए।

रविन्द्रनाथ टैगोर

गीतांजलि में रविन्द्रनाथ टैगोर का दिव्य-दर्शन

रविन्द्रनाथ टैगोर माँ कुण्डलिनी, सहस्रार तथा सहस्रदल कमल एवं आत्म-साक्षात्कार का वर्णन करते हैं।

गद्य 98 : *.....''निश्चित रूप से मैं जानता हूँ कि कमल की सौ पंखुड़ियाँ हमेशा बन्द नहीं रहेंगी और इसके मधु की रहस्यमयी गहराई उघड़ेगी।''*

गद्य 73 : *......'' आपकी ज्योति से मेरा विश्व अपने सौ भिन्न दीपक जलाएगा और आपके मन्दिर की बेदी के सम्मुख इन्हें रखेगा।*

गद्य 67 : *''परन्तु वहाँ, जहाँ आत्मा की उड़ान के लिए अनन्त आकाश फैला हुआ है, वहाँ निष्कलंक श्वेत दीप्ति का साम्राज्य है। वहाँ न दिन है न रात है, न रंग है न आकार है और न ही कभी कोई शब्द है।''*

गद्य 66 : *'वो, जो हमेशा मेरे अस्तित्व की गहनता में रही, झलक और झाँकियों के धुंधले प्रकाश में, वो जिसने प्रातः के प्रकाश में कभी अपना घूंघट नहीं खोला, हे परमात्मा! मेरे अन्तिम गीत की तहों में आपके लिए वही मेरी अन्तिम भेंट होगी। शब्दों ने प्रणय याचना तो की परन्तु उसे जीतने में असफल रहे, अनुनय ने व्यर्थ में अपनी उत्सुक बाहें उसकी ओर फैलाईं। अपने हृदय की गहराइयों में उसे रखकर मैं देश-विदेश घूमा हूँ और मेरे जीवन की उन्नति और पतन उसी के चहुँ ओर उठे और गिरे हैं। मेरे विचारों और क्रियाओं में, उनीदेपन और स्वप्नों पर उन्हीं का साम्राज्य है फिर भी वे अकेली एवं दूर हैं। बहुत से पुरुषों (साधकों) ने मेरा दरवाजा खटखटाया और उनके विषय में पूछा और निराश लौटे। संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसने उसे साक्षात् देखा हो, और वह अपने एकान्त में आपकी (परमात्मा) मान्यता की प्रतीक्षा करती रही।''*

गद्य 65 : *''हे परमात्मा! मेरे जीवन के लबालब भरे प्याले से आप कौन-सा दिव्य पेय लेंगे? मेरे कवि, क्या मेरी आँखों के माध्यम से अपनी सृष्टि को देखना और मेरे कानों के द्वार पर खड़े होकर अपने शाश्वत सामंजस्य गीत को सुनने में ही आपकी खुशी है? आपका विश्व मेरे मस्तिष्क में शब्द बुन रहा है और आपका आनन्द इन शब्दों को संगीत प्रदान कर रहा है। प्रेम के क्षणों में आप स्वयं को मुझे समर्पित कर देते हैं और फिर मेरे अंदर अपने पूर्ण मिठास को महसूस करते हैं।''*

भारत तीर्थ

ओ माँ! समुद्र के इस पावन तट पर धीरे-धीरे मेरे मस्तिष्क को जागने दें, जहाँ सम्मान प्रदान करने के लिए विश्व की महान आत्माएं एकत्र होंगी। यहाँ फैलाए हुए हाथों से मानव रूप में परमात्मा के सम्मुख हम झुकेंगे। विपुल संगीत तथा अत्यन्त आह्लाद पूर्वक हम आपकी आराधना करेंगे। ओ साधक! रुको, दिव्य संगीत की लय पर नाचती, कल-कल करती नदियों वाला ध्यान-पर्वत यहाँ है। जहाँ समुद्र तट पर कृतज्ञता दर्शाने के लिए इतनी महान आत्माएं मिलेंगी उस सम्मानमयी पृथ्वी माँ को यहाँ प्रणाम करो।

रण-संगीत की तरह हृदय से आपके गरिमागीत गाते हुए जिन्होंने विशाल पर्वत तथा मरुस्थल पार किए उन्होंने आपकी अपनी आत्मा में स्थान प्राप्त किया। हे रुद्र-वीणा! पूरे स्वर में अपनी धुनें बजाओ ताकि अब भी जो सन्देह में फंसे हैं, अपने सन्देह त्याग कर वहाँ एकत्र हो जाएं जहाँ समुद्र तट पर नतमस्तक होने के लिए इतनी महान आत्माएं एकत्र हुई हैं।

कोई नहीं जानता कि किसके निमंत्रण ने इतनी आत्माओं को यहाँ बुलाया जो नदी के तूफानी प्रवाह के तरह से यहाँ एकत्र हुईं, उस नदी की तरह से जो यहाँ दिव्य सागर में लवलीन

हो गई। इस पावन स्थान पर, आर्य, अनार्य, द्रविड़, अफगान और मुगल आए और अपने व्यक्तित्व को एक सर्वोत्तम शरीर में विलय कर दिया। उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए पश्चिम ने सभी के लिए अपने द्वार खोल दिए। यहाँ सभी लोग सम्मिलित होकर उपहारों का आदान-प्रदान करेंगे। इस समुद्र तट से, जहाँ महान आत्माएं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एकत्र होती हैं, कोई भी खाली हाथ न लौटेगा।

यहाँ एक दिन परमात्मा की स्तुति में हमारे हृदय के तारों ने शाश्वत ओंकार की धुन बजाई। उस परमात्मा की खोज में उन्होंने जन्म-जन्मान्तर तपस्या की और पवित्र अग्नि में अपने अहं की आहुति दी। भेद-भाव के सभी बन्धनों को छोड़कर वे सार्वभौमिक बन्धुत्व के रूप में उभरे। धार्मिक सम्मान की वह भूमि, जहाँ इतनी तपस्या एवं पावन कृत्य हुए, अब सभी के लिए खुली है। इस समुद्र तट पर जहाँ महान आत्माएं अपना सम्मान प्रकट करने के लिए एकत्र हुई हैं वहाँ हमें नतमस्तक होना चाहिए।

ओ आर्यों, ओ अनार्यों, हिन्दुओं और मुसलमानों, आओ! ओ अंग्रेजों, ईसाईयों, ब्राह्मणों आओ! अपने हृदय को पवित्र करो और पिछड़े तथा शूद्र कहलाने वाले लोगों के हाथ थामो। सभी कुरीतियों एवं अपमान भाव को दूर कर दो। तेजी से माँ की ताज़पोशी के लिए आओ, वहाँ, जहाँ समुद्र तट पर सम्मान प्रकट करने के लिए आए महान सन्तों के स्पर्श से पावन किए गए जल से ''मंगल घट'' भरा जाना है।

(उपरोक्त गद्य सहजयोग अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार, गणपति पुले, महाराष्ट्र, भारत की ओर इशारा करता है जहाँ जीसस मेरी के रूप में परमपूज्य श्रीमाताजी के चरण कमलों की पूजा करने के लिए विश्व भर से सहजयोगी एकत्र होते हैं।)

खलील जिब्राँ

'टूटे पंख' (The Broken Wings) में वर्णित 'माँ' (पहली बार वर्ष 1912 में अरबी भाषा में छापा गया)

मानव की जुबाँ से बोला जाने वाला सबसे सुन्दर शब्द 'माँ' है और सबसे सुन्दर बुलावा 'मेरी माँ' का बुलावा है। ये शब्द आशा एवं प्रेम से परिपूर्ण है, मधुरता एवं करुणा से परिपूर्ण शब्द जो हृदय की गहराइयों से निकलता है। माँ सभी कुछ हैं - दुःख में वे हमारा ढाढस हैं, तकलीफ के समय वे हमारी आशा हैं और कमज़ोरी में हमारी ताकत। वे प्रेम, करुणा, हमदर्दी एवं क्षमा का स्रोत हैं। जो व्यक्ति अपनी माँ को खो देता है वो निरन्तर आशीष देने वाली एवं रक्षा करने वाली पावन आत्मा को खो देता है।

प्रकृति की हर चीज़ माँ की ओर संकेत करती है। सूर्य पृथ्वी की माँ है और अपनी गर्मी से इसे पोषण प्रदान करता है। समुद्र के संगीत, पक्षियों की चहचहाट और झरनों के कल-कल के संगीत से रात को जब तक पृथ्वी सो नहीं जाती, सूर्य इसे नहीं त्यागता। ये पृथ्वी पेड़ों और

फूलों की माँ है। उन्हें जन्म देती है, उनकी देखभाल करती है और सहेजती है। पेड़ और पुष्प अपने फलों और बीज़ों की माँ का रूप धारण करते हैं। और माँ, अस्तित्व का आदि रूप, सौन्दर्य एवं प्रेम से परिपूर्ण शाश्वत आत्मा है।

आत्मा का गीत

मेरी आत्मा की गहराई में,
निःशब्द गीत है – गीत जो जीवन्त है,
मेरे हृदय के बीच में।
इन्कार करता है ये, स्याही के साथ पिघलने के लिए
सूखे पत्ते पर, मेरे स्नेह को ये समेट लेता है
एक पारदर्शी लबादे में, और बहता है,
परन्तु मेरे होंठों पर नहीं,
मैं किस प्रकार इसकी साँस ले सकता हूँ? भय लगता कि कहीं ये
भौमिक अंतरिक्ष में मिल न जाए,
फिर मैं इसे किसके लिए गाऊंगा? इसका निवास
मेरी आत्मा के घर में है, डर से
कठोर कानों (शब्द) के।
देखता हूँ जब मैं अपनी आंतरिक आँखों में,
इसकी परछाई की परछाई दिखाई देती है मुझे,
अपनी अंगुलियों के छोरों को छूता हूँ जब
महसूस होती है इसकी चैतन्य लहरियाँ।
मेरे हाथों की ये क्रिया
ध्यान देती है इसकी उपस्थिति पर
झील ज्यों करती है प्रतिबिम्बित
चमकते सितारों को,
मेरे अश्रु प्रकट करते हैं इसे
ओस की चमकती बूँदों जैसे
मुरझाते गुलाब का रहस्य प्रकट करती है।
चिन्तन द्वारा लिखा गया है ये गीत
और मौन से छापा गया

कोलाहल से बचाया गया है ये
और सत्य से लपेटा गया
सपनों से दोहराया गया
प्रेम से समझा गया
और आत्मा से गाया गया।

प्रेम का यह गीत है
कौन से केन (Cain) या इसौ (Esau) गा सकते इसे?

चमेली से भी सुगन्धित है ये
कौन सी आवाज़ काबू करती इसे?

हृदय से बंधा है ये, अछूते रहस्य की तरह
कौन सी तार कम्पित कर सकती इसे

समुद्र की दहाड़ और बुलबुल के गीत
एक करने की ताकत है किसमें?
दहाड़ते हुए तूफान और शिशु की श्वास की
तुलना करने की ताकत है किसमें?

हृदय से बोले जाने वाले शब्द
जोर से बोलने की हिम्मत है किसमें
कौन-सा मनुष्य हिम्मत करता है गाने की
परमात्मा के गीत को?

विलियम ब्लेक

मिल्टन (1811) पंक्तियां 17-22

सर्रे की पहाड़ियाँ दहकती हैं भट्टी के खंगर की तरह,
लैम्बेथ (Lambeth) घाटी जैरूसलेम की नीवें आरम्भ हुई थीं जहाँ,
विध्वंस जहाँ उनका हुआ
हर राष्ट्र ने जहाँ दफनाया उन्हें
बलूत (Oak) के झुरमुट उगाए जहाँ
भट्टी के मुँह पर काली-काली चमकती हुई, सुलगती राख का ढेर,
कब वापिस आएगा वह जेरूसलेम सभी राष्ट्रों पर फैलने के लिए?
लौट आओ, लैम्बेथ घाटी में लौट आओ,
ओ मानवीय आत्माओं की इमारत!...

इस उद्धरण की व्याख्या परम पूज्य श्रीमाताजी ने इस प्रकार की (1981)

विलियम ब्लेक ने यह बात सौ वर्ष पूर्व कही थी। 'मिल्टन' नामक अपनी पुस्तक में ब्लेक ने इन सब चीज़ों का वर्णन किया। आप हैरान होंगे कि भविष्यवाणी की पराकाष्ठा पर वह चला गया, वह इतना महान दृष्टा था कि, सर्रे पहाड़ियों में जहाँ मैं रहती थी, उसका भी वर्णन उसने किया। पहली ज्योतिकिरण सर्रे पहाड़ियों पर जलेगी, उसने ये भी कहा है कि हमारा आश्रम कहाँ होगा, 'उजाड़' में। हमारे पास क्योंकि धनाभाव था इसलिए उन्होंने उजाड़ में एक स्थान खरीदा। लैम्बेथ मार्ग पर नीवें डाली जाएंगी, और ये वहीं है। हमारा आश्रम लैम्बेथ मार्ग पर आ गया और यही...... यही येरुशलम बनने वाला है। कल्पना करें कि एक व्यक्ति यह सब सौ वर्ष पहले देख पाया! वह इतना दृष्टा था!

एक अज्ञात योगी ने भी इस पर टिप्पणी की थी (1984)

पहली बार जब श्रीमाताजी इंग्लैण्ड में आईं तो वे दक्षिणी लन्दन स्थित सर्रे पहाड़ियों पर आक्सटेड में रहती थीं। रात के समय मध्य लन्दन की विशाल घाटी में गलियों में जलती हुई सन्तरी रंग की ज्योतियाँ भट्टी के खंगरों की तरह से चमकती थीं। परमेश्वरी माँ जब उस दिशा में देखतीं तो ये ज्योतियाँ उन्हें भट्टी के दहकते खंगरों की याद दिलातीं। सन्तरी रंग की ज्योतियाँ आकाश में सन्तरी चमक फैलातीं और नगर और आकाश विशाल भट्टी जैसा प्रतीत होता....।

लैम्बेथ दक्षिणी लन्दन का एक विशाल क्षेत्र है। लैम्बेथ शब्द का अर्थ है 'मेमने का नगर' (City of the Lamb)*, और ये मेमना भगवान ईसा हैं, 'परमात्मा के मेमने'। येरुशलम अर्थात 'आत्मा का स्थान' अर्थात श्रीमाताजी का साम्राज्य, 'पृथ्वी पर अवतरित सहस्रार'। बलूत* (Oak) *इंग्लैण्ड का वृक्ष है जो कुण्डलिनी की तरह से शक्तिशाली एवं अडोल है। कुण्डलिनी, हम सबके अन्दर जीवन-वृक्ष हैं। पृथ्वी पर जीवित साक्षात् देवी का पहला मन्दिर लैम्बेथ में एक घर के खण्डहर पर बनाया गया। भिन्न राष्ट्रों के सहजयोगियों ने इस घर को बनाने के लिए परिश्रम किया। उस समय श्रीमाताजी उनकी घायल कुण्डलिनियों को ठीक करती रहीं और उन्हें शक्तिशाली बलूत उपवन* (Oak Groves) *बना दिया।*

कबीर (14वीं शताब्दी)

(उत्तरी भारत के महान् सन्त कबीर साहिब ने सहज समाधि का वर्णन बार-बार किया है)

'जहाँ न सागर है न वर्षा'

जहाँ न सागर है न वर्षा
न सूर्य है न साया,
न सृजन और
न विलय हैं जहाँ
न जीवन न मृत्यु

खुशी और गमों के अहसास से परे,
परे सुन्नत और आत्मविस्मृति की अवस्था से
ओ मित्र! शब्दों से भी परे
है 'सहज' की अद्वितीय अवस्था।
न तोला जा सकता इसे,
न होती समाप्त ये
भारी है न हल्की है,
न ऊपरी क्षेत्र हैं इसके,
और न नीचे कोई।
सूर्योदय की रोशनी न देखती ये,
न रात के अन्धेरे को,
जहाँ न वायु है,
न जल है न अग्नि है,
पूर्ण गुरु का वही घर है।
पहुँच से परे
है ये और रहेगा सदा,
गुरु कृपा से प्राप्त कर लो इसे।
कहे कबीर, समर्पित हूँ मैं,
गुरु चरणन में
मस्त हूँ उनकी संगति में।

श्रीमाताजी भी कई बार कबीर का उदाहरण देती हैं। अपनी एक कविता में कबीर साहिब ने सहस्रार पार कर कुण्डलिनी जागृति के माध्यम से निरानन्द प्राप्ति का स्पष्ट वर्णन किया है:-

मत जाओ पुष्प वाटिका में,
ए मित्र, न जाओ वहाँ,
शरीर में है तुम्हारे पुष्प वाटिका।
सहस्रदल कमल पर करो स्थान ग्रहण,
दर्शन करो अनन्त सौन्दर्य के।
एक अद्‌भुत है पेड़, खड़ा है जो जड़ों के बिना
बिना फूले, लगें फल जिसे
न डाली है न पत्ते हैं, सर्वत्र है कमल।

दो पक्षी गाते हैं : एक गुरु एक चेला
जीवन के भिन्न फल छाँट कर
चखता है चेला
आनन्द पूर्वक गुरु देखता है उसे।

पहले पद में कबीर साहिब सहस्रार की बात करते हैं और बताते हैं कि सहस्रार पर जब कुण्डलिनी पहुँचती हैं तो असीम सौन्दर्य एवं आनन्द का अनुभव होता है।

दूसरे पद में 'वृक्ष' कुण्डलिनी, भिन्न चक्रों तथा कमल का प्रतीक है। बहुत सी पंक्तियों में कबीर ने कुण्डलिनी को 'सुरति' कहकर पुकारा है। उनके अनुयायी इसे 'सुरति-योग' कहते हैं।

एक स्थान पर तो कबीर साहब ने सूक्ष्म तन्त्र की बारीकियों के विषय में बताया है। इसमें उन्होंने बुनकर की उपमाओं का उपयोग किया है :-

ओ चाकर राम के
ईड़ा, पिंगला, सुषुम्ना कहाँ जात हैं
जीवन तन्तु टूटते,
चेला को और कौन गुरु
अनादि राम ही जाने,
क्या है ताना, क्या है बाना,
कौन तार बुनी चादर?
ईड़ा पिंगला का ताना बाना,
बुनी सुषुम्ना चादर।
अष्टकमल, चक्र दस इसमें
पंचतत्व, तीन गुण मिलकर
पूर्ण करें ये चादर।

लाओत्से (ताओ का चरित्र)

*"ताओ एक खोखला बर्तन है, इसका उपयोग अथाह एवं अनन्त है, सभी चीजों के मूल स्रोत की तरह से। इसकी तेज़धार में कोई कमी नहीं है, इसके तन्तु गुथे हुए हैं, इसका प्रकाश सन्तुलित (*Tempered*) है, शोरगुल दबा हुआ है, फिर भी गहरे जल की तरह से श्याम रंग (*Dark*) का प्रतीत होता है। मैं नहीं जानता ये किसका बेटा है, परमात्मा के सम्मुख विद्यमान (अस्तित्व) का प्रतिरूप।"*

कार्ल युंग (Carl Gustav Jung)

*(1957, पृष्ठ 254) नासेने समूह (*Naassene Group*), वायवीय (*Pneumatics*) (जिसमें वायु बहती है), "जीवन्त जल" (*Living Water*) द्वारा चुने गये थे। माना जाता था*

कि जीवन्त जल पूर्णतः सिद्ध (Accomplished) मानव के मध्य से प्रवाहित होने वाला महान सागर प्रवाह है।"

(Aurora Consurgens, P.304) *"सातवें और अन्त में, उसने जीवन्त आत्मा को वर दिया...क्योंकि अपनी श्वास से उन्होंने मृत शरीर को आत्मा में परिवर्तित कर दिया। अतः ये कहा जाता है: 'आपकी श्वास (फूँक) लोगों को आध्यात्मिक बना देती है'।"*

प्राचीन धर्मग्रन्थों से उद्धरण

उपनिषद् : *छन्दोग्य मैत्रायणी*

(4:3:4) और (6:20) "प्राण ही वायु है"

छन्दोग्य

(5:1:17) "प्राणवायु ही सर्वस्व है"

मैत्रायणी

(2:26) "प्रजापति ने स्वयं को वायु की तरह से बनाया ओर लोगों की चेतना प्रबुद्ध करने के लिए उनके अन्तस में प्रवेश कर गया...प्राण वायु ही उसका शरीर था।"

(6:21) "सुषुम्ना नाम से जानी जाने वाली नाड़ी प्राण के ऊपर जाने के मार्ग का कार्य करती है। इस नाड़ी के माध्यम से जब प्राणवायु, पावन शब्द 'ओ३म्' और मस्तिष्क का योग होता है तो उर्ध्वगति प्राप्त होती है और बिना ज्ञानेन्द्रियों के उपयोग के महानता महानता को समझ लेती है। इसके पश्चात् वह (साधक) निस्स्वार्थ भाव पर जाता है और निःस्वार्थता के माध्यम से वह सुख और दुःख भोक्ता की अवस्था से मुक्त हो जाता है, वह पूर्ण को पा लेता है।"

अथर्ववेद :

(11:4) "प्राणवायु द्वारा संचालित हर व्यक्ति का पुनर्जन्म होगा।"

तैत्रया

(3:3) "उसने ब्रह्मा के प्राण को पहचाना, क्योंकि वायु से इन चीजों का जन्म हुआ है, वायु से जन्म लेने के बाद वे जीवित होते है, और मृत्यु उपरान्त प्राणवायु में ही प्रवेश करते हैं।

सांख्यान (Shankayana)

(5) 'वायु' (प्राणवायु) चेतनता है, चेतनता प्राणवायु है।'

देवीमहात्मयम

(4 : 20) देवी के प्रति : "आपका मुखारबिन्द चन्द्रमासम है, जिससे शीतल किरणें निकल रही हैं।"

यूरोप से कुछ और भविष्यवाणियाँ

(19, 20वीं शताब्दी)

परिवर्तनशील सभी कुछ, केवल प्रतिबिम्बित होता है
अलभ्य यहाँ प्रभावित होता है
मानव विवेक की यहाँ चिन्ता नहीं होती
शाश्वत-मादा (कुण्डलिनी) हमें बुलंदियों पर ले जाती है।

(Johann Wolfgang von Goethe (1749-1832), Faust)

महिला-उद्धारक, अब हम करेंगे
आपके अवतरण की प्रतीक्षा
आपकी कांति के झुरमुट में,
आओ, और न छोड़ो पृथ्वी को फिर कभी
आपकी सौम्य दृष्टि के सम्मुख
हिम्मत हार देगी खड़ग और योद्धा होंगे असफल
और भाला चरवाहे की कँटिया की तरह
गुलबहार (Daisy) *घाटी की शोभा बढ़ाएगा।*
मानव रूपिणी देवी! तुम आकर बनो मादा शक्ति। अवतरित प्रेम,
दुल्हे की आँख के आँसू।
दुल्हन को ले जा सकते हैं यदि मानवता की ओर।
केवल आप बचा सकती हैं हमें
बन जाएं हम आपकी इच्छानुरूप!

(Goodwym Barmby,*The Woman Power* (1842) English Radical)

नए युग के विचार, जिनसे हमारे पोते-पड़पोते, या उनसे भी बाद में आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें जानेंगी, कब वे स्वयं उन्हें प्रकट करेंगी? वे कैसी दिखाई देंगी और क्या गाएंगी? आत्मा के कौन-से तारों को वो झंकृत करेंगी? अपने युग को किस बुलन्दी तक वे उठाएंगी।

(Hans Christian Anderson, *The new Century's Goddess (1861)*

दुनिया के लोगों जान लो : आज परमेश्वरी (Eternal Feminine),
साक्षात् निष्कलंक रूप में हो रही हैं पृथ्वी पर अवतरित
नव देवी के कभी धूमिल न पड़ने वाले प्रकाश में
गहराइयों से एक हो गया है आकाश भी।

(वलादिमीर सोलोवीव (1853-1900), रूसी दार्शनिक)

शताब्दि के परिवर्तन के समय, प्राय: माना जा रहा था कि अगला दैवी अवतरण पृथ्वी पर आने वाला है और वह महिला रूप में होगा। दिव्य-विवेक या थियो-सोफिया (Theo-

Sophia) *तथा वर्तमान युग उन सभी रहस्यों को उघाड़ने वाला होगा जो आरम्भ से रहस्य बने रहे।*

(Lady Caithness, *The Mystery of the Ages* 1887, French Theosophist)

विश्व की रक्षा करने वाला शब्द, जो आएगा, वह महिला (अवतरण) के मुँह से बोला जाएगा। मोक्ष प्रदायी लहरों की धारणा एक महिला करेगी और वही उन्हें लाएगी। क्योंकि आदम् (Adam) *का साम्राज्य अन्तिम अवस्था में है और ईव का सृजन करके परमात्मा हर चीज़ का अभिषेक करेंगे।*

(Anna Kingsford, *Clothed with the Sun, 1889,* English Theosophist)

कार्य या अध्ययन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसे पाश्चात्य महिला करती न हो या पुरुषों की तरह से इसे सफल न बनाती हो। यहाँ तक कि सामाजिक, राजनीतिक, गतिविधियों, धर्म और आध्यात्मिक विचारों में भी महिलाएं पुरुषों को पीछे छोड़ रही हैं...... दिन के प्रकाश की तरह मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि वह समय आने वाला है जब महिला मानव को उत्क्रान्ति की ऊँचाइयों पर ले जाएगी।

(Hazarat Inayat Khan (1882 to 1927), Indian Sufi in the West)

एक महान युग आरम्भ हो चुका है :- आध्यात्मिक 'जागृति', 'खोए सन्तुलन' को प्राप्त करने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति, अवश्यम्भावी आध्यात्मिक रोपण की आवश्यकता और प्रथम पुष्पण का आरम्भ होना-मानव द्वारा अनुभव किए गए महानतम युगों में से एक युग के किनारे पर हम खड़े हैं-महान आध्यात्मिक युग के सिरे पर।

(Vassily Kandinsky / Franz Mare, *Blaue Reiter Almanac (1911)*
(Abstract Artists)

(परम) पिता ने विश्व की रक्षा नहीं की,
बेटे ने भी विश्व को नहीं बचाया,
माँ इसकी रक्षा करेंगी,
माँ आदिशक्ति हैं।

(Dmitrii Marezhkovskii*, The Mystery of Three (1925),* Russian Exile in France)

हम युगों के ऐसे चक्र में प्रवेश कर रहे हैं जब मादा आत्मा अत्यन्त पावन एवं उदार हो जाएगी, जब अधिक से अधिक महिलाएं गहन प्रेरणा प्रदायी, विवेकशील माताएं और बुद्धिमान तथा दूरदर्शी अगुआ बन जाएंगी। युगों का ये ऐसा चक्र होगा जिसमें मानवता का महिला घटक पहले कभी न देखी गई शक्ति के साथ अपनी अभिव्यक्ति करेगा और पुरुष शक्तियों द्वारा बीते हुए समय में जमाए गए प्रभुत्व को सन्तुलित करके पूर्ण सामंजस्य स्थापित करेगा।

(Danil Andreev, *Roza Mira* (Completed 1958) Russian dissident)

क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि दिन आ रहा है,
और ऐसा बहुत शीघ्र नहीं होगा।

जब विश्व के सभी लोग एक ही कमरे में रह सकेंगे
जब हम प्राचीन को त्याग देंगे,
अपने मकबरे की सभी प्राचीन जंजीरों को काट देंगे
दिव्य गर्भ (Eternal Womb) *से जन्म लेंगे पुनः*

(Cat Stevens, *Don't you feel a change coming?* (1971, English Singer)

सम्पत्तियों की कल्पना न करें,
मुझे शक है कि कोई सम्पत्ति आपकी हो सकती है
लालच या भूख की कोई आवश्यकता नहीं
आवश्यक है मानव का भाईचारा
मिलकर विश्व का उपयोग करते लोगों की कल्पना करें......
आप कह सकते हैं कि मैं स्वप्न दृष्टा हूँ
परन्तु मैं अकेला नहीं
मुझे आशा है एक दिन हम सब मिल जाएंगे
और विश्व रहेगा एक होकर

(John Lennon, *Imagine,* 1971, English Singer)

वर्डजवर्थ के शब्दों को सुने :-

कोमल सृजनात्मक हवा
प्राण वायु जो धीरे-धीरे ऊपर की ओर आई
अपनी बनाई हुई सभी चीज़ों से ऊपर (The Prelude)

विलियम वडर्जवर्थ (निष्कर्ष)

"क्यों सोता है भविष्य, कुण्डली मारे साँप की तरह
*कुण्डल में कुण्डल, भरी दोपहरी में? (*Noon tide*)*
क्योंकि शब्द, प्रदान करता है अर्थ,
विनम्र श्रद्धा से खोजा जाए यदि
शक्ति, जिसके स्पर्श से,
खोल देगा आलसी (सुप्त)
अपने उनींदे कुण्डलों को,
आगे देखो! सहज प्रवाहित सरिता का
अवलोकन करो,
राष्ट्रों ने जबकि, अपमानित किया है
राष्ट्रों को,

और मृत्यु ने लपेट ली हैं अपनी परतों में
लम्बी कतारें शक्तिशाली नृपों की,
आगे देखो, हे मेरी आत्मा!
जीवन्त जल,
दोषभाव के प्रदूषण से मुक्त
चमकते हुए निरन्तर होते प्रवाहित
पहुँचते नहीं जब तक केवल पूर्णात्माओं के लिए रचित,
शाश्वत नगर में"

ब्लेक अपने 'शाश्वत उपदेश' में लिखते हैं

अब भी दिव्य हवा बह रही है
और ये दिव्य हवा प्रेम है।

दिव्य ज्ञान की खोज

श्रीमाताजी का कथन

"अब आदिशक्ति ने अन्दर के सातों चक्र जागृत कर लिए हैं और इन सातों चक्रों से उन्होंने कार्य करना है। ऐसा अवतरण पहली बार आया है। ये इस प्रकार है जैसे पहले आप एक कमरा बनाते हैं, फिर दूसरा, फिर तीसरा–इस प्रकार सात कमरे और तब घर पूर्ण होता है, आप इसकी चाबियाँ लेते हैं और घर को खोलते हैं, अब घर आपका है। इसी प्रकार से मैं सामूहिक आत्म–साक्षात्कार (की विधि) प्राप्त कर पाई। पहले ये कार्य न होता था। परन्तु अब सात चक्रों के समन्वय के कारण ये सम्भव है। तो अब जब आप आदि–शक्ति की स्तुति कर रहे हैं, मैं महामाया भी हूँ, महामाया रूप में ही मैं दिखाई देती हूँ, आप लोगों की तरह से व्यवहार करती हूँ और स्वयं को मैंने बिल्कुल आप जैसा बनाया है। ऐसा करना बहुत कठिन था परन्तु मैंने ऐसा किया। आपको सहजयोग तथा आपकी अपनी शक्तियों के विषय में समझाने के लिए इस शरीर को बहुत कुछ सहन करना पड़ता है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, मैडरिड, स्पेन, 24.05.1986)

आत्मा और जीवात्मा

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी से वार्तालाप

वोल्टेरा (Volterra, Italy, 25.7.1986)

श्रीमाताजी के गिलास में प्रतिबिम्बित होते हुए सारे चक्र

वोल्टेरा, इटली, के एक रेस्तरां में रहस्योद्घाटन करते हुए
श्री माताजी, 25 जुलाई 1986

इस वार्तालाप को आरम्भ से रिकार्ड नहीं किया जा सका था। अत: हम इसे वहाँ से आरम्भ कर रहे हैं जहाँ वार्तालाप के मध्य में श्रीमाताजी जीवात्मा और आत्मा के सम्बन्धों की परिभाषा दे रही हैं। उन्होंने प्रकाश, जल तथा जल से भरे गिलास की उपमाएं दी हैं। वार्तालाप में आगे चलकर ये स्पष्ट हो जाएगा कि प्रकाश आत्मा है, गिलास शरीर है और प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने वाला जल जीवात्मा है। श्रीमाताजी ने जब ये उपमाएं दीं उसी स्थान से हम ये वार्ता आरम्भ कर रहे हैं।

श्रीमाताजी : *यहाँ पर प्रकाश आता है, यह (गिलास) शरीर है। सभी पाँच कोष, पाँच परिमल यहाँ विद्यमान हैं। अत: पंच तत्व इन पाँच कोषों का प्रबन्ध करते हैं। इन तत्वों के सारतत्व को कारणात्मक तत्व* (Causal Element) *कहते हैं।*

सहजयोगी (नं.1) : *.....पंचतत्वों का सारतत्व। संस्कृत में जिसे हम आत्मा के नाम से जानते हैं, क्या यह जीवात्मा और आत्मा का योग है या केवल आत्मा?*

श्रीमाताजी : *जीवात्मा को अंग्रेजी में* Soul *कहते हैं और आत्मा को* Spirit *।*

सहजयोगी (नं.2) : *तो जीवात्मा किसी व्यक्ति विशेष की* Spirit *है, केवल उसी व्यक्ति से सम्बन्धित?*

श्रीमाताजी : *नहीं, नहीं। जीवात्मा को* Soul *कहते हैं अर्थात ये पंचतत्वों के साथ है। ये पंच महाभूत आपको आपकी-अपनी पहचान, चरित्र और विशेषताएं आदि प्रदान करते हैं। इस प्रकार से पंचतत्वों को आपके अन्दर स्थापित किया गया है। यह कारणात्मक तत्व है। आपके अन्दर स्थापित किए गए पंचमहाभूतों का कारण। ये कारणात्मक तत्व चक्रों पर कार्य करते हैं और चक्रों के माध्यम से ये अन्य चीज़ों पर, स्थूल पक्ष पर कार्य करते हैं। अत: सूक्ष्म से सूक्ष्मतर.....आप कह सकते हैं सूक्ष्मतम।* **मान लो आत्मा सूक्ष्मतम है तो सूक्ष्मतर जीवात्मा है और आपके चक्र सूक्ष्म हैं तथा शरीर स्थूल है।**

सहजयोगी (नं.1) : *तब तो इंग्लैंड का प्रभाव इटली पर होना चाहिये, (श्रीमाताजी ने एक अन्य अवसर पर बताया था कि इंग्लैंड ब्रह्माण्ड की आत्मा है और इटली जीवआत्मा)*

श्रीमाताजी : *जीवात्मा ही.... इसी कारण से सभी प्रकार की कला यहाँ (इटली में) विकसित हुई। जीवात्मा, जोकि यहाँ पर है, ही यूरोप के सभी तत्वों का सार तत्व है और इंग्लैंड इसका प्रतिबिम्ब है। अत: इंग्लैंड ने इटली को प्रभावित करना ही है।*

सहजयोगी (नं.2) : *देखिये गिलास के अन्दर का पानी प्रकाश को प्रतिबिम्बित कर रहा है। इंग्लैंड प्रकाश है, और प्रकाश को इटली में से चमकना है क्योंकि इटली जल है। मेरा अभिप्राय ये है कि ये एक प्रकार से पंचतत्व हैं।*

श्रीमाताजी : *और आत्मा जीवात्मा के अन्दर से बाहर निकल सकती है इसी कारण से रोमन लोग इंग्लैंड गये। इस जिज्ञासा का यही कारण है (परोसे हुए खाने के संदर्भ में) यह क्या हो सकता है?*

सहजयोगी (नं.1) : *अतः एक प्रकार से जीवात्मा आत्मा का आधार है।*

श्रीमाताजी : *नहीं, नहीं। जीवात्मा....... हाँ निःसन्देह। और दोनों को जब एक किया जाये तो वास्तव में यह जीवात्मा है। आत्मा और कारणात्मक एक होने पर जीवात्मा बनते हैं। आप देखें जैसे एक दर्पण और इसका प्रतिबिम्ब, दोनों जब एक होते हैं तो यह जीवात्मा है। पंच महाभूतों के कारणात्मक तथा आत्मा एक हो कर जीवात्मा बनते हैं। जिन चैतन्य लहरियों को हम महसूस करते हैं, ये आत्मा के प्रकाश का प्रतिबिम्ब हैं। आत्मा यह चैतन्य प्रवाहित नहीं करती। पंचतत्व ये चैतन्य प्रवाहित करते हैं। जैसे आप कह सकते हैं कि पानी से भरे इस गिलास के ऊपर यदि आप कोई ध्वनि करने वाली चीज़ रखें तो यह तरंगें प्रवाहित करेगा। इसमें यदि आप कोई पत्थर डाल दें तो वह तरंगें उत्पन्न नहीं करेगा परन्तु ध्वनि से तरंगें उत्पन्न होंगी। आत्मा जब प्रकाशमान होती है.... देख के (अनुवाद करते हुए ग्रैगौर से) आप अपना खाना खायें। जीवात्मा से खाने और खाने से जीवात्मा तक।*

सहजयोगी (नं.3) : *तो इस प्रकार* Soul *से आपका अभिप्राय है-जीवात्मा, यूरोप की जीवात्मा।*

श्रीमाताजी : *परन्तु आत्मा बाहर भी निकल सकती है। तो आत्मा इसमें से निकल गई है जोकि गलत है। अब उन्हें इटली को पहचानना होगा तभी आत्मा प्रतिबिम्बित होगी। क्योंकि आत्मा जीवात्मा को त्याग सकती है। तो आत्मा ने जीवात्मा को त्याग दिया है इटली में, यहाँ पर आत्मा नहीं है। आत्मा को यहाँ लाना होगा। अंग्रेजों को यहाँ आना होगा.... कहने से अभिप्राय है कि इंग्लैंड को यहाँ आना पड़ेगा, ताकि यहाँ आ कर वे इस देश की महानता के महत्व को समझ सकें। तब यह प्रसारित होगा। आप ही लोग आत्मा को प्रतिबिम्बित कर सकते हैं। आप ही आत्मा को प्रतिबिम्बित कर सकते हैं। आत्मा स्वयं तो कुछ भी नहीं करती, आत्मा कुछ भी नहीं करती, यह केवल प्रतिबिम्बित होती है। तब सारी तरंगें प्रसारित होती हैं। जैसे सहस्रार दिवस पर* (Alpe Mota 1986 *के संदर्भ में कहते हुए), सहस्रार दिवस जो आपने मनाया है इसमें पूरा यूरोप प्रतिबिम्बित हुआ है।*

सहजयोगी (नं.1) : *भाड़े पर लिये हुए यान से जब आप सभी अंग्रेज सहजयोगियों के साथ (दिवाली पूजा उत्सव 1985) के लिए आये तो हमें ऐसा महसूस हुआ कि कुछ महान गतिविधि हो रही है!*

श्रीमाताजी : *हाँ! भाड़े पर लिया हुआ पूरा यान आया .... देखिये, आत्मा वहीं है*

जहाँ हृदय है, जो सारी चीज़ को परिसंचारित करता है। उसी से परिसंचरण (Circulation) *आरम्भ होता है। परन्तु जो...... वास्तव में तत्व ही इस सारे संचरण का संचालन करते हैं। यही इस कार्य को करते हैं। परन्तु वक्ता वही है जो आरम्भन* (Originate) *करते हैं (या जो प्रकाश डालते हैं)। यह कार्य हम इंग्लैण्ड में आरम्भ कर सकते हैं, परन्तु अब क्योंकि मैं इंग्लैंड में हूँ, वही प्रकाश है, और वही आत्मा है और वही आपमें प्रतिबिम्बित है।*

पहला सहजयोगी : *श्रीमाताजी जब आप इंग्लैंड से चली जायेंगी तो क्या होगा?*

श्रीमाताजी : *मेरे जाने से पूर्व वहाँ पर जीवात्मा बन जायेगी। आत्मा शाश्वत है, यह कभी मरती नहीं। परन्तु हो क्या रहा है कि तब तक कार्य सम्पन्न हो जायेगा, एक प्रकार का साक्षात्कार घटित हो जायेगा। आवश्यकता केवल कुण्डलिनी उठने की है, परन्तु वह भारत में है। अतः मुझे भारत जाना होगा।*

दूसरा सहजयोगी : *सहस्रार पर जाने के लिए?*

श्रीमाताजी : *सर्वप्रथम कुण्डलिनी उठाने के लिए, तत्पश्चात सहस्रार पर जाने के लिये। तो वह कार्य मुझे करना होगा भारत के मंच पर जा कर, परन्तु जागृति केवल तभी आरम्भ होगी जब यह यहाँ पर पूरी तरह से प्रतिबिम्बित होगा। इसीलिये मैं इंग्लैंड से आई हूँ। मैं इटली हमेशा इंग्लैंड से आती हूँ, भारत से नहीं। वहाँ से भी मैं आ सकती हूँ लेकिन इस मामले में अब मैं इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व करती हूँ।*

पहला सहजयोगी : *(जिसने अनुवाद में अपनी व्याख्या भी जोड़ ली थी, श्रीमाता जी से कहता है) मैं कह रहा था कि आप यहाँ आत्मा के रूप में आती हैं ताकि यहाँ स्वीकृति के माध्यम से आपकी अभिव्यक्ति हो और यह चैतन्य लहरियों के रूप में प्रतिबिम्बित हो कर सर्वत्र प्रसारित हो जाये।*

श्रीमाताजी : *मेरा अभिप्राय यह है कि यह हृदय की भी सहायता करता है। हृदय इतना अधिक प्रतिबिम्बित नहीं होगा परन्तु हृदय आपका प्रतिबिम्ब स्वीकार करेगा। हृदय के संदेश को। वह संदेश मैं स्थापित कर रही हूँ और हृदय से, एक तरह से, संदेश भेज दिया गया है। हृदय से ही हमें सारी सूचनाएं मिलती हैं, सारे कार्यक्रम प्राप्त होते हैं, सभी कुछ हृदय से प्राप्त होता है। हृदय अधिक कुशल नहीं है फिर भी इसी से सब कुछ आता है। हृदय बहुत अधिक कुशल नहीं है फिर भी यह कार्य होता है। यह सब इसी प्रकार है। सुव्यवस्थित एवं प्रतीकात्मक।*

तीसरा सहजयोगी : *आप यह भी कहती हैं कि हमें आत्मा का गहन गुण भी प्राप्त करना है?*

श्रीमाताजी : *हाँ। अपनी आत्मा को प्रतिबिम्बित करने की योग्यता आपमें होनी चाहिये। पूर्णतः स्वच्छ हुए बिना आप प्रतिबिम्बित नहीं हो सकते। अब भी इटली के बहुत से*

सहजयोगी अत्यन्त पकड़े हुए हैं। उन्हें चाहिये कि स्वयं को सुधारें। आप देखें कि सभी नकारात्मक लोग एक दूसरे के पास बैठते हैं। नकारात्मक लोगों से ही उनकी दोस्ती होती है। नकारात्मक लोगों से ही उनकी गहन मित्रता होती है। इस प्रकार उत्क्रान्ति की ओर बढ़ते हुए भी उनका पतन हो जाता है। वे थोड़ा सा सुधरते हैं, और फिर पतन की ओर चले जाते हैं। नकारात्मकता हमेशा, नकारात्मकता का साथ देगी, दुर्घटनाएं होंगी, समस्याएं आयेंगी, ये होगा, वो होगा, बच्चे बीमार होंगे। (भोजन के बारे में) भोजन में कितने व्यंजन हैं?

पहला सहजयोगी : *तो, श्रीमाताजी, इसी कारण से एक वर्ष पूर्व यहाँ पर इतनी अच्छी गणेश पूजा हुई थी क्योंकि आत्मा को प्रतिबिम्बित करने के लिये कारणात्मक तत्वों को पंचतत्वों के सार तत्व को प्राप्त करना पड़ता है? क्योंकि यह सार तत्व श्रीगणेश है?....... मेरा अभिप्राय यह है कि 'पदार्थ' का सार 'तत्व' ही है।*

श्रीमाताजी : *ये बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इटली अत्यन्त वैभवशाली स्थान भी है। इसमें सभी कुछ है। इतना सम्पन्न स्थान है। कुछ अन्य देश जो सम्पन्न नहीं है जैसे स्विटजरलैण्ड, इंग्लैंड - ये सभी स्थान सम्पन्न नहीं है। अत: उन सभी लोगों की तरह जो निर्धन हैं, वे हमेशा अमीरों का मज़ाक उड़ाते हैं, उन्हें बुर्जुआ कहते हैं..... इसी प्रकार से वे हमेशा इटली के लोगों का भी मज़ाक उड़ाते हैं, परन्तु वास्तव में वे मूर्ख लोग हैं। ये ऐसा ही है। तो वे इटली के लोगों का मज़ाक उड़ाएंगे चाहे जो भी कार्य वे करे! वो सोचते हैं कि इटली के लोग कुछ गंवारु से हैं। ये अजीब बात है! जीवन में भी आप पाएंगे कि जिस व्यक्ति के पास धन है, सभी उसका मज़ाक उड़ाएंगे। इटली में संगमरमर का भण्डार है, यहाँ हस्तकला की बहुत सी चीज़ें हैं। और गरीब देश - गरीब से मेरा अभिप्राय है प्राकृतिक वैभवहीनता - इस मामले में अत्यन्त सतर्क रहते हैं क्योंकि उनके पास बहुत कम सम्पदा होती है। वे कंजूसों की तरह से सतर्क होते हैं और बहुत स्वच्छ भी होते हैं क्योंकि उनके पास प्राकृतिक सम्पदा बहुत कम होती है। अमीर व्यक्ति का कुछ पैसा इधर-उधर हो जाए तो भी उसे कुछ फर्क नहीं पड़ता। कोई फर्क नहीं पड़ता। परन्तु इस बात का भी वे मज़ाक उड़ाते हैं। क्योंकि उन मूर्ख लोगों को प्रकृति से कुछ अधिक प्राप्त नहीं हुआ और वह इसके अधिकारी भी नहीं हैं। नहीं, वे इसके अधिकारी नहीं हैं। मेरा अभिप्राय ये हैं कि आप देखिए कि किस प्रकार से उन्होंने विश्वयुद्ध में सहायता की! (श्रीमाताजी यहाँ विशेष रूप से स्विजटरलैंड के बारे में कह रही हैं)*

चौथा सहजयोगी : *हाँ, भयानक!*

श्रीमाताजी : *वो किस चीज़ के अधिकारी हैं? कल्पना करें कि हिटलर की सहायता करने वाला देश अब तक भी विश्व में शिखर पर हो!*

पाँचवां सहजयोगी : *क्या मैं ये कह सकता हूँ कि मैं इटली का पहले नम्बर का कद्रदान हूँ, श्रीमाताजी!*

श्रीमाताजी : *(हँसते हुए) ये बात स्पष्ट हो रही है कि अब आपकी आत्मा यहाँ आ रही है। वे जब यहाँ आकर देखते हैं...... सहजयोग में आने के पश्चात् लोग स्थान के सौन्दर्य की सराहना करने लगते हैं।*

पहला सहजयोगी : *(पाँचवें सहजयोगी से) तुम प्रशंसक नम्बर दो हो।*

श्रीमाताजी : *आप देखिए वे (इटली के लोग) हृदय से अत्यन्त अमीर हैं। परन्तु सर्वत्र उनके बारे में आपको इसी प्रकार का दृष्टिकोण दिखाई देगा चाहे वो कला हो या कोई अन्य क्षेत्र। उन्हें कुछ भी पसन्द नहीं है...... आप इंग्लैण्ड को देखिए, मैं कहूँगी इन्हें सुन्दर प्रतीत होने वाली कोई भी चीज़ अच्छी नहीं लगती। हम एक घर देखने के लिए गए। कल्पना करें! ये घर अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण*(Crooked) *अवस्था में था। पूरी तरह से झुका हुआ था और मेरी तो समझ में नहीं आया कि ये कैसा घर था? परन्तु उन सबको ये घर पसन्द आया। तो मैंने कहा, ये क्या मूर्खता है? ऐसा घर तुम्हें कैसे पसन्द आता है जिसके खम्भे और शहतीर गिर रहे हैं, सभी झुके हुए हैं, आदि, आदि!''*

पाँचवा सहजयोगी : *स्वभाव श्रीमाताजी "स्वभाव"।*

श्रीमाताजी : *स्वभाव! इसका अर्थ ये हुआ कि मान लो आपकी नाक ऐसी है तो ये आपका स्वभाव है। मेरे विचार से यह अत्यन्त अटपटापन है! आपने वहाँ रहना है, उस घर में आपने रहना है। आप स्वयं ही शिकार बन जाएंगे।*

पहला सहजयोगी : *श्रीमाताजी, जब उनके पास प्राकृतिक सम्पदा नहीं है तो वे बनावटी सम्पदा की रचना करते हैं। जैसे बैंक प्रणाली। कागज़ों से वे पैसा बनाते हैं।*

श्रीमाताजी : *मैं आपको बताऊंगी। अब आप अमरीका का अनुभव देखें। अमरीका का वैभव प्लास्टिक और रबड़ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। उनके पास क्या है? कनाडा के पास है। परन्तु वे हमेशा कनाडा को घटिया कहते हैं। प्लास्टिक, प्लास्टिक के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, वे प्लास्टिक खाते हैं, प्लास्टिक में रहते हैं, प्लास्टिक में सोते हैं। मेरा अभिप्राय है कि जिस तरह की सेलखड़ी हमने आज देखी। आप इस प्रकार का कुछ नहीं देख सकते, सिवाय प्लास्टिक के या ज्यादा से ज्यादा शीशा। ज्यादा से ज्यादा शीशा। भारत में हमारे यहाँ रेशम है और भी सभी कुछ है। परन्तु सभी लोग हमें तुच्छ मानते हैं। (श्रीमाताजी संक्षिप्त में भोजन के बारे में पूछती हैं और पुनः आरम्भ करती हैं) स्विटजरलैंड में यदि आप एक सूती कमीज़ खरीदें, यह बहुत ही महँगी होती है। चावल आदि भी महँगे हैं। वहाँ तो बस बैंक व्यापार है, कोई कला और कलात्मकता नहीं।*

परम पूज्य श्रीमाताजी का साधकों को परामर्श

भारतीय विद्या भवन

मुम्बई, भारत 22.03.1977

"...परन्तु मेरा फोटो सच्चा फोटो है। एक अन्य बात ये है कि जो कुछ भी मैं बोलती हूँ उसमें प्रणव प्रवाहित होता है क्योंकि मैं वही हूँ। मेरा हर प्रवचन मन्त्र प्रवाह है और मैंने देखा है कि जब मैं अपनी अंगुली घुमाती हूँ तो मेरा चैतन्य परिवर्तन ला सकता है। मुँह से जब मैं प्रणव फूँकती हूँ तो आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति उसे अपने सहस्रार पर महसूस कर सकता है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई, भारत, 22.03.1977)

प्रश्नः- माननीय श्रीमाताजी कृपा करके ज्ञान में मुझे दृढ़ करें, तथा मेरे मार्ग को और प्रशस्त करें।

1. ***चैतन्य लहरियाँ क्या हैं? (शरीर विज्ञान, विज्ञान और आध्यात्मिकता के संदर्भ में)***
2. ***ये चैतन्य लहरियाँ आती कहाँ से हैं? आपसे, ब्रह्माण्ड से या वातावरण से? चैतन्य लहरियाँ हमें किस प्रकार लाभान्वित करती हैं?***
3. ***सहजयोग में करने योग्य क्या है और न करने योग्य क्या है?***

उत्तर : *बहुत ही अच्छा प्रश्न है।*

पहला प्रश्न ये है कि चैतन्य लहरियाँ क्या हैं? कल मैंने आपसे बताया था कि हमारे हृदय के अन्दर एक ज्योति है जो हमेशा जलती रहती है, ये आत्मा है जो हमारे हृदय में परमात्मा का प्रतिबिम्ब है। संक्षिप्त में मैं आपको इसके विषय में बताऊंगी। कुण्डलिनी जब उठती है तो क्या होता है? ये ब्रह्मरन्ध्र को खोलती है। यहाँ पर सदाशिव की पीठ (स्थान) है। यहाँ सहस्रार पर यह पीठ है। परन्तु सदाशिव हृदय में हैं आत्मा के रूप में प्रतिबिम्बित। पीठ का सृजन इसलिए किया जाता है क्योंकि ये सर्वव्यापी सूक्ष्म-शक्ति को ग्रहण करती है। स्थूल के अन्दर विद्यमान सर्वव्यापी शक्ति, उदाहरण के रूप में ये माइक मेरी आवाज़ को ग्रहण करता है। आवाज सूक्ष्म शक्ति है जो इस माइक के माध्यम से एकत्र होती है। और यदि आपके पास रेडियो हो तो वह भी इस आवाज़ को पकड़ेगा।

इसी प्रकार से मस्तिष्क में पीठ है, और सदाशिव की पीठ यहाँ ऊपर (सहस्रार) है जो इसलिए खुलती है ताकि सूक्ष्म और स्थूल सूक्ष्मतंत्रिका के माध्यम से हमारे हृदय में प्रवेश कर सके। जैसे गैस का प्रकाश जिसमें टिमटिमाहट होती है, जब गैस खुलती है तो प्रकाश हो जाता है। चैतन्य लहरियाँ हमारे अन्दर से गुजरने वाला वही प्रकाश है। ये चैतन्य लहरियाँ हमारे अन्दर से प्रवाहित होने लगती है। अब मैं क्या करती हूँ? आप पूछेंगे, ''श्रीमाताजी आप क्या करती हैं?'' मैं कुछ नहीं करती केवल आपको वह शक्ति प्रदान करने का प्रयास करती हूँ जो, आप कह सकते हैं, कि गैस शक्ति है। यह गैस शक्ति है। क्योंकि ***कुण्डलिनी जानती है कि मैं आपके सम्मुख हूँ इसलिए वह उठती है, प्रकट होती है और प्रवाहित होने लगती है।*** *सदैव यह मेरे अन्दर से प्रवाहित होती है। परन्तु जब तक आप सूक्ष्म नहीं बनते आप इसे महसूस नहीं कर सकते।* ***आप कह सकते हैं कि मैं सीमित में असीम हूँ (Infinite in the Finite)। या आप कह सकते है कि मैं असीमित में सीमित हूँ। मैं दोनों हूँ।*** *इसलिए सारी सूक्ष्म ऊर्जा में जो ऊर्जा प्रवाहित होती है वह मेरे अन्दर से गुजरती है। मैं विराट हूँ। विराट के अन्दर से ही सभी कुछ प्रवाहित होता है। ये सर्वव्यापी शक्ति में जाता है। यह सर्वव्यापी है। सर्वत्र, सभी व्यक्तियों में ये प्रवाहित हो रहा है। छोटी सी कोशिका में भी, कार्बन के अणु में तथा अन्य सभी अणुओं में ये विद्यमान है। ये सूक्ष्म ऊर्जा है जो मेरे माध्यम से प्रवाहित होती है।* ***जब आप सूक्ष्म हो जाते हैं तो रेडियो की तरह से बनकर इसे ग्रहण करते हैं।*** *ठीक क्या है और गलत क्या है,*

इस बात को आप कैसे जानेंगे? आप सूक्ष्म से पूछें? सूक्ष्म आपको उत्तर देता है और आपको अपने हाथों पर उत्तर प्राप्त होता है। ये इस तरह से होता है। तो ये चैतन्य लहरियाँ हैं जिन्हें आप सर्वव्यापी शक्ति से प्राप्त करते हैं और सर्वव्यापी शक्ति प्रवाहित होती है जिसे आप मुझसे, सर्वव्यापी से, प्राप्त करते हैं। सभी दिशाओं से यह एक जैसी हैं। ये चैतन्य लहरियाँ हैं।

अब आप आत्म-साक्षात्कार को समझने का प्रयत्न करें, जोकि अत्यन्त सूक्ष्म बिन्दु है। ***आपकी आत्मा अचेतन में है,*** *यह चेतन अवस्था में नहीं है, अचेतन में है। ये आपके अचेतन में है। अभी तक आप इसके बारे में नहीं जानते। परन्तु एक बार* ***आत्म-साक्षात्कार होने के पश्चात् यह आपकी चेतना में प्रवाहित होने लगती है*** *अर्थात आप इसे अपने मध्य नाड़ी तन्त्र पर महसूस करने लगते हैं क्योंकि आपका नाड़ी तन्त्र ही आपकी चेतना है। ये आपकी चेतना है।* ***मानवीय चेतना मध्य नाड़ी तन्त्र है, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं।*** *परन्तु ये मध्य नाड़ी तन्त्र अब (आत्म-साक्षात्कार के बाद) चैतन्य लहरियों को, आत्मा के प्रकाश को, अपने माध्यम से महसूस करता है ताकि हमें बता सके कि ये समाधि क्यों कहलाती है?* ***समाधि अर्थात अचेतन। अचेतन जब चेतन बनता है तो ये समाधि कहलाती है। ये बेसुध अवस्था नहीं है। इसका अर्थ ये है कि आप अचेतन के बारे में चेतन हो जाते हैं। केवल इतना ही नहीं सर्वप्रथम आप निर्विचार हो जाते हैं फिर निर्विकल्प और फिर पूर्ण आत्म-साक्षात्कारी।*** *अतः समाधि शब्द भ्रान्तिपूर्ण है। इसका अर्थ है सर्वव्यापक अचेतना। कल न्यायाधीश वैद्य ने आपको बताया था कि साधना तीन प्रकार की होती है सात्विक, राजसिक और तामसिक। तामसिक बाईं ओर को जाती है और अवचेतन में ले जाती हैं, सामूहिक अवचेतन में, और बाईं ओर स्थित काम प्रवृत्ति* (Libido) *से जुड़ जाती है। दायाँ पक्ष पराचेतन है। दायाँ पक्ष.... पराचेतन - पिंगला नाड़ी से जुड़ा हुआ है, जिसे इच्छा शक्ति कह सकते हैं यह सामूहिक पराचेतन में जाती है। देवी-देवता और गण इसी ओर होते हैं और जो लोग इसमें फँस जाते हैं वे नर्क में जाते हैं।*

परन्तु मध्य अतिचेतन है। क्योंकि सुषुम्ना से मानव अतिचेतन से ऊपर उठता है और अधिकाधिक चेतन होता चला जाता है। मानव का शरीर वही होता है। उदाहरण के रूप में आप यदि मस्तिष्क कोशिका को देखें तो यह चर्बी की कोशिका सम है। परन्तु इनमें अन्तर है।अतः अन्तर पड़ने लगता हैं और जिस समय इसका भेदन होता है तब उस कोशिका का उससे भी बड़ा आयाम (Dimension) *बन जाता है। आपका मस्तिष्क चैतन्य लहरियाँ ग्रहण करने लगता है और इन्हें समझने लगता है। तत्पश्चात् निर्विकल्प अवस्था में आप एक अन्य आयाम प्राप्त करते हैं जिसके द्वारा आपको ज्ञान प्राप्त होता है। (यहाँ कुछ शब्द छुटे हुए हैं) ज्ञान का आधार भी आपको पता चलता है। अन्त में पूर्ण एकरूपता है। जहाँ आप केवल आनन्द लेते हैं। पूर्ण आनन्द। कोई समस्या नहीं होती। आपको कोई पकड़ नहीं होती, कुछ नहीं होता। मैं कहना चाहूँगी कि हमारे वैद्य साहब पूर्ण एकरूपता के बिल्कुल करीब हैं। जिस प्रकार से उन्हें आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हुआ वह प्रशंसनीय है।*

अगला प्रश्न चैतन्य-लहरियों के मनोवैज्ञानिक होने के विषय में है। मनोवैज्ञानिक रूप से

भी आप चैतन्य लहरियाँ अपने हाथों पर अपनी उंगलियों पर महसूस कर सकते हैं। विज्ञान के आधार पर भी आप कह सकते हैं कि परानुकम्पी (Para Sympathetic) *गतिशील हो उठता है। आपको परानुकम्पी पर नियंत्रण प्राप्त हो जाता है और आप अचेतन में प्रवेश कर जाते हैं, ब्रह्माण्डीय अचेतन में। इन चैतन्य लहरियों के आध्यात्मिक पक्ष के विषय में मैं आपको पहले ही बता चुकी हूँ।*

प्रश्न के दूसरे भाग के विषय में कि चैतन्य लहरियाँ आती कहाँ से हैं? आपसे, ब्रह्माण्ड से या वातावरण से? *चैतन्य लहरियाँ हर तरफ से आती हैं, इन्हें प्रवाहित करने वाली शक्ति मैं हूँ। ठीक है, ये बात आपको स्वीकार है? यह जीवन-प्रदायिनी शक्ति है। ये आपको पूर्ण सन्तुलन प्रदान करती है, आपके शरीर को सुधारती है, आपकी मानसिकता को सुधारती है, भावनात्मक रूप से आपको सुधारती है, परमात्मा से आपको पूर्ण आध्यात्मिक एकरूपता प्रदान करती है। ये आपको पूर्णतः समन्वित करती है। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मुझे बिल्कुल भी पश्चाताप नहीं है।*

मैं ये भी नहीं जानती पश्चाताप् क्या होता है। मैं नहीं जानती कि प्रलोभन (Temptation) *क्या होता है? इन चीज़ों को मैं इसलिए नहीं समझती क्योंकि मैं अपने आप से पूर्णतः एकरूप हूँ। एक उंगली जो मैं हिलाती हूँ, एक हाथ मैं जो हिलाती हूँ उसका भी कोई अर्थ होता है। बिना सोचे ये सब होता है परन्तु इसके पीछे बहुत बड़ा विचार छिपा होता है। मैं कहती हूँ, 'हाँ'। 'हाँ' का अर्थ ये है कि वृत्त की रचना हो चुकी है और ये वृत्त कार्य करता है। इसकी व्याख्या करना कठिन है क्योंकि मेरी तकनीक आपकी तकनीक से भिन्न है। अतः मैं अपने कार्यों की व्याख्या नहीं कर सकती। आपके अन्दर वो तकनीकी ज्ञान नहीं है। परन्तु बात यही है। मैं जब कहती हूँ 'हीं', 'हूँ', 'हाँ', 'हीं' ये सारे शब्द अत्यन्त शक्तिशाली हैं। ये एक प्रकार की शक्ति का सृजन करते हैं, ऐसी शक्ति का सृजन करते हैं जो सारी नकारात्मकता, को सारे राक्षसों आदि को निगल जाती है और आप उन्हें बाहर भी खींच सकते हैं। अभी मैंने एक मटके के अन्दर अपने श्वास दिये हैं। ये अपने आप में पूर्ण प्रणव है। रात्रि को जब ये लोग सोए हुए होंगे तो ये प्रणव बाहर आ जाएगा और शनैः शनैः आपके अन्दर की बुराइयों को निकाल फेंकेगा और इन्हें बाँधकर अन्दर (मटके में) डाल देगा। आपने देखा होगा कि इस प्रकार से कितने ही पागल लोगों का इलाज हुआ है।*

प्रश्न : सहजयोगियों के लिए करने योग्य कौन-से कार्य हैं और न करने योग्य कौन-से?

उत्तर : *प्रथम और सर्वोपरि बात तो ये है कि* ***सहजयोगी न तो धूम्रपान कर सकते हैं और न ही मद्यपान।*** *ये बात व्यक्ति को सौ प्रतिशत समझ लेनी है* ***क्योंकि यदि आप धूम्रपान करते हैं या शराब पीते हैं तो कुछ समय पश्चात् या तो आपमें चैतन्य लहरियाँ समाप्त हो जाएंगी या आपको उल्टी होने लगेगी।*** *धूम्रपान आप नहीं कर सकते, यदि आप धूम्रपान करेंगे तो आपकी विशुद्धि पकड़ जाएगी, यदि आप शराब पीते हैं तो मणिपुर चक्र (नाभि) पकड़ जाएगी। और जब-जब भी आप अपने हाथ मेरे फोटो की तरफ फैलाएंगे तो आपका*

नाभि चक्र जल उठेगा। बहुत से लोगों ने बिना किसी कठिनाई के ये व्यसन त्याग दिये हैं। उन्हें कोई कठिनाई नहीं हुई। सहज में ही लोग ये आदतें त्याग देते हैं। अतः सबसे अधिक जरूरी चीज़ ये है कि शनैः शनैः आप ये व्यसन त्याग दें।

आप केवल मेरा नाम लें और ये कार्यान्वित हो जाएगा। दूसरे व्रत न करें। जब माँ साक्षात् हैं फिर आपको व्रत करने की क्या आवश्यकता है? केवल नर्क चतुर्दशी के दिन व्रत किया करें। बस। यदि खाने की इच्छा न हो तो कुछ अन्य खा लें, कुछ और चीज़ खा लें परन्तु अपने पेट को खाली न रखें। आप फलों का रस पी सकते हैं, दूध पी सकते हैं या जो चाहें ले सकते हैं। ये कुछ बातें खाने के तथा पेट और नाभि चक्र के विषय में मैंने बताई हैं।

इसके बाद आँखें अत्यन्त महत्वपूर्ण अवयव हैं जिनके विषय में आपको अत्यन्त सावधान रहना होगा। तेजी से आँखें इधर-उधर न चलाएं, अपनी आँखों को स्थिर रखने का प्रयत्न करें, इन्हें विशेष रूप से पृथ्वी माँ पर टिकाएं। आपने लक्ष्मण के विषय में सुना होगा। उन्होंने कभी सीताजी का चेहरा नहीं देखा, उनके केवल चरण देखे। ऐसा कैसे हो सकता है? वो हमेशा उनके साथ होते थे। अतः आप कल्पना करें कि क्या स्थिति होनी चाहिए। पूरे चौदह वर्ष उन्हें पूर्ण ब्रह्मचर्य का जीवन बिताना पड़ा। सीताजी उनकी माँ की तरह से थीं। वो जानते थे कि वे (सीताजी) आदिशक्ति हैं। परन्तु वे मात्र उनके चरण देखते थे। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। हमें चाहिए कि अत्यन्त पावन विवाहित जीवन-यापन करें। परिवार का एक घरौंदा बनाएं, एक अच्छा पारिवारिक घर। अपनाने, समझौता करने और समन्वय करने का प्रयत्न करें। अपनी पत्नी को साक्षात्कारी बनाएं, अपने पति को साक्षात्कारी बनाएं और परिवार में शान्ति स्थापित करें क्योंकि बहुत-सी महान आत्माएं पृथ्वी पर जन्म लेना चाहती हैं। जिन लोगों के इस प्रकार से विवाह हुए हैं उन सबको आत्म-साक्षात्कारी बच्चे प्राप्त हुए हैं। अतः आप पारिवारिक जीवन, समन्वित परिवार, उचित सम्बन्ध प्राप्त करने का प्रयत्न करें। अपने माता-पिता की सेवा करें, उनके दोष न खोजें, उनके प्रति करुणामय होने का प्रयत्न करें और पारिवारिक जीवन में अच्छा बनने का प्रयत्न करें। बच्चों को बिगाड़ें ही नहीं, उन्हें सुधारें भी सही। उन्हें प्रेममय बनाएं। अच्छे समाज का सृजन करें। आप सभी को अपनी माँ (श्रीमाताजी) के प्रेम का संवाहक होना चाहिए। आप यदि सहजयोगी हैं और यदि आप अपने आचरण में परिवर्तन लाते हैं तो स्वाभाविक है कि सहजयोग की अपनी प्रतिष्ठा बन जाएगी और सभी लोग सहज योग को अपनाने लगेंगे। सहजयोग से आप धनार्जन बिल्कुल भी नहीं कर सकते।

सहजयोगियों के साथ व्यापारिक साझेदारी बिल्कुल न करें। सहजयोग का उपयोग धनार्जन के लिए न करें। आप लोगों को उदार चरित्र बनना होगा। आपको ईमानदार बनना होगा।

जैसे कहा जाता है, दस मर्यादाएं हैं, (Ten Commandments)। हम अपने हृदय में सन्तुष्ट रहें।

आपको अत्यन्त पवित्र जीवन यापन करना होगा, पावन चीज़ें देखनी होंगी, इससे आपकी प्राथमिकताएं बदल जाएंगी, आपके मित्र बदल जाएंगे, भद्दे मज़ाक आपको अच्छे नहीं

लगेंगे। बस आप परिवर्तित हो जाएंगे और इन सबसे दूर भाग खड़े होंगे। मैंने इन विदेशियों को देखा है, ये कहते हैं कि इन्हें अब वो सारी चीज़ें बर्दाश्त नहीं है। एक समय था जब वे इन सभी चीज़ों को बर्दाश्त करते थे और इनका आनन्द उठाते थे। अब वे इन्हें बर्दाश्त भी नहीं कर सकते क्योंकि अब आप लोग संवेदनशील हो गए हैं। आपको भद्र बनना है।

कंजूस बिल्कुल न बनें */ सभी कंजूस लोग सहजयोग विरोधी हैं। कंजूसड़े यदि सहजयोग में आ जाएं तो मैं उन्हें बहुत कष्ट देती हूँ। आप यदि कंजूस हैं तो आपको बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। अतः कंजूस न बनें। आप यदि बहुत अधिक बातूनी और कष्टकर हो जाएंगे तो मैं आपका बातूनीपन बन्द कर सकती हूँ।*

आप यदि बातें बिल्कुल नहीं करते तो वो भी ठीक नहीं है। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि अति में न जाएं।

प्रश्न : 'स्नान' क्या है? किस प्रकार स्नान करना चाहिए? *(Footsoaking)*

उत्तर : *इसका अत्यन्त सरल तरीका है। उचित स्थान पर मेरा फोटो रखें, इसके सम्मुख दीपक जलाएं या मोमबत्ती जलाएं, दोनों हाथ मेरे फोटो की ओर करें। पानी में थोड़ा नमक डालकर उसमें पैर डालकर बैठें। पानी गुनगुना होना चाहिए। ये जानकर आपको आश्चर्य होगा कि आपके सारे कष्ट उस जल में चले जाएंगे। तत्पश्चात् वह पानी नाली या* W.C. *में डाल दें। सभी लोग ये क्रिया कर सकते हैं। यदि आपकी विशुद्धि में कोई पकड़ है तो अपना दायाँ हाथ फोटो की ओर करें और बायाँ हाथ बाहर की ओर कर दें। जब आपको लगे कि इसमें चैतन्य-लहरियाँ आ रही हैं तब अपना बायाँ हाथ फोटो की ओर कर लें और दायाँ बाहर की ओर। आपको हैरानी होगी कि पूरा चक्र स्वच्छ हो जाएगा। अपनी खुली आँखों से यदि आप फोटो को देखते हैं और अपने दोनों हाथ हथेलियाँ ऊपर की ओर करके फोटो की ओर फैलाते हैं या कभी-कभी आकाश की ओर उठाते हैं, तो आप हैरान होंगे कि आपकी दृष्टि में बहुत सुधार होगा। पृथ्वी माँ भी, यदि आप अपना सिर पृथ्वी माँ पर रखें, केवल अपना माथा पृथ्वी पर टेक लें और कहें*

'हे पृथ्वी माँ मैं आपको अपने पैरों से छूता हूँ, इसके लिए मुझे क्षमा करें'' वे आपकी दादी माँ हैं जो भी कुछ आप उनसे माँगेंगे वो आपको मिल जाएगा। **सब आपकी इच्छानुरूप आपको देने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं।** *आप श्री हनुमान और श्री गणेश की सहायता भी माँग सकते हैं।*

उस दिन समाचार पत्रों से मुझे पता चला कि मेरे दो शिष्य जो कि संवाददाता थे, वे कहीं जा रहे थे। उनके पास मेरा फोटो था। उन्होंने बताया कि हैरानी की बात थी कि हमारे ड्राइवर ने हमसे आगे जाते हुए ट्रक से गाड़ी दे मारी। हमें लगा कि हम गए,हमने अपनी आँखे बन्द कर लीं। जब हमारी आँखें खुली तो हमने देखा ट्रक आगे था और हम वहीं पर थे। हम न जान पाए कि हम वहाँ पर कैसे थे? यहाँ तक कि हमारे ड्राइवर ने भी अपनी आँखें बन्द कर ली थीं!

हमारी समझ में न आया कि ट्रक एक ओर को कैसे हो गया था और हम यहाँ कैसे खड़े थे! तो दुर्घटनाओं से बचाव होता है तथा लोगों ने देखा है कि स्वास्थ्य ठीक रहता है और उम्र

भी लम्बी होती है। सभी कुछ है। आखिरकार हमने परमात्मा के साम्राज्य में छलाँग लगा ली है। आपने केवल अपनी स्थिति को ठीक बनाए रखना है। तब सभी कुछ सत्ययुग में प्रवेश कर जाएगा। सत्ययुग का आरम्भ हो चुका है।

मेरे फोटो में चैतन्य लहरियाँ है। ये सच्चाई है। और भी बहुत सी चीज़ों में चैतन्य लहरियाँ हैं। इस प्रतिमा में भी चैतन्य लहरियाँ हैं परन्तु मेरे जितनी नहीं। पहली चीज़ तो ये है कि मैं जीवन्त (साक्षात्) हूँ और दूसरी बात ये है कि उनका अनुपात (Proportions) *गलत हो सकता है। मानव ने अपनी कल्पना से इन प्रतिमाओं का सृजन किया है। परन्तु इन स्वयंभु लिंगों में, सभी में चैतन्य लहरियाँ हैं। उदाहरण के रूप में आप रंजन गाँव जाते हैं वहाँ पर श्री गणेश में पूरी चैतन्य लहरियाँ हैं क्योंकि ये विशिष्ट प्रतिमाएं पृथ्वी माँ से प्रकट हुई हैं। पृथ्वी माँ इनका सृजन करती है। वे सोचती हैं, इन चीजों का सृजन करती हैं, इन्हें अपने गर्भ से बाहर फेंकती हैं और ये चैतन्य लहरियाँ प्रदान करती हैं। तो आप उनसे भी चैतन्य लहरियाँ लेते हैं।* ***परन्तु यह मेरा फोटो सच्चा फोटो है। दूसरी बात यह है कि मैं जो कुछ भी बोलती हूँ, क्योंकि मैं वही हूँ, इसलिये मेरी हर बात से प्रणव प्रसारित होता है। यह वास्तव में प्रणव है। मेरी हर बात, हर शब्द मंत्र है जो इसमें प्रवाहित होता है और जब मैं अपनी अँगुली इसमें डालती हूँ तो मैंने देखा है कि मेरी चैतन्य लहरियाँ सभी कुछ परिवर्तित कर सकती हैं। यहाँ तक कि जब मैं अपने मुँह से प्रणव फूँकती हूँ तो आत्म साक्षात्कारी लोग उसे अपने सहस्रार पर महसूस कर सकते हैं। यह सच्चाई है।*** *तो लोगों को यह बात क्यों अटपटी लगनी चाहिये?*

अगला प्रश्न क्या है?

प्रश्न : आप यदि इन सभी छः चक्रों को देखें तो सभी के या कुछ के समीप कोई न कोई अंतःस्रावी ग्रंथी (Endocrine Glands) होती है। इन ग्रंथियों के साथ चक्रों का क्या सम्बन्ध है?

उत्तर : *अंतःस्रावी ग्रंथियां भी चक्रों द्वारा नियन्त्रित होती हैं। उदाहरण के रूप में हम कह सकते हैं कि मूलाधार चक्र प्रौस्टेट ग्रंथी को नियन्त्रित करता है। आज्ञा चक्र पियूष* (Pitutary gland) *को तथा शंकु रूप* (Pineal) *ग्रंथी को नियन्त्रित करता है। इस प्रकार से यह अहम् और प्रति अहम् का नियन्त्रण करता है। अतः चक्रों का ग्रंथियों पर बहुत प्रभाव है। इस कार्य के लिये यह स्थूल प्रतिनिधि है। उदाहरण के रूप में सारी प्रकृति का नियन्त्रण करने के लिये परमात्मा ने ग्रह स्थापित कर दिये हैं। मुख्यतः नौ ग्रह हैं। पूरे ब्रह्माण्ड तथा हर चीज़ को नियंत्रित करने के लिये नवग्रह स्थापित कर दिये। इन बिन्दुओं से सब कुछ नियन्त्रित होता है। इनका प्रभाव हमारे शारीरिक एवं भौतिक जीवन पर भी पड़ता है।*

परमात्मा आपको धन्य करें।

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी, भारतीय विद्या भवन, मुम्बई, भारत, 22.03.1977)

परम पूज्य माता जी
श्री निर्मला देवी से साक्षात्कार

(विएना, आस्ट्रिया, 05.09.1984)

“और, भारत में जैसा रिवाज है, मुझे विवाह भी करना पड़ा। मैंने एक बहुत अच्छे पुरुष से विवाह किया, मेरे बच्चे हुए। मैंने सोचा कि एक आयु विशेष तक पहुँचे बिना मुझे इसके विषय में बात नहीं करनी चाहिए, क्योंकि, हो सकता है, युवा आयु में मेरी कही बात को लोग गम्भीरता से न लें।”

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, आस्ट्रिया, 05.09.1984)

साक्षात्कारकर्ता : *आप महिला गुरु हैं, केवल गुरु ही नहीं योग सिद्धान्त (सहजयोग) की संस्थापिका भी हैं क्या भारत में महिलाएं ही आमतौर पर गुरु होती हैं, मैंने पढ़ा है कि आप कहती हैं कि सभी कुछ प्रकृति माँ से आता है, इसलिए बहुत सी महिला गुरु हुई हैं। इसी प्रकार से आप भी हैं या आप उनसे कुछ अलग हैं?*

श्रीमाताजी : *ये प्रश्न अत्यन्त उलझन में डालने वाला है, क्या ऐसा नहीं है? मैं सोचती हूँ कि किसी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा एक माँ बेहतर कार्य कर सकती है। योग के मामले में आपको लोगों के साथ बहुत धैर्य रखना पड़ता है। यदि ईसामसीह होते, वो बहुत अच्छे थे। उन्होंने स्वयं को क्रूसारोपित करवा लिया और कार्य खत्म कर दिया। वो इतने निराश हो गए थे। यदि श्री कृष्ण होते तो अपने सुदर्शन चक्र से लोगों का वध कर देते। परन्तु यदि वास्तव में आप लोगों का उद्धार करना चाहते हैं, यदि आप ये चाहते हैं कि उन्हें उनकी अपनी सम्पदा प्राप्त हो जाए, तो आपके अन्दर माँ का धैर्य होना आवश्यक है।*

साक्षात्कारकर्ता : *क्या आप मुझे अपने परिवार के विषय में कुछ बता सकती हैं? आपकी जीवनी में मैंने पढ़ा है कि आपकी पुत्रियाँ विवाहित हैं और उनके विवाह के पश्चात् आपने सहजयोग के इस कार्य को आरम्भ किया था। उनके शैशव काल में क्या आपने उन्हें प्रभावित किया? अपने इस योग का सृजन आपने कब आरम्भ किया?*

श्रीमाताजी : *नहीं, अपने बचपन से ही मुझे इसका पूरा ज्ञान था। प्रोटेस्टैंट ईसाई धर्म में मेरा जन्म हुआ। मेरे पिताजी और मेरी माँ साक्षात्कारी लोग थे। विशेष रूप से मेरे पिताजी अत्यन्त ज्ञानवान व्यक्ति थे। वास्तव में उन्होंने ही मुझे बताया कि लोगों से व्यवहार करते हुए जो समस्याएं मेरे सम्मुख आने वाली थीं उनका सामना करने के लिए मुझे किस प्रकार का कार्य करना पड़ेगा। उन्होंने मुझे बताया कि मानव कैसा होता है, उनकी समस्याएं क्या होती हैं और उनमें किस प्रकार का क्रम परिवर्तन और संयोजन* (Permutations and Combinations) *होता है। और फिर भारत में विवाह की परंपरा है, मुझे विवाह भी अवश्य करना था और मैंने एक बहुत ही सज्जन व्यक्ति से विवाह किया। फिर मेरे बच्चे हुए। मैंने सोचा कि एक आयु विशेष तक पहुँचे बिना मुझे इसके बारे में बात नहीं करनी चाहिए, क्योंकि छोटी आयु में कही हुई बात को शायद लोग गम्भीरता से न लेते। इसके अतिरिक्त मेरे सम्मुख एक अन्य समस्या भी थी। मैंने पाया कि मनुष्यों में विशेष क्रम परिवर्तन और संयोजन* (Permutations and Combinations) *की बाधाएं भी हैं। और यदि मुझे लोगों को सामूहिक आत्म-साक्षात्कार देना है तो मुझे एकदम से इन सारी बाधाओं पर काबू पाना होगा, अर्थात एक ही प्रवचन में हजारों लोगों को आत्म-साक्षात्कार प्रदान करने का कार्य सम्पन्न करने की योग्यता मुझमें होनी चाहिए। मैंने मानव का अध्ययन करना आरम्भ किया। मानव मस्तिष्क की सूक्ष्मताओं का अध्ययन करना आरम्भ किया ताकि मैं ये देख सकूं कि किस प्रकार मैं उनकी कुण्डलिनी को*

उठाऊं और किस प्रकार उन्हें आत्म-साक्षात्कार दूं। उनकी समस्याओं को देखना आरम्भ किया। मानव मस्तिष्क के इस अध्ययन में मुझे कुछ समय लगा। मेरी पुत्रियों के विवाह तथा उनके स्थापित होने के साथ-साथ मेरा ये अध्ययन भी सम्पन्न हो गया। तो 5 मई 1970 को जब मैंने देखा कि किस प्रकार चीज़ें घटित हो रही हैं तब मुझे लगा कि अन्तिम भाग (सहस्रार) को खोलने का ये उपयुक्त समय है। मैंने यही किया। सातवें चक्र को खोला। वहीं पर तब मैंने ये कार्य किया, और यही विशेष बात है, तब मैंने वास्तव में सामूहिक आत्मसाक्षात्कार देने की विद्या में कुशलता प्राप्त कर ली क्योंकि अब तक तो एक या दो व्यक्तियों को ही आत्म साक्षात्कार दिया जा सकता था। मेरे पिताजी ने मुझे बताया था कि तुम्हारा जन्म तो वास्तव में लोगों को सामूहिक आत्म साक्षात्कार देने के लिए ही हुआ है। अत: तुम इस बारे में प्रवचन आदि करना मत आरम्भ करो, अन्यथा तुम भी एक और बाइबल या गीता का सृजन कर दोगी, परन्तु उसका क्या लाभ होगा? बेहतर होगा कि तुम ऐसी एक प्रणाली पर कार्य करो, मानव स्वभाव को भली-भांति समझो और सामूहिक आत्म-साक्षात्कार देने का कार्य आरम्भ करो। क्योंकि किसी व्यक्ति ने यदि दसवीं मंजिल पर जन्म लिया है और किसी दूसरे ने पहली पर, तो वे एक दूसरे को समझते नहीं, एक दूसरे पर आक्रमण कर देते हैं। अत: सर्वोत्तम बात ये है कि लोगों के स्तर को इतना ऊँचा उठाओ जहाँ वो ये समझ सकें कि इससे ऊँचा भी कुछ है। और सहजयोग का ज्ञान आज नहीं बना इसलिए मैं स्वयं को इसकी संस्थापिका नहीं कहूँगी। यह तो आध्यात्मिकता की परम्परा है जो बहुत समय पूर्व आरम्भ हुई थी। भारत में हजारों वर्ष पूर्व आत्म-साक्षात्कार दिया गया था परन्तु तब यह एक या दो लोगों को ही दिया गया था। ईसा मसीह ने भी अपने समय पर पुनर्जन्म का बहुत महान कार्य किया। उन्होंने कहा, कि आपको पुनर्जन्म लेना होगा। पुनर्जन्म मात्र प्रमाण पत्र लेना नहीं है और न ही ये कोई व्यक्तिगत राय है कि हमारा पुनर्जन्म हो गया है, और न ही ये बनावटी बपतिज्म है। ये सच्ची घटना है, हमारे अन्दर घटित होने वाली जीवन्त घटना, जिसने घटित होना है, जिसके विषय में भारतीय जानते हैं क्योंकि पारम्परिक रूप से हमारा पालन पोषण ही इसी प्रकार से हुआ है। अत: हम जानते हैं कि ये घटित होता है। जड़ों का ज्ञान भारत में यहाँ की अपेक्षा कहीं अधिक है। यहाँ पर, हम कह सकते हैं कि, पेड़ का ज्ञान अधिक है।

एक बार जब ये घटना घटित हो जाती है तो आपको एक नया आयाम प्राप्त हो जाता है। जिसे हम सामूहिक चेतना कहते हैं। जिसके माध्यम से हम सामूहिक चेतन हो जाते हैं। आप अन्य व्यक्ति के चक्रों को महसूस कर सकते हैं, अपने चक्रों को महसूस कर सकते हैं। आपको यदि इस बात का ज्ञान है कि दूसरे व्यक्ति के चक्रों को कैसे ठीक करना है तो आप अपने चित्त से उन्हें ठीक कर सकते हैं, शारीरिक रूप से उन्हें ठीक कर सकते हैं, भावनात्मक रूप से उन्हें ठीक कर सकते हैं और वे परमात्मा के साम्राज्य के नागरिक बन जाते हैं।

साक्षात्कारकर्ता : *आपकी पुत्रियों के बारे में एक प्रश्न? क्या वे दोनों भी योगाभ्यास करती हैं?*

श्रीमाताजी : *नहीं, वो नहीं करतीं, मैं उन्हें कभी मजबूर नहीं करती। मैंने कहा कि उन्हें निर्णय लेने के लिए समय दूँ। एक प्रकार से उनका सहजयोग न करना अच्छा भी है क्योंकि यदि मेरे परिवार के लोग सहजयोग कार्यों में लिप्त हो जाएंगे तो लोग सोच सकते हैं कि ये पारिवारिक उद्यम* (Family Enterprise) *है। वो बहुत अच्छी लड़कियाँ हैं, अत्यन्त धार्मिक, अत्यन्त संतुलित और अत्यंत चतुर। मेरे पति भी एक अन्य महान व्यक्ति हैं, परन्तु वे सहजयोग नहीं कर रहे हैं। मैंने उन्हें बाहर रखा हुआ है, सहजयोग से बाहर रखा हुआ है। परन्तु मेरी नाती, नातिनें सभी, चारों के चारों, जन्मजात आत्म-साक्षात्कारी हैं, और वे महान सहजयोगी हैं। तो फिलहाल ये सब लोग सहजयोग से बाहर हैं क्योंकि अभी उन्हें सहजयोग में लाना उचित नहीं है। दूसरे नज़रिए से भी, जब मैं अपने बच्चों से व्यवहार करूंगी तो लोग सोचेंगे कि ये श्रीमाताजी की बेटियाँ हैं, इसीलिए वे (श्रीमाताजी) उनका इतना सम्मान करती हैं, उन्हें पैसे देने का प्रयत्न करती हैं, आदि-आदि। इससे मुझे बहुत परेशानी होगी। ऐसा मैं नहीं चाहती। हाल ही में मैंने कहा है कि अब वे सहजयोग में आ जाएंगी, मैं जानती हूँ, परन्तु अभी समय नहीं है। पहले लोगों को अच्छी तरह से स्थापित हो जाने दें क्योंकि इस प्रकार की चीज़ों से पूरा चित्त भटक जाता है।*

साक्षात्कारकर्ता : *आप कैसे व्यक्ति को योग के लिए उपयुक्त समझती हैं? लोगों का कोई विशेष समूह योग के लिए अधिक उपयुक्त है या सभी लोग उपयुक्त हैं, या ये मस्तिष्क के व्यक्तिगत प्रशिक्षण का प्रश्न है?*

श्रीमाताजी : *नहीं, शिक्षा की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है, जितना सरल व्यक्ति होगा उतना बेहतर। कभी-कभी शिक्षा भी बाधा बन जाती है। क्योंकि यदि आप बहुत अधिक पढ़े-लिखे हैं तो असलियत आपके पल्ले नहीं पड़ती। परन्तु यदि आपमें वह विवेक है, वह पावन विवेक जो अत्यन्त विलक्षण हैं, तो यह वास्तविकता को आसानी से देख लेता है। परन्तु बहुत अधिक बुद्धिमान व्यक्ति अहंचालित भी हो सकता है, ऐसा व्यक्ति जो बहुत अधिक अनुकूलित* (Conditioned) *है या बहुत अधिक कर्मकाण्डी है, जिसकी किसी चीज़ में बहुत श्रद्धा है, अन्ध श्रद्धा है, ऐसा व्यक्ति बहुत कठिन होता है। अतः अत्यन्त सहज लोगों की, खुले मस्तिष्क के लोगों की आवश्यकता है। ऐसे लोग जिनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण हो, मेरे ख्याल से वो बेहतर होंगे, परन्तु ऐसे लोग मुझे भारत के गाँवों में ही मिलते हैं या ऐसे स्थानों पर जहाँ यह तथाकथित बनावटी संस्कारिता न हो। वे सर्वसामान्य मानव होते हैं जो अत्यन्त विनम्रता-पूर्वक रहते हैं।*

साक्षात्कारकर्ता : *पश्चिमी यूरोप में, अमेरिका में युवा लोग मंजिल खोज रहे हैं, मंजिल खोज रहे हैं या नहीं परन्तु उससे भी किसी आगे* (Beyond) *की चीज़ को खोज रहे हैं। क्या इसका ये अभिप्राय नहीं है कि पाश्चात्य दर्शन इस उच्च अवस्था को खोजने का कोई उपयुक्त मार्ग नहीं दिखाता, और यह मार्ग किसी न किसी प्रकार से पूर्वी दर्शन* (Eastern Philosophy)

में ही खोजना पड़ता है? या हम कह सकते हैं कि योग पूर्वी दर्शन (Eastern Philosophy) ही है? क्या आप सोचती हैं कि विकसित उद्यमशील पाश्चात्य जगत के पास अपने बुद्धिवादी लोगों को उच्चतम मंजिल का मार्ग बताने के लिए ज्ञान का अभाव है?

श्रीमाताजी : *मैं उस दूसरे व्यक्ति को भी यही बात बता रही थी। आप देखें, ये पाश्चात्य संस्कृति बाहर दिखाई देने वाले पेड़ की तरह से है और आत्मा की पूर्वी सूझ-बूझ पेड़ की जड़ों की तरह से है। अतः इसमें निरन्तरता है। कहने का अभिप्राय ये है कि मैं एक को दूसरे से पृथक नहीं कर सकती, आपको पेड़ की आवश्यकता है और पेड़ को जड़ों की भी आवश्यकता है। जड़ों पर पेड़ होना आवश्यक है इसके बिना भी काम नहीं चल सकता। दोनों चीज़ें एक दूसरे की संपूरक हैं। परन्तु जब असन्तुलन होता है, पेड़ जब बाहर की ओर बहुत अधिक बढ़ जाता है परन्तु उसकी जड़ें अनुपात में विकसित नहीं होती, तो विनाश हो सकता है। पश्चिम में भी यही हुआ है कि आप लोगों ने स्वयं को बहुत अधिक विकसित कर लिया है और इस असन्तुलित विकास ने आपको समस्याओं में फँसा दिया है। क्योंकि आपने पृथ्वी माँ को खाली कर दिया है, अपनी शक्तियों को समाप्त कर दिया है, अपने मस्तिष्क को समाप्त कर दिया है, सभी कुछ समाप्ति की स्थिति में पहुँच गया है। इसलिए बेहतर होगा कि अब आप जड़ों में जाएं। जड़ों की गहनता में जब आप जाएंगे तो आपको लगेगा कि आप अभी स्रोत तक नहीं पहुँचे हैं। स्रोत कहाँ है? स्रोत आपके अन्तःस्थित है, मानव के अन्तःस्थित और उस स्रोत को खोजना होगा। वह स्रोत आत्मा में है, एक के बाद एक सभी महान सन्तों, महान अवतरणों ने अपने अपने पारम्परिक तरीकों से इसके बारे में बताया है, इसकी अभिव्यक्ति की है। परन्तु सभी ने उनकी बात को गलत समझा और इसे भ्रान्तिपूर्ण बना दिया। हम परमात्मा का आयोजन करते हैं, ईसा-मसीह का आयोजन करते हैं, मोहम्मद साहब का आयोजन करते हैं, सभी का आयोजन करते हैं, परन्तु वे तो जीवन्त हैं, आप उनका आयोजन नहीं कर सकते।*

साक्षात्कारकर्ता : *मैं यदि फ़ोर्ड (Ford) का, IBM का चोटी का मैनेजर हूँ तो क्या वास्तव में मैं योग प्राप्ति के लिए पात्र हूँ? क्या इसका अर्थ ये नहीं हुआ कि कोई यदि औद्योगिक रूप से अत्यन्त विकसित पाश्चात्य जगत का हिस्सा है तो कभी भी पूर्व का दर्शन उसे पेश किया जा सकता है, क्या इसके अतिरिक्त कोई और मार्ग नहीं है?*

श्रीमाताजी : *नहीं, क्योंकि आप वास्तव में गतिशील बन जाते हैं और सारी लीला के साक्षी बन जाते हैं। आप ये लीला देखते हैं, आप गतिशील हो जाते हैं। न आप पर कोई दबाव होता है और न ही कोई तनाव। हर चीज़ को आप उसके सभी आयामों में समझते हैं। इसके अतिरिक्त आपमें सन्तुलन आ जाता है, आप अपनी सीमाएं जान लेते हैं। कहने से अभिप्राय ये है कि आप किसी भी चीज़ को जरूरत से ज्यादा विकसित नहीं होने देते। आपमें उचित दृष्टिकोण विकसित हो जाता है, एक सन्तुलित विकास, और वही आवश्यक होता है। हम लोगों ने सन्तुलन खो दिया है।*

साक्षात्कारकर्ता : *जितना योग आप प्रदान करती है उससे भी अधिक योग की इच्छा रखने वाले बहुत से लोगों को क्या आप जानती हैं? तो पश्चिमी यूरोप में क्या ये बात नहीं है कि योग लोगों को वह सब नहीं दे सकता जो वो चाहते हैं। योग के माध्यम से मैं बहुत सी उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता हूँ, फिर भी मुझे इसका एहसास नहीं होता कि वे स्वयं को खोज सकते हैं?*

श्रीमाताजी : *पश्चिम में योग के नाम पर बहुत बड़ी भ्रान्ति है, लोगों को इस बात का ज्ञान ही नहीं है कि योग क्या है? आप यदि पातांजलि को पढ़ें तो कहा गया है कि व्यक्ति को पहले आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना है और फिर अपने आत्म-साक्षात्कार की गहनता में उतरना है। एक बार जब आप अपने आत्म-साक्षात्कार की गहनता में उतरने लगते हैं तो आपमें ऐसा व्यक्तित्व विकसित हो जाता है कि पूरा विश्व आपको एक प्रतीत होता है। आप अपने पूर्णत्व तक पहुँच जाते हैं। पूर्णत्व प्राप्त करने पर आपमें पूर्ण सन्तुलन और उपचार-विवेक उदय होता है। उदाहरण के रूप में मेरी बाईं उंगली में यदि कोई तकलीफ है तो मैं स्वयं इसे सहेजती हूँ और आराम पहुँचाती हूँ। ऐसा करके मै किसकी सहायता करती हूँ, किसको आश्रय देती हूँ? विकासशील देश क्या हैं और विकसित देश क्या हैं? विकासशील से आपको किसी चीज़ की आवश्यकता होती है और आपको विकसित होना होता है। अतः सारी बात ये है कि हमने अभी तक पूर्णत्व प्राप्त नहीं किया है। अभी तक हम समन्वित नहीं हैं। ऐसा तभी सम्भव होगा जब हम उस स्थिति पर पहुँच जाएंगे जो हमारे अन्तःस्थित है तथा जो सामूहिक रूप से चेतन है। यह आत्मा है। एक बार जब आप उस बिन्दु तक पहुँच जाते हैं तो आपमें सामूहिक चेतना आ जाती है और सामूहिक चेतन होने पर आप अपने पूर्णत्व को समझ जाते हैं। अतः यहाँ योग में लोग जो चीज़ खोज रहे हैं वह वहाँ (पूर्व) से उन लोगों द्वारा लाई गई हैं जिन्हें योग की समझ ही नहीं है।* ***योग का अर्थ है परमात्मा से एकरूप होना। परमात्मा से जब आपका योग घटित हो जाता है तो परम चैतन्य आपके माध्यम से प्रवाहित होने लगता है तथा आप विराट के अंग-प्रत्यंग बन जाते हैं।*** *आप बन जाते हैं। यह प्रमाण पत्र लेने जैसा नहीं है। न ये गलियों में दौड़ने, सिर के बल खड़े होने जैसा है। आपने जो समझा है वह योग नहीं है। आपको समझना होगा कि किस शारीरिक समस्या के समय कौन से शारीरिक आसन करने होंगे। परन्तु ये समझ तभी सम्भव है जब आप आत्म- साक्षात्कार प्राप्त कर लेंगे। आत्म-साक्षात्कार से पूर्व तो आपको इस बात का भी ज्ञान नहीं होता कि आप में रोग कहाँ है? लोग नहीं जानते। वो पागल हो जाते हैं परन्तु उनकी समझ में नहीं आता कि वो पागल हो रहे हैं। अतः आपके अन्दर का सनकीपन एवं असन्तुलन समाप्त हो जाता है क्योंकि अब हमने अपना मुख आत्मा की ओर कर लिया है। मानसिक प्रक्षेपणों के माध्यम से हम कभी भी वहाँ नहीं पहुँच पाए थे। अतः हमें करना ये है कि इस नवीन-आयामी पहुँच को अपनाएं जिसके द्वारा आप वो बन सकते हैं जो आपने बनना है, जिसके लिए आप पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं। यदि ये आपको मिल जाती है तो आपने सब कुछ पा लिया। आपके बहुत से आयाम हैं। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं ऐसे व्यक्ति*

की पत्नी हूँ जिन्हें एक ओर कभी-कभी तो एक के बाद एक छः सौ लोगों से हाथ मिलाना पड़ता है और मुझे भी उसी स्तर पर लोगों से मिलना जुलना होता है। ये सब करते हुए मैंने अपने घर को सजाया है। कहने का अभिप्राय ये है कि मैं एक हजार एक कार्य करने के बाद भी अत्यन्त शान्त रह सकती हूँ। जिन चीज़ों की हम बातें करते हैं वो सब आपने प्राप्त करनी हैं। हम प्रजातन्त्र की बात करते हैं, साम्यवाद की बात करते हैं, मेरे विचार से दोनों ही बनावटी हैं क्योंकि वैभव के बिना आप पूँजीवादी कैसे बन सकते हैं? हम कुछ भी नहीं है। हमारे पास है क्या? प्लास्टिक के अतिरिक्त हमारे पास कुछ भी नहीं है, क्या है हमारे पास? जब तक आपके पास कुछ होगा ही नहीं, मैं कहती हूँ कि मैं बहुत बड़ी पूँजीवादी हूँ क्योंकि मेरे पास अथाह शक्ति है, परन्तु मैं बहुत बड़ी साम्यवादी भी हूँ क्योंकि मैं अपनी शक्तियों को बाँटना चाहती हूँ। अतः वास्तविक रूप से मैं सच्ची पूँजीवादी हूँ और सच्ची साम्यवादी भी। तो आपके सभी विचार वास्तव में महान सत्य की झलक मात्र हैं। मैं महानतम साम्यवादी हूँ और महानतम पूँजीवादी। अर्थशास्त्र के विषय में आपके सभी विचार। अर्थशास्त्र इतना विवेकशील है कि ये कहता है कि इच्छाएं प्रायः पूर्ण नहीं हो सकती। इसका अर्थ ये हुआ कि भौतिक पदार्थ आपको सन्तुष्ट नहीं कर सकते। तो **सन्तोष है कहाँ? ये आत्मा में है। सभी मार्गों का लक्ष्य आत्मा ही है।** ये बात व्यक्ति का समझ लेनी चाहिए।

साक्षात्कारकर्ता : धन्यवाद।

श्रीमाताजी : परमात्मा आपको धन्य करे।

(आकाशवाणी साक्षात्कार, विएना, आस्ट्रिया, 5.9.1984)

परम पूज्य माता जी
श्री निर्मला देवी से साक्षात्कार

(विएना, आस्ट्रिया, 6.9.1984)

"अत: व्यक्ति को पूर्णत: गरिमामय होना चाहिए। ऐसा व्यक्ति वास्तव में स्वत: अपने चरित्र, अपने गुणों, सच्ची अभिव्यक्ति द्वारा लोगों को प्रभावित करने वाला व्यक्ति बन जाता है, वह पाखण्डी नहीं होता, सच्चा सहजयोगी होता है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, आस्ट्रिया, 06.09.1984)

श्रीमाताजी...*और इसके मध्य में है, इसलिए यह रेत को बिल्कुल नहीं छूता – रेत से इसका कुछ लेना देना नहीं, केवल पानी से है। एक निम्नतम स्तर पर पहुँचने के बाद हमें पता चलता है कि निम्नतम स्तर क्या है? ये सब चलता रहता है और हम इसे वहीं रखते हैं।*

अब क्या होता है कि जल एकत्र होता है, और यहाँ से उसे चूस लिया जाता है। हम रेत को नहीं चूसते। ऐसा करने का एक तरीका है जिसके द्वारा हम इसे नदी के मध्य तक ले जाते हैं।

सहजयोगी : *तो क्या इस प्रकार से हम नदी के इस भाग को चावलों के लिए – चावल उगाने के लिए उपयोग कर सकते हैं?*

श्रीमाताजी : *इस क्षेत्र में हम बहुत कुछ कर सकते हैं – बहुत कुछ कर सकते हैं। परन्तु यह नदी की गहराई से किया जा सकता है। क्योंकि आप देखें कि ये क्या है? ये मात्र एक पाइप है, बस। इसका कोई बहुत बड़ा खर्चा नहीं है, इस पाइप लाइन का कोई बड़ा खर्च नहीं है और इसके माध्यम से पानी खींचा जा सकता है।*

तो ये पाइप लाइन हमारे लिए बहुत बड़ी बात नहीं है। इसे केवल मध्य तक ले जाना होगा। तब इस क्षेत्र को पौधे उगाने के लिए उपयोग किया जा सकेगा। कुछ ऐसी चीज़ें उगाने के लिए जो जल के ऊपर उगती हैं – तरबूज, कमल आदि हम उगा सकते हैं। परन्तु कमल नदी पर नहीं उगते ये तालाब में उगते हैं। तो इस प्रकार से हम तरबूज आदि चीज़ें इस पर उगा सकते हैं, सिंघाड़ा भी भली-भाँति उगा सकते हैं।

परन्तु ये बाद के विचार हैं। इसके बारे में बहुत अधिक चिन्तित न हों। ये जहाँ है वही छोड़ दो, हम इसे तैराकी के लिए उपयोग कर सकते हैं और भी कई चीज़ों के लिए इसका उपयोग हो सकता है। बाद में हम वहाँ पर आश्रम बना लेंगे। ये बहुत अच्छा विचार है।

सहजयोगी : *अच्छा, श्रीमाताजी मैं सोच रहा था कि आप इन्हें कार्य करने की विधि बता रही हैं। आप यदि किसी डॉक्टर से बात करती हैं तो उसे बताती है कि मरीज़ को किस प्रकार ठीक करना है, किसी वास्तुशिल्पी (Architect) से जब आप बात करती हैं तो उसे समझाती हैं कि घर कैसे बनाना है? मैं आपको इन सारी स्थितियों में देखता हूँ। इससे भी काफी कुछ अधिक बताते हुए आपको देखता हूँ। श्रीमाताजी यह सब मैं समझने के लिए करता हूँ।*

श्रीमाताजी : *परन्तु मैं ये नहीं जानती कि राजनीति किस प्रकार की जाती है। (श्रीमाताजी हँसती हैं) वहाँ पर मैं देखती हूँ। परन्तु नदी कहाँ है? तो हम तो नदी की ओर रुके हुए हैं, और मैं कहूँगी इस ओर और भी नज़दीक से शुरु करना बेहतर होगा। देखिए यहाँ पर पुल है, पहुँचने का रास्ता है। इसलिए बेहतर होगा कि नदी के उस ओर प्रबन्ध किया जाए। इसके और समीप, ऐसा करना बेहतर होगा। नहीं वो बेहतर है, वो क्षेत्र। नदी के समीप हमेशा बेहतर होता है।*

...नहीं, परन्तु उससे हमें बचना है। हमें उस ओर निर्माण करना है। इस स्थान पर हमें नहीं आना। परन्तु नदी के समीप का क्षेत्र बेहतर होगा क्योंकि वहाँ लोग तैर सकेंगे और पानी भी

प्राप्त हो सकेगा। पानी तक हम दीवार बना सकते हैं। यहाँ जमीन में बहुत चट्टाने हैं, पत्थरों की कोई कमी नहीं है, ठीक है?

उन लोगों को इसकी कोई चिन्ता नहीं है। इन सारी चीज़ों की उन्हें समझ नहीं है। वो तो बस प्रयोग ही करते रहते हैं। ये एकदम से नया विज्ञान है, चिकित्सा विज्ञान एक दम से नया है। जो ज्ञान हमारे देश में है, दूसरे जो भी अविष्कार हमने किए हैं उनका आधार मानव पर किए गए प्रयोग हैं। वो सब अनुभवों पर आधारित हैं। दूसरे, हमारे सारे अविष्कार मानव पर किए गए प्रयोगों पर आधारित है और त्रिगुणात्मिका, तीन गुणों का विचार इनका मूल है।

हमारी सारी दवाईयाँ भी इसी पर आधारित हैं। पाश्चात्य संस्कृति में भी ऐसा ही था परन्तु वे इसे आगे न बढ़ा सके, इसलिए उन्होंने ये सब छोड़ दिया और रोग-लक्षणों को आधार बना लिया। जो भी लक्षण हैं उनका इलाज होना चाहिए, परन्तु आप पूर्ण का इलाज नहीं करते।

श्रीमाताजी : *इसका अर्थ ये है कि तीन तरह के लोग हैं और उन्हें तीन तरह की समस्याएं हैं? समस्याओं के अनुरूप उनका इलाज होता है। तीनों गुणों में सन्तुलन लाया जाता है। उदाहरण के रूप में सहजयोगिनियाँ पतली हो जाती हैं और जो व्यक्ति तामसिक प्रवृत्ति के होते हैं, पतले होते हैं, वे कुछ मोटे हो जाते हैं। मध्यम दर्जे के लोगों में गैस अधिक होती है। आपमें वो गैस प्रणाली नहीं है, क्रम परिवर्तन और संयोजन का* (Permutations and Combinations) *सन्तुलन जब बिगड़ता है तो ये स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं होता। ये आवश्यक नहीं है कि केवल वही लोग स्वस्थ हों जिनकी हड्डियाँ दिखाई देती हैं* (Bony) *भारत में हो सकता है कि ऐसा व्यक्ति तपेदिक का मरीज हो और जिन मोटे लोगों को अस्वस्थ माना जाता है हो सकता है वही उत्थान को प्राप्त करें। हो सकता है कि मोटा व्यक्ति सत्वगुणी हो। अतः भारत में व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके स्वभावानुसार आँका जाता है। किसी के विषय में कुछ कहने से पूर्व इन सारी चीज़ों का आंकलन किया जाता है।*

अब उदाहरणों के रूप में बहुत अधिक दिमागी कार्य करने वाले व्यक्ति के लिए कार्बोहाइड्रेट के आधिक्य वाली खुराक बताई जाती है। भारत में लोग इन चीज़ों की अधिक चिन्ता नहीं करते क्योंकि सिनेमा एक्टर बनने का उन्हें कोई चाव नहीं है। कमर का आकार इतने इंच, गर्दन का इतने इंच, इन सब चीज़ों की भारतीय चिन्ता नहीं करते।

श्रीमाताजी : *उदाहरण के रूप में महिला को वाम-पक्षी होना चाहिए। उसे मोटा होना चाहिए, पुरुष से कहीं मोटा। उसे बच्चे उत्पन्न करने हैं। पशुओं के साम्राज्य में भी यदि आप देखें तो मादा पशुओं पर कहीं अधिक चर्बी होती है। उन पर ये चर्बी होनी आवश्यक है क्योंकि उन्हें बच्चे गर्भ में रखने होते हैं और उनके लिए परिश्रम करना होता है। किसी पाश्चात्य लड़की को आप देखें, वो बहुत पतली होती है और उसके बच्चे होते हैं और उसे घर का काम भी करना होता है! ऐसे में वह पगला जाती है। पगला जाने के कारण वह अपने बच्चों को प्रेम नहीं कर सकती। उनमें शक्ति का संग्रह नहीं होता।*

श्रीमाताजी : *पश्चिम में तनाव इतने अधिक है, बिना बात के बनावटी तनावों की भरमार है।*

सहजयोगी : *मोटापा व्यक्ति को अधिक शान्ति एवं आराम देता है।*

श्रीमाताजी : *ऐसे व्यक्ति को अधिक प्रोटीन खाने चाहिए। परन्तु प्रोटीन लेना, बहुत अधिक प्रोटीन लेना सनक भी नहीं बन जानी चाहिए क्यांकि इससे भी असन्तुलन आता है। कोई यदि मोटा है तो उसे प्रोटीन आवश्यक हो सकते हैं।*

उदाहरण के रूप में, मान लो मैं यदि बहुत पतली हो जाऊं तो मेरे सारे चक्र अनावृत हो जाएंगे और मैं परेशानी में फँस जाऊंगी। अतः मुझे अपने अन्दर बहुत-सा पानी और बहुत-सी चर्बी बनाए रखनी पड़ती है ताकि मेरे चक्र सुरक्षित रहें। यह सब कार्य पर निर्भर करता है। माँ के शरीर पर चर्बी अवश्य होनी चाहिए। माँ के शरीर पर यदि चर्बी न हो तो बच्चों को उसकी हड्डियाँ चुभती है। (माँ हँसती हैं)

और वह महिला मशीन सम नीरस हो जाती है। मैंने एक अंग्रेजी कविता पढ़ी थी जिसमें माँ का वर्णन किया गया था। 'मेरी माँ एशिया की तरह विशाल।' माँ के बारे में अत्यन्त सुन्दर कविता। तो ये सारी धारणाएं कि एक्ट्रेस की तरह से छरहरी, ये सारी धारणाएं मूर्खता है। और सम्मानजनक कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मान न मिलना भी उन महिलाओं को इन मूर्खताओं की ओर अग्रसर करता है। कहने से अभिप्राय ये है कि आप जानते हैं कि यहाँ महिला की क्या स्थिति है। महिला एक वेश्या सम है। ऐसे में क्या होगा? वे वेश्या की तरह से आकर्षक बनना भी चाहेंगी।

सहजयोगी : *इन दो चीज़ों के कारण एक ओर तो वो माँ है और दूसरी ओर पुरुषों को वो आकर्षित करना चाहती है। दोनों चीज़ें साथ-साथ नहीं चल सकती।*

श्रीमाताजी : *आह..... वेश्याएं...... हाँ।*

सहजयोगी : *हाँ श्रीमाताजी ये अविश्वसनीय हैं। कभी-कभी आप ऐसी लड़कियों से मिलते हैं, फिर उनके बच्चों को देखते हैं। उनका चित्त ज़रा भी बच्चों पर नहीं होता। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि ये लड़कियाँ माताएं हैं ही नहीं। उनका चित्त अपने बच्चों पर बिल्कुल भी नहीं होता।*

श्रीमाताजी : *मेरा अभिप्राय ये है कि मातृत्व ही महिला का सौन्दर्य है। मातृत्व ही सौन्दर्य है। व्यक्ति को चाहिए कि प्रकृति के विरुद्ध न चले।*

श्रीमाताजी : *इस देश में गृहणी को सम्मान नहीं दिया गया है। लोगों के इस प्रकार के आचरण का यही कारण है। सूक्ष्म रूप से हर देश में गृहणी का अत्यन्त सम्मान होता है। उदाहरण के रूप में, मैं यहाँ यदि किसी पार्टी में जाऊं तो श्रीमती श्रीवास्तव के रूप में मेरा सम्मान होगा, क्या ऐसा नहीं है? परन्तु यदि मेरे पति की सचिव वहाँ जाएगी तो वो मेरे पति के साथ नहीं बैठेगी। क्या वो ऐसा करेगी? क्या ये बात ठीक नहीं है? और चाहे सचिव बहुत सुन्दर महिला हो और पत्नी उतनी सुन्दर न हो तो भी पति के साथ कौन बैठेगा? अब ये मेरा प्रश्न है?*

श्रीमाताजी : *मैं आपको अपना व्यक्तिगत उदाहरण दूंगी। ये घटना हैमबर्ग में घटित हुई थी, हमारे विभाग के चोटी के व्यक्ति के साथ, मंत्रिपरिषद के सचिव के साथ उसकी पत्नी जरूरत से ज्यादा चुस्त थी, जीन आदि वस्त्र पहनती थी और विश्व की सारी तथा-कथित चुस्ती उसमें थी।*

वह अजीबोगरीब वेशभूषाएं पहनती थी और आश्चर्यजनक रूप से पश्चिमी रंग में रंगी हुई महिला थी। परन्तु रात्रि भोज पर जाने के लिए वह साड़ी पहनती थी, परन्तु वह साड़ी भी जरूरत से ज्यादा दिखावे के लिए होती। हमें एक रात्रि भोज के लिए निमन्त्रित किया गया - मुझे और मेरे पति को तथा उस महिला और उसके पति को। यह बहुत बड़ा रात्रि भोज था। वह महिला अपने पति के साथ नहीं आई क्योंकि वह किसी अन्य कार्य में व्यस्त था। वह बाद में आई या पहले आई और उसके पति बाद में आए। आने के पश्चात् सभी लोग मर्यादा अनुसार अपने स्थानों पर बैठ गए। पुरुष दाईं और बैठते हैं, महिलाएं बाईं ओर। अब उसका स्थान खाली था, वहाँ कोई न था। तो उसके पति कहने लगे कि मेरी पत्नी कहाँ है? लोगों ने उसे बताया कि वो तो आई ही नहीं, मेरे विचार से यह अवश्य आई होगी। मुझे पूरा विश्वास है कि वो आई है क्योंकि उसने कहा था मैं पहले ही पहुँच जाऊंगी। वह अवश्य यहीं पर होगी। प्रबन्ध करने वालों ने कहा, कि हमारे विचार से आपकी सचिव आई है। हम उसे बुलाकर पूछते हैं। सचिव को जब बुलाया गया तो वास्तव में वही महिला उनकी पत्नी थी जिसे उन्होंने दूसरे कमरे में बिठाया हुआ था। वह जर्मन भाषा भी अच्छी तरह से न जानती थी ओर ये बताने का असफल प्रयत्न कर रही थी कि मैं उनकी पत्नी हूँ, मैं उनकी पत्नी हूँ। वे लोग उनसे कह रहे थे कि हम उनकी पत्नी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

वह उन्हें इस बात का विश्वास न दिला सकी कि वह उनकी पत्नी है। उसने अपनी अंगूठी दिखाई और चीज़ें दिखलाई परन्तु प्रबन्ध करने वाले लोगों ने उनसे कहा, ठीक है उनकी पत्नी आने वाली है। कितनी लज्जाजनक बात थी और वह भी कूटनीतिज्ञों के बीच में, उन लोगों के बीच में जो तिल का ताड़ बनाने में बहुत निपुण हैं। ऐसी महिलाओं को कोई पसन्द नहीं करता, ये बात आप जानते हैं।

एक बार मैं भी सी.पी. के दफ्तर में गई, वहाँ लोगों ने अपने कोटों के बटन बन्द करने शुरु कर दिए। मैंने श्री सी.पी. से पूछा कि वे लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि अचानक जब उन्होंने आपको देखा तो सम्मान दर्शाने के लिए वे अपने कोटों के बटन बन्द करने लगे। वे ये न जानते थे कि मैं श्री सी.पी. की पत्नी हूँ। परन्तु उनके मन में सम्मान भाव था। उन्होंने तुम्हें देखा, तुम्हारा चेहरा सम्माननीय है। तुम्हारे जैसी महिला को देखकर उन्हें बहुत राहत मिली है।

प्राय: उनकी महिलाएँ ऐसी हैं जिन्हें हम भारतीय भाषा में कबाड़ी कहते हैं। पूरी संस्था कबाड़ियों से भरी हुई हैं। ये सारे कूटनीतिज्ञ कबाड़ियों की तरह से हैं। अत: किसी सम्माननीय महिला को आते देखकर उन्हें बहुत राहत मिलती है। बहुत अधिक दिखावा करने वाली

चुलबुली महिलाओं के बारे में वे बहुत बातें बनाते हैं। उनके लिए उनके मन में कोई सम्मान नहीं है। भारतीय लोग भी ऐसा ही करते हैं। वहाँ भी एक ऐसी ही महिला थी जो बहुत ऊँचे स्तर की बहुत बड़ी कूटनीतिज्ञ थी। परन्तु जहाँ कहीं भी वो जाती लोग उसका मज़ाक बनाते। एक दिन जब वह एक कार्यक्रम में आई तो उससे पूछा गया तुम कहाँ से टपक पड़ी? उसने उत्तर दिया मैं टपकी नहीं, मैं आई हूँ। उसे कहा गया तुम जैसी हो, उसे तो वास्तव में टपक पड़ना चाहिए, क्योंकि तुम इतनी पतली हो कि एक सुराख में से टपक सकती हो।

वे हमेशा मज़ाक बनाते रहते हैं। उनमें गरिमा का पूर्ण अभाव है। मैं मोटे-पतले की बात नहीं करती परन्तु जीवन में गरिमा का होना आवश्यक है। महत्वपूर्ण बात ये है कि आपके अन्दर कितनी गरिमा है। आप कितने गरिमामय हैं। गृहणी के लिए गरिमा बहुत महत्वपूर्ण हैं।

(आप इन्हें छोड़ दीजिए, एक-एक करके मैं इन्हें खा लूँगी, सभी लोग इन्हें लें और चखकर मुझे बताए कि इनका कैसा स्वाद है? अन्य के मुकाबले ये बहुत स्वाद होंगे क्योंकि ये प्राकृतिक हैं। ये आपके दोगले (Hybrid) बीजों से कहीं स्वाद, होंगे।)

तो बात इस प्रकार से है। वर्णित ढंग की रूप रेखा आवश्यक नहीं है। अन्तर्भाव महत्वपूर्ण है। पूर्ण व्यक्तित्व कैसा है?

उदाहरण के रूप में, मान लो कोई सहजयोगी एक्टर या एक्ट्रैस जैसा प्रतीत होने का प्रयत्न करता है तो वह कभी भी लोगों को प्रभावित न कर पाएगा। ये सारे कुगुरु भी अपने शिष्यों को प्रशिक्षण देने में लगे रहते हैं कि शान्त व्यक्तित्व किस प्रकार दिखाई दें। यदि आप गौर से देखें तो पोप भी ऐसे ही थे। ये लामा लोग भी ऐसे ही हैं। वे स्वयं को अत्यन्त शान्त व्यक्तित्व दर्शाने के प्रयत्न में लगे रहते हैं। और सहजयोगी कहलाने वाला व्यक्ति बड़ा तुच्छ (Cheap) सा दिखाई देता है, आसानी से मिल जाने वाला, सस्ते प्रकार का। किसी को भी यह प्राप्त नहीं होगा और न ही कोई अपनी मोहकता का दम भर सकेगा। किसी भी अन्य को न तो सम्मान मिलेगा और न ही दिखावे की मोहकता और आँखों का सौन्दर्य।

अतः व्यक्ति को पूर्ण रूपेण गरिमामय होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व बिना किसी प्रयत्न के स्वतः ही अपने चरित्र से, अपनी हर बात से, अपनी सच्ची अभिव्यक्ति से अन्य लोगों को प्रभावित करता है। कोई पाखण्डी ऐसा नहीं कर सकता, केवल सच्चा सहजयोगी कर सकता है। तो इसका अर्थ ये हुआ कि आपको अपना (अपने अस्तित्व का) सम्मान करना होगा। जैसे आपका आचरण ऐसा नहीं होना चाहिए जिससे लगे कि आप अपनी पावनता के धर्म विवेक का सम्मान नहीं करते। इन सब चीज़ों का आपको सम्मान करना होगा। इन सब चीज़ों के परिणामस्वरूप जो आपकी अभिव्यक्ति होगी वह अद्वितीय होगी।

इस प्रकार का दिखावा करने की कोई जरूरत नहीं है। म्यूनिक में जो लड़का आया करता था उसके बाल और दाढ़ी साधु-बाबा जैसी थी जिनसे वो मुझे प्रभावित करने का प्रयत्न कर रहा था। वास्तव में वह पागल था और फिर साधु होने का स्वांग करता था। मैंने उससे कहा,

''कि तुम ऐसी वेश-भूषा क्यों पहनते हो? कहने लगा, मैं आदि मानव बनना चाहता हूँ क्योंकि मैंने उसे कहा था कि इस प्रकार की वेश-भूषा में तुम आदि मानव लगते हो। तो मैंने कहा, ठीक है तुम अगर आदि मानव बनना भी चाहो तो भी नहीं बन सकते क्योंकि तुम्हारा मस्तिष्क आधुनिक मानव का है। तो ये तो पाखण्ड है। पाखण्ड के लिए जर्मन भाषा में कोई शब्द नहीं है?

सहजयोगी : *"Scheinheiling, Heilig का अर्थ है पावन और Schein का अर्थ है असत्य।*

श्रीमाताजी : *तो जर्मन भाषा में Schein heilig शब्द है। ये सत्य भी है। चमक-दमक वाली सारी चीज़ें अच्छी नहीं होती। (हँसती हैं) तो बाह्यपन का बाहुल्य होने के कारण पश्चिम में ये पाखण्ड बहुत ज्यादा है। दिखावा बहुत सुन्दर होना चाहिए। आपकी वेश-भूषा अच्छी होनी चाहिए, आदि-आदि। और उनके अन्दर पावनता का पूर्ण अभाव है। धर्म बिल्कुल नहीं है। किसी भी चीज़ के लिए सम्मान का पूर्ण-अभाव है।*

सहजयोगी : *श्रीमाताजी आप जानते हैं कि ईसामसीह ने (Pharisee) पाखण्डियों को कैसे बुलाया है। उन्होंने पाखण्डियों को सफेद मकबरे (Whited Tombs) कहा है। वे मकबरों की तरह से थे, अन्दर सड़े गले और बाहर से बिल्कुल सफेद।*

श्रीमाताजी : *सारी मूल्य-प्रणाली बिल्कुल गल गई है। सभी कुछ, स्वच्छ करने वाली मूल्य-प्रणाली अन्दर से सड़ चुकी है। यहाँ पर इसका कोई महत्व नहीं है। अन्दर यदि स्वच्छ होगा तो बाहर भी स्वच्छ दिखाई देगा।*

सहजयोगी : *श्रीमाताजी मैं तो ये कहूँगा कि इसकी सर्वोत्तम उदाहरण जिनेवा में हुए ये विवाह थे। एक भी दुल्हन ऐसी नहीं थी जो पूर्णतः सुन्दर न हो। वास्तव में वो इतनी चमक रही थीं, मुस्करा रही थीं और अत्यन्त सुन्दर थीं। वो दृश्य बहुत मनमोहक था।*

श्रीमाताजी : *कहने से अभिप्राय ये है कि डाक्टर मुताली ने मुझे बताया फिर भी इस पर विश्वास करना कठिन था। मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकती, बिल्कुल भी विश्वास नहीं कर सकती।*

तो पश्चिम में अब यही स्थिति है। इसे हमने समझना है। ये बात हमें समझनी होगी कि बाह्य चीज़ों पर अधिक ध्यान दिया जाता है आन्तरिक चीज़ों पर नहीं। इस विषय में हमें सावधान होना है। मान लो कि महिलाएं वेश्याओं जैसी हैं और अगले दिन वे अध्यापक बनकर आ जाएं। भारत में हम ये बात सोच भी नहीं सकते, ऐसी बात सोचना भी असंभव है।

एक अन्य चीज़ से भी मैं हैरान थी। मेरे विचार से एक महिला चालीस वर्ष की रही होगी, उसने अपने पहले पति को तलाक दे दिया है और वो कहती है मुझे एक और पति चाहिए, चालीस-पचास की उम्र में! भारत में 21 वर्ष की आयु में भी यदि कोई लड़की विधवा हो जाती है तो भी उसकी सोच इतनी ऊँची होती है कि वह दूसरा विवाह करने की

चिन्ता नहीं करती। बिना विवाह के भी वह प्रसन्न रहती है। परन्तु यहाँ पर किसी भी महिला में स्त्री-सुलभता की बात आप सोच नहीं सकते क्योंकि यहाँ की महिलाएं महिलाएं नहीं हैं, वे तो पुरुषोंसम हैं।

और पुरुष भी, भारत में एक बार विधुर होने के पश्चात् बहुत से पुरुष दूसरा विवाह नहीं करते। एक बार जो समाप्त हो गया, हो गया। परन्तु यहाँ पर तो चालीस, पचास या साठ वर्ष की आयु में भी पुरुष पत्नियाँ खोजते हैं। अभिप्राय ये है कि साठ वर्ष की माँ, पाँच या छः विवाह कर चुकी होती है। ये सब हास्यास्पद है, मेरी समझ में नहीं आता।

सहजयोगी : *श्रीमाताजी ये इसलिए है कि वहाँ पर तृप्ति बिल्कुल नहीं है। पाँच मिनट के लिए भी यदि व्यक्ति तृप्त हो जाए तो समझ लीजिए जीवन भर के लिए कार्य हो गया। परन्तु व्यक्ति कभी भी तृप्त न हो..... !*

श्रीमाताजी : *क्योंकि यह पुष्टिकारक नहीं है। सम्बन्ध पुष्टिकारक नहीं है, यही समस्या है। यदि ये पुष्टिकारक होंगे तो सम्बन्ध गहन हो जाएगा। ये ऐसा आन्तरिक सम्बन्ध है जहाँ व्यक्ति अपनी पत्नी या पति के अतिरिक्त किसी अन्य के पीछे दौड़ने के बारे में सोचता भी नहीं। एक बार विवाह होने के पश्चात् सारी दौड़ समाप्त हो जाती है। परन्तु जब आपके पास विवाहित जीवन जैसी निधि है तो आपमें तुष्टि आनी ही चाहिए। जैसे यदि आप किसी के घर पर जाएं तो आप अपने घर लौटने के लिए बेचैन होते हैं, आपको ऐसा लगता है कि ये मेरा घर नहीं है। आपको अपने घर लौटना पड़ता है।*

विवाह भी ऐसा ही है। अब आप अपने गन्तव्य पर पहुँच चुके हैं। अतः स्थापित हो जाएं। अब भी मंजिल की ओर आपका दौड़ते रहना पागलपन है इस बात को आज़माएं। इसके कार्यान्वयन को देखकर आपको आश्चर्य होगा।

इस्लाम में भी ऐसा ही है। एक समय था जब अनगिनत पुरुषों की मृत्यु हो गई थी और महिलाओं की संख्या बहुत अधिक थी। कबीलों के विद्रोह का सामना मोहम्मद साहब को करना पड़ा, जिसके कारण बहुत से पुरुष वीरगति को प्राप्त हुए और महिलाएं विधवा हो गईं। पुरुषों की संख्या इतनी कम हो गई कि महिलाओं के वेश्या बन जाने का भय पैदा हो गया। अतः मोहम्मद साहब ने कहा कि एक पुरुष चार महिलाओं से विवाह कर सकता है। परन्तु उस समय केवल युवा पुरुष एवं महिलाएं ही विवाह करने के लिए बचे थे क्योंकि अधिकतर युवा पुरुष तो मारे जा चुके थे।

इसलिए उन्होंने कहा कि ठीक है मैं एक युवती से विवाह करूंगा, परन्तु करूंगा अवश्य। किसी अवतरण का इस प्रकार का दृष्टिकोण समयाचार कहलाता है। समस्या के क्षण, समस्या से मुकाबला करने का दृष्टिकोण, समय बदलने के साथ-साथ समयाचार भी बदल जाते हैं। इसके लिए विवेक की आवश्यकता होती है।

अपनी पावनता के लिए प्रसिद्ध शिवाजी को चार विवाह करने पड़े क्योंकि इन विवाहों के

माध्यम से उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण कार्य करने थे। अपनी माँ को दिए गए वचनों के कारण पाँच पाण्डवों ने द्रौपदी से विवाह किया। श्रीकृष्ण ने अपनी सोलह हज़ार शक्तियों से विवाह किया क्योंकि उनके पास कोई सहजयोगिनी न थी।

सहजयोगी : *श्रीमाताजी क्या ये प्रतीकात्मक हैं?*

श्रीमाताजी : *नि:सन्देह, नि:सन्देह। वे श्रीकृष्ण की पूर्ण शक्तियाँ थी - सोलह हज़ार।*

सहजयोगी : *मेरा मतलब ये है कि उन्होंने वास्तव में सोलह हज़ार महिलाओं से विवाह किया?*

श्रीमाताजी : *हाँ, नि:सन्देह। इस सम्बन्ध को वास्तव में विवाह का नाम दिया गया। वो तो योगेश्वर थे, उनका क्या विवाह!*

सहजयोगी : *सोलह हज़ार और उन्होंने अग्नि के इर्द-गिर्द घूमकर फेरे भी लिए?*

श्रीमाताजी : *नहीं, नहीं, नहीं, नहीं,। एक ही बार में (माँ हँसती हैं)। एक ही बार में उन्होंने विवाह किया। एक बार में उन्होंने घोषणा की कि ये सब मेरी पत्नियाँ हैं। अब आप देख सकते हैं कि उन्होंने किस प्रकार लीला की। वे अपनी शक्तियों को ग्रहण करना चाहते थे। उसी प्रकार से जैसे मैं चाहती हूँ कि आप लोग मेरी शक्तियों को प्रसारित करें। उस समय सहजयोगी खोजना बहुत कठिन कार्य था। अत: उन्होंने क्या किया कि इन शक्तियों को उसी क्षेत्र में लड़कियों के रूप में अवतरित किया। इन सबको एक भयानक राक्षस पकड़कर ले गया। उस राक्षस का वध करके श्रीकृष्ण अपनी सारी शक्तियों को अपने पास ले आए। पंच महाभूत, पाँच पटरानियों के रूप में उनके पास थे।*

अब कल्पना करें कि इतनी अधिक जनसंख्या के समय में भी मेरे बहुत से बच्चे हैं। लोग आलोचना भी कर सकते हैं कि इतनी अधिक जनसंख्या के समय में भी उनके अनगिनत बच्चे थे। (माँ हँसती हैं)। लोग ये भी कहेंगे कि जब माँ के इतने बच्चे हैं तो हमारे भी बहुत से बच्चे होने चाहिएं। ये कहना हास्यास्पद होगा। तो ये समयाचार है। समय के अनुसार मैं कोका कोला भी पीती हूँ क्योंकि मुझे सर्वसामान्य बने रहना है। परन्तु इसका अर्थ ये नहीं है कि आप भी कोका कोला पीते रहें, आप अपना आत्म-साक्षात्कार पा लें (माँ हँसती हैं)। तो ये घटित हुआ। यद्यपि शिवाजी की चार पत्नियाँ थीं परन्तु महाराष्ट्र में किसी ने इस तरह से बहुविवाह नहीं किए। लोग शिवाजी के हालात को समझते थे कि यह विवेक एवं बुद्धिमानी है।

एक बार एक राजदूत ने मुझसे पूछा कि क्या कारण है कि इस्लामिक संस्कृति के लोग परस्पर लड़ते रहते हैं, एक दूसरे की हत्याएं करते हैं और इतने हिंसक है? उसने मुझसे एक प्रश्न पूछा जिसकी ओर मैंने ध्यान दिया। बेचारे मोहम्मद साहब को उस समय आसुरी शक्तियों से युद्ध करना पड़ा था, परन्तु उन्होंने ये तो कभी नहीं कहा कि लोग एक दूसरे से युद्ध ही करते रहें। ऐसा उन्होंने कभी नहीं कहा। हज़रत मोहम्मद साहब को आसुरी शक्तियों से मुकाबला

करना पड़ा। इन शक्तियों ने उन्हें घेर लिया था। वे पूरी तरह से घिर गए थे। उन्हें ज़हर दे दिया गया था। आप इसकी कल्पना करें। मैं आपको बताती हूँ कि इस्लामिक संस्कृति में बहुविवाह के कारण इस तरह के कुकृत्य होते हैं। किसी पुरुष की यदि चार पत्नियाँ होंगी तो उन चारों के बच्चों में हमेशा लड़ाई होगी। होगी ही। क्या ये बात ठीक नहीं है? क्योंकि उन सभी बच्चों की माताएँ अलग-अलग हैं और माँ यदि भूत-बाधित होगी तो बच्चे भी भूत बाधित होंगे। माँ धार्मिक होगी तो बच्चे भी धार्मिक होंगे। ऐसा स्वतः होता है। अतः महत्वपूर्ण बात ये है कि हम लोगों को देखना चाहिए कि समयाचार क्या है और उसके अनुरूप घटित हुए कार्यों का अनुसरण हमने कहाँ तक करना है।

श्री कृष्ण की तरह से पाँच पत्नियों से विवाह करके आप योगेश्वर नहीं बन सकते, ऐसा सोचना मूर्खता होगी। अतः व्यक्ति को अवतरणों की हर बात की नकल नहीं करनी चाहिए। व्यक्ति को चाहिए कि अवतरणों की शक्तियों को प्राप्त करने का प्रयत्न करे। उनके कार्यों की नकल करने का नहीं। मान लो मुझमें लेखन की शक्ति है और आप मेरे लेखन की नकल करने लगें तो आप लेखक नहीं बन पाएंगे, क्या ऐसा हो सकता है?

तो व्यक्ति को समझना है कि जब भी वह किसी अवतरण की नकल करने का प्रयत्न करने लगे, जैसे कोई कहता है कि मैं लोगों का वध कर सकता हूँ, हिटलर कह सकता है कि मैं श्रीकृष्ण हूँ इसलिए मैं लोगों का वध कर सकता हूँ। परन्तु वह श्रीकृष्ण नहीं है और न ही वध करना उसका कार्य है। मानव के साथ यही समस्या है कि बाह्य आचरण से वे स्वयं को कुछ भी समझने लगते हैं। इसके परिणाम को भी, कार्य के भयानक परिणाम को भी वे नहीं देखते। मैंने पाया कि जापान के लोग भी अन्दर से बहुत क्रूर हैं। वे जर्मन लोगों की तरह नहीं हैं,.... जो बहुत स्थूल हैं। जापानी लोग सूक्ष्म प्रकार से अपने हृदय से अत्यन्त क्रूर हैं परन्तु दिखावे के लिए वे अत्यन्त विनम्र हैं। यदि कोई दुर्घटना हो जाए तो कार से निकलकर दोनों लोग बाहर आएंगे, एक दूसरे के सम्मुख झुकेंगे और अपने-अपने रास्ते चले जाएंगे। आप समझेंगे कि ये कितने अच्छे लोग हैं! उनका एक दूसरे के सम्मुख झुकना तो नई कार मिलने की आशा की खुशी जैसा है।

परन्तु भीड़ में यदि उन्हें अवसर मिल जाए तो वे आपके पैर को कुचलने में ज़रा भी संकोच नहीं करेंगे। आपका हाथ या पैर यदि उनकी पकड़ में आ गया तो वो उसे कुचल देंगे। यौन के मामले में तो वे एकदम से गन्दे हैं, अत्यन्त गंदे। आपको याद होगा कि जब हम नेपाल गए थे तो इन लोगों (जापानी लोगों) के पास वासनात्मक चीज़ें खोजने के लिए ज़ूम लैंस (Zoom Lenses) *थे। ऐसी चीज़ों को हम भारतीयों ने कभी नहीं देखा। इन वासनात्मक दृश्यों को देखने के लिए एक ऊपर चढ़ रहा था और दूसरा नीचे गिर रहा था, इतनी हड़बड़ाहट थी। उनका दृष्टिकोण और शोधकार्य इतना घिनौना है। कारण ये है कि उनकी माताएं बर्तन धोने वाली मेहरियाँ हैं जिनमें ज़रा भी विवेक नहीं है। वे गन्दी हैं और विवेकहीन। कोई भी सुन्दर एवं बुद्धिमान औरत यदि हो तो वह नर्तकी बन बैठती है।*

मैं जब जापान गई तो उनकी समझ में ये नहीं आ रहा था कि मुझे कहाँ ठहराएं, क्योंकि वो लोग महिलाओं को अपने घरों में नहीं ले जाते। मेरी दो पुत्रियों के साथ वे मुझे एक नर्तकी के घर ले गए। नर्तकी को मेरी चूड़ियाँ बहुत पसन्द आई। वो चूड़ियाँ मैंने उसी को दे दीं। वो लोग बहुत नाराज़ हुए। कहने लगे आप ये चूड़ियाँ उसे नहीं दे सकती, वे आपकी तरह से पवित्र लोग नहीं हैं। परन्तु किसी महिला के साथ यदि नौकरों की तरह से व्यवहार किया जाएगा, उससे नौकरों की तरह से काम करवाया जाएगा तो बच्चे भी ऐसे ही बन जाएंगे क्योंकि उनमें भी सम्मान का अभाव होगा।

जर्मनी में भी मैंने पाया, मैं हैरान थी, महिलाओं का कोई सम्मान नहीं है। महिलाओं में सम्मान का पूर्ण अभाव है। मैं पूर्वी जर्मनी गई तो मेरे साथ एक दुभाषिया महिला थी जो अत्यन्त बुद्धिमान एवं अच्छी थी। उसने मुझे बताया कि अभी तक उसका विवाह नहीं हुआ है, उसका विवाह होगा भी नहीं। परन्तु उसने कहा मेरे बच्चे नहीं हैं। मैं चाहती भी नहीं कि मेरे बच्चे हों। मैंने पूछा क्यों? उसने उत्तर दिया कि यदि वह विवाह करेगी तो उसके शरीर का आकार बिगड़ जाएगा और उसका पति किसी अन्य युवा लड़की से विवाह कर लेगा। वो कहने लगी कि उसके शरीर का आकार ऐसा होना चाहिए जिससे वह दूसरा पति खोज सके। निःसन्देह वह बड़ी आयु का पुरुष होगा। बच्चों के साथ तो मुझे कोई पति मिलेगा ही नहीं क्योंकि या तो मैं बहुत पतली हो जाऊंगी या मोटी। उस स्थिति में कोई पुरुष मुझे पसन्द ही नहीं करेगा क्योंकि तब मैं इतनी सुन्दर न रह पाऊंगी। तो इस प्रकार से वे खिलवाड़ में फँसी रहती हैं और उनका स्वभाव ऐसा बन जाता है। अतः जर्मन लोगों का हिंसक स्वभाव होना आश्चर्य की बात नहीं है।

महिलाएं यदि असुरक्षित हैं और वेश्यावृत्ति आदि में सुरक्षा खोजती हैं तो बच्चों का क्या होगा? भारत में सभी जानते हैं कि वेश्याएं अत्यन्त हिंसक प्रवृत्ति होती है और कभी-कभी तो लोगों को फँसाने के कार्य में भी जुट जाती हैं।

अतः यदि महिलाओं का सम्मान नहीं होता और वे सम्मानजनक नहीं है तो बच्चे तो हिंसात्मक प्रवृत्ति हो ही जाएंगे। इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं है। उत्तरी भारत में भी इस्लामिक संस्कृति का आक्रमण हुआ। उत्तरी भारत के पुरुष इतने स्थिर एवं मर्यादित नहीं हैं जितने दक्षिणी भारत के। वहाँ भी महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार होता है। यदि वे बनठन कर न रहें तो उनसे ठीक प्रकार से व्यवहार भी नहीं होता। बंगाल, पंजाब और दिल्ली आदि में ऐसा ही है। सभी पुरुषों की नज़रें महिलाओं की ओर ही घूमती रहती हैं, वहाँ पुरुषों की यही आदत है।

सहजयोगी : *जैसे यहाँ है।*

श्रीमाताजी : *जैसे वीएना में है। इतनी बुरी नहीं है आदत (श्रीमाताजी हँसती है)। उत्तरी भारत हिंसा से परिपूर्ण है। केवल इतना ही नहीं वहाँ कानून की समस्या भी है। उत्तरप्रदेश में, बिहार में और बंगाल में कानून की स्थिति बहुत खराब है इसके कारण ये क्षेत्र बर्बाद हो गया*

है। परन्तु दक्षिण अत्यन्त शान्त है, आप महाराष्ट्र गए हैं। उत्तर प्रदेश में तो आप रात को घर से बाहर घूम भी नहीं सकते। कहीं यदि आप गए तो आपको लूट लिया जाएगा। परन्तु वास्तव में वह इस्लामिक संस्कृति नहीं है। ये तो पूरी तरह से इस्लाम विरोधी है। मोहम्मद साहब महिलाओं का सम्मान करते थे और इसी सम्मान के कारण वे चाहते थे कि महिलाएं पर्दा करें ताकि वे सुरक्षित रहें। ये कारण है। वहाँ विवाह के कानून भी अत्यन्त अच्छे हैं।

रियाद में मैंने देखा है कि कुदृष्टि से महिलाओं को देखने पर आँखें निकाल ली जाती हैं। वहाँ बहुत अच्छा है। महिलाएं बहुत सुरक्षित हैं। पत्नियाँ धार्मिक हैं और लोग कहीं अच्छे हैं। बाइबल में भी हमें यह शैरिअत दी गई थी। शैरिअत का ये अध्याय मोज़िज ने ऐसे ही लोगों के लिए लिखा था। यह यहूदियों को दिया गया था परन्तु मुसलमान भी इसका अनुसरण करते हैं। हर शुक्रवार को किसी चौराहे पर अपराधियों के सिर काटे जाते हैं, हाथ काटे जाते हैं, पैर काटे जाते हैं, उन्हें जिन्दा दफना दिया जाता है। सभी कुछ जनता के सामने होता है। आजकल तो ऐसा बहुत कम है परन्तु आरम्भ में ऐसा ही होता था। कोड़े लगाना तो आज भी आम बात है। रियाद में सोने को भी लोग ताले में नहीं रखते। सोना ऐसे पड़ा होता है जैसे भारत में दुकानों पर फूल। फूलों की ऐसी बहुत दुकानें हैं परन्तु हैरानी की बात ये है कि उन्हें कोई भी नहीं छूता।

रियाद में कोई चोरी नहीं करता, किसी घर में ताला नहीं लगाया जाता। कोई किसी की पत्नी पर आक्रमण नहीं करता, कुछ नहीं। यदि कोई महिला सड़क पार कर रही हो तो लोग अपनी कार रोक लेते हैं। वे अत्यन्त सम्मानजनक हैं। कोई महिला यदि बच्चों के साथ यात्रा कर रही हो तो उसके पास चाहे जितना समाान हो उसे कोई किराया नहीं देना पड़ता। सभी लोग उसकी सहायता करते हैं। इसका विशेष प्रबन्ध है। वहाँ कोई पुरुष रखेल नहीं रख सकता। किसी के पास यदि रखेल है तो उसका रहस्य पता लगते ही वह पुरुष समाप्त।

आप कल्पना नहीं कर सकते, ऐसे भयानक बन्धन हैं। एक अंग्रेज महिला किसी राजकुमार की रखेल थी। उसका वध कर दिया गया और ऊपर से फेंक दिया गया। उस महिला का पिता उसका पता लगाने के लिए गया परन्तु कुछ भी न हुआ, वह ऐसा स्थान है। परन्तु यह सब भय के कारण होता है लेकिन भय के कारण यदि अच्छाई की जाए तो उसका क्या लाभ है?

आन्तरिक विकास का अभाव है केवल भय के कारण ही लोग सभी कुछ करते हैं। परन्तु सहजयोग में आपका आन्तरिक विकास होता है, विकसित होकर आपका व्यक्तित्व सम्मानजनक हो जाता है। आप धर्म का और पावनता का सम्मान करते हैं। अतः हमारा संसार बिल्कुल भिन्न है। न तो इसे शैरिअत (Charia) *की जरूरत है और न ही दस धर्मादेशों की। सहजयोगी की आँखे भी अत्यन्त पवित्र हो जाती हैं। उनका मस्तिष्क बिल्कुल पावन हो जाता है। आपके अन्दर अत्यन्त पावन शक्ति प्रवाहित हो रही है।*

आप हैरान होंगे कि इस प्रकार से हमें बहुत अच्छे परिवार प्राप्त होंगे। बहुत अच्छे बच्चे मिलेंगे। एक नई प्रजाति (Race) *प्राप्त होगी, एक बिल्कुल नई प्रजाति। यही कारण है कि हम किसी पर कोई चीज़ थोपते नहीं। हर व्यक्ति स्वयं को देखता है। पावित्र्य विवेक का*

सौन्दर्यकरण करने वाली शक्ति के रूप में देखते हैं क्योंकि यह जीवन की जटिलताओं को कम करती है।

सहजयोग में आकर भी उल्टे सीधे कार्य करने वाले लोग स्वत: सहजयोग से निकल जाते हैं। उनके निकलने के और भी बहुत से तरीके हैं। न तो हम उन्हें दण्ड देते हैं और न ही सहजयोग में रहने के लिए विवश करते हैं। इस प्रकार से सहजयोग आपको सुन्दर बनाता है और गरिमा प्रदान करता है। आपको किसी बनावट की आवश्यकता नहीं पड़ती। आपको दिखावा करने की आवश्यकता नहीं पड़ती और न ही आदिमानव बनने की आवश्यकता पड़ती है। आपको सामान्य व्यक्ति बनना होता है।

सभी लोग इसमें विकसित होते हैं। मैं आपको बताती हूँ कि लोफर कहलाने वाले लोग भी अत्यन्त सुन्दर सहजयोगी बन गए हैं। आप इस पर विश्वास नहीं कर पाएंगे। भारत में बहुत सारे लोग लोफर से थे, लोग उन्हें लोफर कहते थे।

सहजयोगी : लोफर अर्थात?

श्रीमाताजी : नहीं, नहीं, लोफर वो लोग हैं जो इधर-उधर महिलाओं के साथ चोंचले बाज़ी करते फिरते हैं, लम्पट प्रकार के लोग। लोग इस बात पर विश्वास नहीं कर पाते। तो आज की हमारी बातचीत का सार ये है कि **हमें साहसी बनकर बहादुरीपूर्वक स्वीकार करना होगा कि हम सहजयोगी हैं और जो कुछ भी सहज नहीं है उसे त्यागना होगा।** हममें साहस होना चाहिए, हमें साहसी एंव सुदृढ़ होना चाहिए, तब ये कार्यान्वित होता है। अब ये बात बिल्कुल स्पष्ट है। मुझे आशा है कि आप सब मेरी बात को आसानी से समझ लेंगे और सहज शैली को अपने पर कार्यान्वित होने देंगे। अपना सहयोग करें, अपना तथा अन्य सहजयोगियों का सम्मान करें। बस इतना ही, और ये कार्यान्वित हो जाएगा। मुझे विश्वास है कि इसी स्थान पर आप सब लोग अत्यन्त महान सहजयोगी बनेंगे।

यह अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि ये स्थान यूरोप और जर्मनी की सीमा पर है। यह बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए मैं आपको आशीर्वाद देती हूँ। आपको चाहिए कि आप स्वयं को क्षमा करें, सर्वप्रथम क्षमा करें। जो कुछ भी घटित हुआ है, भूतकाल तो भूतकाल है, समाप्त हो चुका है। इस क्षण से भूतकाल समाप्त हो चुका है। अब हम एक नया जीवन शुरु कर रहे हैं। समाप्त। स्वयं को क्षमा करें क्योंकि अब आप पुराने व्यक्ति नहीं है, पुराना व्यक्तित्व नहीं हैं अब आप।

परमात्मा आपको धन्य करें। शुभरात्रि।

(ग्रेगोर का निवास, विएना, आस्ट्रिया, 6.9.1984)

श्रीमाताजी से एक साक्षात्कार

लेबेन्सबिल्डर, विएना, आस्ट्रिया (9 जुलाई 1985)

"और, मैंने एक महिला से आरम्भ किया जिसे सर्वप्रथम आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हुआ, बाद में हमें बारह लोग मिले जिन्हें आत्म-साक्षात्कार मिला, दो वर्षों में केवल 14 लोगों ने आत्म-साक्षात्कार प्राप्त किया, तत्पश्चात् बहुत से अन्य लोगों को आत्म-साक्षात्कार मिलने लगा।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, 09.07.1985)

श्रीमाताजी : *तो आप लोग चाहते हैं कि मैं अपने जीवन के विषय में बताऊँ। ये अच्छी बात है क्योंकि मुझे इटली में एक साक्षात्कार देने के लिए जाना है और उसके लिए यह बहुत अच्छी तैयारी होगी क्योंकि मैं नहीं जानती कि अपने जीवन के विषय में क्या कहा जाए।*

साक्षात्कारकर्ता : *क्या आप अपने पूरे जीवन के विषय में बता सकती है?*

श्रीमाताजी : *मैं कहानीकार हूँ (श्रीमाताजी हँसती हैं) ये जीवनी की तरह से है।*

साक्षात्कारकर्ता : *क्या आप अपने बचपन की परिस्थितियों का वर्णन कर सकती हैं?*

श्रीमाताजी : *मैं अत्यन्त प्रबुद्ध लोगों के परिवार से सम्बन्धित हूँ। मेरे पिता भाषाविद्* (Linguist) *थे और वे चौदह भाषाओं में कुशल थे। उन्हें 26 भाषाओं का ज्ञान था। उन्होंने कुरानशरीफ का हिन्दी भाषा में रूपान्तरण भी किया। उन दिनों में भी, मेरी माताजी को गणित की मानोपाधि* (Honours) *प्राप्त थी। तो मेरे माता-पिता, दोनों ही, अच्छे पढ़े-लिखे एवं प्रबुद्ध व्यक्ति थे। मेरे जन्म के समय मेरी माँ को कोई स्वप्न आया जिसकी वे व्याख्या न कर पाईं।*

परन्तु उसके पश्चात् उनके मन में शेर देखने की तीव्र इच्छा हुई। मेरे पिताजी बहुत अच्छे शिकारी थे, क्योंकि उन दिनों में हमारे क्षेत्र में शेरों का प्रकोप था। ये छिन्दवाड़ा नामक पहाड़ी क्षेत्र था। वहाँ के एक राजा का मेरे पिता के साथ बहुत सामीप्य था।

जो भी हो, मेरे पिताजी को एक पत्र आया कि वहाँ एक बहुत बड़ा शेर है और सभी लोगों को ये भय है कि कहीं वह मानवभक्षी न हो। मेरे पिताजी मेरी माँ के साथ वहाँ पहुँच गए। वे मचान पर बैठे हुए थे। ये मचान पेड़ की चोटी पर बना हुआ था ताकि वे शेर पर अच्छी तरह से निशाना लगा सकें। मेरी माताजी ने मुझे बताया था कि जब मे मचान पर बैठे थे तो एक विशाल आकार का शेर, अत्यन्त गरिमापूर्वक खेत में दिखाई दिया और उनके मन में शेर के प्रति गहन प्रेम की धारा उमड़ पड़ी।

पूर्णिमा की रात थी, और जब मेरे पिताजी ने शेर पर निशाना लगाने के लिए बन्दूक उठाई तो मेरी माँ को शेर पर बहुत दया आई। उन्होंने मेरे पिताजी को गोली चलाने से रोका। उसके बाद वो शेर वहाँ से चला गया और कभी लौटकर उस जंगल में नहीं आया।

परन्तु इस घटना ने मेरे पिताजी, जो कि स्वयं आत्म साक्षात्कारी थे, को सोचने पर विवश कर दिया कि उनकी पत्नी के गर्भ से दुर्गा जैसी कोई देवी, जिसे शेर अच्छा लगता है, जन्म लेगी, क्योंकि किसी महिला की शेर देखने की इतनी तीव्र इच्छा होना बड़ी ही अजीब बात थी। तो उन्होंने मेरी माँ से कहा, ''अब तुम खुश हो?'' बन्दूक का बोझ उठाए हुए उन्होंने कहा, ''क्या तुम्हारे गर्भ में दुर्गा बैठी हुई है जिसके कारण तुम शेर की रक्षा करने का प्रयत्न कर रही हो?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''हाँ, हाँ, बन्दूक हटा लो, मैं तुम्हें शेर नहीं मारने दूँगी।''

मेरे जीवन में इस प्रकार की बहुत सी घटनाएं हुईं। मैं ईसाई प्रोटेस्टेंट (Protestants) *परिवार से हूँ और जब मेरा जन्म हुआ तो मेरी माँ को बिल्कुल भी प्रसव पीड़ा नहीं हुई और*

मेरा जन्म हो गया। उसकी समझ में नहीं आया कि ये कैसे हुआ। मेरे शरीर पर रक्त, मल आदि भी कुछ न लगा हुआ था। मैं एकदम स्वच्छ थी और इसीलिए इन लोगों ने मुझे निर्मला नाम दिया।

परन्तु मेरी दादी माँ ने कहा कि इस लड़की को निष्कलंका कहा जाना चाहिए, अर्थात ऐसी लड़की जिस पर कोई दाग़ न था। परन्तु ये पुरुष का नाम है। इसलिए सबने निर्णय लिया कि ठीक है इसे निर्मला नाम से ही पुकारेंगे अर्थात निष्कलंका।

ये सारी घटनाएं घटित हुईं और इसके साथ-साथ मेरे पिताजी आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति थे, उन्हें मुझसे तीव्र चैतन्य लहरियाँ प्राप्त हुईं। उन्हें लगा कि ये जीवन (निर्मला) महान है और वह अपने जीवन में कुछ न कुछ महान कार्य अवश्य करेगी। मैं नहीं जानती क्यों उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ, न जाने, उन्हें स्वप्न आया या वैसे ही समझ गए, परन्तु जहाँ तक मुझे याद है जब-जब भी उन्होंने मुझसे बात की वे हमेशा यही कहा करते थे, ''सामूहिक आत्म-साक्षात्कार देने की कोई विधि तुम्हें अवश्य खोज निकालनी है।''

जैसे मैंने आपको बताया है, वे बहुत सी भाषाओं के विद्वान थे और अत्यन्त पढ़े-लिखे थे। उन्होंने मुझे धर्म का, भिन्न धर्मों का बहुत अच्छा ज्ञान प्रदान किया तथा मानव प्रकृति के विषय में मुझे बहुत अच्छी शिक्षा दी। मानव की क्या समस्याएँ होती हैं, क्यों वे इस प्रकार कार्य करते हैं, क्यों वे परमात्मा को नहीं मानते, मानव पाखण्डी क्यों है? आदि सभी चीज़ों के विषय में उन्होंने मुझे बताया।

उन्हें कुण्डलिनी का भी ज्ञान था, परन्तु बहुत अधिक नहीं। नि:सन्देह जब मेरा जन्म हुआ तो मुझे कुण्डलिनी का पूर्ण ज्ञान था। अपने बचपन से ही मैं कुण्डलिनी के विषय में सब कुछ जानती थी। अत: मैं अत्यन्त जागरूक व्यक्ति थी - अत्यन्त जागरूक। मैं केवल इसके बारे में बताना नहीं जानती थी क्योंकि आप जानते हैं, लोगों में इतनी जागरूकता नहीं थी, सभी से इस प्रकार इसके विषय में बात-चीत नहीं की जा सकती थी।

मुझे अत्यन्त आनन्दमय व्यक्ति माना जाता था परन्तु बहुत गम्भीर, अत्यन्त गहन व्यक्ति भी। मेरी शिक्षा आरम्भ हुई, पढ़ाई में मेरी कोई अधिक दिलचस्पी न थी यद्यपि पढ़ाई भी मैंने बहुत अच्छी तरह से की। मैं महान व्यक्तियों की जीवनियाँ और इस प्रकार की पुस्तकें पढ़ा करती थी।

बहुत छोटी आयु में मैंने बर्नार्ड शॉ (Bernard Shaw) *को पढ़ा। लोग अब अपने पाठयक्रम की पुस्तकें पढ़ते तो मैं बर्नार्ड शॉ की पुस्तकें पढ़ रही होती थी। पाठयक्रम की पुस्तकें पढ़ने में मेरी कोई रुचि न थी। मुझे लगता था कि ये सब बचकानी पुस्तकें हैं जिनमें पढ़ने के लिए कुछ भी नहीं है। तब मैंने अपने पिताजी से कहा कि मुझे चिकित्सा विज्ञान पढ़ना है। उन्होंने पूछा, "क्यों?" मैंने कहा, "क्योंकि मुझे चिकित्सकों से बातचीत करनी है।" उन्होंने पूछा, ''तो तुम्हें चिकित्सकों से बातचीत करनी है?" "हाँ जी," मैंने उत्तर दिया।*

परन्तु ऐसे हुआ कि बचपन में जब मैं सात वर्ष की थी तो मेरे पिताजी कांग्रेसी थे। उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता तब ली थी जब मैं चार वर्ष की थी। इससे पूर्व वे पश्चिमी फैशन के अनुसार रहते थे। उन्होंने पश्चिमी फैशन की सभी चीज़ें फेंक दीं और फौजियों की तरह से अत्यन्त अनुशासित जीवन बिताने लगे। तब उन्होंने हमें भारतीय भाषाएं पढ़वाईं, एक भारतीय पाठशाला में, मिशनरी स्कूल में नहीं, हमें संस्कृत पढ़वाई। मिशनरी लोग तो बहुत ही क्रूर थे। मेरे पिताजी जब कांग्रेसी बने तो मिशनरी स्कूल वालों ने हमें स्कूल से निकाल दिया, वे हमारे विरुद्ध हो गए थे। सात वर्ष की आयु में अपने पिताजी के साथ मैं महात्मा गाँधी से मिलने गई। वे हमारे स्थान से सत्तर मील दूर रहते थे। पहली मुलाकात में ही महात्मा गाँधी ने मुझे बहुत पसन्द किया। कहने लगे, ''इस बच्ची को यहीं छोड़ दो।''

वहाँ रुकने के लिए मैं अपने साथ कपड़े आदि कुछ न ले गई थी। मेरे पिताजी ने मेरा सारा सामान वहीं भेज दिया। महात्मा गाँधी मुझे बहुत प्रेम करते थे। यद्यपि मैं छोटी-सी लड़की थी फिर भी वे समझ गए थे कि मुझमें कुछ विशेष है। आश्चर्य की बात तो ये थी कि कभी-कभी तो गम्भीर मामलों पर भी वे मेरी राय लिया करते थे। जैसे एक दिन उन्होंने मुझे प्रार्थना पुस्तिका में सुधार करने के लिए कहा। कहने लगे, ''किस प्रकार मैं इस शृंखला को लगाऊं? तो मैंने उन्हें इसे ठीक से लगाने के विषय में बताया और उन्होंने इस पुस्तिका को मेरे बताए अनुरूप सिलसिलेवार लगा दिया।

मैं स्कूल जाने के लिए वापिस जाती और लौटकर महात्मा गाँधी के पास आ जाती। हर वर्ष ऐसा ही होता। वे, मुझे 'नेपाली' कहकर बुलाते। उन्होंने मेरा नाम ही 'नेपाली' रख दिया था। उन दिनों सभी मुझे 'नेपाली' कहकर बुलाया करते थे। उनके सानिध्य में मैं बड़ी हुई, वे बच्चों के प्रति अत्यन्त करुणामय थे।

अन्यथा वे अत्यन्त सख्त व्यक्ति थे, अपने तथा अन्य लोगों के प्रति वे अत्यन्त सख्त थे। अत्यन्त अनुशासित व्यक्ति। वे सभी को प्रातः चार बजे उठाते और स्नान आदि करके पाँच बजे सबको प्रार्थना के लिए आना होता था। वे बहुत तेज़ चलते थे। उनके साथ मैंने भी बहुत तेज़ चलना सीख लिया क्योंकि उनके साथ तो तेज़ ही चलना पड़ता था।

वे अत्यन्त प्रेममय और अच्छे व्यक्ति थे। मैं क्योंकि बालिका थी, वे मेरी बात को ध्यानपूर्वक सुनते। यदि मैं कभी उन्हें अधिक खाने के लिए विवश करती तो वो हँसते और स्वीकार कर लेते, अत्यन्त दयामय व्यक्ति थे वे।

परन्तु अन्य लोगों के साथ वे अत्यन्त सख्त थे और मैं उन्हें ये बात बताया करती थी, ''इन लोगों के प्रति आप इतने सख्त क्यों है?'' वे कहते, ''तुम छोटी-सी बालिका हो और प्रातः काल उठ गई हो, तो वो लोग क्यों नहीं उठ सकते?'' मैंने कहा, ''मैं बहुत छोटी हूँ, इसलिए मैं उठ जाती हूँ, परन्तु वो बहुत बड़े हैं, इसलिए नहीं उठ पाते।'' बालिका होने के नाते मैं ये सब कह देती।

बाद में मेरे पिताजी जेल गए, मेरी माँ भी पाँच बार जेल गई। मेरे पिताजी दो बार जेल

गए। एक बार लगभग ढाई वर्ष के लिए, और परिवार में केवल वे ही अर्जन करने वाले व्यक्ति थे। हम लोग शालिवाहन नामक बहुत पुराने शाही खानदान से सम्बन्धित थे। शालिवाहन शक नाम से भारत में एक पांचांग भी है।

मेरे पिताजी को जब जेल ले जाया गया तो अपना घर छोड़कर हमें झोपड़ियों में रहना पड़ा तथा सभी प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ा। मैंने क्योंकि बहुत से लोगों की सहायता की थी इसलिए प्रशासन ने मुझे भी बहुत कष्ट दिए। अत्यन्त गम्भीरता पूर्वक मैंने आन्दोलन में भाग लिया और वहाँ पर अग्रणी बन गई। परन्तु तब हम बहुत युवा थे।

मैंने सोचा कि जब तक मैं अत्यन्त सकारात्मक भूमिका नहीं निभाऊंगी तब तक अन्य लोगों में ये कार्यान्वित न होगा। किस प्रकार उन्होंने मुझे तकलीफें दी, ये बताना शिष्टता न होगी। उन्होंने मेरे साथ क्या किया? वास्तव में उन्होंने मुझे बहुत सताया! उस समय मैं उन्नीस वर्ष की युवा लड़की थी। ये सब अब बीत चुका है और समाप्त हो गया है। इसके बाद मेरे पिताजी पुनः जेल गए और लौटने पर केन्द्रीय असैम्बली के सदस्य चुने गए और बाद में असैम्बली और संसद के स्थापनकर्त्ता के रूप में, बाद में मेरे एक भाई भी संसद सदस्य चुने गए। अभी तक भी वे केन्द्रीय मन्त्री थे। मेरे दूसरे भाई बम्बई हाईकोर्ट में न्यायाधीश हैं। यद्यपि हमारे माता-पिता हमारी ओर बहुत ध्यान न दे पाए थे फिर भी वे सब बहुत अच्छे चल रहे हैं क्योंकि उन्होंने अपना जीवन देश के लिए समर्पित किया है। कोई भी तकलीफ़ हमें अध्ययन करने से न रोक पाई और हम आगे बढ़े।

1942 में दो आन्दोलनों में भाग लेने के कारण मेरे महाविद्यलाय ने मुझे निकाल फेंका और परिणामस्वरूप अपने घर से बहुत दूर मुझे अध्ययन के लिए जाना पड़ा। तब दो वर्ष मैंने विज्ञान पढ़ा और फिर चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन किया। ये पढ़ाई मैं पूरी न कर सकी क्योंकि तभी, वर्ष 1947 में देश में दंगे भड़क उठे। कॉलेज बन्द हो गया और चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई में अब मेरी कोई दिलचस्पी न रही क्योंकि मैं वास्तव में जो जानना चाहती थी वह कुछ और था। विज्ञान की मुझे अब आवश्यकता न थी। मेरा विवाह हो गया।

आपने सुना होगा कि मेरे पति अब अन्तर्राष्ट्रीय समुद्रवर्ती संस्थान (International Maritime Organisation) के महासचिव हैं। उन्हें बहुत उच्च पद प्राप्त हुए। वे पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के निजी सचिव भी रहे। लाल बहादुर शास्त्री अत्यन्त महान व्यक्ति थे परन्तु वे अधिक समय तक जीवित न रहे। यदि वे जीवित रहते तो हमारे देश में चीज़ें बिल्कुल भिन्न होतीं। वे पक्के गाँधीवादी थे। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि उन्होंने आदर्श गाँधीवादी व्यक्ति के रूप में जीवनयापन किया।

तो इस तरह से मेरा जीवन चलता रहा। परन्तु मेरा अन्तस कोई ऐसा मार्ग, कोई ऐसा उपाय खोजने में लगा हुआ था, जिससे सामूहिक आत्म-साक्षात्कार दिया जा सके। मेरे पिताजी ने कहा, ''जब तक तुम सामूहिक आत्म-साक्षात्कार देने की तकनीक नहीं खोज लेती तब तक लोगों से धर्म के विषय में बात नहीं करनी। किसी को पता भी नहीं लगना चाहिए कि तुम

इसके विषय में कुछ जानती हो, अन्यथा वे तुम्हें क्रूसारोपित कर देंगे या तुम्हें.... '' वे चिन्तित थे कि मेरी बात लोग न समझ पाएंगे और मैं भी एक अन्य बाइबल या गीता लिख डालूंगी जिसका कोई लाभ न होगा।

सर्वप्रथम तुम उन्हें आत्म-साक्षात्कार दो। यदि उन्हें आत्म-साक्षात्कार मिल गया तो वे इस बात को महसूस करेंगे कि ये कोई चीज़ है, इस मानवीय चेतना के विषय में उन्हें एहसास होगा। उदाहरण के रूप में, वे एक सादृश्य (Analogy) *दिया करते थे। मान लो हमारा जन्म दसवीं मंजिल पर हुआ है और सभी अन्य का भूतल पर तो कम से कम आप भूतल वाले लोगों को दो मंजिल चढ़ने का अनुभव तो दे दें ताकि वे जान सकें कि भूतल से ऊपर भी कुछ है। इसके बिना उनसे ऊपर की मंजिलों के विषय में बात करना व्यर्थ होगा।*

और वे कहा करते थे, "सन्तों और अवतरणों में यही गलती रही कि उन्होंने कभी ये बात महसूस नहीं की कि ये लोग अभी तक भूतल पर हैं। उन्हें अभी इस माध्यम में प्रवेश करना है। अतः तुम्हें अत्यन्त सावधान रहना होगा ताकि सर्वप्रथम तुम लोगों को आत्म-साक्षात्कार अवश्य दो।

अतः मैं ये उपाय, ये तरीके खोज रही थी। मेरी अपनी ध्यान धारणा की शैली के माध्यम से मैं इसे अपने अन्दर कार्यान्वित कर रही थी ताकि सभी क्रमपरिवर्तन और संयोजन (Permutations and Combinations) *को कार्यान्वित कर लूं तथा जब किसी व्यक्ति से मिलूं तो जान सकूं कि उसमें क्या समस्याएं हैं और इन समस्याओं को दूर कैसे किया जा सकता है? इस प्रकार से मैं व्यक्ति का अन्दर से अध्ययन करने का प्रयत्न करना चाहती थी।*

और मैं इसके बारे में पता लगाने के लिए बहुत से लोगों के पास गईं परन्तु मैंने पाया कि वे लोग तो अत्यन्त पाखण्डी थे। मैंने बहुत से गुरुओं को देखा, अधिकतर वे ऐसे ही थे। उन्हें मिलकर मुझे हैरानी हुई कि वे सब पाखण्डी थे जिनका कार्य लोगों से धन ऐंठना था। मैं रजनीश से मिलने के लिए भी गई और उसने कहा कि मुझे उसके कार्यक्रम में आना चाहिए। मैं नहीं जानती कि वह कैसा मनुष्य है क्योंकि वह गीता के विषय में बातचीत कर रहा था। मैंने सोचा कि शायद वह इसके विषय में कुछ जानता होगा!

मैं वहाँ गई, परन्तु मेरे पति ने कहा, 'नहीं, मैं तुम्हें इस कार्यक्रम में जाने की आज्ञा नहीं दूंगा।' उन्होंने अपने ही कुछ प्रबन्ध किए..... वहाँ मैं सभी कुछ देख सकी कि क्या-क्या चल रहा है। वह दिन था जब मैंने कहा, कि जैसे भी हो सके, ''मुझे अवश्य अन्तिम चक्र को खोलना होगा! वो अन्तिम चक्र खुल गया और मैंने कुण्डलिनी को देखा, कुण्डलिनी जो कि हमारे अन्तः स्थित आदि-शक्ति (Primordial Force) *है, परम चैतन्य है। इसे उठते हुए मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो दूरबीन से इसके सामीप्य को मैं देख रही हूँ। तत्पश्चात् मैंने पूरे सहस्रार को खुलते हुए देखा और मूसलाधार बारिश के रूप में अपने सिर से निकलती हुई चैतन्य किरणों को चहुँ ओर फैलते हुए देखा।*

मुझे लगा कि मैं खो गई हूँ, मेरा कुछ भी बाकी नहीं रहा। केवल परमात्मा की कृपा बची है, केवल परम चैतन्य बाकी है। यह सब अपने साथ घटित होते हुए मैंने पूरी तरह से देखा। परन्तु मैं हैरान थी कि जब मैं रजनीश के पास गई तो वह नमस्ते(Good bye) कहना भी भूल गया क्योंकि वो यह महसूस ही न कर पाया था कि क्या घटित हुआ है आदि-आदि। अत: मैं हैरान थी। मैंने कहा, ''यह व्यक्ति परमात्मा के विषय में कुछ भी नहीं जानता!'' तब मैं जान पाई कि ये लोग कितने पाखण्डी हैं और किस प्रकार झूठ पर झूठ बोले चले जा रहे हैं।

5 मई 1970 को सहस्रार खोलने की यह घटना घटित हुई और उसके तुरन्त बाद कारनेगी हाल(Carnagy Hall) में हमारा एक बहुत बड़ा प्रवचन हुआ। यह बहुत बड़ा सभासागर है जहाँ हजारों लोग आए और मैंने उन्हें स्पष्ट बताया कि ये सभी ठग हैं और पाखण्डी हैं। इनमें से कुछ लोग तो दुष्ट हैं और असुर हैं। इन सबके नाम भी मैंने उन्हें बताए। मैंने उन्हें बताया, ''इन लोगों के समीप न जाएं!'' इनमें कुछ विदेशी लोग भी थे।

बहुत से अन्य लोग भी थे जिन्हें मैंने स्पष्ट रूप से ये सारी बातें बताईं। वे लोग घबरा गए। कहने लगे, ''आपको ऐसे नहीं कहना चाहिए। वो आकर आपका कत्ल कर देंगे।'' परन्तु किसी ने कुछ नहीं किया और न ही कोई अदालत गया। पर वे मुझे बदनाम करने का प्रयत्न करते रहते। जब मैंने ये कहा, ''परमात्मा के नाम पर पैसा नहीं दिया जा सकता, '' तो इन्होंने समाचार पत्रों को पैसा देकर मेरे विरुद्ध लिखवाया। उन्हें लगा कि ऐसा कहकर कि 'परमात्मा के नाम पर पैसा मत लो', मैं उन्हें नुकसान पहुँचा रही हूँ।

ये यदि कोई धन्धा है तो आप इसे अवश्य करो, परन्तु परमात्मा का कार्य तो धन्धा नहीं है। जिस दिन से मैंने आत्म-साक्षात्कार देना आरम्भ किया उसी दिन से संघर्ष चालू हो गया। पहली बार केवल एक महिला को आत्म-साक्षात्कार देकर मैंने ये कार्य शुरु किया। तत्पश्चात् बारह लोगों ने आत्म-साक्षात्कार लिया। दो वर्षों में केवल चौदह लोगों ने आत्म-साक्षात्कार लिया। परन्तु इसके बाद शनै:-शनै: बहुत से लोग आत्म-साक्षात्कार लेने लगे। परन्तु साथ-साथ मैंने लोगों की बीमारियाँ भी ठीक करनी शुरु कर दीं, इससे बहुत लाभ हुआ। उन्हीं दिनों मेरे पति इस पद के लिए चुने गए और हम लोग लन्दन आ गए।

जब हम लन्दन आए तो हमारे पास एक ही कार्यक्रम था। विदेशों में आए भारतीयों की परमात्मा में अधिक दिलचस्पी नहीं होती, उनकी दिलचस्पी पैसों में अधिक होती है। अत: कोई भी भारतीय मेरे पास न रुकता, वे सब दौड़ जाते। केवल विदेशी लोग जिनमें सात हिप्पी भी थे, उन पर मुझे कार्य करना पड़ा। सात हिप्पियों को आत्म-साक्षात्कार देने के लिए मुझे उन पर चार वर्ष कार्य करना पड़ा! वो अत्यन्त दुष्कर थे, उनके जिगर खराब थे, उनके मस्तिष्क भटके हुए थे और ये समय मेरे लिए बहुत ही कठिन था। परन्तु बीच-बीच में मैं भारत भी जाया करती थी। भारत में भी कार्य हुआ। हमेशा तीन महीने मैं भारत रहा करती। हमने गाँवों में कार्य करना शुरु कर दिया विशेष रूप से, आश्चर्य की बात है, उन क्षेत्रों में जहाँ कभी मेरे पूर्वज राज्य किया करते थे। वहाँ पर अत्यन्त जोर-शोर से हमने कार्य

आरम्भ किया। बाद में हम भारतीयों को विदेश ले जाने लगे। आस्ट्रेलिया के कुछ लोगों को भारत लाए और इस प्रकार से इस दिशा में आत्म- साक्षात्कार का कार्य प्रगति करने लगा। शनैः-शनैः स्थितियों में सुधार हुआ और लोग जान पाए कि इस विधि से हम स्वयं को परिवर्तित कर सकते हैं। नशे लेने वाले, शराब पीने वाले और पागल लोगों को भी इससे लाभ हुआ और वे व्यसन एवं रोगमुक्त हो गए। ये बात साबित हो गई कि सहजयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण मार्ग है।

जब मैंने विश्व में सर्वत्र जाना आरम्भ किया तो मेरे पति मेरी यात्रा का सारा खर्चा वहन किया करते थे। जहाँ भी मैं जाती मेरा पूरा खर्चा वही उठाते। धीरे-धीरे अब ये लोग मेरी यात्राओं का खर्च उठाने लगे, परन्तु इसके अतिरिक्त उन्हें मुझे कुछ नहीं देना होता था। इस प्रकार से हमने अपना कार्य आरम्भ किया। हमें भयंकर विरोध का सामना करना पड़ा क्योंकि मीडिया के लोग तो कभी सहजयोग को समझेंगे ही नहीं। इसमें उत्तेजना का भी पूर्ण अभाव है, जिससे लोग उत्तेजित हो जाएं। परन्तु है ये बहुत महान चीज़ क्योंकि यही (सहजयोग) पूरे विश्व की समस्याओं का समाधान है। व्यक्ति को चाहिए कि सहजयोग करने का प्रयत्न करे।

फिर कुछ महान लोग भी सहजयोग में आए जिनमें एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे जो अब राष्ट्रपति हैं। इन्होंने निकारागुआ में एतिहासिक निर्णय दिया था। इनके अतिरिक्त बहुत से वकील और विधिवक्ता भी सहजयोग में आए। यहाँ पर अलजीरिया के एक विधिवक्ता हैं, कुछ डॉक्टर भी हैं। इन लोगों ने कार्य भार सम्भाला और सहजयोग प्रचार-प्रसार में मेरी मदद की।

पश्चिम में सहजयोग का प्रचार-प्रसार करना बहुत कठिन कार्य था। निःसन्देह भारत के गाँवों में यह बहुत तेजी से फैल रहा है। परन्तु भारत के नगरों के लोग भी पाश्चात्य रंग में रंगे हुए हैं और वो भी विश्लेषण करने लगते हैं। उन्हें हमारी संस्कृति और परम्पराओं का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है, वो ये भी नहीं जानते कि हमारे अन्दर कुण्डलिनी शक्ति विद्यमान है।

कुछ लोगों को आत्म-साक्षात्कार का भी ज्ञान नहीं है। परन्तु ये तथाकथित गुरु भारत में नहीं टिक पाए क्योंकि वहाँ कोई उन्हें स्वीकार न करता। अतः वे विदेशों की ओर दौड़े और ये मेरे लिए भी आशीर्वाद सम था क्योंकि उनके दौड़ आने के कारण वहाँ मुझे उनका मुकाबला न करना पड़ा। इस प्रकार सहजयोग कार्यान्वित होने लगा और लोगों ने पाया कि इससे सभी प्रकार की सहायता मिलती है। इसके बहुत से चमत्कारों को भी लोगों ने महसूस किया तथा काफी हद तक सहजयोग स्थापित हो गया।

परन्तु अब भी मैं कहूँगी कि अभी भी हम पश्चिम के बहुत से देशों में नहीं गए हैं। अभी भी वहाँ पर बहुत सा कार्य होना बाकी है। क्योंकि ज्यों ही आप किसी स्थान पर कार्य आरम्भ करते हैं तो लोग चाहते हैं कि मैं उनके रोग निवारण करूं। मैं यदि इस ओर अधिक ध्यान देती हूँ तो सभी को डॉक्टर बनाना ही मुख्य कार्य बन जाता है और यदि इस ओर ध्यान नहीं देती तो लोकप्रियता समाप्त होती है। लोग सोचते हैं कि इनमें कोई सहानुभूति नहीं है। आदि-आदि।

परन्तु अब क्योंकि कोई भी सहजयोगी किसी अन्य का रोग निवारण कर सकता है इसलिए मुझे स्वयं सीधे किसी का रोग निवारण नहीं करना पड़ता। परन्तु ये बात भी लोगों को पसन्द नहीं है। वो चाहते हैं कि मैं उनके सम्मुख बैठकर उनके अहं को बढ़ावा देती रहूं। ये सभी चीज़ें बनी हुई हैं परन्तु बहुत कठिन हैं। हम कोई भाषण नहीं दे रहे हैं जिससे लोगों को प्रसन्न करते रहें, ऐसा नहीं है, हम तो सच्चाई बताते हैं। किसी व्यक्ति में यदि विवेकबुद्धि है, शुद्ध विवेक, तो वह देख पाएगा कि यह कुछ भिन्न चीज़ है।

व्यक्ति को समझना होगा कि इसके लिए किसी को विवश नहीं किया जा सकता कि आप आत्म-साक्षात्कार ले लें, इसी प्रकार से आप मुझे भी आत्म- साक्षात्कार देने के लिए मजबूर नहीं कर सकते क्योंकि इस प्रकार ये कार्यान्वित नहीं होगा, मजबूर करने पर यह कार्यान्वित होगा ही नहीं। यह ऐसी जीवन्त शक्ति है! ऐसा कहने पर लोग एकदम से परेशान हो जाते हैं। मुझे लगता है कि जिस प्रकार से पश्चिम में यह औद्योगिक क्रान्ति आई है उसके कारण लोगों की सूझ-बूझ समाप्त हो गई है। यहाँ आने वाले तथाकथित गुरुओं के कारण भी लोग भ्रमित हो गए हैं। ये गुरु लोग इन्हें भ्रमित कर रहे हैं और रोज़ उल्टी-सीधी चीज़ें आ रही हैं। लोगों की समझ में नहीं आता कि कहाँ जाएं!

जब तक आप पूर्ण उत्क्रान्ति को नहीं पा लेते, जब तक आप अपने विवेक की उच्चतम अवस्था तक नहीं पहुँच जाते तब तक अव्यवस्था बनी रहेगी।

अत: व्यक्ति को उस अवस्था तक पहुँचने का प्रयत्न करना चाहिए। परन्तु ये बात भी समझ लेनी चाहिए कि पैसे से आप इसे प्राप्त नहीं कर सकते, प्रयत्नों द्वारा इसे नहीं पाया जा सकता। आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् लोग इतने सन्तुष्ट हो जाते हैं कि इसको भूल जाते हैं। परन्तु आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के बाद आपको जानना है कि किस प्रकार अन्य लोगों को आत्म-साक्षात्कार दें। जैसे ईसामसीह ने कहा है, "दीपक को जलाकर आप इसे मेज के नीचे नहीं रखते!"

होता क्या है कि मैं यद्यपि सौ लोगों को आत्म-साक्षात्कार देती हूँ फिर भी उनमें से केवल पाँच-छ: लोग ही हमारी सहायता के लिए आगे आते हैं। इसके बावजूद भी मुझे कहना पड़ेगा कि काफी कार्य हुआ है, विशेष रूप से आस्ट्रिया में। मुझे आस्ट्रिया पर गर्व है, उन्होंने कभी मुझे परेशान नहीं किया, कभी भी नहीं। आस्ट्रिया से बहुत से अच्छे लोग आए हैं - अत्यन्त सन्तुलित मस्तिष्क के लोग-अत्यन्त सन्तुलित।

वे अतिवादी नहीं है, अति में वे नहीं जाते। यही कारण है कि उनमें धर्मान्धिता नहीं है। वे विवेकशील लोग हैं। सौभाग्य की बात थी कि आस्ट्रिया हमें मिल गया। मैंने कभी आशा न की थी कि आस्ट्रिया में इतने लोग सहजयोग को अपनाएंगे। जो भी हो, जैसे पानी अपना स्तर खोज लेता है वैसे ही सहजयोग भी अपना स्तर पा लेता है। हम लोग आस्ट्रिया पहुँच गए। नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, फिनलैण्ड में हम नहीं गए। अपने पति की नौकरी के कारण मैंने ये देश देखें हैं परन्तु वहाँ मैं....।

आस्ट्रेलिया में अब हमारे सोलह केन्द्र हैं। आस्ट्रेलिया सहजयोग का अत्यन्त विकासशील देश है। अब वहाँ पर हमारे स्कूल भी हैं। इन स्कूलों के अध्यापक अत्यन्त सदाचारी एवं दृष्टा हैं। बच्चों की वे बहुत अच्छी तरह से देखभाल करते हैं। सरकार ने इसके बारे में जानने के लिए अपने प्रतिनिधि वहाँ भेजे थे। उन्होंने आकर बताया कि जिस बात का ये दावा करते हैं उसी की अभिव्यक्ति करते हैं। उन्होंने हमें बहुत अच्छे प्रमाण पत्र दिए हैं।

परन्तु बाह्य जीवन में महानतम उपलब्धि जो हमें मिली है वो ये है कि कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने अत्यन्त सम्मानपूर्वक सहजयोग को शोध के लिए स्वीकार किया है। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में सहजयोग पर शोध करने वाले श्री ली (Lee) पहले से ही डॉक्टर हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय में भी ये महान कार्य हुआ है क्योंकि दिल्ली विश्वविद्यालय ने भी अनुमति दी है कि कोई डॉक्टर इस पर पी.एच.डी. की उपाधि पाने के लिए शोध कर सकता है। या हम कह सकते हैं कि सहजयोग पर शोध पूर्ण करके व्यक्ति भेषज-विद् (Doctor of Medicine) की उच्चतम उपाधि पा सकता है। हो सकता है कुछ समय बाद वे किसी भी व्यक्ति को इस पर शोध करने की आज्ञा दे दें। यह तो इसका चिकित्सकीय पक्ष ही लिया गया है।

कृषि के क्षेत्र में भी हमने बहुत से शोध किए है। यहाँ पर एक व्यक्ति है जो कृषि विशेषज्ञ है। आत्म-साक्षात्कार पाने के पश्चात् उन्होंने चैतन्य लहरियों से बहुत-सा शोध किया है। जल को चैतन्यित करके यदि आप पौधों को सींचें तो थोड़े से समय में ही आपको दस गुनी फसल प्राप्त हो सकती है। यह कार्य भारत में हुआ है, भारत के एक कृषि विश्वविद्यालय में। इन लोगों ने पाया कि एक सर्वसाधारण पौधे और चैतन्यित जल से सींचे जाने वाले पौधे के विकास में बड़ा भारी अन्तर होता है।

कृषि के क्षेत्र में एक अन्य परिणाम जो मैंने देखा है वो ये है कि यदि आप चैतन्य दें तो सर्वसाधारण गाय भी बहुत-सा दूध देगी। परन्तु आपके पास यदि दोगली नस्ल की गायें हैं तो इनका दूध मस्तिष्क के लिए अच्छा नहीं होता क्योंकि दोगले पशुओं (Hybrid) का दूध पीने वाले भी दोगले हो जाते हैं। मेरा अभिप्राय ये है कि उनका मस्तिष्क अस्थिर (Wobbly) हो जाता है। अतः बेहतर ये होगा कि ऐसी गाय का दूध पिया जाए जिस पर ये प्रयोग न किए गए हों।

खाद्य पदार्थों के बारे में भी ऐसा ही है, दोगले नस्ल के खाद्य पदार्थ हमारे लिए हितकर नहीं होते, क्योंकि, मेरे विचार से ये हमारे स्नायुतन्त्र को हानि पहुँचाते हैं। परन्तु सर्वसाधारण बीज़ों का उपयोग भी आप नहीं कर सकते क्योंकि वो दुर्बल हो चुके हैं और उनसे अच्छी फसल नहीं मिल सकती। इन देसी बीज़ों को यदि हम चैतन्यित कर लें तो इनसे बहुत अच्छी फसल होती है, कभी-कभी तो दोगले बीज़ों के बराबर फसल होती है जिसका स्वाद भी अच्छा होता है और इससे मनुष्य को किसी प्रकार की समस्याएँ भी नहीं होतीं।

भारत के कृषि के क्षेत्र में इससे बहुत सहायता मिल सकती है। सरकार ने हमें बहुत सारी ज़मीन पट्टे पर दी है जहाँ हम कृषि के क्षेत्र में प्रयोग करेंगे और निष्कर्ष निकालेंगे कि चैतन्य

लहरियों को किस प्रकार उपयोग किया जाए। कुछ सहजयोगी किसानों ने बहुत बड़ा कार्य किया है। उन्होंने खोज निकाला है कि चैतन्य लहरियों का पशुओं तथा खेती पर कितना अच्छा प्रभाव पड़ता है।

तो इससे लोगों के जीवन में सुधार आता है। इसका एक और पक्ष भी है-सामाजिक पक्ष। मैं आपको बता सकती हूँ कि हमारे यहाँ सामूहिक विवाह भी होते हैं - अन्तर्राष्ट्रीय विवाह। सहजयोगियों के बीच हम अन्तर्राष्ट्रीय विवाह करवाते हैं। उन्हें एक दूसरे को समझना होता है और विवाह से पूर्व वे हमारे डेढ़ महीने के देश भ्रमण कार्यक्रम के दौरान साथ-साथ होते हैं।

वे एक-दूसरे से मिल सकते हैं तत्पश्चात् उनकी सहमति से विवाह का निर्णय किया जाता है और हमने देखा है कि ऐसे विवाह अत्यन्त सफल होते हैं। 99वें प्रतिशत विवाह सफल होते हैं। कभी-कभार हो सकता है कि कुछ गड़बड़ हो तो हमें तलाक पर कोई एतराज़ नहीं होता। कभी यदि किसी विवाह में गड़बड़ हो, परन्तु प्राय: शादियाँ टूटती नहीं। कभी यदि किसी विवाह में गड़बड़ हो तो हमें तलाक पर कोई एतराज़ नहीं होता।

अधिकतर विवाह सफल होते हैं और इनसे उन्हें बहुत विवेकशील बच्चे प्राप्त होते हैं जोकि अधिकतर जन्मजात साक्षात्कारी होते हैं। अत: समस्याएं बहुत कम हैं और पारिवारिक जीवन सुधरता है। सहजयोगियों के जीवन की गुणवत्ता हजारों गुणा बेहतर होती है। लोग अत्यन्त आनन्दमय और प्रसन्नचित्त होते हैं। बिना किसी शिकायत के वे जीवन का आनन्द लेते हैं और वही आनन्द अन्य लोगों में भी बाँटते हैं।

साक्षात्कारकर्ता : *आपके विचार से बच्चों की शिक्षा के लिए कौन सी बातें महत्वपूर्ण हैं? बच्चों को कौन-सी चीज़ दी जानी आवश्यक है?*

श्रीमाताजी : *सर्वप्रथम यदि वे आत्म-साक्षात्कार ले लें। बच्चे यदि जन्म से आत्म-साक्षात्कारी हैं फिर तो कोई समस्या है ही नहीं। परन्तु यदि उन्हें आत्म- साक्षात्कार दे दिया गया है केवल तभी वे चीज़ों को भिन्न स्तर से देखने लगेंगे। वे आत्मा बन जाते हैं। उनका आत्म-सम्मान जाग जाता है। ऐसे बच्चे अत्यन्त गरिमा पूर्वक व्यवहार करते हैं। वे अत्यन्त बड़प्पन पूर्वक बातचीत करते हैं, सभी समस्याओं के सामधान खोजते हैं और अत्यन्त गौरवशाली व्यक्ति बन जाते हैं। परन्तु अपने आचरण से हमें उनका पथ प्रदर्शन करना होगा।*

हम कैसा आचरण करते हैं? हमारा आचरण बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे अचारण के अनुरूप ही बच्चों की परवरिश होती है। बच्चों के विषय में जानने के लिए हम उनकी कुछ परिक्षाएं लेते हैं। हम पता लगाते हैं कि यदि उनमें कोई शारीरिक समस्याएं हैं तो हम उनका निवारण करते हैं। बच्चों की मानसिक समस्याओं को भी हम दूर करते हैं। किसी भी अन्य प्रकार की समस्या, सामाजिक या कोई अन्य समस्या यदि उन्हें हो तो उससे भी उन्हें मुक्ति दिलाने का हम प्रयत्न करते हैं। मूलत: यदि बचपन में ही व्यक्ति ठीक होगा तो बच्चे का आधार ठीक हो जाएगा।

नींव यदि अच्छी बनाई गई हो तो बच्चों की उच्चतम गुणवत्ता बनाने में कोई कठिनाई न

होगी। हम देखते हैं कि यहाँ पर कुछ महान कलाकार हैं, महान संगीतज्ञ हैं, बहुत ही छोटी आयु में वे वायलिन बजाने लगे हैं। कहने से अभिप्राय ये है कि अचानक वे अत्यन्त विनम्र एवं गतिशील बन गए हैं। वे अत्यन्त विनम्र हैं आत्म–सम्मान से परिपूर्ण हैं और सदाचारी हैं।

जिस तरह का वातावरण है और जिस प्रकार ये कार्य करता है उससे आश्चर्य होता है। उस दिन जब एक महिला ने मुझसे महिलाओं के विषय में पूछा, तो मैंने उसे बताया कि महिला की मातृ–शक्ति अत्यन्त महान होती है। इस बात से उसे चोट पहुँची परन्तु मेरा अभिप्राय ये नहीं है कि आप को केवल माँ ही होना चहिए। वह एक माँ है, का अर्थ ये है कि वह करुणामयी है, दयालु है, पुरुषों की तरह से उग्र नहीं है। महिला के अन्दर यह बहुत बड़ा गुण है, बहुत बड़ी शक्ति है। मैं इसका मशवरा दे रही थी कि हमें ऐसा ही बनना है। हमें पुरुषों से मुकाबला नहीं करना। ऐसा करना तो पागलपन है – पुरुषों से मुकाबला करना और उन्हीं की तरह से व्यवहार करना।

अतः हमें समझना है कि जीवन आनन्द उठाने के योग्य है। जीवन आशीर्वाद होना चाहिए, कष्ट नहीं। मानसिक द्वन्दों के कारण उत्पन्न हुए व्यर्थ विचारों के कारण हम अपने लिए कष्टों का सृजन करते हैं। हमारा मस्तिष्क प्रक्षेपणों तथा अपने ही दुराग्रहों से परिपूर्ण है। यदि आप सहजयोग अपना लें तो ये सारी चीज़ें ठीक हो सकती हैं क्योंकि सहजयोग में आकर आप सन्तुलित व्यक्ति बन जाते हैं, विनम्र हो जाते हैं, आपका मस्तिष्क स्थिर हो जाता है और आप साक्षी (Witness) *बन जाते हैं। सभी कुछ आपके लिए तमाशा बन जाता है, नाटक सम हो जाता है और निर्भीक बनकर हर चीज़ को आप साक्षी भाव से देखने लगते हैं। मनुष्य ने यही उपलब्धि प्राप्त करनी हैं।*

हम शान्ति की बात करते हैं, कहते हैं कि कोई युद्ध न हो, एटम बम आदि आदि बहुत सी अन्य चीज़ों के बारे में बातचीत करते हैं। ये सब कार्यान्वित नहीं होने वाला। केवल मानव के अन्तरपरिवर्तन से ही कार्य होगा। मानव का यदि अन्तरपरिवर्तन हो जाए तो सभी कुछ बिल्कुल ठीक हो जाएगा। केवल इतना ही नहीं, मनुष्य जीवन के आशीर्वाद का आनन्द भी उठा सकेगा।

हम सच्चाई से दूर जा रहे हैं। मानव का ये कहना अत्यन्त आवश्यक है कि "इन सब चीज़ों से मैंने क्या प्राप्त किया?" क्षण भर के लिए रुक कर सोचना आवश्यक है।

साक्षात्कारकर्ता : *रोग के क्या कारण हैं?*

श्रीमाताजी : *सभी प्रकार के रोगों – शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक का कारण हमारे अन्तःस्थित असन्तुलन हैं, हमारा उग्र आचरण जैसे कैंसर रोग। अनुकम्पी नाड़ी प्रणाली की बहुत अधिक गतिशीलता के कारण कैंसर रोग पनपता है। मान लो कोई व्यक्ति अत्यन्त उदास है, रोता चिल्लाता है, हर समय स्वयं को दोषी मानता है और सोचता है कि पृथ्वी पर वही निकृष्टतम व्यक्ति है, उसने बहुत से पाप किए हैं और सभी बेवकूफियाँ की हैं। तो वह बाईं ओर को (निराशा में) चला जाता है और सहजयोग के अनुसार वह सामूहिक अवचेतन क्षेत्र*

(Collective Subconscious) *में चला जाता है। विज्ञान के अनुसार प्रोटीन 58 और प्रोटीन 52 में।*

डॉक्टर इसका वर्णन प्रोटीन के रूप में करते हैं परन्तु हम इन्हें मृत आत्माओं का क्षेत्र कहते हैं। सामूहिक अवचेतन क्षेत्र में मृत आत्माएं होती हैं जो ऐसे व्यक्ति को अपनी पकड़ में ले लेती है और कैंसर रोग की शुरुआत करती हैं। परन्तु किसी तरह से यदि आप अपने चित्त को सामूहिक अवचेतन क्षेत्र से हटाकर मध्य में ले आएं तो आप रोग मुक्त हो जाते हैं। हमारे अन्तःस्थित मूलतः सात अत्यन्त सूक्ष्म चक्र हैं। वैसे तो बहुत से सूक्ष्म चक्र हैं परन्तु मूलतः ये सात हैं। इन चक्रों को यदि आप ठीक कर लें तो किसी भी तरह की बीमारी या रोग आपको नहीं हो सकता।

साक्षात्कारकर्ता : *क्या आप इसकी व्याख्या कर सकते हैं? आपने कहा कि आपके माता-पिता ने पढ़ाई-लिखाई तथा खोज में आपकी बहुत सहायता की। क्या ये बात ठीक है?*

श्रीमाताजी : *हाँ निःसन्देह।*

साक्षात्कारकर्ता : *क्या माता-पिता का बच्चे की इस प्रकार सहायता करना सामान्य बात है?*

श्रीमाताजी : *भारत में सभी माता-पिता बच्चों को हर प्रकार से सहायता देते हैं।*

साक्षात्कारकर्ता : *और इच्छानुसार आप सभी कुछ सीख सकते हैं?*

श्रीमाताजी : *हाँ, हाँ, ये बात सत्य है। मूल बात तो ये है कि भारतीय माता-पिता बच्चों के प्रति अत्यन्त हितैषी हैं एवं करुणामय। उनके लिए बच्चे की शिक्षा-दीक्षा उसका लालन-पालन और जीवन अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। बच्चा जानता है कि उसके माता-पिता ऐसे है इसलिए बच्चे उन पर निर्भर करते हैं। माता-पिता बच्चों की देखभाल करते हैं क्योंकि वे अत्यन्त विवेकशील होते हैं। बच्चों के लिए वे सभी कुछ कुर्बान कर देते हैं। माता-पिता जो भी कुछ कहते हैं हमें वह बात अच्छी लगती है और ऐसा करके अभी तक तो हमें कोई हानि नहीं हुई। भारत में बच्चे बहुत आज्ञाकारी, बहुत सदाचारी होते हैं। उन्हें सम्भालने में हमें कोई समस्या नहीं होती।*

किशोरावस्था की समस्याएँ, समलैंगिकता, हम तो इन समस्याओं के बारे में जानते ही नहीं हैं। भारतीय बच्चों का माता-पिता के साथ बहुत सानिध्य होता है। माता-पिता हर समय बच्चों की देखभाल करते हैं। अतः बच्चों में नशे आदि लेने की समस्या नहीं है। ऐसी कोई समस्या नहीं है। शहरों में कभी थोड़ी बहुत समस्या होती है परन्तु इस पर भी नियंत्रण कर लिया जाता है, क्योंकि माता-पिता हमेशा बच्चों के साथ होते हैं। वे एक साथ रहते हैं। पूरा परिवार मिलकर रहता है।

केवल माता-पिता के साथ ही नहीं, सभी सम्बन्धी, गाँवों तथा शहरों में सभी रिश्तेदार एक-दूसरे को जानते हैं। हमारे यहाँ इतनी आनन्ददायी प्रणाली है कि प्रायः हम डाँवाडोल नहीं

होते, गलत मार्ग और तौर-तरीके नहीं अपनाते और न ही दुराग्रही बनते हैं।

साक्षात्कारकर्ता : *परन्तु आपका पालन पोषण ईसाई परिवार में हुआ। भारत में ईसाई होना सामान्य स्थिति नहीं है।*

श्रीमाताजी : *हाँ मैं जानती हूँ। मैंने जान बूझकर ईसाई परिवार में जन्म लिया क्योंकि मैं सोचती हूँ कि प्रोटेस्टेंट लोग सबसे बड़े धर्मान्ध हैं। वे अत्यन्त कृत्रिम हैं और मानसिक रूप से अत्यन्त कट्टर। उनकी असलियत कोई नहीं समझ सकता। वे अत्यन्त धर्मान्ध हैं। धर्मान्धता उनमें कूट-कूटकर भरी हुई है। परन्तु उन दिनों में लोग बड़े प्रबुद्ध थे और उन्होंने ईसामसीह को भली-भाँति समझा।*

वे कहते हैं, मैंने आपको पॉल (Paul) के बारे में बताया था.... पहली बार जब मैंने अपने हाथों में बाइबल ली तो अपने पिताजी से पूछा, ''ये पॉल कौन हैं?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''ये घुसपैठिया है, इस पर बिल्कुल विश्वास मत करो।'' उन्होंने इन सभी चीज़ों को बहुत अच्छी तरह से समझा था क्योंकि खलील जिब्राँ की तरह से मेरे पिता जी भी आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति थे। आप यदि खलील जिब्राँ को पढ़ेंगे तो वे भी पॉल के विषय में यही बात कहते थे। यदि आप आत्म-साक्षात्कारी हैं तो एकदम से चीज़ों के सार को समझ जाते हैं। आप चाहे किसी भी धर्म में उत्पन्न हुए हों, किसी अन्य धर्म को आप नकारते नहीं। अन्य धर्मों के बारे में जब समझने का प्रयत्न करते हैं तब आपको पता चलता है कि सभी धर्मों का सार एक है।

धर्म के विषय में लड़ने के लिए क्या है? इस प्रकार आप जान जाते हैं कि आप किसी भी धर्म विशेष से सम्बन्धित नहीं हैं, सभी धर्मों से जुड़े हुए हैं। मेरे माता-पिता प्रबुद्ध लोग थे। ये बात मैं अवश्य कहूँगी, और उन्हें माता-पिता के रूप में चुनकर मैं अत्यन्त भाग्यशाली थी।

साक्षात्कारकर्ता : *आप भी साक्षात्कारी बालिका थीं क्या ये बात ठीक है?*

श्रीमाताजी : *हाँ, मैंने साक्षात्कारी बालक के रूप में ही जन्म लिया।*

साक्षात्कारकर्ता : *कभी-कभी क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि आप बहुत अकेली हैं क्योंकि सभी लोग आपसे बिल्कुल भिन्न हैं?*

श्रीमाताजी : *नहीं, नहीं। आप यदि लोगों के साथ अपने प्रेम को बाँटना जानते हैं तो आप कभी अकेले नहीं हैं। वास्तव में अपने शैशव काल से ही मैं सबकी माँ सम थी। मेरे माता-पिता जब जेल गए तो मैं लगभग साढ़े पाँच वर्ष की थी। सारे परिवार की जिम्मेदारियाँ मुझ पर आ पड़ीं और नन्हा सा फ्रॉक पहनकर दादी माँ की तरह से मैं सारी जिम्मेदारियाँ निभाया करती थी। मैं कभी खोई नहीं। स्वभावानुसार मेरा पूरा जीवन अत्यन्त सामूहिक है। मैं अत्यन्त सामूहिक हूँ, कहीं भी रह सकती हूँ, कहीं भी सो सकती हूँ, मैं जंगलों में भी रह सकती हूँ।*

अपने स्वभाव की अभिव्यक्ति मैं बचपन से कर रही हूँ। जहाँ हम रहते थे उस क्षेत्र के लोगों से मेरा बहुत प्रेम था। मेरी माताजी को निर्मला की माँ के रूप में पहचाना जाता था और

पिताजी को निर्मला के पिताजी के रूप में। अत: वे कहने लगे, ''इस लड़की के कारण हमने अपनी पहचान खो दी है।''

तो मैं अत्यन्त मित्र स्वभाव की थी, कभी मुझे अकेलापन महसूस नहीं हुआ। मैं जब केवल अपने साथ होती हूँ तब तो बिल्कुल अकेली नहीं होती। मैं अपना अत्यन्त आनन्द उठाती हूँ।

साक्षात्कारकर्ता : *गाँधी जी के साथ आप आश्रम में रही हैं। वहाँ पर आप पर कैसा प्रभाव पड़ा? क्या आपको गाँधीजी की याद है?*

श्रीमाताजी : *ओह! गाँधी जी बहुत कमाल के व्यक्ति थे। मैं उनसे बहुत कुछ सीखती थी। उनका एक विशेष गुण यह था कि वे पाखण्डी बिल्कुल न थे और न ही वे राजनेताओं की तरह से थे। जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। वे स्पष्ट वक्ता थे और हमेशा स्वयं को परीक्षा में डाले रखते थे। यदि कभी वे कोई गलती करते तो तुरन्त अपनी गलती को स्वीकार कर लेते थे। मैं जब बालिका थी, उस समय की एक महान घटना मुझे याद है। एक मीटिंग चल रही थी और हम लड़कियाँ, लोगों को पानी आदि देने के लिए वहाँ बैठी हुई थीं। जवाहरलाल नेहरु, और मौलाना आजाद जैसे लोग वहाँ पर थे। ये सभी लोग वहाँ बैठे हुए थे। किसी बात के बारे में सोच रहे थे कि अचानक महात्मा गाँधी बोल उठे, मुझे आने में देर हुई, आज हम दोपहर का भोजन यहीं करेंगे।" सभी कहने लगे, "हाँ हम भोजन यहीं करेंगे।"*

उन्हें अतिथि गृह में जाना था जो बहुत दूर था। तब महात्मा गाँधी ने बा के विषय में पूछा, वे जा चुकी थीं। वो उठे, भण्डार गृह की चाबी हमेशा उनके पास हुआ करती थी। उन्होंने भण्डार गृह खोला और रसोई के जिम्मेदार व्यक्तियों को उपस्थित लोगों की संख्या अनुसार ठीक से सामान नापने के लिए कहा। उन्होंने सारी चीज़ें नाप-तोल लीं। सभी कुछ हो गया।

चाबी उन्होंने वापिस ले ली और जाकर आराम से बैठ गए। इन लोगों ने कहा, "बापू, हम नहीं जानते थे कि आपको इतना कष्ट उठाना पड़ेगा। इतनी दूर जाकर उन्हें खोजने का, हालांकि अधिक समय न लगा था केवल पन्द्रह मिनट लगे थे। तो उन्होंने कहा, "आप क्या सोचते हैं?" ये मेरे भारत का रक्त है, मैं इसे बर्बाद करने की आज्ञा नहीं दे सकता।

(साक्षात्कार लेबेन्सबिल्डर, विएना, आस्ट्रिया, 9 जुलाई 1985)

परम पूज्य माताजी
श्री निर्मला देवी से एक साक्षात्कार

हाँगकाँग–1992

"ये फूल सुगन्ध बिखेर रहे हैं, क्या ये गिनती करते हैं कि इन्होंने कितने लोगों को सुगन्ध प्रदान की? जो भी आएगा इनसे सुगन्ध लेगा। इनका काम सुगन्ध देना है। सो वो सुगन्ध दे रहे हैं। बहुत सहज बात है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, हाँग-काँग, 1992)

साक्षात्कारकर्ता : *श्रीमाताजी, आपके विषय में जो भी मैंने पढ़ा है उसके अनुसार भारत में आपका जन्म ईसाई परिवार में हुआ। ये कैसे हुआ?*

श्रीमाताजी : *मैं ईसाई ही उत्पन्न हुई थी, बस।*

साक्षात्कारकर्ता : *उस देश में ईसाई परिवारों की संख्या बहुत अधिक तो नहीं हो सकती।*

श्रीमाताजी : *वहाँ बहुत से ईसाई हैं और मैं तो जन्म से ईसाई हूँ।*

साक्षात्कारकर्ता : *भारत के कौन-से भाग से आपका सम्बन्ध है?*

श्रीमाताजी : *भारत का ठीक मध्य, पूरी तरह से भारत के मध्य।*

साक्षात्कारकर्ता : *क्या इस मध्य बिन्दु की कोई विशेषता है?*

श्रीमाताजी : *ये मध्य बिन्दु है क्योंकि कार्य करने के लिए मेरा मध्य में होना आवश्यक है। इसीलिए मैंने मध्य-भारत में जन्म लिया।*

साक्षात्कारकर्ता : *जब आप शिशु थीं तो भी क्या आपके जीवन में मध्य-भारत में उत्पन्न होने का कोई अर्थ था?*

श्रीमाताजी : *मैं नहीं जानती थी कि ये मध्य बिन्दु है या इसके विषय में कोई खोज भी की जानी है, मैं तो मात्र इतना जानती थी कि मैं क्या हूँ और मेरा लक्ष्य क्या है। मैं जानती थी कि मुझे उपयुक्त स्थान पर ही जन्म लेना था। ये सारी बातें मैंने स्वीकृत रूप से ले लीं। मुझे पता था कि ऐसा होना ही है। ये बात मैं भली-भाँति जानती थी।*

साक्षात्कारकर्ता : *जब आपको अपने लक्ष्य का पता चला तब आप कितने वर्ष की थीं?*

श्रीमाताजी : *अपना पूरा जीवन। जैसे आप जानते हैं कि आप मानव हैं, इसी प्रकार से, मैं भी जानती थी कि मुझे ये सारा कार्य करना है। मैं जानती थी कि मैं बिल्कुल भिन्न हूँ।*

साक्षात्कारकर्ता : *तो क्या आपने तभी से अपना लक्ष्य पूरा करना आरम्भ कर दिया था? क्या आपको याद है?*

श्रीमाताजी : *निःसन्देह। मैं जानती थी कि मेरे अन्दर लोगों को रोग मुक्त करने की शक्तियाँ हैं, स्वस्थ करने की शक्तियाँ हैं। मैं जानती थी कि मैं कुण्डलिनी उठा सकती हूँ। ये सब बातें मैं जानती थी। परन्तु मैं ये भी जानती थी कि मानव की समस्याओं, क्रम परिवर्तन और संयोजन* (Permutations and Combinations) *के विषय में भी मुझे कुछ करना है, इस प्रकार मैंने उसका अध्ययन किया। मैं ऐसा उपयुक्त समय खोजना चाहती थी जब साक्षात्कार की सामूहिक घटना घटित हो सकती। और 5 मई को जब मैं समुद्र के समीप बैठी हुई थी तो मैंने निर्णय किया ये घटना घटित हो जानी चाहिए। और ये कार्यान्वित हुआ। तालू क्षेत्र जिसे हम अन्तिम चक्र भी कहते हैं और जहाँ परमात्मा से योग पाने का स्थान है, बाइबल*

में जिसे हम बपतिज्म कहते हैं, यह चक्र खुल गया। आम लोग जो बपतिज्म प्राप्त करते हैं वो मात्र कर्मकाण्ड होता है। असली बपतिज्म तब होता है जब हमारे अन्दर अवशिष्ट दिव्य शक्ति, कुण्डलिनी, उठती है और तालू अस्थि का भेदन करती है। बाल्यकाल में ये अस्थि अत्यन्त कोमल होती है, वह समय सच्चे बपतिज्म का है और यही बपतिज्म प्राप्त किया जाना है।

परन्तु मैं एक ऐसा मार्ग बनाना चाहती थी जिससे हम ये उपलब्धि सामूहिक रूप से प्राप्त कर सकें क्योंकि यदि किसी एक व्यक्ति के साथ ये घटना घटती जैसे मान लो ईसामसीह एक साक्षात्कारी व्यक्ति थे और महान अवतरण थे और निःसन्देह वे परमात्मा के पुत्र थे, परन्तु किसी ने भी उन्हें पहचाना नहीं। और जब उन्होंने ये बात समझानी चाही तो उनकी उच्च अवस्था के कारण लोग उनकी बात को न समझ पाए कि वो क्या देख रहे थे और किस चीज़ के बारे में बात कर रहे थे। अन्ततः उस उच्च अवस्था के अवतरण को सूली पर चढ़ा दिया गया। ये बहुत गलत कार्य था। वे तो एक अवतरण थे।

साक्षात्कारकर्ता : *तो ये घटना 5 मई को हुई, कौन-से वर्ष में?*

श्रीमाताजी : *वर्ष 1970 में।*

साक्षात्कारकर्ता : *आइए आपके बचपन में लौट चलें। क्या आपके पालन-पोषण में कुछ ऐसा विशेष किया गया जिसने आपको इस ओर प्रोत्साहित किया हो?*

श्रीमाताजी : *बहुत अधिक। मैं बहुत पहले से जानती थी कि मेरी माँ ने ही मुझे गर्भ में धारण करना है। उन लोगों ने मुझे बहुत सी बातें बताई कि मेरी माँ के साथ क्या-क्या घटित हुआ। परन्तु मुख्य बात जो अब मुझे याद है वो ये है कि जब उनका गर्भ आठ महीने का था तो उनके मन में शेर देखने की इच्छा हुई। मेरे पिताजी ने कहा ये बड़ी अजीब बात है कि गर्भ की इस परिपक्व अवस्था में भी तुम शेर देखना चाहती हो!*

परन्तु वो कहने लगीं कि मुझे जाकर शेर देखना ही है। उन दिनों में मेरे पिताजी अत्यन्त प्रसिद्ध शिकारी थे। वहाँ के एक राजा ने उन्हें संदेश भिजवाया कि जंगल में शायद एक मानवभक्षी शेर है। अतः हमारी इच्छा है कि आप आकर उसे मारने में हमारी सहायता करें। देखो अभी मुझे संदेश मिला है और अब मुझे जाना होगा। मेरी माताजी ने कहा, कि आपने यदि जाना है तो मैं भी तुम्हारे साथ आऊंगी।

इस अवस्था में तुम कैसे आओगी? नहीं, मैं शेर को चलते हुए देखना चाहती हूँ, तब वे भी मेरे पिताजी के साथ गईं। भारत में शिकार करने के लिए पेड़ पर मचान बना दिया जाता है और तब ग्रामीण लोग जंगली पशु को शिकारी के उस मचान की तरफ खदेड़ते हुए ले आते हैं। मेरे माता-पिता उस मचान पर बैठे हुए थे कि अचानक एक विशाल शेर नज़र आया। मेरे पिताजी ने बताया कि इतना विशाल शेर इससे पूर्व उन्होंने कभी नहीं देखा था। चाँदनी रात में चुपके-चुपके अत्यन्त शान से चलता हुआ वह उनकी ओर आ रहा था। मेरी माँ मुग्ध होकर

एकटक शेर को देख रही थीं। वो इतनी प्रसन्न थीं मानों उनके बच्चे ने शेर को देखा हो। वो इतनी प्रसन्न थीं! मेरे पिताजी ने जब शेर को मारना चाहा तो मेरी माँ कहने लगी कि तुम यदि शेर को मारोगे तो मैं यहाँ से कूद पडूंगी। तुम इस शेर को नहीं मारोगे। इसके बाद वह शेर गायब हो गया, कोई नहीं जानता कि वह कहाँ गया? तो मेरे पिताजी जानते थे कि उनकी पत्नी की कोख से कोई शक्तिशाली व्यक्तित्व जन्म लेने वाला है। साक्षात्कारी होने के कारण वे जानते थे कि उनके घर जन्म लेने वाला बच्चा कुछ विशेष होगा।

साक्षात्कारकर्ता : *जब आप बालिका थीं तब क्या हुआ? क्या उन्होंने आपको विशेष मानकर कुछ विशेष शिक्षा दी जिससे लक्ष्य प्राप्ति में आपको सहायता मिलती?*

श्रीमाताजी : *नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। ये तो व्यक्तित्व की अत्यन्त स्वतंत्र अभिव्यक्ति थी। लोगों ने इसे स्वीकार किया। मैं अत्यन्त प्रेममय, दयालु एवं उदार थी। बालक के रूप में मैं अद्वितीय थी, परन्तु बिल्कुल भिन्न प्रकार की। परन्तु मैं ये कहना चाहूँगी मेरे पिताजी ने मुझे बहुत अच्छी तरह से समझा क्योंकि वे आत्म-साक्षात्कारी व्यक्ति थे। जब मैं बड़ी हुई तो उन्होंने मुझसे कहा कि इसके बारे में किसी से बात करने का कोई लाभ नहीं है। सर्वप्रथम कोई ऐसा मार्ग खोजो जिससे सामूहिक आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो सके। यही तुम्हारा कार्य है। जब तक तुम ये मार्ग नहीं खोज लेती, इसके विषय में बात करने का कोई लाभ नहीं। लोग एक अन्य कुरान या बाइबल बना लेंगे, उसका क्या लाभ है? जब तक तुम उन्हें अनुभव नहीं करा देती, वो इस बात को नहीं समझेंगे।*

साक्षात्कारकर्ता : *महात्मा गाँधी के साथ मिलकर भी क्या आपने अपने संदेश को बढ़ाने के विचार को जारी रखा?*

श्रीमाताजी : *नहीं, उस समय बात बिल्कुल भिन्न थी। आपातकाल था। इसमें भी मैंने थोड़ा-सा योगदान दिया। वे मुझे बहुत प्रेम करते थे और प्रेम से नेपाली बुलाया करते थे। मेरी चौड़ी मुखाकृति के कारण वे हमेशा मुझे नेपाली कहकर बुलाते थे। वो एक ऐसे व्यक्ति थे जो आपातकाल के लिए उत्पन्न हुए थे, ऐसे समय पर जब भारत राजनीतिक रूप से स्वतंत्र होना चाहता था।*

राजनीतिक नेता के लिए आवश्यक नहीं है कि वह आत्मा और धर्म की चिन्ता करे, परन्तु वे हमारे देश को योग भूमि मानते थे। उन्होंने लोगों के स्वभाव को अपने सिद्धान्तों अपने दर्शन एवं गतिविधियों का आधार बनाया। हम धार्मिक लोग हैं, और ये बात उनके मन में थी कि लोगों में सन्तोष का वातावरण किस प्रकार बनाया जाए। उन्होंने आत्म-साक्षात्कार की बात नहीं की। मैं जब सात वर्ष की थी तो मैं उनके इर्द-गिर्द खेला करती थी। वे मुझे बहुत पसन्द करते थे। मैं कभी उनके लिए संतरे का जूस बना लेती और वो मेरे साथ छोटी-छोटी चीज़ों के बारे में बात करते। एक दिन मैंने उनसे पूछा कि आप सब लोगों को प्रात: इतनी जल्दी जागने के लिए विवश क्यों करते हैं? आप यदि उठना चाहते हैं तो उठें, अन्य लोगों को आप क्यों इतनी जल्दी उठाते हैं? ये मेरे लिए तो ठीक है, परन्तु सभी को आप क्यों विवश करते हैं?

कहने लगे सभी को जल्दी उठना चाहिए। हम अत्यन्त कष्टकर समय से गुजर रहे हैं। हमें बर्तानिया से लड़कर स्वतन्त्रता प्राप्त करनी है। लोग यदि आलसी होंगे तो किस प्रकार हम ये कार्य कर पाएंगे? अतः हमें अनुशासित होना होगा, अनुशासन से सब ठीक हो जाएगा। जब मैंने उन्हें बताया कि हमारे अन्दर आन्तरिक अनुशासन होना चाहिए, मेरी इस बात से वे जान गए कि मैं विवेकशील व्यक्ति हूँ। पिता की तरह से वो मुझे प्रेम करते थे और मेरा सम्मान करते थे। वे मुझसे सभी समस्याओं के बारे में बात कर लेते थे। अपने बहुत से गुणों से उन्होंने मुझे प्रभावित किया। उनके अन्दर सम्मान भाव था। वह अपने प्रति अत्यन्त सत्यनिष्ठ थे। ये मुझे बहुत अच्छा लगता था। स्वयं को वे कभी धोखा नहीं देते थे। यह उनका महानतम गुण था। धन आदि सभी मामलों में वे अत्यन्त सच्चे थे। जो वह कहते थे वही करते थे। वे अपनी आलोचना किया करते थे। परन्तु उस समय आत्म-साक्षात्कार उनकी समस्या न थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शायद वे आत्म-साक्षात्कार के कार्य का बीड़ा उठाते। उस समय स्वतंत्रता ही प्रमुख समस्या थी। परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के विभाजन की समस्या खड़ी हो गई और सभी गलत चीज़ों की ओर पूरा चित्त केन्द्रित करना पड़ा। हमें इन सभी समस्याओं का समाधान खोजना था अतः उस समय किसी को भी आत्म-साक्षात्कार की सुध न थी। ऐसा होना भी चाहिए था।

साक्षात्कारकर्ता : *आपके सहजयोग विकास, आपकी सोच और आपकी तकनीक को महात्मा गाँधी ने कहाँ तक प्रभावित किया? इसके बारे में बताइए।*

श्रीमाताजी : *प्रभावित होने का तो कोई प्रश्न ही न था क्योंकि मैं तो एक भिन्न संसार की बात कर रही हूँ। सहजयोग आपको एक ऐसे साम्राज्य में ले जाता है जहाँ पर इन समस्याओं का कोई अस्तित्व ही नहीं होता। इन समस्याओं का समाधान परमेश्वरी शक्ति से होता है मानव की शक्ति से नहीं। परमेश्वरी शक्ति है और वह इतनी सुगमता से इन सभी समस्याओं का समाधान करती है कि मानव की शक्ति उपयोग करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। परन्तु मैं सोचती हूँ कि लोगों में सन्तुलन स्थापित करना उनका मुख्य योगदान था। लोगों का सन्तुलन मुख्य चीज़ थी तथा उनमें भारतीयता का भाव पैदा करना और दास प्रवृत्ति, जो हम लोगों में उत्पन्न हो गई थी, उसे हमारे अन्दर से निकालना ताकि हम आत्म- तिरस्कार भाव को महसूस कर सकें। परन्तु जिस साम्राज्य में मैं थी वह इससे बिल्कुल भिन्न था। अतः प्रभावित होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। फिर भी मैं कहूंगी कि मेरी इच्छानुरूप उनके कुछ गुणों ने मुझे प्रभावित किया, जैसे उनकी भिन्न प्रार्थनाएं जो चक्रों के अनुसार मैंने उन्हें बताई थीं। मैंने बताया कि आप ये प्रार्थना करो। वे कहने लगे, ''ठीक है, यह अच्छा विचार है।'' और उन्होंने अपनी शैली बदली। ये सारा कार्य इतनी शान्ति एवं मौन-पूर्वक हुआ कि किसी को पता भी न चल पाया कि हमारे अन्दर इन चीज़ों के विषय में इतना सामंजस्य है, और न ही उन्होंने कभी मुझसे आत्मा की बात की। कभी उन्होंने ध्यान-धारणा नहीं की क्योंकि वे आत्म-साक्षात्कारी नहीं थे। उस समय वे आत्म-साक्षात्कारी नहीं थे। उनका पूरा चित्त इसी चीज़ पर था। पुनर्जन्म*

लेकर वे आत्म-साक्षात्कार लेंगे। वे जन्मजात आत्म-साक्षात्कारी बनेंगे क्योंकि वे अत्यन्त-अत्यन्त महान थे। निःसन्देह वे महान आत्मा थे। मानव के रूप में वे बहुत महान थे। परन्तु आत्म-साक्षात्कार बिल्कुल भिन्न चीज़ है।

यह एक भिन्न साम्राज्य है जिसमें मानव प्रवेश करता है। उनकी ध्यान धारणा इन्हीं चीज़ों के बारे में सोचने और अपना पथ प्रदर्शन करने तक सीमित थी, उनका ध्यान ऐसा न था जिसमें व्यक्ति निर्विचार-चेतना की अवस्था में चला जाता है। मानव की चेतना में यह एक अलग आयाम है।

साक्षात्कारकर्ता : *क्या आत्म-साक्षात्कार का यही अर्थ है? जिसे आप आत्म-साक्षात्कारी कहती हैं?*

श्रीमाताजी : *हाँ, आत्म-साक्षात्कार का अर्थ है कि 'आत्मा' जिसके विषय में सभी धर्म ग्रन्थों में बताया गया है, हमारे चेतन मस्तिष्क में अपनी अभिव्यक्ति प्रसारित करने लगती है, अर्थात उस समय हम आत्मा के विषय में चेतन हो जाते हैं। हमारी मध्य नाड़ी प्रणाली इस सीमा तक आत्मा की शक्ति को रिकार्ड करने लगती है कि हम आत्मा के चैतन्य को शीतल लहरियों के रूप में महसूस करने लगते हैं। उन शीतल लहरियों को बाइबल में 'आदिशक्ति की शीतल लहरियाँ'* (Cool Breeze of the Holy Spirit) *कहा गया है।*

साक्षात्कारकर्ता : *तो आप कह रही हैं कि आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने पर मनुष्य को वास्तव में शारीरिक रूप में भी कुछ महसूस होता है?*

श्रीमाताजी : हाँ, अपने अन्दर प्रसारित होने वाली शक्ति को वह महसूस कर सकता है। यह शक्ति उसके शरीर से प्रसारित होती है। केवल इतना ही नहीं मनुष्य वह शक्ति बन जाता है। यह न तो भाषणबाजी है और न ही मस्तिष्क को पलटना (Brain Washing)। वास्तव में व्यक्ति सामूहिक चेतन (Collectively Conscious) हो जाता है। अर्थात अपनी चेतना में वह अपने तथा दूसरे व्यक्ति के चक्रों को महसूस करने लगता है और इन्हें ठीक भी करने लगता है।

साक्षात्कारकर्ता : *क्या ये वांछित उपलब्धि पाने जैसा है या जिसे लोगों ने स्थूल रूप से व्यक्ति की अन्तर-आत्मा* (Soul Inside One) *कहा है?*

श्रीमाताजी : *हाँ, परन्तु वे अत्यन्त भ्रमित लोग हैं। वो नहीं जानते कि जीवात्मा* (Soul) *क्या है और आत्मा* (Spirit) *क्या है। परन्तु ये सभी सूक्ष्म चीज़ें हैं।* **जीवात्मा (Soul) आत्मा (Spirit) होने के साथ-साथ शरीर भी है, व्यक्तित्व - जिसमें पृथ्वी तत्व नहीं है। हम पंच तत्वों से बने हैं, इनमें से जब पृथ्वी तत्व निकल जाता है तो जीवात्मा बन जाता है क्योंकि एक अन्य तल पर आपका अस्तित्व होते हुए भी आपको देखा नहीं जा सकता।**

साक्षात्कारकर्ता : *क्या इस कार्य का निर्णय करने से पहले, वास्तव में अपना कार्य शुरू करने से पहले, आपने चिकित्सा विज्ञान में भी कुछ शिक्षा ली?*

श्रीमाताजी : *हाँ, मैंने चिकित्सा विज्ञान पढ़ा क्योंकि मैं जानती थी कि मुझे चिकित्सकों से बात करके उन्हें समझाना होगा कि यह सब क्या है। परन्तु मैं नहीं जानती थी कि इसे किस नाम से बुलाया जाए क्योंकि नाम तो मनुष्य के दिए हुए हैं। अत: मुझे इसका अध्ययन करना पड़ा। मनोविज्ञान के एक शब्द कोष का भी मैंने अध्ययन किया, क्योंकि मैं ये भी जानती थी कि मुझे मनोवैज्ञानिकों, चिकित्सकों और वैज्ञानिकों से भी बात-चीत करनी होगी, क्योंकि उन लोगों का इस विषय को समझना बहुत महत्वपूर्ण है।*

साक्षात्कारकर्ता : *वैज्ञानिकों के मतानुसार मानव एक छोटे से कोषाणु से विकसित हुआ है, वो नहीं जानते ये कोषाणु कहाँ से आया। आपका इसके विषय में क्या विचार है?*

श्रीमाताजी : *ये सत्य है, ये सत्य है, एक कोषाणु से ही मानव विकसित हुआ, कोषाणु से ही मानव विकसित हुआ। वो कैसे विकसित हुआ? क्यों विकसित हुआ? उसके जीवन का क्या लक्ष्य है? विज्ञान के पास इसका कोई जवाब नहीं है। वो कौन-सी शक्ति है जो आपको विकसित करती है? इस बात का भी कोई उत्तर नहीं दिया गया। सहजयोग में आप यह सब जान जाते हैं, आप केवल विकसित ही नहीं होते, इस शक्ति से आप बहुत ऊचाईयाँ भी प्राप्त कर लेते हैं।*

साक्षात्कारकर्ता : *तो इसके बारे में आपका क्या सिद्धान्त है? हम यहाँ पर क्यों है, और इस प्रक्रिया में हम इतने लम्बे समय से क्यों है?*

श्रीमाताजी : *देखिए, जिस भी चीज़ का सृजन आप करते हैं, उदाहरण के रूप में मानव, आपने चीज़ों का सृजन किया है। हमारा बनाया गया सुन्दर लैम्प हमें प्रकाश देने के लिए होता है, क्या ऐसा नहीं है, शक्ति देने के लिए! तो परमात्मा ने भी हमारा सृजन इसी प्रकार किया है, अपनी शक्ति हमें देने के लिए ताकि हम उसे महसूस कर सकें, अपनी चेतना में उसे जान सकें, समझ सकें और उसकी शक्ति को प्रसारित कर सकें तथा इसका आनन्द लें। ईसामसीह के शब्दों में, "परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करना"* (To enter into the kingdom of God) *।*

साक्षात्कारकर्ता : *क्या आप भी उसी परमात्मा की बात कर रही हैं जिसके विषय में सभी धर्म करते हैं?*

श्रीमाताजी : *नि:सन्देह, और तो कुछ है ही नहीं।*

साक्षात्कारकर्ता : *क्या सहजयोग एक नए प्रकार का धर्म है।*

श्रीमाताजी : *नहीं, ये समन्वयन* (Integration) *है, यह वह प्रबुद्धता है जो सभी धर्मों को, सभी अवतरणों को और उनके समन्वयन को प्रमाणित करता है।*

साक्षात्कारकर्ता : *किस प्रकार यह प्रमाणित करता है?*

श्रीमाताजी : *जिस प्रकार आप देख सकते हैं कि कमरे में बहुत सी चीज़ें हैं। अन्धेरे में यदि आप इन्हें देखेंगे तो आपको ये कुछ भिन्न प्रतीत होंगी, आपको कुछ दिखाई देगी और किसी अन्य को कुछ और, परन्तु जब प्रकाश हो जाएगा तो सभी को एक सी ही दिखाई देंगी।*

सहजयोग आपको आत्मा का वह प्रकाश प्रदान करता है जिसके द्वारा आप देखने लगते हैं कि ये सब एक ही है। उदाहरण के रूप में, जब आपका योग आत्मा से हो जाता है तो आपके हाथों से शीतल लहरियाँ बहने लगती हैं। अब यदि आप पूछना चाहते हैं कि 'क्या परमात्मा हैं' तो तुरन्त आपको शीतल चैतन्य लहरियाँ महसूस होने लगती हैं। सभी प्रश्नों का इस प्रकार उत्तर मिलता है। आप चैतन्य महसूस करने लगते हैं और अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करते हैं। कभी यदि आपको कोई समस्या है, तो आप पूछ सकते हैं और इसके बारे में जान सकते हैं क्योंकि अब आपका योग 'पूर्ण' से हो गया है। ऐसे सभी प्रश्न आप पूछते हैं। अब आप आत्म साक्षात्कारी हैं, अपने हाथों पर ही आपको प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो जाते हैं और आप समझ जाते हैं कि यह सत्य है। कहते हैं कि ईसामसीह परमात्मा के पुत्र थे। परन्तु इस बात को लोग चुनौती देते हैं। इसका कारण मैं समझ सकती हूँ क्योंकि वो लोग सहजयोगी नहीं थे। अतः इस समय वे इस बात को न समझ सके। परन्तु साक्षात्कार पाने के पश्चात् आप केवल इतना पूछिए कि "क्या वे परमात्मा के पुत्र थे?" और आपके हाथों से चैतन्य प्रवाहित होने लगेगा। पूछने मात्र से आप जान सकेंगे कि सच्चा सन्त या पैगम्बर कौन है और बनावटी कौन है? इन चैतन्य लहरियों के माध्यम से आप सभी कुछ जान सकते हैं क्योंकि अब आपका योग हो गया है और सम्पर्क स्थापित हो गया है। जैसे यह माइक्रोफोन अपने स्रोत से जुड़ा हुआ है, बिना स्रोत से जुड़े ये बेकार है। इसी प्रकार आपने भी अपने स्रोत से जुड़ना है। जब तक ये यन्त्र (शरीर), जिसे अमीबा से इस अवस्था तक विकसित किया गया है, अपने स्रोत से जुड़ नहीं जाता आप स्वयं को नहीं जान पाएंगे। आप अपना अर्थ नहीं समझ पाएंगे और न ही अपने अवतरण (जन्म) का लक्ष्य जान पाएंगे।

साक्षात्कारकर्ता : *निश्चित रूप से ये आपके विकास की अवस्था पर निर्भर है कि आप इन चीज़ों के विषय में प्रश्न कर सकें।*

श्रीमाताजी : *नहीं, ये आवश्यक नहीं है, क्योंकि अब समय आ गया है। अब प्रश्न करने की भी आवश्यकता नहीं है। सर्वत्र मैं यही देखती हूँ। मैं देखती हूँ कि इसकी भिन्न शैलियाँ हैं। उदाहरण के रूप में, मैं देखती हूँ कि कुछ देश समस्याओं का सामना कर रहे हैं क्योंकि वो अत्यधिक गतिशील हैं। कैंसर रोग इन समस्याओं में से एक हैं, जिसे सहजयोग द्वारा ठीक किया जा सकता है, अन्यथा कैंसर का उपचार नहीं किया जा सकता। बहुत सारी चीज़ें हैं। विकासशील देशों की अपनी समस्याएं हैं, वो सोचने लगते हैं कि हमारा क्या होगा? हम कैसे हैं? उदाहरण के रूप में, भारत में समस्याएं हैं जिनसे लोग भ्रमित हो जाते हैं। वो नहीं जानते कि किस प्रकार समस्याओं का समाधान करना है। एक समस्या का समाधान करने का प्रयत्न करते हुए वे इसके बारे में सोचने लगते हैं कि ये क्या है, क्या गलत हो रहा है? हाँ आपमें प्रकाश नहीं है। आप अंधेरे में चल रहे हैं। बिना बात के आप एक-दूसरे से टकरा रहे हैं।*

साक्षात्कारकर्ता : *क्या आप सोचती हैं कि लोग इस सहजयोग को संभाल लेंगे?*

श्रीमाताजी : *हाँ, पूरी तरह से। एक बार जब आप आत्म-साक्षात्कार पा लेते हैं तो ये बात*

सत्य है कि आपको थोड़ा सा जमना होता है। इसमें एक-दो महीने लगते हैं, परन्तु जमने के पश्चात् आप अत्यन्त शक्तिशाली एवं विवेकशील बन जाते हैं। चैतन्य लहरियाँ आपका पथ प्रदर्शन करती हैं और आप सभी गलत कार्य छोड़ देते हैं। जब आप सहजयोग करने लगते है तो गलत कार्य आपको अच्छे ही नहीं लगते क्योंकि गलत कार्यों से आपकी अंगुलियों में दर्द हो जाता है। आपमें जो घटना घटित होती है, आप इसका आनन्द लेते हैं। ये अत्यन्त आनन्ददायी होता है।

साक्षात्कारकर्ता : *क्या आप ऐसा नहीं सोचतीं कि इसका भी वही हश्र होगा जो ईसामसीह की शिक्षाओं, उनके प्रेम विचारों का हुआ, कि हमें किस प्रकार लोगों से प्रेम करना है? इन्हें लोगों ने स्वीकार ही नहीं किया।*

श्रीमाताजी : *इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इसका कोई महत्व नहीं है। परन्तु ऐसा होना अब सम्भव नहीं है क्योंकि* **जो लोग भी इसे स्वीकार नहीं करेंगे उन्हें समस्याएं होंगी। या तो उन्हें स्वीकार करना होगा या कष्ट भुगतने होंगे।** *शनैः-शनैः शायद लोग इसे स्वीकार कर लेंगे। इसका कारण ये है कि सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान यही है। क्योंकि आपको समस्याएं हैं। अतः आपको यह स्वीकार करना होगा, अन्यथा मानव इसे आसानी से स्वीकार नहीं करते। उस समय ईसामसीह आत्म-साक्षात्कार के लिए नहीं आए थे। वे सिर्फ ये साबित करने के लिए आए थे कि आत्मा की भी कोई शक्ति है। 'पुनरुत्थान', 'आत्मा का वध नहीं किया जा सकता', ये उनका संदेश था। मेरा संदेश पुनरुत्थान आदि नहीं है।* **मेरा संदेश आपका पुनर्जन्म है। पूरी मानव प्रजाति का पुनर्जन्म है, उनकी उत्क्रान्ति है। ये मेरा सन्देश है और यही मेरा कार्य है।**

साक्षात्कारकर्ता : *किस प्रकार आप इन कठोर मानव-द्वेषी* (Cynics) *लोगों को समझा पाएंगी कि सहजयोग ही सभी समस्याओं का उचित समाधान है?*

श्रीमाताजी : *प्रकृति भिन्न मार्गों से भिन्न तरीकों से इसे कार्यान्वित करेगी। निःसन्देह मानव द्वेषी लोग हैं परन्तु उनके मानव द्वेषी बनने के पीछे कुछ कारण हैं। वो ऐसे न होते, परन्तु वे बन्धनों में फँसे हुए हैं। आप इस बात का पता लगा सकते हैं क्योंकि उन्हें समस्याएं होंगी, मानसिक और पारिवारिक समस्याएं होंगी। मानव द्वेषी लोगों को हमेशा पारिवारिक समस्याएं होंगी। मैं ये नहीं कहती कि वे सदैव समस्याओं में ही फँसे रहते हैं। कुछ लोग कहते हें कि केवल सुखी लोग ही सहजयोग में आ सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है। साधकों की एक श्रेणी है। एक श्रेणी के लोग साधक हैं। पहले मुझे उनकी चिन्ता करनी होती है जो वास्तव में सच्चे साधक हैं। इनकी एक श्रेणी है। भिन्न श्रेणी के होने के कारण वो लोग दुःखी हैं। कोई भी चीज़ उन्हें सन्तुष्ट नहीं कर सकती। वे हर चीज़ को आज़माएंगे। वे धन और सत्ता प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे। सभी कुछ आज़माएंगे। फिर भी वे सन्तुष्ट न होंगे क्योंकि वे भिन्न श्रेणी के लोग हैं। तत्पश्चात् वे परमात्मा को खोज़ेंगे, पुनः वे परमात्मा को खोजेंगे।*

गलत गुरुओं के पास जाकर यहाँ-वहाँ वे धन खर्चेंगे। सभी कुछ करेंगे। परन्तु जो वो

खोज रहे थे उसे प्राप्त न कर सकेंगे और अन्ततः वो सहजयोग में आएंगे। इसलिए सर्वप्रथम मेरा चित्त साधकों पर है। ये एक श्रेणी है। जैसे मैंने आपको बताया था, ऐसे लोगों को बिलियम ब्लेक ने 'परमात्मा के बन्दे' (Man of God) कहा है। विलियम ब्लेक कहते हैं कि 'ये परमात्मा के बन्दे पैगम्बर बन जाएंगे', इनमें एक विशेष शक्ति होगी जिससे वे अन्य लोगों को आत्म-साक्षात्कार देंगे और उन्हें पैगम्बर बनाएंगे।

साक्षात्कारकर्ता : *क्या आप ये कह रही हैं कि विलियम ब्लेक आत्म-साक्षात्कारी थे?*

श्रीमाताजी : *हाँ, निःसन्देह।*

साक्षात्कारकर्ता : *जैसे यहाँ आने मात्र से कोई साक्षात्कारी कैसे बन सकता है?*

श्रीमाताजी : *हँसते हुए, यहाँ पर पहले से बहुत से आत्म-साक्षात्कारी लोग हैं, ये शक्ति सर्वव्यापी है, शाश्वत है, सर्वत्र इसका अस्तित्व है। ये सभी महान सन्त, जैसे जॉन द बेपटिस्ट, आत्म-साक्षात्कारी थे। शेक्सपीयर महान आत्म-साक्षात्कारी थे। वे अद्भुत थे। जिस प्रकार उन्होंने जीवन की निस्सारता का वर्णन किया है, वे निश्चित रूप से महान थे। इन लोगों के चैतन्य को महसूस करके आप इस बात का पता लगा सकते हैं कि वे आत्म-साक्षात्कारी थे या नहीं। चैतन्य लहरियों को महसूस करके आप इस बात का पता लगा सकते हैं। हजारों वर्ष पूर्व भी ये आत्म-साक्षात्कारी लोग विद्यमान थे। जैसे आरम्भ में पेड़ पर केवल एक या दो फूल आते हैं परन्तु शनैः-शनैः बसन्त का समय आ जाता है और बहुत से फूल उगते हैं और विकास के लिए बहुत से फल होते हैं।*

साक्षात्कारकर्ता : *आत्म-साक्षात्कारी बनने के लिए क्या आवश्यक है? क्या व्यक्ति का परिपक्व होना आवश्यक है या ये समझना कि मानव का लक्ष्य क्या है?*

श्रीमाताजी : *नहीं मानसिक अवस्था अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। व्यक्ति के अन्दर की इच्छा, परमात्मा से योग प्राप्त करने की शुद्ध इच्छा, भौतिकता से ऊपर उठने की इच्छा महत्वपूर्ण है। यही शुद्ध इच्छा, यह समझ लेने की इच्छा कि भौतिकता ही सभी कुछ नहीं है।*

भौतिकता से आप तंग आ जाते हैं। ये नाटक है जिससे आप ऊब जाते हैं। आप सभी चीज़ों को आज़माते हैं परन्तु प्रसन्नता कहीं नहीं मिलती। केवल शुद्ध इच्छा, अपनी आत्मा से एकाकारिता, ही प्रसन्नता प्रदान कर सकती है। चाहे आप पढ़े-लिखे न हों, सड़कछाप हों, किसी दूर-दराज के स्थान पर रहते हों, फिर भी आपके अन्दर शुद्ध इच्छा विद्यमान हो सकती है और यही आपको आत्म- साक्षात्कार की ओर ले जाती है। आपको शुद्ध इच्छा का एहसास नहीं है, फिर भी ये कार्य करती है। शुद्ध इच्छा के विषय में चेतन न होते हुए भी ये कार्य करती है क्योंकि किसी अन्य चीज़ से आपको प्रसन्नता नहीं मिलती, बाकी सभी चीज़ें आपको निराशा में धकेलती हैं। चाहे जिस चीज़ को आप आज़माते रहें कुछ नहीं होगा। ये अर्थ-विज्ञान है। एक इच्छा को यदि आप पूर्ण करेंगे तो बहुत सी इच्छाएं पैदा हो जाएंगी। इच्छाएं प्रायः पूर्ण नहीं होतीं। अतः भौतिक पदार्थ भी आपको शिक्षा नहीं देते हैं।

साक्षात्कारकर्ता : *इस बिन्दु पर दो अत्यन्त दिलचस्प चीज़ें मेरे दिमाग में आती हैं। एक ये कि क्या आत्म-साक्षात्कार द्वारा व्यक्ति को यह ज्ञान प्राप्त होता है कि मृत्यु के बाद क्या है, और दूसरी क्या आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से अपने अन्त:स्थित परमात्मा को थोड़ा-बहुत प्राप्त कर सकता है?*

श्रीमाताजी : *ये बात है। दूसरी बात ठीक है, जब आप अपने अन्दर परमात्मा को पा लेते हैं तब सभी चीज़ों के बारे में आपकी प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। तब आप ये नहीं जानना चाहते कि मृत्योपरान्त क्या है क्योंकि तब आप वर्तमान क्षण में आ जाते हैं। भूत और भविष्य की चिन्ता आपको नहीं रहती। क्योंकि ज्यों-ज्यों आपमें सूक्ष्म दृष्टि विकसित होती है आप उनके विषय में भी जान जाते हैं। आप देखने लगते हैं कि मृत्योपरान्त क्या होता है। जो रोगी आपके पास आते हैं उन्हें आप देखने लगते हैं तथा ये देखते हैं कि वे आत्माओं की पकड़ में हैं, और तब आप इसके बारे में बातें करते हैं और बहुत सारे रहस्य जान जाते हैं। तो यह आपके द्वारा खोजे हुए सत्य से आपके प्रयोगों के रूप में आपको प्राप्त होता है। परन्तु मुख्य चीज़ जो आपके अन्दर घटित होती है वह है सार्वभौमिकता* (Universality) *की भावना। आप इस तरह से महसूस करने लगते हैं कि यह आपकी चेतना का अंग-प्रत्यंग बन जाता है। आपकी चेतना का अंग-प्रत्यंग मात्र। मानव के रूप में आपमें फूलों के लिए, स्वच्छता के लिए विशेष चेतना है जो पशुओं में नहीं है। इसी प्रकार से आप चेतना के उस बिन्दु तक पहुँचते हैं जहाँ ये चीज़ें आप महसूस करते हैं कि ठीक क्या है और गलत क्या है। उदाहरण के रूप में, मैं यदि लोगों को ये बताने लगूं कि ये पाप है तो वे सौ बार इसे करेंगे। परन्तु मैं यदि उन्हें आत्म-साक्षात्कार दे दूँ तो एक दम से वे पाप करना छोड़ देंगे। वे इसे देखने लगेंगे। मान लो रात को मैं इस कमरे में सो रही हूँ और यहाँ कोई साँप है और मैं कहूं कि साँप नहीं है, मुझे तो ये दिखाई ही नहीं देता। परन्तु यदि आप कमरे की बत्ती जला दें तो मैं एकदम जान जाऊंगी कि ये साँप है और एकदम से वहाँ से दौड़ जाऊंगी।*

साक्षात्कारकर्ता : *व्यक्ति कैसे जान सकता है कि ठीक क्या है और गलत क्या है?*

श्रीमाताजी : *समस्या इसलिए है क्योंकि आपने अभी पूर्ण को प्राप्त नहीं किया है। पूर्ण को प्राप्त करने के पश्चात् आपको ये बात समझ आ जाएगी। ये आपका तार्किक ज्ञान नहीं है। ये तो आपके अस्तित्व में है। इसे आप अंगुलियों पर महसूस कर सकते हैं। आप जान जाते हैं कि दूसरे व्यक्ति में क्या घटित हो रहा है। आप इसे महसूस करने लगते हैं लेकिन केवल महसूस करना ठीक नहीं है। मान लो आप जान जाते हैं कि इस घर में कोई चीज़ ठीक नहीं है, आपकी अंगुलियों के कुछ चक्र पकड़ रहे हैं। किसी से पूछने पर आपको पता लगता है कि कुछ गड़बड़ है।*

साक्षात्कारकर्ता : *अब आप, शरीर के एक अंग, अंगुलियों पर महसूस करने की बात कर रही हैं। ये बात आपने कब जानी कि अंगुलियों पर महसूस करके व्यक्ति अपने बारे में जान सकता है?*

श्रीमाताजी : *मैं ये सारी चीज़ें पहले से ही जानती थी। (हँसते हुए) इन्हें कहने का समय अब आया है। मैं जो कह रही हूँ वह सत्य है। मैं इसे पहले से जानती थी। जैसे आप कहते हैं, ये मेरा ज्ञान है, मैं ये सब पहले से जानती थी।*

साक्षात्कारकर्ता : *क्या आपको लगता है कि परमात्मा ने आपको यहाँ भेजा है या पैगम्बरों की पंक्ति में अगला नम्बर आप हैं?*

श्रीमाताजी : *मैं ऐसा कुछ भी नहीं कहना चाहती क्योंकि बिना बात के मैं क्रूसारोपित नहीं होना चाहती। नहीं, मैं काफी बुद्धिमान हूँ। परन्तु मानव के अनुसार, निःसन्देह मुझमें कुछ विशेष है, कुछ अत्यन्त महान। परन्तु मेरे लिए ये कोई महान बात नहीं है, एक सामान्य बात है। जैसे सूर्य प्रकाश देता है तो उसके लिए इसमें कौन-सी महान बात है? उसमें प्रकाश है इसलिए वह संसार को प्रकाश देता है। मुझे कोई और कार्य करना नहीं आता, मैं अपना रेडियो नहीं चला सकती। इस प्रकार के कार्यों में मैं बेकार हूँ। परन्तु मुझे कुण्डलिनी का ज्ञान है। कुण्डलिनी का कार्य करना मैं जानती हूँ। तो इसमें स्वयं को ऊँचा या नीचा मानने की कौन-सी बात है? ये मेरा कार्य है, इसी कार्य के लिए मैं यहाँ हूँ, समाप्त! हो गया!*

साक्षात्कारकर्ता : *पिछले कुछ वर्षों में बहुत से ऐसे लोग आए हैं जो कहते हैं कि उन्हें कुण्डलिनी का ज्ञान है। भिन्न प्रकार के योग और बहुत से योगी आए हैं। लोग योग के विषय में भ्रमित हो गए हैं।*

श्रीमाताजी : *सर्वसाधारण भाषा में योग का अर्थ है परमात्मा से - आत्मा से एकाकारिता प्राप्त करना। बाकी सब कुछ बकवास है। अब आप सिर के भार खड़े होते हैं, बहुत कुछ करते हैं, ये सब व्यर्थ है। ये स्वतः होने वाली प्रक्रिया है। जीवन्त परमात्मा की यह जीवन्त प्रक्रिया है। बीज के अंकुरण की तरह से इसे आपके अन्दर घटित होना होगा। शीर्षासन में खड़े होकर क्या आप बीज को अंकुरित कर सकते हैं? क्या आप किसी फूल को फल बना सकते है? किसी भी प्रकार के व्यायाम द्वारा क्या आप ऐसा कर सकते हैं? हजारों वर्ष पूर्व भारत में हठयोग का अभ्यास किया जाता था। उस समय भारत में जीवन की शैली बिल्कुल भिन्न थी। विद्यार्थियों को गुरुओं के पास भेजा जाता था और वे अपने गुरुओं के साथ जंगलों में रहते थे। उनमें से बहुत थोड़े विद्यार्थियों को आत्म-ज्ञान के लिए चुना जाता था। परन्तु पातांजल योग की मुख्य बात 'ईश्वरीय प्रणिधान' प्राप्त करना है, परमात्मा को अपने अन्दर स्थापित करना है। परमात्मा को यदि आपने अपने अन्दर स्थापित नहीं किया है तो ये सब अभिनेता या अभिनेत्री बनने जैसा है जिसका कोई अधिक महत्व नहीं है। ये सारे व्यायाम आपके चक्रों और शरीर को ठीक करने के लिए होते हैं और किसी विशेष तकलीफ के लिए कोई विशेष आसन किया जाता है। मान लो, यदि आपकी गर्दन में तकलीफ है तो पेट का व्यायाम करने का क्या लाभ होगा? जिस प्रकार आजकल लोग हठयोग करते हैं वो तो एक ही बार में दवाइयों का पूरा बक्सा खा लेने जैसा है। इन व्यायामों से वे पतले हो जाते हैं और सोचते हैं कि उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो गया है। इस प्रकार से पतला होना ठीक नहीं होता क्योंकि ऐसे लोग प्रायः*

अत्यन्त शुष्क मिजाज़ हो जाते हैं। स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना अच्छी बात है परन्तु स्वास्थ्य ही सभी कुछ नहीं है। लोग अत्यन्त अशान्त हो जाते हैं। उनका शरीर माँसल हो जाता है, वो गुस्सैल एवं दूसरों को डराने वाले हो सकते हैं या बहुत बड़े उबाऊ। वे अपनी पत्नियों को तलाक दे सकते हैं या अपने बच्चों को पीट सकते हैं। सभी प्रकार के कार्य वे कर सकते थे। प्राचीन काल में भारत में ऐसे योगी हो चुके हैं। लोगों को मारने के लिए वे उन्हें शापित करते थे। क्या योग प्राप्ति का यही तरीका है?

साक्षात्कारकर्ता : *तो क्या यह योग भ्रान्ति* (Misconception) *है या योग का दुरुपयोग?*

श्रीमाताजी : *नहीं, ये दुरुपयोग नहीं है क्योंकि मैं तो एक माँ हूँ और किसी भी प्रकार के सन्देह का लाभ मैं उन्हें दूँगी। उनके पास पूर्ण ज्ञान न था, अतः कोई योगी एक ओर को चला गया और कोई दूसरी ओर को, जैसे भक्ति में नाचना और परमात्मा के नाम के गीत गाना। वे इसी में पागल हो जाते हैं। मैंने उन्हें इसी में पागल होते देखा है। ये एक अन्य पराकाष्ठा* (Extreme) *है। इसकी एक चरम सीमा धर्मान्धि होना है या सन्यासी होना और इस प्रकार से चरम सीमाएं शुरु हो जाती हैं। परन्तु परमात्मा मध्य में हैं। वे अति में नहीं हैं।*

साक्षात्कारकर्ता : *लोग, जैसे वे हैं, उनमें विश्वास की कमी आती है और कुछ लोग कह सकते हैं कि हम कैसे जानें कि वे (श्रीमाताजी) हमें लूटेंगी नहीं या किसी अन्य अन्धविश्वास में हमें नहीं फंसाएंगी?*

श्रीमाताजी : *बिल्कुल ठीक है। यदि साधक, लोगों पर विश्वास न करें तो मुझे बहुत खुशी होगी। उन्हें सम्मोहित किया जाता है। उनसे यदि पैसा माँगा जाए तो वे पैसा लुटाने लगते हैं। एक मुकाबला है। हाल ही में भारत में एक व्यक्ति ने ऐसे लोगों से दो करोड़ रुपये बनाए। ऐसा नहीं है कि वो विश्वास नहीं करते परन्तु वे मूर्ख हैं। वे सच्चे लोगों पर शक करते हैं और असत्य लोगों पर विश्वास करते हैं। इस मामले में वे मूर्ख हैं। कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिनसे हम जान सकते हैं कि सच्चा कौन है और झूठा कौन।* **सर्वप्रथम बात तो ये है कि हम परमात्मा को बेच नहीं सकते। परमात्मा के नाम पर हम पैसे नहीं बना सकते। चैतन्य लहरियों को बेचा नहीं जा सकता।** *इन चीज़ों को आप बेच नहीं सकते। ये अमूल्य हैं। इनकी कीमत नहीं लगाई जा सकती। ये अमूल्य हैं। ये परमात्मा का प्रेम है। अतः नियमित रूप से ऐसा आयोजित धर्म नहीं बनाया जा सकता जिसे आप जाकर बाज़ार में बेच सकें। ये शर्मनाक एवं अपमानजनक है - अत्यन्त शर्मनाक। अतः प्रेमवश होकर लोगों को आत्मज्ञान दें। वे भी तुम्हारे ही अंग-प्रत्यंग हैं। इसी कारण से आप उन्हें रोग मुक्त करते हें क्योंकि वे आप ही के अंग-प्रत्यंग हैं। अपने एक हाथ से यदि मैं दूसरे हाथ को ठीक कर दूँ इसे थोड़ा आराम पहुँचा दूँ तो इस आराम के लिए क्या मुझे दूसरे हाथ को कोई पैसा देना होगा? क्या ये हाथ दूसरे हाथ का एहसान मानता है? आप इस कार्य को इसलिए करते हैं क्योंकि ये भी आप ही का अंग-प्रत्यंग है। करुणा के रूप में ये कार्य होना चाहिए। धन आदि चीज़ें, जो आज प्रचलित हैं, उनके लिए नहीं। इन चीज़ों से लोग अधिक*

सम्मोहित हैं। इन सभी सर्कसों में बहुत से पाखण्डी होंगे जो सभी प्रकार के वस्त्र पहनेंगे। इनके वस्त्रों से लोग बहुत प्रभावित होते हैं। सतही चीज़ों की लोगों को बहुत चिन्ता होती है। कोई यदि केवल धोती पहनकर गिरती हुई बर्फ में जमकर बैठ जाए तो लोग कहेंगे कि ओह! कितना महान सन्त आया है! जब हम गृहस्थ हैं तो हमें सन्यासियों से क्या लेना-देना। सन्यासियों से हमें सम्बन्ध रखने ही नहीं चाहिएं। हम गृहस्थ हैं और सहजयोग के लिए गृहस्थ ही सर्वश्रेष्ठ होते हैं। जो लोग अपने जीवन से भाग खड़े होते हैं उन्हें हिमालय में जाकर वहीं बस जाने दो। परजीवियों की तरह से आकर हमारी कमाई पर जीवित रहने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है। वे अधम दर्जे के परजीवी हैं। ऐसे लोग अफीम बेचते हैं और दूसरे के पैसों पर जीवित रहते हैं। वे ऐसे लोग हैं। उनमें ज़रा भी आत्म सम्मान नहीं है। कुछ तो अत्यन्त क्रूर हैं। लोगों का पैसा लूट-लूट कर वे लोगों को दरिद्र कर देते हैं। केवल इतना ही नहीं, वे तस्कर भी हैं। कोई बात नहीं। परन्तु वे तो लोगों में ऐसी मृत आत्माएं डाल देते हैं कि उन्हें मिर्गी रोग हो जाता है, किडनी रोग तथा अन्य सभी प्रकार के कष्ट हो जाते हैं। ये दुष्ट इतने भयानक हैं, ये आसुरी शक्तियाँ हैं।

साक्षात्कारकर्ता : *तो आप तन, मन और धन से पूरी तरह से अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगी हुई हैं?*

श्रीमाताजी : *देखिए, मैं कहना चाहूँगी कि मैं केवल एक व्यक्ति हूँ। मैं हृदय और आत्मा, भिन्न अवयव नहीं हूँ। अत: जो भी मैं करती हूँ, पूर्णरूपेण करती हूँ। मैं विभाजित नहीं हूँ। इसका कोई प्रश्न नहीं है। जहाँ तक धन का सम्बन्ध है मुझे अधिक धन की आवश्यकता नहीं है। मेरी यात्राओं आदि का खर्च प्राय: मेरे पति वहन करते हैं। कभी-कभी मुझे निमंत्रित करने वाले लोग भी ये खर्च उठाते हैं। मैं सोचती हूँ कि उन लोगों की मोक्ष प्राप्ति का खर्च मेरे पति को नहीं उठाना चाहिए। ये कुछ ज्यादती होगी। वो लोग परजीवी* (Parasitics) *हो जाएंगे। वह खर्च भी उठाना होगा। मेरी यात्रा का खर्च यदि वे उठाते हैं तो ठीक है। मेरी जरूरतें बहुत कम हैं और परमात्मा की कृपा से इस जीवन में मैं किसी बढ़ई की बीवी नहीं हूँ। मैं एक समृद्ध व्यक्ति की पत्नी हूँ। सब ठीक है।*

साक्षात्कारकर्ता : *अब आप विश्व में सहजयोग प्रसार के कार्य में जुटी हैं। वर्तमान में आपके कितने अनुयायी हैं?*

श्रीमाताजी : *मेरे पास इसका कोई लेखा-जोखा नहीं है, कोई लेखा-जोखा नहीं है। कहने से अभिप्राय ये है कि उदाहरण के रूप में, यदि आप इस व्यक्ति, (एक सहजयोगी की ओर इशारा करते हुए) जिसे आप अभी मिले हैं, के बारे में कहें तो मुझे कभी याद नहीं होगा कि ये भी उन्हीं लोगों में से है क्योंकि मैं इसका कोई लेखा-जोखा नहीं रखती। जिन पत्तों पर आप प्रकाश डालते हैं उन सबकी गिनती नहीं करते। आप तो बस उन पर प्रकाश डाल देते हैं। आपको देना अच्छा लगता है, इसलिए आप देते हैं, गिनती नहीं करते। गिनती करने की ज़रूरत क्या है? आपने कुछ लेना तो है नहीं, अत: गिनती क्यों करनी है? किसी ऐसे व्यक्ति की बात*

सोचें जो देना चाहता है! ये फूल सुगन्ध दे रहे हैं। क्या ये गिनती करते हैं कि उन्होंने कितने लोगों को सुगन्ध दी? जो भी यहाँ आएगा उसे सुगन्ध मिलेगी। सुगन्ध देना उनका कार्य है इसलिए वे सुगन्ध दे रहे हैं। बड़ी सीधी सी बात है।

साक्षात्कारकर्ता : *आप यदि स्वयं को उच्च पद पर स्थापित कर लेती हैं तो क्या आपमें 'देने का तत्व' कुछ कम नहीं हो जाएगा। जब विशाल जन समूह आपके सम्मुख होंगे तब सम्भवतः आपको उच्च पद पर स्थापित होना पड़ेगा।*

श्रीमाताजी : *मैं कभी इन चीज़ों के बारे में नहीं सोचती। सभी कुछ स्वतः इस प्रकार से कार्यान्वित होता है मानों मैंने ही इसका प्रबन्धन किया हो। उस दिन एक गाँव में छःहजार लोग आए और सभी को आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो गया। जैसे बिजली चमकी हो! सभी को! क्या आप इस बात पर यकीन कर सकते हैं? सभी को आत्म-साक्षात्कार मिल गया। अतः ये बात नहीं है। आप इस परमेश्वरी शक्ति के विषय में सोचें जो फूलों को फलों में परिवर्तित कर देती है। आम का फूल आम ही बनेगा। किस प्रकार ये सब कुछ कार्यान्वित होता है? कितनी सूक्ष्मता से और कितनी कोमलता से! किस प्रकार सभी के अस्तित्व की रक्षा होती है। मैं जब उसी शक्ति की बात करती हूँ तो मुझे गिनती करने की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए?*

साक्षात्कारकर्ता : *उस परमेश्वरी शक्ति ने, उस परमात्मा ने हमें यहाँ क्यों भेजा?*

श्रीमाताजी : *ओह! वो आपको अत्यन्त प्रेम करते थे, इसलिए उन्होंने आपको यहाँ जन्म दिया। तनिक से परिवर्तन से आपको सीखना होगा कि अच्छा क्या है, बुरा क्या है। आपको थोड़ी सी उत्क्रान्ति पानी होगी, बस। इसी से आप इतना डर जाते हैं। डरने की तो कोई बात नहीं थी, परमात्मा ने तो हमें सभी कुछ बहुत अच्छा दिया है परन्तु आप इसे देखना ही नहीं चाहते! हम कुछ भी देखना नहीं चाहते, यही समस्या है।*

साक्षात्कारकर्ता : *परन्तु परमात्मा ने हमें इन परिस्थितियों में क्यों डाला है? हमें अपने जैसा क्यों नहीं बनाया?*

श्रीमाताजी : *जो भी हो, आप लोगों को उन्नत होना है, क्या ये बात ठीक नहीं है? ये माँ से उत्पन्न हुए नन्हें पक्षी जैसा होना है। अब मादा पक्षी को अपने छोटे बच्चे को उड़ना सिखाना है। उसे बुलाकर वह उसे उड़ना सिखाती है और नन्हा पक्षी कहे कि तुमने मुझे अपने जैसा क्यों नहीं बनाया! आप यदि ऐसा कहेंगे तो सीखेंगे कैसे? आपको इसमें कुशलता प्राप्त करनी होगी। किस प्रकार आप ये कुशलता प्राप्त करेंगे? जब तक आप स्वयं इसे नहीं सीखते, मेरा अभिप्राय ये है कि खाना बनाकर आपके मुँह में डाल दिया जाए तो आपको इसका स्वाद तो लेना ही होगा। स्वाद तो आप ही ने लेना है। बिना स्वाद लिए किस प्रकार आप इसका आनन्द ले सकेंगे? अपनी स्वाद कलिकाएं* (Taste Buds) *विकसित करें, ये स्वाद कलिकाएं परमात्मा ही बना सकते हैं। आपका उन्नत होना आवश्यक है।*

साक्षात्कारकर्ता : *हम कौन-सी दिशा में उन्नत हो रहे हैं?*

श्रीमाताजी : *आप परमात्मा का प्रकाश बनने वाले हैं। परमात्मा के प्रेम के प्रकाश-स्तम्भ जो पूरे विश्व में प्रसारित होंगे।*

साक्षात्कारकर्ता : *अन्ततः क्या हमें परमात्मा की तरह से ही उन्नत होना होगा?*

श्रीमाताजी : *हाँ, बिल्कुल। परमात्मा ने आपको अपने प्रतिबिम्ब के रूप में बनाया है। निःसन्देह अपनी सामूहिकता में बनाया है ताकि आप सागर बनें, सागर बनकर नहीं, बूँद रूप में सागर में विलीन होकर।*

साक्षात्कारकर्ता : *कैसे पता चलेगा कि हम उन्नत होने का नाटक करते हैं या वास्तव में हम उन्नत होते हैं? आखिरकार इन दिनों हमने युद्ध के विषय में कुछ अधिक नहीं सीखा है?*

श्रीमाताजी : *युद्ध, मेरा अभिप्राय ये है कि आप जो चाहे कहें, हमने युद्ध के विषय में कुछ नहीं सीखा। जो हमने नहीं सीखा, ये बहुत अच्छी स्थिति है जहाँ मनुष्य पहुँच गया है कि उसने बहुत कुछ नहीं सीखा। क्योंकि इससे पूर्व यदि परमात्मा ने आपसे ये कहा होता कि आपने कुछ नहीं सीखा तो आप उन पर विश्वास नहीं करते क्योंकि आपके पास निर्णय की स्वतन्त्रता है। आपने कुछ अधिक नहीं सीखा। अतः अब स्थिर हो जाएं। मानव को सिखाने के लिए परमात्मा की ये भी एक शैली है, क्योंकि हमने नहीं सीखा, अन्यथा वे कभी सीखेंगे नहीं। आपने यदि बम नहीं बनाया होता तो आप कभी नहीं सीखते कि विज्ञान में प्रयोग करके हमने कितनी मूर्खता की है! ये तो आपके सिर के ऊपर शैतान की तरह से है। आप समझ लें कि आपने अपने साथ कितना जुल्म किया है, अब तो वापिस आ जाएं, ये सभी झटके जरूरी हैं अन्यथा कभी आप परमात्मा के पास नहीं जा पाएंगे। उसके विषय में नहीं सोच पाएगें, क्योंकि परमात्मा द्वारा दी गई स्वतन्त्रता आपको अहं प्रदान करती है और लोग अहं के घोड़े पर सवार हो जाते हैं। ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो परमात्मा को मानते ही नहीं, वो सोचते हैं कि ये सब बकवास है।*

साक्षात्कारकर्ता : *क्या हमें इतनी स्वतन्त्रता प्राप्त होने वाली है कि अन्ततः हम स्वयं को नष्ट कर लें?*

श्रीमाताजी : *नहीं, हम कभी स्वयं को नष्ट नहीं कर सकते। परमात्मा की सृष्टि को देखें। उन्होंने आपका सृजन किया है, वो स्वयं कभी अपनी सृष्टि को नष्ट नहीं करेंगे। आप कुछ नहीं करते। आप बिल्कुल कुछ नहीं करते। मनुष्य में यह बहुत ही गलत धारणा है। जो भी कुछ वो करते हैं वह जीवन्त कार्य नहीं है। अब देखें, ये फूल निर्जीव हैं, इन्हें आपने सजा दिया है पेड़ निर्जीव है, इसकी लकड़ी से आपने फर्नीचर बना दिया है। निर्जीव से निर्जीव का सृजन। बस क्या आप कोई जीवन्त कार्य कर सकते हैं? कोई जीवन्त कार्य? कुछ नहीं। केवल आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् आप ऐसा कर सकते हैं, कुण्डलिनी जागृत होने के पश्चात् अब आप जीवन्त कार्य कर सकते हैं। तब आप उसमें कुशलता प्राप्त करने के योग्य होंगे।*

साक्षात्कारकर्ता : *तब हम सृजन कर सकेंगे?*

श्रीमाताजी : *नि:सन्देह, तब आप सृजन करने लगते हैं। कुण्डलिनी उठाकर आप नए व्यक्तित्व का सृजन करने लगते हैं।*

साक्षात्कारकर्ता : *जागृति मिलने के पश्चात् क्या उपलब्धि प्राप्त होती है? कहने से अभिप्राय ये है कि इससे हम सुधर क्यों जाते हैं?*

श्रीमाताजी : *जैसा मैंने आपको बताया था, हम प्रकाश की तरह से हैं। जब आप ज्योतिर्मय हो जाते हैं तो आपके साथ क्या होता है कि प्रकाश में आप देखने लगते हैं। सभी भ्रम समाप्त हो जाते हैं। आप सत्य को जान जाते हैं और अत्यन्त आनन्दित और प्रसन्न होते हैं क्योंकि आपको पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है। आप अत्यन्त शान्त हो जाते हैं और शक्ति हर समय आपके अन्दर से प्रवाहित होने लगती है। ये प्रवाह कभी समाप्त नहीं होता और प्रकाश में आप देख सकते हैं कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है। आप हर चीज़ को अच्छी तरह से समझते हैं। जब आप प्रकाश बन जाते हैं तब आप क्या करते हैं? तब आप अन्य लोगों को प्रकाश देते हैं और वो लोग भी प्रबुद्ध हो जाते हैं। परन्तु मृत-प्रकाश अन्य लोगों को उस प्रकार प्रकाश नहीं दे सकता जैसे शुद्ध-प्रकाश दे सकता है। आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करके आप अन्य लोगों को आत्म-साक्षात्कार दे सकते हैं। समन्वयहीनता, झगड़े, राजनैतिक एवं आर्थिक समस्याएं, धार्मिक समस्याएं, सभी भ्रम घट जाते हैं। प्रकाशरंजित होने के बाद ये सब समाप्त हो जाता है। मानव का ज्योतिर्मय होना आवश्यक है क्योंकि वह अंधेरे में है। यही अंधेरा सभी समस्याओं का कारण है।*

साक्षात्कारकर्ता : *इस प्रकार से यदि हम सब ज्योतिर्मय हो जाएं तो आज जैसा विश्व हम देख रहे हैं क्या ये समाप्त हो जाएगा?*

श्रीमाताजी : *....... तब इसका पुष्पीकरण होगा, तब यह सौन्दर्य, आनन्द एवं प्रसन्नता से परिपूर्ण विश्व का रूप धारण कर लेगा।*

साक्षात्कारकर्ता : *उस स्वर्ग का रूप जिसका वर्णन धर्मग्रन्थों में किया गया है?*

श्रीमाताजी : *हाँ, ये बात सत्य है। जिस स्वर्ग का वचन दिया गया है वह आ जाएगा। धर्मग्रन्थों में जो भी बात कही गई है वह प्रमाणित होगी। सहजयोग ने ही इस कार्य को अन्जाम देना है। इसी कारण से ये महायोग है। ये महानयोग है।*

साक्षात्कारकर्ता : *इस अवस्था तक पहुँचने में कितना समय लगेगा?*

श्रीमाताजी : *ये मानव पर निर्भर करता है कि वे किस प्रकार इसे कार्यान्वित करेंगे। बस अब उन्होंने इस बात का निर्णय करना है। उन्होंने ही इसका निर्णय करना है।*

(साक्षात्कार की रिकार्डिंग यहाँ समाप्त हो जाती है)

(रेडियो साक्षात्कार, हाँगकाँग 1992)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी से प्रायः पूछे गए प्रश्न एवं उनके उत्तर

"अंधेरे में आपने साँप पकड़ा हुआ है, आप इसे देख नहीं सकते, मैं यदि कहूँ कि, "इसे छोड़ दो," तो आप कहेंगे 'नहीं, मैंने रस्सी पकड़ी हुई है, क्यों मैं इसे छोड़ दूँ।' परन्तु यदि प्रकाश हो जाए तो आप स्वयं एकदम से इसे छोड़ देंगे। अतः आत्मसाक्षात्कार के साथ आपमें दिव्य विवेक तथा सद्सद्विवेक विकसित हो जाता है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कोलम्बिया, 20.09.1988)

प्रश्न : श्रीमाताजी कर्मों के विषय में कुछ बताइए?

उत्तर : *केवल मानव सोचता है कि वह कर्म करता है, पशु इस प्रकार से नहीं सोचते। अपने अहं के कारण हम सोचते हैं कि हम गलत कर रहे हैं या ठीक कर रहे हैं, पशु इस प्रकार से नहीं सोचते। वास्तव में मनुष्य नहीं जानता कि ठीक क्या है और गलत क्या है क्योंकि वह आपेक्षित* (Relative) *संसार में रहता है। परन्तु पूर्ण सत्य क्या है ये बात आप केवल दिव्य चैतन्य-लहरियों के माध्यम से ही जान सकते हैं। जब आप परमेश्वरी कम्प्यूटर बन जाते हैं तो आप सभी एक ही प्रकार से सोचते हैं। ठीक और गलत स्पष्ट हो जाता है, जैसे पशु गन्दे नाले में से गुजर सकते हैं परन्तु मानव वहाँ नहीं जाएगा। सन्त बन जाने के पश्चात् आप जान पाएंगे कि ठीक क्या है और गलत क्या है। अब आप कोई गलत कार्य न कर पाएंगे क्योंकि आपको ज्ञान का एक नया आयाम प्राप्त हो जाएगा।*

जो भी हो, इससे पूर्व आप बन्धनों में जकड़े होते हैं जिनके कारण आप अहंग्रस्त संकीर्ण व्यक्तित्व बन जाते हैं। ईसामसीह आपके अहं और प्रतिअहं को सोख (Suck) *लेते हैं। ''हमारे पापों के कारण ईसामसीह की मृत्यु का यही अर्थ है।'' इसी के लिए वो जागृत होते हैं। अपनी शक्ति से वे हमारे सारे अपराधों को सोख सकते हैं। अतः आपको दोष भावग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपके सभी कर्मों को सोख लिया गया है।*

कष्ट उठाने की धारणा उन लोगों से आती है जो कष्ट उठाना चाहते हैं। वो कहते हैं कि क्योंकि आपने पाप किए हैं तो आपको धन देकर उन पापों का पश्चाताप करना चाहिए। परन्तु परमात्मा तो पैसे को समझते ही नहीं। क्या हम ईसामसीह से भी ज्यादा कष्ट उठाने वाले हैं? **जब सेंट थॉम्स ने ये कहा कि सर्वशक्तिमान पिता अत्यन्त करुणामय एवं दयालु हैं, वो कैसे आपको कष्ट उठाने के लिए कह सकते हैं, तो उन्होंने सहजयोग के अतिरिक्त कुछ भी नहीं कहा।** *उन्होंने कहा, कि हमारे पिता अपने साम्राज्य में हमारे प्रवेश के लिए बहुत उत्सुक हैं। अतः आइए आनन्द मनाएं, प्रसन्न हों और कष्ट उठाने के विचार त्याग दें। आपने न तो उदास होना है और न ही दोष-भाव ग्रस्त।*

प्रश्न : क्या सत्य इन्द्रियों की समझ से परे है?

उत्तर : *हाँ, पूर्णतया। क्योंकि इन्द्रियों के माध्यम से जो भी कुछ हम समझते हैं - जो भी कुछ इन्द्रियों के माध्यम से हम समझते हैं यदि वह सत्य है तो हमें इससे आगे खोजने की आवश्यकता नहीं होती। इन्द्रियों के माध्यम से हम वही समझ पाते हैं जो दिखाई देता है, स्थूल है, सूक्ष्म नहीं है। स्थूल के पीछे क्या है, ये हम नहीं समझ पाते। उदाहरण के रूप में, हम नहीं कह सकते कि अणु को किस प्रकार बनाया जाए, हम ये भी नहीं बता पाते कि नन्हें कोषाणु* (Amoeba) *को मानव किस प्रकार बनाया गया। बन्दर को हम मानव नहीं बना सकते। इन्द्रियों की समझ के माध्यम से क्या हम ऐसा कर सकते हैं? इन्द्रियों की समझ के माध्यम से स्थूल के पीछे छिपे सूक्ष्म कार्यों को हम नहीं कर सकते। इसलिए इन्द्रियों के माध्यम से हम*

सत्य को नहीं समझ सकते। परन्तु एक बार यदि आपने सत्य का ज्ञान पा लिया है तो अपनी इन्द्रियों के माधयम से आप इसे महसूस कर सकते हैं। ये दूसरा तथ्य है।

प्रश्न : श्रीमाताजी हमें अंगुलियों की अपेक्षा अपनी टाँगों पर उन्हीं चक्रों का आभास अधिक होता है।

उत्तर : समन्वय का अभाव है, इसी कारण से। आपको सामूहिकता में ध्यान करना होगा, अधिक सामूहिक होना होगा। शरीर का सामूहिक होना आवश्यक है। व्यक्ति यदि सामूहिक न हो तो कभी उसे टाँगों पर महसूस होता है, कभी हाथों पर और कभी सिर पर, ये अच्छी बात नहीं है। आपको चाहिए कि अधिक सामूहिक होने का प्रयत्न करें, अधिक लोगों से मिलें जुलें और अधिक दिलचस्पी लें। शरीर का उपयोग यदि नहीं करेंगे तो यह कुशलतापूर्वक कार्य नहीं करेगा।

व्यक्तिगत रूप से यदि आप कार्य करते रहेंगे तो इसका सामूहिक विकास न होगा, क्योंकि कहाँ आप इसका इस्तेमाल कर रहे हैं? दूसरों को देने के लिए आप स्वयं को सुधार रहे हैं,और यदि आप दूसरों के हित में इसका उपयोग नहीं करते, सामूहिक रूप से इसे कार्यान्वित नहीं करते तो संचरण (Circulation) नहीं होगा।

उदाहरण के रूप में, कोई फल यदि आप पेड़ से तोड़कर पकाना चाहते हैं तो यह जल्द ही सड़ जाएगा। परन्तु यदि यह पेड़ से जुड़ा रहेगा तो ये स्वतः पक जाएगा और स्वयं को तथा पेड़ को उचित पहचान प्रदान करेगा। इसका स्वाद भी बेहतर होगा। पेड़ के नीचे आने वाले लोगों को उस पेड़ का फल प्राप्त होगा। परन्तु पेड़ से टूटा हुआ फल शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार व्यक्ति का सामूहिक होना आवश्यक है।

प्रश्न : श्रीमाताजी हम अपनी विवेकबुद्धि को किस प्रकार विकसित करें?

उत्तर : विवेक बुद्धि हँसा चक्र के माध्यम से आती है। हँसा चक्र बहुत साधारण है और हँसा चक्र को ठीक करने के लिए आप अपनी नाक में थोड़ा-सा घी डाला करें - ये शारीरिक स्तर की बात है। भावनात्मक स्तर पर व्यक्ति को चाहिए बहुत अधिक बिलबिलाए नहीं। स्त्रियाँ विशेष रूप से बहुत आँसू बहाती हैं। कभी-कभी मेरी भी रोने की इच्छा करती है परन्तु बहुत कम। कभी-कभी पुरुष भी रोते हैं।

आध्यात्मिक रूप से विवेक बुद्धि को विकसित करने के लिए चैतन्य चेतना (Vibratory Awareness) का मार्ग है। जब आपकी चैतन्य लहरियाँ विकसित हो जाएंगी तो स्वतः ही आपमें सद्-सद् विवेक बुद्धि आ जाएगी। आप इतने बड़े कम्प्यूटर हैं इसे पूर्णरूपेण कार्य करना होगा और तब आप हैरान होंगे कि आप कितने कुशल कम्प्यूटर हैं?

प्रश्न : शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष क्यों होते हैं?

उत्तर : शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा बढ़ता है और कृष्ण पक्ष में घटता है। घटते समय यह शुभ नहीं होता। इसके शुभ न होने का कोई उत्तर नहीं है- बस यह शुभ नहीं होता। गैस के अन्दर से प्रकाश क्यों निकलता है, क्या आप इसकी व्याख्या कर सकते हैं? क्योंकि यह प्रकाश है। परन्तु

क्यों? चन्द्रमा जब चढ़ती कला में होता है तो ये अधिक मंगलमय होता है। क्योंकि यह आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है। आत्मा का अधिक प्रतिबिम्ब आता है, क्योंकि यह चढ़ती कला में होता है। घटती कला में जब ये होता है तो हम कह सकते हैं कि ये उतार पर है। तब यह शुभ नहीं होता। तो इस प्रकार से शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष हैं।

प्रश्न : चैतन्य लहरियाँ क्या हैं?

उत्तर : *चैतन्य लहरियाँ हमारे अन्दर सर्वव्यापी शक्ति की धड़कन हैं जिन्हें हम मध्य नाड़ी तन्त्र पर महसूस कर सकते हैं। आत्मा नहीं धड़कती। ये नहीं धड़कती। धड़कन तो सर्वव्याप्त शक्ति में विद्यमान है। परन्तु आत्मा से योग होने के पश्चात् ही इसका प्रवाह आरम्भ होता है और आप इस धड़कन को अपने मध्य नाड़ी तन्त्र पर महसूस करने लगते हैं। आदि शक्ति* (Holy Ghost) *की यही धड़कनें ही चैतन्य- लहरियाँ हैं।*

प्रश्न : श्रीमाताजी क्या हम चिकित्सक लोग रोगियों को ठीक करते हैं या वे स्वयं ठीक हो जाते हैं? सहजयोग में हम चिकित्सकों का क्या कर्तव्य है?

उत्तर : *जीवन का महानतम् उद्देश्य परमात्मा का यन्त्र (माध्यम) बनना है। अपनी ध्यान धारणा के अभ्यास से इस प्रश्न का उत्तर आप अन्य लोगों की अपेक्षा शीघ्र जान जाएंगे कि आपका लक्ष्य रोगियों को ठीक करना है। परन्तु यदि पैसा बनाना आपका लक्ष्य है तो आप सहजयोगी नहीं है। धनार्जन ठीक है। बहुत से लोगों को आप ठीक कर सकते हैं। बहुत से शल्य चिकित्सक सफल हुए हैं क्योंकि आपको मानव का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है। अतः अपने चिकित्सा कार्य में भी आप विशेषज्ञ बन जाते हैं। निःसन्देह आपको अपना जीविकार्जन भी करना है। कुछ सहजयोगी चिकित्सक बहुत अच्छी तरह से आगे बढ़ रहे हैं। भारत में एम.डी. की उपाधि प्राप्त एक चिकित्सक विदेश में शोध कार्य के लिए छात्रवृत्ति ले रहा है।*

प्रश्न : सहजयोग पातांजल के योगसूत्र से किस प्रकार भिन्न है? पातांजल इतने महान लेखक हैं कि वे एक वाक्य में जो कह देते हैं बाकि लोग पूरी पुस्तक में नहीं कह पाते। ''चित्तवृत्ति निरोध ही योग है'' (To stop the process of mind and Chitta is Yoga)। आप सहजयोग को किस प्रकार परिभाषित करते हैं?

उत्तर : *सहजयोग पातांजल से भिन्न नहीं है। ये एक ही है। परन्तु लोग पातांजल को पढ़ते ही नहीं। वे पातांजल का केवल सोलहवां भाग ही पढ़ते हैं। वास्तव में आपको चाहिए कि पूरा आष्टांग योग पढ़ें। अंत में वे इस परिणाम पर आते हैं कि आपको निर्विचार-चेतन होना चाहिए, जिसे निर्विचार समाधि, निर्विकल्प समाधि कहते हैं। सहजयोग यही है।*

प्रश्न : जब मैं निर्विचार समाधि में होता हूँ तो स्पष्ट नहीं देख पाता?

उत्तर : *मेरे विचार से आपको उससे कहीं अधिक देखना चाहिए जितना आप देखते हैं। वह ठीक है, जब आप निर्विचार चेतना में होते हैं तो आपकी आँखों की पुतलियाँ फैलने लगती हैं, ये बात ठीक है। परन्तु इसे और ऊँचा उठाएं - कुण्डलिनी को - थोड़ा सा ऊँचा उठाएं, हल्का सा ऊपर लाएं, ठीक है?*

कुण्डलिनी यदि निर्विचार चेतना में रुकी है, अर्थात पुतलियाँ फैल रही हैं, तब आँखें काली हो सकती है परन्तु उनमें चमक नहीं होती। परन्तु जब कुण्डलिनी बाहर आती है तो आँखें चमक उठेंगी। देखने पर आपको लगेगा कि आँखों में अन्तर आ गया है। कुण्डलिनी जब आज्ञा चक्र का भेदन कर रही होती है तो आँखें फैलती हैं – पुतलियाँ फैलती हैं, तब तक कुण्डलिनी वहीं होती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति स्पष्ट नहीं देख पाता। ठीक है? परन्तु निर्विचार चेतना की स्थिति में ये सब चीज़ें दूर हो जाती हैं। अतः यदि आप कुण्डलिनी को थोड़ा-सा ऊपर उठा दें – आप जानते हैं कि चित्त से या मेरी बिन्दी को देखते हुए या मेरे विषय में सोचते हुए कुण्डलिनी ऊपर को चली जाती है। ठीक है?

तो निर्विचार समाधि शुरुआत मात्र है। ये महान क्षेत्र है, श्री कृष्ण के चक्र स्थान तक, जहाँ आप साक्षी बनते हैं। साक्षी होने के बाद आपकी आँखों में चमक आ जाती है, आपकी आँखें चमक उठती हैं। आँखों में चमक आने का अर्थ ये होता है कि कुण्डलिनी ठीक से प्रवाहित हो रही है। उस समय आप सामान्य से कहीं अधिक देख सकते हैं। आरम्भ में हर चीज़ बड़ी-बड़ी नज़र आने लगती है और अत्यन्त स्पष्ट। ठीक है?

पुतलियाँ फैलने लगती हैं। इस समय कई लोगों ने आँखें खोलीं और कहा, "ओह! हम अन्धे हो गए हैं।" ये सच है, ऐसा होता है। ये बात ठीक है, ठीक है? अच्छा प्रश्न है...

(परम पूज्य श्रीमाताजी, पुणे, भारत 24.12.1982)

प्रश्न : श्रीमाताजी हमें बताएं कि कुगुरुओं और सम्प्रदायों के बारे में किस प्रकार बात करें? सहजयोगियों के रूप में हम किस प्रकार लोगों से इनके विषय में बातचीत करें?

उत्तर : *सहजयोगियों को परस्पर बात करनी है कि कैसे कुगुरुओं के बारे में लोगों को बताएं। आप देखते हैं कि जो लोग कुगुरुओं के पास गए, वो कष्ट उठा रहे हैं। वो पागल भी हो सकते हैं। उदाहरण के रूप में, मैं जब शिकागो गई तो वहाँ पर हरे रामा, हरे कृष्णा वालों का एक अनुयायी था। वह शिकागो हरे रामा, हरे कृष्णा का अध्यक्ष था। उसने अपना सिर मुंडवाया हुआ था। केवल एक चोटी सिर पर थी, खच्चर की पूँछ की तरह से बाहर निकली हुई। मैंने कहा, "श्रीमान, मैं एक माँ हूँ। इस ठण्डे मौसम में आप केवल ये एक धोती क्यों पहने हुए हैं? इतनी अधिक ठण्ड है, ठण्ड से मैं तो काँप रही हूँ।" कहने लगा, "मेरे गुरु ने बताया है कि धोती पहनने से तुम्हें मोक्ष (निर्वाण प्राप्त हो जाएगा)" मैंने कहा, "मेरे देश में तो 80 प्रतिशत लोग धोती पहनते हैं, उन्हें तो मोक्ष मिल चुका होगा?" उसने अपना सिर मुंडवा रखा था। मैंने पूछा, "तुमने अपने बाल क्यों मुंडवाए हैं?" उसने कहा, "मेरे गुरु ने बताया है कि यह वह स्थान है जहाँ से स्वर्ग में प्रवेश किया जाता है।" वह व्यक्ति अमेरिकन था। मैंने कहा, "भारत में कबीर नाम के महान सन्त हुए हैं उन्होंने कहा है कि यदि सिर मुंडवाने से स्वर्ग में स्थान मिलता तो भेड़ें हर वर्ष दो बार मुंडती हैं।" तो भेड़ों को तो स्वर्ग में होना ही चाहिए। तुम्हें कहाँ स्थान मिलेगा? इस पर वह व्यक्ति मुझसे नाराज़ हो गया, "आप मेरे गुरु के विरुद्ध बोल रही हैं।" मैंने कहा,*

"देखिए, आप मुझ पर नाराज मत होइए। आपका जो जी चाहे कीजिए क्योंकि आपके गुरु ने कहा है। परन्तु इस धोती को पहनने के कारण कल यदि आप बीमार पड़ जाओ तो मेरे पास मत आना।" भारत में हर रोज 'हरे राम, हरे कृष्ण' कहते हैं। अंग्रेजों की तरह से हम सुप्रभात (Good Morning) *नहीं कहते। हम 'हरे राम' कहते हैं और हमारे यहाँ मुसलमान लोग 'अल्लाह' कहते हैं, तो हम इस प्रकार से कहते हैं। ये सब जुबानी जमा खर्च है। किस प्रकार आप स्वर्ग में जा सकते हैं? वो मुझ पर नाराज़ तो हो गया परन्तु उसे 'नाड़ी सूजन'* (Varicose Veins) *रोग हो गया। अगले साल वो मेरे पास आया।*

ऐसे लोगों से व्यवहार करते हुए आपको सावधान रहना पड़ता है। वे अपने गुरुओं के दास होते हैं। उनके विचारों में कट्टरता होती है। मेरे सामने आते ही कुछ लोग तो काँपने लगते हैं और पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। परन्तु अब अधिकतर लोग समाप्त हो गए हैं। सर्वप्रथम तो वे सम्मोहित करते हैं। भारत में हमारे यहाँ एक ऐसा कुगुरु था जो लोगों को सम्मोहित करके स्विस घड़ियाँ आदि निकालकर लोगों को देता था। भारत के बहुत से बड़े-बड़े लोग उसे देखने को गए। वहाँ चार कैमरे लगा दिए गए और कैमरों को वो सम्मोहित न कर पाया। कैमरे ने स्पष्ट दिखाया कि किस प्रकार उसने गले का हार मँगवाया और आगे दिया। भारत में हमारे धनवान लोग किस प्रकार मूर्ख हैं, केवल धनी ही नहीं गरीब लोग भी। वे उसके पास हीरे लेने के लिए जाते थे। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? वह सभी प्रकार की चालाकियाँ करता था। परन्तु अखबारों ने उसे अनावृत्त कर दिया। परमात्मा की कृपा से ऐसे सभी लोगों का पर्दाफ़ाश हो रहा है। सारे असत्य से पर्दा उठ जाएगा। सर्वप्रथम तो यदि आप उन्हें बताएं कि आपने गुरुओं को धन नहीं देना तो ये सभी तथाकथित कुगुरु समुद्र में कूद जाएंगे।

प्रश्न : चित्त की एकाग्रता किस प्रकार प्राप्त की जाए?

उत्तर : *इसके लिए आपको कुछ नहीं करना क्योंकि जो भी आप करेंगे वह मानसिक गतिविधि के माध्यम से करेंगे। मानसिक गतिविधि रेखीय* (Linear) *होती है। इसमें कोई सत्य नहीं होता। यह एक सीमा तक जाती है और फिर मुड़कर आप ही को चोट पहुँचाती है। परन्तु आत्मा की शक्ति चहुँ ओर फैलती है। अब आपने चित्त के बारे में पूछा है। ये अत्यन्त सहज है। कुण्डलिनी जब उठती है तो चहुँ ओर फैला हुआ चित्त इस प्रकार से ऊपर को उठता है और मध्य में आ जाता है। कुण्डलिनी जब सहस्रार का भेदन करती है तो पूरा चित्त ज्योतिर्मय हो उठता है। आपको कुछ करना नहीं पड़ता। परन्तु आपको अपनी कुण्डलिनी इस प्रकार से उठाते रहना होता है। बस। किसी चीज़ को जब आप देखते हैं तो बिना कुछ सोचे इसे देखा कीजिए। क्या आप बिना सोचे मुझे देख सकते हैं? अब आप कार्यकारी शक्ति को अपने हाथों पर महसूस कर सकते हैं-देख सकते हैं। यही नमाज़ है। परन्तु मुसलमान इसके बारे में कुछ नहीं जानते। आपको शीतल लहरियाँ महसूस होंगी। ये कार्यकारी शक्ति है। अपनी अंगुलियों पर आप अपने तथा अन्य लोगों के चक्रों को महसूस कर सकेंगे। जिन लोगों ने अपने हाथों पर या तालू पर शीतल या गर्मलहरियाँ महसूस की हैं, वे अपने हाथ उठाएं। ओह! तो आप सबने महसूस कर लिया है! इतना सहज है,*

क्योंकि आप इसके लिए तैयार हैं और क्योंकि आप रूसी लोग हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

प्रश्न : अतिचेतन से आने वाली रोग निवारक शक्तियाँ क्या हैं, क्योंकि बहुत से लोग अतिचेतन शक्ति से रोगों का इलाज करते हैं तथा इस रोगनिवारक शक्ति और कुण्डलिनी की रोगनिवारक शक्ति में क्या अन्तर है?

उत्तर : *रोगनिवारक शक्तियाँ दो प्रकार की हो सकती हैं। एक वो हो सकती हैं जिन्हें सामूहिक अवचेतन की शक्ति प्राप्त होती है तथा दूसरी जिन्हें सामूहिक अतिचेतन की शक्ति प्राप्त होती है। दोनों से इलाज हो सकता है परन्तु यह समस्या पर निर्भर करता है। उदाहरण के रूप में, सामूहिक अवचेतन की शक्तियों वाला व्यक्ति बाईं ओर की समस्याओं का इलाज कर सकता है और अतिचेतन शक्तियों वाला व्यक्ति शारीरिक पक्ष का (दाईं ओर का)।*

*भारत में दो प्रकार के लोग हैं जिन्हें हम मान्त्रिक और तान्त्रिक नामों से जानते हैं। मान्त्रिक वो लोग होते हैं जो श्मशानों और कब्रिस्तानों में जाकर मृत आत्माओं को पकड़ने का प्रयत्न करते हैं। ये मृत आत्माएं बहुत धूर्त किस्म की होती हैं। ये धूर्त आत्माएँ तथाकथित 'समाजसेवी' या 'व्यस्त' आत्माएं होती हैं जो अन्य लोगों की सहायता करने के प्रयत्न में लगी होती हैं। वर्ण प्रणाली के अनुसार ये शूद्र होते हैं जिन्हें अन्य लोगों की सेवा करने में विश्वास होता है। ये लोग अच्छे प्रतीत होते हैं क्योंकि ये अन्य लोगों की सेवा करना चाहते हैं उनकी सहायता करना चाहते हैं और इसी कारण से ये मरना नहीं चाहते, पृथ्वी ग्रह के इर्द-गिर्द हमेशा बने रहना चाहते हैं। इन्हें हम '***सेवक-श्रेणी***' कहते हैं। वे दासत्व भाव से परिपूर्ण होते हैं। कोड़े खाना, पिटना और दुर्व्यवहार उन्हें पसन्द हैं। ये एक अन्य पराकाष्ठा है। जघन्य किस्म का जीवन इन्हें पसन्द हैं—ये परपीड़न-कामुक या कामक्रूर होते हैं। इस प्रकार के सभी मृत लोग हमारे चहुँ ओर हैं और ये बाईं ओर के भूत हैं, अर्थात् अत्यन्त कायर और चिपके रहने वाले।*

ये मान्त्रिक लोग ऐसे मृत लोगों को वश में कर लेते हैं और उन्हें कहते हैं कि ये काम करो, वो काम करो, इस पर नियन्त्रण करो या वहाँ जाओ। दासभाव होने के कारण ये भूत इन कार्यों से बहुत प्रसन्न होते हैं। अतः किसी को यदि मानसिक रोग है, उदाहरण के रूप में, किसी अपने की मृत्यु हो गई है तो दिमागी सदमा पहुँचने के कारण वह सामूहिक अवचेतन में चला जाता है और भूत-बाधित हो जाता है। ऐसे लोग इन मान्त्रिकों के पास जाते हैं और ये मान्त्रिक मृत आत्माओं से कहते है कि तुम बहुत समय से इस व्यक्ति को परेशान कर रहे हो अब इसे छोड़ दो। ये एक मृत आत्मा उस व्यक्ति से हटाकर इसके स्थान पर दूसरी मृत-आत्मा उसमें डाल देते हैं और पहली मृत आत्मा को कहते हैं किसी अन्य व्यक्ति में प्रवेश कर जाओ। ये मान्त्रिक लोग बिचौलिए या सम्पर्क अधिकारी होते हैं। इन आत्माओं को वश में करके ये एक व्यक्ति से इन्हें हटाकर किसी दूसरे व्यक्ति पर डाल देते हैं। इस प्रकार पहला व्यक्ति ठीक हो जाता है।

उदाहरण के रूप में, एक महिला थी जिसका पति बहुत अधिक शराब पिया करता था। वह एक महिला मान्त्रिक के पास गई जिसने कहा कि वह उसके पति को ठीक कर देगी।

परन्तु उसके लिए उसे सौ रुपये देने होंगे। उसने व्यक्ति पर एक मृत आत्मा डाल दी जिसके कारण शराबी भूत चला गया। इस व्यक्ति ने शराब पीना छोड़ दिया परन्तु घुड़दौड़ पर जाने लगा। तब उस महिला ने रेस वाला भूत हटाया तथा एक और भूत उसमें डाल दिया और उसके कारण उसने गन्दी औरतों के पास जाना शुरु कर दिया। अब ये महिला बहुत घबराई। हर बार उसे सौ रुपये देने पड़ते और इस प्रकार वह काफी धन बर्बाद कर चुकी थी। उसने उस मान्त्रिक महिला से इसकी शिकायत की और इसके बाद उसने पाया कि उसका पति एक साथ तीनों दुष्कर्म करने लगा था। वह उस महिला मान्त्रिक से झगड़ने गई तो उसने उसमें भी एक भूत डाल दिया। तब से वह महिला पागल है और मैं भी उसे ठीक नहीं कर पाई। वह बहुत सुन्दर है, फैक्ट्री के मालिक एक अमीर पुरुष से उसका विवाह हुआ है तथा इस प्रकार का जीवन वो जी रहे हैं—अर्थात् मोमबत्ती का दोनों सिरों से जलना। अवचेतन लोगों का ये हाल है।

दूसरी प्रकार के वो लोग हैं जो अतिचेतन किस्म के हैं। उदाहरणतया 'डाक्टर X का अन्तर्राष्ट्रीय रोग निवारक केन्द्र'। उसके पास "अन्तर्राष्ट्रीय भूत थे, रोगी को उन्हें लिखना पड़ता था कि वह फलां-फलां रोग से पीड़ित हैं। सभी मृत अतिचेतन लोग, जो अत्यन्त महत्वाकांक्षी होते हैं, जैसे सभी महान डॉक्टर, वकील, वैज्ञानिक, इंजीनियर, महान वास्तुकार, हिटलर तथा ऐसे ही सभी महान योद्धा, दाईं ओर को एकत्र हो जाते हैं।

मृत्यु के पश्चात् डॉक्टर X वहाँ अपने सभी मित्रों से मिला, उनसे सम्पर्क बना सका क्योंकि ये डॉक्टर भी मरना नहीं चाहते थे क्योंकि वे किसी न किसी प्रयोग में लगे हुए थे। अत: उन्होंने डॉक्टर X का क्लीनिक आरम्भ कर दिया। ये मृत डॉक्टर X लन्दन में रहते थे और उनका एक पुत्र भी था। डाक्टर X की आत्मा ने वियतनाम में एक सामान्य सिपाही पर आक्रमण किया और उसे बताया कि वह लन्दन का डॉक्टर X था तथा ये भी कहा कि वह उसके पुत्र के पास जाकर उसे बताए कि वह फलां क्लीनिक आरम्भ करना चाहता है। डॉक्टर X ने अपने पुत्र में प्रवेश नहीं किया क्योंकि वह जानता था कि उसके पुत्र का स्वास्थ्य इतना अच्छा नहीं है कि वह उसमें प्रवेश कर सके। उसे एक अत्यन्त शक्तिशाली और स्वस्थ पुरुष की आवश्यकता थी जिसमें वह प्रवेश कर सके।

वह सिपाही उसके बेटे के पास गया और उसे बताया कि "तुम्हारा पिता मेरे अन्दर है और वह क्लीनिक खोलना चाहता है।" बेटे को उस पर विश्वास नहीं हो रहा था। तब भावसमाधि (Trance) में जाकर उस सिपाही ने बताया कि मैंने तुम्हारे लिये कुछ धन गुप्त स्थान पर रखा है और चुपके से उसे इसके बारे में बताया। तब बेटे को विश्वास हुआ और उसने पिता के लिए क्लीनिक आरम्भ कर दिया। सारा धन उसने क्लीनिक के लिए दे दिया। जब भी वह चाहता सभी भूत डॉक्टर उसकी सहायता करते। इस स्तर पर अन्तर्सम्पर्क स्थापित कर लिया गया था अर्थात् सामूहिक अतिचेतन।

उच्च रक्तचाप, गुर्दे और गर्भाशय की समस्या से पीड़ित एक महिला उनके पास गई। उन्होंने

उसे कहा कि वह लन्दन केन्द्र को एक पत्र लिखे। वहाँ से उत्तर आया कि फलां दिन, फलां समय हम तुम्हारे अन्दर प्रकट होंगे और तुम्हारा इलाज करेंगे परन्तु तुम अवश्य अपने बिस्तर पर लेट जाना। इस दिन ठीक उसी समय वह काँपने लगी और एक मृत डॉक्टर उसमें प्रवेश कर गया तथा वह रोगमुक्त हो गई। एक वर्ष तक वह ठीक रही। बाद में उसे बहुत चक्कर आने लगे। जब वह मेरे पास आई तो उसकी दुर्दशा थी, वह पूरी तरह समाप्त हो चुकी थी। वह जानती थी कि एक आत्मा ने उस समय उसके अन्दर प्रवेश किया था। वह मेरे पास आई। उसने बताया कि वह जानती है कि उसके अन्दर दस या ग्यारह आत्माएँ हैं और वह उन्हें झेल नहीं पाती।

तो अतिचेतन से इस प्रकार का रोग निवारण भी होता है। मान लो कोई वास्तुकार ऐसे लोगों के पास जाए तो वह मृत वास्तुकारों की आत्मा अपने अन्दर बुला सकता है। Jack The Ripper *(हत्यारा जैक) के अन्दर भी एक मृत हत्यारे की आत्मा था। व्यक्ति में ऐसी चीजों के प्रति झुकाव भी होना चाहिए। ऐसे लोगों में ये दुर्बलता होती है और इसी कारण से वो आसानी से भूतबाधित हो जाते हैं, अन्यथा ऐसा नहीं होता। आपका मस्तिष्क यदि दुर्बल हो और आपमें इन चीजों के प्रति दुर्बलता हो तब ये मृत आत्माएं आपको पकड़ लेती हैं। शारीरिक पक्ष में यदि कोई समस्या है तो अतिचेतन सहायक हो सकता है। यदि मानसिक समस्या है तो अवचेतन लोग सहायता कर सकते हैं। परन्तु उनकी सहायता अस्थाई होती है और फिर वे बहुत वेग से वापिस आ जाते हैं।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी चैलशम रोड लन्दन, 24.05.1981)

★ परम पूज्य श्रीमाताजी के प्रवचन के बाद एक साधक उनसे मांसाहार के बारे में पूछता है, उस प्रश्नोत्तरी का सारांश।

श्रीमाताजी :

*माँस...ठीक है, अब मैं आपको माँस के विषय में बताऊंगी, बहुत आवश्यक है। देखिए, मानव के प्रति हमारे हृदय में करुणा अवश्य होनी चाहिए। चूज़ों (*Chickens*) को बचाने का क्या लाभ है? क्या मैं उन्हें आत्म-साक्षात्कार दे सकती हूँ? सहज बात है। अब देखें, करुणा में भी यदि आप चूज़ों को खाएं...खा सकते हैं...क्योंकि चूज़े को जब आप खाते हैं तब वह विकास प्रक्रिया में चला जाता है, अपनी विकास प्रक्रिया को सुधारता है।*

परन्तु आपको ऐसे पशु नहीं खाने चाहिए जिनका आकार आपसे बड़ा हो क्योंकि इनसे आपको कष्ट होता है, समस्याएं होती हैं और इनका माँस आपको आक्रामक बना देता है। आक्रामक पशु या अपने से बड़े आकार के पशु को खाने वाले व्यक्ति अधिकतर पशु अवस्था में पहुँच जाते हैं क्योंकि वे आक्रामक हो जाते हैं। क्योंकि...ये बड़े आकार के पशु आपसे बड़े हो गए हैं, इसी कारण से ये पशु हैं...। अतः व्यक्ति को अपने से बड़े आकार के पशुओं का माँस नहीं खाना चाहिए। इन पशुओं में करुणा का एहसास भी होता है। इन पशुओं में आपके प्रति लगाव (एकत्व) होता है। उदाहरण के रूप में, डॉलफिन को लें। डॉलफिन-नाविक न तो कभी डॉलफिन को मारेंगे और न इसका माँस खाएंगे क्योंकि यह मानव स्तर के बिल्कुल करीब है। ये बिल्कुल हमारे जैसी है, इसमें भावनाएं हैं, भावनाओं का एहसास है। यह आपका

मनोरंजन कर सकती है आदि-आदि। अतः यह उच्च पशु है। परन्तु यदि हम कीड़े-मकोड़ों की भी चिन्ता करने लगें तो कहाँ तक जा सकते हैं?...

...अतः हमारी करुणा का विस्तार सर्वप्रथम मानव की तरफ होना चाहिए। क्या हम अपने साथियों के प्रति करुणामय हैं? हम नहीं हैं। सर्वप्रथम आइए इसका प्रयत्न करें। ठीक है? सर्वप्रथम इसका प्रयत्न करें। मानव के प्रति करुणामय होने का, और आप हैरान होंगे, इसका कभी अन्त न होगा। हम मानव की सीमाओं को पार नहीं कर सकते। फिर उन पशुओं के प्रति करुणामय होने का प्रयत्न करें जो हमारे साथ रहते हैं, ठीक है, कुत्ते, घोड़े, गाय, तथा अन्य सभी पशु जो हमारे साथ रहते हैं, डॉलफिन मछलियाँ जो विकसित हो रही हैं। वो पहले से ही विकसित हो रही हैं। यह विकासशील अवस्था है। परन्तु यदि आप चूज़े खाते हैं, यदि मैं चूजा खाती हूँ तो मुझे पूरा विश्वास है कि यह कुछ बेहतर बन जाएगा, पहले से बेहतर, इसका कुछ विकास होगा-इसमें कोई सन्देह नहीं है। अतः खटमलों और मच्छरों के प्रति हमारी करुणा किसी काम की नहीं। मानव के प्रति करुणा-हम तो अपने बच्चों के प्रति भी करुणामय नहीं हैं। आप जानते हैं कि इस देश में, मैं हैरान थी, पहले मैं कहा करती थी, इंग्लैण्ड में माँ-बाप प्रतिदिन दो बच्चों की हत्या कर देते हैं...।

...और हमें वो पशु खाने चाहिएं जिनकी नस्ल खत्म होने वाली न हो। जहाँ तक हो सके हमें सभी पशुओं की रक्षा करनी चाहिए। इनकी हत्या करके उनकी नस्ल खत्म नहीं करनी चाहिए। यह तो हर चीज की अति में जाना होगा। जैसे हम आमतौर पर करते हैं, ठीक है?

इसके विपरीत, मैं कहूँगी कि जिन लोगों ने बहुत अधिक मांसाहार किया है वो बहुत अधिक मांसाहार न करें। मांसाहार थोड़ा कम कर देना चाहिए। ऐसा करने से वे कम आक्रामक हो जाएंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु भारत में, आप देखते हैं, हम बहुत अधिक शाकाहार करते हैं, ये भी आवश्यक नहीं है। हम थोड़ा-सा माँस भी खा सकते हैं। आप भी पतला माँस खा सकते हैं या चिकन का माँस आदि, ये ठीक है। परन्तु भैंसे, बैल, घोड़े, हाथी, शेर और साँपों का माँस न खायें। ये माँस आपके लिये अच्छे नहीं हैं। लोग साँप खाते हैं, फणिहर साँप खाते हैं, मैं नहीं जानती और क्या-क्या। छिपकलियाँ और न जाने क्या। कहने से अभिप्राय है कि ये सब चीज़ें नहीं खानी चाहिएं। मेंढकों जैसे जीव भी नहीं खाए जाने चाहिए। मेंढक तो बहुत ही अजीब जीव है। मेंढक बहुत ही विशेष जीव है, इसके प्रेम के कारण मैं कह रही हूँ कि इनको नहीं खाया जाना चाहिए। मैं नहीं जानती परन्तु लोगों ने पाया है कि पूरी तरह से बन्द प्राचीन चट्टानों में भी मेंढक मौजूद हैं। वहीं पर मेंढक के लिए कुछ जल पहुँच जाता है। मेंढक परमात्मा का बहुत प्यारा, विशेष जीव है। अरबों वर्षों से मेंढक जीवित है। कल्पना करें कि ऐसा किस प्रकार हो सकता है? इनमें कुछ तो विशेष होगा। उनके प्रेम के कारण हमें चाहिए कि उनका माँस न खाएँ। या उदाहरण के रूप में, बन्दर कहाँ खाए जाते हैं-आस्ट्रेलिया में, इंडोनेशिया में? यहाँ ऐसा नहीं किया जाना चाहिए। बन्दर भी बहुत ही अद्भुत जीव है। हमें ऐसे पशु खाने चाहिएं जिनकी नस्ल खत्म न हो। जहाँ तक सम्भव हो हमें चाहिए कि पशुओं

की रक्षा करें। वध करके इन्हें समाप्त न कर दें। जैसे हम करते हैं ये तो हर चीज़ की अति में जाना है। ठीक है? **(परम पूज्य श्रीमाताजी, कैक्स्टन हॉल, इंग्लैण्ड, 03.1982)**

★ **...आत्मासाक्षात्कार से आपमें दिव्यविवेक विकसित होता है तथा दिव्य सद्-सद्विवेक भी**

प्रश्न : वह जानना चाहेगा कि क्या काम-शक्ति का कुण्डलिनी जागृति से कोई सम्बन्ध है?

श्रीमाताजी : *कुछ नहीं, उसका कोई काम नहीं, ये गलत धारणा है। क्या आपने चार्ट लगा दिया है? अब वहाँ देखें, नीचे के हिस्से में जहाँ लाल चक्र दिखाई दे रहा है, यह चक्र मल विसर्जन तथा काम-शक्ति (जो हमारी सभी यौन-गतिविधियों तथा अन्य मलविसर्जन के कार्यों के देखती है) को देखता है। कुण्डलिनी इससे ऊपर है। दूसरे, जैसे ईसामसीह ने स्पष्ट रूप से कहा है कि, "आपकी दृष्टि भी अपवित्र नहीं होनी चाहिए," (*Thou shall not have adulterous eyes*)। क्योंकि कुण्डलिनी यहाँ पर, ईसामसीह के द्वार पर रुकती है, आज्ञा चक्र में। क्योंकि यदि आपकी दृष्टि अस्थिर है तो आज्ञा चक्र अवरुद्ध हो जाता है। अत: उन्होंने आज्ञा चक्र के विषय में स्पष्ट कहा कि "आपकी दृष्टि भी अपवित्र नहीं होनी चाहिए।" परन्तु सहजयोग में हम अच्छे वैवाहिक जीवन में विश्वास करते हैं, बेढबी कामविकृतियों में नहीं। परन्तु हमें आपको कुछ बताना नहीं पड़ता क्योंकि आप अपने स्वामी बन जाते हैं, आप अपने गुरु बन जाते हैं क्योंकि आत्मा आपकी गुरु है और एक बार जब आप हर चीज को आत्मा के प्रकाश में देखने लगते हैं तो स्वयं सभी विकृतियों को त्याग देते हैं। उदाहरण के रूप में, अंधेरे में आपने एक साँप पकड़ा हुआ है, आप इसे देख नहीं सकते। मैं यदि आपसे साँप छोड़ने के लिए कहूँ तो आप कहेंगे, "नहीं, मैंने रस्सी पकड़ी हुई है क्यों मैं इसे छोड़ दूँ?" परन्तु यदि प्रकाश आ जाए तो तुरन्त आप साँप को छोड़ देंगे। अत: आत्म-साक्षात्कार से आपमें दिव्यविवेक तथा सद्-सद्विवेक विकसित होता है।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दक्षिण अमेरिका, बोगोता, कोलम्बिया, 20.09.1988)

★ **...कुण्डलिनी उठने के समय यह केन्द्र अपनी सारी मल-विसर्जन गतिविधियाँ बन्द कर देता है...।**

प्रश्न : क्या कुण्डलिनी और कामुकता में कोई सम्बन्ध है?

श्रीमाताजी : *बिल्कुल नहीं! बिल्कुल नहीं! शून्य। देखो, यहाँ मैं आपको दिखाऊंगी। बहुत अच्छा प्रश्न है। मैं अवश्य इसे स्पष्ट करना चाहूँगी। आप कुण्डलिनी को देखें। कुण्डलिनी सातवें चक्र से ऊपर है। सातवाँ चक्र सभी मल विसर्जन के कार्यों को देखता है, चिकित्सकों की भाषा में इसका नाम* Pelvic Plexus *है। यह यौन-गतिविधियों को भी देखता है। यह कुण्डलिनी के नीचे स्थित है, कुण्डलिनी से ऊपर नहीं। कुण्डलिनी केवल छ: चक्रों का भेदन करती है। सातवाँ चक्र अबोधिता का चक्र है, इसी कारण से यह चक्र यहाँ बनाया गया है क्योंकि अबोधिता मल के तालाब के ऊपर कमल की तरह से है, और जब कुण्डलिनी उठती है तब यह चक्र सभी मल विसर्जन गतिविधियों को रोक देता है और*

व्यक्ति अबोध बन जाता है। इसी कारण से ईसामसीह ने कहा था कि परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए आपको नन्हें बच्चों सम बनना पड़ेगा। यह फ्रॉयड से ली हुई बहुत गलत धारणा है, मैं सोचती हूँ कि फ्रॉयड ने आप लोगों को पूर्णत: नष्ट कर दिया है। एड्स रोग के लिए वही पूरी तरह जिम्मेदार है, सभी यौन विकृतियों के लिए वही जिम्मेदार है। यहाँ तक कि आस्ट्रिया में जब मैंने कहा कि वह पूर्णत: अधकचरा व्यक्ति था तो सभी ने खुशी से तालियाँ बजाईं।

श्रीमती जी आप मुझे ये प्रश्न समाप्त करने दें। मैं तुम्हें बताऊंगी कि मेरे कहने का ये अभिप्राय नहीं है कि आप संन्यासी बन जाएँ या विवाह न करें। आपको विवाह करना होगा, अच्छे परिवार बनाने होंगे, अत्यन्त विवेकमय वैवाहिक जीवन बिताना होगा। ऐसा करना होगा। सहजयोग में बहुत सुन्दर परिवार हैं और बहुत सुन्दर बच्चे हैं और मुझे खुशी है कि जब से मैं यहाँ आई हूँ लोग पारिवारिक जीवन की बात करते हैं और पारिवारिक जीवन के सौन्दर्य को समझने लगे हैं। आप लोगों के बारे में मैं बहुत खुश हूँ। हाँ, श्रीमती जी अब कहिए।

प्रश्न : तो आप कह रही हैं कि परमात्मा और मानव एक हैं और आप हमें परमात्मा से जोड़ने का केवल प्रयत्न कर रही हैं इसके लिए कोई पैसा नहीं दिया जा सकता और न ही कोई मूर्खता की जा सकती है। उनके (साधक) पास केवल स्वच्छ और खुला मस्तिष्क होना आवश्यक है।

श्रीमाताजी : *हाँ, यही बात है, यही बात है।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी मियामी, यू.एस.ए., 03.06.1990)

★ **...जब कुण्डलिनी उठती है तो मल विसर्जन के कार्य पूरी तरह से रुक जाते हैं।**

प्रश्न : काम और कुण्डलिनी के बीच क्या सम्बन्ध है, क्या आप एड्स के बारे में कुछ बताएंगी?

श्रीमाताजी : *अब यहाँ आपको ये लाल चक्र जो दिखाई दे रहा है, ये मूलाधार चक्र है, पहला चक्र, अबोधिता का चक्र है। हमारी अबोधिता कभी समाप्त नहीं होती। हम जो चाहे करते रहें। अबोधिता इस प्रकार से आच्छादित हो जाती है जैसे बादल आकाश को आच्छादित कर देते हैं। आप देखें, कुण्डलिनी को ऊपर स्थापित किया गया है। अत: इसका यौन गतिविधियों से कोई लेना देना नहीं है क्योंकि यह मूलाधार चक्र अन्तिम चक्र है, सातवाँ चक्र-या-पहला चक्र-आप जो चाहे कहें। यह मल विसर्जन, यौन गतिविधियाँ आदि का चक्र है। कुण्डलिनी का काम (sex) से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके विपरीत व्यक्ति शिशु सम अबोध बन जाता है। कुण्डलिनी जब उठ रही होती है तो मल विसर्जन के सारे कार्य पूरी तरह से रुक जाते हैं और हमारी अबोधिता की पूरी शक्ति कुण्डलिनी के उत्थान में मदद करती है। उस समय इसका काम से बिल्कुल कोई सम्बन्ध नहीं होता।*

मैं नहीं कहती कि इन सब चीज़ों में बुराई है, परन्तु इनमें कुछ पावना भी होनी चाहिए।

विवाह के बाद लोग विवेकशील हो जाते हैं, यहाँ तक कि यौन जीवन के विषय में भी लोग अत्यन्त विवेकशील हो जाते हैं।

सहजयोग से एड्स रोग ठीक हुआ है, इसमें कोई सन्देह नहीं, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु मैंने देखा है कि एड्स के रोगियों की भी दो श्रेणियाँ हैं-एक वो जो स्वयं को शहीद मानते हैं, मानो उन्होंने कोई महान् उपलब्धि पा ली हो, कोई बहुत बड़ा देश पा लिया हो या ऐसी ही कोई बहुत बड़ी चीज! इस विषय में उनमें बहुत उत्साह होता है। दूसरी श्रेणी के लोग वो हैं जो जीना नहीं चाहते, बिल्कुल जीना नहीं चाहते। अतः एड्स पीड़ित प्रायः दो किस्म के लोग होते हैं। बहुत कम लोगों को आप मध्य में पाते हैं। आस्ट्रेलिया में हम किसी प्रकार से पाँच लोगों को ठीक कर पाए। उनमें से एक विवाहित जोड़ा था जो रोग मुक्त हो गया और एक अन्य व्यक्ति जो ठीक हुआ, नौ वर्ष पहले की बात है, वो अब भी ठीक है। परन्तु उनमें से दो पुनः बुरी आदतों के शिकार हो गये या, मैं नहीं जानती, उन्होंने क्या किया। उनमें से एक के पिता ने मुझे बताया श्रीमाताजी आप बस उन्हें क्षमा कर दें। और मैं नहीं जानती क्या हुआ, पुनः उन्हें एड्स हो गया।

अतः यह अत्यन्त दुष्कर क्षेत्र है जिसमें व्यक्ति को कार्य करना है क्योंकि लोगों को विश्वास नहीं दिलाया जा सकता कि वो रोगमुक्त हो सकते हैं। उनमें से कुछ तो सोचते हैं, "बुराई क्या है?" पश्चिम का ये महानतम मन्त्र है "बुराई क्या है?" आप उन्हें कुछ भी बताएं, "बुराई क्या है?" ये पंक लोग इतने भयानक रंगों का उपयोग करते हैं कि वो अन्धे तक हो जाते हैं। मैंने उनसे कहा, "तुम अपने सिरों पर इतने भयानक रंगों का उपयोग क्यों करते हो जिनसे तुम अन्धे हो जाओ? "बुराई क्या है?" मैंने कहा, "तुम अन्धे हो जाओगे।" कहने लगा, "बुराई क्या है?" कहने से अभिप्राय ये है कि, मेरी तो समझ में नहीं आता, इन्हें उत्तर कैसे दिया जाए? अत्यन्त सनकीपन है। ऐसा नहीं है वे स्वयं को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। नष्ट करना उन्हें अच्छा लगता है। लोग स्वयं को नष्ट करना चाहते हैं। मैं नहीं जानती विनाश की ये धारणा कहाँ से आ गई है? स्वयं को बनाने, जीवन का आनन्द लेने, उच्च लक्ष्य की ओर देखने के स्थान पर वे हमेशा कोई न कोई गन्दी, सड़ी हुई, पूर्णतः अमानवीय या अवमानवीय चीज़ों की ओर देखते रहते हैं। मैं नहीं जानती किस प्रकार इन प्रवृत्तियों का विकास हुआ!

कैंसर रोग, निःसन्देह कई प्रकार के कैंसर रोग ठीक हुए हैं। रक्त कैंसर रोगी, उनमें से कुछ को कहा गया था कि एक महीने में तुम्हारी मृत्यु जो जाएगी, क्योंकि आजकल डॉक्टर लोग ईमानदार हैं और वो प्रमाणपत्र दे देते हैं कि आप एक महीने में मरने वाले हैं। आठ, नौ वर्ष पूर्व एक व्यक्ति के साथ ऐसा ही हुआ। वह अब भी ठीक-ठाक है। ऐसे तीन लोग हैं जो पूरी तरह से ठीक हैं। ऐसे बहुत से लोग रोगमुक्त हुए हैं। तो इस प्रकार इलाज होता है। परन्तु यदि आप देखें, कि परमात्मा के पास यदि थोड़ी भी सामान्य बुद्धि है, तो वे ऐसे लोगों को क्यों ठीक करेंगे जिन्होंने प्रकाश ही नहीं देना? अधिकतर रोगी ठीक होकर चले जाना चाहते हैं। अन्य लोगों को प्रकाश देने के लिए उन्हें ठीक किया जाता है। हम ऐसे दीपकों की

मरम्मत नहीं करते जो प्रकाश ही नहीं देंगे। परन्तु अपनी करुणा के कारण मैं सोचती हूँ परमात्मा ऐसा कर देते हैं। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, फिलाडेल्फिया, 15.09.1993)***

★ मृत्यु जैसा कुछ भी नहीं, मृत्यु तो मात्र एक जीवन से दूसरे जीवन में परिवर्तन है

प्रश्न : मानव को मृत्यु से भय क्यों लगता है?

श्रीमाताजी : *"क्योंकि आप अज्ञानता में फँसे हैं। अचानक यदि बत्ती चली जाए तो आप डर जाएंगे क्योंकि आपको ज्ञान नहीं है। मृत्यु जैसा कुछ भी नहीं है, ये तो एक जीवन से दूसरे जीवन में परिवर्तन है। इसके बाद आपको किसी चीज का डर नहीं रहता, किसी चीज का नहीं। हर समय आपकी रक्षा की जाती है। आप इसको महसूस कर सकते हैं कि आपकी रक्षा की जा रही है। वास्तव में आप यह महसूस करते हैं। जिस प्रकार लोगों ने घटनाओं के विषय में मुझे बताया वह पूर्णत: चमत्कारिक है लोगों ने मुझे लिखा कि किस प्रकार उनकी रक्षा की गई, किस प्रकार उन्हें बचाया गया। वे स्वयं विश्वास न कर पाए! क्योंकि सभी देवदूत आपके साथ हैं। परन्तु यदि मैं आपको यह सब बताऊंगी तो आप विज्ञान की आधुनिक चीज़ों पर विश्वास नहीं करेंगे। परन्तु अब विज्ञान ने भी 'ऊर्जाणुवाद सिद्धान्त' (*Quantum Theory*) जैसी बहुत-सी चीजें खोज ली हैं। आप इनकी व्याख्या नहीं कर सकते।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, संयुक्त राष्ट्र सभा, न्यूयार्क, 04.10.1993)

★ क्या आपने परम चैतन्य की शीतल लहरियों को महसूस किया है

प्रश्न : सहजयोग और रेकी में क्या कोई सम्बन्ध है या वे परस्पर समानान्तर हैं?

श्रीमाताजी : *मैं किसी चीज़ की आलोचना नहीं करना चाहती, आपको केवल इतना देखना चाहिए कि किस चीज़ से आपने क्या पाया है,... पहला प्रश्न किसी कार्य को करने से आपको क्या प्राप्त हुआ? क्या आपको आत्म-साक्षात्कार मिला? क्या आपको परमात्मा का ज्ञान प्राप्त हुआ? क्या आपको परम चैतन्य की शीतल लहरियाँ महसूस हुईं? इसी प्रकार, माँ होने के नाते मैं कहूँगी कि आपको इससे क्या मिला? बाजार में बहुत से लोग हैं, बहुत लोग हैं। मैं आपसे ये प्रश्न करूँगी कि बच्चे! आपको क्या प्राप्त हुआ? इन चीजों का कोई अन्त नहीं है।*

प्रश्नः क्या कोई रोगमुक्त करने वाली शक्ति है, जो आज रात ध्यानधारणा से मिलेगी?

श्रीमाताजी : *हाँ! सर्वप्रथम व्यक्ति को जानना होगा कि ये शक्ति क्या है। आप समझें। ये लोगों को रोगमुक्त करती हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं, ये रोगमुक्त करती हैं। पहले ये आपको रोगमुक्त करेगी और फिर ये अन्य लोगों को रोगमुक्त करेगी। इसमें कोई सन्देह नहीं, यह ऐसा करती है।*

★ मैं नहीं जानती कि कुण्डलिनी योग के नाम पर लोग क्या करते हैं?

प्रश्न : आप जो कुण्डलिनी योग सिखाती हैं क्या इसका तन्त्र योग से कोई सम्बन्ध है?

श्रीमाताजी : *देखिए, नाम कुण्डलिनी योग है, परन्तु मैं आपको बता दूं कि इसका कुण्डलिनी से कोई लेना-देना नहीं है। यदि आप शब्दार्थ को देखें तो सहजयोग और कुण्डलिनी योग एक से हैं। परन्तु वास्तव में मैंने देखा है कि यह कुण्डलिनी योग भयानक है। इसके कारण लोगों को बहुत कष्ट उठाने पड़े। अत: यह बिल्कुल भिन्न है, मैं नहीं जानती कि कुण्डलिनी योग के नाम पर वे क्या करते हैं!*

प्रश्न : क्या आप मानती हैं कि कुण्डलिनी वही जीवनदायिनी शक्ति है जिसे चीन के लोग 'ची' नाम से पुकारते हैं, जो हमारा एक अंश है, विश्व का एक अंश है जिस तक हम इस प्रकार पहुँच सकते हैं तथा Chi-Gong और Tai-Chi के माध्यम से भी। क्या ये वही शक्ति है?

श्रीमाताजी : *हाँ, हाँ। ये सत्य है। परन्तु आप देखें, इसका उससे कुछ सम्बन्ध है और वही हमारा अहं और प्रतिअहं है। चीनियों ने जो लिखा वह ठीक है। परन्तु चीनी लोग नहीं जानते कि लाओत्से कौन है-क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? लाओत्से वह व्यक्ति थे जिन्होंने इसके बारे में बताया। वही वे व्यक्ति हैं जिसने उन्हें कुण्डलिनी के विषय में बताया और वे ये भी नहीं जानते कि लाओत्से कौन हैं। अमेरिका में, विशेष रूप से, मैं नहीं जानती कि किस प्रकार के चीनी लोग रहते हैं। यह ज्ञान का महान् स्रोत है और जो भी उन्होंने कहा वह पूर्णत: सत्य है। परन्तु सहजयोग में हर चीज का समन्वय हो जाता है। सारे ज्ञान, सारे ग्रन्थ, सभी कुछ समन्वित हो जाता है। पूर्णत: समन्वित, क्योंकि प्रकाश में आप हर चीज में मौजूद सत्य को देखते हैं। हर चीज में सत्य निहित है, हर धर्म में सत्य है...।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यूयार्क, यू.एस.ए. 16.06.1999)

सहजयोग आचारसंहिता पर कुछ कथन तथा परमेश्वरी माँ की कुछ अन्य मधुर कहानियाँ

"मैं आपको श्रीकृष्ण और राधा की एक अत्यन्त मधुर कहानी सुनाकर जाऊंगी। एक बार ऐसा हुआ कि... ।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, जंगपुरा, नई दिल्ली, भारत, 09.02.1983)

"तो उन्होंने उनके (राधाजी) चरणों की धूल ली। यह केसर की तरह से पीले रंग की थी या पुष्प के पराग की तरह। धूल ले जाकर उन्होंने श्रीकृष्ण को दी। श्रीकृष्ण बोले, मैं जानता था कि श्रीराधा धूल भेज देंगी, अब मुझे यह खा लेने दो।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, जंगपुरा, नई दिल्ली, भारत, 09.02.1983)

"ज्यों-ज्यों आप सहजयोग में उन्नत होते हैं, एक अवस्था से दूसरी अवस्था तक, इसमें भिन्न प्रकार के आनन्द हैं। जैसे हम कह सकते हैं, आत्मा। जब आप आत्मा को देखते हैं तो आपको जो आनन्द मिलता है वह 'स्वानन्द' है अर्थात् आप स्वयं अपनी आत्मा को महसूस करते हैं और बहुत प्रसन्न होते हैं। तब आप अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देते हैं और 'परमानन्द' प्राप्त करते हैं, अन्य लोगों का आनन्द।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना आश्रम, 02.05.1985)

★ ...बहुत से लोगों ने गीता को गलत ढंग से समझा

जब तक आप निर्विचार चेतन नहीं हो जाते, आप उन्नत नहीं हो सकते। यह पहली चीज़ है। दूसरे, बिना निर्विचार चेतन हुए आप पूर्ण सत्य को नहीं जान पाते। तब आप सत्य को केवल अपने मस्तिष्क के माध्यम से समझते हैं। आपको अपने हाथ नहीं फैलाने पड़ते, कोई प्रश्न नहीं करना पड़ता, ये तो एक कम्प्यूटर की तरह से है जो कार्य करता है, ये बस आपको उत्तर दे देता है। उस अवस्था में आप परमात्मा से पूर्णतया एकरूप होते हैं। आप वैसा करते है और हैरान होते हैं कि यह किस प्रकार कार्यान्वित हुआ। श्री कृष्ण के साथ हर चीज़ हर क्षण कम्प्यूटरीकृत है।

परन्तु वे आपकी परीक्षा भी लेते हैं, आपके साथ वो अपनी लीला भी करते हैं। ये बात व्यक्ति को जान लेनी चाहिए क्योंकि वे कूटनीतिज्ञ हैं। उन्होंने किस प्रकार आप पर अपनी लीला कर दी, यह देखना बहुत ही रुचिकर है। उनकी लीला की शैली।

जैसे उन्होंने अर्जुन से कहा कि "मैं युद्ध नहीं करूंगा", अर्जुन ने पूछा, "ठीक है, आप क्या करेंगे?" "मैं तुम्हारा सारथी बनूंगा। मैं तुम्हारा रथ हाँकूंगा।" किसी को भी यह बात बड़ी अजीब लगेगी, "ये क्या है, स्वयं को मेरा गुरु कहने वाला ये महान् व्यक्ति जो कहता है कि मैं उसका सर्वोत्तम शिष्य हूँ, सभी कुछ, और यहाँ पर वो केवल सारथी बनकर मेरी सहायता करना चाहता है! यहाँ वे अर्जुन के साथ चालाकी करने का प्रयत्न कर रहे हैं, मानो वे भविष्य के विषय में जानते हों कि क्या होने वाला है। तो पूरी गीता का सृजन हुआ क्योंकि वे मात्र सारथी थे और अर्जुन ने कहा कि, "मैं अपने लोगों से युद्ध नहीं कर सकता, अपने दादाओं और सम्बन्धियों से मैं युद्ध नहीं कर सकता। यदि आप कहते हैं कि गीता शान्ति के लिए है, तो ऐसा नहीं है, यह शान्ति के लिए नहीं है। परन्तु श्री कृष्ण कहते हैं, "वे पहले ही मर चुके हैं, तुम किसका वध कर रहे हो? इन मृत लोगों को यदि तुम मार भी दोगे तो क्या होगा? परन्तु यदि तुम युद्ध भूमि से भाग खड़े होते हो तो लोग तुम्हें 'कायर' कहेंगे, तब तुम्हें क्या मिलेगा? परन्तु यदि तुम धर्म के लिए युद्ध करते हो तो तुम्हें पुनर्जन्म प्राप्त होगा–मोक्ष प्राप्त होगा।"

सभी चीज़ों में बहुत बड़ी चालाकी है। मोहम्मद साहब ने भी यही बात कही थी, ईसामसीह ने भी यही बात कही, हिन्दुओं ने भी ऐसा ही कहा—कि उन्हें लगता है कि वे धर्म के लिए युद्ध कर रहे हैं। अर्जुन के सम्बन्ध में ये बात स्पष्ट थी कि कोई व्यक्ति राक्षस है और भयानक है, अधर्मी है, अतः वह उनसे युद्ध कर रहा था। ये ठीक है, परन्तु अन्य लोगों का क्या है जो कहते हैं कि "हम धर्म के लिए प्राण न्यौछावर करने जा रहे हैं।" मैं बोस्निया के एक मुसलमान से मिली जो हाल ही में किसी प्रकार बचकर आया था। मैंने उससे पूछा, "क्यों, तुम युद्ध क्यों करना चाहते हो? जब तुम निराकार परमात्मा को मानते हो तो भूमि के लिए युद्ध क्यों करते हो?" उसने कहा, "कुरान में लिखा है कि यदि तुम धर्म के लिए लड़ोगे तो तुम्हें मोक्ष प्राप्त होगा।" श्री कृष्ण ने भी यही बात कही है। परन्तु गलती कहाँ है? गलती ये है : धर्म क्या है? क्या आप धार्मिक हैं? क्या आप धर्म में खड़े हुए हैं? उन दिनों में युद्ध शस्त्रों होते थे, फिर भी कृष्ण ने अपने हाथ में शस्त्र क्यों नहीं से उठाया? यह दूसरी बात है। पहली तो ये कि कोई

धार्मिक नहीं है, वे सब अधर्मी हैं-वो स्वयं को हिन्दू, मुसलमान या ईसाई कुछ भी कहें—सभी अधर्मी हैं, वे धर्मानुसार नहीं चलते और दूसरे वे केवल एक दूसरे की हत्या कर रहे हैं। एक अधर्मी दूसरे अधर्मी का वध कर रहा है। या वे आपस में ही लड़ रहे हैं। हर आदमी सोचता है, "मैं ठीक हूँ और जो भी मैं कर रहा हूँ वह ठीक है।" तो पहली शर्त जो रखी गई, कि धर्म के लिए आपको लड़ना होगा। व्यक्ति को पता लगाना चाहिए कि क्या हम धर्म के लिए लड़ रहे हैं? परन्तु वे (श्री कृष्ण) बहुत ही सूक्ष्म थे। उन्होंने शस्त्र को हाथ भी नहीं लगाया, बिल्कुल नहीं। उन्होंने रथ के घोड़ों की लगाम पकड़ी क्योंकि श्री कृष्ण मस्तिष्क हैं, वे विराट हैं, महा-मस्तिष्क हैं। उन्हें किसी शस्त्र की आवश्यकता नहीं है।

उस वक्त उन्होंने किया ये कि अपना मस्तिष्क अत्यन्त-अत्यन्त गहन ज्ञान के लिए उपयोग किया, उसकी व्याख्या अर्जुन के सम्मुख की। कल्पना करें कि युद्ध के मैदान में उन्होंने अर्जुन को बिठाया नहीं, "ठीक है तुम मेरे शिष्य हो, यहाँ बैठो, मैं तुम्हारा गुरु हूँ, मैं तुम्हें बताऊंगा।" कुछ नहीं। युद्ध के मैदान में जहाँ सभी लोग युद्ध करने के लिए आए थे, युद्ध आरम्भ होने वाला था, बड़ी शान्ति से उस समय वे अर्जुन को बताने लगे। वे वहाँ क्या कर रहे थे? कोई शस्त्र नहीं चला रहे थे, कुछ भी नहीं। वे अर्जुन को परामर्श दे रहे थे, उसे बता रहे थे। उनके सूक्ष्म मस्तिष्क को देखें। गीता के पहले अध्याय में परिचय देते हुए उन्होंने कहा, "आपको अपनी वर्तमान अवस्था से ऊँचा उठना है, तत्पश्चात् उन्होंने प्रबुद्ध व्यक्ति, की परिभाषा बताई, स्थित-प्रज्ञ व्यक्ति की। कहने से अभिप्राय ये है, कोई व्यापारी प्रायः एक डॉलर से शुरु करता और सौ डॉलर्स तक आता, उनके बिल्कुल विपरीत। परन्तु उन्होंने पहली बात जो बताई वो ये थी कि आपको स्थितप्रज्ञ बनना है अन्यथा कोई लाभ नहीं।' स्थितप्रज्ञ बने बिना आप धार्मिक नहीं हो सकते, यह तत्व की बात है। श्री कृष्ण को समझने के लिए, आपके पास, वास्तव, में बहुत सूक्ष्म मस्तिष्क होना आवश्यक है अन्यथा आप नहीं समझ सकते। अतः वो बताते हैं कि "ये जो उदासीनता तुम्हारे अन्दर विकसित हो गई है, तुम्हें चाहिए कि इसे त्याग दो। हम इसे कैवल्य कहते हैं। और अब तुम्हें करना क्या है कि अपने हाथों में शस्त्र पकड़कर युद्ध करो।"

तब अर्जुन ने उनसे अन्य प्रश्न पूछे, "कहा कि आप मुझसे 'निष्क्रिय' होने के लिए कह रहे हैं अर्थात् कोई काम न करने के लिए। तुम्हारे कर्म-अकर्म हो जाते हैं, आप इस तरह की बातें बता रहे हैं तो आप क्यों चाहते हैं कि मैं इनका वध करूं—क्या ये अकर्म है? धीरे-धीरे श्री कृष्ण एक तथ्य की ओर आ रहे हैं कि आपको धर्म के लिए युद्ध करना चाहिए। ये अत्यन्त सूक्ष्म चीज है। सर्वप्रथम पता लगाएं कि तुम धर्म में हो या नहीं। धर्म में यदि आप नहीं हैं तो कौन से धर्म के लिए युद्ध करेंगे?

दूसरी चीज़ 'कर्म' है। अब आप देखें श्री कृष्ण अत्यन्त बुद्धिमान हैं। वे 'दिव्य मस्तिष्क' हैं, अत्यन्त चतुर। दूसरी चालाकी जो वे अर्जुन से कहते हैं—वे उनसे कहते हैं "तुम कार्य कर रहे हो, ठीक है। परन्तु यदि तुम स्थित प्रज्ञ हो तो अपना सारा कार्य परमात्मा के चरण कमलों में छोड़ देते हैं। 'सर्व धर्माणां परित्यज्य मामेकम् शरणम् ब्रज'—सभी धर्मों को त्यागकर केवल मेरी शरण में आ जाओ।

अब 'धर्म' क्या है? समस्या ये है कि लोग श्री कृष्ण को समझते ही नहीं। सभी कुछ श्री कृष्ण और उनकी अपनी अभिव्यक्ति पर केन्द्रित है। वो कहते हैं कि अपना कर्म करो, परन्तु परिणाम परमात्मा के चरण-कमलों में छोड़ दो?—ऐसा कर पाना तब तक सम्भव नहीं है जब तक आप 'स्थितप्रज्ञ' नहीं बन जाते, आत्मसाक्षात्कारी (प्रबुद्ध) नहीं बन जाते। जब आप प्रबुद्ध हो जाते हैं, आपको आत्म-साक्षात्कार हो जाता है, जब आप अपनी या अन्य लोगों की कुण्डलिनी उठाते हैं वो ये नहीं कहते, "श्रीमाताजी, मैं आत्म-साक्षात्कार दे रहा हूँ।" आप ऐसा नहीं कहते, कभी नहीं। आप कहते हैं, "ये घटित हो रहा है", तृतीय पुरुष में बोलते हैं। "ये नहीं आ रही, ये कार्य नहीं कर रही या यह कि ये एक ओर को चल रही है, ये चक्र पकड़ रहा है, वो चक्र पकड़ रहा है।" आप कभी नहीं कहते "मैं कुछ कर रहा हूँ।" 'मैं' समाप्त हो जाती है। जब 'मैं' समाप्त हो जाती है, केवल तभी आप सभी कुछ परमात्मा के चरण कमलों में समर्पण कर सकते हैं। अतः सर्वप्रथम तो धर्म में रहते हुए कार्य करना चाहिए। मान लो, कोई किसी की हत्या करके कहे, "ओह मैंने हत्या कर दी है, मैंने ये कर्म किया है और मैं इसे श्री कृष्ण के चरणों में अर्पण करता हूँ।" लोग ऐसा कर सकते हैं, कहने से अभिप्राय ये है कि लोगों में विशेष प्रकार के मस्तिष्क हैं जो श्री कृष्ण और गीता की व्याख्या भी कर सकते हैं, परन्तु वास्तव में आपको वो करना चाहिए, जो श्री कृष्ण ने कहा था। अतः सबसे पहले आपको 'स्थितप्रज्ञ' बनना चाहिए, 'प्रबुद्ध' व्यक्ति, तब जो कुछ भी आप करेंगे वो स्वतः ही परमात्मा के चरण कमलों में समर्पित हो जाएगा, स्वतः, अपने आप, सहज रूप से।

तीसरी बात जो उन्होंने बताई 'भक्ति' के विषय में थी। लोग कहते हैं कि हम परमात्मा की भक्ति कर रहे हैं, ये, वो, सभी करते हैं, परन्तु इसका फल क्या है? यहाँ भी श्री कृष्ण चतुराई करते हैं। एक ही शब्द पर उन्होंने सबको नचा दिया। वो कहते हैं कि 'भक्ति' करो परन्तु यह अनन्य होनी चाहिए, 'अनन्य' शब्द है—जब कोई अन्य न हो, अर्थात् जब आप मुझसे एकरूप हो जाएं, अर्थात् 'स्थितप्रज्ञ' बन जाएं यानि कि आत्मसाक्षात्कारी। कल्पना करें इस शब्द पर यदि लोग ध्यान दें तो भक्ति की सारी मूर्खता को त्यागकर सर्वप्रथम योग प्राप्त करेंगे ताकि 'अनन्य' बन सकें, और फिर भक्ति करेंगे। श्री कृष्ण मानव मस्तिष्क को बहुत अच्छी तरह जानते थे। मेरे विचार से वे मानव को ईसामसीह से कहीं अधिक समझते थे, निश्चित रूप से, क्योंकि ईसामसीह सीधे सच्चे थे। ईसामसीह ने कहा, "अपनी दाईं आँख निकालकर फेंक दो, अपनी बाईं आँख निकाल कर फेंक दो, अपने हाथ काटकर फेंक दो।" मोहम्मद साहब ने भी ऐसा ही कहा। ऐसा कौन करेगा? तो श्री कृष्ण बहुत चतुर थे, उन्होंने कहा, "स्पष्ट बात को ये नहीं समझेंगे, इन्हें ऐसे ढंग से दो कि ये करते रहें, करते रहें।" हम इतनी भक्ति कर रहे हैं, बहुत से लोग ऐसा करते हैं।

इन 'हरे रामा' वाले लोगों को गले का कैंसर हो रहा है। वो पूछते हैं, "श्रीमाताजी हम तो श्री कृष्ण का नाम लेते हैं हमें क्यों गले का कैंसर होता है?" क्योंकि आपका योग नहीं हुआ है। अब मान लो, मुझे इस देश के राष्ट्रपति से मिलना है तो मुझे सभी मर्यादायें निभानी पड़ेंगी, फिर भी शायद मैं उनसे न मिल पाऊं। परन्तु ये तो परमपिता परमात्मा हैं-सभी राष्ट्रपतियों के

राष्ट्रपति। उनका नाम यदि आपने लेना है—आपने यदि लिंकन या क्लिंटन का नाम लेना है और आप कहे चले जाएं क्लिंटन, क्लिंटन, क्लिंटन, तो ये आपको गिरफ्तार कर लेंगे, इसी प्रकार से यदि आप राम, राम, राम, अल्लाह, अल्लाह, अल्लाह, अकबर, अकबर, अकबर रटे चले जाएंगे तो भी आप गिरफ्तार हो जाएंगे। आपका योग तो हुआ नहीं। तो यह विराट शक्ति, जिसे कुरान में अकबर कहा गया है, भी चतुराई करती है या लीला करती है।

माँ होने के नाते मैं तुम्हें चेतावनी देती हूँ कि आत्म-साक्षात्कार प्राप्त किए बिना कुछ भी कार्यान्वित न होगा। कुछ भी कार्यान्वित न होगा। 'आत्म-साक्षात्कार' के विषय में भी श्रीकृष्ण ने कहा कि तुम्हें बनना होगा।" परन्तु उस समय उन्होंने ये नहीं बताया कि कैसे, किस प्रकार बना जाएगा? क्योंकि आप जानते हैं कि महाविद्यालय पहुँचने पर भी प्रथम वर्ष में ही सब कुछ नहीं सिखा दिया जाता। थोड़ा-सा दिया जाता है, कुछ दूसरे वर्ष में दिया जाता है और कुछ तीसरे वर्ष में। अब सातवें वर्ष में, सहजयोग आपको सभी कुछ पूरी तरह बताने के लिए आया है। परमात्मा सम्पूर्ण है, परन्तु वे पूर्ण ज्ञान दे नहीं देते। गीता का पूरा ज्ञान मूर्ख लोगों के साथ की हुई चतुराई के अतिरिक्त कुछ भी नहीं; क्योंकि यदि श्री कृष्ण ने लोगों को सहजयोग बताया होता तो वो कभी इसे समझ न पाते। अत: उन्होंने कुण्डलिनी के बारे में इतना कुछ नहीं बताया, अन्य गुरुओं ने भी ऐसा ही किया, जैसे उनके शिष्य थे, उन्हें वे उत्क्रान्ति के बारे में बहुत अधिक न बता पाए, क्योंकि ये शिष्य इसके लिए तैयार न थे, उस स्तर के न थे, उनके मस्तिष्क इतने विकसित न हुए थे।

इस कलियुग में जब मैं ये कार्य आरम्भ कर रही हूँ, मुझे लगता है कि लोगों के मस्तिष्क जरूरत से ज्यादा विकसित हो चुके हैं, इतने अधिक विकसित हो गए हैं कि वे मूर्खता पर आ गए हैं, ये सच्चाई है। किसी भी चीज का अति में उपयोग आपको मूर्ख बना देता है और ये लोग भी बिल्कुल मूर्ख बन गए हैं। इन मूर्ख लोगों को किस प्रकार इतनी सूक्ष्म चीज के विषय में बताया जाए? क्या तरीका है? मैं यदि श्री कृष्ण की तरह से बात करती तो अपनी और आपकी शक्ति को नष्ट करने के अतिरिक्त कुछ न होता, आपमें से आधे लोग तो सो ही गए होते, अत: मैंने सोचा सर्वप्रथम इनका योग परमात्मा से करा दूँ। ज़रा-सा भी योग यदि इन्हें मिल जाएगा तो ये समझ लेंगे। क्योंकि परमात्मा से ज़रा-सा भी योग इनके मस्तिष्क को ज्योतिर्मय बनाएगा और ये जान जाएंगे कि जितना कुछ हम जानते हैं उससे आगे कुछ और भी है और इस प्रकार से यह कार्यान्वित होगा।

अत: श्री कृष्ण की चतुराई ने बहुत मदद की है, इसमें कोई सन्देह नहीं। लोग महसूस करने लगे हैं कि इसमें कुछ कमी है। इस्लाम की भी यही बात है—इस्लाम अर्थात् समर्पण—परन्तु समर्पण किसके सम्मुख? मुल्लाओं के सम्मुख या किसी और के? समस्या तब खड़ी हुई जब इस प्रकार धर्मतन्त्र का आरम्भ हो गया...।"

"...जो भी कुछ मोहम्मद साहब या ईसामसीह ने कहा था, ये सब देवदूतों के लिए है।" मैं आपको बताती हूँ कि यह सामान्य लोगों के लिए नहीं है और देवदूत हैं कहाँ? बहुत कम हैं। आत्मसाक्षात्कारी लोग जो पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं वही देवदूत हैं और जो भी कार्य वो करना चाहते हैं उन्हें उससे रोक दिया जाता है। उनमें से अधिकतर ये बात जानते हैं कि ठीक क्या है

गलत क्या है। वो देवदूत कहाँ हैं? बहुत कम हैं। और जो देवदूत हैं उनसे इस प्रकार व्यवहार किया जाता है मानो वे विक्षिप्त लोगों का समूह हों। कोई उन पर विश्वास नहीं करता। एक यहाँ है, एक वहाँ है और एक कहीं और।

तो उनकी शिक्षा देवदूतों के लिए थी। केवल देवदूत उसे समझ सकते थे। परन्तु श्री कृष्ण ने सोचा कि ये इतनी बड़ी संख्या में जो लोग देवदूत नहीं हैं इनके साथ चतुराई क्यों न की जाए। बहुत-से लोग आकर मुझे बताते हैं, "हम प्रतिदिन इसी तरह श्री कृष्ण का नाम जपते हैं, परन्तु हमें कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।" परन्तु उन्होंने कहा था कि पहले "आपको 'स्थितप्रज्ञ' होना होगा।" स्थितप्रज्ञ 'स्थित' अर्थात् स्थापित, पूर्णतः स्थापित। दूसरे अध्याय में पहली बात जो उन्होंने कही। इसके बाद उन्होंने बाकी की चीजें, बताईं और इसी कारण से लोगों ने गीता को गलत ढंग से समझा। परन्तु श्री कृष्ण का विचार ये था कि एक जीवन में ये गलत समझेंगे, दूसरे जीवन में गलत समझेंगे, परन्तु तीसरे जीवन में अवश्य सोचने लगेंगे कि "आखिरकार ये है क्या?" उन्होंने कहा कि "पहले स्थितप्रज्ञ बन जाएं," परन्तु हम स्थितप्रज्ञ नहीं बने तो हमारे अन्दर क्या कमी है? और इस प्रकार से कुछ अन्तर्वलोकन आरम्भ हो जाएगा। ये उनकी धारणा थी, मुझे कहना चाहिए कि उनकी सोच थी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी न्यूजर्सी, यू.एस.ए., 02.10.1994)

★ मैं ही श्री कृष्ण हूँ, अतः आपको समझ लेना चाहिए कि आप मेरे प्रति कितने ऋणी हैं।

"मानसिक रूप से, मैं सोचती हूँ, अधिकतर सहजयोगी समझते हैं कि परमेश्वरी की आज्ञा पालन करना, एकमात्र उपाय हैं–मानसिक रूप से, तार्किक रूप से। चाहे आप किसी चीज को बुद्धि से स्वीकार कर लें परन्तु ये आपका अन्तर्जात स्वभाव तो नहीं है। अतः कल मैंने आपसे बताया था कि किसी चीज को बुद्धि से स्वीकार करने के बाद भी यदि आप कर नहीं सकते तो आपमें दोषभाव आ जाता है। ऐसी स्थिति में अपने गुरु बनकर स्वयं को दण्डित करें। यह अवस्था है जो मिल जाती है, और जब मिल जाती है तो तुरन्त आप देख पाते हैं। मैं जानती हूँ कि कौन समर्पित है?

तो श्री कृष्ण ने कहा है कि "सर्वधर्माणां परित्यज्य मामेकम् शरणम् व्रज" उन्होंने कहा है कि "सारे धर्मों को त्यागकर केवल मेरे प्रति समर्पित हो जाओ।" हमारे देश में जो धर्म हैं, जैसे हम कहते हैं 'पितृधर्म', पिता के प्रति धर्म, 'मातृधर्म', माँ के प्रति धर्म, फिर 'पतिधर्म', तथा सभी प्रकार के सम्बन्धियों के प्रति धर्म। परन्तु जब वे कहते हैं इन सभी धर्मों को मेरे चरणों में समर्पित कर दो तब उनका अभिप्राय ये है कि तुम्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि 'तुम मेरे प्रति कितने ऋणी हो' अर्थात् परमात्मा के प्रति। अब श्री कृष्ण नहीं हैं। मैं ही श्री कृष्ण हूँ, अतः आपको ये ज्ञान होना चाहिए कि आप मेरे प्रति कितने ऋणी हैं। मैंने केवल अपनी भाषा बदली है, वे अपनी उंगली उठाकर कहा करते थे कि सभी कुछ त्याग दो और सभी कुछ मुझे समर्पण कर दो।' मैं ऐसा नहीं करती, मैं बहुत बड़ा प्रवचन देती हूँ और तब आपको रास्ते पर लाती हूँ।" ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, आस्ट्रिया, 04.09.1983)***

★ **...बहुत-सी चीजें घटित होंगी, आप कोई ऐसी चीज देखेंगे, जिसकी आपने कभी कल्पना ही न की हो।**

सहजयोग के प्रथम चरण में आपको मुझसे व्यक्तिगत रूप से मिलने की आवश्यकता थी। संस्कृत भाषा में हम कहते हैं, "ध्येय", लक्ष्य, आपको जो कुछ भी प्राप्त करना होता था, आप चाहते थे कि वह लक्ष्य आपके सम्मुख आ जाए। और जब वह व्यक्ति आपके सम्मुख आ जाता जिसकी आप हर समय कामना करते थे तो आपको प्रसन्नता होती थी। आप स्वयं को सुरक्षित और आनन्दित पाते थे। तब दूसरे चरण में आपमें इतनी अधिक इच्छा नहीं होगी कि माँ हमेशा हमारे सम्मुख हों। आप मुझसे जिम्मेदारी ले लेंगे। यह परमेश्वरी इच्छा है जिसके विषय में मैं आपको बता रही हूँ और आज से आपने इस पर कार्य करना है। मैं आपके साथ हूँ, ये बात आप जानते हैं, परन्तु जरूरी नहीं कि इस शरीर में (साक्षात्) मैं आपके साथ होऊं, क्योंकि मैं तो ये भी नहीं जानती कि मैं इस शरीर में हूँ भी या नहीं। एक बार जब ये इच्छा कार्य करने लगेगी तो आप, आश्चर्य चकित, चमत्कार होते हुए देखेंगे।

माँ जब बच्चे को जन्म देती है तो स्वत: ही उसमें दूध बन जाता है। तो प्रकृति इस प्रकार से हर चीज से जुड़ी हुई है। अपनी दिव्य इच्छा में यदि आप जुड़े हुए हैं तो प्रत्यक्ष झलकता है कि आप दिव्य व्यक्ति हैं। आप मुझे कहीं भी पा सकते हैं। गली में चलते हुए, हो सकता है आप देखें कि श्रीमाताजी आपके साथ चल रही हैं। तो ये दूसरा चरण है जिसे हमने आरम्भ किया है और यदि आप मुझे अपने बिस्तर पर बैठकर आपके सिर पर हाथ रखे हुए पाएं या ईसामसीह या श्री राम रूप में अपने कमरे के अन्दर प्रवेश करते हुए देखें तो आपको झटका नहीं लगना चाहिए। ऐसा घटित होने वाला है, इसके लिए आपको तैयार रहना चाहिए।

आपके साथ बहुत से चमत्कार हो चुके हैं परन्तु ये सब स्थूल स्तर पर हैं। आपने मेरे सिर से प्रकाश निकलते हुए देखा है और कुछ चित्रों ने भी आपको चमत्कार दिखाए हैं। परन्तु बहुत-सी चीजें घटित होंगी, आप ऐसी चीजें देखेंगे जिनकी आप कल्पना ही नहीं कर सकते। आपको विश्वस्त करने के लिए कि आप प्रज्ञालोक के नए क्षेत्र में अपनी उत्क्रान्ति की विशेष ऊँचाई तक पहुँच गए हैं, ये चमत्कार घटित होंगे, क्योंकि यह एक नई अवस्था है, जिसमें क्षैतिज आधार पर अब आप प्रवेश करेंगे।

इस क्षेत्र में आप स्थूल चीजों की माँग करना छोड़ देंगे तथा सूक्ष्म चीजों के लिए भी आपकी माँग समाप्त हो जाएगी और यह वह समय होगा जब आप बहुत शक्तिशाली हो जाएंगे। जैसा आप जानते हैं, मैं जो कहती हूँ वह घटित होता है। परन्तु आपको विकसित होने की आज्ञा नहीं दे सकती। आपके अन्दर कुण्डलिनी का कार्य कर दिया गया है, काफी सीमा तक, अब करुणा का, इसे अन्य लोगों तक फैलाने का नया कार्य आपने करना है। प्रकाश ज्यों-ज्यों बढ़ता है उसका क्षेत्र भी उसी अनुपात में बढ़ता है। अत: आप करुणा के दाता बन जाएं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, रौएन, फ्रांस, 05.05.1984)

★ **अबोधिता कभी नष्ट नहीं होती**

"श्री गणेश शिशु हैं, परन्तु वे विवेक के दाता हैं। तो हम कह सकते हैं कि यदि हम अपने

बच्चों को विवेकमय बनाए रखें तो वो भी विवेक के दाता हैं। कितने विवेकपूर्वक वो बात करते हैं! कुछ तो मुझे आपके विषय में सभी कुछ बताते हैं और ये भी कि आप क्या करना चाहते हैं। वे मुझे पूर्णत: अपना विश्वासपात्र बना लेते हैं। बच्चों के बिना विश्व पुष्पहीन रेगिस्तान की तरह से होता। श्री गणेश ने आपका सृजन किया है, उन्हीं के कारण आपका जन्म हुआ और माँ के गर्भ में उन्होंने ही आपकी देखभाल की। उन्होंने ही इस बात का ध्यान रखा कि ठीक समय पर आपका जन्म हो। उन्होंने ही आपके पोषण, भ्रूण के विकास और मस्तिष्क के विकास को देखा। एक सामान्य ग्रामीण व्यक्ति अत्यन्त व्यवहारिक एवं विवेकशील होता है। एक बार एक सीधा-सादा ग्रामीण कुछ शैतान लड़कों के साथ यात्रा कर रहा था। लड़कों ने सोचा कि वे बहुत चतुर हैं। ये उस ग्रामीण को छेड़ने का प्रयत्न कर रहे थे, एक लड़के ने उससे प्रश्न किया कि "यदि मक्खन 1/4 पौण्ड में मिल रहा हो तो अगले स्टेशन पर अण्डे का मूल्य क्या होगा? और यदि तुम अण्डे का मूल्य नहीं बता सकते तो कम से कम मेरी आयु तो बता दो।" ग्रामीण ने उत्तर दिया, "तुम अवश्य 22 के होंगे।" "तुम कैसे जानते हो?" लड़के ने पूछा। ग्रामीण ने उत्तर दिया, "मेरा एक भाई है जो 11 वर्ष का है और वह आधा पागल है, परन्तु तुम पूरे पागल हो।"

अबोधिता के सामने सारी चतुराई और चुस्ती धरी रह जाती है। बहुत से लोग समझते हैं कि उनकी अबोधिता समाप्त हो गई है। ये आपका आन्तरिक गुण है, आपकी अबोधिता कभी समाप्त नहीं होती। हो सकता है कि जैसे बादल आकाश को ढक लेते हैं वैसे ही आपके अहं, बन्धनों और गलतियों ने अबोधिता को ढक लिया हो, परन्तु यह हमेशा मौजूद है। आपने केवल इसका सम्मान करना है और अपनी अबोधिता के प्रति सम्मान बनाए रखते हुए आचरण करना है। अपनी अबोधिता के कारण लज्जित न हों। आपकी अबोधिता अपने आपमें शक्ति है और निश्चित रूप से यह आपको विवेक प्रदान करेगी जिसके द्वारा बिना किसी कठिनाई के आप अपनी समस्याओं का समाधान कर सकेंगे।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, तिरोल, आस्ट्रिया, 26.08.1990)

★ पृथ्वी माँ ने उन्हें (सीताजी) जन्म दिया था और वे पृथ्वी माँ में ही समा गईं

एक अन्य घटना ये थी कि सीताजी के गुम होने के बाद, वे कभी नहीं सोए, वे बिस्तर पर कभी नहीं सोए हमेशा पृथ्वी पर सोए। कभी बिस्तर पर नहीं सोए, हमेशा पृथ्वी पर सोए। अपनी पत्नी के लिए उनके अन्दर जो पीड़ा थी उसका वर्णन भारतीय कवियों ने बहुत अच्छी तरह से किया है। अन्तत: जब सीताजी ने रहस्यमय ढंग से उन्हें त्याग दिया, वे पृथ्वी माँ में समा गईं क्योंकि पृथ्वी माँ ने ही उन्हें जन्म दिया था इसलिए वे पृथ्वी माँ में ही लुप्त हो गईं तब श्री राम अपनी सुध-बुध खो बैठे और उन्होंने सरयू नदी में छलांग लगा ली तथा जल तत्व में, जहाँ से वे अवतरित हुए थे, विलीन हो गए।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Les Avants, स्विट्ज़रलैण्ड, 04.10.1987)

★ **...उन्होंने सोचा कि वे महान् व्यक्ति हैं, जो कभी किसी महिला की ओर आकर्षित नहीं होते।**

"अत: ये सोचना कि आप अन्य लोगों से ऊँचे हैं, अन्य लोगों से अधिक सुन्दर हैं, बाकी लोग बदसूरत हैं—ये सारा मस्तिष्क का कार्य है जो आपको अहं की ओर ले जाता है और अहं हर समय आपको पूर्ण मूर्ख बनाता है। यह श्री कृष्ण का कार्य है।

नारद की कहानी आपने अवश्य सुनी होगी। वो स्वयं को बहुत महान् मानते थे क्योंकि कभी वे किसी महिला की ओर आकर्षित नहीं हुए, इस कारण से वे श्री शिव को भी चुनौती दे रहे थे। श्री कृष्ण ने उनसे एक चाल चली, वे हमेशा चालाकियाँ करते हैं। नारद को सताने के लिए उन्होंने दो गन्धर्व भेजे। नीचे आकर उन्होंने नारद से कहा, "आप इतने सुन्दर हैं, आप इतने सुन्दर व्यक्ति हैं और रूपमति नामक महिला का स्वयंवर हो रहा है। वह अत्यन्त सुन्दर है, राजकुमारी है। आप क्यों नहीं वहाँ जाते? वह अवश्य आपसे विवाह करेगी।" उन्होंने नारद के अहं को इस प्रकार बढ़ावा दिया कि नारद हवा में उड़ने लगे, नारद बोले, "ठीक है, मैं, अवश्य वहाँ जाऊंगा। मैं इतना सुन्दर हूँ!" अहं! नारद वहाँ गए, और ये राजकुमारी माला लेकर बाहर आई। उसने नारद को देखा, पहले तो वह हल्की-सी हँसी और फिर जोर से ठहाका लगाया, और वहाँ से चली गई। नारद की समझ में नहीं आया, उन्होंने इन दो व्यक्तियों की ओर देखा तो वो बोले "ठीक है, कोई बात नहीं, हो सकता है कोई आपसे भी अधिक सुन्दर हो!" नारद को बहुत गुस्सा आया और वे झील की ओर चले गए। झील में जब उन्होंने झाँका तो उनका चेहरा बन्दर सम था। नारद बन्दर बन गए थे क्योंकि अहं व्यक्ति को बन्दर बना देता है और व्यक्ति स्वयं को महान् सुंदर आदि-आदि सभी कुछ समझने लगता है...। परन्तु आप लोग ऐसे नहीं हो, आप यदि ऐसे होते तो सोचते नहीं। जो भी आप हैं, उसके बारे में सोचते नहीं। जो भी आप हैं उसके बारे में सोचते नहीं। आप कभी ये नहीं सोचते कि "मैं मानव हूँ।" क्या कभी आप ऐसा कहते हैं? या आप ये कहते हैं कि "मेरी पूँछ नहीं है।" क्या आप इस बात की शेखी मारते हैं? आप जो नहीं होते उसकी शेख़ी बघारते हैं, "मैं अत्यन्त सुन्दर हूँ, मैं बहुत अच्छा लगता हूँ, अन्य लोग असुन्दर हैं, ये, वो।" तब माया के माध्यम से श्रीकृष्ण अपनी भूमिका निभाते हैं और ऐसे व्यक्ति को कड़ा पाठ पढ़ाते हैं। ऐसा होता है।

*अत: कभी न सोचें कि आप कुछ महान् हैं, या जीवन में आपने ये उपलब्धि पा ली है, आपने वो उपलब्धि पा ली है, और या आप बहुत बड़े तीसमारखाँ (*Big Johnny*) हैं। कुछ नहीं। यह अहं के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, 'अहं' जो यहाँ (आज्ञा) तक आ गया है और आपको ये विचार दे रहा है। परन्तु यदि इससे भी आगे आप जाते हैं तो हो सकता है कि आपके अहं में हिटलर प्रवेश कर जाए और आप उसी की तरह से बर्ताव करने लगें।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यूजर्सी, यू.एस.एस., 02.10.1994)

★ **...मैं मूर्खों के लिए नहीं हटता**

"...आक्रामकता सामूहिकता की सबसे बड़ी शत्रु है। कुछ लोग मूलत: आक्रमक होते हैं। उनके बातचीत करने की शैली भी आक्रमक होती है। ये लोग आक्रामक परिवारों से सम्बन्धित

होते हैं या इनमें एक प्रकार की 'श्रेष्ठता मनोग्रन्थि' (Superiority Complex) या 'हीनता मनोग्रन्थि' (Inferiority Complex) या असुरक्षा भाव होता है। ये भी हो सकता कि वो भूतबाधित हों। वे प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न करते हैं, लोगों के प्रति उनके मन में कठोर भाव होते हैं—अपनी श्रेष्ठता के। इसका इलाज होना चाहिए, इसे ठीक करने के लिए आपको विनम्र होना होगा, विनम्र होने का प्रयत्न करें। एक चुटकुला है: एक व्यक्ति सीढ़ियों से उतर रहा था और दूसरा ऊपर जा रहा था, ऊपर की ओर आने वाले व्यक्ति ने दूसरे से कहा, "कृपा करके हट जाओ।" दूसरे ने उत्तर दिया, "मैं मूर्खों के लिए नहीं हटता।" ऊपर चढ़ते हुए व्यक्ति ने कहा, "परन्तु मैं हटता हूँ," और वो हट गया।

विनम्रता इस प्रकार कार्य करती है। अन्य लोगों के प्रति आपको विनम्र होना होगा क्योंकि आपमें तो शक्ति है और आप सहन कर सकते हैं। अत: आपने विनम्रता का अभ्यास करना है। ये गुण यदि आपमें होंगे तो आप हैरान होंगे, आपकी स्वार्थता समाप्त हो जाएगी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी मैलबोर्न, 10.04.1991)

★ बहुत से लोग इस बात को नहीं समझते कि क्यों वे (श्री शिव) नन्हें शिशु के सिर पर चढ़े हुए हैं

आप सबने वह कहानी सुनी होगी कि किस प्रकार वे क्रोधातिरेक में बह गए। एक राक्षस ने शिशु रूप धारण कर लिया और माँ (आदिशक्ति) बच्चे का वध नहीं कर सकतीं। वे ऐसा नहीं कर सकतीं। देवी ने सोचा कि यदि शिव ने इस राक्षस को पूरा विश्व नष्ट करते हुए देख लिया, तो वे भी उनके क्रोध से विश्व को न बचा सकेंगी। अत: देवी ने राक्षस रूपी उस बालक का वध करने के उस कार्य से स्वयं को हटा लिया और श्री शिव ने यह कार्य अपने हाथ में ले लिया। बालक रूपी उस राक्षस की पीठ पर वे सवार हो गए और उसका वध कर दिया। वह शिशु क्योंकि राक्षस था इसलिए श्री शिव ने उसका वध करके विश्व को विनाश से बचा लिया और खुशी से नाचने लगे। इसी का नाम दिव्यानन्द है। बहुत से लोग इस बात को नहीं जानते कि श्री शिव उस शिशु की पीठ पर चढ़कर क्यों खड़े हुए हैं? परन्तु इसका वास्तविक कारण यह था। अत: आजकल लोग चाहे शिशु रूप में, अबोध व्यक्ति या पावन गुरुओं का छलावरण धारण कर लें श्री शिव उन्हें समाप्त कर सकते हैं। बहुत-सी घटनाओं के माध्यम से सर्वत्र यह विनाश शुरु हो चुका है। भयंकर तूफान, भूचाल और दुर्घटनाएं तथा प्राकृतिक प्रकोप इस कार्य को कर रहे हैं और यह सब कल्की अवतार के परिणामस्वरूप है। परन्तु यह अवतार एक अन्य कार्य भी कर रहा है, वह है, लोगों को आत्मसाक्षात्कार (पुनर्जन्म) देना। आत्मसाक्षात्कारी लोगों को कभी यह घटनाएं हानि नहीं पहुँचातीं। इन लोगों को कुछ नहीं हो सकता। सदैव उनकी रक्षा होगी और उनकी हर चीज़ की रक्षा होगी क्योंकि वो अपनी माँ की सुरक्षा में हैं। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, पुणे, भारत 05.03.2000)***

★ अण्डे के रूप में उनका सृजन किया गया, उनका आधा भाग श्री गणेश बने रहे और आधा महाविष्णु बन गए

आरम्भ में जब श्री गणेश के रूप में उनका सृजन किया गया-उनके सृजन की कहानी आप जानते है। श्री पार्वती के शरीर का मल एकत्र किया गया। विवाह से पूर्व जब उनके शरीर

पर सुगन्धित उबटन लगाया गया तो उस उबटन के उतार को एकत्र किया गया जिसमें से उनका चैतन्य प्रवाहित हो रहा था। इसी उबटन के उतार को लेकर अपने पावित्र्य की रक्षा करने के लिए उन्होंने एक शिशु का सृजन किया। शिशु को उन्होंने अपने स्नानागार के बाहर प्रहरी के रूप में खड़ा कर दिया—सारी कहानी आप जानते हैं।

अब इस शिशु में केवल पृथ्वी तत्व का अंश विद्यमान था। बाकी सभी चक्रों में भी कोई न कोई तत्व विद्यमान होता है- जैसे पृथ्वी तत्व, जल तत्व, वायु तत्व और जब आप यहाँ (आज्ञा) पर पहुँचते हैं तो यह प्रकाश तत्व है। यह प्रकाश है। और आज्ञा-चक्र पर उन्हें जिस अन्तिम तत्व में से गुजरना पड़ा, वह था प्रकाश तत्व-अर्थात् उन्हें दिव्य शक्ति के सच्चे रूप में आना पड़ा- 'ओंकार' रूप में, आप ये भी कह सकते हैं कि चैतन्य लहरियों के रूप में या पूर्ण रूप में जिसे आप नाद (Logos) या शब्दब्रह्म आदि कुछ कहते हैं। अतः उन्हें ब्रह्मतत्व बनना पड़ा और ब्रह्मतत्व बनने के लिए उन्हें सभी अन्य महातत्वों (महाभूतों) से अलग होना पड़ा।

अन्तिम तत्व प्रकाश तत्व था और उन्हें इसको भी पार करना पड़ा। तो उनके अन्दर पृथ्वी तत्व था क्योंकि उबटन के मल से उनका सृजन हुआ था तथा और भी तत्व उनमें थे। परन्तु जब वे आज्ञा चक्र पर आते हैं तो बाकी सभी तत्व उन्हें छोड़ने पड़ते हैं और अपने अन्दर मौजूद इन सभी तत्वों को निकालने के लिए उन्हें मरना पड़ता है- पूर्ण, सम्पूर्णतः, पावन आत्मा बनने के लिए। जो कार्य उन्होंने सूक्ष्म रूप में किया वह स्थूल रूप में कार्यान्वित होता है। इसी कार्य को करने के लिए उन्हें मरना पड़ा। उनके अन्दर जिस चीज़ की मृत्यु हुई वह थी उनके अन्दर का पृथ्वी तत्व तथा अन्य तत्व और उनसे 'पावन आत्मा' (Pure Spirit) का उद्‌भव हुआ।

उसका पुनर्जन्म हुआ, पावन आत्मा का, शुद्ध ब्रह्मतत्व का जिसने ईसामसीह के शरीर की रचना की थी, और यह घटना घटित हुई। ईसामसीह ने वही कार्य किया जिसकी भविष्यवाणी उनके विषय में की गई थी। उन्हें रक्षक (Saviour) इसलिए कहा जाता है क्योंकि मानव को शारीरिक संवेदना (Bodily Existance) से ऊपर उठाने के लिए उन्होंने यह द्वार पार किया अर्थात् उन लोगों को, जो पंचमहाभूतों पर निर्भर करते हैं, उन्हें आत्मा के स्तर पर लाने के लिए।

अतः पुनर्जन्म वह है जहाँ आप बन जाते हैं, अपने चित्त से, आत्मा के चित्त पर छलांग लगा लेते हैं, जहाँ आप अपने चित्त को महसूस कर पाते हैं और आत्मा बन जाते हैं। यही घटना आपके साथ भी घटित हुई है। परन्तु जब उनका पुनर्जन्म हुआ तो वे शुद्ध आत्मा, शुद्ध ब्रह्मतत्व बन गए। पुनर्जन्म, मूलाधार चक्र से पृथ्वी तत्व के रूप में आरम्भ हुई उस दिव्य शक्ति की उत्क्रान्ति की घटना है जिसने वहाँ (मूलाधार चक्र) पर जन्म लिया और आज्ञा चक्र पर आई। वहाँ पर सभी तत्वों को पार करके अन्ततः सहस्रार में प्रवेश करके पूर्ण ब्रह्मतत्व बनने के लिए ईसामसीह का सृजन किया गया। यह बहुत कठिन कार्य था, अत्यन्त प्रयोगात्मक तथा ये प्रयोग भी बहुत ही भयानक था। प्रयोग असफल भी हो सकता था क्योंकि उनके अन्दर भी मानवीय तत्व थे, शरीरतत्व, जिन्हें कष्ट होता है। और उन्होंने कष्ट उठाए क्योंकि शरीर-तत्वों को कष्ट होता है, आत्मा को नहीं, आत्मा कष्टों से ऊपर है, शरीर को कष्ट झेलना पड़ता है। अतः शरीरतत्व के कारण उन्हें कष्ट झेलना पड़ा, इस पर

नियन्त्रण करने के लिए, इससे मुक्त होने के लिए और इसे नियन्त्रित करने के लिए उन्हें अथाह साहस करना पड़ा। यह अत्यन्त कठिन कार्य था जिसे उनके (ईसामसीह) अतिरिक्त कोई न कर पाता। वो जानते थे कि यह पूर्वविधान है, परन्तु इस घटना का घटित होना कठिनतम कार्य था।

मैं हैरान होती हूँ कि बहुत से ईसाईयों को अण्डे का महत्व ही नहीं पता। अण्डा उस अवस्था का प्रतीक है जिसमें आप आत्म-साक्षात्कार से पूर्व होते हैं। अण्डे के खोल में जब आप बंद होते हैं-कि आप श्रीमान x, आप श्रीमती y हैं। परन्तु अन्दर से पूर्णत: परिपक्व होने पर पक्षी तैयार हो जाता है और यह समय आपको सेने (Hatch) का है। यही वह समय है जब आप द्विज बनते हैं। तो ईसामसीह का पुनर्जन्म इसी बात को दर्शाता है और इसी कारण से हम लोगों को अण्डे उपहार के रूप में देते हैं, उन्हें इस बात का पुन: स्मरण करवाने के लिए कि आप यही अण्डे हैं यही। ये भी लिखा हुआ है कि सर्वप्रथम जब वे आए तो एक अण्डा था, उनका सृजन अण्डे के रूप में किया गया-उसमें से आधा अण्डा श्री गणेश के रूप में बना रहा और आधा महाविष्णु बन गया।

वे पृथ्वी पर अवतरित हुए और फिर अपने सभी तत्वों के साथ चले गए और तत्पश्चात् पावन चैतन्य लहरियों ने उनके शरीर का सृजन किया। जागृत होने के लिए वे आप सबके अन्दर बने रहे और जब कुण्डलिनी आपके चित्त को उस बिन्दु (आज्ञा) से ऊपर को ले जाती है तो आप भी आत्मा बन जाते हैं। इसलिए उन्होंने कहा, "मैं ही द्वार हूँ, मैं ही मार्ग हूँ"-क्योंकि आप ईसामसीह बन सकते हैं। इसीलिए उन्होंने कभी नहीं कहा कि "मैं ही लक्ष्य हूँ" कि आपको उन्हें (उस स्थिति को) प्राप्त करना होगा। उन्होंने आपके लिए यह स्थान (मार्ग) बना दिया है। आप आध्यात्मिक रूप से जागृत हो सकते हैं और स्वयं आत्मा बन सकते हैं।

परन्तु ईसामसीह एक अवतरण हैं। वे परमात्मा के पुत्र थे, अत: वे अवतरण हैं। आपको अपने पंचतत्वों से मुक्त होकर आत्मा बनाने के लिए वे इस पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी लन्दन, यू.के. 11.04.1982)

★ सहजयोगियों में भी कभी-कभी शेष (नाग) की अभिव्यक्ति होती है

"...पाश्चात्य मस्तिष्क व्यक्ति से यदि साँपों की बात करें तो वे केवल आदम, हौवा और सर्प को ही जानते हैं। वो कुछ नहीं समझते, ये नहीं समझ सकते कि लोग साँपों की पूजा क्यों करते हैं। आप देखें फणिहर सर्प (Cobra) आदि पाताल लोक के राजा हैं और शेषनाग पूरे ब्रह्माण्ड का आधार हैं। तो भारतीय गाँवों तथा अन्य स्थानों पर शेषनाग की फणिहर सर्पों के रूप में पूजा की जाती है क्योंकि वहाँ ये साँप किसी को कष्ट नहीं पहुँचाते। भारत में इनकी देवताओं की तरह से पूजा की जाती है। कभी-कभी साँप डस लेते हैं परन्तु प्राय: किसी अच्छे धार्मिक व्यक्ति को ये नहीं काटते।

श्री साईंनाथ के विषय में एक कहानी है कि एक सपेरे को श्री साईंनाथ की हत्या करने के लिए बहुत-सा पैसा दिया गया। क्योंकि रात के समय साईंनाथ अचानक पृथ्वी से बीस फुट ऊँचे बने झूले पर चढ़ जाया करते थे। परमात्मा जानता है, कोई नहीं जानता कि कैसे वे इस झूले

पर चढ़ते थे, परन्तु लोग उन्हें उस झूले में सोया हुआ पाते। तो सपेरा साँप ले गया और इसे साईंनाथ पर छोड़ दिया। साईंनाथ ने उससे बातें की और कहा, "हे परमात्मा, इतने समय के बाद आप यहाँ मुझसे मिलने आए हैं। आप किस कार्य से आए हैं?"

साँप बोला, "इस दुष्ट सपेरे ने मुझे कहा है कि मैं आपको डंक मारूं। मैं आपको ये बताने आया हूँ कि इन लोगों से सावधान रहें।"

आश्चर्यचकित सपेरा देख रहा था कि साँप किस प्रकार बात कर रहा है। साईंनाथ ने कहा, 'ठीक है, अब आप जाओ।'

ये युगों पुराने साँप हैं। वह साँप गया और सपेरे को ही काट लिया। परन्तु साईंनाथ नीचे उतरे और सपेरे का ज़हर चूसकर बाहर फेंक दिया। 'आखिरकार', उन्होंने कहा, "साँप तुमसे नाराज़ हैं क्योंकि तुमने ऐसी दुष्टता करने का प्रयत्न किया था।" उन्होंने उसका ज़हर चूसकर बाहर निकाल दिया। करुणा ये होती है। जीवनदान पाकर वह सपेरा बिल्कुल परिवर्तित हो गया, "अब मैं जाकर सबको बता दूंगा कि ये ब्राह्मण लोग साईंनाथ की हत्या करना चाहते थे।"

और क्यों, क्यों ये लोग इस व्यक्ति से डरते थे? वो तो गाँव के बाहर रहते थे! वो इसलिए डरते थे क्योंकि परमात्मा के नाम पर वो सभी उल्टे धन्धे करते थे, अतः उन्हें घबराहट थी कि कहीं हमारा भेद न खुल जाए।

ये बात इस प्रकार है, कि वे शेष पर शयन करते हैं और कभी-कभी सहजयोगियों में भी शेषनाग की अभिव्यक्ति होती है। मैंने ये देखा है। गुस्से में जब आप मर्यादाओं की चिन्ता नहीं करते और अजीबो-गरीब व्यवहार करते हैं तब। ये आपके अन्दर शेष (नाग) है। कभी-कभी इसकी भी आवश्यकता होती है। कई बार आपको शेषनाग भी बनना पड़ता है, अन्यथा लोग दुर्व्यवहार करने लगेंगे जिसके कारण उनकी हानि होगी। ऐसा नहीं कि मेरी हानि होगी, परन्तु उनकी हानि होगी। अतः इस प्रकार के स्वभाव की भी आवश्यकता है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, चैलशम रोड, लन्दन, 02.04.1982)

★ जो सहजयोगी शेषनाग की तरह से हैं वो अन्य सहजयोगियों की अच्छाई को भी नहीं देख सकते

"...भारत की एक अन्य अत्यन्त रुचिकर (कहानी) है। अपनी माँ के विरोध के कारण श्री राम ने राज्यसत्ता भरत को सौंप दी। भरत को समझ में नही आया कि क्या करूं? अतः वह श्री राम के पास गया और कहा, "अपना राज्य वापिस ले लो। मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। आप ही को राज्य करना चाहिए। मैं क्यों राज्य लूं?" श्री राम बोले, "ठीक है, तुम राज्य के प्रभारी बनकर वहाँ बने रहो। मुझे अपने पिता की आज्ञा पालन करनी है, अपनी माता की आज्ञा पालन करनी है क्योंकि मैं उन्हें वचन दे चुका हूँ।

तो श्री राम का एक अन्य गुण ये था कि एक बार यदि वचन दे दिया जाए तो उसे निभाना होगा। यह गुण भी हमने अपने अन्दर लाना है कि यदि वचन दे दिया तो उसे निभाना भी है। आपने यदि कह दिया कि, "मैं ऐसा करूंगा", तो अवश्य वैसा करें। **इससे बचने के लिए बहाने न खोजें। वचन करके, चीज़ों से बचने की कोशिश करना पूर्णतः परमात्मा**

विरोधी कार्य है। *आपके देवी-देवता कभी प्रसन्न नहीं होंगे। अतः यदि वचन दिया है तो अवश्य इसे निभाएं।*

भरत को जब वे वापिस भेजने लगे तो भरत ने कहा, "ठीक है, आप अपने खड़ाऊँ मुझे दे दें, इन्हें मैं आपके प्रतीक के रूप में वहाँ उपयोग करूंगा।" भरत ने वो खड़ाऊँ सिंहासन पर रखकर राजकार्य किया और राज्य की देखभाल की।

यद्यपि जब भरत श्री राम से मिलने के लिए आ रहे थे तो उन्हें देखकर लक्ष्मण बोले, इसे देखो! ये आप पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है, इसने आपको राज्य से बाहर फेंक दिया है और अब आप पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है।"

मैंने देखा है कि सहजयोगियों में भी ये बात है। जो सहजयोगी शेष (नाग) की तरह से हैं वो उन सहजयोगियों की अच्छाई को भी नहीं देख सकते जो बहुत अच्छे हैं, जिनमें बलिदान की भावना है, बहुत अच्छे लोग हैं, बहुत भले लोग हैं परन्तु उनकी भावनाएं समझ नहीं आतीं। उन्हें गलत समझा जाता है। ये बड़े दुःख की बात है। दूसरी प्रकार के लोगों की भावनाओं को भी देखें जो लोग उग्र नहीं हैं, जो अधिक क्रोधित नहीं हो पाते परन्तु जिनकी भावनाएं बहुत अच्छी हैं, वास्तव में वो श्री राम के खड़ाऊँ माँगने के लिए आए हैं।

अतः इन दो प्रकार के लोगों के बीच, मैंने देखा है कि हमेशा से गलतफहमी चलती रही है। अतः दोनों प्रकार के लोगों को समझना चाहिए कि सहजयोग के लिए हमारी आवश्यकता है। मैं एक प्रकार के लोगों से काम नहीं चला सकती, दोनों प्रकार के लोगों का होना आवश्यक है जो चीजों की दोनों शैलियों को देख सकें।

परन्तु अन्य लोगों से व्यवहार करते हुए आपको एक होना चाहिए। उदाहरण के रूप में, कैक्स्टन हॉल में आकर यदि कोई व्यक्ति कुछ कहे तो आपको तोलना चाहिए कि यह नया व्यक्ति है या पुराना। यदि वह नया व्यक्ति है तो आपको चाहिए कि पूर्ण भद्रता, करुणा तथा सभी बाह्य चीजें दर्शायें जो उसे प्रसन्न करें। कारण ये है कि वह आत्मसाक्षात्कारी नहीं है। आपके सूक्ष्म गुण उसे दिखाई नहीं देते। वह तो आपके बाह्यरूप को देखता है, आपने कैसे वस्त्र पहने हैं, उससे किस प्रकार बात करते हैं, किस प्रकार आचरण करते हैं? सर्वप्रथम ये सभी चीजें देखी जाती हैं वो ये नहीं देखते कि आपके अन्दर क्या निहित है, आपके हृदय में क्या है वो नहीं देख पाते? वो आपकी चैतन्य लहरियों को नहीं महसूस कर पाते। अतः आपको उनके प्रति अत्यन्त सुहृद होना होगा, अत्यन्त मधुर होना होगा।

मुझे किसी का एक पत्र मिला जिसमें उसने लिखा कि सहजयोगियों ने मुझसे अत्यन्त अभद्रता एवं क्रोधपूर्वक व्यवहार किया। जैसे कोई उस दिन आया और पीछे बैठ गया। ये वो लोग हैं जो अपने पंथ से टूटे हुए लोगों का उद्धार कर रहे हैं। वह पीछे बैठा हुआ था, मैंने कहा, "आगे आ जाओ।" जब वह नहीं आया तो आप बोले, "बाहर चले जाओ।" आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए। मुझे कहने दीजिए। उस समय आपको चुप रहना चाहिए। किसी को ये नहीं कहना चाहिए, "बाहर चले जाओ।" यदि आप ये कहते हैं कि, "जो लोग विनम्र नहीं हैं, हमें

उनकी चिन्ता नहीं है," तब तो वो हमेशा के लिये चले जाएंगे। अपने आचरण से, हमें चाहिए कि, उन्हें सहज में आने का पूरा अवसर प्रदान करें।

अब कुछ लोगों में नए लोगों से बहुत अधिक बातें करने की आदत होती है उन्हें बहुत बातें नहीं करनी चाहिए। यह बात भी मैं महसूस करती हूँ। साक्षात्कार देते हुए आप ज्यादा से ज्यादा इतना पूछ सकते हैं, "क्या आपको शीतल-लहरियाँ महसूस हो रही हैं, अत्यन्त विनम्रतापूर्वक।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, चैलशम रोड, लन्दन, 02.04.1982)

★ सभी बेर मैंने अपने दाँतों से चखे हैं और देखा है कि कोई खट्टा नहीं है

"...श्री राम के जीवन में यदि आप झाँककर देखें-वे एक गाँव में गए जहाँ एक आदिवासी वृद्ध महिला (भीलनी) रहती थी, उसके अधिकतर दाँत टूटे हुए थे। उसने कुछ बेर लाकर श्री राम को दिए, कहने लगी, "हे, श्री राम मैंने ये बेर आपके लिए रखे हुए हैं, इसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नहीं है। ये सब मैंने स्वयं चखे हैं।" भारतीय प्रथा के अनुसार कोई चीज यदि चख ली जाए तो यह उच्छिष्ट (झूठन) हो जाता है, जिसे कोई छूता भी नहीं, परन्तु भीलनी कहने लगी "अपने दाँतों से ये बेर मैंने चखे हैं, इनमें से कोई खट्टा नहीं है।" वो जानती थी कि श्री राम को खट्टे बेर पसन्द नहीं है, अतः कहने लगी, "इनमें से कोई भी खट्टा नहीं है आप इन्हें खाएं। पश्चिम में यदि इस प्रकार का व्यवहार भी किसी से किया जाए तो वह आपसे लड़ जाएगा। तुरन्त श्रीराम आगे बढ़े और उसके हाथ से बेर ले लिए। उसके हाथ को चूमा और कहा, "ठीक है, ठीक है, मैं ये बेर खाऊंगा। अत्यन्त प्रेमपूर्वक उन्होंने बेर खाए, परन्तु उस महिला के व्यवहार से लक्ष्मण को गुस्सा आ रहा था, तब सीता जी बोलीं, "आपको बहुत अच्छे लगे।", राम ने उत्तर दिया, "हाँ, परन्तु मैं तुम्हें नहीं दूंगा।" सीताजी बोलीं, "मैं आपकी अर्धांगिनी हूँ, आपको मुझे देने ही होंगे।" तब उन्होंने कुछ बेर सीताजी को दिए। बेर खाकर सीताजी बोलीं, "वाह! कितने अच्छे हैं। ऐसा लगता है मानो मैं स्वर्ग का अमृत चख रही हूँ!" तब लक्ष्मण को बहुत ईर्ष्या हुई, कहने लगा, "भाभी, थोड़े से तो मुझे दे दो।" सीताजी बोलीं, "नहीं! मैं तुम्हें नहीं दे सकती अपने भाई से माँगो, मैं तुम्हें बेर नहीं देने वाली। मुझे बहुत कम मिले हैं, क्यों नहीं तुम अपने भाई से माँगते?" अपने भाई के पास जाकर लक्ष्मण बोले, "क्या मुझे कुछ बेर मिल सकते हैं?" मुस्कराकर श्री राम ने उन्हें कुछ बेर दिए जो उस भीलनी के दांतों से कटे हुए थे और जो भारतीय ब्राह्मण प्रथा के अनुसार अछूत थी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी Les Avants, स्विट्जरलैड, 04.10.1987)

★ श्री कृष्ण बहुत बीमार हैं उनके पेट में बहुत दर्द है।

"...श्रीकृष्ण और राधा की एक बहु मधुर कहानी सुनाकर मैं यहाँ से जाऊंगी। एक बार श्री कृष्ण की अन्य पत्नियों को राधाजी से जलन हो गई। वे श्री कृष्ण से कहने लगीं कि तुम हमें प्रेम नहीं करते हो, तभी श्री नारद जलती आग में घी डालने के लिए पहुँच गए। वे बोल उठे, "वास्तव में, मैं मानता हूँ कि उन्हें तुम्हारी कोई चिन्ता नहीं है, उन्हें तो सिर्फ राधाजी पसन्द हैं, बाकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं।

युक्ति चतुर श्री कृष्ण कहने लगे, "हे भगवान, मेरे पेट में बहुत जोर से पीड़ा हो रही है?"

सबने कहा, "अब क्या करें?" वो बोले, "बहुत आसान बात है, यदि आप मेरे किसी भक्त को जानते हों, या आप स्वयं अपने चरणों की धूल खाने को मुझे दे दें तो मैं ठीक हो जाऊंगा।" अपने चरणों की धूल देने के नाम पर सभी लोग बहुत घबरा गए।

जैसे मैं यदि आपसे कुछ कहूँ तो आप अपने ही समाधान सुझाना चाहते हैं। कोई मेरी बात नहीं सुनता। मैं यदि कहती हूँ कि वहाँ जाओ, "नहीं, नहीं, उस रास्ते जाना ठीक रहेगा।" यहाँ आओ–"नहीं, नहीं, ऐसा बेहतर होगा।" उस विषय पर सभी के दिमाग चलने लगते हैं, कोई बात नहीं। तो वहाँ भी उनके दिमाग चलने लगे। कहने लगे, "क्यों नहीं आप कोई दवाई ले लेते?" तब कोई कहने लगा, "हम वैद्य को बुलाते हैं।" श्री कृष्ण बोले, "नहीं, मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि मैं एक चीज के अतिरिक्त किसी चीज से ठीक नहीं हो सकता, मेरे भक्त के चरणों की धूल खाने के लिए मुझे देनी होगी।"

सभी लोग बगलें झाँकने लगे। जैसे पैसे देने के नाम पर सहजयोगी करते हैं। उन्हें ये बात कभी सुनाई नहीं देती, कुछ तो ये बात कभी सुनते ही नहीं। सबसे बढ़िया बात है। आप जानते हैं मानव स्वभाव अत्यन्त चालाक है। तो सब कहने लगे, "अब क्या करें? यदि श्री कृष्ण के लिए कुछ नहीं करते तो वो तो दर्द से तड़प रहे हैं। अब क्या करें?" श्री कृष्ण बोले, "मुझ पर दया करो, अपने चरणों की धूल मुझे दे दो।" जब कोई तैयार नहीं हुआ तो उन्होंने नारद से कहा कि राधा के पास जाकर उसके चरणों की धूल ले आओ। नारद राधा के पास पए। राधा वृंदावन में थीं और वहाँ की मिट्टी केसर की तरह पीले रंग की है। जाकर उन्होंने बताया कि, "श्री कृष्ण बहुत बीमार है, उनके पेट में बहुत तेज दर्द है।"

राधा घबरा गईं, कहने लगीं, "वास्तव में? ऐसा कैसे हो सकता है? मैं नहीं मान सकती। तो उन्होंने क्या कहा है? वो कौन-सी औषधि ले सकते हैं?" "वो कहते हैं कि यदि मेरा कोई अनुयायी, जो मेरा भक्त हो, वो अपने चरणों की थोड़ी-सी धूल भेज दे तो वे ठीक हो जाएंगे। वो धूल को औषधि के रूप में खाएंगे।" राधा बोलीं, "ठीक है, मेरे चरणों की धूल ले लो। नारद दंग रह गए! कहने लगे, "तुम क्या कर रही हो? क्या तुम समझती हो कि अपने चरणों की धूल उन्हें देने से तुम्हारे सारे पुण्य समाप्त हो जाएंगे? तुम जानती हो कि वो कोई चालाकी कर रहे हैं। तुम ऐसा करने का प्रयत्न मत करो।" राधा बोली, "कुछ भी नहीं, तुम बस ये धूल ले जाओ?" परन्तु नारद बोले, "तुम्हारे पुण्यों और पापों का क्या होगा?" राधा बोलीं, "मैं केवल एक चीज जानती हूँ कि वे ही मेरे पुण्यों और पापों को देखते हैं। इनके विषय में मुझे कुछ नहीं सोचना।"

तो नारद ने राधा के चरणों की धूल ली जो केसर की तरह से या फूल के पराग की तरह से पीले रंग की थी। जाकर उन्होंने ये धूल श्री कृष्ण को दी, श्री कृष्ण बोले मैं जानता था कि राधा जी अपने चरणों की धूल भेज देंगी। लाओ अब मैं इसे खा लूं।" नारद बोले, "तुम इसे खा सकते हो परन्तु तुम्हें मेरे एक प्रश्न का उत्तर देना होगा– श्री राधा ने कहा है कि आप उनके पाप और पुण्यों को देखते हैं। ये कैसे हो सकता है? किस प्रकार ये हो सकता है? इसका क्या अर्थ है? कि तुम जानते हो कि उनके पुण्य और पाप क्या हैं और उन्हें इनकी बिल्कुल भी चिन्ता नहीं है। राधा को

अपने पापों और पुण्यों की चिन्ता ही नहीं करनी पड़ती?" श्री कृष्ण बोले, "ठीक है, अब मुझे दवाई लेने दो।" दवाई लेकर वो बोले यदि मैं सो जाऊँ तो ठीक रहेगा। नारद जी ने देखा की श्री कृष्ण का हृदय खुल गया है और हृदय कमल पर अत्यन्त सुन्दर गुलाबी रंग है। और उस कमल पर श्री राधाजी लेटी हुई हैं। उनका चरण उस कमल के पराग से रगड़ रहा है और वृंदावन की धूल का पीला रंग भी कमल के पराग जैसा है। तब उन्हें महसूस हुआ कि जब राधाजी श्रीकृष्ण के हृदय कमल को अपने चरणों से छू रही हैं तो यदि उन्होंने श्री कृष्ण के लिए अपने चरणों की धूल दे दी तो क्या बुराई है? राधा तो उनके हृदय में हैं। राधाजी के चरण ही जब उनके हृदय में हैं, तो फिर सोचने की क्या बात है? इस प्रकार उन्हें पता चला कि श्री राधा का प्रेम श्री कृष्ण के लिए इतना गहन था कि उनके लिए श्री कृष्ण ने धर्म-अधर्म की बात सोची ही नहीं। अपने भगवान की आज्ञा में रहने के लिए राधा ने ऐसा किया, और इसीलिए उनका स्थान श्री कृष्ण के हृदय में है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, जंगपुरा, नई दिल्ली, भारत, 09.02.1983)

"...श्रीमाताजी क्या उनका विवाह राधाजी से हुआ

हमें ये समझ लेना आवश्यक है कि विश्व के सभी लोगों से हमारे सम्बन्ध पावन होने चाहिएं। अपने जीवन काल में उन्होंने बहुत-सी लीलाएं की। जब वे अवतरित हुए थे तो पूरा देश धर्म की अटपटी धारणाओं में डूबा हुआ था। फ्रॉयड यदि वहाँ पर होते तो कहते, 'ये सब बेवकूफी है। इसमें क्या खराबी है? करते जाओ।' श्री कृष्ण ने ऐसा कुछ नहीं किया। वे मूर्खतापूर्ण परम्पराओं और झूठी कट्टरता की जंजीरों को तोड़ना चाहते थे। परन्तु उन्होंने ये कार्य, सभी सम्बन्धों को पूर्णत: पावन रखते हुए अत्यन्त सुन्दर ढंग से किया।

लोग प्रश्न पूछते हैं, 'श्रीमाताजी, क्या राधा से उनका विवाह हुआ था?' वो तो उनसे सदा-सर्वदा से विवाहित हैं, कोई बात नहीं। परन्तु वास्तव में उन्होंने यह विवाह उसी दिन कर लिया था जिस दिन उनका जन्म हुआ। उनके पिता उन्हें नदी पर लाए और नदी के किनारे उन्हें लिटा दिया। तभी साक्षात् ब्रह्मदेव पृथ्वी पर प्रकट हुए इसी कारण से श्री कृष्ण हमेशा पीत वस्त्र पहनते हैं। ये वस्त्र उनके शरीर के निचले हिस्से को ढकने के लिए श्री ब्रह्मदेव का आशीर्वाद है। कटि-वस्त्र है। यह प्रतीकात्मक है और यही कारण है कि वे हमेशा पीत वस्त्र धारण किए रहते हैं।

साक्षात् ब्रह्मदेव आए, श्री कृष्ण को पुरुष बनाया और राधा से उनका विवाह किया। एक बार पुन: वे बालक बन गए, बालक-सम दिखाई देने के लिए। कोई भी बाल सुलभ दिखाई दे सकता है। **आपमें से कुछ लोगों को मैं सोलह वर्ष की आयु की लड़की दिखाई पड़ती हूँ, परन्तु मैं हूँ नहीं। कुछ लोगों के लिए मैं साठ वर्ष की हूँ, परन्तु मैं वह भी नहीं हूँ। मेरी आयु शाश्वत है। मैं नहीं कह सकती कि मेरी आयु कितनी है? यह दो वर्ष भी हो सकती है या पूर्णत: आयु से परे भी हो सकती है, ये कुछ भी हो सकती है।**

अपने पूरे जीवन में उन्होंने जो भी किया उसे पूरी पावनता और सूझ-बूझ के साथ किया। तो पहले राधाजी से उनका विवाह हुआ। बाद में जब बालरूप में वे आए, जब वे शिशु थे, तो उन्होंने सभी प्रकार की लीलाएं की। इस प्रकार गम्भीरतापूर्वक बैठकर वे चीज़ों,

के बारे में नहीं बताते थे, परन्तु छोटी-मोटी शरारतों द्वारा उन्होंने उनके चक्रों को सुधारने और उनकी कुण्डलिनियों को उठाने का प्रयत्न किया। निःसन्देह, खेल में आत्म-साक्षात्कार दे पाना सम्भव न था। ऐसा नहीं किया जा सकता। मान लो मैं भी आपसे खिलवाड़ करुं तो आप आत्म-साक्षात्कार नहीं प्राप्त कर सकते क्योंकि सहस्रार के स्तर पर आपको पूर्णरूपेण मुझे पहचानना होता है।

इसका (रासलीला) होना आवश्यक है। निःसन्देह आप अपने हाथ उठाकर लोगों को आत्म-साक्षात्कार दे सकते हैं, परन्तु आपको उन्हें माधुर्य के स्तर पर लाना होता है। बैठकर यदि आप कहें कि ठीक है, आप खेलते रहो, तो ये सब समाप्त हो जाएगा। आपको बैठकर ध्यान करना होगा, आपको ऐसा करना होगा, अतः कोई यह नहीं कह सकता कि हर समय यदि आप खेलते रहें, भजन गाते रहें या हर समय प्रसन्नचित्त, विनोद-शील अवस्था में बने रहें तो यह सहजयोग का अन्त है। ऐसा नहीं है। ये एक गम्भीर मामला है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, चैलशम रोड, लन्दन, 15.08.1982)

★ यद्यपि उन्होंने सब खा लिया है फिर आपके लिए मैंने अपने हाथ में कुछ रख लिया है

मैं आपको बताऊंगी, कि वे कितने मधुर थे। इस बार इन्द्र उनसे नाराज हो गया, और उसने मूसलाधार बारिश बरसानी शुरु कर दी। सभी गोप और गोपियाँ, पानी में भीग गए, श्री कृष्ण बोले, "चिन्ता मत करो," और उन्होंने अपनी एक उंगली पर पूरे गोवर्धन पर्वत को उठा लिया, अपनी एक उंगली पर, तथा सभी गोप-गोपियाँ पर्वत के नीचे आश्रय में आ गए। बाद में वो गोपों से कहने लगे अब मेरी उंगली दुखने लगी है, तुम अपनी लाठियाँ इसके नीचे लगा लो ताकि तुम्हारा भी इसमें योगदान हो जाए। 'मेरी उंगली बहुत दुख रही है', ये कहना उनका माधुर्य है।

जैसे एक बार उन्होंने मक्खन खाया-मेरा अभिप्राय ये है कि वे वास्तव में चोर थे, नन्हें चोर, और उन्हें मक्खन बहुत पसन्द था, घर का सारा मक्खन एक टोकरी में ऊँचा लटका हुआ था ताकि बिल्ली वहाँ न पहुँच सके। इस प्रकार की जालियाँ हमारे यहाँ मटकियाँ सम्भालने के लिए बनाई जाती थीं। श्री कृष्ण ने सभी बच्चों को एकत्र किया, सारा मक्खन निकाला और इस प्रकार खाया कि उनके सारे मुँह पर मक्खन लग गया। उनकी माँ आईं और छड़ी उठाकर बोली तुम सारा मक्खन खा गए हो।" श्री कृष्ण बोले, "मैंने बिल्कुल मक्खन नहीं खाया।" उनका पूरा मुँह मक्खन से लथ-पथ था! "इन लड़कों ने मेरे मुँह पर मक्खन लगा दिया होगा क्योंकि इन्होंने ही सारा मक्खन खा लिया है।" फिर बोले, "देखो, पूरा दिन मैं तुम्हारी गऊएं चराता हूँ और घर लौटता हूँ तो तुम मुझे इस तरह सताती हो।" श्री कृष्ण कहने लगे, "मैं क्योंकि तुम्हारा पोष्य पुत्र हूँ, इसलिए तुम मुझे इतना सता रही हो।" यशोदा उनकी ओर देखने लगीं, तब श्री कृष्ण ने अपना नन्हा हाथ उनकी ओर बढ़ा दिया और कहने लगे, "यद्यपि ये गोप सारा मक्खन खा गए हैं फिर भी थोड़ा-सा मक्खन मैंने तुम्हारे लिए रखा हुआ है।" वो मक्खन श्री कृष्ण अपनी माँ के मुँह में देते हैं ताकि उनका क्रोध काफ़ूर हो जाए और वो उन्हें अपने हृदय से लगा लें। इस प्रकार से मधुर नाटक बनकर ये सारा मामला समाप्त हो गया।

"हमारे अन्दर भी जब श्री कृष्ण जागृत हो जाएंगे तो हम भी परस्पर ये नाटक कर पाएंगे और छोटी-छोटी चीजों का आनन्द लेंगे। तब हम गुस्सा नहीं करेंगे, एक दूसरे के व्यक्तित्व का पूर्ण आनन्द उठाएंगे।" **(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना आश्रम, 02.05.1982)**

★ विवेक की शक्ति तथा विवेक में अन्तर समझना आवश्यक है

श्री गणेश का एक अन्य गुण क्षैतिज स्तर पर अपनी अभिव्यक्ति करने लगता है तथा आप विवेकशील बन जाते हैं। परन्तु यह (विवेकशीलता) एक शक्ति है, मैं पुनः कह रही हूँ कि आपमें विवेक की शक्ति विकसित हो जाती है। व्यक्ति को विवेक और विवेक-शक्ति में अन्तर समझना आवश्यक है। शक्ति का अर्थ ये है कि यह कार्य करती है। उदाहरण के रूप में, चाहे आप बिल्कुल न बोलें परन्तु यदि आप कहीं खड़े हैं तो उस अवस्था में विवेक-शक्ति स्वयं कार्य करेगी। जैसे एक सहजयोगी, मान लो, अच्छा सहजयोगी है और वह रेलगाड़ी में जा रहा है तथा रेलगाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है, प्रायः ऐसा नहीं होता, परन्तु यदि ऐसा हो जाता है तो किसी की मृत्यु नहीं होगी। तो आप में विवेक स्थापित हो जाता है जो स्वयं एक शक्ति है जो खुद कार्य करती है। आपको उसे कार्य करने के लिए नहीं कहना पड़ता, ये कार्य करती है, और आप मात्र इसके वाहन बन जाते हैं, उस विवेक के एक सुन्दर और स्वच्छ वाहन। तब आपको विश्वास करना चाहिए कि आप क्षैतिज दिशा में फैल रहे हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, रीवेन, फ्रांस, 05.05.1984)

★ विनम्रता विशुद्धि के इस अहं पर विजय पाने का सर्वोत्तम उपाय है

एक और तरीका आपकी वो शैली है जिसमें आप मुझसे बात करते हैं। इसमें भी मैं आपकी दाईं विशुद्धि को कार्य करते हुए पाती हूँ। ऐसा तब होता है जब हम आम-तौर पर एक-दूसरे से बात करते हैं, हमें यदि हाँ कहना होता है तो हम कहते हैं "हूँ-हूँ"। यहाँ पर "ए-ए" कहना आम बात है। एक शैली में वे कहते हैं "हाँ-हाँ" और इससे भी अधिक वो कहते हैं ''मं-मं'', मानो आप इसे स्पष्ट देख रहे हैं। इसमें आपको कुछ मिल नहीं रहा होता परन्तु आप इसे बराबर के दबाव में प्रवाहित करने का प्रयत्न कर रहे होते हैं।

विनम्रता, विशुद्धि के अहं पर विजय पाने का सर्वोत्तम मार्ग है। दूसरों से बात-चीत करते हुए ऐसे मधुर तौर तरीके विकसित करें, इतने मधुर कि किसी का दिल न दुखे। और आप हैरान होंगे कि बिना किसी देरी के विशुद्धि इतनी मधुरतापूर्वक बर्ताव करने लगेगी, क्योंकि भूतों को मधुरता अच्छी नहीं लगती वे झगड़ालू होते हैं, कठोर होते हैं, और हमेशा वे ऐसा कुछ कहने का प्रयत्न करते हैं जिससे दूसरों को चोट पहुँचे।

दाईं विशुद्धि को समर्पण द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। वास्तव में आरम्भ में आप अपना अहं समर्पित करते हैं। इस अहं का जब आप समर्पण करते हैं तो यह समर्पण हृदयपूर्वक होना चाहिए, ये केवल ज़बानी जमा खर्च नहीं होना चाहिए। आपके हृदय से, "अब मुझे अहं की कोई आवश्यकता नहीं है, मैं सच्चाई चाहता हूँ। मैं यह सच्चाई देखूं, इसे महसूस करूं, और इसका आनन्द लूं।" एक बार हृदय से जब आप ऐसा कहने लगेंगे तो, आपको हैरानी होगी कि, आपकी आवाज मधुर हो जाएगी। इसके अतिरिक्त आपकी आवाज़ में परमेश्वरी शक्तियाँ

प्रवाहित होने लगती हैं। यही बात हम कहते हैं कि "अब आप में वाक्शक्ति आ गई है, अर्थात् वाणी की शक्ति।"

जब आप अहं समर्पण करते हैं तब कहते हैं, "मैं कुछ नहीं कर रहा, आप ही सभी कुछ कर रहे हैं।" नन्हीं बूंद अब सागर बन गई है और आपकी वाणी में अब सागर की शक्ति उत्पन्न हो गई हैं। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी विएना, 04.09.1983)***

★ प्रायः इस अवस्था में सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं, छोटी-मोटी सिद्धियाँ नहीं बड़ी सिद्धियाँ

हम सत्-चित्-आनन्द की बात कर रहे थे। एक बार फिर मुझे संस्कृत् शब्द उपयोग करने पड़ रहे हैं। सत्-चित्-आनन्द पराचेतना हैं-सर्वव्याप्त शक्ति। चित्त चेतना है। इस क्षण आप लोग चेतन हैं और मुझे सुन रहे हैं। हर क्षण आप लोग चेतन हैं परन्तु यह क्षण मृत होकर भूत बनता जा रहा है। हर क्षण भविष्य से वर्तमान की ओर जा रहा है। इस क्षण आप लोग चेतन हैं और मुझे सुन रहे हैं। विचार उठता है और फिर इसका पतन होता है। विचार को उठते हुए आप देख सकते हैं परन्तु इसको गिरते हुए आप नहीं देख सकते। इन विचारों के बीच की दूरी 'विलम्ब' कहलाती है। कुछ समय के लिए यदि आप रुक सकें (विचारों को रोक सकें) तो आप चेतन मस्तिष्क को पहुँच जाते हैं और वहीं सत्-चित्त-आनन्द का अस्तित्व है। आप कह सकते हैं कि सत्-चित्त-आनन्द मस्तिष्क की एक दशा है या मस्तिष्क की वह अवस्था है जहां कोई विचार नहीं होता, फिर भी आप चेतन, निर्विचार होते हैं। यह प्रथम अवस्था है जिसमें आप जाते हैं, पराचेतन अवस्था में।

कुछ लोग सोच सकते हैं कि आत्म-साक्षात्कार द्वारा व्यक्ति को ऐसी अवस्था प्राप्त हो जानी चाहिए जो आदिशंकराचार्य को प्राप्त हुई थी। परन्तु यह सम्भव नहीं है। कुछ साधकों के साथ ऐसा हो सकता है परन्तु सब के साथ ऐसा होना असम्भव है। निर्विचार होना आपकी प्रथम अवस्था है। आप निर्विचार चेतना में चले जाते हैं। ऐसा तभी घटित होता है जब कुण्डलिनी आज्ञा चक्र से ऊपर चली जाती है अर्थात् मस्तिष्क क्षेत्र में प्रवेश करती है। जब आपका चित् 'सत्' (सत्य) बिन्दु को छू लेता है तब वास्तविकता मिथ्या से अलग हो जाती है। आप का व्यक्तित्व दोहरा हो जाता है। इस अवस्था में आप अलग होने लगते हैं। जैसे दूध में चूना डालने पर दूध, पानी और दही बनने लगता है। इसी प्रकार से वास्तविकता का आरम्भ होता है। यह वो अवस्था है जब आप कह सकते हैं कि कुण्डलिनी केवल जागृत हुई है। भिन्न अवस्थाएं जिस प्रकार से घटित होती हैं उनको समझना हमारे लिए आवश्यक है।

मैं अत्यन्त विस्तृत तस्वीर आप के सम्मुख रख रही हूँ परन्तु सामान्यतः अधिकतर लोगों की कुण्डलिनी एक दम से सहस्त्रार पर चली जाती है, कुछ लोगों में यह नहीं भी जाती, समय लेती है। या तो यह स्वाधिष्ठान में रुक जाती है या नाभि पर, अधिक ऊपर नहीं जाती। कई बार ये अनाहत् चक्र में फंस जाती है और ऐसा भी हो सकता है कि कुण्डलिनी बिल्कुल उठे ही नहीं। परन्तु जिन साधकों में कुण्डलिनी आज्ञा-चक्र-द्वार पार कर लेती है तो वह व्यक्ति निर्विचार समाधि की अवस्था में चला जाता है। निर्विचार चेतना की इस अवस्था से आपको

कुछ शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, मान लो आप गर्वनर बन गए, गवर्नर की कुछ शक्तियाँ आपको मिल जाती हैं। इसी प्रकार से आपको भी कुछ शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

परन्तु इस अवस्था में कुण्डलिनी को छोड़ देना ठीक नहीं है क्योंकि कुण्डलिनी एक ओर को या दूसरी ओर का (बाएं या दाएं) जा सकती है और इस प्रकार से अतिचेतन (Supra-conscious) में या सामूहिक अवचेतन (Collective-sub-conscious) में प्रवेश कर सकती है। ये वो अवस्था है जिसमें प्रायः सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। छोटी-मोटी सिद्धियाँ नहीं, उच्च कोटि की सिद्धियाँ।

उदाहरण के रूप में, कुण्डलिनी यदि अतिचेतन में चली जाए तो व्यक्ति को भविष्यवाणियाँ करने की सिद्धि मिल जाती है। कुण्डलिनी यदि सामूहिक अवचेतन में चली जाए तो ऐसा व्यक्ति बीते हुए समय को देखने लगता है। ऐसा व्यक्ति जब मेरे पास आता है तो वह देख पाता है कि अपने पूर्व जन्मों में मैं कौन थी? उन्हें कायल नहीं करना पड़ता। यह भूत-बाधित होने जैसा ही है। नशाखोर तथा शराबी व्यक्ति यदि भला है और अब भी परमात्मा को खोज रहा है तो वह मुझे भिन्न रूपों में देखता है। वह मेरा भूतकाल देख सकता है और मुझसे बहुत ही प्रभावित हो सकता है। वह जान जाएगा कि मैं कौन थी? लोग सोचते हैं कि भूतकाल हमेशा वर्तमान से महान् होता है क्योंकि भूतकाल आज की अपेक्षा कहीं महान है, यद्यपि इससे पूर्व मैंने कभी किसी को आत्म-साक्षात्कार नहीं दिया। इस प्रकार की चीजें जब वह देखता है तब वह मेरे प्रति आकर्षित हो जाता है। ऐसा उन लोगों के साथ होता है जो अतिचेतन की अवस्था में होते हैं और उनका झुकाव बाईं ओर को होता है अर्थात् भूतकाल की ओर।

जो लोग आक्रामक प्रवृत्ति के होते हैं (दाईं ओर के) वे मुझे प्रकाश के रूप में देख सकते हैं। पाँचों तत्व उन्हें दिखाई देते हैं। झरने या हिमशैल (Iceberg) के रूप में वो मुझे देखते हैं। वे तन्मात्रा अर्थात् पंच-तत्वों के कारणात्मक सार को देखने लगते हैं। ऐसा होने पर वे कायल हो जाते हैं क्योंकि ऐसा व्यक्ति मेरे विषय में जब विश्वस्त हो जाता है तो उसका विश्वास आप लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। बहुत से तान्त्रिक जानते हैं कि मैं कौन हूँ? वो मुझसे डरते हैं और मेरे विषय में बात नहीं करते हैं। एक साधारण नौकरानी मेरे कार्यक्रम में आई, उसको दौरा आया और वह संस्कृत बोलने लगी तथा पन्द्रह श्लोकों में मेरा पूरा वर्णन किया। पहली बार किसी ने मेरे बारे में इस तरह वर्णन किया था क्योंकि इससे पूर्व मैंने कभी अपने विषय में कुछ नहीं कहा था। और इस प्रकार इसका आरम्भ हुआ।

"अतः इस स्थिति में आपकी कुण्डलिनी को छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगेगा क्योंकि आप, लोगों को रोगमुक्त कर सकते हैं तथा रोग ठीक करने का कार्य तब भी हो सकता है जब आपकी कुण्डलिनी मस्तिष्क क्षेत्र के अन्दर हो। सदैव मेरी यह इच्छा होती है कि कुण्डलिनी ब्रह्मरन्ध्र से बाहर आए। उस अवस्था में आपको चैतन्य लहरियाँ आने लगती हैं। परन्तु इस अवस्था में (कुण्डलिनी का मस्तिष्क क्षेत्र में होना) आप 'चित्त' मात्र होते हैं, आप केवल 'सत्' बिन्दु को छू पाते हैं। केवल आपका चित्त आत्मा की ओर आकर्षित होता है। चित्त, जैसा मैंने आपको बताया

*है, गैस के दीपक में टिमटिमाते प्रकाश की तरह होता है और कुण्डलिनी उसमें गैस है जो आत्मा को छू लेती है तथा आत्मा का प्रकाश मध्य नाड़ी तन्त्र पर फैल जाता है। बाह्य आवरण में चित्त का अर्थ है ध्यान-तत्व (*Attention part*)। इस स्थिति में कुण्डलिनी ब्रह्मरन्ध्र को खोलती है और आप अपने हाथों पर चैतन्य लहरियाँ महसूस करते हैं तथा अन्य लोगों की चैतन्य लहरियाँ भी महसूस कर सकते हैं क्योंकि अब आप 'सामूहिक-चेतन' (*Collective conscious*) हो जाते हैं। सत्-चित्त-आनन्द में से अभी भी आप 'चित्त' मात्र को छू पाते हैं। इस प्रकार आप चित्त भाग को महसूस करने लगते हैं जो कि अब सामूहिक चेतन होने लगता है अर्थात्-आप सत्-चित्त-आनन्द रूपी सागर में गिर जाते हैं जहाँ आपको केवल सामूहिक-चेतना महसूस होती है। इसका अर्थ यह है कि आप अन्य लोगों की कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, 15.02.1977)

★ **...इस अवस्था में बहुत से लोग छूट जाते हैं, केवल चित्त ही प्रभावशाली होता है।**

*कल एक अन्य व्यक्ति आया था, आपने देखा, वह मुझसे बहस कर रहा था कि हमारे अन्दर स्थगित बुद्धि (*Suspended Intelligence*) होती है, परन्तु मैंने केवल इतना पूछा, "कि यह स्थगित बुद्धि क्या है? मुझे इसका ज्ञान नहीं है।" तब मैंने उसे बताया। वह कहने लगा, "मैं तुर्यावस्था में हूँ।" मैंने कहा, "आप यदि तुर्या-अवस्था में हैं तो आप अन्य व्यक्ति की कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं, बिना इसके आप स्वयं को प्रमाणपत्र नहीं दे सकते। परन्तु क्या आप दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं?" कहने लगा 'नहीं'। तब मैंने उससे पूछा, "तो किस प्रकार आप तुर्या में हो सकते हैं?" तुर्या में जब आप जाते हैं अर्थात् इस स्तर से जब आप पार होते हैं तब आपको दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी की जानकारी हो जानी चाहिए। अब आपने देखा है कि यहाँ पर बहुत से लोग हैं। बहुत से लोग हैं जो दूसरों की कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं और वो सभी एक ही बात कहते हैं तथा एक ही भाषा बोलते हैं चाहे वह अंग्रेजी में, हिन्दी में या किसी अन्य भाषा में बोलें। वे एक ही चीज कहते हैं-यह चक्र पकड़ रहा है, वह चक्र पकड़ रहा है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आप अपनी कुण्डलिनी को देखने लगते हैं और उसके द्वारा अन्य लोगों की कुण्डलिनी को भी। अपनी अंगुलियों पर आप महसूस कर सकते हैं कि क्या घटित हो रहा है? आप केवल 'चित्त' को महसूस करते हैं, इसके 'आनन्द' को नहीं। पहली अवस्था में चित्त के द्वारा दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी को महसूस करना तथा दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी को उठाना है। कुछ समय पश्चात् मेरे फोटों की सहायता से आप किसी भी साधक को आत्म-साक्षात्कार दे सकते हैं।*

परन्तु अभी भी आप 'आनन्द' की स्थिति तक नहीं पहुँचे। आरम्भ में आप केवल अपने हाथों पर शीतल लहरियाँ महसूस करते हैं। आपको शान्ति का अहसास होता है और आप निर्विचार होते हैं। 'निर्विचार चेतना' को आप महसूस करते हैं परन्तु इस अवस्था में भी अभी 'आनन्द' की अनुभूति नहीं हुई। मैंने हजारों मनुष्यों और उनकी समस्याओं का अध्ययन किया

है और जानती हूँ कि वास्तविकता क्या है? परन्तु कुछ ऐसे लोग भी हैं, यद्यपि वो बहुत कम हैं, जो अन्तिम अवस्था तक पहुँच गए हैं। इस प्रकार प्रथम अवस्था पर जब आप आते हैं तो यह चित्त की अवस्था होती है, चेतना की अवस्था। आप 'सत्' को छू लेते हैं अर्थात् आप वास्तविकता को देखने लगते हैं, चैतन्य के प्रवाह को आप महसूस करने लगते हैं। इस समय आप कहने लगते हैं कि यह आ रहा है, यह जा रहा है। अभी-अभी आपने कहा था कि यह आ रहा है, आपने यह नहीं कहा कि मैं इसे प्राप्त कर रहा हूँ, मैं दे रहा हूँ। आपकी भाषा से 'मैं' चला जाता हैं परन्तु अब भी अहं (Ego) और प्रतिअहं (Superego) पूर्णत: सन्तुलित नहीं हुए। वो अब भी बने हुए हैं परन्तु आपका चित्त उन्नत हुआ है और इसे आप महसूस कर सकते हैं।

इस सामूहिक चेतना से आप लोगों को रोगमुक्त कर सकते हैं और उन्हें आत्म-साक्षात्कार दे सकते हैं। और जैसा मैंने आपको बताया विश्व में कहीं पर भी विद्यमान किसी भी व्यक्ति की कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं और उसके चक्रों को ठीक कर सकते हैं। यहीं पर बैठे हुए आप दूसरे व्यक्ति की स्थिति के विषय में बता सकते हैं। आपका चित्त जहाँ भी जाता है, कार्य करता है, और इस प्रकार आपका चित्त सर्वत्र पहुँच सकता है-(Universal)। आपके चित्त रूपी बूंद 'सत्-चित्त-आनन्द' रूपी सागर से एकरूप हो जाती है।

मेरी बात को बहुत ध्यानपूर्वक सुनें क्योंकि इस अवस्था में बहुत से लोग छूट जाते हैं, प्रभावशाली तो केवल चित्त ही होता है। मैं आपको अपने एक शिष्य के बारे में बताऊंगी जो यहाँ पर इंग्लैंड से आया था। एक दिन बैठा हुआ वह अपने पिताजी के बारे में सोच रहा था, अचानक उसकी तर्जनी (Index) उंगली पर जलन हुई। उसने अपने पिताजी को फोन किया तो उसकी माँ ने बताया कि उसके पिताजी का स्वास्थ्य ठीक न था। उसे गले का रोग था। इस लड़के ने अपनी अंगुली पर कुछ किया और उसके पिता ठीक हो गए। अब वह सोच सकता है कि वह शक्तिशाली है, आदि-आदि। परन्तु बात यह नहीं है। इस प्रकार से वह नहीं सोच सकता क्योंकि उसका सहस्रार खुल चुका है। उसने केवल इतना कहा, "श्रीमाताजी, मैंने ऐसा महसूस किया और इस प्रकार किया, तथा मेरे पिताजी ठीक हो गए।" व्यक्ति ऐसा कभी नहीं कहता कि 'मैंने' यह किया। 'मैं' चली जाती है। आप कभी नहीं कहते 'मैंने' यह कार्य किया परन्तु आप कहेंगे, "श्रीमाताजी, आज मेरी आज्ञा पकड़ रही है," "श्रीमाताजी, मेरा हृदय पकड़ रहा है।"

ये लोग आ कर अपने विषय में इस प्रकार से बात करते हैं। आज्ञा पकड़ने का अर्थ यह है कि आप पगला जाएंगे। परन्तु व्यक्ति को यह बात बुरी नहीं लगती क्योंकि वह इससे लिप्त नहीं है। वह अपनी आत्मा से जुड़ा हुआ है। अत: आत्म-रूप में वह कहता है कि यह चक्र पकड़ा हुआ है, वह चक्र पकड़ा हुआ है। कर्क रोग (Cancer) से पीड़ित व्यक्ति को इसका पता नहीं होता परन्तु आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति का चित्त उसे बता देगा कि फलां-फलां चक्रों की स्थिति ठीक नहीं है और इतने चक्रों की स्थिति के ठीक ना होने का अर्थ है-कर्क रोग। उसे चिकित्सक के पास नहीं जाना पड़ता, वह स्वयं रोग निदान (Diagnose) कर सकता है। चिकित्सक की तरह से वह निदान करके यह नहीं कहेगा कि आपको हृदय का कैंसर है या गले

का, वह कहेगा कि आपके चक्र पकड़े हुए हैं, बाईं ओर के, या दाईं ओर के।

चैतन्य लहरियाँ कहाँ से आ रही हैं, कहाँ तक यह पहुँच रही है? और ऐसे चक्रों की गहन समझ प्रदान कर रही हैं? बहुत-सी अप्रत्यक्ष महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हो रही हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, नई दिल्ली, भारत 15.02.1977)

★ वस्त्र ऐसे होने चाहिए जो उपयोगिता एवं गरिमा के लिए हों।

तत्पश्चात् सहजयोगी के लिए आवश्यक है कि ऐसी वस्तुएं इस्तेमाल करें जो प्राकृतिक हैं। बनावट को त्याग दें। अधिक स्वाभाविक बनें। कहने से मेरा अभिप्राय ये नहीं है कि पेड़ों की जड़ों को निकाल कर खाने लगें या कच्ची मछलियाँ खाएं। मेरा ये अभिप्राय नहीं है। चीजों की अति में जाने से बचें। परन्तु अधिक स्वाभाविक जीवन बिताने का प्रयत्न करें। स्वाभाविक अर्थात् लोग जान जाएं कि आपमें मिथ्या अभिमान नहीं है। कुछ लोग आवारागर्दों की तरह से वस्त्र धारण करते हैं ताकि अधिक लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकें। मैं देखती हूँ कि कुछ लोग अपने बाल रंगते हैं! आपको सहज व्यक्ति होना चाहिए। आपका आचरण अत्यन्त स्वाभाविक होना चाहिए। विवेकहीन लोगों को ये बात बड़ी हास्यास्पद प्रतीत हो सकती है। सहजयोग में विवेक का बहुत महत्व है। हर समय आपको विवेक बनाए रखना होगा। प्राकृतिक का अर्थ है कि आपको स्वाभाविक वेश-भूषा पहननी चाहिए जो आप पर फबे। उदाहरण के रूप में, इस जलवायु में श्री राम की तरह से वस्त्र पहनने का कोई लाभ नहीं है, वे तो शरीर के ऊपरी हिस्से में कोई वस्त्र पहनते ही नहीं थे। जिस भी देश के आप वासी हैं उसके हिसाब से और अवसर के अनुरूप वस्त्र धारण करें, जिसे आप सोचते हों अच्छा और गरिमामय है। इस प्रकार के वस्त्र आपकी सुरुचि तथा व्यक्तित्व को दर्शाएँगे। आपको वही वस्त्र पहनने चाहिएं जो आप पर फबते हैं। काई के रंग के वस्त्र, लम्बे सूट जो बड़े अटपटे लगते हैं और जिनमें व्यक्ति विदूषक लगता है, ऐसे वस्त्र न पहनें। विदूषकों जैसी चीजें अनावश्यक हैं और तड़क-भड़क वाली चीजें भी। सादे-सुन्दर वस्त्र पहनने चाहिएं जो आपको गरिमा प्रदान कर सकें।

वास्तव में पूर्व के लोगों का ये मानना है कि परमात्मा ने हमें सुन्दर शरीर दिया है तथा इसे मानव सृजित सुन्दर चीज़ों से सजाया जाना चाहिए ताकि शरीर का सम्मान हो, इसकी पूजा हो। उदाहरण के तौर पर, भारतीय महिलाएँ साड़ियाँ पहनती हैं। साड़ियाँ उनकी मनोदशा तथा शरीर की पूजा तथा सम्मान को अभिव्यक्ति करती हैं। वस्त्र ऐसे होने चाहिएं जिनका उपयोग भी हो और गरिमामय हों। सभी सहजयोगियों को एक से वस्त्र पहनने की आवश्यकता नहीं है, ये मुझे अच्छे नहीं लगते। प्रकृति की तरह से वस्त्रों में भी विविधता होनी चाहिए। हर मनुष्य भिन्न व्यक्ति लगना चाहिए। पूजा आदि के लिए यदि एक जैसे वस्त्र पहन लिए जाएं तो कोई बात नहीं ताकि आपका चित्त वैचित्र्य पर न जाए परन्तु आम जीवन में आपको सामान्य व्यक्ति होना है। आप सभी गृहस्थ हैं। किसी को कुछ त्यागने की आवश्यकता नहीं। आप लोगों को मैं कुमकुम लगाकर सड़कों पर जाने का परामर्श भी नहीं देती। आपको सामान्य व्यक्ति होना है जिसकी ओर कोई अंगुली न उठा सके। आपको हास्यास्पद या अटपटे वस्त्र नहीं पहनने।

आपको सामान्य व्यक्ति की तरह से वस्त्र धारण करने हैं, सहजयोग में सामान्य होना अत्यन्त आवश्यक है। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, यू.के., 29.07.1980)***

★ 'आनन्द' भिन्न प्रकार के हैं।

प्रश्न : क्या आप 'निरानन्द' की थोड़ी-सी व्याख्या करेंगी, क्या आप 'निरानन्द' के विषय में बताएंगी?

श्रीमाताजी : *देखिए, निरानन्द का केवल वर्णन किया जा सकता है इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती। जब पूर्णानन्द होता है तो न खुशी होती है न गम होता है। आपको प्रसन्नता या अप्रसन्नता का एहसास ही नहीं होता, ये तो अहं और प्रतिअहं के गुण हैं।*

सहजयोग में ज्यों-ज्यों आप एक आनन्द से दूसरे आनन्द की ओर बढ़ते हैं, भिन्न प्रकार के आनन्द हैं। जैसे हम कह सकते हैं, आत्मा-आत्मा को अनुभव करके जो आनन्द आपको प्राप्त होता है, वह **'स्वानन्द'** *कहलाता है। इसका अर्थ ये है कि आप स्वयं अपनी आत्मा को अनुभव करते हैं और आपको आनन्द मिलता है। इसके बाद आप अन्य लोगों को साक्षात्कार देते हैं तो आपको परानन्द प्राप्त होता है। परन्तु जब आपको अच्छे स्वास्थ्य, भौतिक उपलब्धियाँ आदि सभी कुछ मिलता है, पूर्ण सन्तोष प्राप्त होता है, तो ये* **'ब्रह्मानन्द'** *है। और इस प्रकार से आप अपने अन्दर उच्चातिउच्च आनन्द प्राप्त करने लगते हैं, क्योंकि आपकी नाड़ियाँ नए आयामों के लिए खुलने लगती हैं।*

अत: आप कह सकते हैं कि श्रीकृष्ण के सार पर आपको **कृष्णानन्द** *प्राप्त होता है जिसमें माधुर्य मिलता है। अपनी उदारता को जब आप देखते हैं तो आपको* **शिवानन्द** *मिलता है। बच्चों के साथ जब हम होते हैं तो हमें* **गणेशानन्द** *प्राप्त होता है। सभी आनन्दों का वर्णन किया जा सकता है परन्तु निरानन्द का वर्णन नहीं किया जा सकता क्योंकि यह महामाया का आनन्द है। जब सभी आनन्द एक रूप होते हैं तो* **'निरानन्द'** *होता है। अत: अहं और प्रतिअहं के लिए कोई स्थान नहीं है। जब पूरा सहस्रार खुल जाता है और परमात्मा के साथ पूर्ण एकरूपता के अतिरिक्त कुछ नहीं होता, सिर में जब हर समय प्रकाश आता रहता है और यहाँ से प्रकाश बाहर निकलता रहता है-आपने मेरे फोटोओं में देखा है-मानो सहस्रार परमेश्वरी माँ का दूध पीने वाला बच्चा बन गया हो, आनन्द अपने अन्दर आत्मसात कर रहा हो, और वही आनन्द पुन: बाहर प्रतिबिम्बित हो रहा हो! ये इस प्रकार है जैसे लहरें तट पर पहुँचती हैं फिर वे वापिस आती हैं, पुन: वापिस जाती हैं और इस प्रकार से इनका एक प्रतिमान (Pattern) बन जाता है।*

अब उस प्रतिमान से प्रवाहित होने वाले आनन्द को आप किस प्रकार वर्णन कर सकते हैं। **निरानन्द** *के विषय में केवल एक चीज है कि महामाया आपके बहुत करीब और बहुत दूर भी होती है, ये विशेषता है। पूर्ण निर्विचारिता, पूर्ण शान्ति, पूर्ण मौन होता है, आप सोचते बिल्कुल नहीं। ये मात्र मौन होता है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता क्योंकि शब्द आनन्द प्रवाह को तोड़ते हैं। वे इसे सम्भाल नहीं सकते। ठीक है? अब व्याख्या करें, आपको कैसा लग रहा है? अब आप व्याख्या करें तो बेहतर है। कोई अन्य प्रश्न? सुन्दर प्रश्न था।*

अब देखिए कि मानव स्तर पर अब तक व्यक्ति अपनी नस-नाड़ियों पर पीड़ा या दवाब

का अनुभव करता है, आनन्द का अनुभव कभी नहीं करता परन्तु आत्म-साक्षात्कार के पश्चात् आपकी नस-नाड़ियाँ आनन्द अनुभव करने लगती हैं। ठीक है?"

किसी को कुछ और कहना है?...

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना आश्रम, 02.05.1985)

★ आप यदि हाँगकाँग जाएं तो उनकी प्रतिमा देख सकते हैं, चेहरा मुझसे काफी मिलता-जुलता है

प्रश्न : श्रीमाताजी क्या आप देवी 'Kuan Yin' के विषय में कुछ बता सकती हैं?

श्रीमाताजी : *आप* Kuan Yin *के बारे में जानना चाहते हैं? वे अवतरण हैं एक...कहने से अभिप्राय है कि चीन की पौराणिक कथाओं के अनुसार इस अवतरण को* Kuan Yin *कहा गया है। वास्तव में ये गरुड़ (*Garuda*) हैं। इन्हें* Garuda *कहा गया है। ये अत्यन्त वृद्ध हैं क्योंकि (*Kuan Yin*) का जन्म एक राजा की पुत्री के रूप में हुआ था। वे एक राजा की बेटी थीं जो देवी का 'कौमार्य रूप' थीं। उन्होंने विवाह नहीं किया इस कारण से उनके पिता उनसे बहुत नाराज हो गए कि इसने विवाह नहीं किया। राजा ने उन्हें धमकाया क्योंकि वह किसी बहुत बड़े राजा से उनका विवाह नियत कर चुका था। विवाह न होने पर पिता को बहुत क्रोध आया और वह बहुत शर्मिन्दा हुआ। वह उन्हें एक पर्वत शिखर पर ले गया और धमकी दी कि मैं तुम्हें नीचे धकेल दूंगा और वास्तव में उन्हें पर्वत शिखर से घाटी में फेंक दिया गया। राजा ने सोचा कि वह अवश्य मर गई होगी। परन्तु नीचे एक चीता खड़ा हुआ था जिसने उसे लपक लिया और उसे साथ ले आया तथा उसकी देखभाल की। जब वह बहुत वृद्ध हो गई तब अपने आश्रम से निकलीं और लोगों के रोग दूर करने लगीं। उसके इलाज से लोग ठीक हो जाते। परन्तु वे बहुत वृद्ध हो चुकी थीं। एक बार उनका पिता बीमार हुआ, पिता का इलाज करने के लिए वे उसके पास आईं। राजा ने उन्हें पहचान लिया। राजा के पास जाकर उन्होंने उसका इलाज किया। लोगों को रोगमुक्त करने वाली यही (*Kuan Yin*) थीं। आप यदि हाँगकाँग जायें तो इनकी प्रतिमा देख सकते हैं, इनका चेहरा मुझसे बहुत मिलता-जुलता है, पूरी तरह से, परन्तु वे वृद्ध दिखाई देती हैं और उनके कंधे बहुत अधिक झुके हुए हैं। परन्तु वे ईसामसीह से बहुत पहले अवतरित हुईं, बौद्ध लोगों को लगा कि लोग इन्हें नहीं छोड़ेंगे क्योंकि लोग उनका सम्मान 'करुणा की देवी' के रूप में करते थे। इसलिए बौद्ध लोगों में* Kuan Yin *को बौद्धशास्त्रों में स्थान दे दिया।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी विएना आश्रम 02.05.1985)

★ मेरे विचार से उन्होंने मुझसे साड़ियाँ उधार ली होंगी क्योंकि मेरे पास बहुत अधिक साड़ियाँ हैं।

...परन्तु उनका वास्तविक चरित्रविवेक द्रौपदी की कथा में देखा जा सकता है। महाभारत की कथा आप जानते हैं, जब द्रौपदी को दुर्योधन के दरबार में लाया गया तो उसने दु:शासन को द्रौपदी की साड़ी उतार देने के लिए कहा। इस घटना का वर्णन (व्यास जी) ने इस प्रकार किया है। द्रौपदी ने अपने दाँतों में साड़ी पकड़ी हुई थी, उसने 'कृष्ण' का नाम लिया। वह केवल 'कृ' कह पाई, 'ष्णा' अर्थात् समाप्त। वह 'कृ' पर ही रुकी रहीं, 'ष्णा' नहीं कहा। परन्तु ज्योंही

उसने 'कृष्णा' कहा, साड़ी नीचे गिर गई। इसका वर्णन करते हुए कवि कहते हैं-

......"द्वारिका में शोर भयो
शोर भयो भारी
शंख, चक्र, गदा, पद्म,
गरुड़ लेय सिधारी......"

उन्होंने क्या किया? द्रौपदी ने जब कृष्णा कहा, तो द्वारिका में एक घोर आवाज हुई, श्री कृष्ण द्वारिका में थे, तुरन्त शंख, चक्र, गदा, पद्म—अपने चारों आयुद्ध लेकर गरूड़ पर सवार होकर वे आ गए। जिस प्रकार इस घटना का वर्णन किया गया वह अत्यन्त विस्मयकारी है। श्री कृष्ण की महानता से आपका हृदय विभोर हो उठता है। अपनी बहन के सतीत्व की रक्षा करने के लिए वे दौड़े चले आए। उनकी दृष्टि में बहन का सतीत्व महत्वपूर्णतम था। वो भी कह सकते थे, "नहीं, नहीं, नहीं, मैं राजा हूँ, मुझे ये देखना है, वो देखना है, ये करना है।"—कुछ नहीं। उसका सतीत्व यदि खतरे में है तो गरुड़ पर बैठकर वे उड़ते चले आए और उसे चीर प्रदान किया। दु:शासन उनकी साड़ी खींचते-खींचते थक गया। मेरे विचार से श्री कृष्ण ने मुझसे साड़ियाँ उधार लीं होंगी क्योंकि मेरे पास बहुत साड़ियाँ हैं। एक के बाद एक, साड़ियों का ढेर लग गया और उतारते-उतारते दु:शासन थक गया। वह द्रौपदी को निर्वस्त्र न कर पाया। द्रौपदी का सतीत्व इतना उच्च था। जिस प्रकार श्री कृष्ण ने उसकी रक्षा की वह प्रशंसनीय है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी न्यूजर्सी, यू.एस.ए. 02.10.1994)

★ मानव का सृजन अमीबा से हुआ और अमीबा का सृजन पंचतत्वों से किया गया...

..."इस प्रणाली में हमने एक अद्‌भुत प्रणाली का उपयोग किया। हमने पाँच कैपसूल एक दूसरे के अन्दर डाले और जब पहला कैपसूल, सबसे नीचे वाला, फटता है तो बाकी के चार कैपसूलों की गति को बढ़ाता है। दूसरा कैपसूल जब फटता है तो यान की गति को कई गुना अधिक बढ़ा देता है। गति इस प्रकार से तेज हो जाती है कि हमें लगता है कि पहले की अपेक्षा यह बहुत तेज़ हो गई है। फिर जब तीसरा कैपसूल फटता है तो यह यान को और अधिक गति प्रदान करता है। इसके बाद चौथा कैपसूल फटता है और फिर पाँचवाँ जिसने अंतरिक्षयान को सम्भाला हुआ होता है। अन्तर्रचित यन्त्रावली के माध्यम से जिस प्रकार एक के बाद दूसरा धमाका होता है उससे हमें अंतरिक्षयान में अत्यन्त तीव्र गति प्राप्त हुई है।

इसी प्रकार से हमारी उत्क्रान्ति भी घटित हुई है। उत्क्रान्ति का ज्ञान प्राप्त किए बिना, अचेतन से, हमें ये धारणा प्राप्त हुई है। हम जान गए हैं कि ये घटित हो चुका है। परन्तु हम इन दोनों के सह-सम्बन्ध नहीं बता सकते। इसी प्रकार से मानव का सृजन अमीबा से हुआ और अमीबा का सृजन पंचतत्वों से किया गया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हम पाँच कैपसूलों से बने थे:

शारीरिक या शारीरिक अस्तित्व प्रथम था।

इस शारीरिक अस्तित्व के अन्दर भावनात्मक अस्तित्व रखा गया।

भावनात्मक अस्तित्व के अन्दर आध्यात्मिक अस्तित्व रखा गया और

आध्यात्मिक अस्तित्व के अन्दर हमारी आत्मा या हमारे चित्त को रखा गया।

हम कह सकते हैं कि कुण्डलिनी ही वह (ऊर्जा) है जो फटती है और गति प्रदान करती है।

अत: कुण्डलिनी शक्ति हर चीज़ में है, परन्तु सबसे अधिक प्रभावशाली, सर्वोत्तम, उच्चतम रूप में यह मानव में है। यही शक्ति सभी में विद्यमान है और यही हर चीज़ का विकास करती है—जैसे कार्बन से अमीबा अवस्था तक और अमीबा से पशु अवस्थातक और पशु अवस्था से मानव अवस्था तक। पंचतत्वों में भी ये विद्यमान है क्योंकि तत्वों का भी विकास होता है। हम नहीं जानते कि तत्वों का विकास किस प्रकार घटित होता है। परन्तु प्रकृति में तत्व अपने रूप और आकार बदलने लगते हैं और इस प्रकार भिन्न तत्व बन जाते हैं। हमें इसका कोई ज्ञान नहीं है क्योंकि घटित होने वाले इस परिवर्तन की संख्या मापने का हमारे पास कोई साधन नहीं है।

पशु भी परिवर्तित होते हैं। मछलियों से रेंगने वाले जीव बन जाते हैं, रेंगने वाले पशुओं से, स्तनधारी पशु बन जाते हैं और स्तनधारियों से नरवानर, वानर और फिर मानव। ये सब घटित होता है। कितने नष्ट हो गए, कितने शेष हैं, कितने परिवर्तित हो गए हैं? किसी के पास इनका लेखा-जोखा नहीं है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी कोवलम, केरल, भारत, फरवरी 1979)

★ कृत-युग ही वह युग है जिसमें कार्य होगा।

"पृथ्वी पर उनके अवतरण से हमारी दाईं ओर का विकास हुआ था और यज्ञ भी दाईं ओर की गतिविधियाँ थीं।

क्योंकि सर्वप्रथम जब मनुष्य पृथ्वी पर अवतरित हुआ तो वह पशुओं के आक्रमणों से तथा राक्षस आदि नकारात्मक शक्तियों से डरता था क्योंकि ये शक्तियाँ उन्हें परेशान करती रहती थीं। इस अवस्था में मानव ने राजा (शासक) प्रथा बनाई, ऐसा राजा जो आदर्श हो और धर्म के अनुकूल राज्य करें। वो भी (श्री राम) एक कार्यभारी थे। वे त्रेतायुग में और श्री कृष्ण द्वापर युग में आए। मैं कलियुग में अवतरित हुई-परन्तु अब कृतयुग है—जिस युग में कार्य होगा—कृतयुग। ये समय है जिसमें कार्य होगा।

अभी तक चीजें एक से दूसरी तक बढ़ी हैं। त्रेतायुग में, जब श्री राम अवतरित हुए तो राजा (शासक) प्रथा का आरम्भ हुआ। तब लोगों की शुभेच्छाओं पर बल दिया गया, राजा के लिए, अन्य लोगों के लिए और मानवता के हित के लिए अच्छी भावना होनी आवश्यक थी। इच्छा, अर्थात् बायाँ पक्ष। तो किस प्रकार शुभ भावनाओं का सृजन करें? सर्वप्रथम तो राजा को त्याग द्वारा ये दिखाना होता था कि लोगों के चरित्र और शुभकामनाओं को बनाए रखने के लिए वह त्याग की किस सीमा तक जा सकता है।

अत: श्री राम के अवतरण से दाएँ पक्ष का सृजन किया गया, क्योंकि उन्होंने लोगों में यह चेतना जागृत करने का पथ दिखलाया कि उन पर शासन किया जाना चाहिए तथा उन्हें

अराजकतावादी नहीं होना चाहिए। एक मुखिया होना चाहिए जो आयोजन और समन्वय करने के योग्य हो तथा सामूहिकता की भावना को कार्यान्वित कर सके।

(परम पूज्य श्रीमाताजी चैलशम रोड, लन्दन, 02.04.1982)

★ अब द्वितीय चरण में हमें करुणा अपनानी होगी।

सहजयोग के प्रथम चरण में हमने सुषुम्ना मार्ग तथा मस्तिष्क में बने आपके चक्रों में देवी-देवताओं को जागृत किया, परन्तु अब समय आ गया है कि हम इसे क्षैतिज (Horizontal) स्तर पर फैलाएं, और क्षैतिज स्तर पर चलने के लिए हमें ये समझना होगा कि इस ओर कैसे चलें?

इन्द्रधनुष के सात रंगों की तरह से हमारे अन्दर इन केन्द्रों, इन चक्रों के सात रंग हैं और यदि हम पीछे-मूलाधार से चलें और इसे आज्ञा चक्र तक लाएं तो ठीक से देखने पर पता चलता है कि यह भिन्न प्रकार से स्थापित है। कहने का मेरा अभिप्राय ये है कि सहस्रार में, क्योंकि सहस्रार नतोदर (Concave) आकार में है, ये समझना आवश्यक है कि तालू अस्थि क्षेत्र के मध्य (Center) की समरूपता हमारे हृदय से है। अत: द्वितीय चरण में अब हृदय ही केन्द्र बिन्दु है। मुझे आशा है कि आप मेरे कहने का अभिप्राय समझ गए होंगे।

अपना चित्त यदि आपने सहस्रार पर डालना है तो प्रथम कार्य जो आपको करना होगा वह है अपने चित्त को हृदय पर डालना। सहस्रार में हृदय चक्र और हृदय स्वयं, (आत्मा) एक समान (Coinside) हो जाते हैं। अर्थात् जगदम्बा हृदय और आत्मा से एक रूप हो जाती हैं, अत: हम देखते हैं कि यहाँ योग घटित होता है।

इस समय, ये समझ लेना बहुत महत्वपूर्ण है कि हमें एक बहुत बड़ा कदम उठाना है। पूरा सहस्रार इस प्रकार चलता है, ये सभी चक्र इसी प्रकार से प्रकाश डालते हैं, घड़ी की सुई की तरह से (Clockwise) और हृदय उसकी धुरी है।

अत: सभी धर्मों, सभी पैगम्बरों, सभी अवतरणों का सार करुणा (Compassion) है जिसे हृदय के इस चक्र में स्थापित किया गया है। इस प्रकार हम समझ पाते हैं कि इस द्वितीय चरण में अब हमारे अन्दर करुणा का होना आवश्यक है, यह चरण करुणा की अभिव्यक्ति है। सर्वशक्तिमान परमात्मा में यदि करुणा न होती तो उसने इस महान ब्रह्माण्ड का सृजन न किया होता। वास्तव में परमात्मा की शक्ति, या आदिशक्ति ही उनकी करुणा का मूर्त रूप हैं, और यही करुणा ही सारी उत्क्रान्ति को मानवीय स्तर पर लेकर आई है तथा सहजयोगियों के रूप में आपका उद्धार भी इसी करुणा की देन है, तथा करुणा सदैव क्षमा से पूर्णत: आच्छादित होती है।

अत: आप देख सकते हैं कि इस बिन्दु पर त्रिमूर्ति (त्रिदेव) का मिलन होता है: परमात्मा के पुत्र क्षमा हैं, क्षमा के मूर्तरूप। अत: सर्वशक्तिमान परमात्मा, जो कि साक्षी हैं, माँ जो करुणा हैं और बालक जो क्षमा हैं, ये सब सहस्रार में हृदय चक्र पर मिलते हैं (एकरूप हो जाते हैं)।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, रौवेन, फ्रांस, 05.05.1984)

★ सहजयोगी की विशुद्धि यदि ठीक है तो उसमें सद्-सद्विवेक होना चाहिए।

आपने अहं समर्पित करना है, मिथ्याभिमान समर्पित करना है। मिथ्याभिमान बहुत प्रकार

का हो सकता है, उन चीजों का जो पूर्णतः बनावटी होती हैं। परमात्मा के सम्मुख आपकी सम्पत्ति कौन-सी है? आपका पैसा क्या है? आपका पद क्या है? आपका परिवार क्या है? शिक्षा क्या है? परमात्मा के सम्मुख ये सभी चीजें मूल्यहीन हैं। अतः व्यक्ति को महसूस करना है कि यदि हम परमात्मा की सम्पत्ति हैं तो हमें केवल एक ही चीज़ पर गर्व होना चाहिए कि उनका चैतन्य हमारे माध्यम से प्रवाहित होता है अर्थात् उन्हें (परमात्मा) हम पर गर्व है।

मान लो आप मुझे कोई फल देते हैं या गणेश या कुछ और देते हैं तो वह बहुमूल्य बन जाता है क्योंकि मैंने इसे छू लिया है और इसमें चैतन्य आ गया है। उदाहरण के रूप में, यदि धातु को लें, तो इस गणेश का मूल्य कुछ भी नहीं है। परन्तु कला की चीज़ बनने के बाद इसका मूल्य कुछ बढ़ गया है। इस संसार में कलात्मकता से चीजों के मूल्य बढ़ते हैं, परन्तु परमात्मा के साम्राज्य में या आध्यात्मिक संसार में, या परमेश्वरी संसार में गणेश जी का मूल्य, उसी गणेश का, उससे हजारों गुणा बढ़ जाएगा जितना वह उस समय था जब वह केवल एक कलाकृति था। अतः अब जो आपको दिया जाएगा वह बहुत मूल्यवान है। अतः बनावट और बनावटी चीजों का अहं और मिथ्याभिमान मानवकृत है, बनावटी है और यह समर्पित किया जाना चाहिए क्योंकि यह मात्र एक मिथक है।

मानव-मस्तिष्क में ईर्ष्यालुपन, दूसरों से ईर्ष्या करना, एक अन्य दुर्गुण हैं यह विवेकहीनता के कारण होता है। परमात्मा के चरण कमलों में यदि आप अपनी ईर्ष्याएं समर्पित कर दें, मेरा अभिप्राय है कि आप सभी प्रकार की मूर्खताएं करते रहते हैं। आप जानते हैं कि इन विवेकहीन ईर्ष्याओं का कोई मूल्य नहीं-न इस संसार में, न उस संसार में। आश्चर्य की बात तो यह है कि सहजयोगियों में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्याभाव है! मैं अभी तक नहीं समझ सकी कि ऐसा किस प्रकार हो सकता है। आप धूप में खड़े हैं और अपनी छाया से ईर्ष्या कर रहे हैं! किसी की छाया बड़ी है, इस कारण से आपको एक दूसरे से ईर्ष्या है! कभी-कभी मैं किसी एक व्यक्ति को तोहफा देती हूँ और दूसरे को नहीं दे पाती तो उनमें ईर्ष्या पैदा हो जाती है! कभी तो मैं केवल उन लोगों को समय देती हूँ जो वास्तव में भटक रहे हैं!

अतः व्यक्ति को समझना है कि हमारे ईर्ष्याभाव मूर्खता हैं। मैं उन लोगों की बात नहीं समझ पाती जो आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं फिर भी उन्हें सहजयोगियों से ईर्ष्या है और वे उन्हें गिराने का प्रयत्न करते रहते हैं। ईर्ष्यालु बनने की अपेक्षा उन्हें सहजयोगियों जैसा बनना चाहिए। सहजयोग में भी मैंने कुछ अत्यन्त अटपटी चीजें घटित होती देखी हैं, इसका उदाहरण ये है कि एक व्यक्ति मेरे पास आया, वह बहुत नाराज था कि "श्रीमाताजी आपने उस व्यक्ति-विशेष को इतना समय दिया, मुझे बहुत जलन हो रही है।" और आपने कहा, "कि मुझे भी उस व्यक्ति जैसा होना चाहिए जिससे मुझे ईर्ष्या है। मैं जानना चाहूँगा कि जिस व्यक्ति को आपने इतना समय दिया, मैं उस जैसा कैसे बनूं?" मैंने कहा, "वह व्यक्ति वास्तव में पागल है! क्या आप भी पागल होना चाहते हैं? क्या आपमें बिल्कुल भी विवेक नहीं है?" सहजयोगी की विशुद्धि यदि ठीक है तो उसमें विवेक होना ही चाहिए। **आपको ये बात समझनी है कि मैं जो कुछ भी कहती हूँ उसका उपयोग विवेकपूर्वक किया जाना चाहिए, आँखे बन्द करके नहीं। अतः**

आप समझ सकते हैं कि जो कुछ भी मैं कहती हूँ बिना विवेक के बेतुके ढंग से उसका उपयोग करना आपकी उत्क्रान्ति के लिए हानिकारक भी हो सकता है।

अहं की एक अन्य शाखा भी है–गर्म मिजाज़ होना। निःसन्देह इसका उपयोग उन लोगों के विरुद्ध होता है जो आपकी माँ का अपमान करने का प्रयत्न करते हैं। उनके विरुद्ध आपको करना पड़ता है। जैसा ईसामसीह ने कहा था, इसका उपयोग उनके लिए किया जाना चाहिए जो आदिशक्ति के विरुद्ध कार्य करते हैं। इसी प्रकार से आप लोगों को भी चाहिए कि मेरे विरुद्ध किसी भी प्रकार की हिमाकत को बर्दाश्त न करें, इतनी-सी भी नहीं। परन्तु अन्य मामलों में आप दूसरे सहजयोगियों को सहन कर सकते हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, 04.09.1983)

★ इस मामले में श्री कृष्ण ही आपके आदर्श हैं

कहानी इस प्रकार है कि एक बार उनकी पाँच पत्नियों ने किसी महान सन्त के दर्शन और आराधना के लिए जाना था। वह सन्त नदी के उस पार रहता था, उन्होंने वहाँ जाकर उसकी पूजा करनी चाही और इसके लिए उपयुक्त समय निकाला। जब वे नदी के पास गईं तो पाया कि नदी में बाढ़ आई हुई थी और इसे पार न किया जा सकता था। उन्हें लगा कि इस शुभ मुहूर्त में यदि वे सन्त की पूजा करने के लिए नहीं गईं तो यह अपशकुन होगा। उसी समय जाकर वे इस गुरु की पूजा करना चाहती थीं।

अतः वे श्री कृष्ण के पास गईं और उनसे पूछा: "इस बाढ़ ग्रस्त नदी को किस प्रकार पार करें?" श्री कृष्ण बोले, "वास्तव में? कोई बात नहीं। तुम जाओ और नदी से कहो-वह तापी नदी थी जिसे वे पार कर रही थीं-उन्होंने कहा, जाकर नदी से कहो कि यदि हमारे पति श्री कृष्ण 'योगेश्वर' हैं अर्थात् जो ब्रह्मचारी हैं, योगेश्वर वह व्यक्ति होता है जो कभी यौन गतिविधियों में लिप्त नहीं हुआ हो। यह सम्भव नहीं है। इस चीज के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। अर्थात् लिप्त होते हुए भी अलिप्त, इसमें होते हुए भी इससे बाहर रहना, कमल की तरह। वे यदि इस प्रकार की गतिविधि में कभी लिप्त नहीं हुए, केवल तभी। ऐसा श्री कृष्ण ही कर सकते हैं, कोई अन्य नहीं। केवल अवतरण ही ऐसा कर सकते हैं। कोई मनुष्य यदि ये कहे कि मैं श्री कृष्ण हूँ इसलिए मैं ऐसा कर रहा हूँ, मैं वैसा कर रहा हूँ-आप जानते हैं बहुत से पाखण्डी लोग होते हैं, आपने उनके बारे में अवश्य सुना होगा। वे कभी नहीं बन सकते। केवल अवतरण ही ऐसा कर सकते हैं। इसका अभिप्राय ये हुआ कि वे योगेश्वर ही अवतरित हुए थे।

तो उन्होंने जाकर नदी से कहा, "यदि वे योगेश्वर हैं तो कृपया उतर जाइए (Subside)।" और नदी का जलस्तर कम हो गया। उन्होंने नदी को पार किया, गुरु की पूजा की और वापिस नदी पर पहुँचीं। नदी फिर चढ़ी हुई थी, वे उसे पार न कर सकीं। वे गुरु के पास वापिस गईं। केवल कोई अवतरण ही अच्छा और सच्चा गुरु हो सकता है। उन्होंने गुरु से कहा, "नदी चढ़ी हुई है, हम इसे पार नहीं कर सकतीं। गुरु ने पूछा, "तो तुम आई कैसे थीं?" उन्होंने उत्तर दिया "श्री कृष्ण ने नदी से पूछने के लिए कहा था कि यदि वे योगेश्वर हैं तो आप उतर जाइए।" तब उस सन्त ने कहा, "ठीक है अब तुम जाकर नदी को बताओ कि यदि मैंने आपका दिया हुआ

खाना नहीं खाया तो नदी आपको रास्ता दे दे।" उन्होंने ऐसा ही किया। यद्यपि वे इस बात पर विश्वास न कर सकीं क्योंकि उन्होंने स्वयं सन्त को काफी पकवान खिलाए थे।

"जो भी खाना हमने उनको भेंट किया, यदि उन्होंने कुछ नहीं खाया तो आप उतर जाइए।" और नदी का स्तर कम हो गया।

सारी बात का सार ये है कि इन मामलों में श्री कृष्ण आपके आदर्श हैं। ये नहीं कि आप स्वयं को सबका आदर्श मान बैठें, सहजयोगी ये बहुत बड़ी गलती करते हैं। एकदम से वे सोच लेते हैं कि अब वे श्री कृष्ण बन गए हैं, या सोचते हैं कि कुछ महान् बन गए हैं या उन्होंने कुछ महान् चीज़ आत्मसात कर ली है। ऐसा नहीं है।

एक बात व्यक्ति को समझनी है कि इस आदर्श तक आपको पहुँचना है। आपकी दृष्टि और गतिविधियाँ सभी इस ओर होनी चाहिए। इससे पूर्व यदि आप ऐसी चीजों, इस प्रकार की विकृतियों या मूर्खतापूर्ण यौन गतिविधियों आदि में फँस जाते हैं तो आपको पता होना चाहिए कि आप बहुत तेजी से पतन की ओर जा रहे हैं। यह एक प्रकार की भूत-बाधा है जो आप पर कार्य कर रही है। वे आदर्श हैं-वे अवतरण हैं। आप अवतरण नहीं हैं और न ही अवतरण बन सकते हैं। वे प्रकाश हैं जो आपका मार्ग प्रकाशित कर रहे हैं, उस मार्ग को जिस पर आप चल रहे हैं। ये अवतरण आपको उस साम्राज्य में ले जा रहे हैं जहाँ वे सम्राट हैं, जहाँ वे प्रभु हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, चैलशम रोड, लन्दन, 15.08.1982)

★ क्या आपके दाँत असली हैं?

*उदाहरण के रूप में, उन्होंने मुझसे पूछा, "श्रीमाताजी क्या आप हॉट-डॉग (*Hot-dog*) लेंगी?" हिन्दी भाषा में इसका अर्थ 'गर्म कुत्ता' है—वे ऐसा कहते हैं। मैंने कहा, "ठीक है, मैं ले लूंगी।" उन्होंने कहा, "सभी अमरीकन लोग खाते हैं।" "ठीक है, मैं भी अमरीकन हूँ, मुझे भी दे दो।" परन्तु यदि कोई चीज आपके दाँतों के लिए हितकर न हो तो यह आपको खानी नहीं चाहिए। उदाहरण के रूप में, गोमाँस दाँतों के लिए हानिकारक है, बहुत हानिकारक है। इसी कारण से आप लोगों के दाँत बहुत जल्दी झड़ जाते हैं। साक्षात्कार के समय बहुत से लोग मुझसे पूछते हैं कि "क्या आपकी बत्तीसी आपकी अपनी है?" नि:सन्देह, "मेरी अपनी है।" उन्हें विश्वास ही नहीं होता कि ये मेरी अपनी है क्योंकि मैं जानती हूँ कि दाँतों के लिए अच्छा क्या है बुरा क्या है?*

परन्तु किसी भी धारणा से लिप्त नहीं होना चाहिए, यह अधिक सूक्ष्म लिप्सा है जिसने विश्व को धर्मान्धिता, प्रजातिवाद और न जाने किन-किन समस्याओं से हानि पहुँचाई है। अब यहाँ पर लोगों के अन्तर्विरोध को देखें: लोग काले होने के लिए समुद्र पर जाते हैं और उनमें प्रजातिवाद है। फिर वे समुद्र पर क्यों जाते हैं! आप स्वयं यदि काले होने के लिए समुद्र पर जाते हैं और उनमें प्रजातिवाद है। फिर वे समुद्र पर क्यों जाते हैं। आप स्वयं यदि काले होने के लिए जाते हैं तो श्यामरंग के लोगों से घृणा क्यों करते हैं? इतना अन्तर्विरोध है क्योंकि मस्तिष्क सन्तुलन में नहीं है। इसी कारण से प्रजातिवाद है। आप प्रजातिवादी बन बैठे हैं।

यदि वो नहीं हैं तो आपमें एक अन्य बन्धन है कि भिन्न जातियाँ हैं और आपको, जैसे

भारत में है, जातियों के अनुरूप चलना है। हर आदमी के हृदय में यदि आत्मा है तो जाति कैसे हो सकती है? नीची जाति के हाथ का खाना नहीं खाते क्योंकि वो ऊँची जाति के हैं, ये, वो! ये मस्तिष्क ही सभी प्रकार के बन्धनों का सृजन करता है। ये सभी महान् सन्त जो पृथ्वी पर अवतरित हुए, चाहे भारत में हों या विदेशों में या कहीं और, सभी ने इस जाति भेद की मूर्खता का विरोध किया। यह मस्तिष्क की उपज है। आप उनसे पूछिए कि आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि आप अन्य लोगों से उच्च हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यूजर्सी, यू.एस.ए., 02.10.1994)

★ **श्री कृष्ण अत्यधिक ज्ञानवान तथा चतुर हैं क्योंकि वे मस्तिष्क हैं। वे विराट हैं।**

"श्री कृष्ण बहुत समय के लिए नहीं आए, थोड़े समय में उन्होंने बहुत से राक्षसों का वध किया। उन्होंने पांडवों की ओर से युद्ध किया, श्री कृष्ण ने कहा कि उन्होंने कौरवों का वध नहीं किया परन्तु उन्होंने ऐसा किया। एक ओर तो श्री कृष्ण मधु की तरह से मधुर हैं, इसी कारण से उन्हें माधव कहा जाता है। जो लोग उनकी कृपा चाहते हैं उनके लिए वे माधव हैं। परन्तु आसुरी प्रवृत्ति लोगों के लिए वे भयानक अवतरण हैं। निःसंदेह श्री शिव भी ऐसा ही करते हैं। श्री शिव और देवी ने भी राक्षसों का संहार किया, देवी ने बहुत से युद्ध किए, बहुत से वाद-विवाद किए, परन्तु श्री कृष्ण ने कभी वाद-विवाद नहीं किया, क्योंकि वे जानते थे कि एक-एक करके इनसे किस प्रकार छुटकारा पाना है। उन्होंने असुरों से बहुत-सी चालाकियाँ भी कीं। एक दुष्ट राक्षस था जो लोगों को सता रहा था। युद्ध करते हुए श्री कृष्ण ने उससे चालाकी की। युद्धभूमि से दौड़कर श्री कृष्ण एक गुफा में घुस गए जहाँ एक सन्त सोया हुआ था। सन्त को श्रीशिव से वर प्राप्त था कि उनकी नींद भंग करने वाला व्यक्ति भस्म हो जाए। श्री कृष्ण ने अत्यन्त धीरे से अपनी शॉल उस सन्त पर डाल दी और स्वयं छिप गए। उनके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ वह राक्षस गुफा में आया और सोए हुए सन्त को श्री कृष्ण समझकर उसे लात मारी। वह सन्त उठ बैठा और ज्योंही अपनी तीसरी आँख से उस राक्षस की ओर देखा तो वह राक्षस भस्म हो गया। यह श्री कृष्ण की चालाकी थी।"

"श्री कृष्ण ज्ञानवान और चतुर थे क्योंकि वे मस्तिष्क हैं, वे विराट हैं। उनकी छाया, प्रेम, करुणा और सौन्दर्य उनके गोप-गोपियों के लिए था। राजा के रूप में उनके जीवन को समझना बहुत ही रहस्यमय है परन्तु सहजयोगी इसे समझ सकते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, इपविक, यू.के. 19.08.1990)

★ **...परन्तु वास्तव में विष्णु पिता हैं और वे पुत्र हैं जिनका सृजन आदिशक्ति ने किया है।**

अपने पिछले प्रवचनों में मैंने आपको बताया था कि ईसामसीह का सृजन किस प्रकार पहले स्वर्ग में किया गया। यदि आप देवी भागवत पढ़ें तो उनका सृजन महाविष्णु के रूप में किया गया और यह स्पष्ट वर्णित है कि पहले उनका सृजन अण्डे (Egg) के रूप में किया गया। यह इस पुस्तक में लिखा हुआ है जो सम्भवतः चौदह हजार वर्ष पूर्व लिखी गई थी। ये

पुस्तक ईसामसीह की भविष्यवाणी करती है और इसी कारण से पश्चिम के लोग ईस्टर के दिन अपने मित्रों को अण्डे भेंट करते हैं। तो अण्डे के रूप में जो अस्तित्व पृथ्वी पर आया वह ईसामसीह थे, जिनका कुछ हिस्सा इसी अवस्था में रखा गया और बाकी का श्री महालक्ष्मी, श्री आदिशक्ति ने ईसामसीह का सृजन करने के लिए उपयोग किया।

उस प्राचीन पुस्तक में उन्हें महाविष्णु कहा गया अर्थात् विष्णु का महान् रूप। परन्तु वास्तव में विष्णु पिता हैं और वे (ईसामसीह) पुत्र हैं जिनका सृजन आदिशक्ति ने किया। मेरे प्रवचन के बाद यदि ये पुस्तक उपलब्ध है तो, मैं चाहूँगी कि आप इनके सम्मुख पढ़ें। पूर्ण वर्णन, कि किस प्रकार ईसामसीह का सृजन किया गया और कब उनका सृजन हुआ? अपने पिता के लिए वे रोए और क्रूस पर चढ़कर भी वो एक बार रोए, वर्षों तक वे रोए और तब वहाँ महाविष्णु अवस्था में उनके पिता (परमात्मा) ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी अवस्था मेरी अवस्था से भी उच्च होगी तथा तुम आधार बनोगे-अर्थात् 'ब्रह्माण्ड के आधार'। अब देखें कि किस प्रकार वे मूलाधार से आधार बनते हैं।

यह सब कार्य दिव्य स्तर पर किया गया-वैकुण्ठ के स्तर पर। आप कह सकते हैं कि आदिशक्ति ने उन्हें जन्म दिया जो ईसामसीह की माँ के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुई थीं। वे कोई अन्य न होकर महालक्ष्मी का अवतार थीं-अर्थात् वे राधा थीं। रा-धा, रा अर्थात् शक्ति, धा अर्थात् शक्ति को धारण करने वाली। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 11.04.1982)***

★ प्रेम में पड़ना (Falling in love)...वास्तविक पतन है

"प्रेम में पड़ने के इस कार्य में वास्तव में पतन होता है। महाकाली की माया फैलती है और आप आसक्त हो जाते हैं। आपके अहं को बढ़ावा मिलता है। ऐसे मामलों में दो चीजें हो सकती हैं, अपनी पत्नी या पति, जिसके आप भक्त हैं, जिसकी प्रशंसा करते हैं, उसी के कारण आप पूर्णत: खो जाते हैं, समाप्त हो जाते हैं, अर्थात् आपका व्यक्तित्व समाप्त हो जाता है या एक अन्य चीज़ जो कहीं अधिक गम्भीर है, आप हमेशा के लिए टूट जाते हैं और परस्पर एक-दूसरे से घृणा करने लगते हैं। इसीलिए कहा जाता है-'प्रेम और घृणा सम्बन्ध'। प्रेम किस प्रकार घृणा हो सकता है? परन्तु देवी के इस गुण के कारण ऐसा हो जाता है। एक ओर तो वे अति प्रेममय, अति करुणामय और अति कोमल हैं, परन्तु वे एक सीमा तक जाती हैं और उसके बाद आपको दूसरी ओर धकेल देती है। इसी कारण से इन देशों में जहाँ लोग प्रेम में पड़ते रहते हैं...वे सभी मर्यादाएं लाँघ जाते हैं। प्रेम में पड़कर वे किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह कर लेते हैं जो पहले ही विवाहित है...सभी प्रकार के कार्य करते हैं। एक वृद्ध महिला युवा व्यक्ति से विवाह करती है और वृद्ध पुरुष युवा लड़की से, तथा सभी प्रकार की मर्यादाविहीन मूर्खताएं। और वे साथ बने भी नहीं रह पाते। उनमें मर्यादा बिल्कुल नहीं होती।

विवाह मर्यादा का सृजन करने के लिए होता है-पावन आचरण की मर्यादा। यदि ये मर्यादा आप नहीं बनाए रखते तो महाकाली इसमें दखलंदाजी करती हैं।

तो सर्वप्रथम व्यक्ति को सामूहिक होना होगा...यहाँ पर आप न विवाह करने के लिए आए हैं न ही प्रेम करने के लिए। यहाँ आप किसी महिला के पीछे भागने के लिए नहीं आए क्योंकि

वह आपकी पत्नी है, या किसी पुरुष के पीछे क्योंकि वह आपका पति है। पूर्वजन्मों में आपके बहुत से पति-पत्नियाँ हो चुके हैं, अब यहाँ आप अपनी उत्क्रान्ति के लिए आए हैं, यदि आप उत्क्रान्ति के लिए आए हैं तो सावधानी से देखना होगा कि आपका मस्तिष्क किस प्रकार कार्य कर रहा है? आपका विवाहित जीवन अच्छा होना चाहिए परन्तु अपनी उत्क्रान्ति खोने की कीमत पर नहीं।

अत: सावधान रहें कि कहीं खो न जाएँ। यहाँ पर आप प्रसन्न विवाहित जीवन के लिए नहीं आए हैं, प्रसन्न विवाहित जीवन तो मात्र एक कदम हैं। यह कदम यदि आपको उत्क्रान्ति के वास्तविक पथ से दूर ले जा रहा है तो बेहतर होगा कि सावधान हो जाएं।

हमें ये भी अवश्य समझना है कि अबोधिता का अर्थ है पावनता, विचारों की पवित्रता। सारा समाज दु:खी है। पारिवारिक जीवन पावन होगा केवल तभी समाज पवित्र हो सकता है, केवल इतना ही नहीं, जब आपके परस्पर सम्बन्ध पावन होंगे...।

सहजयोग में प्रेम में पड़ने का ये भूत त्याग दिया जाना चाहिए। यह सबसे भारी वज़नों में से एक है। ये भी समझ लेना आवश्यक है कि पावनता का अर्थ है सतीत्व (ब्रह्मचर्य)। अबोधिता अर्थात् सतीत्व केवल शारीरिक नहीं, मानसिक सतीत्व भी। आपमें मानसिक पावनता होनी चाहिए। इसके बिना आपकी उत्क्रान्ति नहीं होगी। वास्तव में पश्चिम में शारीरिक के स्थान पर मानसिक अपवित्रता अधिक है, ये सच्चाई है। यदि आप दिमाग से कल्पना करते रहते हैं, इस प्रकार खिलवाड़ करते रहते हैं, इस प्रकार कार्यान्वित करने में लगे रहते हैं तो यह बहुत भयानक होगा क्योंकि यह सब कल्पना है, वास्तविकता से इसका कुछ लेना-देना नहीं। इस मूर्खता में जितना अधिक आप फँसेंगे, उतना ही वास्तविकता से दूर होते चले जाऐंगे। इसका अर्थ ये भी नहीं है कि आप शुष्क हों। इसका ये भी अर्थ नहीं है कि आप अपनी जिम्मेदारियों की अनदेखी करें। ये अर्थ बिल्कुल नहीं है...।

जैसे मैंने कहा, "रस पेड़ के अन्दर उठता है, ठीक है? फिर ये पालन करता है, भिन्न प्रकार से पेड़ के भिन्न हिस्सों का पोषण करता है, जैसे ये माँ हो। माँ है तो माँ है, पिता है तो पिता है, बहन है तो बहन है, भाई है तो भाई है। भाई-बहन का सम्बन्ध पति-पत्नी का सम्बन्ध नहीं बन सकता, ये कैसे हो सकता है?"

वृक्ष के सभी भागों का पोषण करने के बाद रस वापिस आता है। यह किसी भाग से लिप्त नहीं होता कि 'ये मेरी पत्नी है'...।

नि:सन्देह पारिवारिक जीवन ठीक होना चाहिए। अपने पारिवारिक जीवन की देखभाल आपको करनी चाहिए, परन्तु इसका अर्थ ये बिल्कुल नहीं है कि आप हर चीज को कष्ट दें। इसका ये अर्थ नहीं है कि आपकी उत्क्रान्ति समाप्त हो जाए, ऐसा नहीं हो सकता। आप सामान्य लोगों जैसे नहीं हैं। आप सन्त हैं और सन्तों के लिए उनकी उत्क्रान्ति मुख्य होती है, उनका पारिवारिक जीवन, भौतिक सम्पदाएं और उनके बच्चे नहीं, केवल उनकी उत्क्रान्ति। एक बार जब उनकी उक्रान्ति हो जाएगी तो इसके साथ-साथ सभी कुछ उन्नत हो जाएगा।

पावनता की सूझ-बूझ होनी चाहिए। उत्क्रान्ति पा लेने पर यह सूझ-बूझ आपमें आसानी

से आ जाएगी। यह इतना जटिल वृत्त है। सर्वप्रथम आप आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करें, ये जान लें कि स्वयं कुण्डलिनी ही महाकाली शक्ति हैं क्योंकि वे अनादि हैं। हमारे अन्दर महाकाली शक्ति अनादि शक्ति के रूप में विद्यमान हैं। आपके अन्दर ये कौमार्य रूप में विद्यमान हैं जो कि पावनता है। इनमें पावनता की शक्ति है। जब आपको आत्म-साक्षात्कार मिलता है तब यह घटित होता है। अपने सभी सुन्दर पक्षों की अभिव्यक्ति वे आपके अन्दर करने लगती हैं।

ये जो वहाँ बैठे हुए हैं, वे श्रीगणेश हैं। लोग ये भी नहीं जानते कि पावनता क्या है? श्री गणेश वहाँ बैठे हैं और उन्हीं का निवास मूलाधार पर है, अपनी माँ से ऊपर, क्योंकि वे प्रहरी हैं जो उन्हें बताते हैं कि वे ऊपर को जा सकती हैं या नहीं। जब तक वे आज्ञा नहीं देते वे (कुण्डलिनी) ऊपर नहीं जा सकतीं। वे अपना सारा कार्य रोक देते हैं...।

सहजयोग में विवाह के बाद रोमांस का आरम्भ होता है। परन्तु मर्यादाओं के साथ सहजयोग की कीमत पर नहीं, और न ही आपके उत्थान की कीमत पर...। कुछ विवाह अवश्य असफल हो जाते हैं और इसका कारण ये है कि लोगों को विवाह के ध्येय की समझ नहीं है। अतः महाकाली का प्रथम गुण यह है कि वे पावनता हैं, पूर्ण पावनता और उस पावनता को यदि हम अपने अन्दर आत्मसात नहीं कर सकते तो हम सहजयोगी नहीं हो सकते। ये मस्तिष्क बन्धनों में बहुत अधिक फँसा हुआ है, मैं ये बात जानती हूँ। हमारे बच्चे हमसे कहीं बेहतर होंगे। उनमें से सब बन्धन नहीं होंगे जो हममें हैं। आप यदि वास्तव में पावन हो जाएँ तो बहुत से बन्धनों से बच सकते हैं...। पत्नी वो होती है जो पति को स्थिर करे। अपनी पावनता में, रोमांटिक जीवन में नहीं, स्थापित हुए बिना आप उत्क्रान्ति नहीं पा सकते। कुण्डलिनी के ऊपर जाने के समय श्री गणेश मल विसर्जन की गतिविधियों को पूर्णतः रोक देते हैं और तब उत्क्रान्ति आरम्भ होती है।

यद्यपि देवताओं का बहुत अपमान हुआ, उन्हें नकारा गया, उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया, तथा सभी कुछ। इसके बावजूद भी वे ठीक प्रकार से अपना कार्य कर रहे हैं। अपने कार्यों को वे भली-भांति कर रहे हैं। आप देख सकते हैं-इतने लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो रहा है परन्तु इसके विषय में हम क्या कर रहे हैं? हम तो सामूहिक भी नहीं हो सकते। सामूहिक कार्यक्रमों में भी उपस्थित नहीं हो सकते। मैं उनकी ओर देखती हूँ कि वे कितने उदार हैं! वे अत्यन्त सामूहिक हैं...इस सीमा तक कि कोई व्यक्ति यदि केवल श्री कृष्ण की पूजा करता है तो उसका हृदय पकड़ जायेगा। क्यों? क्योंकि आपको शिव की भी पूजा करनी चाहिए। वे इतने सामूहिक हैं और मुझसे इतने समन्वित! अतः वे सामूहिक हैं।

वे सभी सामूहिक हैं। इसी प्रकार से आप भी देवता हैं, आपको भी सामूहिक होना चाहिए। ज्योंही आप सामूहिक हो जाएंगे सभी मूर्खतापूर्ण चीजें छूट जाएंगी। ये सभी विचार चले जाएंगे। आप सामूहिक इसलिए नहीं बन पाते क्योंकि अभी तक आपने या तो ये सब चीजें त्यागी नहीं हैं या इन्हें त्यागने से डरते हैं।

अतः हमें समझना चाहिए कि हमारा लक्ष्य क्या है। उत्क्रान्ति हमारा लक्ष्य है। और महाकाली शक्ति हमारे लिए क्या कर रही है? कुण्डलिनी के माध्यम से वह आपको आपकी

उत्क्रान्ति प्रदान कर रही हैं। वे पावन कर रही हैं, आपको सभी शक्तियाँ प्रदान कर रही हैं, हर समय आपकी रक्षा कर रही हैं, हर समय आपको आनन्द प्रदान कर रही हैं। परन्तु आप उनके लिए क्या कर रहे हैं? उनकी केवल, एकमात्र इच्छा ये हैं कि उनके बच्चे सन्त होने चाहिएं, उनमें सन्तों के सभी सुन्दर गुण होने चाहिएं ताकि वे सभी पुरुषों, सभी महिलाओं के जाल में न फँसे। वे इतने सस्ते नहीं हैं, विशेषकर मानसिक रूप से...।

सहस्रार यदि बिगड़ जाए तो सहजयोग किस प्रकार कार्यान्वित हो सकता है? सारा खेल ही सहस्रार का है तथा ये कि पावनता की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। आपके माध्यम से हम विश्व को परिवर्तित करने वाले हैं किसी अन्य के माध्यम से नहीं। सहजयोगी ही वो लोग हैं जो विश्व को परिवर्तित कर देंगे।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, Le Rency, France, 12.09.1990)

★ एक बार जब वर्तमान अवस्था से निकलेंगे तो एक ऐसी ऊँचाई पर पहुँच जाएंगे जहाँ से भूत, वर्तमान और भविष्य को देख सकेंगे।

*"...हिटलर इसका एक उदाहरण है, ये विद्या उसने तिब्बती लामों से सीखी—अतिचेतन में किस प्रकार जाना है। उनसे सीखकर उसने इसका उपयोग बहुत से लोगों को अतिचेतन-अहंवादी बनाने के लिए किया। आपने लामाओं की शैली के बारे में अवश्य सुना होगा, यह एक अन्य बड़ी समस्या थी। वे भविष्य के विषय में जानते थे कि अगला लामा कौन होगा और वो कहाँ मिलेगा, उसे आप कहाँ पाएंगे। भविष्य की चीज़ों के विषय में वे जानते थे और लोगों ने सोचा कि यह परमेश्वरी ज्ञान है। भविष्य के विषय में जानना परमेश्वरी ज्ञान नहीं है। ये एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें हमें कभी नहीं जाना चाहिए। ये असन्तुलन है। हम मानव हैं और हमें वर्तमान का ज्ञान होना चाहिए भविष्य का नहीं। वर्तमान अवस्था में से निकलकर आप एक ऐसी ऊँचाई पर पहुँचते हैं जहाँ से भूत, वर्तमान और भविष्य को देख सकते हैं। मान लो पृथ्वी पर आपके पास ऊँचा जाने का साधन है और उस ऊँचाई पर लटक जाने का, तब आप देख सकते हैं कि क्या गुजर चुका है, क्या आने वाला है और जहाँ भी आप हैं, अब वर्तमान में हैं। इसी प्रकार से जब व्यक्ति वास्तव में उत्क्रान्ति प्राप्त करता है, वर्तमान में, तो वह यहाँ से अतिचेतन बिन्दु पर पहुँच जाता है और वहाँ से अतिचेतन पक्ष (*Supra Conscious*) और अवचेतन पक्ष (*Sub-conscious*) को देखने लगता है। परन्तु उसे कोई दिलचस्पी नहीं होती। वह वर्तमान में ही उन्नत होना चाहता है। वास्तव में यही कुण्डलिनी जागृति है।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत, 08.02.1983)

★ मानव के लिए कामक्रिया बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है।

फ्रॉयड ने जब बन्धनों (प्रतिअहं) की बात की तो वो नहीं जानता था कि एक अन्य प्रकार का भयानक बन्धन वो आप पर थोप रहा है। भयानक! मानव के लिए कामक्रिया बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है, बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है। सन्तान उत्पत्ति की इच्छा जब हो केवल तभी, वास्तव में उच्चतम स्तर तक विकसित मानव रतिक्रियाओं में लिप्त होगा। पावन मस्तिष्क में प्रलोभनों, रोमांस आदि मूर्खताओं का कोई स्थान नहीं है। ये सब मानव-रचित धारणाएं हैं।

यह गुलामी वास्तव में आश्चर्यजनक है। यह हमारी निकृष्ट अवस्था की देन है। निम्नस्तर के लोगों में ऐसे विचार आते हैं और वे उनके गुलाम बन जाते हैं। आपको इनका स्वामी होना चाहिए। आज जब मैं पश्चिम को देखती हूँ, जो कि इसी सृष्टि का अंग-प्रत्यंग है, यहाँ यह बीमारी बहुत जोरों से फैल गई है। मैं वास्तव में स्तब्ध हूँ! किस प्रकार मैं आपके चित्त को यौन की परिपक्वता की ओर परिवर्तित करुं?

यौन जब परिपक्व होता है तब आप माता-पिता बनते हैं और पावन व्यक्तित्व बन जाते हैं। नब्बे वर्ष की महिला के 19 वर्ष के लड़के से विवाह करने की बात जब आप सुनते हैं तो आपकी समझ में कुछ नहीं आता। विश्व में ये कैसे समाज का सृजन हुआ है जिसका आचरण इतना मूर्खता पूर्ण है। हमें स्वयं को परिपक्व करना होगा। इसका अर्थ ये भी नहीं है कि मैं युवा आयु में ही तपस्वी बन जाने के लिए कह रही हूँ, मेरा अर्थ ये बिल्कुल नहीं है। ये एक अन्य मूर्खता है। परन्तु, नि:सन्देह आपको परिपक्व होना होगा और उसके लिए तपस्या आवश्यक है।

अनावश्यक चीजें जब आवश्यक बन जाती हैं, विशेष रूप से ऐसी अनावश्यक चीजें, ये तो ऐसी हैं जैसे हमारे बाल हैं। बाल यदि झड़ जाएं तो इसका भी कुछ अर्थ है। परन्तु यदि हमारी यौनशक्ति समाप्त हो जाए तो इसमें क्या बुराई है? बहुत अच्छी बात है। गन्दगी से छुटकारा अच्छी बात है। शक्ति की इतनी बरबादी! इतनी दिलचस्पी कि हमारा अमूल्य चित्त, इतनी मंगलमयता इस प्रकार की मूर्खता भरी चीज़ों में नष्ट हो रही हैं।

अत: श्री गणेश की पूजा करने के लिए समझना होगा कि हमें परिपक्व होना है। हमारे अन्दर परिपक्वता आनी आवश्यक है। अपने अन्दर हमें गहनता में जाना होगा। हमारे चित्त को हमारे अन्दर स्वत: ही गहनता में जाना होगा। यदि अब भी हम कीड़े-मकोड़ों की तरह से हैं, तो किस प्रकार गहनता प्राप्त कर सकते हैं? अन्यथा ये बहुत बड़ा बलिदान है या लोगों पर बहुत बड़ा दवाब है। ये लेबल और दबाव आप लोगों को बहुत महंगे पड़ेंगे, बहुत महंगे। आप पहले ही बहुत कीमत दे चुके हैं। किस प्रकार आपने इतने कष्ट उठाएं? अत: यदि श्री गणेश की पूजा करनी है तो, प्राथमिकताएं बदलनी होंगी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, ब्राइटन, यू.के. 04.08.1985)

★ ये मामा तब तक बच्चों की देखभाल करते हैं जब तक बड़े होकर ये अपने पिता से मिलने के योग्य नहीं हो जाते।

मध्य हृदय के दो अन्य पक्ष हैं-माँ का हृदय है उनके अपने भाई, श्री विष्णु, श्री राम के रूप में दाएं हृदय में अवतरित होते हैं। हमारे विचार से वो पिता कौन हैं जो अपने बच्चों की देखभाल कर रहे हैं? तो वो पिता हैं और ये माँ हैं। यद्यपि यहाँ पर पिता और माँ दो पक्षों में हैं, दो पहलुओं में है। माँ पिता की बहन है और पिता साधकों के मामा हैं। जैसे आप जानते हैं मामा पिता से भी महान पिता है। अत: श्री नारायण अवतार ये मामा, माँ के सुरक्षित शिष्य की देखभाल करते हैं। वे बच्चों को पिता की सूझ-बूझ प्रदान करते हैं क्योंकि इस अवस्था में उन्हें परमपिता, सर्वशक्तिमान परमात्मा श्री शिव का ज्ञान नहीं होता। अत: ये मामा, बच्चों की तब तक देखभाल करते हैं जब तक वो अपने पिता से मिलने के योग्य नहीं हो जाते। इस प्रकार से हम

कह सकते हैं कि 'पार्वती', 'उमा', 'देवी' अपने माँ के घर, मायके आती हैं और मध्यहृदय में निवास करती हैं, वहाँ पर उनका भाई उनके बच्चों की रक्षा करता है। जब वे बच्चे को आत्म-साक्षात्कार देती हैं, उन्हें पुनर्जन्म देती है तब मामा बहन के बच्चों की देखभाल करता है और पिता की सुरक्षा बनाए रखने में उनकी सहायता करता है। अत: हर मानव का दायां पक्ष पितृत्व का प्रतिनिधित्व करता है-पितृत्व का। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत 01.02.1983)***

★ मेरे सम्मुख हुए बिना ही आप मेरे सम्मुख होंगे।

सहजयोगी बनने के लिए अधिक से अधिक परिश्रम और तकलीफें भी पर्याप्त नहीं हैं। आप जो चाहे आजमाएँ परन्तु सहजयोगी नहीं बन सकते, परन्तु आप लोगों को तो यह (सहजयोग) बिना किसी प्रयत्न के प्राप्त हो गया है। अत: आप कुछ विशेष हैं।

एक बार जब आप समझ जाएंगे कि आप विशेष हैं तो आप इसके प्रति विनम्र हो जाएंगे। जब आपमें ये घटित हो जाता है और ये देखकर आप विनम्र हो जाते हैं कि आपने कुछ प्राप्त कर लिया है, कि आपमें कुछ शक्तियाँ हैं, कि आप अबोधिता प्रसारित कर रहे हैं, कि आप विवेकशील हैं, और उस विवेक के परिणामस्वरूप जब आप अधिक करुणामय, अधिक विनम्र एवं मधुर व्यक्तित्व बन जाते हैं, तब आपको विश्वास करना चाहिए कि आप अपनी माँ (श्रीमाताजी) के हृदय में हैं। इस नए चरण में, यह उस नए सहजयोगी का लक्षण है जिसे नई शक्ति के साथ चलना है। इसमें आप इतनी तेजी से उन्नत होंगे कि बिना ध्यान में गए आप ध्यानगम्य होंगे, मेरी उपस्थिति में हुए बिना आप मेरे साक्षात् (उपस्थिति) में होंगे, अपने पिता (परमात्मा) से बिना कुछ माँगे आप आशीर्वादित हो जाएंगे। इसी कार्य के लिए आप यहाँ पर हैं सहस्रार के इस महान दिवस पर आज मैं पुन: इस नए चरण में आपका स्वागत करती हूँ।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, रोएन, फ्रांस, 05.05.1984)

★ परमात्मा से तादात्मय (God's Realisation) वह अवस्था है जिसे श्री गौतम बुद्ध और श्री महावीर ने प्राप्त किया और आपके मस्तिष्क में स्थापित हो गए।

निर्विकल्प अवस्था प्राप्त करने के पश्चात् आपके अन्दर आनन्द स्थापित होने लगता है। नगरों, सुन्दर तस्वीरों या दृश्यों को जब आप देखते हैं तो तुरन्त आपको लगता है कि आपके अन्दर तेजी से आनन्द प्रवाहित होने लगा है। ये आशीष है कि आप इसमें लीन हो गए हैं, मानो 'गंगा' आपके ऊपर से बह रही हों और आप उसमें विलीन हों। आपकी चेतना आनन्द बन जाती है।

वास्तव में आप जान जाते हैं कि अभी तक आपको सर्वव्यापी शक्ति का ज्ञान नहीं था परन्तु अब हमें इसका ज्ञान हो गया है। हमारे चहुँ ओर चैतन्य है जो सोचता है, समझता है, आयोजन करता है और हमें प्रेम करता है, ये सब आप जान जाते हैं-ज्ञानसार। अब हृदय आनन्द प्रसारित करने लगता है। इसके बाद आप आनन्द में विलय प्राप्त करते हैं। इस अवस्था में पूर्ण आत्म-साक्षात्कार घटित होता है। इस अवस्था में आप सूर्य को नियन्त्रित कर सकते हैं, चाँद को नियन्त्रित कर सकते हैं, सभी तत्वों को नियन्त्रित कर सकते हैं।

इससे परे परमात्मा से पूर्ण तादात्म्य है। इसकी भी तीन अवस्थाएँ हैं परन्तु अभी मैंने इसके विषय में बताया है—'सत्-चित्त-आनन्द' अवस्था। परमात्मा से पूर्ण तादात्म्य की अवस्था को केवल श्री गौतम बुद्ध और श्री महावीर ने प्राप्त किया और वे आपके मस्तिष्क में स्थापित हो गए। ईसामसीह ने इसे प्राप्त किया। पहले दोनों (श्री गौतम बुद्ध और श्री महावीर) अवतरण नहीं हैं। वे मानव रूप में जन्में, लव-कुश के रूप में उन्होंने सीता की कोख से जन्म लिया। बाद में उन्होंने श्री बुद्ध और महावीर के रूप में जन्म लिया और एक बार फिर आदिशक्ति उनकी माँ बनीं। बाद में वे फातिमा बी की कोख से श्री हसन-हुसैन के रूप में जन्में।

आपके लिए ये दो मील के पत्थर हैं जिनके माध्यम से आप जान सकते हैं कि किस प्रकार और किस ऊँचाई पर मानव पहुँच सकता है? आज वे अवतरणों की तरह से हैं। अन्य प्रकार के व्यक्तित्व भी हैं जैसे चिरंजीवी भैरव और श्री गणेश। ये सब अवतरण हैं। श्री हनुमान जी, बाद में, देवदूत गैब्रील (Gabriel the Angel) के रूप में प्रकट हुए। श्री भैरवनाथ सेंट माइकल के रूप में आए। इनके नाम भिन्न-भिन्न हैं परन्तु ये सब एक व्यक्तित्व हैं। देवी भी अवतरित हुईं। इसके विषय में कोई सन्देह नहीं है। वैज्ञानिक चाहे इस बात को न समझें, सहजयोगी समझ सकते हैं क्योंकि वे एकदम उनकी चैतन्यलहरियाँ महसूस कर सकते हैं और प्रश्न पूछ सकते हैं। आप मेरे विषय में भी प्रश्न पूछ सकते हैं और आपको चैतन्य आने लगेगा। इस कार्य को करने के लिए आपके अन्तर्निहित देवी-देवताओं को उठना पड़ता है और 'हाँ' कहनी पड़ती है। चाहे आपको आत्म-साक्षात्कार मिले या न मिले, उत्तर अवश्य मिल जाएगा।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, नई दिल्ली, भारत 15.02.1997)

★ रेलगाड़ी में यदि दुर्घटना भी हो जाए तो कोई मरेगा नहीं।

एक बार जब आपको आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो जाता है तो 'चिरंजीवी' (Deities) आपके सम्मुख समर्पित हो जाते हैं। वे आपको देखते हैं। अब आप उनकी जिम्मेदारी हैं। आपके अन्दर सभी देवी-देवता जागृत हो गए हैं। देवी-देवताओं के विरुद्ध यदि आप कोई कार्य करते हैं तो वे तुरन्त आपको हानि पहुँचाएंगे। कोई साक्षात्कारी व्यक्ति यदि किसी ऐसे स्थान पर जाता है जो देखने योग्य नहीं है, महसूस करने योग्य नहीं है या जो अच्छा स्थान नहीं है या यदि वह किसी कुगुरु के पास जाता है तो तुरन्त उसे गर्मी महसूस होने लगेगी। फिर भी यदि वह वहाँ से भाग नहीं निकलता, यदि वह वहाँ जाता रहता है तो उसकी चैतन्य लहरियाँ समाप्त हो जाएंगी और वह किसी भी अन्य सर्वसाधारण व्यक्ति की तरह से हो जाएगा।

आरम्भ में यह अत्यन्त अस्थायी स्थिति में होता है। यहाँ पर मैं यह कहूँगी कि अभी भी अरुचि इतनी अधिक नहीं होती कि व्यक्ति इसे स्वीकार न करे। क्योंकि यदि आप इसे स्वीकार कर लें तो आप पूर्णतया आत्मसाक्षात्कारी हो जाते हैं। यदि आप इसे स्वीकार नहीं करते तो आपको थोड़ी सी शारीरिक समस्या हो सकती है। हो सकता है कि आप अपनी अंगुलियों को हानि पहुंचा लें या यहाँ-वहाँ कहीं आपको जलन हो जाए। परन्तु यदि आपको इन शारीरिक संवेदनाओं का भय न होगा और आप इनकी चिन्ता छोड़ देंगे तो आप ऊँचे उठने लगेंगे। मैंने

आपको पहले ही बताया है कि 'चिरंजीवी' आपका पथ-प्रदर्शन और आपकी देखभाल करने लगते हैं।

रेलगाड़ी में यदि एक भी आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हो तो यह दुर्घटनाग्रस्त नहीं हो सकती और यदि दुर्घटना हो भी जाए तो इसमें किसी की मृत्यु नहीं होगी। कोई आत्मसाक्षात्कारी यदि सड़क पर चल रहा हो और घटित होने वाली कोई दुर्घटना उसे दिखाई दे तो तुरन्त उसका चित्त वहाँ चला जाता है और दुर्घटना टल जाती है। उसका चित्त आशीर्वादित है, यह बात किसी वैज्ञानिक को समझ नहीं आ सकती।

अभी-अभी मुझसे किसी ने पूछा था कि, "अन्तःस्थित परमात्मा यदि उसका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं तो वह स्वयं तो कुछ भी नहीं कर सकता।" ऐसा नहीं है। अन्तः स्थित देवी-देवता तो उसी के अंग-प्रत्यंग हैं। आप कह सकते हैं कि मस्तिष्क मेरा पथ-प्रदर्शन कर रहा है इसलिए मैं कुछ अन्य नहीं कर सकता। आप स्वयं देख सकते हैं कि देवी-देवता तो आपके आन्तरिक हिस्से हैं तब आत्मा के साथ क्या है? जब आप आत्मा (Self) से एकरूप हो जाते हैं तब आप निर्लिप्त व्यक्तित्व हो जाते हैं, तब आपमें 'स्व' ('I'ness) की भावना नहीं रहती। हर समय आप कहते हैं, "यह हो रहा है, यह घटित हो रहा है, यह बह रहा है।" स्वयं को आप तृतीय पुरुष (Third person) की तरह से देखने लगते हैं। स्वयं को आप 'मैं' से नहीं जोड़ते, ऐसा होता है। अतः देख सकते हैं कि यह लोग किस प्रकार से कार्य करते हैं?

(परम पूज्य श्रीमाता जी, नई दिल्ली, भारत 15.02.1977)

★ श्री विष्णु जब विराट बन जाते हैं, 'महान अनादि अस्तित्व' तब उनकी शक्ति के रूप में देवी, 'वीराटांगना' कहलाती हैं।

"मानव में जब ये इच्छा स्पष्ट हो जाती है केवल तभी श्री लक्ष्मी, श्री महालक्ष्मी के रूप में अवतरण लेती हैं।

तो श्री राम जब पृथ्वी पर अवतरित हुए तो पहली बार वे 'महालक्ष्मी' रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुईं। और जब 'श्री कृष्ण' पृथ्वी पर अवतरित हुए तो वे 'राधा' के रूप में आईं। जब वे 'मेरी' रूप में अवतरित हुईं तो भी वो महालक्ष्मी थीं जिन्होंने भगवान ईसामसीह का शिशु रूप में सृजन किया। अतः जिस बालक का सृजन उन्होंने किया था वह श्री महाविष्णु का महान् व्यक्तित्व था। सीताजी के दो पुत्र जो पृथ्वी पर अवतरित हुए वे भी विष्णु तत्व के प्रतिनिधि हैं। बाद में यही श्री महावीर, श्री बुद्ध तथा श्री हसन-हुसैन के रूप में अवतरित हुए हैं।

पैगम्बरों के साथ भी पावन सम्बन्ध के रूप में महालक्ष्मी अवतरित होती हैं, जैसे राजा जनक की पुत्री-जानकी-सीता। तत्पश्चात् वे मोहम्मद साहब की बेटी के रूप में पृथ्वी पर आईं, बाद में श्री गुरुनानक की बहन नानकी के रूप में। अतः श्री महालक्ष्मी पावन सम्बन्ध के रूप में इन गुरुओं के साथ निवास करती हैं।

श्री महालक्ष्मी की महानता ये है कि केवल उनकी शक्ति के माध्यम से कुण्डलिनी सुषुम्ना को पार करती है। वे हमारी उत्क्रान्ति-शक्ति हैं। केवल उन्हीं की शक्ति से मानवरूप में हमारा विकास हुआ और उनके पुत्र की शक्ति से हम उच्च लोग बनेंगे (उत्क्रान्ति को प्राप्त करेंगे)।

अत: सहजयोगियों के लिए भी महालक्ष्मी का महान् महत्व है। क्योंकि उत्कर्ष-पूर्णता प्राप्त करने में यह हमारे विष्णुतत्व का पथ प्रदर्शन करती है। विष्णुतत्व उत्क्रान्ति तत्व है। इस प्रकार ये धर्म की दाता हैं, हमें धर्म प्रदान करती हैं और 'सत्यप्रदायिनी' हैं। वे ही हमारा सम्बन्ध मस्तिष्क से जोड़ती हैं-पूरा मस्तिष्क महालक्ष्मी-प्रणाली है। तो सत्य के पूर्ण ज्ञान को हमारे मध्य नाड़ीतन्त्र पर प्रकट करने वाली श्री महालक्ष्मी ही हैं। परन्तु विराट अवस्था में जब श्री विष्णु विराट बन जाते हैं-अनादि अस्तित्व-तब उनकी शक्ति के रूप में वे विराटांगना कहलाती हैं।

तो, मैंने ये महालक्ष्मी के अवतरणों के विषय में बताया है। महालक्ष्मी तत्व के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है। आप सबको इनके बहुत आशीर्वाद प्राप्त हुए हैं।

तो आज हम 'मरिया' के रूप में उनके महान् अवतरण को याद करते हैं क्योंकि अपनी सारी शक्तियों के बावजूद भी उन्हें अपने हृदय में बहुत पीड़ा सहन करनी पड़ी। वे अत्यन्त शक्ति सम्पन्न महिला थीं, इसके बावजूद भी उन्हें ईसामसीह के कष्टों को अपने हृदय में सहना पड़ा। ये उन्हीं का आदेश तथा इच्छा थी कि ईसामसीह स्वयं को क्रूसारोपित करें ताकि लोग पुनर्जन्म ले सकें। एक बार भारतीयों ने मुझसे पूछा था कि महालक्ष्मी बनने के लिए उन्होंने क्या किया ? मैंने कहा, "शक्ति सम्पन्न होते हुए भी उन्होंने सब बर्दाश्त किया। नाटक करने के लिए इतना कुछ सहना तो अति होगी।"

अत: वे उद्धारक हैं और वे ही आपका सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ती हैं, इस प्रकार वे एक सेतु हैं। कुण्डलिनी इस सेतु पर उठती है, और कुण्डलिनी महाकाली हैं। भारत में कोल्हापुर में महालक्ष्मी का एक मन्दिर है जहाँ आप गए भी हैं। महालक्ष्मी की पूजा करते हुए इस मन्दिर में लोग गाते हैं 'उदे, उदे, अम्बे!' उस समय वे कहते हैं, "ओ, अम्बे-कुण्डलिनी-उठो।"

*परन्तु कुण्डलिनी तीनों शक्तियों की सम्भाव्य (*Potential*) हैं-महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली-क्योंकि वे 'आदिइच्छा' हैं, क्योंकि वे आदिशक्ति (*Holy Ghost*) हैं। अत: ये तीनों शक्तियाँ उनमें निहित हैं। जैसे आदिशक्ति में महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की तीनों शक्तियाँ निहित हैं।* ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, म्यूनिक, जर्मनी, 08.09.1983)***

★ बाद में उन्होंने बुद्ध रूप में जन्म लिया और फिर आदिशंकराचार्य के रूप में, परन्तु ये एक ही व्यक्तित्व हैं

"...वे नन्हें बालक सम थे, पूरी तरह से, सभी कुछ वर्णित है, मेरे करकमल और सभी कुछ, यहाँ तक कि मेरा शरीर भी, मानो कोई नन्हा शिशु माँ पर झपट रहा हो। श्रद्धा और समर्पण इतना महान था, अर्थात् आदिशक्ति को वह शिशु सम्भालना पड़ा। वही मुझे यहाँ लेकर आए हैं। आदिशक्ति के अवतरण लेने का कोई विचार न था, किसी ने इसके बारे में नहीं सोचा। केवल एक बार वे गोकुल आईं, गोकुल में उनका सृजन किया गया था। गोकुल वो स्थान है जहाँ श्री कृष्ण खेले, गोलोक में, वैकुण्ठ में, नि:सन्देह बाद में यह भारत में प्रतिबिम्बित हुआ। उनका सृजन गौ के रूप में किया गया था जिनमें सभी देवी-देवता विराजमान थे। वो कभी पृथ्वी पर नहीं आईं और उन्होंने ही आदिशक्ति को आकार दिया-किस आकार में उन्होंने अवतरित होना था-हजार भुजाओं के साथ, मेरे जैसा मुख और सात चक्र। इस प्रकार भारत

अत्यन्त आशीर्वादित है, इन चीजों का बहुत आशीर्वाद है। परन्तु सन्तों और आम जनता के बीच इतना अन्तर है कि उन्हें कभी न समझ आया। वो जानते हैं कि ये बहुत महान् स्थान है, वहाँ सप्तशृंगी भी है। पुणे में भी सप्तशृंगी है, परन्तु वास्तव में सप्तशृंगी केवल वहीं हैं, नासिक के समीप–जिस स्थान पर आप सब लोग जाते हैं।"

"तो ये मार्कण्डेय की महानता है। बाद में उन्होंने बुद्ध रूप में जन्म लिया, फिर आदिशंकराचार्य रूप में अवतरित हुए, किन्तु व्यक्तित्व केवल एक है। आरम्भ में वे वास्तव में श्री राम के पुत्र थे। वे लव थे जो रूस गए, इसी कारण से वहाँ के लोग स्लाव्ज़ कहलाते हैं। रूस में उनका शासन था, इसी कारण से वे स्लाव कहलाते हैं। दूसरा बेटा 'कुश' था जो चीन गया। इनके नाम पर वहाँ के लोग कुषाण कहलाए। ये दोनों बार–बार अवतरित हुए, हसन–हुसैन के रूप में, महावीर और बुद्ध के रूप में, आदिशंकराचार्य और ज्ञानेश्वर के रूप में, आदि–आदि। देखिए कितनी शान्ति है 'शीतल चैतन्य"। मेरे विचार से मार्कस नाम भी मार्कण्डेय से आया होगा, मार्कण्डेय अद्वितीय नाम है, क्या ऐसा नहीं है? 'मार्कण्डेय' अर्थात् शक्तिशाली व्यक्तित्व। नि:सन्देह मार्कण्डेय सूर्य हैं, मार्कण्डेय सूर्य का नाम है। मार्कण्डेय, सूर्य हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, आस्ट्रिया, 09.06.1988)

सूक्ष्मतंत्र का शुद्धिकरण ज्ञानोदय और उत्क्रान्ति की तकनीक

"अपनी आध्यात्मिक उन्नति की ओर चित्त न देकर आप मेरी बिल्कुल भी सहायता नहीं कर रहे हैं, क्योंकि चैतन्य-लहरियाँ मुझसे बाहर प्रवाहित ही नहीं हो पातीं। आपके माध्यम से चैतन्य लहरियों को प्रवाहित होना चाहिए। यदि मैं स्वयं इन्हें संभाल सकती तो मुझे आपके पीछे दौड़ने की क्या आवश्यकता थी? चैतन्य-लहरियाँ तो आपके माध्यम से प्रवाहित होनी हैं। आप ही वाहिकायें है; और यदि आप स्वयं को स्वच्छ नहीं रखेंगे और उनके प्रति विनम्र नहीं होंगे तो ये कार्यान्वित नहीं होगा। ऐसा करके आप बिल्कुल भी मेरी सहायता नहीं कर रहे हैं। अत: अपनी स्थानीय सीमित समस्याओं की चिन्ता त्याग दें और इन बड़ी समस्याओं की ओर दृष्टि करें, जो आपने सुलझानी हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, इंग्लैण्ड, 29.09.1980)

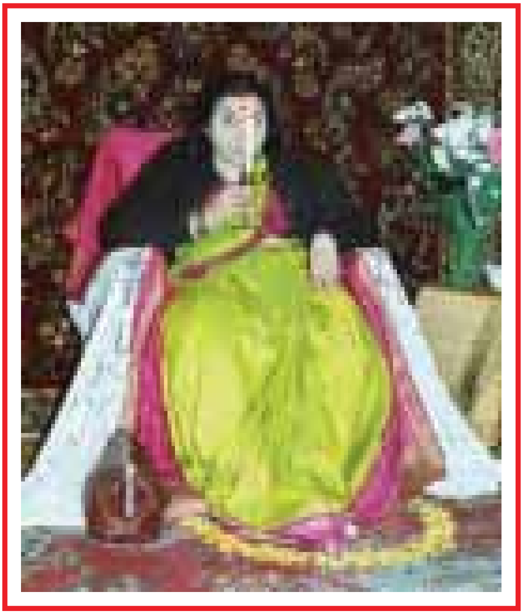

"यहाँ, आज्ञा पर प्रकाशतत्व है। जब आप आरती करते हैं या परमात्मा के सम्मुख दीप जलाते हैं, परमात्मा को प्रकाश दिखाते हैं तो आपके अन्दर का प्रकाशतत्व प्रबुद्ध हो उठता है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 27.09.1980)

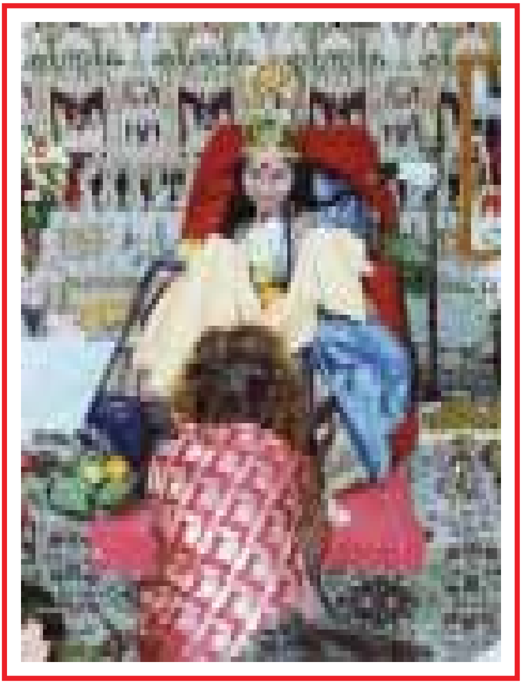

"इस समस्या का समाधान करने के लिए आप मुझे चावल भेंट करते हैं। ये ओटी भरना कहलाता है, कि आप मुझे चावल भेंट कर रहे हैं, वास्तव में मैं आपसे याचना करती हूँ। ये चावल आप मेरी झोली में डालते हैं। आप मुझे पाँच बार चावल भेंट करते हैं और मैं आपको सात बार लौटाती हूँ। ये प्रतीक है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 27.09.1980)

★ सहजयोग बौद्धिक स्तर पर कार्य नहीं करता

हमें समझना होगा कि बौद्धिक गतिविधियों से सहजयोग नहीं होता। जैसे बहुत से लोग सोचते हैं कि यदि आप स्वयं से मात्र इतना कहें-"आपको ऐसा बनना है", तो यह घटित हो जायेगा, हर समय यदि आप स्वयं को बताते रहें कि, "ओह, तुम्हें फलां समस्या से मुक्ति पानी होगी", तो यह ठीक हो जायेगी। या कुछ लोग सोचते हैं कि यदि वे किसी अन्य को बताएं कि आपमें यह कमी है और आप ठीक हो जाइये, तो वह ठीक हो जायेगा। बात ऐसी नहीं है क्योंकि सहजयोग बौद्धिक स्तर पर कार्य नहीं करता, यह आध्यात्मिक स्तर पर कार्य करता है और आध्यात्मिकता का स्थान बौद्धिकता से बहुत ऊँचा है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, वैतरणा, महाराष्ट्र, भारत, 18.01.1983)

★ फोटोग्राफ की सहायता से अपने चक्रों को सुधारने का प्रयत्न करें

सूक्ष्म रूप में यह बौद्धिक स्तर और भी आगे जा सकता है। आपमें से कुछ लोग सोचते हैं कि कुछ आरतियों या मन्त्रों को ज़बानी रट लेने से आपको गहनता (वज़न) प्राप्त हो जाएगी। पर यह भी असत्य है क्योंकि रटे हुए मन्त्र भी तो शब्द हैं। आपके अन्दर यदि ये जागृत हैं तब ये 'मन्त्र' बनते हैं और तब आप इन्हें कार्यान्वित कर सकते हैं। परन्तु मन्त्र-सृष्टि करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम आपको एक आदर्श स्थिति पानी होगी। इसी प्रकार जब आप आरती गाते हैं तो आवश्यक नहीं कि यह पहुँच रही हो। हमें बिना किसी बन्धन में फंसे सत्य का सामना करना है। मन्त्र को प्रकाशरंजित (जागृत) करने के लिए भी आपको विशेष गहनता प्राप्त करनी होगी।

स्पष्ट चैतन्य लहरियों का होना इसकी निम्नतम (कम से कम) आवश्यकता है। यदि आपके कुछ चक्र खराब हैं तो मेरे फोटो के सम्मुख बैठ कर प्रार्थना करें। फोटो को अपेक्षित सम्मान दिया जाना चाहिए क्योंकि फोटो ही सभी कार्य करेगा या यदि मैं साक्षात् में वहाँ हूँ-इसके अतिरिक्त कोई नहीं। परन्तु एक बार यदि आप बोध (ज्ञानदीप्ति) पा लें तो आप मन्त्रों का उपयोग कर सकते हैं, अन्यथा भी ये आपकी सहायता करेंगे। परन्तु सर्वप्रथम आपके हृदय का शुद्ध होना आवश्यक है। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, वैतरणा, महाराष्ट्र, भारत 18.01.1983)***

★ आपको उन्नत होना है पतन की ओर नहीं जाना

मैं जो कुछ भी बताती हूँ, आपको समझना चाहिए कि सहजयोग में किसी भी चीज में 'अति' ना करें। यहां तक कि पानी में भी लोग तीन-तीन घंटे तक बैठे रहते हैं। मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। सिर्फ दस मिनट के लिए आपको पानी में बैठना है, किन्तु पूरे हृदय से। अगर मैं उनसे कुछ करने को कहती हूँ तो वे चार घंटे तक करते रहेंगे। इसकी कोई आवश्यकता नहीं। केवल दस मिनट के लिए कीजिए।

अपने शरीर को भिन्न-भिन्न प्रकार के अनुभव, उपचार (Treatment) दीजिए, हमेशा एक ही व्यवस्था नहीं। इस तरह तो आपका शरीर नीरस (Bored) हो जाएगा या बोझल (Over burdened) अनुभव करेगा। अगर आप किसी को बताएं कि आपके लिए यह मन्त्र है परन्तु इसे तभी तक प्रयोग करना चाहिए जब तक कि आप इस चक्र की बाधा से छुटकारा न पा लें। उसके पश्चात् नहीं। मान लीजिए इस जगह एक पेच लगाना है। तो आप इसको तभी तक घुमाएंगे जब तक कि यह मजबूती से न गड़ जाए। आप इसको गड़ने के बाद भी घुमाते नहीं जाते। क्या आप इसको लगातार घुमाते ही चले जाएंगे ताकि सारी चीज बिगड़ जाए? अच्छा है कि आप सद्बुद्धि, विवेक का उपयोग करें, और इस सद्बुद्धि के लिए आपको श्री गणेश या ईसामसीह को जानना चाहिए।

ईसामसीह, जो सिर के दोनों तरफ हैं, यहाँ (पीछे) महागणेश हैं और यहाँ (सामने माथा) ईसामसीह हैं। दोनों आपकी दृष्टि ठीक करने में आपकी सहायता करते हैं और आपको समझदारी व सद्बुद्धि प्रदान करते हैं। तो सद्बुद्धि किसी चीज से चिपकने में नहीं है। सहजयोगी चिपकने वाले लोग नहीं हैं। अगर वे चिपक जाते हैं तो समझ लो वे उन्नति नहीं कर रहे हैं। आपको विचारों (Ideas) से नहीं चिपकना चाहिए और न व्यक्तियों से चिपकना चाहिए। आपको हमेशा गतिमान रहना चाहिए, इसका यह मतलब नहीं कि इस गतिशीलता में आप कहीं गिर जाएं और सोचें "अरे, हम तो बहुत उन्नति कर रहे हैं क्योंकि हम गिर रहे हैं।" आपको ऊँचा उठना है, गिरना नहीं है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, हनुमान रोड, दिल्ली, 04.02.1983)

★ सहजयोग में भी लोग अत्यन्त कर्मकाण्डी हैं

"सर्वप्रथम हमें देखना चाहिए कि किस प्रकार बन्धन हमारी अबोधिता पर हावी होते होंगे। ये आपको अत्यन्त कर्मकाण्डी बना देते हैं। सहजयोग में भी लोग अत्यन्त कर्मकाण्डी हैं। कर्मकाण्ड इस प्रकार हैं—आपको यदि तीन बार उच्चारण करना है तो आप तीन ही बार कहेंगे, अत्यन्त कट्टर लोग हैं! कुछ सहजयोगी जो भूतबाधित हैं, वो मुझसे डरते हैं। मैं आप सबको प्रेम करती हूँ। मुझसे अधिक कोमल गुरु आपको कहीं नहीं मिलेगा। ऐसे लोगों की तरफ यदि देखे भी सही तो भी वे मुस्कराते नहीं, उन्हें डर लगता है। आपने क्या गलती की है। आप सहजयोगी बन गए हैं फिर भी वे इतने कर्मकाण्डी हैं! व्यक्ति को चाहिए कि मर्यादा और कर्मकाण्ड के अन्तर को समझे। अबोध शिशु भी मर्यादाएं जानता है।

अबोध बच्चों की पूजा कर्मकाण्डों से पूर्ण नहीं होती, यह हृदय से निकली होती है। किस प्रकार पूजा करें, किस प्रकार प्रेम दर्शाएं? अत्यन्त कर्मकाण्डी व्यक्ति तो दूसरे व्यक्ति की पिटाई भी कर सकता है! इसमें तुम्हें कपूर नहीं डालना चाहिए था। कुछ गलत नहीं है। यदि आप खुले हृदय से अबोधिता पूर्वक पूजा करें तो सभी कुछ ठीक है। अब आप परमात्मा के साम्राज्य में हैं, यहाँ पर ऐसे कोई नियमाचरण नहीं हैं कि आप कर्मकाण्डी बन

जाएं। परन्तु हर चीज की दोहरी शैली है। जैसे मैं कहती हूं कि कर्मकाण्डी न बनें, मैं एक आश्रम में गई तो हर चीज सूअर के बाड़े की तरह से बना रखी थी। आश्रमों के सभी अगुआ मुझे बताते हैं कि सहजयोगियों में आश्रम को स्वच्छ रखने का विवेक नहीं है। वे केवल अपने घर की देखभाल करते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबैला, इटली, 19.09.1993)

★ सहजयोग कर्मकाण्डों के विरुद्ध है

*जैसे ही आप मन से अहंकार निकालने का प्रयत्न करेंगे, वैसे ही मन बढ़ता जाएगा और अहंकार बढ़ता जाएगा। "अहं करोति साहंकार:"। हम करेंगे, इसका मतलब ये है कि अगर हम अपने अहंकार को कम करने की कोशिश करें, तो अहंकार बढ़ेगा क्योंकि हम अहंकार से ही कोशिश करते हैं। जो लोग यह सोचते हैं कि हम अपने अहंकार को दबा लेंगे, खाना कम खाएंगे, दुनिया भर के उपद्रव एक पैर पर खड़े हैं, तो कोई सिर के बल खड़ा है। अपने अहंकार को नष्ट करने के लिए हर तरह के लोग प्रयोग करते हैं । लेकिन इससे अहंकार नष्ट नहीं होता, बढ़ता है। उपवास करना, जप-तप करना आदि सब चीजों से अहंकार बढ़ता है। हवन से भी अहंकार बढ़ता है क्योंकि अग्नि जो है वो दाईं (*Right side*) तरफ है। जो कुछ भी कर्म-काण्ड हम करते हैं,* Rituals *करते हैं, उससे अहंकार बढ़ता है, और मनुष्य सोचता है कि हम सब ठीक हैं।*

*हजारों वर्ष से वही-वही कर्मकाण्ड करते जाते हैं और उल्टा-सीधा सब मामला, जो भी सिखाया गया, वही मनुष्य कर रहा है। इसीलिए सहजयोग कर्मकाण्ड के विरोध में है। कोई भी कर्मकाण्ड करने की जरूरत नहीं और अतिशयता पर पहुंचना तो और गलत बात है। जैसे हमने कहा कि अपने अहंकार को निकालने के लिए आप उसको, मराठी में 'जोड़ेपट्टी' कहते हैं, जूते मारिए, तो रोज सवेरे सहजयोगी जूते ले कर चले पंक्ति (*line*) में। अरे अगर आप के अंदर अहंकार हो तब न। हर एक आदमी हाथ में जूता लिए चला जा रहा है रास्ते में। यह सब कर्मकाण्ड सहजयोग में भी बहुत घुस गए हैं। यहाँ तक कि फ्रांस (*France*) से भी एक साहब ले कर आए थे कि वहाँ वो वाशी के हस्पताल (*Hospital*) से कर्मकाण्ड लेकर आए। अरे बाबा, यह तो बीमारों के लिए है। आप को अगर यह बीमारी हो तो आप यह कर्मकाण्ड करो। जो* Cancer *की बीमारी के कर्मकाण्ड हैं, वो भी उसने लिख रखे थे। मैंने कहा कि मनुष्य का स्वभाव है कि कर्मकाण्ड करे। क्योंकि वो सोचता है मैं कर सकता हूँ। मेरे कर्मकाण्ड से कार्य होगा और इस कर्मकाण्ड में सिर्फ आप ही लोग नहीं हो, परदेश में भी बहुत से लोग कर्मकाण्ड करते रहते हैं। तरह-तरह के।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, गणपति पुले, भारत, 25.12.1997)

★ **पूरी जीवन शैली ही कर्मकाण्डों से भरी हुई है, स्वतन्त्रता बिल्कुल नहीं है**

"उस समय श्री कृष्ण अवतरित हुए। उनके अपने चचेरे भाई (Cousin) तीर्थांकर थे, आपको हैरानी होगी। वे तीर्थांकर बन गए और श्री कृष्ण को इस विषय में सोचना पड़ा कि हमारे ये जो मूर्खतापूर्ण कर्मकाण्ड हैं, जैसे महिलाएं प्रात:काल जल्दी उठेंगी और नींद में ही तुलसी पर जल चढ़ाएंगी, ऐसा करेंगी, वैसा करेंगी, यहाँ-वहाँ जल छिड़केंगी तथा छूत-अछूत, तुम यहाँ से जल नहीं ले सकते, तुम ये नहीं खा सकते, इस प्रकार घूम नहीं सकते, सभी प्रकार के बन्धन, समय के बन्धन आदि। ये समय अच्छा नहीं है, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, तुम्हें वैसा नहीं करना चाहिए। ये सब इस अति तक चला गया कि हमारे देश की सारी गतिविधियाँ ही कर्मकाण्डों पर निर्भर करने लगीं।

मेरे भतीजे बम्बई से अपने कार्य के लिए आया करते थे। हर बार जब भी वे लखनऊ जाते तो सिर मुंडवाकर आते। मैं पूछती, "क्या बात है?" वो कहते, "हमारे परिवार में बहुत से वृद्ध लोग हैं, जब जब भी किसी की मृत्यु होती है तो हमें सिर मुंडवाने पड़ते हैं।" इस प्रकार इतने भयानक कर्मकाण्ड बने हुए थे और आज भी दक्षिण भारत में बहुत से भयानक कर्मकाण्ड हैं, लोग इनसे नहीं निकल सकते, ऐसा करने से वो डरते हैं। इन कर्मकाण्डों को यदि वो छोड़ते हैं तो पापी कहलाते हैं, समझते हैं कि उन्हें नर्क में जाना पड़ेगा।

धर्म में जहाँ तक इन कटट्रताओं का सम्बन्ध है भारतीय बन्धन ये थे कि दाईं ओर को रहना है...। अत: प्रात:काल जल्दी उठकर बिना सोचे समझे ये कर्मकाण्ड करते थे। परन्तु पश्चिम में जीवन शैली कठोर बन्धनों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, कहीं भी स्वतन्त्रता नहीं है। परिणामस्वरूप हिप्पी लोग आए और इन कर्मकाण्डों का विरोध किया परन्तु वो भी अति की सीमा तक चले गए। इस प्रकार वे एक अति से दूसरी अति की ओर चले गये।

श्री कृष्ण के अवतरण ने किस प्रकार परिवर्तित किया। श्री कृष्ण जब पृथ्वी पर आए तो उन्होंने कहा कि यह सब लीला है। यह सब खेल है। परन्तु इसमें लिप्त रहने के कारण आप इस खेल को नहीं देख सकते। परन्तु यदि आप उन्नत होंगे— पानी में यदि आप हैं तो आपको पानी का डर लगेगा, परन्तु यदि नाव में बैठ जाएं तो वहाँ से पानी को देख सकेंगे और यदि तैरना आता है तो अन्य लोगों को भी डूबने से बचा पाएंगे। अत: वे कहते हैं यदि आप साक्षी अवस्था विकसित कर लें, साक्षी स्वरूप बन जाएं, तब सारी चीजों को नाटक के रूप में देखेंगे। तब कोई चीज़ आपको प्रभावित नहीं करेगी। किसी चीज की आपको चिन्ता नहीं होगी। समस्याओं को आप देखेंगे, परन्तु क्योंकि आप इनसे ऊपर हैं इसलिए आप इन्हें हल कर सकते हैं। ये उनका महान अवतरण था, जिसमें उन्होंने उत्क्रान्ति की ओर पहला कदम सिखाया कि आपको साक्षी बनना है। आपको साक्षी बनना है।

...आइए अब सहजयोग में देखें। सहजयोग में भिन्न प्रकार के लोग हैं जो भिन्न क्षेत्रों और भिन्न संस्कृतियों से आए हैं क्योंकि सभी के लिए द्वार खुले हैं। यदि कोई भारतीय आता है तो

वो हर समय दूसरे लोगों को देखता रहेगा और कहेगा कि श्रीमाताजी ये व्यक्ति ऐसा नहीं कर रहा, वो व्यक्ति वैसा नहीं कर रहा। उसे पानी पैर क्रिया करनी चाहिए थी। वो दूसरे लोगों के दोष खोजेगा, हर समय कहता रहेगा कि यह व्यक्ति ऐसा नहीं कर रहा, वैसा नहीं कर रहा। परन्तु पश्चिम में लोग उनके (भारतीयों के) दोष खोजने लगते हैं। मुझे कभी-कभी तो दस-पन्द्रह प्रश्नों के पत्र मिलते हैं जिनमें ये लोग अपनी गलतियाँ स्वीकार करते हैं? कमल यदि उपजा है तो कोई भी ये जानने का प्रयत्न नहीं करता कि तालाब में कितनी गंदगी भरी हुई है। अब आप कमल हैं। परन्तु आम बात है कि लोग सोचते हैं कि उन्हें अपनी गलतियाँ स्वीकार कर लेनी चाहिएं। हमें श्रीमाताजी से बता देना चाहिए कि हमने कौन-कौन सी गलतियाँ की हैं? आप हर क्षण परिवर्तित हो रहे हैं। तो स्वीकार करने के लिए क्या है? जीवन इतना औपचारिक है, जैसे मैंने आपको बताया कि लोग दोष भावग्रस्त्र हो जाते हैं या ऐसी ही किसी समस्या से।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली, 16.08.1992)

★ आप न तो चक्र हैं और न ही भिन्न वाहिकाएँ-आप चेतना हैं

"आपको यन्त्र विन्यास सीखना होगा, अच्छा तकनीशियन बनना होगा। केवल तभी आप इसे ठीक प्रकार से चला सकेंगे। अत: सहजयोग की पूरी तकनीक को सीखना और इसमें कुशलता प्राप्त करना आवश्यक है। केवल दूसरे लोगों को देकर और उन्हें तथा स्वयं को सुधारते हुए आप ऐसा कर सकते हैं। निराश होने की कोई बात नहीं है। यह बहुत बुरी बात है। आप यदि स्वयं से निराश या नाराज होते हैं तो कोई समस्या खड़ी होने वाली है। ऐसी स्थिति में आपको स्वयं पर और अपने यन्त्रविन्यास पर हँसना चाहिए क्योंकि इसमें कुछ त्रुटि आ गई है। जब आप स्वयं को यन्त्र मान लेते हैं, तो आप वहाँ नहीं होते। आप चक्र नहीं है, आप भिन्न वाहिकाएं भी नहीं है-आप तो चेतना हैं, आप शक्ति हैं। आप कुण्डलिनी हैं। अत: इन सब चीजों के ठीक स्थिति में न होने की चिन्ता आपको नहीं करनी है। यदि ये ठीक स्थिति में नहीं हैं तो आप इसका समाधान कर सकते हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत, 30.03.1976)

★ हम जब कहते हैं कि 'हम ध्यान करने वाले हैं' तो ये अर्थहीन है

"आप ध्यान नहीं कर सकते, आप केवल ध्यान में हो सकते हैं। हम सब कहते हैं कि हम ध्यान करने वाले हैं तो ये अर्थहीन है। हमें ध्यान में होना है। आप या तो घर के अन्दर हो सकते हैं या बाहर। घर के अन्दर होते हुए आप ये नहीं कर सकते, कि अब मैं घर से बाहर हूँ' या जब आप घर से बाहर होते हैं, तो ये नहीं कह सकते, "मैं घर के अन्दर हूँ।" इसी प्रकार हम ...आप जीवन के तीन आयामों मे ंचल रहे हैं- भावनात्मक, शारीरिक और मानसिक। आप अपने अन्दर नहीं हैं। परन्तु जब आप अपने अन्दर होते हैं तो निर्विचार चेतना में होते हैं। तब आप केवल वहीं नहीं होते, सर्वत्र होते हैं-क्योंकि यही वह स्थान है...यही वह बिन्दु है जहाँ आप वास्तव में

ब्रह्माण्डीय-अस्तित्व होते हैं। वहाँ से आप तत्व से, शक्ति से, उस शक्ति से जो ज़र्रे-ज़र्रे में प्रवेश कर सकती है, चलते हुए, हर विचार से, हर योजना से, और पूरे विश्व की सोच से जुड़े हुए होते हैं। आप उन सभी तत्वों में प्रवेश कर जाते हैं जिनसे इस सुन्दर पृथ्वी का सृजन हुआ है। आप पृथ्वी में प्रवेश कर जाते हैं, आकाश में प्रवेश कर जाते है, तेज में और ध्वनि में प्रवेश कर जाते हैं, परन्तु आपकी गति अत्यन्त धीमी होती है। तब आप कहते हैं, मैं ध्यान कर रहा हूँ—अर्थात् आप ब्रह्माण्डीय अस्तित्व में प्रवेश करते हुए चल रहे हैं। परन्तु आप स्वयं नहीं चल रहे होते। जो चीजें आपको चलने में बाधा पहुँचाती हैं उनके बोझ से मुक्त होने में, अपना बोझ उतारने में लगे होते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी दिल्ली, भारत 30.03.1976)

★ बाईं ओर के तत्व प्रकाशतत्व का उपयोग करते हैं जो कि श्री गणेश तत्व हैं

"आप यदि सहजयोगी हैं, तो अवश्य प्रतिदिन ध्यान करें—पहले बाईं नाड़ी पर, फिर दाईं नाड़ी पर, तत्पश्चात् दोनों नाड़ियों पर ध्यान करें। क्योंकि बाईं ओर के तत्व प्रकाशतत्व का उपयोग करते हैं जो कि श्री गणेशतत्व हैं, जिनका कार्य अंधेरा दूर करना है। इससे हमारा खान-पान और पाचन प्रणाली ठीक प्रकार से कार्य करेगी। जितना ध्यान हम अपने बाह्य शरीर पर देते हैं, इस पर ध्यान करते हैं, इसकी देखभाल करते हैं, उससे कहीं अधिक ध्यान प्रतिदिन हमें ध्यानधारणा पर देना चाहिए। अपने अन्दर जमी मैल को दूर करना और अपने अन्तस को स्वच्छ करना, तत्पश्चात् अन्तर्वलोकन द्वारा इसे इस प्रकार देखना मानों दर्पण हो, अत्यन्त आवश्यक है। न केवल मूलाधार चक्र पर परन्तु अन्य चक्रों पर अध्यक्षता करने के लिए हमें चाहिए कि श्री गणेश का आह्वान करें। उनके साम्राज्य का विस्तार आज्ञा चक्र तक है। ईसामसीह ने कहा था, "मैं ही प्रकाश हूँ, मैं ही पथ हूँ।" उन्होंने ये कभी नहीं कहा कि मैं ही लक्ष्य हूँ। आगे ले जाने का कार्य उन्होंने आदिशक्ति पर छोड़ दिया है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत, 05.12.1993)

★ मानव की तीन श्रेणियाँ हैं

...अब उचित-अनुचित को जाँचने का समय आ गया है। अब आप किसी को सूली पर नहीं चढ़ा सकते। आप ऐसा नहीं कर सकते। हर व्यक्ति का आकलन कुण्डलिनी की जागृति के माध्यम से होगा।

अब आपको जान लेना चाहिए कि मानव की तीन श्रेणियाँ हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं किस प्रकार से यह बात शुरु करूं ताकि आपको सदमा न पहुंचे। एक तो हमारे जैसे मनुष्य हैं। इसे 'नरयोनि' कहा जाता है।

दूसरी श्रेणी 'देवयोनि' है-वो लोग जो जन्मजात साधक हैं या आत्मसाक्षात्कारी हैं।

और तीसरी श्रेणी के लोग 'राक्षस' हैं। इन्हें गण भी कहा जाता है। परन्तु हम कह सकते

हैं कि मनुष्यों का एक वर्ग राक्षस है, ऐसे लोग जो असुर हैं। अतः संसार में असुर लोग भी हैं, श्रेष्ठ लोग भी हैं और इन दोनों के मध्य के लोग भी हैं। श्रेष्ठ लोग बहुत कम हैं। ऐसे लोग जन्म से आत्मसाक्षात्कारी होते हैं। मेरे सम्मुख उनकी समस्या अधिक नहीं है। परन्तु हमें उन लोगों को सम्भालना है जो मध्य में हैं, जो अच्छाई की ओर बढ़ना चाहते हैं परन्तु कोई बाधा उन्हें पकड़े हुए है। ऐसे लोगों की कुण्डलिनी में अन्तर्निहित कुछ दोष होते हैं जिन्हें समझ लेना हमारे लिए आवश्यक है।

*सर्वप्रथम अस्वस्थ शरीर-शारीरिक रूप से अस्वस्थ होना। विशेष रूप से इस देश (इंग्लैंड) में लोग जुकाम आदि कष्टों से पीड़ित हैं। इसका कारण यहाँ के जल में चूने (*Calcium*) का बाहुल्य है। इसी प्रकार से देश विशेष-स्थान विशेष के अनुसार यह समस्याएं हैं।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कैक्स्टन हॉल, लन्दन, 10.12.1979)

★ शरीर परमात्मा का मन्दिर है और आपने अपने स्वास्थ्य की देखभाल करनी है

*हर देश में कुछ विशेषता है जिसके कारण व्यक्ति को स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं आती हैं। अतः सहजयोगी होने के नाते व्यक्ति को समझना चाहिए कि स्वास्थ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह शरीर परमात्मा का मन्दिर है। अतः आपको अपने स्वास्थ्य की देखभाल करनी होगी। आप यह भी जानते हैं कि जब कुण्डलिनी उठती है तो पहली घटित होने वाली घटना आपके स्वास्थ्य का ठीक हो जाना है। क्योंकि आपका पराअनुकम्पी (*Parasympathetic*) तंत्र कार्यान्वित हो जाता है। पराअनुकम्पी, व्यक्ति को ज्योति प्रदान करता है जिसका प्रवाह अनुकम्पी तंत्र (*Sympathetic*) में होता है तथा व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा हो जाता है।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कैक्स्टन हॉल, लन्दन, 10.12.1979)

★ ...फोटोग्राफ की सहायता से आप लोगों का रोग निवारण कर सकते हैं...

परन्तु रोग दूर करना किसी भी प्रकार से आपका कार्य नहीं है, यह बात आपको याद रखनी हैं। कोई भी सहजयोगी लोगों के रोग ठीक करने न लग जाए। रोगी मेरे फोटों का उपयोग कर सकते हैं। परन्तु आपको रोग दूर करने के कार्य में नहीं लग जाना है क्योंकि इसका अर्थ यह है कि आप स्वयं को बहुत बड़ा परोपकारी मान बैठे हैं। मैंने देखा है कि जो भी सहजयोगी रोग दूर करने के कार्य में लग गए उनके लिए यह कार्य पागलपन बन गया और वो लोग भूल गए कि उन्हें भी कोई पकड़ हो गई है तथा कुछ कष्ट हो गया है। परन्तु वो स्वयं को ठीक नहीं करते और अन्ततः मैं देखती हूँ, कि वो सहज से बाहर चले जाते हैं। परन्तु मेरे फोटो से आप लोगों को ठीक कर सकते हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कैक्स्टन हॉल, लन्दन, 10.12.1979)

★ **केवल इतना कहें, "श्रीमाताजी मुझे मेरे आध्यात्मिक जीवन में बनाए रखिए।" आप स्वतः ठीक हो जायेंगे**

मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जो रोग मुक्त करने की शक्ति के कारण पगला गए और नियमपूर्वक अस्पतालों में जाने लगे तथा अस्पतालों में ही उनका अन्त हो गया। उन्होंने कार्यक्रमों में भी आना छोड़ दिया। वो मुझे मिलने भी नहीं आते।

तो यह व्याधियों में से एक है, शारीरिक रोग। शारीरिक रोग के कारण भी आपको इतना नीचे नहीं गिर जाना चाहिए। आपको यदि कोई समस्या है भी तो उसे भूल जाएं, शनैः-शनैः आप ठीक हो जाएंगे। कुछ लोगों को ठीक होने में समय लगता है। मुख्य बात तो अपनी आत्मा को प्राप्त करना है। अतः हमेशा यही न कहते रहें, "श्रीमाताजी, मुझे ठीक कर दीजिए, मुझे ठीक कर दीजिए, मुझे ठीक कर दीजिए।" आप मात्र इतना कहें, "श्रीमाताजी, मुझे आध्यात्मिक जीवन में बनाए रखिए।" आप स्वतः ही ठीक हो जाएंगे। हो सकता है कुछ लोगों को ठीक होने में समय लगे। परन्तु आप तो जीवन भर बीमार रहे, तो ठीक होने में भी यदि कुछ समय लग जाए तो कोई बात नहीं। भिन्न रोगों को ठीक करने की विधियाँ जो हमने बताई हैं उनके अनुसार कार्य करें।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कैक्स्टन हॉल, लन्दन, 10.12.1979)

★ **स्वयं को स्वच्छ करें ताकि आपके चक्र विकसित हों**

"प्रातः किसी से बात न करें। शान्त मुद्रा में रहें। आप ऐसी महान् शक्ति के सम्मुख उघड़ने वाले हैं जो पूरे विश्व की समस्याओं का समाधान करेगी। अतः स्वयं को स्वच्छ करें, स्वयं को धो डालें, स्वयं को स्वच्छ करें ताकि आपके चक्र विकसित हो सकें। लोग इसके विरोध में बातें किया करते थे क्योंकि वे कर्मकाण्डी तथा मशीनवत बन गए हैं। भौतिक पदार्थ जब बहुत महत्वपूर्ण बन जाएं तो ये चीजें भी महत्वपूर्ण बन जाती हैं। परन्तु अब ऐसा नहीं है। आप लोग भिन्न हैं, आप आत्मसाक्षात्कारी हैं। इसका अर्थ ये नहीं है कि आप सन्यासी आदि बन जाएं, मैंने आपको बताया था कि आपको चाहिए...कि सामान्य लोगों की तरह जीवन व्यतीत करें, परन्तु अत्यन्त सम्माननीय लोगों जिनमें तिरस्कार, बचपना, अतिशयता या विदूषकों की तरह अटपटापन न हो। ये सब वस्त्र नहीं पहनने चाहिएं। गरिमामय वस्त्र धारण करें जो आपकी उपस्थिति को दर्शाएं। मैं ये बात बच्चों से बता रही हूँ। आपको विकसित सहजयोगियों सम दिखाई देना चाहिए। आप सब सन्त हैं... ।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 27.09.1980)

★ **अपने आध्यात्मिक विकास की ओर चित्त न देकर आप मेरी सहायता नहीं कर रहे हैं**

"...केवल इतना ही नहीं है, आप जितने अधिक लोग होंगे... आप हैरान होंगे...मैं कहीं

अधिक बेतहर कार्य करूंगी...सामूहिकता में मैं कैंसर भी ठीक कर सकती हूँ...आपकी संख्या यदि अधिक है, आप यदि स्वच्छ लोग होंगे तो। परन्तु आपकी नाड़ियाँ तो बाधाओं से भरी हुई हैं। इनमें से कुछ भी प्रवाहित नहीं होता। यदि आप स्वयं को स्वच्छ कर लें तो मैं सामूहिक रूप से कैंसर को फैलने से रोक सकती हूँ, क्योंकि यदि आप अधिक चैतन्य लहरियाँ फैलाते हैं तो विराट में बायां और दायाँ पक्ष स्वच्छ होने लगते हैं और कैंसर तथा अन्य भयानक बीमारियों को जन्म देने वाले बाईं और दाईं ओर के आक्रमण कम हो जाएंगे। जब ये आक्रमण कम हो जाएंगे. ..परन्तु आप अपनी जिम्मेदारी को समझते ही नहीं कि आप क्या कर रहे हैं। अपने को स्वच्छ करने की ओर चित्त न देकर आप शैतान के हाथों खेल रहे हैं।

अपने आध्यात्मिक उत्थान की ओर चित्त न देकर आप बिल्कुल भी मेरी सहायता नहीं कर रहे हैं क्योंकि चैतन्य लहरियाँ बाहर प्रसारित नहीं होती। ये आपके माध्यम से प्रसारित होनी चाहिए। मैं यदि इनका संचालन कर सकती तो आपके पीछे दौड़ने की आवश्यकता न होती। इन्हें आपके माध्यम से प्रवाहित होना है। आप वाहिकाएं हैं। इस सम्बन्ध में यदि आप स्वयं को स्वच्छ और विनम्र नहीं रखते तो यह कार्यान्वित नहीं होता। इस प्रकार आप मेरी बिल्कुल भी सहायता नहीं कर रहे। अतः स्थानीय समस्याओं, अपनी सीमित समस्याओं को छोड़कर उन बड़ी समस्याओं को देखें जिनका समाधान आप करेंगे।

मैं कैंसर को बिल्कुल रोक सकती हूँ यदि मेरे पास इक्कीस हज़ार पूर्ण सहजयोगी हों। कैंसर समाप्त हो जाएगा और मैं कुष्ठरोग को भी नियन्त्रित कर सकती हूँ। कैंसर तो मैंने नियन्त्रित किया हुआ है। ये घट जाएगा, सामूहिक रूप से ही। कहने से अभिप्राय है कि मैंने आँकड़े नहीं देखे हैं, फिर भी यह घट जाएगा। ये बाईं ओर का आक्रमण है और जितना आप बाईं ओर जाने का प्रयत्न करेंगे उतने ही अधिक आक्रमण होंगे।

दाईं ओर के आक्रमण बहुत सी अन्य समस्याएं भी ला देंगे, जैसे युद्ध। ये सभी युद्ध तथा अन्य चीजें तब घटित होती हैं जब हम पर दाईं ओर के आक्रमण होते हैं। हिटलर जैसे आक्रामक व्यक्ति भी तभी आते हैं। अपने निम्नस्तर से ऊपर उठना आपके लिए कितना आवश्यक है? व्यक्ति को ये बात समझनी है जो मूर्खताएं आप कर रहे हैं उन्हें करते नहीं जाना। इसके लिए आपको वास्तव में बहुत कठोर परिश्रम करना होगा। चाहे आपको प्रातः जल्दी उठना पड़े तो उठें और इसको करें।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 27.09.1980)

★ आप स्थूल पदार्थ से सूक्ष्म पदार्थ की ओर बढ़ते हैं

"अपनी भौतिक कुण्ठाओं पर नियन्त्रण प्राप्त करना, पूजा का सार है। पूजा महत्वपूर्ण है परन्तु अपनी भौतिक कुण्ठाओं पर नियन्त्रण किस प्रकार प्राप्त किया जाए? अपने लिए जब हमें कोई भौतिक पदार्थ की इच्छा होती है तो हमें ये जान लेना चाहिए कि ये पदार्थ परमात्मा ने हमें प्रदान किया है। हर चीज़ परमात्मा की है।

हम यदि परमात्मा को पुष्प अर्पण करते हैं तो पुष्प तो परमात्मा का ही सृजन है, हम क्या अर्पण कर रहे हैं? परमात्मा को हम दीप दिखाते हैं, या परमात्मा की आरती करते हैं तो क्या? ये प्रकाश भी तो परमात्मा का ही है! हम क्या करते हैं? परन्तु परमात्मा को प्रकाश दिखाने से हम अपने अन्दर के प्रकाश की पूजा करते हैं। हमारे अन्दर प्रकाश-तत्व ज्योतिर्मय हो उठता है। प्रकाश तत्व यहाँ-आज्ञा-तक है। जब आप आरती करते हैं या परमात्मा के सम्मुख दीपक जलाते हैं, जब आप परमात्मा को प्रकाश दिखाते हैं तो आपके अन्दर प्रकाशतत्व ज्योतिर्मय हो उठता है।

*अब आप पुष्प अर्पण करते हैं तो मूलाधार ज्योतिर्मय हो जाता है। जब आप मधु अर्पण करते हैं तब आपका चित्त प्रबुद्ध होता है। तो क्यों हम ये सब परमात्मा को अर्पण करते हैं? आखिकार परमात्मा को तो कुछ भी नहीं चाहिए। परन्तु परमात्मा भोक्ता (*Enjoyer*) हैं। आप भोक्ता नहीं हैं। आप भोग नहीं सकते। आपके अन्दर परमात्मा भोक्ता हैं। जब परमात्मा वहाँ पर होते हैं तो वे आनन्द उठाते हैं, अर्थात् आत्मा। अतः आपकी आत्मा को जो चीज़ अच्छी लगती है उसका उपयोग पूजा-अर्चना करने के लिए किया जाता है। अब आप मुझे अक्षत भेंट करते हैं, इन सभी चीजों की खोज की गई है कि आप देवी को अक्षत भेंट करें, अक्षत उनकी झोली में अर्पण करें। अब इन थोड़े से चावलों का देवी के लिए क्या महत्व है? अक्षत देवी की झोली में डालने से आपके अन्दर भोजन प्राप्त करने की सन्तुष्टि या जो भोजन आपको सन्तुष्टि प्रदान करता है वह सन्तुष्टि, ज्योतिर्मय हो उठती है। परन्तु इसका अर्थ ये भी नहीं है कि आप मेरे ऊपर इन चीजों की वर्षा करते रहें। इसका अर्थ ये नहीं है। मैं कहने का प्रयत्न कर रही हूँ कि ये सब अत्यन्त गरिमा और सूझ-बूझ पूर्वक करें। आप मुझे अक्षत भेंट करते हैं। लोगों को ये बात समझ नहीं आती कि परमात्मा को चावल क्यों भेंट किए जाते हैं? आख़िरकार उन्हें ताड़पत्र क्यों भेंट करने चाहिएं? परमात्मा आपके लिए क्या करने वाले हैं? ईसामसीह यदि परमात्मा पुत्र हैं तो उन्हें ताड़पत्र या तेल अर्पण करने का क्या लाभ है? या उनके चरणों की तेल मालिश का क्या लाभ है? ये सब इसलिए है कि आपको लाभ प्राप्त हो।*

*सहजयोग में ये प्रमाणित हो गया है कि जब आप मेरे चरण कमलों की मालिश करते हैं तो आपको अच्छा लगता है, मुझे नहीं। आप मेरे हाथों की मालिश करते हैं तो आपको अच्छा लगता है; आप मेरे चरणों में गिरते हैं तो आप बेहतर महसूस करते हैं। (एक सहजयोगिनी की तरफ इशारा करते हुए) ये महान् है। तुम क्या कर रही हो?...आह!...प्रत्यावर्तन विज्ञान (*Reflexology*)...बड़ा नाम है...प्रत्यावर्तन विज्ञान...और उसे पैरों आदि का ज्ञान है...। एक दिन उसने कहा, श्रीमाताजी मैं आकर आपके चरण कमलों की मालिश करना चाहती हूँ। बजाय इसके कि मुझे आराम मिलता, उसे आराम मिलने लगा, जितनी अधिक वो मालिश कर रही थी उतना ही अधिक आराम उसे मिल रहा था। अतः जब आप परमात्मा के लिए कुछ करते हैं तो आपको आशीर्वाद प्राप्त होते हैं, आप आशीर्वादित होते हैं। आपको जो भी समस्या हो, समाधान के लिए वह आप परमात्मा को दे दें। जिनसे आपको सन्तुष्टि मिलती है वह भी*

परमात्मा पर छोड़ दें। आपको सन्तुष्टि मिल जाएगी। ये फूल जब आप मुझे अर्पण करते हैं-मूलाधार...तो ये आपको दो चीजें प्रदान करते हैं-(बेहतर) स्वाधिष्ठान और मूलाधार। इसलिए पुष्प अर्पण करना महत्वपूर्ण है। ये अच्छा स्वाधिष्ठान प्रदान करते हैं। फूल यदि सुन्दर हों तो ये स्वाधिष्ठान को बेहतर बनाते हैं। अर्पण किए जाने वाले पुष्प यदि सुरभित हों तो आपका मूलाधार ठीक होता है। कहने से अभिप्राय ये है कि फूलों का भी कोई अन्त नहीं है।

*परन्तु इसके विषय में सोचें कि आप अपने चक्रों को सुधारने के लिए ऐसा कर रहे हैं। फिर अन्य चीजों जो पूजा में उपयोग होती हैं जैसे घी का उपयोग होता है, यह...श्री कृष्ण को घी और मक्खन बहुत पसंद है। जब आप मेरे चरणों पर घी की मालिश करते हैं तो आपकी विशुद्धि बेहतर होती है । ये बात आप जानते हैं। (आपकी विशुद्धि) मेरी नहीं। मुझे कोई समस्या नहीं है। मेरी एकमात्र समस्या ये है कि आप मेरे अन्दर हैं। जब आपको समस्या होती है तो मुझे समस्या होती है क्योंकि इन चैतन्य-लहरियों ने आपकी ओर जाना होता है, मैं 'प्रतिकारक' (*Antidote*) के रूप में इन चैतन्य लहरियों को यहाँ तैयार करती हूँ और उन्हें प्रवाहित होना होता है। समझने के लिए यह अति सूक्ष्म बात है। स्थूल से आत्मा की ओर जाना, ये वो चीज है जिससे आप चलते हैं क्योंकि पहले आप अपने चक्रों को ज्योतिर्मय करते हैं, चक्रज्योतिर्मय होने पर आपके देवी-देवता प्रसन्न होते हैं, और जब देवी-देवता प्रसन्न होते हैं तो कुण्डलिनी को ऊपर उठने का रास्ता प्राप्त होता है। मार्ग बनने पर कुण्डलिनी ऊपर उठती है और आपके चित्त का समन्वय आत्मा से होने लगता है। एक-एक कदम आप स्थूल पदार्थ से सूक्ष्म पदार्थ की ओर बढ़ते हैं, सूक्ष्म पदार्थ से अपने चक्रों की ओर, चक्रों से अपने देवी-देवताओं की ओर तथा देवी-देवताओं से आत्मा की ओर।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 27.09.1980)

★ इस समस्या का समाधान करने के लिए आप मुझे अक्षत भेंट करते हैं; ये 'ओटी भरना' कहलाता है

"आपको चाहिए कि अपनी जिम्मेदारी को समझें। ये मुख्य बात है, आजकल लोग अपनी नौकरियों में, अपने कामों में व्यस्त हैं। आपको कितना पैसा मिल रहा है? आप कहाँ तक जाते हैं? कब आप अपनी नौकरी पर जाते हैं? आदि-आदि। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण नहीं है। परन्तु इसका अर्थ ये भी नहीं है कि आप अपनी नौकरियाँ छोड़ दें। आश्रम पर बोझ बन जाएं। इसका अर्थ ये नहीं है। आप अपनी नौकरियाँ करें, धनार्जन करें, कार्य करने के लिए धन आवश्यक है। आप जानते हैं कि मुझे पैसे की जरूरत है यह सारा कार्य करने के लिए कितने अधिक धन की जरूरत है...!"

"सूक्ष्म रूप से, आप पैसे से कितने लिप्त हैं? ये बात आप समझते ही नहीं कि हमें पैसा देना है। हमें ये कार्य करना है। केवल पैसा ही नहीं देना, पैसा ही एकमात्र समाधान नहीं है। हमें स्वयं वाहिकाएं बनना है। परन्तु कुछ लोगों के पास पैसा है पर उनका अनुचित लाभ उठाया

जाता है और इस प्रकार उनका सारा पैसा बर्बाद हो जाता है। ये धन अमूल्य है, शुभ है। यह धन जब सही हाथों में, सही स्थानों पर नहीं जाता तो समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। मुझे इस पैसे की जरूरत नहीं है, ये बात आप अच्छी तरह से जानते हैं। परन्तु अपनी बेहतरी के लिए आपको पैसा देना है।

"मुझे आपसे एक पाई की भी जरूरत नहीं है, इसके विपरीत, आप अच्छी तरह से जानते हैं कि मैं सहजयोग पर अपना पैसा खर्च करती हूँ। परन्तु आपको ये समझना आवश्यक है कि आपको ये कार्य करना है और इसके लिए आपको पैसे की आवश्यकता है। मुझे आपसे धन देने के लिए कहने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए...।"

"...यह भाग महत्वपूर्ण है, इस समस्या का समाधान करने के लिए आप मुझे चावल भेंट करते हैं। ये 'ओटी भरना' कहलाता है, कि आप मुझे चावल भेंट करते हैं। वास्तव में मैं आपसे याचना करती हूँ, आप मेरी झोली में चावल डालते हैं, पाँच बार आप मुझे देते हैं और मैं सात बार आपको लौटाती हूँ। ये प्रतीक है। आप जानते हैं कि प्रतीक किस प्रकार कार्यान्वित होते हैं। जब आप कहते हैं, 'श्रीमाताजी क्या आप आदि शक्ति हैं?' इतना भर कहने से भी कार्यान्वित होता है। ये आपको आत्म-साक्षात्कार प्रदान करता है। आपके सम्मुख यदि कोई चुस्त और संवेदनशील व्यक्ति बैठा हुआ है, तो आपको ये ज्ञान होना आवश्यक है कि प्रतीकात्मक कार्य किस प्रकार किए जाएं? पूर्ण परिपक्वता, सूझ-बूझ तथा उचित प्रकार से इन्हें किस प्रकार किया जाए।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, यू.के., 27.09.1980)

★ ...अधिक से अधिक पानी का उपयोग करें, दस बार अपने हाथ धोएं, चैतन्यलहरियाँ प्राप्त करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है

"...जहाँ तक गुसलखाने का सम्बन्ध है, व्यक्ति को ऐसी आदत डालनी चाहिए कि दस मिनट के अन्दर गुसलखाने से बाहर आ जाए। जब मैं कहती हूँ कि आपको स्नान करना है तो इसका अर्थ ये नहीं है कि सुबह-सवेरे आपको फव्वारे के नीचे खड़ा होना है। इसका ये अर्थ नहीं है। स्नान आपको ऐसे समय करना चाहिए जब बाहर जाने से पूर्व एक घण्टे का समय आपके पास हो। परन्तु यह भी मंगलमयता के दृष्टिकोण से है। अब आप सन्त हैं, अधिक से अधिक पानी का उपयोग करें। दस बार हाथ धोएं, चैतन्य-लहरियाँ प्राप्त करने के लिए ऐसा करना आवश्यक है। ठीक है! अपने हाथ अवश्य धोएं।

परन्तु अब भारत में ऐसे लोग भी हैं जो गिनकर 64 बार अपने हाथ धोते हैं। मैंने इसके दूसरे पक्ष के बारे में भी हमेशा चेतावनी दी है। जैसे डॉक्टर हाथ धोते रहते हैं। इसी प्रकार से कुछ अन्य लोग भी हाथ धोते रहते हैं आपको अपने हाथों की चमड़ी नहीं उतार लेनी है। परन्तु जितने अधिक बार हाथ धोएं उतना अच्छा है। मेरा अभिप्राय ये है कि आप सन्त हैं...परन्तु आप

बच्चे हैं और मैंने आपसे सन्त बच्चों की तरह से बात करनी है। बहुत बड़ी जटिलता है। आप बड़ी आयु के लोग हैं और जिस प्रकार से आपसे मैं कहती हूँ कभी-कभी आपको कष्ट भी हो सकता है। परन्तु ये आवश्यक है कि आपको समझना होगा कि हम सन्त हैं, और जहाँ तक भौतिक पदार्थों का सम्बन्ध है हमें जानना होगा कि इनका क्या करना है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी लन्दन, यू.के. 27.09.1980)

★ श्रीकृष्ण धनवंतरी भी है, अर्थात् चिकित्सकों के चिकित्सक, वे ही रोग निवारण करते हैं।

"तो ये योगेश्वर श्रीकृष्ण धनवंतरी भी हैं अर्थात् चिकित्सकों के चिकित्सक। वे ही रोग-निवारण करते हैं। क्योंकि वे पूरा मस्तिष्क हैं और चैतन्य लहरियाँ हैं जो नाड़ी तन्त्र पर प्रवाहित होती हैं। अत: वे अपने मस्तिष्क के माध्यम से लोगों के रोगनिवारण करते हैं! कैसे? मान लो किसी व्यक्ति को हृदय की समस्या है, ज्योंही अपना हाथ वह मेरे फोटोग्राफ की तरफ करता है तो समस्या उसके बाएं हाथ की अंगुली में आनी शुरु हो जाती है। मस्तिष्क कार्य कर रहा है तो आपके मस्तिष्क में मेरी चैतन्य लहरियाँ, जो श्री कृष्ण की हैं, जाती हैं, और संदेश देने लगती हैं, क्योंकि मैं श्रीकृष्ण भी हूँ। ये कम्प्यूटर कार्य करता है और तुरन्त आप जान जाते हैं कि उस व्यक्ति में क्या कष्ट है, वह हृदयरोगी है। आपको कोई निदान नहीं करवाना पड़ता, कहीं जाना नहीं पड़ता, आप तुरन्त जान जाते हैं। ये कार्य कौन करता है? विराट के मस्तिष्क में श्रीकृष्ण का सिद्धान्त। लोगों में इसे कार्यान्वित होते हुए देखें। अब आप इसके विषय में विश्वस्त हैं, आप जानते हैं कि ये कार्य करता है, इस प्रकार कार्य करता है, उस प्रकार घटित होता है और किस प्रकार आपके माध्यम से सम्पर्क बनाता है।

तो 'मेरा' ये कम्प्यूटर संचरण करता हैं। कम्प्यूटर में यदि आप जाएं तो आपको केवल एक बटन दबाना पड़ता है। नि:सन्देह ये सब कम्प्यूटर मानवरचित हैं फिर भी आपको परिणाम प्राप्त होते हैं। यहाँ पर ऐसा नहीं है। ये मस्तिष्क है जो स्वत: परिणाम देता है तुरन्त अन्य व्यक्ति के माध्यम से और यही मस्तिष्क आपको बताता है कि फलां व्यक्ति के साथ क्या करना है, किस प्रकार कार्यान्वित करना है। यही वास्तविक चैतन्य लहरियाँ प्रवाहित कर रहा है और वे चैतन्य लहरियाँ मस्तिष्क के माध्यम से प्रवाहित हो रही हैं। वे आपको बताती हैं कि अमुक व्यक्ति में क्या समस्या है।

*तो ये भेदन (*Penetration*) का सारा कार्य श्री कृष्ण द्वारा होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। वे ये चैतन्य लहरियाँ लेते हैं, इन्हें दूसरे मस्तिष्क में डालते हैं तब वह मस्तिष्क, वह नाड़ी-तन्त्र-प्रणाली कार्य करना आरम्भ करती है और तब आपको परिणाम प्राप्त होते हैं। परन्तु तत्काल, ऐसा नहीं है कि ये इतना समय लेता है। इसका वर्णन मैंने दूसरी तरह भी किया है, ये तुरन्त कार्य करता है। ज्योंही वे अपने हाथ मेरे सम्मुख फैलाते हैं, तुरन्त।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यूजर्सी, यू.एस.ए., 02.10.1994)

★ **मस्तिष्क में कुछ जाता ही नहीं है क्योंकि आप तो पिछले वाक्य में ही फँसे हुए हैं। वर्तमान में तो आप हैं ही नहीं।**

"मेरे विचार से मैं आपको बहुत लम्बा प्रवचन दे चुकी हूँ। कुछ प्रतिक्रियाएं बहुत अच्छी हैं और कुछ लोग इसे भली-भांति आत्मसात कर सके। परन्तु बताया गया कि कुछ लोग सो रहे थे। ये सब नकारात्मकता के कारण होता है। आपको अपनी नकारात्मकता से लड़ना होगा क्योंकि नकारात्मकता ही ऐसी चीज है जो प्रश्न पूछती है। मैं जब बोल रही होती हूँ तो सत्य बताती हूँ, पूर्ण सत्य। परन्तु नकारात्मकता प्रश्न पूछती हैं और प्रतिबिम्बित करती है और जब इसका प्रतिबिम्बीकरण आरम्भ होता है तब मस्तिष्क में कुछ भी नहीं जाता, तब आप पिछले वाक्य में ही फँसे होते हैं, वर्तमान के साथ होते ही नहीं।

तो सारी बात पलायन पर आ जाती है और तब आप पलायन करते हैं, सो जाते हैं। कहने से अभिप्राय ये है कि आज मैंने आपको चेतन-मस्तिष्क में रखने का भरसक प्रयत्न किया है। आपको चेतन होना होगा, चुस्त होना होगा, क्योंकि बिना चेतन हुए आप उत्क्रान्ति नहीं प्राप्त कर सकते। कोई भी असामान्य व्यक्ति उत्क्रान्ति नहीं पा सकता। आपको स्वयं को सामान्य बनाना होगा। आपमें से बहुत से लोगों में असामान्यताएं थीं जिन्हें बाहर लाया गया, निकाल फेंका गया। बहुत से लोग स्वच्छ हो गए हैं। परन्तु अब भी यदि कुछ लोग लटक रहे हैं तो उन्हें यह क्रियान्वित करना चाहिए, परन्तु वो तो उसे (नकारात्मकता) उचित ठहराने में ही लगे हुए हैं। प्रायः नकारात्मकता नकारात्मक व्यक्ति को ही आकर्षित करती है। अतः यदि आपमें इस प्रकार की कोई नकारात्मकता है, तो ऐसे किसी अन्य व्यक्ति के पास न जाएं। दूरी बनाए रखें।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, अल्पेमोता, इटली, 04.05.1986)

★ **वे अपने बाएँ स्वाधिष्ठान से थोड़ी-सी दूरी पर मोमबत्ती जलाकर रख सकते हैं**

"...इस प्रकार के लोगों को चाहिए कि अपनी देखभाल करें, पता लगाएं। बाईं ओर के लोगों में मैंने एक चीज पाई है-वे यदि अपने बाएं स्वाधिष्ठान से थोड़ी दूरी पर एक मोमबत्ती जलाकर रख दें और एक मोमबत्ती फोटो के आगे जलाकर रख दें और अपना बायाँ हाथ फोटो की तरफ तथा दायाँ पृथ्वी पर रख दें तो कार्य हो जाता है। पीठ पीछे रखी जाने वाली मोमबत्ती थोड़ी दूरी पर रखनी चाहिए क्योंकि ये आवाज़ करती है और इसकी लौ इधर-उधर लहराती है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, अल्पेमोता, इटली, 04.05.1986)

★ **थोड़ा-सा जैतून का तेल और नमक लें तथा सोने से पहले अपने मसूड़ों पर अच्छी तरह से मालिश करें। इससे आपके दाँत ठीक रहेंगे।**

"...इससे पहले कि आप गंजे होने लगें, अपने बालों में तेल डालने का प्रयत्न करें।

*सहजयोगियों के लिए ऐसा करना बहुत आवश्यक है। यदि आप चाहें तो चैतन्यित तेल भी ले सकते हैं। मेरे ख्याल से जैतून का तेल ठीक होगा, परन्तु बालों की बढ़ोतरी के लिए नारियल का तेल जैतून के तेल से बेहतर है। परन्तु कभी-कभी आप बादाम का तेल भी लगा सकते हैं। आपको यदि थकान महसूस होती है या आपके स्नायुओं में कमजोरी है तो बादाम का तेल भी आपके लिए अच्छा है। आप यदि व्यग्र स्वभाव (*Nervous Type*) हैं तब भी बादाम का तेल आपके लिए बहुत अच्छा है। जिन लोगों के दाँत उन्हें कष्ट दे रहे हैं उन लोगों को चाहिए उनकी देखभाल करें। दाँतों के डॉक्टर के पास जाने का कोई लाभ नहीं है, दाँतों के डॉक्टर समस्या खड़ी करते हैं। सोने से पहले जैतून के तेल और नमक से मसूड़ों पर प्रतिदिन अच्छी तरह मालिश करना बहुत अच्छा है। ये आपके दाँतों को ठीक रखेगा। आपको आश्चर्य होगा, मैं आज तक कभी किसी दाँतों के डॉक्टर के पास नहीं गई और मुझे आशा है मैं किसी दाँतों के डॉक्टर के पास जाऊंगी भी नहीं।*

परन्तु मुझमें कुछ बुरी आदतें भी हैं और उनमें से एक ये है कि मैं प्रायः दातों पर ब्रश करती हूँ, परन्तु बिजली वाले ब्रश आदि उपयोग नहीं करने चाहिएं। साधारण ब्रश उपयोग करें या अपनी उंगली का। तेल और नमक से मालिश सर्वोत्तम उपाय है। आपके लिए यह बहुत अच्छा है। ये सब कुछ निकाल देता है, बाद में कुल्ला कर लें।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, अल्पेमोता, इटली, 04.05.1986)

★ आपको अपना गला स्वच्छ रखना होगा, इस प्रकार आप अपनी विशुद्धि स्वच्छ रख पाएंगे

"...आप लोग अपना गला साफ नहीं करते और आपकी जिह्वा भी विशुद्धि के बहुत विरुद्ध है। विशुद्धि खराब होने का ये भी एक कारण हो सकता है। यद्यपि पश्चिम में इसका फैशन नहीं है, फिर भी अपनी दो उंगलियाँ मुँह में डालकर प्रातःकाल अपनी जीभ को साफ करना चाहिए ताकि ये स्वच्छ हो जाए। ऐसा करना आवश्यक है क्योंकि मैल यदि इकट्ठी हो जाए तो सड़ जाती है। ऐसा किया जाना चाहिए। हो सकता है कि आप सोचें कि ऐसा करने से शोर होता है, परन्तु कोई बात नहीं। आपको अपनी जिह्वा साफ रखनी होगी और इस प्रकार आप अपनी विशुद्धियाँ साफ रख पाएंगे। ये एक बात है, और दूसरी बात ये है कि सुबह शाम मल-विसर्जन के लिए जब आप जाते हैं तब जितना हो सके पानी का उपयोग करें। पानी का उपयोग आवश्यक है। टिशू का उपयोग गंदा है और अस्वच्छ आदत भी। कागज का भी यदि आप उपयोग करते हैं तो भी बाद में पानी का उपयोग अवश्य करें। हर बार पानी का उपयोग किया जाना आवश्यक है। हर बार पर्याप्त मात्रा में पानी का उपयोग आवश्यक है। सहजयोगियों के लिए यह अत्यन्त-अत्यन्त आवश्यक कार्य है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, अल्पेमाता, इटली, 04.05.1986)

★ वे प्रकाश, या भूत, या भविष्य का ऐसा ही कुछ मतिभ्रम देखते हैं

निःसन्देह श्रीमाताजी क्षमा करती हैं, परन्तु कई बार मेरी क्षमा भी बेकार होती है, क्योंकि जब तक आप अपने अन्दर यह महसूस नहीं करते कि मैंने यह गलती की तब तक आप इस मार्ग पर जाने के स्थान पर दूसरे मार्ग पर जाने लगते हैं। आप उस मार्ग पर चले गए हैं तो सड़क पर चलने का नियम समझना होगा। अतः प्रमाद रूपी बाधा होने के पश्चात् हमारे अन्दर एक अन्य अंतर्निहित समस्या खड़ी हो जाती है। जिसे कहते हैं:

भ्रमदर्शन, अर्थात् दृष्टि भ्रम। हमें भ्रमदर्शन होने लगता है, विशेष रूप से उन लोगों को जो LSD *तथा अन्य इस प्रकार के नशे लेते हैं। वो मुझे नहीं देखते। कभी-कभी तो उन्हें केवल प्रकाश दिखाई देता है या इसी प्रकार का भूत या भविष्य, या कोई और भ्रम। वे इसी प्रकार कोई अन्य भ्रम देख सकते हैं। आप यदि मुझे स्वप्न में देखते हैं तो ठीक है या स्वप्न में यदि किसी और चीज़ को देखते हैं तो ठीक है। परन्तु यदि आप भ्रम दर्शन करना शुरु कर देते हैं तो आपमें भ्रम विकसित हो जाता है। इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि लोग इसके बारे में झूठ बोलने लगते हैं। मैं सभी के विषय में जानती हूँ। भ्रम दर्शन यदि शुरु हो जाता है तो यह चैतन्य लहरियों के लिए बहुत भयानक होता है।*

कुछ लोगों को स्वयं पर पूर्ण विश्वास है, यह बात मैं देखती हूँ। वो पूरे विश्व को बताते हैं और यह कहते हुए कि 'इस चीज़ का चैतन्य ठीक नहीं है, 'उस चीज़ का चैतन्य ठीक नहीं है', सभी पर रोब डालते हैं जबकि वास्तव में उन्हें चैतन्य लहरियों पर स्वामित्व नहीं होता। अब मुझे सावधान होना पड़ेगा। किसी गुरु की तरह से मैं बात नहीं कर सकती। इसलिए मैं कहती हूँ कि ठीक है, आप स्वयं को बन्धन दे लें और अपने हाथ मेरी ओर करके देखें। किसी तरह से यदि उन्हें पता चल जाए कि मैं जान गई हूँ कि वो झूठ बोल रहे हैं तो बस वो तो समाप्त हो गया। अतः उनका झूठ भी मुझे स्वयं तक रखना पड़ता है। इस बारे में मैं बहुत सावधान हूँ क्योंकि मैं जानती हूँ कि वो लोग भयानक फिसलन पर खड़े हुए हैं। किसी चीज़ को कहने की मेरी शैली चाहे रूखी ना हो फिर भी वो चीज़ घटित हो सकती है। अतः व्यक्ति को यह बात समझ लेनी है कि सत्य पर डटे रहने में ही हमारा हित है। अपने विषय में हमारे जो विचार हैं उनसे हमें बहकना नहीं चाहिए।

विषयचित्त, एक अन्य बाधा जो व्यक्ति में आ जाती है वह है 'विषयचित्त'। इस स्थिति में हमारा चित्त उन पदार्थों की ओर आकर्षित होता है जो आत्म-साक्षात्कार से पूर्व हमें रुचिकर थे, जिन पर पहले हमारा चित्त होता था। मान लो आपका चित्त क्रिकेट की ओर आकर्षित था। ठीक है, परन्तु आप को यह रोग नहीं होना चाहिए। मेरा कहने से अभिप्राय यह है कि क्रिकेट का अर्थ यह नहीं है कि आप क्रिकेट का बल्ला ही बन जाएं। तथा क्या आप किसी अन्य चीज़ के लिए बिल्कुल बेकार हैं, सभी व्यावहारिक कार्यों के लिए क्या आप मर चुके हैं? किसी भी चीज़ के प्रति पागल आकर्षण आप के चित्त को अत्यन्त गलत

अवस्था में ले जाता है। अत: यह सहजयोगियों के लिए ठीक नहीं है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कैक्स्टन हॉल, इंगलैण्ड, 10.12.1979)

★ परन्तु सामूहिकता में कृष्ण तत्व तथा गुरुतत्व का मिश्रण है

"...अब एक अन्य चीज ये है कि अपने कानों में उंगलियाँ डालकर आपको सोलह बार 'अल्लाह-हो-अकबर' कहना होगा। सिर पीछे की ओर झुका लें। इससे आपकी विशुद्धि की अधिकतर समस्याएं दूर हो जाएंगी। मन्त्र आपके देवी-देवताओं को शक्ति प्रदान करने के लिए होते हैं। नि:सन्देह देवी-देवता बहुत शक्तिशाली हैं, परन्तु देवी-देवताओं को ले चलने वाला वाहन शक्तिशाली हो जाएगा। जैसे आप जानते हैं, राधा-कृष्ण या विट्ठल दाईं विशुद्धि के लिए एक ही हैं परन्तु 'अल्लाह-हो-अकबर' में दो चीजें-हैं। नि:सन्देह प्रथम विशुद्धि और सामूहिकता भी। पहली के कारण आपको जुकाम आदि हो जाते हैं और आपको चित्त विक्षेप हो जाता है और अन्य समस्याएं कान, नाक और गले की हैं। दूसरी समस्या जब होती है तब आप आक्रामक शब्द, व्यंग्यात्मक भाषा तथा अन्य सभी चीजें बोलते हैं जो सामूहिकता को तोड़ती हैं। अत: या तो आपको तेज जुकाम हो जाता है और आप बोल नहीं पाते या जब आप बोलते हैं तो अन्य लोगों को चोट पहुँचाते हैं।

आवाज मधुर होनी चाहिए और भाषा नियन्त्रित। यदि हम अपनी जुबान नियन्त्रित कर लें तो 80% सामूहिकता प्राप्त कर लेंगे। जिह्वा का मुख्य कार्य है मधुर और सुन्दर बातें बोलना। हमें खोजना चाहिए कि यहाँ आने वालों को कौन-सी मीठी बातें हम कहेंगे। हमें अपने विचारों की अभिव्यक्ति नहीं करनी चाहिए कि मुझे ये पसन्द है, मुझे वो पसन्द है, मैं वो चाहता हूँ। इसके विपरीत हमें कहना चाहिए कि क्या आपको ये पसन्द है, आपको ये अच्छा लगेगा?" अत: अन्य लोगों में दिलचस्पी और उनकी चिन्ता दर्शाने के लिए भाषा का उपयोग किया जाना चाहिए।

*एक अन्य चीज जो व्यक्ति को आजमानी चाहिए वह है गले का शारीरिक उपचार। ये बहुत सहज है, ऐसा मैंने देखा है। जिह्वा को पीछे की ओर मोड़कर ठुड्डी यहाँ लगाएं और जहाँ तक सम्भव हो जिह्वा को पीछे मोड़ें। श्वास को रोकें, जीभ को जहाँ तक हो सके पीछे की ओर ले जाएं। कुण्डलिनी आगे बढ़ेगी। पहले अल्लाह-हो-अकबर करते हुए आप पीछे की ओर झुके थे, अब ऐसा करते हुए आप विशुद्धि को दूसरी ओर झुका रहे हैं। आप दिशाएं (*Sides*) देखेंगे और दिशाओं से कुण्डलिनी को मार्ग मिल जाएगा। (*You will see the sides; from the sides the Kundalini will be opened out.*)*

दूसरी बात ये है कि श्रीकृष्ण को मक्खन बहुत पसन्द है। परन्तु सामूहिकता में कृष्ण तत्व और गुरुतत्व का मिश्रण है। वे जब गुरु बन जाते हैं तब सामूहिकता आरम्भ होती है। जब इन दोनों का एकीकरण होता है तब सामूहिकता का आरम्भ होता है और परिणामस्वरूप आपको सद्-सद्-विवेक बुद्धि प्राप्त हो जाती है। अत: सद्-सद्-विवेक को सुधारने के लिए अत्यन्त

सहज उपाय ये है कि चैतन्यित घी या मक्खन लें, जो पिघला हुआ हो और इसे नाक में डालें। परन्तु इससे पूर्व हमें नमक के गरारे करने चाहिएं। यह (नमक का पानी) गुरुतत्व का प्रतीक है। एक कप गर्म पानी में थोड़ा सा घी या मक्खन डालकर यदि इसे पीएं तो यह गले को चारों ओर से लाभ पहुँचाता है क्योंकि ऐसा करने से श्रीकृष्ण को सुख मिलता है।

एक अन्य चीज है जिसे बसन्ती गुलाब (Primrose) का तेल कहते हैं। यह इस देश में मिलता है। बसन्ती गुलाब के तेल की यदि दो-तीन बूंदें पानी में डाल लें तो विशुद्धि को काफी लाभ होता है। अत: तेल लाभकारी है। जैतून के तेल में एक लहसून की फाड़ी जलाकर यदि कान में डालें तो यह कानों के लिए बहुत अच्छा है। अत: तेल विशुद्धि को ठीक रखता है। बालों में भी ठीक प्रकार से तेल लगाया जाना चाहिए। शनिवार आदि को स्नान से पहले अच्छी तरह तेल लगाना चाहिए ताकि स्नान करते हुए तेल धुल जाए। यहाँ पर आपको मिलने वाले अनुकूलन तेल (Conditioners) भी ठीक हैं। परन्तु भारत में तो हम तेल का ही उपयोग करते हैं। परन्तु आपको अपने हाथों से अच्छी तरह से मालिश करनी चाहिए या एक सहजयोगी दूसरे सहजयोगी की मालिश करे।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना आश्रम, 02.05.1985)

★ ...उनकी आज्ञा पर यदि ये लगाया जाए तो उन्हें शान्त करता है

"हनुमान जी के दो पक्ष हैं जो मैं आपको बता सकती हूँ। उदाहरण के रूप में, उनका शरीर, जैसे श्री शिव के शरीर पर गेरु मला हुआ होता है-गेरु लाल रंग का पत्थर होता है जिसकी तासीर बहुत गरम होती है। सर्दी के कारण यदि चमड़ी फट जाए तो चमड़ी पर गेरु लगाकर उसे ठीक किया जा सकता है या बाधाओं के कारण यदि चर्म रोग हो जाए तो गेरु का उपयोग किया जा सकता है क्योंकि इसकी तासीर बहुत गर्म होती है और ये आपको आराम पहुँचाती है।

इसके विपरीत श्रीगणेश के शरीर पर लाल सिंदूर (Leadoxide) लगाया जाता है जो कि बहुत ठण्डा होता है। सिंदूर बहुत ठण्डी चीज है। सिक्के को यदि आप हाथ लगाएं तो यह बहुत ठण्डी चीज है। अत: श्रीगणेश के शरीर पर सिंदूर लगाया जाता है ताकि उनके शरीर की गर्मी या गर्मी का प्रभाव सन्तुलित हो सके। हिन्दी, मराठी भाषा में इसे सिन्दूर कहते हैं। उन्हें यही रंग अच्छा लगता है। सौभाग्य से विएना में मुझे ये साड़ी मिली, इस अवसर के लिए इसका रंग बहुत अच्छा है। तो श्री गणेश के शरीर पर हमेशा सिन्दूर लगा होता है।

यद्यपि लोग कहते हैं कि सिक्के (Leadoxide) से कैंसर होता है, परन्तु यह बहुत ठण्डा होता है जो व्यक्ति को बाईं ओर ले जा सकता है और कैंसर भी मनोदैहिक रोग है। अत: सिक्के (Lead) का ये बहुत दूरगामी प्रभाव हो सकता है क्योंकि बहुत अधिक ठण्डा होने पर व्यक्ति बाईं ओर को जा सकता है और बाईं ओर के विषाणुओं की पकड़ में आने पर कठिनाई में फँस सकता है। परन्तु यही सीसा (Leadoxide) आक्रामक प्रवृत्ति लोगों के लिए बहुत अच्छा है।

आक्रामक लोगों के मस्तक पर यदि सिंदूर लगाया जाए तो यह उन्हें शान्त करता है उनका क्रोध और गुस्सा शान्त हो जाता है जो बहुत अच्छी बात है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी जर्मनी, Schwetzingen, 31.08.1990)

★ मुझे बहुत सारा पानी पीना पड़ता है और मेरे लिए बहुत-सी चर्बी भी आवश्यक है ताकि मेरे चक्र सुरक्षित रहें।

"...उदाहरण के लिए महिलाओं को भावनात्मक प्रवृत्ति (Leftsided) होना होता है। पुरुष की अपेक्षा महिला को अधिक मोटा होना चाहिए, उसने बच्चे उत्पन्न करने हैं। पशु साम्राज्य में भी यदि आप देखें तो मादाओं पर कहीं अधिक चर्बी होती है। उन पर चर्बी होना आवश्यक है क्योंकि उन्हें गर्भ में बच्चा सम्भालना होता है और बच्चे के लिए कार्य करना होता है। किसी पश्चिमी लड़की को यदि आप देखें, जिसके बच्चे हों और जिसे घर का कार्य भी करना पड़ता है तो वह पगला जाती है और इस मन:स्थिति के कारण वह बच्चों से प्रेम नहीं कर सकती; उसके अन्दर निहित शक्ति नहीं होती। पश्चिम में तनाव बहुत अधिक है, बिना बात के, अत्यन्त बनावटी तनाव।

...उदाहरण के रूप में, अब मान लो कि मैं यदि बहुत पतली हो जाऊं तो मेरे सारे चक्र उघड़ जाएंगे और मैं कठिनाई में फँस जाऊंगी। अत: मुझे बहुत अधिक पानी और चर्बी की आवश्यकता होती है ताकि मेरे चक्र सुरक्षित रहें। यह कार्य पर निर्भर करता है और माँ पर चर्बी होना बहुत आवश्यक है। माँ पर यदि चर्बी नहीं होगी तो बच्चों को हड्डियाँ चुभेंगी।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, आस्ट्रिया, 06.09.1984)

★ पूजा से पूर्व, पूजा के साक्षी बनने के लिए वे उन देवी-देवताओं का आह्वान किया करते थे जिनका सम्बन्ध उन तत्वों से था

हमारे सम्मुख दो प्रकार की यात्राएं थी। एक बाईं ओर से और दूसरी दाईं ओर से। भारत में, न जाने क्यों, लोग जंगलों में चले गए और सन्त बन गए। वो लोग दाईं ओर की तपस्या कर रहे थे अर्थात् एक के बाद एक पंचतत्वों में पेंठना और पंचतत्वों पर स्वामित्व प्राप्त करना।

नि:सन्देह इसमें सच्चाई है। आपने देखा है कि किस प्रकार दीपक (बादलों की गर्जन) आपको यह बताता है कि आपकी स्थिति क्या है। मोमबत्ती की ज्योति आपको बता सकती है कि आप भूतबाधित हैं या नहीं। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? मोमबत्ती को इतना अधिक ज्ञान है। मान लो आपको हृदय चक्र की समस्या है, आपको हृदय रोग है, तो मोमबत्ती इसे दर्शाएगी और यदि आप मोमबत्ती के प्रकाश से अपना इलाज करें तो आप स्वयं को रोगमुक्त कर सकते हैं।

अत: यह इतनी संवेदनशील है कि यह केवल रोगमुक्त ही नहीं कर सकती पूर्ण सक्षम भी है। यह केवल इतना ही नहीं बताती कि आप बीमार हैं और आपको समस्या है परन्तु आपको

रोगमुक्त करने में भी सक्षम है। यही कारण है कि भारत में अग्नि की पूजा की जाती थी, प्रकाश की पूजा की जाती थी। सबसे पहले अग्नि की पूजा की जाती थी। सम्भवत: वो जान गए थे कि अग्नि सब कुछ कर जानती है।

अत: पहले आन्तरिक, इन सभी तत्वों की आन्तरिक चेतना के विषय में वो जानते थे और इन्हीं कारणों से वे इसकी पूजा करते थे। पूजा से पूर्व इन तत्वों के देवी देवताओं का आह्वान किया जाता था कि वो पूजा के साक्षी बनें। परन्तु यह सब दाईं ओर की गतिविधि (कर्मकाण्ड) बन गई। बाईं ओर के बिना दायाँ पक्ष अत्यन्त भयानक होता है। आपमें यदि दायाँ पक्ष (कार्यान्वियन शक्ति) नहीं है तो भी यह अत्यन्त भयानक बात है। परन्तु सर्वप्रथम आपको अपने बाएं पक्ष (भक्ति पक्ष) को विकसित करना होगा। आरम्भ में सहजयोग में भी हमने यही किया।

करुणा, प्रेम, सबके लिए सौहार्द भाव ही बायाँ पक्ष (भावना पक्ष) है। हम इतना ही कह सकते हैं कि देवी का आशीर्वाद जिसका वर्णन देवी महात्म्यम् में किया गया है कि देवी आपके अन्दर भिन्न रूपों में विराजमान हैं। आपके अन्दर वह श्रद्धारूप में विराजमान हैं, निद्रारूप में विराजमान हैं। आपके अन्दर वो भ्रान्तिरूप में विराजती हैं। बाईं ओर की बहुत-सी चीजें हैं। जिनका वर्णन पहले ही किया जा चुका है। जब मैंने आपको सहजयोग के विषय में बताया था तो मैं आपके बाएं पक्ष को बहुत दृढ़ करना चाहती थी।

जिन लोगों ने दाएं पक्ष (राजसी तरीके) अपनाए वो अत्यन्त आक्रामक हो गए और उन्होंने पंचतत्वों के सार पर स्वामित्व प्राप्त कर लिया। यहाँ तक तो ठीक है परन्तु ये लोग अत्यन्त क्रोधी स्वभाव के हो गए। इतने क्रोधी स्वभाव के कि वे लोगों को शापित करने लगे। अत्यन्त कठोर बातें वे लोगों से कहते तथा सर्वव्यापकता पर वे विश्वास न करते। इतनी भयानक चीज को उन्होंने अपना लिया था।

भारतीय शास्त्रों में बहुत-सी घटनाओं में आप देख सकते हैं कि लोग शाप दे देते हैं और यह बात आम थी। गुरु लोग किसी को भी इसलिए शाप दे दिया करते थे क्योंकि उनमें करुणा और प्रेम का अभाव था और आक्रामकता की शक्ति के लिए उनके पास और कुछ न था। परन्तु अब हमने देखा कि जो लोग आक्रामक हैं, भक्ति बिना जो दाईं ओर का मार्ग पकड़ते हैं, परमात्मा के आशीर्वाद के बिना जो चलते हैं वे वास्तव में राक्षस बन सकते हैं और मानवता के लिए बहुत बड़ा खतरा बन सकते हैं (बादलों का गर्जन)। यह बहुत गम्भीर चीज़ है। आपकी बुद्धि द्वारा, आपकी सोचने की शक्ति द्वारा आपका अहम् उस सीमा तक जा सकता है जहाँ यह आपके अन्दर समस्याएं खड़ी कर दें। ***(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, लीग्रे, इटली, 21.07.2002)***

★ **सभी सहजयोगियों को प्रतिदिन कम से कम पाँच मिनट पानी पैर क्रिया अवश्य करनी चाहिए।**

आपने पूछा था कि पाने के बाद क्या करना है? पाने के बाद देना ही होता है, यह बहुत परम आवश्यक चीज है कि पाने के बाद देना ही होगा। नहीं तो पाने का कोई अर्थ ही नहीं।

और देने के वक्त में एक बात–सिर्फ एक छोटी–सी बात याद रखनी है कि जिस शरीर से, जिस मन से, जिस बुद्धि से, माने इस पूरे व्यक्तित्व से, आप इतनी जो अनुपम चीज़ दे रहे हैं, वो स्वयं भी बहुत सुन्दर होनी चाहिए। आपका शरीर स्वच्छ होना चाहिए। शरीर के अन्दर कोई बीमारी नहीं होनी चाहिए। अगर आपको कोई बीमारी है–बहुत से सहजयोगियों के ऐसा भी होगा कि उनके अन्दर कोई शारीरिक बीमारी है– तो सहजयोग से पहले तो वो कहते होंगे कि 'साहब, मुझे यह बीमारी ठीक होनी चाहिए, वो बीमारी ठीक होनी चाहिये।' लेकिन सहजयोग के बाद में उनका चित्त नहीं रहेगा बीमारी की ओर। जो हो 'अरे हो जायेगा ठीक, चलो सब ठीक है।' ये बात गलत है, आपको कोई–सी भी ज़रा–सी भी तकलीफ हो जाये आप फौरन वहाँ हाथ रखें, अपनी तबियत ठीक कर सकते हैं। अपनी Physical side बहुत साफ रख सकते हैं। बहुत ज्यादा उसमें कुछ करने की जरूरत नहीं। स्नान करना, स्वच्छता से रहना और अपनी Physical side ठीक करना।

लेकिन इसके लिए मैंने एक चीज को कहा है, जैसे कहते हैं कि सवेरे सबको Bathroom (शौच) जाना चाहिए, शरीर साफ करना चाहिए। सहजयोगियों के लिए सोने से पहले पानी में बैठना पांच मिनट अत्यन्त आवश्यक है। वो चाहे कोई भी हो। आप बड़े पहुँचे हुए हों, आप कहें 'हमें नहीं पकड़ता'–इससे मतलब नहीं है। आपको 5 मिनट पानी में बैठना चाहिए। आप लोगों को यह आदत लगे इसलिये मैं जबरदस्ती बैठती हूँ कभी–कभी कि चलो मैं भी पानी में बैठती हूँ तो मेरे सहजयोगी बैठेंगे। यह आदत बहुत ही अच्छी है।

एक पाँच मिनट पानी में सब सहजयोगियों को बैठना चाहिए, फोटो के सामने दीप जलाकर के कुमकुम वगैरह लगाकर के, अपने दोनों हाथ फोटो की ओर फैला कर, दोनों पैर पानी में रखकर सब सहजयोगियों को बैठना चाहिये। आपके आधे से ज्यादा Problem solve (समस्याएं हल) हो जायेंगे, अगर आप यह करें। चाहे कुछ हो जाये, आपके लिए पाँच मिनट कुछ मुश्किल नहीं हैं। सोने से पहले पानी में सबको बैठना चाहिए। इससे आपको जो है, आधे से ज्यादा पकड़ना खत्म हो जायेगा।

हमारे अन्दर स्वयं ही दुष्ट प्रवृत्तियां हैं। हमारे ही अन्दर स्वयं बहुत–सी काली प्रवृत्तियाँ हैं जिसे Negativity (नैगेटिविटी) कहते हैं। वो जोर मारती हैं। उनके कब्जे में आना अपने को शैतान बनाना है, आप चाहें तो शैतान बन सकते हैं और आप चाहें तो परमात्मा बन सकते हैं। शैतान अगर बनना है तो बात दूसरी है। उसके लिये मैं गुरु नहीं हूँ। भगवान बनना है तो उसके लिये मैं गुरु हूँ। लेकिन शैतान से बचना चाहिये।

पहली चीज है कि अमावस्या की रात या पूर्णिमा की रात Left और Right side दोनों तरफ में आपके Dangers (खतरे) होते हैं। दो दिन विशेष कर अमावस्या की रात्रि को और पूर्णिमा की रात्रि को बहुत जल्दी सो जाना चाहिए। भोजन करके, नत हो के, ध्यान करके, चित्त सहस्रार में जाते ही आप अचेतन (Unconscious) में चले गये। वहाँ अपने को बन्धन

में डाल दिया, आप बच गये–दो रात्रि को विशेष रूप से, और जिस दिन अमावस्या की रात्रि हो उस दिन, विशेष कर अमावस्या के दिन, आपको शिवजी का ध्यान करना चाहिये। शिवजी का ध्यान करके, उन के हवाले अपने को करके सोना चाहिए–आत्मतत्व पर और पूर्णिमा के दिन आपको श्री रामचन्द्रजी का ध्यान करना चाहिये। उनके ऊपर अपनी नैया छोड़कर। रामचन्द्रजी का मतलब है क्या– Creativity *(सृजन शक्ति)। अपनी जो* Creative powers *(रचनात्मक शक्तियाँ) हैं उनको पूर्णतया समर्पित करके, और आपको रहना चाहिए। इन दो दिन अपने को विशेष रूप से बचाना चाहिए।*

हालांकि, सप्तमी और नवमी दो दिन विशेषकर आपके ऊपर हमारा आशीर्वाद रहता है। सप्तमी और नवमी के दिन उसका ख्याल रखना। सप्तमी और नवमी के दिन जरूर कोई ऐसा आयोजन करना जिसमें आप ध्यान अपना पूरा करें। सामूहिक ध्यान उसी जगह करना जहाँ मेरा पैर पड़ा हुआ है, जो चीज शुद्ध हो चुकी है। सामूहिक ध्यान अपने घर में भी किसी के साथ बैठकर मत करिये। अपने रिश्तेदारों के साथ भी बैठ करके सामूहिक ध्यान नहीं करना चाहिये। जिस जगह मैंने कहा है वहीं सामूहिक ध्यान करना है। और बैठकर सहजयोग की चर्चा भी बहुत देर तक ऐसी जगह नहीं करनी चाहिए जहाँ मेरा पैर पड़ा नहीं क्योंकि वहाँ तुम्हारे अन्दर के भूत आकर बोलने लगेंगे और आपस में झगड़ा शुरु हो जायेगा क्योंकि तुम लोग अब भी भूतों के कब्जे से बचे हुए लोग नहीं हो। कहाँ से भूत आता है, यह समझ में नहीं आता और भूत सारे काम करता है।

इस तरह से अपनी रक्षा करने की बात है। और जब कभी भी आप बाहर जायें, कहीं भी घर से बाहर जायें तो अपने को पूर्णतया बन्धन में रखें। बन्धन में रखें, हर समय बन्धन रखें। देखा कि किसी का आज्ञा चक्र पकड़ा है, चित्त से ही चाहे बन्धन डाल दीजिये। जिस आदमी की आज्ञा चक्र पकड़ा है, उससे कभी भी Argument *(विवाद) नहीं करना चाहिये। यह तो बेवकूफी की बात है, जिसका आज्ञा चक्र पकड़ा है, तो क्या भूत से आप* Argument *कर सकते हैं? उससे* Argument *नहीं करना चाहिए जिसका भी आज्ञा चक्र पकड़ा है–पहली चीज।*

जिसका विशुद्धि चक्र पकड़ा है, उससे भी Argument *नहीं करना चाहिये। जिसका सहस्रार पकड़ा है, उसके तो दरवाजे पर भी खड़ा नहीं होना चाहिए। उससे कोई मतलब ही नहीं होना चाहिए आपको। कह दो, "अपना सहस्रार ठीक करो भाई।" उससे कहने में कोई हर्ज नहीं कि "तुम्हारा सहस्रार पकड़ा हुआ है, उसे ठीक करो।" सहस्रार साफ रखना चाहिए अगर किसी को सहस्रार पकड़ा लगे तो फौरन जाकर कहना चाहिए कि, "मेरा सहस्रार उतार दो तुम लोग किसी तरह।" सहस्रार किसी का पकड़ा हो और वह आप से बातचीत करे कुछ, तो कहना चाहिए, "तू मेरा दुश्मन है।" उस आदमी से बिल्कुल उस वक्त तक बात नहीं करनी जब तक उसका सहस्रार पकड़ा है।*

अब रही हृदय चक्र की बात। जिस मनुष्य का हृदय चक्र पकड़ा है उसकी मदद करनी चाहिए। जहाँ तक बन सके तो उसके हृदय पर बन्धन आदि डालना, अपने हृदय पर हाथ रखना, माँ की फोटो की ओर उसको ले जाना। हृदय चक्र का ख्याल तो जरूर रखना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी हृदय चक्र में हो सकता है दूसरे को जरा परेशानी हो। हृदय चक्र में जरूर मदद करनी चाहिये।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, 27.05.1976)

★ "...आपके मन्त्र रटने रहने से कुछ न होगा। कार्यान्वित करने के लिए आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को हार्दिक स्वीकारोक्ति की आवश्यकता होती है...।"

"...जगदम्बा का निवास यहाँ आपके हृदय में है। यह हृदय चक्र का मध्य है। हृदय बाईं ओर होता है। हृदय में श्री शिव का स्थान है जिन्हें आत्मा कहते हैं। वे शिव हृदय में रहते हैं। ...कोई व्यक्ति यदि कहता है कि इसे हृदयाघात हुआ है और उसे कहें कि आपको परमात्मा से क्षमा माँगनी चाहिए।" आपको उनके सम्मुख हृदय पूर्वक कहना होगा कि , "हे, करुणानिधि यदि मुझसे किसी प्रकार की गलती हो गई है, यदि मुझसे कोई अपराध हुआ है तो कृपा करके मुझे क्षमा कर दीजिए।"

कर चरण कृतम, वाक्कायजं कर्मजं व,
श्रवण नैयनजं, मानसं, वापराधं
विहितं विहितं व सर्वमेतत् क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे, श्री महादेव शम्भु।

इसके लिए यह मन्त्र है, इस मन्त्र से यदि उसका हृदय ठीक नहीं होता तब आप मुझे बता सकते हैं, और मैं कुछ भी दण्ड भरने के लिए तैयार हूँ। परन्तु आपके मन्त्र रटते रहने से कुछ न होगा। कार्यान्वित करने के लिए आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति की हार्दिक स्वीकारोक्ति की आवश्यकता होती है... ।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत 31.01.1978)

★ मेरा फोटो सब कुछ कर सकता है

"जब आप बीमार पड़ते हैं तो सहजयोग आपको रोगमुक्त करता है। आपकी कुण्डलिनी आपको ठीक करती है। जो भी लाभ आपको प्राप्त हुए हैं वो सब सहजयोग के कारण हुए हैं ...केवल उन्हीं लोगों को जिनमें सहजयोग प्राप्त करने की शुद्ध इच्छा है। सहजयोग में बहुत से लोग अपनी बीमारियाँ ठीक करने के लिए आते हैं। कृपा करके किसी की बीमारी का इलाज न करें। क्यों आपको बीमारियाँ ठीक करनी हैं? मेरा फोटो सब कुछ कर सकता है। आप उनसे तीन मोमबत्तियों से उपचार करवा सकते हैं या जल उपचार करवा सकते हैं। परन्तु उन्हें छुएं

नहीं। व्यक्ति चाहे जितना आपका समीपी हो, अपने हाथों से उसे न छुएं। व्यक्ति यदि स्वयं करने में असमर्थ है, बैठ नहीं सकता, फिर अलग बात है। अन्यथा उसे न छुएं, नहीं तो या तो आप पकड़ जाएंगे और या आपमें कोई अन्य दोष आ जाएगा। साधारण बीमारी आप ठीक कर सकते हैं। इलाज करने का तरीका सीखें, चक्र और उनका विज्ञान। परन्तु चक्रों पर हाथ रखने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

"व्यक्ति को चाहिए कि बहुत कम मीठा खाएं और तली हुई चीजें तो इससे भी कम खानी चाहिएं। सहजयोग में 'पोस्टमैन तेल' का उपयोग न करें और मूंगफली का तेल भी नहीं खाना चाहिए। बहुत कम तेल में खाना बनाएं। पुरुषों को देखना चाहिए कि उनकी पत्नियाँ ठीक प्रकार से खाना बना रही हैं। मिर्चों का उपयोग भी कम कर देना चाहिए।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, प्रतिष्ठान पुणे, भारत, 11.03.1993)

★ यह आगे तथा पीछे के आज्ञा चक्र का मन्त्र है

अब सहजयोग में आप कैसे करते हैं? आपके पास फोटोग्राफ है, इसका उपयोग करें। इसके सम्मुख दीपक जलाएं। दीपक (प्रकाश) के माध्यम से आप अपने आज्ञा चक्र ठीक कर सकते हैं।

हमेशा प्रकाश, सूर्य, क्योंकि ईसामसीह का निवास सूर्य में है। अतः आपको करना ये है कि सामने के आज्ञा चक्र के सम्मुख दीपक रखें और एक दीपक पीछे के आज्ञा चक्र के पीछे और पीछे के आज्ञा चक्र को उस दीपक से आरती दें। यहाँ (पीछे की आज्ञा) महागणपति और महाभैरव का स्थान है। अतः पीछे की आज्ञा की आरती करें और आज्ञा चक्र खुल जाएगा। इस प्रकार आप इसे खोलें? अत्यन्त सहज तरीका ये है कि जब भी कोई विचार आए तो आपको कहना चाहिए, 'मैं क्षमा करता हूँ।' ईसामसीह ने हमें यह बहुत बड़ा हथियार प्रदान किया है। आप केवल इतना कहें कि "मैं क्षमा करता हूँ, मैं क्षमा करता हूँ," और आप अपने अहं की समस्या पर काबू पा लेंगे। यह मन्त्र सामने के आज्ञा चक्र के लिए है, यहाँ आप कहते हैं, 'मैं क्षमा करता हूँ, मैं क्षमा करता हूँ, मैं क्षमा करता हूँ," और आप पाएंगे कि आपका आज्ञा चक्र खुल गया है तथा आपका अहं भी चला गया है। क्षमा मानव को प्राप्त हुआ सबसे बड़ा हथियार है परन्तु वे इतने मूर्ख हैं कि क्षमा करने के लिए भी उन्हें बार-बार कहना पड़ता है? क्षमा न करने की कौन-सी बात हैं? मैं कहती हूँ इसमें क्या कठिनाई है, आप क्या कर रहे हैं? 'मैं क्षमा करता हूँ, कहते हुए क्या आपको कुछ करना पड़ता है? क्या आप कुछ करते हैं? कुछ नहीं। इसके विपरीत जब आप क्षमा नहीं करते तब वह वास्तव में आपको सता रहा होता है, जबकि आप उस व्यक्ति को नहीं सता रहे होते। अतः सामने के आज्ञा चक्र का ये मन्त्र है और पीछे की आज्ञा को ठीक करने के लिए जैसा मैंने आपको बताया, आपको दीपक से आरती करनी होती है। अब कुछ लोग एक दिन ऐसा करेंगे या दो दिन करेंगे परन्तु सहजयोग कार्यान्वित करने का यह तरीका नहीं है। आपको जी जान से इस पर जुट जाना होगा। मैंने ऐसे लोग देखे

हैं जिनकी आँखें इस प्रकार से झुक गईं थीं कि वे अपनी आँखें ऊपर की ओर उठा भी न सकते थे, परन्तु ऐसा करने पर अब उनकी आँखें पूरी तरह से खुल गई हैं। यह विधि बहुत सहज है।

हमारी आँखों में एक अन्य चीज़ भी घटित होती है, स्वाधिष्ठान चक्र जब खराब हो जाता है, इसकी अभिव्यक्ति भी यहाँ पीछे है–यह पीछे की आज्ञा के चहुँ ओर है। व्यक्ति को जब शक्कर रोग या ऐसा ही कुछ और हो तो लोग अन्धे होने लगते हैं क्योंकि पीछे की आज्ञा के चहुँ ओर विद्यमान स्वाधिष्ठान चक्र अपने आस–पास के आज्ञा क्षेत्र को दबाता चला जाता है, इस पर अत्याचार करता है और इस केन्द्र को अधिक गतिशील कर देता है तथा परिणामस्वरूप आँखें देख नहीं पातीं। इनमें प्रकाश नहीं रहता। लोगों की आँखें खुली होती हैं। फिर भी उनके सम्मुख अन्धकार होता है। आपने बहुत से शक्कर रोगियों को इस प्रकार अन्धा होते हुए देखा है। अतः अपने स्वाधिष्ठान को ठीक करके सर्वप्रथम अपना शक्कर रोग ठीक करें। पीछे की ओर अपने स्वाधिष्ठान के आस–पास आप बर्फ का प्रयोग भी कर सकते हैं। परन्तु सर्वप्रथम यदि आप अपना स्वाधिष्ठान ठीक कर लें तो आपको पहले से बेहतर लगेगा। अतः सामने की आज्ञा का इलाज प्रकाश (दीपक) है और पीछे की आज्ञा का जल। पानी या प्रकाश को अपनी पसंद के अनुसार उपयोग करना बेहतर होगा। क्योंकि यदि स्वाधिष्ठान की समस्या है तो आपको जल का उपयोग करना होगा परन्तु यदि केवल भूतबाधा है, शक्कर रोग नहीं है, तो भूतबाधा ठीक करने के लिए आपको केवल प्रकाश का उपयोग करना होगा। इस प्रकार से हम आज्ञा चक्र को ठीक करते हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत, 03.02.1983)

★ **बाईं ओर को ऊपर उठाएं और दाईं ओर नीचे गिराएं ताकि अहं और प्रतिअहं सन्तुलित हो सकें।**

"...आइए थोड़ी देर ध्यान करें। हृदय में ध्यान करने से पूर्व आप अपने हृदय में देखें और हृदय की गहराइयों में अपने गुरु को स्थापित करने का प्रयत्न करें। गुरु को हृदय में स्थापित करने के बाद पूर्ण श्रद्धा एवं समर्पण के साथ उनके सम्मुख नतमस्तक हों। आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् अपने मस्तिष्क से आप जो भी कुछ करते हैं वह मात्र कल्पना नहीं होती क्योंकि अब आपका मस्तिष्क, और कल्पना भी, ज्योतिर्मय हो गई हैं। अतः स्वयं को इस प्रकार प्रतिबिम्बित करें कि अपने गुरु को चरणकमलों में नतमस्तक हो जाएं। अब उनसे ध्यान–धारणा करने के लिए आवश्यक स्वभाव तथा वातावरण की याचना करें। ध्यान धारणा तब होती है जब आप परमात्मा से एकरूप होते हैं। अब यदि विचार आ रहे हैं तो प्रथम मन्त्र का उच्चारण करें और अपने अन्दर देखें। श्रीगणेश का मन्त्र भी कुछ लोगों को सहायक होगा। तब अपने अन्दर झाँककर स्वयं देखना चाहिए कि सबसे बड़ी बाधा क्या है।

सर्वप्रथम विचार, विचारों के लिए आपको 'निर्विचार' का मन्त्र कहना होगा–"त्वमेव साक्षात् श्री निर्विचार साक्षात्, श्रीमाताजी निर्मला देव्यै नमोनमः।" तीन बार यह मन्त्र कहें।

सहजयोगी : *ओऽम त्वमेव साक्षात् श्री निर्विचार साक्षात् श्रीमाताजी निर्मला देव्यै नमो नमः (तीन बार)।*

अब हम अहं की बाधा पर आते हैं क्योंकि अब विचार रुक गए हैं परन्तु सिर पर दबाव अभी भी बना हुआ है। अतः यदि ये अहं है तो कहें-

"त्वमेव साक्षात् महत् अहंकार (महत् अर्थात् महान, अहंकार अर्थात् अहं) साक्षात्, श्रीमाताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।" ये मन्त्र तीन बार कहें।

सहजयोगी : *"ओऽम त्वमेव साक्षात, श्री महत् अहंकार साक्षात् श्री आदिशक्ति साक्षात् श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।*

ओऽम् त्वमेव साक्षात्, श्री महत् अहंकार साक्षात् श्री आदि शक्ति साक्षात् श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।

श्रीमाताजी : *पुनः।*

सहजयोगी : *"ओऽम त्वमेव साक्षात् श्री महत् अहंकार साक्षात् श्रीआदिशक्ति साक्षात् श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।"*

अब भी यदि आपको लगता है कि अहंकार बना हुआ है तो आपको अपने हाथ से बाईं ओर उठानी होगी और दाईं ओर को नीचे गिराना होगा। एक हाथ फोटों की तरफ होना चाहिए। बाईं ओर को ऊपर उठाएं तथा दाईं ओर को नीचे गिराएं ताकि अहं ओर प्रतिअहं में सन्तुलन हो सके। ऐसा सात बार करें। महसूस करें कि आपको अपने अन्दर कैसा लग रहा है? अब अपनी कुण्डलिनी सिर के ऊपर उठाकर गाँठ लगाएं, पुनः कुण्डलिनी सिर के ऊपर लाकर गाँठ लगाएं, एक बार पुनः कुण्डलिनी उठाएं और इसे बाँधें। अब सहस्त्रार पर तीन बार सहस्त्रार का मन्त्र बोलें:

सहजयोगी : *"ओऽम त्वमेम साक्षात् श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्त्रार स्वामिनी मोक्ष प्रदायिनी माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।" (तीन बार)*

अब यह खुल गया है, आप देखिए। आप स्वयं भी इस प्रकार अपना सहस्त्रार खोल सकते हैं। इसे एक बार देखें कि आप वहाँ स्थापित हो गए हैं। ऐसा कर लेने के बाद ध्यान में चले जाएं। यह शुद्धिकरण है जिसे न्यास कहते हैं। कोई अन्य बाधा भी यदि आप पाएं-जैसे यदि महाकाली की समस्या है तो मन्त्र कहकर इसे ठीक करें और ध्यान के लिए बैठ जाएं।

अपनी व्यक्तिगत समस्या को समझें, मान लो यदि अहं की समस्या है तो महत्अहंकार से आरम्भ करना चाहिए। आपको बाधा का पता लगाना होगा कि आपकी समस्या क्या है? कुण्डलिनी कहाँ रुक रही है। ये बात आप अपने अन्दर महसूस कर सकते हैं। हो सकता है आपमें से कुछ लोग ऐसा न कर सकें। बाधा यदि अन्दर महसूस नहीं हो सकती तो अपनी

अंगुलियों पर महसूस करें। अन्दर यदि बाधा महसूस नहीं हो रही है तो अंगुलियों पर महसूस करें। आप इसे महसूस कर सकते हैं। बेहतर होगा कि अपने श्वासों की गति को कम करें। श्वासों की गति इस प्रकार कम करें मानों श्वास रोक लिए हों।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी कैक्स्टन हॉल, लन्दन, यू.के. 11.11.1979)

★ ...एक अन्तर्भाग के रूप में कार्य करते हैं और दूसरे बाह्य भाग के रूप में

"उनके गुणों को यदि हमने आत्मसात करना है तो सर्वप्रथम हमें समझना होगा कि श्रीराम की अन्तर अवस्था क्या है। श्रीराम को आपके हृदय के दाई ओर-दाएं हृदय में स्थापित किया गया है। वे वहाँ स्थापित हैं। परन्तु मानव में तो दायाँ हृदय होता ही नहीं। किसी से यदि आप दाएं हृदय के बारे में बताएं तो वो कहेगा। "क्या! हृदय दो हैं या तीन हैं?" हमारे सहजयोग के अनुसार हृदय तीन हैं- एक बायाँ, दूसरा दायाँ और एक मध्य का। दायाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह दोनों फेफड़ों, पूरे गले, श्वासनली, नाक, तथा अन्तर्भाग की देखभाल करता है। इसके बाह्यभाग की देखभाल, हम कह सकते है कि, नैननक्श श्रीकृष्ण प्रदत्त हैं परन्तु इसका अन्तर्भाग श्रीराम ने बनाया है। ये दोनों एक हैं, परन्तु एक अन्तर्भाग में कार्य करता है और दूसरा बाह्य भाग पर। ये आपको कान देता है? अन्तर्भाग से, श्रीराम इस कार्य को करते हैं। वे आपको आँखें देते हैं, आँखों का अन्तर्भाग। इन अंगों के अन्तर और बाह्य भाग ठीक होने अत्यन्त आवश्यक हैं। श्रीराम का एक उदाहरण है कि उन्होंने कभी बाह्यपक्ष की या व्यक्ति के दिखावे की चिन्ता नहीं की। क्योंकि वे श्रीकृष्ण से पूर्व अवतरित हुए थे अत: उन्होंने मानव के अन्तर्भाग की रचना करने का प्रयत्न किया। अत: हम कर सकते हैं कि यद्यपि श्रीराम दाएं हृदय में हैं परन्तु अन्दर से आपके हँसा चक्र और विशुद्धि चक्र के एक भाग के माध्यम से कार्य करते हैं। क्योंकि श्री विष्णु ही हमारे अन्दर श्रीराम हैं और बाहर श्रीकृष्ण।

(परम पूज्य श्रीमाताजी Les Avants, स्विट्जरलैण्ड, 04.10.1987)

★ ...शीतल वायु आपकी नाक और मुँह से प्रवाहित होनी चाहिए।

"श्रीराम प्राणवायु हैं, जिसका हम पान करते हैं, जिससे हम श्वास लेते हैं। प्राणवायु, जब गरम हो जाती है तो हमें समझना होता है कि अब हम श्रीराम नहीं हैं। आपके नाक और मुँह से शीतल वायु प्रवाहित होनी चाहिए। आप लोगों के विषय में तो मैं नहीं जानती परन्तु हर समय मेरे साथ ऐसा ही होता है। जब आप क्रोध करते हैं तो नथूने फूल जाते हैं, गर्म वायु, तीखे शब्द, सभी कुछ गर्म, गर्म आँखें, सभी कुछ ऊपर को चढ़ जाता है तथा आप आक्रामक रावण बन जाते हैं क्योंकि उस समय श्रीराम के स्वभाव-सौन्दर्य को आप भूल चुके होते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी Les Avants, स्विट्जरलैण्ड, 04.10.1987)

★ ये हाथ श्रीकृष्ण का आशीर्वाद हैं

"...अत: सर्वप्रथम मैं भी आपकी परीक्षा लेती हूँ। मान लो मैं कहती हूँ कि अब रात के नौ बजे हैं। आप भी तुरन्त कहते हैं, "हाँ!" आइए देखें क्या होता है। देखने का प्रयत्न करें। इस प्रकार मैं बहुत बार आपकी परीक्षा लेने का प्रयत्न करती हूँ और तब मैं देखती हूँ कि कुछ लोग कहते हैं कि यदि श्रीमाताजी ने ऐसा कहा है, तो ठीक है, ऐसा ही है और इस प्रकार उनकी श्रद्धा भली-भाँति बननी शुरु हो जाती है। मैं स्पष्ट देख सकती हूँ कि किस प्रकार वे सच्ची श्रद्धा के साम्राज्य में आ रहे हैं। ऐसे में यदि मैं कुछ हास्यास्पद बात भी कहूँ तो वे केवल मुस्करा देते हैं। वे जानते हैं कि श्रीमाताजी हमारी परीक्षा ले रहीं हैं।' तो वे बस मुस्करा देते हैं। कुछ नहीं करते, बस मुस्करा देते हैं। इस बात की समझ यदि उन्हें न होती तो वे कहते, "हाँ, ऐसा ही होगा, श्रीमाताजी ने अवश्य ऐसा कहा होगा या किया होगा।" अत: आपकी परीक्षा का समय है। आपने अपनी परीक्षा लेनी है। जैसे मोहम्मद साहब ने कहा है कि, 'आपके हाथ बोलेंगे और आपके खिलाफ शहादत देंगे।' तो आप अपने हाथों पर जान जाएंगे। ये हाथ श्रीकृष्ण का आशीर्वाद हैं। हाथ भी उसी विशुद्धि से निकलते हैं और जैसा आप जानते हैं, श्रोणीय स्नायु इनकी देखभाल करते हैं। तथा दो चक्र हैं-एक ललिता चक्र और दूसरा श्रीचक्र-विशुद्धि के दोनों ओर ये भी श्रीकृष्ण के हाथों में खेलते हैं। इन हाथों से हम चैतन्य लहरियाँ महसूस कर सकते हैं। आपकी दाईं विशुद्धि यदि अवरोधित है तो आपको महसूस नहीं होगा और यदि बाईं विशुद्धि अवरोधित है तो भी हो सकता है आपको महसूस न हो। परन्तु इसका अर्थ ये नहीं है कि आपको आत्म-साक्षात्कार नहीं मिला। आपको साक्षात्कार मिल गया है। आप अपने हाथों को कार्यान्वित करें...।

अपने हाथों को आप बेकार की चीजों के लिए उपयोग न करें। ऐसा करना बहुत आवश्यक है क्योंकि आपके हाथ विशेष हैं। इन्हीं हाथों से आप सामूहिकता फैलाते हैं। जैसे कुछ लोग बात करते हुए अपने हाथ बहुत अधिक लहराते हैं। हर समय अपने हाथों का बहुत अधिक उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है। जब भी आप हाथों का उपयोग करें तो यह बहुत भद्र, नियमित, लक्ष्यपूर्ण और लाभकारी होना चाहिए। अपने हाथों का प्रदर्शन करते रहना ठीक नहीं है। आदेश देने के लिए श्रीकृष्ण की अंगुली का उपयोग न करें। सम्मान बनाए रखें। हाथों का उपयोग सामूहिकता के लिए होना चाहिए। आप हज़ारों लोगों को 'नमस्ते' कह सकते हैं। हाथ मिलाना मुझे पसन्द नहीं है। दूसरे व्यक्ति से आपको सभी प्रकार की सुईंयाँ, चुभन और समस्याएं मिल सकती हैं। लोगों से बात करते हुए वाणी के माध्यम से आप अपनी मृदुता एवं माधुर्य प्रकट कर सकते हैं। आपके हाव-भावों से हृदय की भावनाएं प्रकट होनी चाहिएं। सहजयोग में एक दूसरे के हाथ पकड़ने पर आप लोगों में चैतन्य प्रवाहित होने लगता है। इससे पता चलता है कि यह 'संचरण' (Communication) *है। ये हाथ वास्तव में सामूहिकता का आरम्भ हैं। हाथ अत्यन्त महत्वपूर्ण अवयव हैं जो आपकी सामूहिकता के लिए कार्य करते हैं।*

बहुत से गण और देवदूत आपके पीछे खड़े हुए हैं। वो आपके कार्य भली-भांति दिखाते हैं, आपके हाथों में या हाथों के माध्यम से जो भी अभिव्यक्त होता है उसे वे तुरन्त समझ लेते हैं। विशुद्धि की सोलह पंखुड़ियाँ और कान, नाक, गला, और आँखों का पथ प्रदर्शन इसी से होता है। हँसाचक्र, विशुद्धि चक्र का उपचक्र है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली, 16.08.1992)

★ ...कुछ लोगों को हर समय स्वयं को दर्पण में देखते रहने की आदत होती है। ये बिल्कुल गलत है।

"आध्यात्मिकतासम्पन्न व्यक्ति की अभिव्यक्ति कभी आक्रामक नहीं होती। हो सकता है वह सुन्दर न दिखाई देता हो, हो सकता है...उसका व्यक्तित्व आकर्षक न हो, परन्तु उसके चेहरे के भाव पूर्णतः सन्तसुलभ होंगे। यह भी श्रीकृष्ण का आशीर्वाद है। मैंने लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के एक वर्ष बाद देखा तो मैं हैरान रह गई कि किस प्रकार उनके मुख परिवर्तित हो गए हैं! मैं उन्हें पहचान तक न सकी कि वो हैं कौन? सारा कुछ एकदम से कोमल, मृदु, शान्त और आनन्दमय हो जाता है। श्रीकृष्ण के सभी गुणों की अभिव्यक्ति आपके मुख पर होनी चाहिए। उनका नटखटपन भी कभी-कभी दिखाई दे सकता है। मुख पर बहुत से भाव आते हैं जो आपको माधुर्य प्रदान करते हैं। परन्तु कुछ लोगों को हर समय स्वयं को दर्पण में देखते रहने की आदत होती है, जो अत्यन्त गलत है, क्योंकि यह आपको एक अजीबोगरीब अहं देती है। अपने चेहरों को देखने के स्थान पर श्रीकृष्ण के चित्र को देखते रहना बेहतर होगा, ताकि आपके मुखारबिन्द भी श्रीकृष्ण की तरह से बन जाएं? इसकी अपेक्षा आप हर समय शीशा देखने लगते हैं। परमात्मा जाने आपका क्या होगा, क्योंकि हो सकता है...यदि आप अपने भूतकाल में चले गए तो, परमात्मा जानता है, आप क्या बन जाएं! अतः मैं मनोवैज्ञानिकों की आभारी हूँ कि उन्हें आत्मासक्ति (Narcissism) पसन्द नहीं है। दर्पण में हर समय अपना चेहरा देखते रहना अत्यन्त खतरनाक है, अत्यन्त खतरनाक है। यह हास्यास्पद व्यक्तित्व को जन्म देता है और आप स्वयं से कहने लगते हैं, "ओह, मैं—मैं नेपोलियन हूँ।" तो आप नेपोलियन बन जाते हैं और नेपोलियन की तरह से व्यवहार करने लग जाते हैं। अगले दिन आप स्नानागार से एक नेपोलियन को निकलते हुए पाते हैं। अतः व्यक्ति को सावधान रहना चाहिए कि स्वयं की ओर न तो बहुत अधिक चित्त दे और न ही स्वयं को बहुत अधिक महत्व दे, अन्तःस्थित आत्मा की ओर चित्त दें और उसे महत्व भी दें। यदि आप इस ओर (आत्मा की ओर) देखते हैं तो सभी कुछ अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक घटित होगा।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली 16.08.1992)

★ 'शनि', श्रीकृष्ण का ग्रह है।

"...बालों की देखभाल भी श्रीकृष्ण करते हैं। आप जानते हैं कि उन्हें स्निग्ध पदार्थ—जैसे मक्खन आदि बहुत अच्छे लगते हैं। अतः आपको चाहिए कि बालों में मक्खन या तेल आदि

कुछ लगाएं। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो गंजे हो जाएंगे, क्योंकि ये तो कर्मफल है। अत: आपको बालों में तेल लगाना होगा, पश्चिम में हमेशा से बालों में तेल लगाया जाता था। पुरानी पाश्चात्य फिल्मों में ये चीज देखी जा सकती है। परन्तु अब यदि आप दिन में तेल नहीं लगाना चाहते तो इसे धो दें, परन्तु सप्ताह में कम से कम एक बार सिर की मालिश अवश्य करें।

श्रीकृष्ण का ग्रह 'शनि' है। वे यदि किसी के पीछे पड़ जाएं तो कोई कुछ नहीं कर सकता। समाप्त! शनि का कभी ढैय्या (2½ साल) होता है कभी साढ़ेसाती (7½ साल)। इतने समय ये आपके पीछे लगा रहता है। श्रीकृष्ण का यह 'शनि' हमारा आन्तरिक गुण है-कि मान लो कोई हमें कष्ट देता है तो हमें कुछ नहीं करना। श्रीकृष्ण सबकुछ करेंगे। आप 'सर्वव्यापी शक्ति' को सूचित कर सकते हैं और उसके माध्यम से इस पुरुष, महिला या समूह का पीछा किया जाएगा। सब कुछ स्वत: होगा। परन्तु आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि आपमें श्रीकृष्ण की शक्तियाँ हैं जिनके द्वारा वे ऐसे व्यक्ति के पीछे पड़ सकते हैं और उसे कोई बचा नहीं सकता। सबसे अन्त में वे गतिशील होते हैं परन्तु उनके पास क्षमा नहीं है। फाँसी लगाने के लिए वे व्यक्ति को लम्बी रस्सी देते हैं परन्तु कभी क्षमा नहीं करते। कहते हैं कि उत्क्रान्ति प्राप्त किए बिना तो आपको इसका फल भुगतना ही होगा। सहजयोगी बनकर यदि आपने उत्क्रान्ति प्राप्त कर ली है, तब वे आपको किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाएंगे।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली 16.08.1992)

★ ...व्यक्ति को यदि विष्णुमाया की समस्या हो तो वह आलसी हो जाता है।

*"तो ये बाईं विशुद्धि विष्णुमाया है। अर्थात् क्या? एक बार यदि आपकी बाईं विशुद्धि बिगड़ जाए तो सभी प्रकार की विष्णुमाया की समस्याएं खड़ी हो जाती हैं और उनमें से एक है हृदय की समस्या। क्योंकि विष्णुमाया अत्यन्त गतिशील हैं, वे विद्युत की तरह से हैं, और यदि आपको विष्णुमाया की समस्या है तो आप अकर्मण्य हो जाते हैं। "ओह, मैं इतना दोषी हूँ।" आप उदासीन (*Depressed*) हो जाते हैं और विष्णुमाया तत्व आपके सामने से लुप्त हो जाता है। वे अत्यन्त गतिशील और तेज़ हैं, तथा प्रकाश प्रदान करती हैं और घोषणा करके पूरे विश्व को बताती हैं कि श्रीकृष्ण क्या हैं? दोषभावग्रस्त सहजयोगियों के साथ होता ये है कि वो आकर कहते हैं, श्रीमाताजी, आप जानती हैं हमने सोचा कि यदि हम ये कार्य करेंगे तो हमारा अहं बढ़ जाएगा। यदि हम बाहर जाकर, कुछ क्षेत्रों में या गाँवों में कार्य करेंगे तो हमारा अहं बढ़ जाएगा। हम ये कार्य नहीं करना चाहते।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली, 16.08.1992)

★ कभी-कभी ये संयोजन (Combinations) बहुत अच्छा कार्य करते हैं।

"कुछ लोग इसलिए नकारात्मक हैं क्योंकि वो बाईं ओर (अकर्मण्य) हैं, और कुछ इसलिए कि वो दाईं ओर (आक्रामक) हैं। कई बार ये संयोजन बहुत अच्छा कार्य करते हैं। अब कोई आक्रामक व्यक्ति किसी बाईं ओर के व्यक्ति पर रोब जमाने का प्रयत्न करता है तो

वे मित्र बन जाते हैं क्योंकि एक रोब जमाता है और दूसरा सहता है, परन्तु यह मित्रता नहीं है। बाईं ओर का व्यक्ति ज्यों ही मध्य में या दाईं ओर को आता है तो आक्रामक व्यक्ति उससे झगड़ने लगता है। तब वे एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन बन जाते हैं। ऐसा होता है, अतः सावधान रहें। जो व्यक्ति अधिक बाईं ओर को है उसे चाहिए कि मध्य में आने का प्रयत्न करें और इसी प्रकार आक्रामक व्यक्ति को चाहिए कि वो भी मध्य में आने का प्रयत्न करें।

अब आप यह कार्य कैसे करते हैं? किस प्रकार हम इस कार्य को कर सकते हैं? आइए देखते हैं। आक्रामक व्यक्ति को चाहिए कि अकर्मण्य व्यक्ति के साथ मित्रता करें और अकर्मण्य व्यक्ति को चाहिए कि वह आक्रामक व्यक्ति के साथ दोस्ती करें। आइए, इस प्रकार शुरु करते हैं। इसमें लेन-देन क्या होगा? दाईं ओर का व्यक्ति अच्छा आयोजक होगा, कम से कम अच्छा वक्ता होगा, हो सकता है—या नहीं भी हो सकता—अच्छा अगुआ हो। यह परामर्श देने वाला व्यक्ति भी हो सकता है, कार्यों को करने वाला भी। वो कह सकता है, "मैं इस कार्य को करूंगा, मैं करूंगा" आदि चीजें। बाईं ओर का व्यक्ति डरपोक होगा परन्तु विनम्र, प्रेम और स्नेहमय होगा। वह अधिकतर दूसरे लोगों की आज्ञा में रहेगा। एक आज्ञा देगा और दूसरा उसे लेगा। ऐसा होगा। इस सम्मिश्रण की समस्या को हम कैसे सुलझाएं? आक्रामक व्यक्ति को विनम्र व्यक्ति की आज्ञा पालन करने का प्रयत्न करना चाहिए और बाईं ओर के व्यक्ति को चाहिए कि वह दाईं ओर के व्यक्ति का संचालन करे और उसके आदेशों को माना जाए। ये आपसी तालमेल होना चाहिए। परस्पर अनुबन्ध (Contract) होना चाहिए। ठीक है, "मैं अहंवादी व्यक्ति हूँ और आप प्रतिअहंवादी। आओ अब एक काम करें, आप मेरा संचालन करने का प्रयत्न करें और मैं आपके आदेशों का पालन करने का प्रयत्न करूंगा। बात बन जाएगी। यह मनोवैज्ञानिक शैली है। आप इसे कार्यान्वित करें।

किसी बाईं ओर के व्यक्ति को आजमाएँ जो आपका संचालन करे। यहाँ पर ऐसे बाईं ओर के व्यक्ति खोजना बहुत मुश्किल काम है। ऐसे लोग बहुत कम हैं। कुछ लोग जो बाईं ओर के थे, अहं के मामले में वो भी सबसे आगे हैं। तो कुछ कठिन काम है, अतः कोई बाईं ओर का व्यक्ति खोजें और दस आक्रामक लोग उससे कहें कि वो उनपर रोब झाड़े—तब तक जब तक उसका अहं विकसित नहीं हो जाता और वो ठीक नहीं हो जाता। उसमें जब अहं विकसित हो जाए तो उसे रोक दें परन्तु पूरी सूझ-बूझ के साथ, ये देखते हुए कि आप कितना विकसित हुए हैं और आपने कहाँ तक जाना है। खेल चलते रहना चाहिए। स्वयं से खेलें। परन्तु यदि आप स्वयं से ही लिप्त हैं कि "मैं हमेशा ठीक हूँ, कोई और ठीक नहीं है," तो, मैं आपको बता देती हूँ कि कुछ नहीं हो सकता। क्योंकि यदि आप पूर्ण होते तो मैं यहाँ अपने शब्द क्यों बरबाद करती? अतः ऐसा करना सर्वोत्तम होगा। ठीक है तुम आदेश दो और मैं पालन करूंगा। आओ, देखते हैं, तुम क्या कहते हो। आप योजना बनाएं और हम कार्य को करेंगे। आप हमें बताओ किस प्रकार करना है? तब वह व्यक्ति आपके हृदय का

उपयोग करेगा और आप उसके चित्त का। यह बहुत अच्छी तरह से कार्यान्वित होगा। यह संयोजन बहुत अच्छा रहेगा।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 27.09.1980)

★ **...सहजयोगी यदि ध्यान धारणा करें और स्वयं को पूर्ण शान्ति में बनाए रखें और पूरी तरह से समर्पित रहें तो उन्हें कुछ नहीं हो सकता।**

विनाश शुरु हो चुका है। भयंकर तूफान, भूचाल और दुर्घटनाएं तथा प्राकृतिक प्रकोप इस कार्य को कर रहे हैं और यह सब कल्की अवतार के परिणाम स्वरूप है। परन्तु यह अवतार एक अन्य कार्य भी कर रहा है, वह है, लोगों को आत्म-साक्षात्कार (पुनर्जन्म) देना। आत्मसाक्षात्कारी लोगों को ये घटनाएं कभी हानि नहीं पहुँचातीं। इन लोगों को कुछ नहीं हो सकता। सदैव उनकी रक्षा होगी और उनकी हर चीज़ की रक्षा होगी क्योंकि ये अपनी माँ की सुरक्षा में हैं।

अब समस्या यह है कि इन लोगों से सहजयोगी कैसे व्यवहार करें ताकि ये लोग विकास प्रक्रिया के मार्ग में बाधाएं न उत्पन्न कर सकें? इसका एकमात्र समाधान कुण्डलिनी की जागृति है। यदि किसी बुरे से बुरे व्यक्ति की कुण्डलिनी भी आप उठा देंगे तो या तो वह नष्ट हो जाएगा या भला व्यक्ति बन जाएगा। कुण्डलिनी जागृति के पश्चात् सभी दुष्कर्मों की योजना जो उनके मस्तिष्क में है वे त्याग देंगे और वास्तव में बहुत अच्छे लोग बन जाएंगे। हो सकता है कि कुछ मामलों में ऐसा न हो। मैं नहीं कहती कि हर व्यक्ति के साथ सहजयोग सफल हो जाएगा। परन्तु सहजयोगी यदि ध्यान करें, पूर्ण शान्ति की अवस्था में पूरी तरह से समर्पित होकर बने रहें तो उन्हें कुछ नहीं हो सकता। सदैव उनकी रक्षा की जाती है और आप सब लोगों ने इस सुरक्षा को अनुभव किया है। परन्तु सर्वप्रथम आपको स्वयं पर विश्वास करना होगा और सहजयोग के प्रति पूर्णतः समर्पित होना होगा। यहाँ पर उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी और पश्चिमी भारत तथा भिन्न देशों से आए बहुत से सहजयोगी बैठे हुए हैं। हर देश, हम कह सकते हैं, आज इन आसुरी शक्तियों के चंगुल में है। हमें कुण्डलिनी जागृति के माध्यम से इन लोगों को श्रेष्ठ बनाना है। यह कार्य आप कर सकते हैं। आप इस कार्य को कर सकते हैं और इसके लिए कोई विशेष परिश्रम आपको नहीं करना पड़ता। अपने रोजमर्रा के जीवन में आप यह कार्य कर सकते हैं। लोगों का अन्तर्परिवर्तन करने के लिए केवल इसी चीज की आवश्यकता है और आप सब इसको कर सकते हैं। आप सब। ये उपलब्धि आप प्राप्त कर सकते हैं। आप सबको यह कार्य अत्यन्त निष्ठा से, भलीभांति करना चाहिए। क्रोध में आकर लोगों पर उछलने की या अभद्र व्यवहार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। शान्त रहते हुए इस उपलब्धि को प्राप्त करना चाहिए ताकि श्री शिव का क्रोध न भड़क उठे और जैसे कहते हैं, उनकी तीसरी आँख न खुल जाए। ऐसा होना बहुत भयानक है। हम सब इस कार्य को अत्यन्त रचनात्मक तरीके से कर सकते हैं।

अतः सर्वप्रथम हमें अपने शिवतत्व को स्थापित करना चाहिए-आनन्द, प्रेम एवं सत्य के तत्व को।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, पुणे, भारत, 05.03.2000)

★ श्रीविष्णु के बिना आप श्रीशिव तक नहीं पहुंच सकते और विष्णुतत्व को समझे बिना शिवतत्व पर नहीं बने रह सकते।

इसमें बहुत-सी समस्याएं भी हैं क्योंकि लोग श्री शिव के ब्रह्माण्डीय स्वभाव को नहीं समझते। उदाहरण के रूप में, मैंने सुना है कि लोग शिवतत्व और विष्णुतत्व पर झगड़ते हैं। शिवतत्व तक उठने के लिए आपके पास श्री विष्णु जी हैं और उनकी शक्ति भी है। दोनों भिन्न नहीं हैं, एक दूसरे के सम्पूरक हैं। फिर भी यदि आप इसी बात पर झगड़ते रहते हैं तो मैं नहीं समझ सकती!

श्री विष्णु के बिना आप श्री शिव तक नहीं पहुँच सकते और बिना विष्णुतत्व को समझे आप शिवतत्व पर नहीं बने रह सकते। कुण्डलिनी भी सुषुम्ना मार्ग से उठती है। वह (कुण्डलिनी) शिव का तत्व है और विकास प्रक्रिया में श्री विष्णु द्वारा बनाए गए मार्ग से वह उठती है। तो किस प्रकार आप दोनों में से एक के बिना चल सकते हैं? एक मार्ग है तो दूसरा लक्ष्य।

अतः मैं आशा करती हूँ कि आप लोग इस बात को समझते हैं कि आपके चक्रों का शुद्ध होना और उत्थान मार्ग का ठीक होना कितना महत्वपूर्ण है, तथा आपकी सुषुम्ना नाड़ी का स्वच्छ होना कितना आवश्यक है? क्योंकि हम मध्यमार्गी हैं, हमें मध्य में, मध्य मार्ग से चलना होगा तथा बाएं-दाएं न लुढ़ककर सन्तुलन में रहना होगा। ये सन्तुलन बनाए रखते हुए तब तक हमें कार्य करते रहना होगा, जब तक अपने तालू भाग में नहीं पहुँच जाते जहाँ सदाशिव विराजमान हैं। जो कुछ मैं आपको बता रही हूँ आप इसे स्वयं देख सकते हैं। इसे भली-भांति जान लें। जब मैं आपको ये चीज़ बता रही हूँ तो आप इसकी सच्चाई को परख लें। सहजयोग को अत्यन्त सुगमता से सत्यापित किया जा सकता है और आप केवल सत्य को जानते हैं, वह सत्य जो पूर्ण है। यह ऐसा तत्व है जो इन दोनों शक्तियों की एकाकारिता के पश्चात् प्राप्त होता है। अत्यन्त हैरानी की बात है कि जब वे दोनों शक्तियाँ मिलती हैं या जब आप विष्णुतत्व के माध्यम से शिवतत्व में पहुँचते हैं तब आप समझ पाते हैं कि ये दोनों शक्तियाँ एक-दूसरे की सम्पूरक हैं और परस्पर सम्बन्धित हैं। इस प्रकार से इन दोनों शक्तियों में कोई अन्तर नहीं है। अतः अपनी सड़क-मध्य मार्ग को स्वच्छ रखें और कुण्डलिनी को इस मार्ग से गुजरने दें। इस मार्ग से जब कुण्डलिनी गुजरेगी तो आप आश्चर्यचकित हो जाएंगे कि वही कुण्डलिनी विष्णु मार्ग से गुजरती हुई श्री शिव के चरण कमलों में पहुँच रही है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, पुणे, भारत, 05.03.2000)

★ गणेश तत्व में किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं है

"मैं आपको बता सकती हूँ कि श्री शिव काफी हद तक मूर्खता को सहन करते हैं क्योंकि उन्हें क्षमा बहुत पसन्द हैं, परन्तु विष्णु तत्व उनसे खिलवाड़ करता है और उन्हें दण्ड देता है या उनका वध कर देता है। परन्तु गणेश तत्व में किसी प्रकार का समझौता नहीं है और जब ये एकादशरुद्र बन जाता है, जहाँ ईसा को इस रूप में आना होता है, तब किसी प्रकार का समझौता नहीं होता। कोई "माताजी नहीं, कोई रोना-बिलखना नहीं, कोई वाद-विवाद नहीं, कुछ नहीं। श्री गणेश स्वयं लोगों को नर्क में फेंक देंगे। अत: इस मामले में सावधान रहें।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी Riffleberg, स्विट्जरलैण्ड, 02.09.1984)

★ सहजयोग की तरह से कलियुग में सभी जन्म ले सकते हैं-पूर्ण स्वतन्त्रता है

"...सहजयोग की तरह से कलियुग में सभी जन्म ले सकते हैं—पूर्ण स्वतन्त्रता है। पहले कभी ये स्वतन्त्रता न थी। आज जो सभी असुरों ने भी इस पृथ्वी पर जन्म ले लिया है। ये आसुरी लोग आसुरी विचारों को जन्म देते हैं। लोग इन विचारों को पकड़ते हैं और इनके अनुरूप चलने लगते हैं। कोई भला व्यक्ति भी इनसे प्रभावित हो सकता है। तो ये आसुरी शक्तियाँ जो आज कार्यरत हैं, मूलत: ये इन आसुरी लोगों से आई हैं।"

"...श्री आदिशक्ति ने सर्वप्रथम श्री गणेश का सृजन किया, सर्वप्रथम उन्हीं का सृजन किया गया-क्यों? क्योंकि वे पूरे वातावरण को चैतन्य, पावनता और मंगलमयता से भर देना चाहती थीं। ये आज भी विद्यमान हैं, आज भी ये सर्वत्र मौजूद हैं। आप चैतन्य को कार्य करते हुए महसूस कर सकते हैं। परन्तु यह आधुनिक मस्तिष्क में प्रवेश नहीं करता क्योंकि आधुनिक मस्तिष्क जानता ही नहीं कि अबोधिता क्या है। जिस प्रकार ये सर्वत्र कार्यरत है, वास्तव में पहले कभी पृथ्वी पर ऐसा नहीं हुआ।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली, 15.09.1996)

★ बाएं पक्ष का रंग नीला है और नीला रंग काले रंग में परिवर्तित होने लगता है।

"...अत: दोनों चीजें—जैसे प्रसन्नता या अप्रसन्नता—वो अवस्थाएं हैं जहाँ आप अभी तक मिथ्या में फँसे हैं। 'मिथ्यापन' अभी तक बना हुआ है। अभी आपने उससे 'परे' जाना है। किसी स्थिति के बारे में यदि आपको खुशी होती है तो आपको ये जान लेना चाहिए कि आत्म-साक्षात्कार से पूर्व ही आप प्रसन्न होते हैं क्योंकि यह आपके अहं को बढ़ावा देता है। और यदि आप अप्रसन्न हैं तो समझ लेना चाहिए कि आपके अहं पर किसी प्रकार का दबाव है तथा प्रतिअहं विकसित हो रहा है।

अत: दोनों ही स्थितियाँ आपके लिए सहायक नहीं हैं। आपकी उत्क्रान्ति में बिल्कुल सहायक नहीं हैं। इसके विपरीत ये संस्थाएं इतनी अधिक विकसित हो जाती हैं कि आप सच्चे

अनुभवों से परे हो जाते हैं। सच्चे अनुभव रुक जाते हैं क्योंकि आपका चित्त बहुत अधिक विचलित है। अतः एक ओर जब आप बाईं ओर को चले जाते हैं तो आपका चित्त, भय, पीड़ा, अप्रसन्नता, निराशा और विषाद के कारण विक्षिप्त हो जाता है। दूसरी ओर, जब आप आक्रामक हो जाते हैं-चाहे थोड़ा सा ही क्यों न हो, तब आप तानाशाह हो जाते हैं। बाईं ओर का रंग नीला है और नीला रंग काले रंग में परिवर्तित होने लगता है। दाईं ओर का रंग आरम्भ में पीला होता है, हल्का पीला या सुनहरी और यह पीला रंग पहले संतरी रंग में, फिर लाल रंग में परिवर्तित हो जाता है। दाईं ओर को आप आक्रामकता में चले जाते हैं। बाईं ओर को आप पूर्ण अकर्मण्यता की स्थिति में चले जाते हैं या एक ऐसी अवस्था में जहाँ आप स्वयं से अलग होकर पूरी तरह से बर्फ की तरह से हो जाते हैं, दूसरी ओर, आप एकदम से आग की तरह से तप जाते हैं। दोनों ही स्थितियाँ गलत दिशाओं की ओर जाना है।

मध्य में जब चित्त को रखा जाता है, कि आप आपने चित्त को अधिकतर मध्य में रखें, यह भी अत्यन्त संवेदनशील बिन्दु है जहाँ चित्त टिका नहीं रहता। उदाहरण के रूप में, जब हम कहते हैं कि अग्नि का उपयोग करो तो इसका उपयोग घर को जलाने के लिए भी किया जा सकता है, इसी प्रकार धुंआ करने के लिए भी इसका उपयोग किया जा सकता है परन्तु इसका उचित उपयोग भी किया जा सकता है जैसे खाना बनाने के लिए, प्रकाश देने के लिए। अग्नि यदि बहुत अधिक होगी तो बहुत बड़ी आग की तरह से जलेगी, बहुत कम होगी तो धुएं की तरह से जलेगी। परन्तु मध्य में यदि आप इसको सन्तुलित करना जानते हैं तो इसका उपयोग अपने लक्ष्य के लिए कर सकते हैं– खाना बनाने के लिए, प्रकाश देने के लिए और पूजा करने के लिए भी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, डॉलिस हिल, सेमिनार, 25.05.1980)

★ **चैतन्य लहरियाँ आती हैं परन्तु आप पाते हैं कि अचानक ये रुक गई हैं, आपको लगता है कि आप सीमा से बाहर हो गए हैं। आपको पूरी तरह से बाहर फेंक दिया गया है।**

"अन्तर्परिवर्तन हो जाने पर आपके अन्दर बहुत-सी बुराइयाँ स्वतः नष्ट हो जाती हैं। जैसे, आप स्पष्ट देख सकते हैं कि आपकी सभी गलतफहमियाँ समाप्त हो जाती हैं। ऐसी गलतफहमियाँ कि मैं अमरीकन हूँ, मैं ईसाई हूँ या मैं यहूदी हूँ, मैं ये हूँ मैं वो हूँ। ये सब मिथ्या धारणायें छुट जाती हैं और आप निर्लिप्त मानव बन जाते हैं। इससे पहले आप मानव थे, अब अहं और प्रतिअहंविहीन दिव्यमानव। तो अहं नष्ट हो जाता है, प्रति अहं नष्ट हो जाता है, बंधन नष्ट हो जाते हैं तथा ज्ञान के विषय में आपके सभी मिथ्याविचार नष्ट हो जाते हैं।

*तो जो बाकी रहता है और उभरकर आता है, वह है वास्तविकता। अब देखिए कि फूल जब फल बनता है तो इसके ऊपर से सभी अनावश्यक अवयव झड़ जाते हैं। जैसे, बाह्य दलपुंज (*Calyx*) झड़ जाते हैं। पंखुड़ियाँ झड़ जाती हैं, पत्तों का घेरा (*Epicalyx*) भी झड़*

जाता है। और यदि आप देखें तो बचता है सिर्फ बीज। बीज के इर्द-गिर्द फल विकसित होता है, बाकी सब कुछ झड़ जाता है। कुछ फलों का एक भाग उपयोग होता है और कुछ का बिल्कुल कुछ नहीं उपयोग होता। फल के रूप में थोड़ी सी बढ़ोतरी होती है और बाकी फूल बने रहते हैं। तो हमारे अन्दर भी जो आत्मा बन जाती है, वहीं शेष रहती है। बाकी सब झड़ जाता है। जिसे हम एकादश कहते हैं, जो अन्तर्परिवर्तन करता है, तब भी यही होता है। व्यक्ति को समझना होता है कि हमें बहुत सी चीजें, त्यागनी हैं।

मैंने बहुत से लोगों को ये कहते हुए देखा है, "क्या बुराई है? मैं सिगरेट पीता हूँ फिर भी मेरी चैतन्य लहरियाँ बनी हुई हैं!" कुछ कहते हैं, "क्या बुराई है? मैं शराब पीता हूँ, फिर भी मेरी चैतन्य लहरियाँ बनी हुई हैं। मैं फलां गुरु के पास जाता हूँ, फिर भी मेरी लहरियाँ बनी हुई हैं! मैं पहले जैसा कामुक जीवन व्यतीत करता हूँ फिर भी मेरी चैतन्य-लहरियाँ बनी हुई हैं! सारा कुछ होने के बाद भी चैतन्य-लहरियाँ बनी हुई हैं!" परन्तु अचानक ये रुक जाती हैं और आप पाते हैं कि आप सीमा से बाहर चले गए हैं। आपको पूरी तरह से बाहर फेंक दिया गया है। परन्तु आपकी समझ में ये नहीं आता कि किस प्रकार आपको बाहर फेंक दिया गया है? शनैः-शनैः आपको पता चलता है, गुलेल से निकले पत्थर की तरह आप बाहर चले जाते हैं। अतः व्यक्ति को इस विषय में बहुत सावधान रहना चाहिए।

*अतः हमारे अन्दर एक केन्द्रापसारी (*Centrifugal*) शक्ति है और दूसरी केन्द्राभिसारी (*Centripetal*)। एकादशशक्ति केन्द्रापसारी शक्ति है जिसके द्वारा आपको बाहर फेंका जाता है। सहजयोग आपके चरणों में नहीं गिरता, किसी से प्रार्थना नहीं करता, किसी की व्यर्थ प्रशंसा नहीं करता। आपको यदि इसमें रहना है तो ठीक से रहना है और यदि आप नहीं रहना चाहते तो ये आपको आपकी इच्छा से भी तेजगति से बाहर फेंक देता है। सहजयोग में यही कष्ट है और माँ के रूप में मैं आपको बता दूँ कि सहजयोग में यह दोष है कि यह आपको बाहर फेंकने के लिए बहुत उत्सुक है।"*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, न्यूयार्क, 17.09.1983)

★ आपके चक्रों का भेदन मध्य से होता है परन्तु बाकी का चित्त अब भी ज्यों का त्यों है

"...वास्तव में आत्म-साक्षात्कार में हुआ ये है कि आपकी कुण्डलिनी उठकर ऊपर आ गई है। एक पतले बाल की मोटाई के बराबर और उसने आपका सहस्रार तोड़ दिया है और अब इससे चैतन्य प्रवाहित हो रहा है। परन्तु यह बहुत ही छोटी क्रिया घटित हुई है—हालांकि यह भी अत्यन्त कठिन कार्य है, इसमें कोई संदेह नहीं, परन्तु यह घटित हुआ है। आप इस प्रकार विस्तृत नहीं हुए हैं। आपके चक्रों का भेदन मध्य से हो गया है परन्तु बाकी का चित्त अब भी ज्यों का त्यों है। वास्तव में इसकी स्थिति बिल्कुल वैसी ही है और आपको ये भी नहीं लगता कि इसका भेदन हो गया है। अब आपने इसे विस्तृत करना है। इसको और अधिक खोलें ताकि

कुण्डलिनी के अधिक सूत्र इससे बाहर आएँ और इन चक्रों के बीच स्थित आपका चित्त विस्तृत हो। विस्तृत होने पर यह दोनों ओर मौजूद मिथ्यातत्व को बाहर निकाल देता है। हमारा चित्त हर चक्र पर होता है और चक्र के अन्दर से गुज़रने वाला प्रकाश इसे ज्योतिर्मय करता है। परन्तु जो गहन अंधेरा आपने एकत्र किया हुआ है उसके मुकाबले प्रकाश बहुत कम है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी डॉलिस हिल सेमिनार, 25.05.1980)

★ ...ये महत्वपूर्ण नहीं है कि आप इस या उस चीज के बारे में क्या जानते हैं, महत्वपूर्ण तो ये है कि आप कहाँ पहुँचे हैं?

"अपनी चैतन्य लहरियाँ के माध्यम से जो भी कुछ आप सत्यापित कर सकते हैं वह आपका ज्ञान बन जाता है और धीरे-धीरे यही ज्ञान आपको बताया जाता है। पृथ्वी की उत्पत्ति आदि के विषय में बताने वाली पुस्तकों में न उलझें...इनसे आपका मस्तिष्क दूसरी दिशा में चला जाएगा। आप ऐसे ज्ञान की ओर चले जाएंगे जो सम्भवत: ज्ञान है ही नहीं और सोचने लगेंगे, ये बात तो मुझे पता ही नहीं, यह चीज तो मैं जानता ही नहीं हूँ।' आपको जानना ये है कि, 'आप क्या हैं।' आप आत्मा हैं और आपकी सामर्थ्य के अनुसार आत्मा का प्रकाश आपको सब कुछ बताएगा। ये कहना बहुत अच्छी उपमा है कि आप प्रकाश हैं परन्तु जो प्रकाश आप लेकर चल रहे हैं वह साधारण प्रकाश से कहीं अलग है। ये प्रकाश न सोचता है न समझता है। परन्तु जो प्रकाश आप लेकर चल रहे हैं, वह सोचता है, समझता है और आपको उतना ही प्रकाश प्रदान करता है जितनी आपकी सामर्थ्य है। न तो ये चकाचौंध करता है और न ही मद्धम पड़ता है। यह एकदम उतना होगा जितना आप समझ सकते हैं। पूजाओं में कभी-कभी देवी-देवता बहुत अधिक चैतन्य लहरियाँ प्रवाहित कर देते हैं, परन्तु यदि आप इन्हें आत्मसात नहीं कर पाते तो ये मुझे कष्ट देती हैं, आपमें प्रवेश नहीं करतीं। व्यक्ति को ये समझना चाहिए कि इधर-उधर का ज्ञान महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण तो ये है कि आप कहाँ पहुँचे और सहजयोग में आपने कितनी परिपक्वता प्राप्त की।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, बर्लिन, जर्मनी, 27.07.1993)

★ किसी भी मनुष्य को उनसे पैर नहीं छुआने चाहियें, विशेष रूप से सहजयोगियों को ऐसा नहीं करना चाहिए

"...सामान्य व्यक्ति के लिए आप भी गुरु हैं, किसी को अपने पैर न छूने दें। केवल अवतरणों के पैर छुए जाते हैं। भारत में समयाचार के कारण पिता के पैर छूने का रिवाज़ है—परन्तु पिता क्योंकि आपके अन्दर मौजूद पिता का प्रतिनिधि है इसलिए, या माँ, परन्तु ये प्रतीकात्मक हैं। वास्तव में आपको किसी अवतरण के अतिरिक्त, किसी अन्य के सम्मुख समर्पित नहीं होना चाहिए। कला में भी यदि कोई आपका गुरु है तो उसके पैर अवश्य छूने चाहिए, उसका नाम लेने से पहले आपको चाहिए कि अपने कान पकड़ें। परन्तु किसी भी

मनुष्य को उनसे पैर नहीं छुआने चाहिएं, विशेष रूप से सहजयोगियों को ऐसा नहीं करना चाहिए। कोई भी किसी से अपने पैर छूने के लिए न कहे। बड़े होने के कारण बेशक आप पैर छुआ सकते हैं। ये एक अन्य बात है। परन्तु गुरु रूप में नहीं। ऐसा करना बहुत भयानक है। लोग जब ऐसा करने लगते हैं, तो आप जानते हैं कि क्या होता है। वो सहजयोग से बाहर चले जाते हैं।

अतः अपने अन्दर गुरुतत्व जागृत करने के लिए सर्वप्रथम आप स्वयं को पूरी तरह से विकसित करें। अब गुरुतत्व के लिए स्वयं को किस प्रकार विकसित करना है? जैसे मैंने आपको पहले बताया था आपके अन्दर धर्म के दस सिद्धान्त हैं। कल मैंने आपको बताया था कि ध्यानधारणा और समाधि द्वारा जब हम ऋतम्भरा प्रज्ञा का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं तब सभी कुछ भिन्न क्षेत्रों – देश या भूमि – पर डाल देते हैं। इसे आप किस प्रकार प्रसारित करते हैं– मन्त्रों के माध्यम से। प्रतिदिन अपने चित्त के माध्यम से इसे स्वच्छ करें। आपको ज्ञान होना चाहिए कि कौन-सा चक्र स्वच्छ हो गया है। आपको अपने बारे में पता होना चाहिए कि आपके अन्दर क्या समस्या है? इसे स्वच्छ किस प्रकार करना है? किस प्रकार हम इसे साफ करें? इसे अधिकृत रूप से स्वीकार न कर लें।

बहुत से लोगों में, जिन्हें दाईं ओर की समस्यायें होती हैं, उनके लिए आप नींबू और मिर्चे ले आते हैं और सोचते हैं कि 'श्रीमाताजी ने काम कर दिया है' मैं केवल अस्थाई रूप से कार्य कर सकती हूँ। परन्तु यदि रिक्ति (कमी) रह गई तो आप फिर से पकड़ जाएंगे। आपके अन्दर मौजूद रिक्ति की भूख पुनः और अधिक प्राप्त करने के लिए भड़केगी। अतः कमी (बाधा) को निकाल फेंकना आपका काम है और इसके लिए सत्यनिष्ठापूर्वक आपको अपने दोष दूर करने होंगे। आप लोगों के लिए यही बहुत आवश्यक कार्य है। इन सभी भिन्न देशों और राष्ट्रों की ओर पूरा ध्यान देने का प्रयत्न करें। एक बार जब आप शुद्धि कर लेंगे तो सभी कुछ ज्योतिर्मय हो जाएगा। यह उपलब्धि प्राप्त करने पर आप एक ऐसे बिन्दु पर पहुँच जाते हैं जहाँ आप गुरु बन जाते हैं, परन्तु अभी आप सद्गुरु नहीं हैं। आपको वह अतीतावस्था अवश्य प्राप्त करनी होगी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लॉजहिल सेमिनार, इंग्लैण्ड, 24.07.1983)

★ जीवन साथी खोजने के स्थान मानकर अपने आश्रमों तथा ध्यानकेन्द्रों को अपवित्र न करें।

"...हमें उन मर्यादाओं (पावन सम्बन्धों की सीमाओं) के बारे में बात करनी है जिनका पालन सहजयोगियों को करना है।

यहाँ पश्चिम में मैंने एक चीज़ पाई है कि यद्यपि हम मूलाधार के महत्व को समझ गए हैं, जोकि इतना महत्वपूर्ण है कि बिना अपने मूलाधार को पूर्णतः स्थापित किए हम आसानी से

*उत्क्रान्ति प्राप्त नहीं कर सकते, इसके बावजूद भी चहुँ ओर पूर्व संस्कार (*Lingering Things*) दिखाई देते हैं।*

जैसे सहजयोग में लोग अपने जीवनसाथी छाँटना शुरु कर देते हैं। इसकी आज्ञा नहीं है। इसकी आज्ञा नहीं है।

आश्रमों और ध्यानकेन्द्रों का उपयोग जीवन-साथी- खोज समाज के रूप में करके उन्हें अपवित्र न करें। इस बात का सम्मान करें, अवश्य इस बात का सम्मान करें। आपको यदि विवाह करना है तो सहजयोग से बाहर अपना जीवन साथी खोज सकते हैं, परन्तु यदि आप सहजयोग में विवाह करना चाहते हैं तो सहजयोग में अपना जीवनसाथी न खोजते फिरें। ऐसा करना आप लोगों के लिए और सहजयोग के लिए अत्यन्त खतरनाक है। ये एक ऐसी चीज है जो कभी भी सहजयोग में करने का प्रयत्न नहीं किया जाना चाहिए। सभी व्यवहारिक उद्देश्यों के लिए आप बहन-भाई हैं। इसी कारण से मैंने हमेशा भिन्न देशों या भिन्न केन्द्रों के सहजयोगियों के बीच होने वाले विवाहों को प्रोत्साहन दिया।

क्योंकि अब हम बहुत बड़ा विवाह कार्यक्रम कर रहे हैं, मैं कहूँगी कि इस प्रकार से किए गए अधिकतर विवाह स्वयं छांटकर किए गए विवाहों की अपेक्षा कहीं अधिक सफल रहे हैं। स्वयं किसी सहजयोगी से अपना विवाह निश्चित करना अत्यन्त अनुचित है, यह खतरनाक होगा। मैं कुछ कहना नहीं चाहती परन्तु ऐसा करने के परिणाम अच्छे नहीं होंगे क्योंकि यह परमात्मा विरोधी गतिविधि हैं, पूर्णत: परमात्मा विरोधी। आपसे आशा की जाती है कि अपने ब्रह्मचर्य को विकसित करें, अपने मूलाधार को विकसित करें। इसकी अपेक्षा यदि आप किसी सहजयोगिनी या सहजयोगी का उपयोग जीवन साथी चुनने के लिए करने लगेंगे तो यह अत्यन्त-अत्यन्त कष्टकर होगा। आपका मूलाधार कभी भी स्थापित न हो पाएगा। आपकी उत्क्रान्ति के लिए यह एक भयानक झटका होगा।

जिस प्रकार की पृष्ठभूमि और पूर्व संस्कार आपको मिले उनके कारण ध्यान केन्द्रों की पावनता को बनाए रखने के महत्व को आप नहीं समझते।

*अत: एक ही नगर में इस प्रकार के सम्बन्ध बनाना अत्यन्त-अत्यन्त गलत चीज़ है। यह सभी को बिगाड़ते हैं। लोगों को ये आदत है, मैंने सुना है, कि वो यह कहकर छेड़ने का प्रयत्न करते हैं कि साथ-साथ तुम बहुत अच्छे लगते हो, "बहुत अच्छी जोड़ी है", ऐसा कहना समस्या को बढ़ावा देना है। लोग छेड़ते हैं और मज़ा लेते हैं। यह मूलाधार का अत्यन्त विकृत आनन्द है। दूसरों को छेड़ना, "उसके साथ तुम अच्छे लग रहे थे, बेहतर होगा कि तुम उससे विवाह कर लो।" ऐसा कहना एक प्रकार की रोमांचक मूर्खता (*Romantic Nonsense*) है। नि:सन्देह सभी योगियों को ब्रह्मचर्य अपनाना होगा। परन्तु यदि आप ब्रह्मचर्य भी नहीं रख सकते तो मर्यादाएं तो अवश्य बनाए रखनी होगी। यदि विवाह निश्चित नहीं हुआ है तो एक-दूसरे को छेड़कर आनन्द लेना या इस प्रकार की मूर्खता बिल्कुल नहीं करनी चाहिए-विवाह यदि*

निश्चित हो गया है तो ठीक है। इस प्रकार की बातें विवाह के आनन्द को पूर्णतः नष्ट कर देती हैं क्योंकि जरा भी उत्सुकता बाकी नहीं बचती और कई बार तो मैं पाती हूँ कि हास्यास्पद सम्बन्ध स्थापित हो गए हैं!

उनमें से कुछ वास्तव में अच्छे नहीं हैं तथा वो हानिकारक होंगे और कुछ कभी स्थापित ही नहीं होंगे। ऐसे सम्बन्ध यदि स्थापित हो गए तो ये गलत है और यदि नहीं हुए तो ये दुखद है।

तो इस प्रकार का कोई कार्य आपको नहीं करना चाहिए। आपके सम्मुख ऐसे लोगों के उदाहरण हैं जिन्होंने सहज से बाहर विवाह किया और बहुत ही अच्छे लोगों को सहजयोग में लाए। आप यदि ऐसा कर सकते हैं तो करना चाहिए। सहजयोगी से यदि आपने विवाह करना है तो सहजयोग के आदर्शों और पावनता को नष्ट करने की कीमत पर विवाह नहीं करना चाहिए। अपनी ख़ातिर, अपनी खुशी की ख़ातिर आपको सहजयोग का नाम बदनाम नहीं करना चाहिए।

ये एक चीज़ मैंने देखी है। अतः मैं कहूँगी कि आज क्योंकि यह सम्बन्धों की पावनता का दिवस है, हमें ये समझ लेना चाहिए कि हमें परस्पर बहन-भाइयों की तरह से व्यवहार करना चाहिए। कोई ऐसा खिलवाड़ नहीं होना चाहिए। अपना दिमाग इस ओर न भटकने दें क्योंकि यदि आप दिमाग को भटकने देंगे तो इसका कोई अन्त नहीं है। अभी भी आप जानते हैं कि आपको सामान्य स्थिति में वापिस लाना कितना कठिन है।

ईसामसीह ने जब कहा था, "आपकी दृष्टि भी अपवित्र नहीं होनी चाहिए" तो उन्होंने इसलिए नहीं कहा कि क्योंकि यह व्यवहारिक नहीं है। सहजयोगियों के लिए यह बिल्कुल व्यवहारिक है और विवाह के विषय में बहुत अधिक चिन्तित होने की कोई बात नहीं है। इतना अधिक महत्वपूर्ण क्या है? बहुत से लोगों के विवाह हुए उनके साथ क्या हुआ? इन बुरी आदतों के कारण सहजयोग में विवाह करने के बाद भी बहुत से लोग असफल हो गए।

अतः बेहतर होगा कि विवाह से पूर्व आप इन बुरी आदतों से मुक्ति पा लें क्योंकि विवाह के बाद भी ये वैसे ही चलते रहते हैं, लड़के, लड़कियाँ खोजते रहते हैं। विवाह से पूर्व यदि इन आदतों पर काबू नहीं पाया गया तो ये बनी रहती हैं। अतः विवाह से पूर्व व्यक्ति को ये सब चीजें नहीं करनी चाहिएं। मैंने देखा है कि ऐसे विवाह कभी सफल नहीं हुए, कभी भी सफल नहीं हुए।

यदि हुए भी तो यह छलावा मात्र है। इनसे सच्चा आनन्द नहीं मिलता, यह आनन्दविहीन कार्य है। किसी एकआध मामले में हो सकता है सफल हो गया हो, इसका ये मतलब नहीं है कि आप ऐसी कठिन चीजों से सहायता लें। सामान्य विवाह करें जो कि आनन्ददायक होते हैं, जो लोगों में परस्पर स्थायी सम्बन्धसूत्र स्थापित करते हैं।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, हौन्सलो, लन्दन, 11.08.1984)

★ अकर्मण्य ज़िगर के कारण लोगों को सभी प्रकार की तीव्रग्राहिता (Allergy) होती है

"जहाँ तक प्रोटीन का सम्बन्ध है ये लोग इस प्रकार के अत्यधिक असन्तुलित भोजन करते हैं। फिर भी प्रोटीन के मामले में ये लोग इतने दुर्बल हैं कि इन्हें दुर्बलस्नायुरोग हो सकता है। अतः आप देख सकते हैं कि बाईं ओर के लोगों को जुकाम, अतिसार (Diarrheas), आदि रोग हो सकते हैं क्योंकि उनके स्नायु दुर्बल होते हैं। जो भी भोजन वो करते हैं, दस्त के माध्यम से वो बाहर निकल जाता है। उनका हृदय भी अकर्मण्य हो जाता है और उचित ढंग से रक्तप्रवाह नहीं करता, शरीर में सूजन आ जाती है। उन्हें अंगुलियों की सूजन और जोड़ों के दर्द रोग भी हो सकते हैं। अकर्मण्य ज़िगर के कारण ऐसे लोगों को तीव्रग्राहिता (Allergy) भी हो सकती है। सभी प्रकार के तीव्रग्राहिता रोग (Allergy) अकर्मण्य जिगर के कारण होते हैं। अकर्मण्य अवयवों के सभी प्रकार के रोगों का कारण बायें पक्ष को ही माना जाएगा। उदाहरण के रूप में, खुली हुई आँखों से भी व्यक्ति यदि देख नहीं सकता तो वह भी वैसे ही रोग से पीड़ित है।

ये लोग (बाईं ओर के) अवचेतन से प्रभावित होते हैं तथा सामूहिक अवचेतन से, जहाँ से मृत-आत्माएँ उन पर आक्रमण करती हैं और वो इन आत्माओं में लिप्त हो जाते हैं। उनका अपने प्रति अत्यन्त बुरा सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण होता है। वे स्वयं तो दयनीय होते हैं अन्य लोगों को भी दयनीय बनाते हैं क्योंकि उनमें ये धारणाएं इन धूर्त दयनीय लोगों से आती है। वे न तो किसी को खुश देख सकते हैं और न ही स्वयं खुश रह सकते हैं। अपने कष्टों, बीमारियों और समस्याओं का वे बहुत बड़ा हंगामा खड़ा करते हैं और अन्य लोगों के लिए, जहाँ तक सम्भव हो, समस्याएं खड़ी करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु ये समस्याएं आक्रामक दिखाई देने वाली नहीं होती। दूसरों की सहानुभूति तथा दुर्बलता को उनकी ये बातें ठीक प्रतीत होती हैं। ऐसे लोगों के साथ रहने वाला व्यक्ति यदि उनके प्रति सहानुभूति दर्शाने का प्रयत्न करता है तो वह भी इनसे प्रभावित हो सकता है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, जंगपुरा, भारत, 09.02.1983)

★ ये कहना असत्य है कि 'तामसिक' लोग बहुत माँस खाते हैं

"जो लोग कट्टर शाकाहारी हैं, जो लहसुन, प्याज भी नहीं खाते, उन्हें बाईं ओर की समस्याएं हो सकती हैं। सर्वोपरि यदि वे किसी ऐसे गुरु के पास जाते हैं जो तामसिक प्रवृत्ति है तो और भी बुरी बात है। अतः व्यक्ति को असामान्य जीवन नहीं बिताना चाहिए। उसे सामान्य होना चाहिए जो उचित मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स और वसा का उपयोग करे। तो यह सहजयोग का एक पक्ष है जिसमें आप देखते हैं कि बाईं ओर के लोगों को अत्यन्त सावधान होना होगा और उस ओर बहुत अधिक हठधर्मी नहीं करनी चाहिए।

बहुत से लोग आकर मुझसे बहस करते हैं कि गीता में ये लिखा हुआ है-उन्होंने ऐसा कहा

था, मैं नहीं जानती कि तामसिक लोग बहुत अधिक माँस खाते हैं। ये बात सत्य नहीं है, ये सत्य नहीं है। तामसिक लोग किसी भी प्रकार से बुरे लोग नहीं होते-ये बहुत अधिक कार्बोहाइड्रेट्स खाने वाले होते हैं क्योंकि बायाँ पक्ष हाइड्रोजन है और बाईं ओर को कार्बन श्रीगणेश से आता है। अत: उनमें कार्बोहाइड्रेट्स अधिक होते हैं, बहुत अधिक मांसाहार का प्रश्न ही नहीं है।

परन्तु दाईं ओर के लोगों का अत्यधिक, बहुत अधिक गतिशील व्यक्तित्व होता है। इस प्रकार के आक्रामक व्यक्ति बहुत ज्यादा प्रोटीन खाते हैं, हर समय माँस, ये, वो। इस प्रकार का व्यक्ति बहुत अधिक गतिशील हो उठता है जिसे अपने अहं का आशीर्वाद प्राप्त होता है और उसमें बहुत बड़ा अहं, विकसित हो जाता है। ऐसा आक्रामक व्यक्ति अन्य लोगों की, छवि को नष्ट करता है, उन्हें नीचे गिराता है, उनकी आलोचना करता है, उन पर उछलता है, बहुत उग्र स्वभाव और पूर्णत: आसुरी प्रवृत्ति हो सकता है। जैसा मैंने पहले कहा था हिटलर इसका एक उदाहरण है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, जंगपुरा, नई दिल्ली, 09.02.1983)

★ बाईं ओर के लोगों को नमक अधिक खाना चाहिए।

"दाईं ओर के लोगों को लिए चीनी का परामर्श दिया गया है और बाईं ओर के लोगों को नमक का। बाईं ओर के लोगों को चाहिए कि अधिक नमक लें। नमक से वे बहुत-सी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं क्योंकि नमक उन्हें व्यक्तित्व प्रदान करता है, एक आत्मविश्वास दे सकता है जिससे वे गरिमामय ढंग से, अकर्मण्यतापूर्वक नहीं, अपनी अभिव्यक्ति कर सकते हैं। अत: आपके बंधनों, आचरण आदि सभी चीजों की गति मध्य में होनी चाहिए। न तो यह बहुत सुस्त हो और न बहुत अधिक तेज और उत्तेजनामय।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, वैतरणा, महाराष्ट्र, भारत, 18.01.1983)

★ सहजयोगी को सहस्त्रार की पकड़ होना गम्भीर मामला है।

"...सहजयोगी यदि सहस्रार की पकड़ महसूस करता है तो मैं सोचती हूँ कि उसे समुद्र में स्नान करना चाहिए, मैं नहीं जानती कि उसे कहाँ स्नान करना चाहिए? जैसा आप जानते हैं सहस्रार मेरा स्थान है, सहजयोगियों का सहस्त्रार पकड़ना बहुत गम्भीर बात है। हो सकता है कि इसके कारण उसमें एकादश की समस्या खड़ी हो जाए। तब वह बहुत कठिनाई में पड़ जाएगा। तब वह आकर मुझे बताएगा, "श्रीमाताजी, मैं यद्यपि सहजयोगी था, आपकी फोटोग्राफ के सम्मुख बैठकर प्रार्थना करता था, फिर भी मुझे ये परेशानी हो गई है।" कारण ये है कि यदि आप सहजयोगी हैं तो मुझे पहचानना होगा। ये शर्त है। अभी तक आपने किसी को पहचाना नहीं है परन्तु अब 'मुझे' पहचानना होगा। आपमें एकादश की समस्या खड़ी हो जाएगी। मैं आपको बता देती हूँ कि यदि आप ऐसा करने का प्रयत्न करेंगे तो कुण्डलिनी को उठने की आज्ञा देना सम्भव न होगा। अत: जो सहजयोगी अब भी ऐसे हैं और संदेह में फंसे हुए हैं उन्हें सहजयोगी नहीं कहा जाना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो सके उन्हें बाहर रखा जाना चाहिए उन्हें ये बात समझने का

*अवसर दिया जाना चाहिए कि अभी तक वो योग्य नहीं है। उन्हें ये समझने दिया जाना चाहिए, उन्हें ये बात समझने का अवसर दिया जाना चाहिए कि मैंने उन्हें आत्म-साक्षात्कार दिया है किसी और ने नहीं। जैसे एक बार वेणुगोपालन ने मुझे बताया कि "श्री कृष्ण ने मुझे आत्म-साक्षात्कार नहीं दिया, श्री राम ने मुझे आत्म-साक्षात्कार नहीं दिया, श्री गणेश ने मुझे आत्म-साक्षात्कार नहीं दिया, शिव ने मुझे आत्म-साक्षात्कार नहीं दिया, पार्वती ने भी कभी मुझे आत्म-साक्षात्कार नहीं दिया, आदिशक्ति ने भी मुझे आत्म-साक्षात्कार नहीं दिया, मुझे केवल श्रीमाताजी निर्मलादेवी ने आत्म-साक्षात्कार दिया। मैं केवल उन्हें जानता हूँ।" जब तक आप इस बात को नहीं समझ लेते, ये सब—राम, शिव, ब्रह्मदेव, विष्णु सभी देवी-देवता—आपसे नाराज हो जाएंगे क्योंकि उन्हें समझ नहीं आएगा। आपको आत्म-साक्षात्कार मिल गया है फिर भी आप नकार रहे हैं, इसका अर्थ ये है कि आपमें कुछ गड़बड़ है। मस्तिष्क की पूरी सतह (*Plate of the Brain*) ढकी जा सकती है (प्रभावित हो सकती है) जिसके कारण आपमें एकादश की समस्या खड़ी हो सकती है। यह अन्त का आरम्भ है।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, जंगपुरा, दिल्ली, 09.02.1983)

★ ...तकनीक की चिन्ता छोड़कर सहजता (Spontaneity) की अधिक चिन्ता करें

*सहजयोगियों के साथ समस्या ये है कि ये सब पहले से ही तकनीक कुशल (*Technocrats*) हैं। तकनीक का उन्होंने इतना उपयोग कर लिया है कि बेहतर होगा कि अब वे तकनीक का उपयोग भुलाकर सहजता की चिन्ता करें।*

तकनीक इतनी ज्यादा है कि तकनीक ने सहजता का वध कर दिया है। अत: तकनीक और सहजता के बीच सन्तुलन स्थापित किया जाना चाहिए।

'पहले सहजतापूर्वक आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करें। तब आपको...तकनीक, तन्त्र और शिल्प प्राप्त करना होगा।'

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लोनावाला, महाराष्ट्र, भारत, 25.01.1982)

★ अहं केवल एक ही है—सर्वशक्तिमान परमात्मा, महत अहंकार

"वास्तव में जब आप अपनी दृष्टि इधर-उधर घुमाते हैं, आपका चित्त जब इधर-उधर होता है उस समय कुछ और नहीं होता, उस समय आपका अहं आपको काबू करने में लगा होता है। परन्तु वास्तव में अहं पूर्णत: असत्य है क्योंकि अहं तो केवल एक है—सर्वशक्तिमान परमात्मा, महत् अहंकार। इसके अतिरिक्त किसी अन्य अहं का कोई अस्तित्व नहीं, बाकी सब मिथ्या है। यदि आप सोचने लगें कि आप ही सब कुछ कर रहे हैं—ये कर रहे हैं, वो कर रहे हैं—तो यह मिथ्या है, क्योंकि आप वो कार्य नहीं कर रहे। यह धूर्त अहं आ जाता है और आप इसे कार्यान्वित करने लगते हैं। यह हर दिशा में प्रक्षेपित हो सकता है। जब यह सामने की ओर

प्रक्षेपित होता है तो दूसरों को नियंत्रित करता है, दूसरों पर रोब जमाने का प्रयत्न करता है, उनका वध करने का प्रयत्न करता है और हिटलर बन जाता है। जब वह दाईं ओर को जाता है तो अति चेतन (Supraconscious) बन जाता है। तब यह हास्यास्पद, मूर्खतापूर्ण और नासमझी से भरी हुई चीजें देखने लगता है। बाईं ओर को जब ये जाता है तो व्यक्ति स्वयं को बहुत बड़ा आदमी मान लेता है जैसे बहुत बड़ा ईसामसीह, बहुत बड़ी देवी या आदिगुरु की तरह से और कहता है कि मैं 'महान व्यक्ति' हूँ, यह बायां पक्ष है। पीछे की ओर जब ये जाता है तो और भी भयानक होता है। तब लोग गुरु बन बैठते हैं जो साधकों को नष्ट कर रहे हैं। उनका अहं जब पीछे की ओर जाता है तो वे गुरु बन बैठते हैं। उनके अपने अंदर बहुत से दोष होते हैं और वो अन्य लोगों को पूर्ण नर्क की ओर खींचने का प्रयत्न करते हैं। अहं का चहुँ ओर प्रसार ही नर्क है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी विएना, 04.09.1983)

★ ...आत्म साक्षात्कार के बावजूद भी व्यक्ति को चैतन्य लहरियाँ महसूस नहीं होतीं

"कुण्डलिनी बहुत से तन्तुओं वाली रस्सी है, अपने कुण्डलों को खोलती हुई हर चक्र का भेदन करके यह उठती है। ऊपर के चक्र यदि खुले न हों, या इनके अन्दर का मार्ग यदि अवरोधित हो तो कुण्डलिनी की मोटाई और इसके तन्तु कम होते चले जाते हैं। नीचे के चक्र यदि खुले हों तो पूरी कुण्डलिनी उठती है परन्तु ऊपर के चक्र यदि खुले न हों तो इस अवरुद्ध मार्ग से कुण्डलिनी के थोड़े से ही तन्तु गुज़र सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि कम से कम नीचे के चक्र तो अवश्य खुले हों। पश्चिमी मस्तिष्क के ऊपर के चक्रों की दशा बेहतर होती है परन्तु उनके मूलाधार की दशा इतनी खराब है कि शक्ति बहुत दुर्बल होती है और उनमें संवेदना भी बहुत कम होती है।

कुण्डलिनी जब निर्बाध उठती है तो आज्ञा पर पहुँचकर यह मस्तिष्क के निचले तल पर बादल की तरह से फैल जाती है और परिणामस्वरूप मस्तिष्क में भारीपन या नींद का एहसास होने लगता है। मैं कहती हूँ कि सर्वप्रथम माँ आपको सुला देती हैं। यह तेजस्वी शक्ति जब ईड़ा और पिंगला में द्रवीभूत होती हैं तब ऐसा प्रतीत होता है मानों यह तेजस्वी शक्ति आशीष वर्षा करने लगती हो! धीरे-धीरे ऐसे लगता है जैसे सिर का ढक्कन हटा लिया गया हो! अत्यन्त शान्ति का एहसास होता हैं। ये दोनों वाहिकाएं (ईड़ा और पिंगला) पुनः कुण्डलिनी को नीचे नाभि तक ले जाती हैं और कुण्डलिनी की नई शक्ति इसके साथ मिल जाती है। तब तिहरी शक्ति उठती है और आज्ञा को खोलती है। इस समय आँखें बन्द हो जाती हैं, पुतलियाँ फैलने लगती हैं।

अब साधक का सिर पहले से स्वच्छ (हल्का) होने लगता है। परन्तु कुछ लोगों को सहस्रार पर थोड़ा सा तनाव या धड़कन महसूस होती है। आज्ञा पार करने की स्थिति निर्विचार

चेतना का सृजन करती है। आपको सहस्रार की शान्ति महसूस होती है। सहस्रार पर कुण्डलिनी एकत्र होती है। ब्रह्मरन्ध्र के खुलने पर एक प्रकार का प्रसार होने लगता है। कुछ साधकों में यह शनैः-शनै होता है परन्तु अधिकतर लोगों में यह तेजी से फूटता है। उस क्षण साधक को चैतन्य लहरियों की शीतल वायु का अनुभव होता है। यह आत्म-साक्षात्कार है। बहुत से लोगों को जागृति मिल गई है और उन्हें रोगमुक्त करने की शक्ति भी प्राप्त हो गई है परन्तु वे निर्विचार चेतना में नहीं रह सकते। एक आध मिनट के लिए वे इस स्थिति को छू पाते हैं। परन्तु समय के साथ कुण्डलिनी के बाहर प्रवाहित होने की प्रक्रिया कार्यान्वित होती है और अन्ततः वे निर्विकल्प समाधि की अवस्था पर पहुँच जाते हैं।

श्रीमान 'क' जैसे कई लोगों को तुरन्त स्थायी उत्क्रान्ति प्राप्त हो गई, उन्हें ऐसे लगा जैसे बर्फ के दो टुकड़े उनके हाथ पर रखे हों और बर्फ पिघलने लगी हो! ठण्डक उनके पूरे शरीर में प्रवाहित होने लगी। विशुद्धि यदि सन्देहपूर्ण, बहुत फैली हुई या अवरुद्ध हो, तब व्यक्ति को आत्म-साक्षात्कार के बाद भी चैतन्य लहरियाँ महसूस नहीं होतीं अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र के भेदन के बाद भी। सामूहिक चेतना का अनुभव ब्रह्मरन्ध्र के पूरी तरह से भेदन से पहले भी हो सकता है। उंगलियों पर जलन का एहसास होने लगता है तथा सामूहिक चेतन की विवेकमय शैली की अभिव्यक्ति भी हो सकती है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 02.09.1977)

★ मेरा फोटो बहुत मंगलमय है

*'सौन्दर्य और मंगलमयता' साथ-साथ चलते हैं। ये दो चीजें नहीं हैं क्योंकि सौन्दर्य ऐसी चीज़ है जो आपकी आत्मा को आनन्द प्रदान करती है। 'मंगलमयता' भी आपकी आत्मा को आनन्द प्रदान करती है, बाकी कोई सौन्दर्य, सौन्दर्य नहीं है। अतः सहजयोगी के लिए आवश्यक है कि ऐसे पदार्थों का उपयोग करें जो मंगलमय हों। मंगलमय पदार्थ, चाहे जो भी हो अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और उन्हें हमेशा उच्च स्तर पर रखा जाना चाहिए। उदाहरण के रूप में, मेरे फोटोग्राफ अत्यन्त मंगलमय हैं अतः इन्हें जमीन पर न रखें और न ही इनके ऊपर पैर रखें। इसमें भी मंगलमयता का श्रेणीकरण (*Gradation*) है।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, यू.के., 27.09.1980)

★ मेरे चरण आपको अपने हृदय में स्थापित करने होंगे

"आप जो भी करें मुझे प्रसन्न करने के लिए करें...तो कैसे हम ये कार्य करते हैं? अपने हृदय में मुझे स्थापित करें। अपने हृदय में मुझे स्थापित करने का प्रयत्न करें। यह बहुत सहज है। मैं साक्षात् आपके सामने हूँ, साकार रूप में। आज ही मैं अपने एक सम्बन्धी को आत्म-साक्षात्कार दे रही थी। मैंने उसको कहा, "अपनी आँखे बन्द मत कीजिए।"

वह कहने लगा, "नहीं, मैं आपके मुखारबिन्द को नहीं देख रहा हूँ, क्योंकि जब मैं आपको

देखता हूँ तो मुझे लगता है आप मेरी आण्टी हैं। मैं केवल आपके चरणों को देख रहा हूँ ताकि मुझे ये न लगे कि आप मेरी आण्टी हैं। आप बहुत महान् हैं। आपका मुख तो मुझे भ्रम में डाल देता है।"

वो देख पाया कि ये महामाया हैं। कहने लगा, "मैं केवल आपके चरण कमलों को देखूंगा और आपके चरण कमलों के माध्यम से ही इस बाधा को पार करूंगा।"

इसी प्रकार से जब मैं महामाया हूँ, मैं इस बात को जानती हूँ कि मैं हूँ, मुझे महामाया बनना पड़ा। आपको मेरे चरण अपने हृदय में स्थापित करने होंगे, केवल मेरे चरण कमल अपने हृदय में स्थापित करने होंगे। केवल मेरे चरण कमल अपने हृदय में स्थापित करें क्योंकि मेरा फोटो, मुखारबिन्द सभी कुछ भ्रम हो सकता है। ऐसा हो सकता है। मेरा मुख देखकर हो सकता है कि आप बाधाओं को पार न कर पाएं। ये कहना, "मैं अवश्य श्रीमाताजी से मिलूँगा, मुझे ये कार्य करना ही चाहिए, श्रीमाताजी को अवश्य मेरे घर आना चाहिए, उन्हें मेरे घर भोजन करना चाहिए, अवश्य मेरे घर आना चाहिए—ये सब मूर्खता है। मैं नहीं समझ पाती कि लोगों में क्या समस्या है?"

"श्रीमाताजी कृपा करके मेरे हृदय में आइए। मेरा हृदय स्वच्छ कीजिए ताकि आप वहाँ आ सकें। अपने चरण कमल मेरे हृदय में स्थापित करें। अपने चरणकमलों की पूजा मेरे हृदय में होने दें। मुझे भ्रम में न फँसे रहने दें। भ्रम से मुझे मुक्त करें। सत्य में मुझे बनाए रखें। बनावटीपन की चमकदमक को दूर कर दें। मुझे क्षेम दें कि मैं अपने हृदय में आपके चरणकमलों का आनन्द उठा सकूँ, आपके चरण कमलों के दर्शन मैं अपने हृदय में कर सकूं।"

ब्रह्मा, विष्णु और महेश जैसे देवताओं ने भी ऐसा ही किया है। अतः क्या आप नहीं सोचते कि आपको भी ऐसा ही करना चाहिए? अतः विनम्र बनें। अपने हृदय में विनम्र बनें, हृदय में विनम्रता लाएं। अपनी विनम्रता का आनन्द लें, अपने सद्‌गुणों का आनन्द लें। सहजयोगी का महानतम गुण विनम्रता है।

आपको विश्वस्त करने के लिए, आपने देखा है कि, बहुत-से कार्य किए गए हैं, परन्तु इसका अर्थ किसी प्रकार की दासता नहीं है। क्योंकि किस प्रकार आप मुझे दासता दे सकते हैं? इस बारे में सोचें। हर दासता जब आशीष हो तो आप क्या दासता दे रहे हैं? हृदय की हर भावना आशीष है। महसूस करें और एकदम से इसका आनन्द उठाएं, अपने हृदय में। तो इस बारे में आपकी दासता क्या हो सकती है? उन लोगों की बात तो मैं समझ सकती हूँ जो नए-नए आए हैं या जो बेकार हैं परन्तु आप लोग तो परिधि रेखा पर नहीं हैं। परन्तु कुछ लोग थोड़े से समय में ही परिधि रेखा पर चले जाते हैं! इन्हें कोई काम दे दीजिए-समाप्त। कहने से अभिप्राय है कि ये ज्यादती है। मैं आपके साथ सुहृद (Nice) भी नहीं हो सकती!"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, लन्दन, 23.09.1984)

★ **मैं आपके अवचेतन (Subconscious) में प्रवेश कर सकती हूँ, आपके सामूहिक अवचेतन (Collective Subsonscious) में, आपके अतिचेतन (Supraconscious) में, सभी क्षेत्रों में।**

"जब आप ठीक प्रकार से परिपक्व हो जाते हैं, तब पाँचवीं अवस्था में कूद पड़ते हैं। वहाँ न तो आप कोई चीज़ निश्चित करते हैं, न ही आप कुछ कहते हैं। जो भी कुछ आपके मुँह से निकल जाता है या नहीं भी निकलता, वह कार्यान्वित हो जाता है। यह अवस्था है। यहीं बैठे हुए अब आप सारी स्थिति को सम्भालते हैं। यहीं बैठे हुए आप एक-दूसरे के चक्रों को जानते हैं। आप केवल इसमें कुशलता ही नहीं प्राप्त करते परन्तु उसमें प्रवेश भी कर सकते हैं। उदाहरण के रूप में, मैं आपको बताती हूँ कि मैं यदि चाहूँ तो आपके अवचेतन में, सामूहिक अवचेतन में, आपके अतिचेतन में तथा आपके अन्य सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर सकती हूँ। ऐसा तभी होता है जब आप इस पर पूर्ण स्वामित्व प्राप्त कर लें। इनके अन्दर आप तभी प्रवेश कर सकते हैं जब आपको इस पर स्वामित्व प्राप्त हो जाए। घर के स्वामी यदि आप बन जाएं तब इच्छा से इसमें प्रवेश कर सकते हैं। तब आप सातवीं अवस्था में प्रवेश कर जाते हैं और वह अवस्था ऐसी है जहाँ बस आप हैं। आपका वहाँ होना काफी है। वहाँ होना मात्र, अन्य किसी चीज़ का अस्तित्व नहीं है, आप केवल अपने लिए हैं। इन सातों अवस्थाओं पर आप पहुँच सकते हैं, क्योंकि मैं इनसे भी ऊपर हूँ और नीचे पहली अवस्था पर आई हूँ तथा आपको ऊपर खींचने का प्रयत्न कर रही हूँ। यदि आपने मुझे नीचे न खींच लिया तो मैं आपको बहुत ऊँचाई तक खींच सकती हूँ। अत: मेरी प्रार्थना है कि मुझे नीचे की ओर न खींचे। 'बनने' का कार्य इस प्रकार होगा। यह आधार है, 'मूलढाँचा'। परन्तु आपको बीच में सुन्दर-सुन्दर चीजों का एहसास होता है और सभी चीज़ों को पुन: ठीक ढंग से लगाया जा सकता है। परन्तु यह 'बनने' (उत्क्रान्ति) का मूलढाँचा है। किसी भी अवस्था में स्वयं को बाँधने का प्रयत्न न करें क्योंकि जो लोग अभी तक इसके विषय में सोच रहे हैं उनके साथ ये आम बात है। अत: श्रीमाताजी, मैं किस अवस्था पर हूँ?" जब आप स्वयं उन्नत होंगे या बढ़ेंगे तो ये आम बात है, आपके साथ ऐसा घटित होगा। आपको कुछ निश्चित नहीं करना पड़ेगा, ऐसा आपके साथ घटित होना चाहिए।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, ओल्ड अलरेसफोर्ड, इंग्लैण्ड, 18.05.1980)

★ **...जब वे दाएं को जाते हैं तो अतिचेतन क्षेत्र में चले जाते हैं।**

यह अत्यन्त संकीण मार्ग है जिसके अन्दर से प्राय: चित्त नहीं गुजर सकता, यह असम्भव कार्य है। ये संकीर्ण मार्ग है जिसके अन्दर अहं तथा प्रतिअहं स्थापित हैं और एक-दूसरे को पार (Cross) करते हैं। इनके बीच में कुण्डलिनी के गुज़रने के लिए कोई स्थान नहीं रहता। प्रतिअहं और अहं वापिस जाते हैं, नीचे की ओर जाते हैं और विशुद्धि चक्र पर आकर इसके चहुँ ओर घूमकर उसी दिशा में चले जाते हैं। अत: आप देखते हैं कि ये इस स्थान पर आते हैं, यहाँ से चलते हैं और आज्ञा चक्र तक जाकर परस्पर एक-दूसरे को पार करते हैं।

परन्तु यहाँ पर ये एक ही दिशा में जाते हैं और आज्ञा चक्र पर एक-दूसरे को पार करके विपरीत दिशा में चले जाते हैं। अतः यदि आपको बाईं ओर की समस्या है तो इसके परिणाम आपको दाईं ओर महसूस होंगे। परन्तु दाईं ओर यहाँ शुरु होती है, यहाँ तक और बाईं ओर यहाँ पर आरम्भ होती है। परन्तु बाईं ओर वास्तव में, दाएं, पक्ष पर कार्य करती है।

*अतः इस तीसरी आँख का भेदन करना होगा या कुण्डलिनी जागृति के माध्यम से इसमें प्रवेश करना होगा। परन्तु तालूक्षेत्र, जो कि परमात्मा का साम्राज्य है, का द्वार इतना संकीर्ण है कि कोई भी व्यक्ति इस संकीर्ण द्वार से जब अपना चित्त इसके अन्दर धकेलने का प्रयत्न करता है तो वह या तो बाएं को चला जाता है या दाएं को। और जिन लोगों को इस बात का ज्ञान नहीं है कि जरूरी नहीं कि अज्ञात चीज़ परमात्मा हो या दिव्य हो, उन लोगों के लिए यह कष्ट की शुरुआत होती है। अतः जब वे दाईं ओर (*Right side*) को चले जाते हैं तो अतिचेतन (*Supra-Conscious*) क्षेत्र में पहुँच जाते हैं और मतिभ्रम (*Hallucination*) के शिकार हो जाते हैं। वास्तव में ये मतिभ्रम नहीं होता क्योंकि दाईं ओर इन सभी चीजों का अस्तित्व है। तो वे दाईं ओर की चीजें, देखने लगते हैं। उन्हें रंग, और रंगों की बनावट दिखाई दे सकती है, वो ऐसे मृत लोगों को देख सकते हैं जो बहुत ही अहंकारी थे। वे गंधर्वों और किन्नरों को देख सकते हैं क्योंकि वे दाईं ओर, गंधर्व लोक जाते हैं तथा अतिचेतन की अन्जानी चेतनता में वो चीज़ें देखने लगते हैं। परन्तु यह गतिविधि अत्यन्त भयानक है, क्योंकि वहाँ पर यदि कोई आपको पकड़ ले तो एक अन्य व्यक्ति आपके सिर पर सवार हो जाएगा और आप अहं के वशीभूत होकर स्वयं अपनेआप, सांघातिक (*Malignant*) हो जाएंगे।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत, 03.02.1983)

★ बायाँ और दायाँ अनुकम्पी नाड़ी तन्त्र, मध्य नाड़ी तन्त्र से बहुत ज्यादा ऊर्जा लेना शुरु कर देता है।

*अतः वे सभी लोग जो ये कहते हैं कि कुण्डलिनी की जागृति बहुत कठिन है और बहुत हानिकारक है, ये वो लोग है जिन्हें कुण्डलिनी जागृत करने का कोई अधिकार नहीं है। ये लोग जब चालाकियाँ करने लगते हैं तो उनका अनुकम्पी नाड़ी तन्त्र (*Sympathetic Nervous System*) बहुत ज्यादा उत्तेजित हो जाता है तथा बाईं और दाईं ओर ये अनुकम्पी प्रणाली, मध्यमार्ग (पराअनुकम्पी) से बहुत अधिक ऊर्जा खींचने लगती है। यह इतनी अधिक ऊर्जा खींचती है कि परानुकम्पी (*Central Path*) की ऊर्जा समाप्त होने लगती है और ऐसा व्यक्ति वास्तव में विक्षिप्त हो जाता है। अतः बहुत से लोग जो ये कहते हैं कि हम इस विधि से या उस विधि से कुण्डलिनी जागृत कर रहे हैं, वे साधकों के जीवन नष्ट करते हैं। अन्ततः साधक बिना कुछ प्राप्त किए, निःसहाय छोड़ दिया जाता है। (साधक) नहीं जानते कि प्राप्त क्या करना है और पाना क्या है? इस प्रकार वे पथ भ्रष्ट हो जाते हैं।*

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत, 03.02.1983)

★ **आपको अपना सिर ढकने का प्रयत्न करना चाहिए।**

सहस्रार की देखभाल करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि आप सर्दियों में अपना सिर ढकें। सर्दियों में सिर ढकना अच्छा है ताकि मस्तिष्क ठण्ड से ना जमे, क्योंकि मस्तिष्क भी मेधा (Fat) का बना होता है। और फिर मस्तिष्क को बहुत ज्यादा गर्मी से भी बचाना चाहिए। अपने मस्तिष्क को ठीक रखने के लिए, आपको हर समय धूप में ही नहीं बैठे रहना चाहिए, जैसा कि कुछ पाश्चात्य लोग करते हैं। उससे आपका मस्तिष्क पिघल जाता है और आप एक सनकी मनुष्य बन जाते हैं, जो इस बात का संकेत है कि आपके कुछ समय बाद पागल होने की सम्भावना है। अगर आप धूप में भी बैठें तो अपना सिर ढके रखें। सिर ढकना बहुत आवश्यक है। लेकिन सिर को कभी-कभी ढकना चाहिए, हमेशा नहीं। क्योंकि अगर आप हमेशा ही सिर पर एक भारी पट्टा बांधे रहें तो रक्त का संचार ठीक प्रकार से नहीं होगा और आपके रक्त संचार में तकलीफ होगी। अतः केवल कभी-कभी (हमेशा नहीं) सिर को सूर्य अथवा चन्द्रमा के प्रकाश में खुला रखना उचित है। यदि आप चांद के प्रकाश में अत्यधिक बैठे तो पागल खाने, पहुँच जाएंगे। मैं जो भी कुछ बताती हूँ, आपको समझना चाहिए कि सहजयोग में किसी भी चीज़ में 'अति' न करें।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, हनुमान रोड, दिल्ली, 04.02.1983)

★ **इसका अर्थ ये नहीं है कि चश्मा लगाने के कारण आप अपवित्र या अनुचित व्यक्ति बन गए हैं?**

अब आज्ञा चक्र किस कारण से खराब होता है वह देखते हैं। आज्ञा चक्र खराब होने का मुख्य कारण आँखें हैं। मनुष्य को अपनी आंखों का बहुत ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि उनका बड़ा महत्व है। अनाधिकृत गुरु के सामने झुकने अथवा उनके चरणों में अपना माथा टेकने से भी आज्ञा चक्र खराब हो जाता है। इसी कारण जीसस ख्रिस्त ने अपना माथा चाहे जिस आदमी या स्थान के सामने झुकाने को मना किया है। ऐसा करने से हमने जो कुछ पाया है वह सब नष्ट हो जाता है। केवल परमेश्वरी अवतार के आगे ही अपना माथा टेकना चाहिए। दूसरे किसी भी व्यक्ति के आगे अपना माथे को झुकाना ठीक नहीं है। किसी गलत स्थान के सम्मुख भी अपना माथा नहीं झुकाना चाहिए। ये बात बहुत ही महत्वपूर्ण है। आपने अपना माथा गलत जगह पर या गलत आदमी के सामने झुकाया तो तुरन्त आपका आज्ञा चक्र पकड़ा जाएगा। सहजयोग में हमें दिखाई देता है, आजकल बहुत ही लोगों के आज्ञा चक्र खराब हैं। इसका कारण है लोग गलत जगह माथा टेकते हैं या गलत गुरु को मानते हैं। आंखों के अनेक रोग इसी कारण से होते हैं।

ये चक्र स्वच्छ रखने के लिए मनुष्य को हमेशा अच्छे पवित्र धर्म ग्रन्थ पढ़ना चाहिए। अपवित्र साहित्य बिल्कुल नहीं पढ़ना चाहिए। बहुत से लोग कहते हैं, "इसमें क्या हुआ? हमारा तो काम ही इस ढंग का है कि हमें ऐसे अनेक काम करने पड़ते हैं जो पूर्णतः सही नहीं

हैं।" परन्तु ऐसे अपवित्र कार्यों के कारण आंखें खराब हो जाती हैं। मेरी ये समझ में नहीं आता कि जो बातें खराब हैं वह मनुष्य क्यों करता है? किसी अपवित्र व गन्दे मनुष्य को देखने से भी आज्ञा चक्र खराब हो सकता है। श्री ख्रिस्त ने बहुत ही जोर से कहा था कि, आप व्यभिचार मत कीजिए। परन्तु मैं आपसे कहती हूँ कि आप की नजर भी व्यभिचारी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने इतने बलपूर्वक कहा था कि आपकी अगर नज़र अपवित्र होगी तो आपको आँखों की तकलीफें होंगी। इसका मतलब ये नहीं कि अगर आप चश्मा पहनते हैं तो आप गलत व्यक्ति हैं। किसी एक उम्र के बाद चश्मा लगाना पड़ता है। ये जीवन की आवश्यकता है। परन्तु आंखें खराब होती हैं अपनी नजर स्थिर न रखने के कारण। बहुत लोगों का चित्त बार-बार इधर-उधर दौड़ता रहता है। ऐसे लोगों को समझ नहीं कि अपनी आँखें इस प्रकार इधर-उधर घुमाने के कारण ये खराब होती हैं। आज्ञा चक्र खराब होने का दूसरा कारण है मनुष्य की कार्य पद्धति। समझ लीजिए आप बहुत काम करते हैं, अति कर्मी हैं। अच्छे काम करते हैं, कोई भी बुरा काम नहीं करते। परन्तु ऐसी अति कार्यशीलता की वजह से, फिर वह अति पढ़ना हो, अति सिलाई हो या अति अध्ययन हो या अति विचारशीलता हो। इसका कारण है कि जिस समय आप अति कार्य करते हैं उस समय आप परमात्मा को भूल जाते हैं। उस समय अपने में ईश्वर प्रणिधान स्थित नहीं होता।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, मुम्बई, भारत, 27.09.1979)

★ अपने कंधे बहुत अधिक न हिलाएं

संगीत गाते हुए आप अपने शरीर के ऊपर का पूरा हिस्सा हिला सकते हैं। ये ठीक हैं, परन्तु अपने कंधे नहीं हिलाने। ये बात व्यक्ति को समझनी है कि इन दोनों चक्रों की देखभाल की जानी चाहिए। भजन गाते हुए आप अपनी गर्दन हिला सकते हैं, शरीर हिला सकते हैं। ये बात बहुत महत्वपूर्ण है। इससे मदद मिलती है। परन्तु कंधे नहीं हिला सकते हैं। कंधों को ठीक से बनाए रखना होगा। परन्तु "हाँ" कहते हुए आप हाँ, हाँ, हाँ, हाँ न कहते चले जाइए। ये बहुत ही साधारण बात है परन्तु इसका बहुत बुरा प्रभाव होता है और जो अपने कंधे बहुत अधिक हिलाते हैं उन्हें चैतन्य लहरियों का एहसास ठीक से नहीं होता, क्योंकि चक्र ठीक नहीं हैं। यह समझने योग्य साधारण सी बात है कि हमारे ये चक्र महत्वपूर्णतम हैं और परम चैतन्य का जो भी उपयोग होता है इन्हीं दो चक्रों के माध्यम से होता है।

मान लो आपकी रीढ़ पर कोई चक्र पकड़ भी रहा है तो आपने अपने हाथों का उपयोग करना है। कोई व्यक्ति कह सकता है, "मैं केवल अपना चित्त डाल सकता हूँ।" इस प्रकार इतना अच्छा कार्यान्वयन न होगा क्योंकि आपका चित्त अभी तक उस अवस्था तक नहीं पहुँचा है जहाँ ये 'ललिता' चक्र और 'श्री' चक्र आपके चित्त के आदेशों का पालन करें। वो ऐसा नहीं करते। अत: आपको अपने हाथों से कार्यान्वित करना पड़ता है। सावधान रहें, अपने कंधे बहुत अधिक न हिलाएं। भारतीय लोगों को देखें, जब वे भजन गाते हैं तो उनका पूरा शरीर हिलता

है। वो ऐसे-ऐसे करेंगे, परन्तु कभी अपने कंधे नहीं हिलाएंगे। जिस प्रकार गर्दन हिलती है वैसे ही कंधे भी हिलते हैं। वो अपनी गर्दन हिला सकते हैं परन्तु अपने कंधे कभी नहीं हिला सकते और भारतीय स्तर के अनुरूप इसे अशुभ माना जाता है। इस संस्कृति के कारण, जिसके विषय में सन्तों ने और पैगम्बरों ने बताया है, वे भौतिक जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन से अधिक जुड़े हुए हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, ब्रह्मपुरी, भारत, 17.12.1990)

★ आपके चक्रों का खेल (लीला) होना है और इसी कारण से आपको अपने हाथों की शक्ति का उपयोग करना होगा

*"बिना आत्म साक्षात्कार प्राप्त किए भी ये दोनों शक्तियाँ हमें बहुत से लाभ पहुँचाती हैं। इस संसार में सृजित जो भी कुछ आप देखते हैं, इसका सृजन आदिशक्ति के इन दोनों चक्रों द्वारा किया गया है परन्तु मानव में यह शक्ति गतिशील होने लगती है और जब ये गतिशील होने लगती है तब हम कह सकते हैं कि यह अन्य विश्व का सृजन कर रही हैं। परन्तु केवल यही गतिविधि नहीं है। यह शक्ति कार्य करती है, सद्बुद्धि प्रदान करती है और वो सभी चीजें देती है जो मानव के रूप में आपको प्राप्त हैं। बाद में ये शक्ति स्वयं आपके अन्दर ज्योतिर्मय हो उठती है अर्थात् बायाँ और दायाँ दोनों पक्ष ज्योतिर्मय हो जाते हैं। यह प्रबुद्धता (*Enlightenment*) आपको तब मिलती है जब आप आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करते हैं। परन्तु तुरन्त नहीं। तुरन्त नहीं। ये बात व्यक्ति को समझ लेनी चाहिए।*

उदाहरण के रूप में, यदि आपको पीड़ा है या आपके चक्र पकड़ रहे हैं तो आपको हाथों का उपयोग करना होगा। आप ये नहीं कह सकते कि "शक्ति मेरे अन्दर प्रवाहित हो रही है तो ठीक है। मैं संचालन कर सकता हूँ।" ऐसा नहीं है। वह शक्ति स्वयं को या अन्य लोगों को देने के लिए आपको अपने हाथ इस्तेमाल करने होंगे। मान लो आपके पेट में दर्द है तो आप कह सकते हैं कि, "यदि मेरे पेट में शक्ति है तो मुझे पेट में पीड़ा क्यों होनी चाहिए?" परन्तु इन चक्रों का खेल (लीला) होना है और इस कारण से आपको अपने हाथों की शक्ति का उपयोग करना होगा। हाथों का उपयोग किए बिना आप ये शक्ति प्रदान नहीं कर सकते।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, ब्रह्मपुरी, भारत 17.12.1990)

★ मन्त्र यदि आपके चक्रों को नहीं खोलते तो ये अर्थहीन हैं

"जो लोग सोचते हैं कि सुबह से शाम तक मन्त्र रटने से उन्हें बहुत उपलब्धि प्राप्त हो जाएगी तो वे भयंकर गलती पर हैं। ये सब तो मशीनवत किया गया है। बहुत से लोगों में हर वक्त जोर-जोर से मन्त्र बोलने की आदत होती है। ये आदत सही नहीं है। मन्त्रों से आपके चक्र खुलने चाहिएं अन्यथा मन्त्र अर्थहीन हैं। अत्यन्त सम्मान और सूझ-बूझ के साथ मुख्य बिन्दुओं पर इनका उपयोग किया जाना चाहिए और फिर इन्हें चक्रों को खोलने का अवसर देना चाहिए। इस प्रकार से आप महान् शक्ति कुण्डलिनी के अमृतजल को अपने अन्दर आत्मसात करते हैं।

उन्हीं (कुण्डलिनी) के प्रेम के माध्यम से ही ये महानतम आशीर्वाद आप तक पहुँचेगा—जिस प्रकार लोग समझ रहे हैं वैसे नहीं-इस प्रकार अन्तर्परिवर्तन नहीं होगा। आप यदि अपने अहं से एकरूप हैं और सोचते हैं कि मैं ठीक हूँ तो आप बहुत बड़ी गलती पर हैं। आपको अपने अन्दर पूर्णत: परिवर्तित होना होगा। हालात बदल जाने पर कुछ लोगों को बहुत अच्छा लगता है और वो सोचते हैं, "ओह" हमने उच्चतम प्राप्त कर लिया है। ऐसा नहीं है, केवल हालात ही बदले हैं, केवल वातावरण बदला है और इनके कारण आपको लगता है, आपने कुछ महान प्राप्त कर लिया है। जहाँ भी आप हैं यह आपको प्राप्त करना होगा। इसे सम्भालना चाहिए और बनाए रखना चाहिए।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, बोर्डी, महाराष्ट्र, भारत 27.01.1980)

★ सहजयोग मृत चीजों, पर कार्य नहीं करता, जीवन्त चीजों पर कार्य करता है

"अत: सारे शारीरिक रोग ठीक किए जा सकते हैं, मनोदैहिक रोग ठीक किए जा सकते हैं, इन दोनों के सम्मिश्रण से उत्पन्न रोग ठीक किए जा सकते हैं। स्थापित सहजयोगी किसी भी प्रकार के सम्मिश्रित रोगों को ठीक कर सकता है। परन्तु यदि रोग लाइलाज अवस्था में चला गया हो, या शरीर के अन्दर कोई बनावटी चीज लगा दी गई हो—जैसे स्टील की तार या छड़ आदि—तब मृत चीजों पर सहजयोग कार्य नहीं करता, केवल जीवन्त चीजों पर कार्य करता है। अंग यदि अभी जीवित है तो यह कार्य कर सकता है। परन्तु यदि यह जीवित ही नहीं है तो सहजयोग कार्य नहीं करता।

अस्सी प्रतिशत लोगों पर यह कार्य करता है। परन्तु 20% लोग जिन पर यह कार्य नहीं करता, वे लोग हैं जिनका मानव होने का कोई मूल आधार ही नहीं है। वे पशुसम हैं। उनके दृष्टिकोण पशुओं जैसे हैं—पशुओं से भी बद्तर।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, (चिकित्सक सम्मेलन) ब्राइटन, यू.के., 26.07.1984)

★ ...सभी को धड़कती हुई तालू अस्थि पर हाथ रखने देना अत्यन्त भयानक है

"John The Baptist *की तरह से बप्तिज्म की बात करने वाले लोग—वे वास्तव में आत्मसाक्षात्कारी थे और कुण्डलिनी उठाकर जब वे सिर पर पानी डालते थे तो वास्तव में उन्हें आत्मसाक्षात्कार देते थे। यह बप्तिज्म है। ईसाई अर्थात् आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति (*Baptized*)। परन्तु कोई भी ऐरा, गैरा, नत्थूखैरा आपके सिर पर हाथ रखकर यह नहीं कर सकता कि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं। इसके विषय में विलियम ब्लेक कहते हैं "एक पादरी ने मेरे सिर को अभिशप्त किया।" ये बात सत्य है। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति के सिर पर किसी ऐसे पादरी, जो आत्मसाक्षात्कारी नहीं है और जिसे ये कार्य करने का अधिकार नहीं है, का हाथ रखवाने पर तो बच्चा समस्या में फँस सकता है। हमने बहुत से ऐसे बच्चे देखे हैं जो आत्मसाक्षात्कारी हैं और उन्हें इस प्रकार समस्या हो गई है। उनकी आँखें भेंगी हो गई हैं, वो अजीबो-गरीब हो गए,*

उनके मस्तिष्क विकृत हो गए हैं और हमें उन्हें ठीक करना पड़ा है।

अतः किसी भी व्यक्ति को धड़कते हुए तालूरन्ध्र पर हाथ रखने देना खतरनाक है। तालू ब्रह्मरन्ध्र है जो मनुष्य का महत्वपूर्ण अवयव है। तो सावधान रहना चाहिए कि ऐरा, गैरा इस पर हाथ न रखे। तालू पर हाथ रखने वाला व्यक्ति आत्मसाक्षात्कारी होना चाहिए और उसे समझ होनी चाहिए कि यह कार्य कैसे करना है। अर्थात् आपको सहजयोगी होना होगा। अतः अपने नवजात बच्चों के विषय में आपको सावधान रहना होगा— यदि वे आत्मसाक्षात्कारी हैं तो और भी अधिक सावधान रहना होगा। यदि आत्मसाक्षात्कारी नहीं है तो उनकी प्रतिक्रिया अधिक तेज नहीं होती परन्तु यदि आत्मसाक्षात्कारी हैं तो बच्चे रोते हैं, चिल्लाते हैं और किसी अनाधिकार व्यक्ति का तालू पर हाथ रखना बर्दाश्त नहीं करते।

अतः हमें समझना होगा, यद्यपि यह अत्यन्त पारम्परिक चीजों जैसा लगता है, परन्तु व्यक्ति को देखना होगा कि मानव के लिए अहितकर चीज़ों को त्याग दें। अब वो समय आ गया है जब हम सब अपने स्वास्थ्य के लिए और आध्यात्मिक उत्थान के लिए हानिकारक सभी चीजों को त्याग दें। यदि आप इस बात को स्वीकार नहीं करते, तो माँ होने के नाते मुझे केवल इतना कहना है कि मुझे आपकी चिन्ता है।" परन्तु ये तो उससे भी कहीं अधिक है। आप भयानक समय से गुजर रहे हैं।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, दिल्ली, भारत 03.02.1983)

★ ...आप यदि स्वयं को परिवर्तित नहीं कर सकते तो कुण्डलिनी बहुत पतले सूत्र की तरह से ऊपर उठेगी और हर समय आपको पकड़ बनी रहेगी

"हमें समझना होगा कि सहजयोग अपने अन्दर से ऊर्जा प्रवाहित करना मात्र नहीं है जैसे सभी भौतिक चीज़ों में से ऊर्जा गुज़रती है। जैसे इस माइक में से ऊर्जा गुज़र रही है, इस ट्रान्जिस्टर में से ऊर्जा गुज़र रही है और बाकी अन्य चीजें भी अपने अन्दर से ऊर्जा को गुज़ार रही हैं। परन्तु उनके अपने अन्दर ऊर्जा ठहरती नहीं है। इसी प्रकार से यदि हमारे अन्दर से भी शक्ति प्रवाहित होने लग जाए–क्योंकि इसी तरह से कुण्डलिनी अपने ऊर्जा स्रोत से जुड़ गई हैं—तो इसने अपना कार्य नहीं किया और न ही आपने अपने साथ कोई न्याय किया। **गंगा के उस प्रवाह को आपने अपने अन्दर आत्मसात करना है, इसे अपनाना है और स्वयं को परिवर्तित करना है।** *गंगा तो बह रही होगी परन्तु यदि यह पत्थरों में से बहेगी तो पत्थर गंगा के जल को आत्मसात नहीं करेंगे। परन्तु यदि यह उपजाऊ भूमि में से बहेगी तो सभी लोग इस जल का उपयोग करेंगे। स्वयं को परिवर्तित करके आपने अपनी कुण्डलिनी का उपयोग करना है। परिवर्तित होने का प्रयत्न करें। देखें कि आप कितना परिवर्तित हुए हैं? अब कुण्डलिनी का प्रश्न इतना...इतना... 'सहज' हो गया है कि अत्यन्त अजीब ढंग से लोग सोचते हैं कि कुण्डलिनी को स्वयं ये सब कार्य करना चाहिए। हम तो दोनों ओर से पत्थर हैं, कुण्डलिनी सभी कुछ कार्यान्वित करेगी। यह अत्यन्त गलत धारणा है। गंगा नदी यदि बह रही है तो*

आपको नदी पर जाना होगा, अपने घड़े भरने होंगे। आपके पास सुन्दर घड़े होने चाहिएं, ये घड़े आपको ले जाने होंगे, भरकर ये घड़े घर लाने होंगे और इनका जल अपने भोजन तथा गृहस्थी को समृद्ध करने के लिए उपयोग करना होगा। इसी प्रकार से, **यदि आप स्वयं को परिवर्तित नहीं कर सकते, अपने को बदल नहीं सकते तो पतली धारा (सूत्र) की तरह से कुण्डलिनी चलती मात्र रहेगी और हर समय आप पकड़े रहेंगे तथा अधिक उन्नति न होगी। उन्नति बाहर दिखाई देनी चाहिए।**

(परम पूज्य श्रीमाताजी, बोर्डी, महाराष्ट्र, भारत, 27.01.1980)

★ केवल आत्मसाक्षात्कारी लोगों को दफनाया जाना चाहिए बाकी सबका दाह-संस्कार किया जाना चाहिए

"वे आत्मसाक्षात्कारी नहीं है, केवल आत्मसाक्षात्कारी लोगों को दफनाना चाहिए बाकी सबका संस्कार किया जाना चाहिए। ऐसा करना बेहतर है। कम से कम उनके अन्दर से भूत तो निकल जाते हैं। चर्च में जब वे (भूत) वहाँ घूम रहे होते हैं तब आप अपने बच्चों को कब्रिस्तान में ले जाते हैं!"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, हैम्पस्टैड, लन्दन, 23.11.1980)

★ ...मृत लोगों का संस्कार किया जाना चाहिए, केवल आत्मसाक्षात्कारी लोगों को दफनाया जा सकता है।

"...धर्म भी फफूँद की तरह से बन गए हैं, जैसे बड़े-बड़े चर्चों के आस-पास मृत लोगों दफनाने के लिए कब्रिस्तान बनाना। मैं Chartres देखने के लिए गई-आपके यहाँ एक अत्यन्त-अत्यन्त सुन्दर चर्च है जिस पर कलाकार ने अत्यन्त सुन्दर कलाकारी की है परन्तु इसके चारों तरफ मृत शरीर दफनाए हुए हैं। ये बहुत भयानक बात है। वास्तव में मृत शरीरों को जला दिया जाना चाहिए। केवल आत्मसाक्षात्कारी लोगों को ही दफनाया जा सकता है।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, डोर्डन, फ्रांस, 18.05.1986)

★ आपको अपने हाथों का उपयोग करना होगा, अपने पैरों का उपयोग करना होगा, पानी पैर क्रिया करनी होगी क्योंकि जल 'सागर' है

सभी सहजयोगी नियमित रूप से पानी में बैठें। यह अत्यन्त आवश्यक है। प्रतिदिन प्रात:काल अवश्य ध्यान-धारणा करें क्योंकि बौद्धिक स्तर पर हम कहते हैं कि हम श्रीमाताजी के साथ थे, ठीक है। यह अभिव्यक्तिकरण ठीक है। आप लोग आए, आपने देखा कि भारतीय कैसे लोग हैं और सहजयोग के लिए अच्छे हैं, परन्तु यह सब देखने के पश्चात् आपको जानना होगा कि सहजयोग को कार्यान्वित करना पड़ता है। उसे सोचना नहीं पड़ता। इसके विषय में सोचने मात्र को कोई लाभ नहीं। विचारों के माध्यम से आप जो भी सोचने का प्रयत्न करें, सहजयोग में आप कोई सफलता प्राप्त न कर पाएंगे।

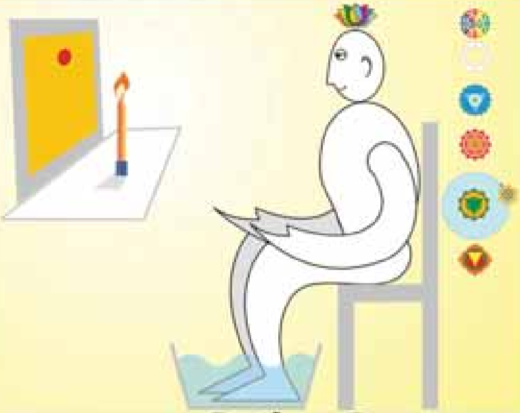

पानी पैर क्रिया

पानी पैर क्रिया करते हुए चक्रशोधन			
चक्र	शोधक पदार्थ	तत्व	तत्व का वजन
मूलाधार	जल में नमक	पृथ्वी	सबसे भारी
नाभि	बर्तन का जल	जल	पृथ्वी से हल्का
स्वाधिष्ठान	दीपक की लौ	अग्नि	पानी से हल्का
हृदय	पानी पैर क्रिया में लम्बे श्वास	वायु	जल से हल्का
विशुद्धि	हमारे ऊपर मौजूद आकाश	आकाश	वायु से हल्का
आज्ञा	दीपक का प्रकाश	प्रकाश (तेजस)	आकाश से हल्का
सहस्रार	पानी पैर क्रिया के समय श्रीमाताजी की फोटो से आने वाली चैतन्य लहरियाँ	चैतन्य लहरियाँ	सबसे हल्का

ध्यान–धारणा के समय हल्कापन:

जैसा उपरोक्त तालिका दर्शाती है, मूलाधार चक्र से ज्यों–ज्यों व्यक्ति सहस्रार की ओर बढ़ता है, तत्वों का वज़न घटने लगता है। उदाहरण के रूप में कुण्डलिनी मूलाधार चक्र से सीधे नाभि चक्र पर पहुँचती है और जल (नाभि का तत्व) पृथ्वी तत्व से हल्का है। तत्पश्चात् कुण्डलिनी स्वाधिष्ठान पर आती है (ध्यान रखें कि स्वाधिष्ठान चक्र की उत्पत्ति नाभि चक्र से हुई है और यह नाभि चक्र के इर्द–गिर्द ही घूमता रहता है) और वहाँ अग्नि तत्व जल तत्व से हल्का है। इसके बाद कुण्डलिनी नाभि मार्ग से हृदय चक्र पर आती है। यहाँ वायु तत्व है जो जल तत्व से भी हल्का है। जैसे–जैसे व्यक्ति ऊपर उठता है तत्वों का भार कम होता चला जाता है और सहस्रार पर चैतन्य–लहरियाँ तो बिल्कुल भारहीन होती हैं। यही कारण है कि नीचे के चक्र से ज्यों–ज्यों हम ऊपर को उठते हैं हमें हल्केपन का एहसास होने लगता है और सहस्रार पर तो हम पूरी तरह से हल्के और शान्त हो जाते हैं।

ये कहना अनावश्यक होगा कि सहजयोगियों को प्रतिदिन पानी पैर क्रिया अवश्य करनी चाहिए क्योंकि हम सब गृहस्थ हैं और सामाजिक प्राणी हैं। हर समय जाने–अन्जाने हम अपने कानों, आँखों, नाक आदि, विज्ञापनों तथा बात–चीत के माध्यम से बाधाओं को अपने अन्दर खींचते रहते हैं। इस प्रकार हम निरन्तर बहुत सी नकारात्मकता अपने चक्रों तथा नाड़ियों में भर लेते हैं जिसे बाहर से नहीं देखा जा सकता। अपने सूक्ष्म तन्त्र और नस–नाड़ियों को यदि हम प्रतिदिन साफ नहीं करते तो हमारा बाधित नाड़ी तन्त्र कुण्डलिनी एवं चैतन्य–लहरियों को ठीक से प्रवाहित न कर पाएगा।

अपने एक प्रवचन में श्रीमाताजी ने बताया था कि हमारे जीवन की 80 प्रतिशत समस्याएं पानी पैर उपचार से ही ठीक हो जाती हैं। हम भी जानते हैं कि यदि हम किसी एक दिन के पूरे विचारों को अन्य दिनों के विचारों से अलग करके देखें तो पाएंगे कि उस दिन के अधिकतर विचार नाभि चक्र से जुड़े होते हैं अर्थात या तो ये विचार पति/पत्नी या बच्चों या व्यापार के बारे में होते हैं।

पानी पैर क्रिया किस प्रकार चक्रों को शुद्ध करती है।

पानी में पैर डालकर जब हम बैठते हैं तो पानी में पड़ा हुआ नमक हमारे मूलाधार चक्र को शुद्ध करता है। वैज्ञानिक रूप से भी, हम जानते हैं, नमक में पृथ्वी तत्व का बाहुल्य है। जब बिजली की तारों का पृथ्वीकरण (Earthing) करना होता है तो तार डालने के लिए खोदे गए गड्ढे में नमक भी डाला जाता है। जल तत्व नाभि को शुद्ध करता है, दीपक की लौ (अग्नितत्व) स्वाधिष्ठान चक्र को बाधा मुक्त करती है, वायु हृदय को, आकाश विशुद्धि को, दीपक का प्रकाश आज्ञा चक्र को तथा श्रीमाताजी की फोटो से प्रवाहित होने वाली चैतन्य लहरियाँ सहस्रार चक्र को बाधा–मुक्त करती हैं। इस प्रकार से हम अपने सूक्ष्म तन्त्र को स्वच्छ कर सकते हैं।

पानी पैर क्रिया करते हुए अपनी आँखें खुली रखें।

आपको अपने हाथों का उपयोग करना होगा। अपने पाँव आपको पानी में डालकर बैठना होगा क्योंकि जल समुद्र है। ये सभी पाँचों चक्र या कहें छः चक्र, मैं पाँच इसलिए कह रही हूँ कि पहला चक्र मूलाधार है और सातवां तथा सबसे ऊपर वाला चक्र मस्तिष्क हैं, तो इस विचार के साथ कि यह मध्य के पाँचों चक्र मूलतः भौतिक तत्वों के बने हैं तथा पांच तत्वों से ही इन चक्रों का शरीर बना है हमें पूर्ण सावधानीपूर्वक इन पाँचों चक्रों का संचालन करना चाहिए। जिन तत्त्वों से यह चक्र बने हैं उन्हीं में इनकी अशुद्धियों को निकाल कर हमें इन चक्रों का शुद्धिकरण करना है।

उदाहरण के रूप में, यदि कोई व्यक्ति उग्र स्वभाव का है तो उसे बाईं ओर से संतुलन प्राप्त करना होगा। हाथ से उठाना निःसन्देह ठीक है, परन्तु तत्व का क्या होगा? दाईं ओर के (उग्र स्वभाव) व्यक्ति के अन्दर विद्यमान सभी तत्व उसे गर्मी प्रदान करते हैं, हम कह सकते हैं प्रकाश या अग्नि। अतः दाईं ओर के लोगों को अग्नि अधिक सहायता न कर सकेगी। जैसे फोटो के सम्मुख तथा अहं ग्रस्त लोगों के सम्मुख यदि आप दीपक (प्रकाश) का उपयोग करेंगे तो इसका कोई लाभ न होगा। लाभ तो पृथ्वी माँ और जल तत्व से होगा जो शीतलता प्रदान करते हैं। दाईं ओर के लोगों के लिए बर्फ भी बहुत लाभदायक है। तो उग्रता को ठीक करने के लिए सभी शीतलता प्रदान करने वाले तत्वों का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि उग्रता शान्त हो जाए।

खाने के विषय में भी ऐसा ही है। दाईं ओर के लोगों को ऐसे भोजन लेने चाहिए जो शान्त करने वाले हों जैसे कार्बोहाइड्रेट्स अर्थात् उन्हें काफी सीमा तक शाकाहारी बन जाना चाहिए। मांस खाना ही हो तो चिकन ही लेना चाहिए, मछली या समुद्र से निकला खाना बहुत गर्म होता है। इस प्रकार आप अपने चक्रों के भौतिक भाग को ठीक कर सकते हैं। बाईं ओर के (तमोगुणी) लोगों को चाहिए कि दीप-प्रकाश या अग्नितत्व का उपयोग अपनी बाईं ओर को ठीक करने के लिए करें। खाने में ऐसे लोगों को नाइट्रोजन परिपूर्ण अर्थात् प्रोटीनयुक्त भोजन करने चाहिएं। अधिक प्रोटीन उनके लिए आवश्यक है।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, वैतरणा, महाराष्ट्र, भारत, 18.01.1983)

सहजयोग परियोजनायें,
गतिविधियाँ और समाचार

"...परन्तु आपको वचन देना होगा कि, "श्रीमाताजी, हम उतने ही उत्साह और ध्यानपूर्वक कार्य करेंगे जिस प्रकार आप कर रही हैं तथा स्वयं को स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, बोर्डी, भारत, 13.02.1984)

*"Sitting in the Heart of the Universe…
We know Your love is flowing through us…."*

"सहजयोग किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं बना। ये आप सबके लिए है। सहजयोगियों की किसी सामूहिकता विशेष के लिए भी ये नहीं है। ये पूरे विश्व के लिए बना है। आपको परमात्मा के प्रेम तथा करुणा के प्रकाश को सर्वत्र फैलाना होगा।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, पुणे, भारत 1988)

1. निर्मल ट्रॉन्सफोरमेशन प्राइवेट लिमिटेड (NITL)

निर्मल ट्रॉन्सफोर्मेशन प्राइवेट लिमिटेड (पहले निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैक्नोलोजीज़ प्राइवेट लिमिटेड के नाम से प्रसिद्ध) का आरम्भ अपने वर्तमान उद्देश्यों के साथ वर्ष 2004 में हुआ। परमपूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी ने इस संस्था को, भारत तथा विश्वभर के सहजयोगियों के लिए महत्वपूर्णतम कार्यों को सम्भालने का आशीर्वाद दिया।

संस्था के मुख्य उद्देश्य :

ये विश्वस्त करना कि साहित्य के रूप में छपे परमेश्वरी माँ के सहजयोग संदेश, फोटोग्राफ, ऑडियो और वीडियो विश्व सहज समाज को हर समय उपलब्ध हों।

परम पूज्य श्रीमाताजी के संदेशों को आवश्यक रूप में एकत्र करके डिजिटल मीडिया में सुरक्षित करना ताकि यह सहजयोग की कभी न समाप्त होने वाली सम्पदा बनी रहे।

विश्व भर की सहज संस्थाओं, न्यासों तथा निकायों की श्रीमाताजी के दिव्य संदेशों को विश्व के कोने-कोने में बनाए रखने की शाश्वत इच्छा को सुगम बनाने का माध्यम बनना।

भारत में सहजयोग की सभी पुस्तकों, ऑडियो और वीडियो के प्रकाशन का सर्वाधिकार इस कम्पनी को होगा। संस्था का औपचारिक गठन करके इसे धारा 25 (बिना लाभेच्छा के कार्यरत) कम्पनी के रूप में 'इंडियन कम्पनी एक्ट' के तहत पंजीकृत करवा लिया गया है:

सम्पर्क:- निर्मल ट्रान्सफोरमेशन प्रा.लि.

8, चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
कोथरुड, पौड रोड, पुणे-4110038
फोन : +91-20-25286537 फैक्स : +91-20-25-286722
ईमेल : sale@nitl.co.in
वैबसाइट : www.nitl.co.in

2. छिन्दवाड़ा, श्रीमाताजी के जन्मस्थल (घर) का अभिग्रहण

छिन्दवाड़ा, भारत

माताजी श्री निर्मला देवी का जन्म स्थल

"...आपको पता होगा कि मेरा जन्म छिन्दवाड़ा में हुआ था और मक्का तथा छिन्दवाड़ा दोनों कर्क रेखा पर स्थित हैं ऐसा क्यों है?..."

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, लीग्रे, 25.05.1997)

छिंदवाड़ा, हमारी सबसे प्यारी माँ, माताजी श्रीनिर्मला देवी के पवित्र जन्मस्थान होने की वजह से एक सर्वोच्च तिर्थस्थान है। पूरे जन्मस्थान और संरचना को 'प.पू.माताजी श्रीनिर्मलादेवी सहजयोग ट्रस्ट' भारत द्वारा १४ जुलाई २००५ को अधिग्रहित किया गया था। तब से, श्रीमाताजी के आशीर्वाद से लगातार विश्व भर के सहजीजन इस स्थान का दौरा कर रहे हैं। आज आश्रम बेशक राहत के तौर पर छिंदवाड़ा शहर के सबसे अच्छी इमारत के रूप में खड़ा है। गर्भगृह के अलावा इसके बगल में ७०० से ८०० सहजयोगियों की बैठने की क्षमता के साथ एक बड़े पैमाने पर खूबसूरती से सजाया ध्यान हॉल मेजबान खड़ा है।

३५ एकर का एक बढ़ा सा ज़मीन का टूकड़ा भी सहजयोग के नेशनल ट्रस्ट द्वारा अधिग्रहित किया गया है। इस जगह को 'लिंगा' के नाम से जाना जाता है जो कि मुख्य छिंदवाड़ा पर (श्रीमाताजी के जन्मस्थान) से ११ कि.मि. की दूरी पर स्थित है। जिस घर में श्रीमाताजी का जन्म हुआ था वह शहर के भीतर ही है। कलाकृतियाँ और घर की मूल संरचना को बरकरार रखने के लिये उसकी रक्षा के लिये उचित देखभाल की गयी और बड़े पैमाने पर नवीकरण campaign *भी कराया गया है।*

'लिंगा' स्थान २००७ के इंटरनेशनल जन्मदिन पूजा के दौरान श्रीमाताजी के पवित्र उपस्थिति से आशीर्वादित स्थान है। तब से इस स्थान में नियमित रूप से जन्मदिन की पूजा हर साल मनाई जाती है। इस स्थान को सहजयोगियों के आराम, सुखसुविधाओं को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है ताकि जब भी वे जन्मदिन पूजा के लिये एकत्रित हों तो उन्हें सर्व आवश्यक सुविधायें प्राप्त हों। फिलहाल यह स्थान योगियों के प्रयास के द्वारा, एक बड़े जलाशय से घिरा एक सुंदर परिदृश्य में तब्दील हो गया है।

The stages of the project includes :

1. Construction of a Meditation Hall in the courtyard of the SHRINE and some additional structures to manage the flow of visitors, house souvenir stall office rooms and necessary facilities.
2. Acquisition of a large plot of land (of up to 16,000 square meters) in close proximity to the Shrine (Linga).

New annexe has also been built as on extension over the existing structure to accomodate more number of yogis visiting the centre.

3. विश्व निर्मल प्रेम आश्रम

अनाश्रित महिलाओं एवं अनाथ बच्चों की शरणस्थली
(परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी संस्थान'' की परियोजना)
(गैर-सरकारी हितार्थ संस्थान)
रजि. संख्या - एस-31374

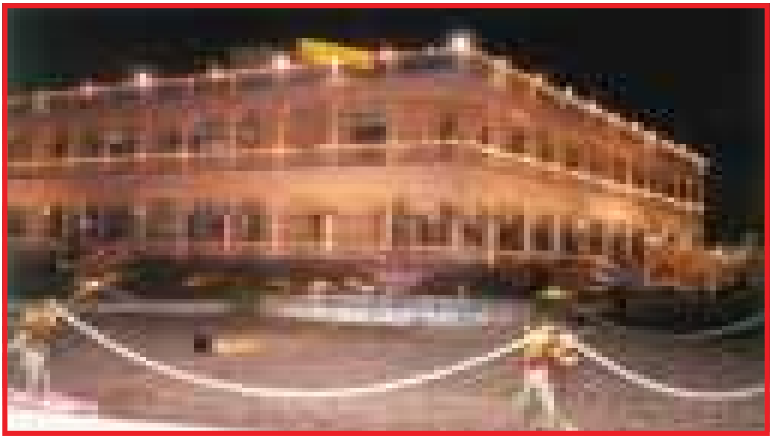

पंजीकृत कार्यालय — *सी 17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110016 (भारत)*

फोन:+91-11-26966652, फैक्स: +91-11-26866801,

ईमेल: delhiashram@rediffmail.com

आश्रम का पता — *विश्व निर्मल प्रेम आश्रम, प्लाट नं.9, इन्स्टीच्यूशनल एरिया, ग्रेटर नोयडा, उ.प्र. (भारत) फोन: 91-120-2230681 मो.: 91-9810774865,*

ई मेल: Gisela_oma_7@yahoo.com

'विश्व निर्मल प्रेम आश्रम', *भारत और विदेशों में आरम्भ होने वाली परियोजनाओं की शृंखला में पहली परियोजना है। परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ने अनाश्रित महिलाओं तथा अनाथ बच्चों, विशेष रूप से लड़कियों, के हितार्थ समर्पित, इस संस्थान का 'गैर सरकारी हितार्थ संस्थान' के रूप में 27 मार्च, 2003 को उद्घाटन किया।*

ये आश्रम समाज की असहाय, अनाश्रित महिलाओं को आरज़ी तौर पर नि:शुल्क भोजन, वस्त्र, रहने का स्थान, व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा चिकित्सा सुविधा मुहैया करवाता है। 6 से 24 माह के प्रशिक्षण के बाद उनसे आशा की जाती है कि अब वे स्वतन्त्र रूप से जीविकार्जन करें और सम्मानमय जीवन बिताएं। उपयुक्त नौकरियाँ खोजने में भी उनकी सहायता की

जाएगी। 40 वर्ष तक की आयु की अनाश्रित महिलाओं को यहाँ प्रवेश मिल सकेगा। 2 वर्ष से 8 वर्ष तक के अनाथ बच्चों को प्रवेश दिया जा रहा है। इन्हें 18 वर्ष की आयु तक निःशुल्क भोजन, वस्त्र, रहने का स्थान, शिक्षा एवं चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। इसके बाद इन्हें जीवन में पुनःस्थापित किया जाएगा।

ग्रेटर-नोएडा के प्रतिष्ठित ज्ञान पार्क/इन्स्टीच्यूशनल एरिया में लगभग 10000 वर्ग मीटर भूमि पर बने, विशाल वाटिका एवं दो मंजिले विशाल भवन में रहने वाले आश्रम के निवासी, स्वच्छ, सुन्दर जीवन, पोषक भोजन, खेल-कूद तथा प्रेममय पारिवारिक वातावरण का आनन्द उठाते हैं। उनका आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन भी किया जाता है ताकि आन्तरिक शान्ति एवं सन्तुलन की अवस्था प्राप्त करके वे जीवन का अधिक बेहतर ढंग से सामना कर सकें। ऐसे अनाथ बच्चों तथा अनाश्रित महिलाओं के हितार्थ आप निम्नविधि से सहयोग कर सकते हैं :-

- ☆ *आश्रम के पते और फोन संख्या पर आश्रय प्राप्त करने के लिए हमारे पास आने की सलाह आप उन्हें दें।*
- ☆ *आश्रम के पते पर अपने चन्दे* "H.H. Shri Mataji Nirmala Devi Foundation" *के नाम चैक/ड्राफ्ट द्वारा भेजें।*
- ☆ *आश्रम द्वारा बच्चे पर खर्च की गई धनराशि आश्रम को लौटाकर एक बच्चा कानूनी रूप से गोद लें।*
- ☆ *संस्था को दिए गए सभी चन्दे आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त हैं।*
- ☆ "H.H. Shri Mataji Nirmala Devi Foundation" *के नाम स्टैन्डर्ड चार्टर्ड बैंक, ई-10, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001, भारत, को सीधे अपने चन्दे भेजें। परन्तु इसकी सूचना अवश्य दें।*

शासी निकाय (Governing Body)

सोसाइटी-विधान के अनुरूप सोसाइटी की शासी-परिषद् के वर्तमान सदस्यों के नाम और पद इस प्रकार हैं :-

परम पूज्य माताजी निर्मला देवी	—	**संस्थापक एवं अध्यक्षा**
श्रीमती साधना वर्मा	—	*सदस्य*
श्रीमती किरण वालिया	—	*सचिव*
श्री विनय अनन्त देओपुजारी	—	*कोषाध्यक्ष*
श्रीमती Gisela Matzer	—	*सदस्य*
श्रीमती विनीता कुमार	—	*सदस्य*
श्रीमती नीता राय	—	*सदस्य*
श्रीमती मालिनी खन्ना	—	*सदस्य*

श्रीमती मालती प्रसाद — सदस्य
श्री आर.डी. भारद्वाज — सदस्य
श्री जी.एल. अग्रवाल (विशेष निमन्त्रित) — लेखा-परीक्षक

आश्रम में आश्रय खोजने वाली असहाय अनाश्रित महिलाओं के लिए दिशा निर्देश :

1. *60 वर्ष तक की आयु की महिलाऐं सीमित समय के लिए अपनी योग्यतानुसार 6 से 24 महीनों का व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए आश्रम में आश्रय के लिए निवेदन कर सकती हैं।*
2. *इन महिलाओं के लिए आश्रम तथा सहजयोग ध्यान-धारणा के नियमों का पालन करना अनिवार्य होगा।*
3. *उन्हें अपनी स्वास्थ्य जाँच करवा कर आश्वस्त करना होगा कि वे ऐसे रोगों से पूर्णतः मुक्त हैं जिनका कुप्रभाव आश्रम में पहले से विद्यमान लोगों पर हो सकता है।*
4. *आश्रम में आश्रय पाने की इच्छुक महिलाओं को सहजयोग केन्द्रों, पुलिस, जेल, गैर सरकारी हितार्थ संस्थाओं, समाज सेवियों या अन्य अधिकृत लोगों के माध्यम से आना होगा। ये दर्शाने के लिए, कि उनके न तो पारिवारिक बन्धन हैं और न ही वे समाज द्वारा त्यागी गई हैं, उनके पास आवश्यक प्रमाण पत्रों/दस्तावेजों का होना आवश्यक है।*
5. *आश्रम को अधिकार है कि बिना कोई कारण बताए किसी भी महिला का आवेदन रद्द कर सके।*
6. *आश्रम अधिकारी यदि उचित समझेंगे तो किसी भी महिला को लम्बे समय तक आश्रम में बने रहने की आज्ञा दे सकते हैं। इस कार्य के लिए उस महिला को उचित पारितोषिक दिया जाएगा।*
7. *शासी-परिषद को किसी भी शर्त की उपेक्षा करने का अधिकार है।*

अनाथ लड़की को आश्रम में प्रवेश देने के लिए दिशा-निर्देश :

1. *सामान्य रूप से 2 से 8 वर्ष की आयु की अनाथ बालिका को प्रवेश दिया जाएगा। परन्तु विशेष परिस्थितियों में न्यासियों की आज्ञा से 8 साल से बड़ी आयु की अनाथ बालिका को भी आश्रम में प्रवेश दिया जा सकता है।*
2. *प्रवेश से पूर्व बच्चे को स्वास्थ्य जांच के लिए भेजा जाएगा ताकि संक्रामक रोगों से बचा जा सके।*
3. *सहजयोग केन्द्र, पुलिस, गैर सरकारी हितार्थ संस्थान, धार्मिक संस्थाएं या कोई विश्वसनीय संस्था/व्यक्ति/दूर का सम्बन्धी बच्चे का प्रवेश करवा सकता है।*
4. *बालिका को प्रवेश के लिए लाने वाले व्यक्ति को बच्चे के माता-पिता की मृत्यु प्रमाण*

पत्र या कोई अन्य प्रमाण पेश करना होगा जिससे साबित हो कि बालिका वास्तव में अनाथ तथा गरीब है।

5. *पुलिस या स्थानीय दण्डाधिकारी, खोई हुई बालिका का प्रवेश करवा सकते हैं। बाद में यदि अभिभावक मिल जाता है तो उसे बालिका पर खर्च की गयी राशि आश्रम को लौटानी होगी।*
6. *सभी प्रविष्ट बच्चों के लिए आश्रम के कायदे-कानून मानना तथा सहजयोग ध्यान-धारणा करना अनिवार्य होगा।*
7. *सरकार के नियमों के अनुसार प्रवेश किए गए बच्चों पर आश्रम के सभी पितृसुलभ अधिकार होंगे।*
8. *प्रवेश की गई अनाथ बालिका के पालन-पोषण, शिक्षा, विवाह, गोद-देने आदि का न्यासियों को पूर्णाधिकार होगा।*
9. *कोई बच्चा यदि अपने आप आश्रम छोड़ देता है, खो जाता है या उसकी मृत्यु हो जाती है तो उसके लिए किसी भी प्रकार का मुआवजा देने के लिए आश्रम बाध्य नहीं होगा।*
10. *आश्रम के न्यासियों को किसी भी बच्चे के प्रवेश पर रोक लगाने या आश्रम से निष्कासित करके उसे किसी सुरक्षित स्थान पर भेजने का पूर्ण अधिकार होगा। इसके लिए वे कारण बताने पर भी बाध्य नहीं होंगे।*
11. *शासी परिषद* (Governing Council) *को अधिकार है कि वे उपरोक्त किसी भी शर्त की उपेक्षा कर सकें।*

27 मार्च 2003 को विश्व निर्मल प्रेम आश्रम, ग्रेटर नोयडा (भारत) के उद्घाटन समारोह के अवसर पर परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के प्रवचन से उद्धरण:

"......अपने देश में जो अनेक प्रश्न हैं, उसमें सबसे बड़ा प्रश्न है कि यहाँ पर औरतों को और आदमियों को अलग-अलग तरीके से देखा जाता है। पता नहीं ये कैसे आया, क्योंकि अपने शास्त्रों में तो लिखा नहीं है। कहते हैं शास्त्रों में कि:

यत्र पूज्यन्ते नार्या - तत्र रमन्ते देवता 'तो पता नहीं कैसे हमारे देश में इस तरह की स्थिति उत्पन्न हुई है, इसमें औरतों के प्रति कोई भी आदर नहीं है। मेरा विवाह यू.पी. में हुआ और मैं देखकर हैरान हुई कि यू.पी. में घरेलू औरतों का कोई स्थान ही नहीं है। उनमें और नौकरानियों में कोई फ़र्क ही नहीं है। यह इस प्रकार क्यों हुआ और क्यों हो रहा है? क्योंकि लोग उस ओर जागृत नहीं हैं। तो कभी-कभी देख कर रोना आता है, जिस तरह से औरतों को छला है, घर से निकाल दिया। कोई वजह नहीं, यूं ही घर से निकाल दिया। ऐसे बहुत सारे हमने जीवन में अनुभव लिए और जिसकी वजह से अत्यन्त व्यथित हो गए। समझ में नहीं आता था कि इस

तरह से क्यों औरतों को सताया जा रहा है और इनके रहने की भी व्यवस्था नहीं। जब घर से निकल गई तो उनको देखने वाला भी कोई नहीं है। बाल-बच्चे ले करके निकल आई थी बेचारी। वो लोग तो हैं निराश्रित, पर बच्चों को भी बिल्कुल बुरी तरह से निकाल देते हैं। यह अपने यहाँ की व्यवस्था किस तरह से बदल सकती है? इसका कोई इलाज है या नहीं? मैंने बहुत बार सोचा कि इसके बारे में लिखना चाहिए, पर लिखने से कुछ नहीं होगा। इसके लिए कोई व्यवस्थित रूप से कोई इन्तजाम करना होगा, कोई व्यवस्था करनी होगी, और एक तरह से बड़ा दिल कचोटता था। ऐसी अनेक-अनेक औरतें देखीं हमने जो आज रास्ते पर भीख माँग रही हैं। लोगों ने बताया कि अच्छा तरीका है भीख मांगने का। मैंने कहा कि भाई तुमको माँगना पड़े तो पता चले। औरतों के प्रति एक अत्यन्त उदासीन प्रवृत्ति जो अपने देश में आ गई है मुझे उससे तो रोना ही आता था। और इसीलिए मैंने यह ठान लिया था कि इनके रहन-सहन का इनके खान-पान का, इन बेचारी औरतों का कुछ न कुछ इलाज तो करना चाहिए।

वो लोग रास्तों में भीख मांगती हैं, हर तरह का काम करती हैं, उनको मैंने घर में बुलाया, उनसे बातचीत करी तो कोई कारण नज़र नहीं आता। आदमियों को कोई औरत अच्छी लग गई, उसकी (पत्नी) छुट्टी करो। दूसरा कुछ बहाना करके औरत को घर से निकाल दो। पता नहीं क्यों? औरत एक महान जीवन है, उसी से सारा संसार खड़ा होता है। उसी से अपने देश में हजारों बाल-बच्चे इस संसार में आते हैं। पर उनके प्रति इस तरह बेकद्री से लोग पेश आते हैं कि सहते-सहते औरत भी पागल हो जाए। पर नहीं, वो अपने बच्चों की वजह से बड़े हिम्मत से जीती हैं। लेकिन करे क्या उसके पास और खाने का ज़रिया नहीं, कोई तरीका नहीं, तो वो क्या करे, कहाँ जाए, किससे भीख माँगे? कोई उनको दरवाजे में भी खड़ा नहीं करता। इसका कोई इलाज मुझे दिखाई नहीं दिया। इसीलिए मैंने बहुत सोचा कि सबसे बड़ा काम, अगर कुछ है, तो इन औरतों के लिए कोई स्थान बना देना है। मैंने यही सोचा कि यहाँ आ करके वो सीख लेंगी, कुछ न कुछ काम सीख लेंगी। इसके अलावा यह लोग मालिश करना सीख सकती हैं, इसके अलावा यह लोग छोटे-छोटे अपने होटल जैसे बना सकती हैं। पर उनकी सहायता करने के लिए कोई चाहिए, कोई स्थान चाहिए, और उनको समझाने के लिए कोई चाहिए। इसी ख्याल से मैंने यह आश्रम बनाया है और इसमें सभी के प्यार को ललकारा है, सारे विश्व के प्यार को ललकारा है कि सब लोग प्यार से इसे देखें। इन बेचारी औरतों का कोई दोष नहीं हैं, वो जो दर-दर में भीख माँग रही हैं, इसका उत्तरदायित्व हमारे समाज का है। बहुत दु:ख होता है, एक औरत के नाते मुझे बहुत रोना आता था देख-देख के और यह जब बनने लगा तो मैंने कहा कि किसी तरह से यह पूरा हो जाए। और इसमें मेहनत करी काफ़ी, इसका डिजाइन भी हमने बनाया। इसकी विशेषता यह है कि इसमें जो आपको सफेद रंग दिख रहा है यह खराब होने वाला नहीं। एक अजीबो-गरीब तरीके से बनाया है, यह इटली में मैंने सीखा था। इटली में मैंने सीखा था कि ऐसा रंग बनाना चाहिए कि जो छूटे न और मुझे इसका मालूम है (तकनीक) और उसको इस्तेमाल करने से देखिए कितना सुन्दर सफेद रंग बन गया। यह

कभी खराब नहीं होगा, कितना भी इस पर पानी आ जाए, कुछ हो जाए, कभी खराब नहीं होगा। यह मैंने एक Experiment की तरह से, लेकिन यह चीज़ है बड़ी अच्छी। क्योंकि अपने देश में पता नहीं क्यों इस तरह की लोग चीज़ नहीं बनाते और इस तरह की चीज़ बनाना कोई मुश्किल नहीं। मैंने कितनों से कहा कि आप इसको इस्तेमाल करें, सो यही बात हुई कि कौन करे तवालत, कौन करे यह आफ़त। इसमें कोई तवालत नहीं है, कोई आफत नहीं है। पर भारत देश में एक और प्रथा चल पड़ी है कि जैसे चले वैसे चलने दो।"

"......सहजयोग से आप आत्मा को प्राप्त होते हैं, आप आत्मा को जानते हैं, पर सबके तरफ आपकी जो दृष्टि है उसमें करुणा होनी चाहिए। आत्मा को प्राप्त करके आपके अन्दर करुणा नहीं हुई तो क्या फायदा? करुणा होनी चाहिए और उस करुणा में आप देखिए, चारों तरफ आप देखकर परेशान हो जाएंगे कि यह माँएं और बहनें किस दुष्चक्र में फँस गई हैं इसके लिए आपसे विनती है मेरी कि आप आस-पास आँख घुमा कर देखिए, घर-बाहर देखिए और औरतों की जो स्थिति बनाई हुई है उसे व्यवस्थित करने का प्रयत्न करें। हमने तो छोटा-सा एक प्रयास किया है पर आप लोग बहुत कुछ कर सकते हैं। इसलिए मैं आप सबसे विनती करती हूँ कि जैसा आप मुझे प्यार करते हैं ऐसा ही आप अपनी माँ को और अपनी बहनों को प्यार करें।"

अनन्त आशीर्वाद।

विश्व निर्मल प्रेम आश्रम, ग्रेटर नोयडा (भारत) के 'भूमि पूजन' के अवसर पर 7 अप्रैल, 2000 को परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के प्रवचन से उद्धरणः—

"........अब इस संस्था को चाहिए कि सब लोग पूरी तरह से मदद करें। ये नहीं कि सिर्फ पैसा दे दें, पर इसको पनपाने में। अब सबसे बड़ा प्रश्न तो ये है कि हमें ऐसी औरतों को खोजना है, उनको खोज कर निकालना है। अब हमें क्या पता की कहाँ की औरतें हैं, क्या? अब हम तो यहाँ रहते भी नहीं। तो इस तरह की औरतें अगर आपको मालूम हैं, जो पीड़ित हैं, दु:खी हैं और जिनका कोई सहारा नहीं, और जो विधवा बन कर बहुत कुछ सह रही हैं, ऐसी सब औरतों को आपको इस संस्था में लाना चाहिए। अभी तो ये कह रहे हैं कि 100 औरतों का इंतजाम है। 100 से क्या होगा, पर उसके बाद उनसे बातचीत करके, उनको समझा-बुझा के, जो लोग अंदर आएंगी वो तो आएंगी ही लेकिन जो बाहर रहेंगी, उनको भी समझाया जा सकता है, उनके घर वालों को भी समझाया जा सकता है। अपना ही देश ऐसा है जहाँ अब भी कुटुम्ब व्यवस्था चल रही है। बाकी कहीं नहीं है। उसका उत्तरदायित्व औरतों को है, आदमियों को नहीं। ये भारतीय नारी की विशेषता है जिसने इस देश को रोक रखा है, नहीं तो कब के चले जाते? इसलिए अब आप समझ लीजिए कि गर आपने अतिशयता करी तो यही औरतें जो हैं क्रान्ति कर देंगी आपके लिए। वो ठीक नहीं है, वो प्रेम का हनन है, अच्छी बात नहीं है। अच्छी बात ये है कि समझदारी रख कर अपनी स्त्रियों की, अपनी बेटियों की हिफाज़त करें। उनको देखें, सम्भालें, उनको प्यार दें। और उनको ये पता

होना चाहिए कि आप उन्हें प्यार करते हैं। पूरी समझ, इसमें कोई ऐसी बात नहीं कि वो आपकी खोपड़ी पर बैठ जाएंगी। एकाध होती है। लेकिन आदमी गर कमजोर नहीं है तो औरत कभी भी उसकी खोपड़ी पर नहीं बैठ सकती। पर वो इतनी दबी हुई भी नहीं रहना चाहिए कि जिससे बच्चे भी नहीं पनप रहे हैं, जिसमें कुछ फूल ही नहीं खिल सकते। बच्चे तो माँ को मानते ही नहीं। माँ के पैर भी इस तरह से छुएँगे जैसे कोई ईंट या पत्थर बीच में पड़ा हो। और बाप को फुरसत नहीं। तो बच्चे तो बिगड़ ही जाएंगे। और उससे जो आज दशाएं हुई हैं, जो-जो आप पढ़ते हैं, पेपर में देखते हैं, उसका कारण ही ये है कि हमारी कुटुम्ब व्यवस्था ठीक नहीं है। वो बहुत जरूरी है कि उसको आप ठीक रखिए। यही हमारे समाज का ताना-बाना है। इसके सहारे आज आप भी यहाँ बैठे हुए हैं और आगे भी अगर चलना है तो कृपया याद रखिए कि औरत का मान रखना उसका उत्थान करना और लोगों को परिवर्तित करना भी आपको परम लक्ष्य की तरह से समझना चाहिए और उधर ध्यान देना चाहिए। ये मेरी आंतरिक इच्छा है। ऐसा वो आपको सबको मैं हमेशा कहती हूँ, कि अनन्त आशीर्वाद। किन्तु उस आशीर्वाद में सबको अपने साथ समेटिए। हमें तो लोगों को जोड़ना है। जब एक कुटुम्ब ही को आप नहीं जोड़ सकते तो आप किसको जोड़ेंगे? सबको चाहिए कि प्रेम से आपस में रहें। अब आप सहजयोगी हो गए और ये बड़ी भारी बात आपने प्राप्त करी। ये ज्ञान मार्ग है और इसमें आपको पता है प्रेम क्या चीज़ है और किस तरह से आदान प्रदान करना चाहिए। आपस में किस तरह से समझना चाहिए। इस चीज़ से आप हैरान होइयेगा कि सारा समाज एकदम बदल जाएगा। अपने को परदेसियों जैसे नहीं होना है। बिल्कुल भी नहीं। वहाँ तो कचहरी करेंगी औरतें, अमेरिका में तो औरतें सात-सात, आठ-आठ शादी करती हैं। औरतें और रईस हो जाती हैं तो पति सब गरीब हो जाते हैं। ये हम लोग नहीं चाहते। चाहते क्या हैं? आपसी प्रेम हो, बच्चे अच्छे से हों और आप देखिए, इससे बड़ा लाभ होगा। बहुत लाभ होगा। इतना लाभ होगा कि ऐसे समाज का और ऐसे देश का। इसमें ये आपसी झगड़े करना, कोर्ट कचहरी करना, कोई जरूरत नहीं। ग़र ये सबके अच्छे के लिए है तो ये ही क्यों नहीं करते। इस तरह से समझदारी आनी चाहिए। समझदारी में बढ़ना चाहिए।

यहाँ तो मैं देख रही हूँ बहुत से सहजयोगी बैठे हुए हैं, तो उनके लिए एक नई बात अब बता रही हूँ। आप सहजयोगी हैं तो सब लोगों को समझ लेना चाहिए कि ये सहजयोगी हैं। उसी प्रकार सहजयोगी को समझ लेना चाहिए कि जो सहजयोगी हैं वो हैं जो नहीं हैं तो नहीं हैं। सबको समेटना आना चाहिए। इसी सहजयोग के स्वभाव से ही आप दुनिया को जीत सकते हैं। जो बात मैंने कही है उसको आप हृदय में बाँध लें। यह दर्द है मेरे अन्दर। इस दर्द को आप लोग खत्म कर सकते हैं।"

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

4. अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल तालनू, धर्मशाला

अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल हिमालय की गोद में धौलगिरि पर्वत शृंखलाओं पर एक अत्यन्त रमणीक स्थल पर स्थित है। 'धौल' अर्थात 'विशुद्ध' निर्मल। और 'धार' अर्थात शृंखलाएं। यह पर्वतमाला धौलाधार कहलाती है। 2000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित, यह स्थल, भारत में हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध पर्यटक केन्द्र 'धर्मशाला' से लगभग 16 किलोमीटर दूरी पर है।

स्कूल के लक्ष्य एवं उद्देश्य

आधुनिक मानव को नैतिकता एवं विवेक से आशीर्वादित करने के लिए परम पूज्य श्रीमाताजी ने शिक्षा की एक अद्वितीय प्रणाली विकसित की हैं यहाँ पर दी जाने वाली शिक्षा बच्चे को अबोधिता की पावनता का आनन्द लेने का अवसर प्रदान करने के साथ साथ जीवन के सार का ज्ञान पाकर विश्व का बहुमूल्य नागरिक भी बनाती है। श्रीमाताजी कहती हैं, ''अबोधिता ऐसा शाश्वत् गुण है जो न तो कभी खो सकता है और न ही नष्ट हो सकता है।'' बौद्धिक तथा आध्यात्मिक रूप में विकसित होने के लिए विश्व भर से आए विद्यार्थियों में दिव्यत्व प्रतिबिम्बित करना स्कूल का मूल उद्देश्य है। एक अन्य रहस्योद्घाटन में श्रीमाताजी कहती हैं,''पश्चिमी देशों की चौंका देने वाली स्थिति जिस प्रकार साबित करती है, हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली मानव में अन्तर्निहित गुणों को उभारने में असफल हो रही है। हमारे जन्मजात आत्मसाक्षात्कारी तथा सहजयोगी बच्चों को एक ऐसी ज्योतिर्मय शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जिसमें उन्नत होकर वे इस सत्य की अभिव्यक्ति कर सकें कि पृथ्वी पर महान-आत्मायें अवतरित हुई हैं।

'**अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल**' *के नाम से प्रसिद्ध यह स्कूल प्रकृति प्रेम, पर्यावरण के प्रति सावधानी, सौम्यता, कुलीनता, ईमानदारी, विवेक के साथ साथ साहसिकता का गुण भी बच्चों के मस्तिष्क में भर देने के लिए सदैव प्रयत्नशील है। इस देवभूमि में उन सभी चीज़ों का प्राचुर्य है जो मानव की आत्मा को अलंकृत करती हैं। व्यक्ति के अन्तर्परिवर्तन के साथ साथ इस शांत गरिमामय वातावरण में यह उसकी स्वाभाविक उत्सुकता, सृजनात्मकता तथा कल्पना शक्ति को उभारता है, बढ़ावा देता है। वातावरण में चैतन्य लहरियों का प्राचुर्य विद्यार्थियों को आध्यात्मिकता का सार और आत्मसाक्षात्कारी जीवन शैली को समझने में सहायता देता है। श्रीमाताजी कहती हैं,''कि मैंने देखा है कि धर्मशाला स्कूल से आने वाले हमारे बच्चे अत्यन्त आत्मविश्वस्त और अत्यन्त विनम्र होते हैं। मैंने उनसे पूछा, ''आप क्या करते हो?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''श्रीमाताजी, हम ध्यान धारणा करते हैं। स्कूल में हम शाम को ध्यान-धारणा करते हैं और ध्यान-धारणा हमारी बहुत सहायता करती है।'' छोटे-छोटे बच्चों का ये कहना, इसकी आप कल्पना करें।*

आध्यात्मिकता-विकास के सार के अतिरिक्त स्कूल बच्चों को व्यक्तित्व विकसित करते हुए अभिव्यक्त करने, कार्य करने, परस्पर बाँटने, बिना स्पर्धा (ईर्ष्या) की भावना को बढ़ावा दिए, प्रेम-पूर्वक खेलने तथा सामूहिकता की वास्तविकता का आनन्द लेने की भी आज्ञा देता है। अपने माता-पिता, बुजुर्गों, अध्यापकों, साथियों, सरकारी सम्पत्ति, देश और विस्तृत रूप से विश्व के प्रति अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक जिम्मेदारी निभाने के लिए बच्चों को सचेत किया जाता है।

इसीलिए स्कूल के स्नातक, एक पूर्व विद्यार्थी ने इस प्रकार से टिप्पणी की...''लोग प्रायः कहते हैं कि हिमालय ब्रह्माण्ड की पीठ की तरह से है। परन्तु हम जानते हैं कि ये भारत का और विश्व का सहस्रार है। ये वो स्थान है जहाँ आकाश हमेशा चैतन्य लहरियों की चमक और श्रीमाताजी के दिव्य प्रेम से ज्योतिर्मय होता है।'' ये उनका स्कूल है और वे (श्रीमाताजी) हमेशा अपने बच्चों पर कृपा-दृष्टि बनाए रखती हैं।

शिक्षा, मानक विद्वता और दिनचर्या (Education, Standards, Academics and Routine)

★ *स्कूल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की भारतीय परिषद् से सम्बद्ध* (Affiliated) *है और प्रथम से दसवें दर्जे तक के बच्चों को प्रवेश दिया जाता है।*

★ *शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा है। ये आवासी स्कूल है जिसमें निवास और भोजन की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसमें पन्द्रह शयनागार* (Dormitories) *हैं, हर आठ बच्चों के समूह के लिए एक प्रभारी अधिकारी कार्यरत है। शयनागार आन्टी* (Dorm Anties) *और प्रभारीगण माता-पिता की तरह से बच्चों की देखभाल करते हैं।*

★ *स्कूल का सत्र 23 मार्च से आरम्भ और 21 दिसम्बर को समाप्त होता है। हर सत्र में जाँच* (Test) *होती है, इकाई जाँच, अर्द्धवार्षिक परीक्षा तथा वार्षिक परीक्षा ली जाती है। सभी जाँचों (परीक्षाओं) के परिणाम के आधार पर वार्षिक रिपोर्ट बनाई जाती है। पाठशाला में विविध प्रकार के पुस्तकों के शानदार संग्रह वाला एक पुस्तकालय है। इसके अतिरिक्त सहज साहित्य, ऑडियो और वीडियो कैसेट्स से परिपूर्ण एक विशेष सहज पुस्तकालय भी है।*

★ *स्कूल में भारतीय एवं यूरोपीय भोजन की सुविधा उपलब्ध है। भोजन में पोषक तत्वों पर*

विशेष ध्यान दिया जाता है। स्कूल की अपनी बेकरी है जहाँ विद्यार्थियों के लिए ताज़े भोज्य पदार्थ बनाए जाते हैं। मनोरंजन के तौर पर बच्चे नियमित रूप से सहज कैसेट्स के अलावा वीडियो कैसेट्स का आनन्द भी लेते हैं। स्कूल स्थल पर भिन्न क्रीड़ाओं तथा खेलों के अतिरिक्त बच्चे समय-समय पर होने वाली लम्बी पैदल-यात्राओं, पर्यटन तथा शैक्षिक यात्राओं का भी आनन्द लेते हैं।

- ★ दिनचर्या प्रातः ध्यान-धारणा से आरम्भ होती है, फिर नाश्ता और फिर 8.45 से 10.45 तक अध्ययन जिसमें 15 मिनट का संक्षिप्त विश्राम भी होता है। छोटी कक्षाओं के बच्चों को दोपहर का भोजन 12 बजकर 20 मिनट पर दिया जाता है और वरिष्ठ बच्चों को 1 बजे। दोपहर के भोजन के बाद वरिष्ठ विद्यार्थियों की कक्षाएं पुनः आरम्भ हो जाती हैं जबकि छोटे स्तर के बच्चों को एक घण्टे का आराम (Siesta) दिया जाता है। सन्ध्या के समय खेलों के लिए छुट्टी देकर दोपहर पश्चात का सत्र सम्पन्न होता है। 6.15 सायं पर शाम की ध्यान- धारणा के साथ शाम का सत्र आरम्भ होता है और फिर गृह कार्य तथा सभा के लिए तैयारी कक्षाओं का समय होता है। रात्रि भोजन के बाद रात को प्रायः 10 बजे विद्यार्थी सो जाते हैं। मौसम के परिवर्तन के साथ-साथ दिनचर्या में भी परिवर्तन होता रहता है।
- ★ वरिष्ठ कक्षा:- क्लास पाँचवी से दसवी तक, पढ़ाए जाने वाले विषयों में अंग्रेजी, गणित, जीव-विज्ञान, रसायन शास्त्र, शरीर विज्ञान, इतिहास, नागरिक शास्त्र, भूगोल, कम्प्यूटर, हिंदी, पर्यावरण अभ्यास और सहजयोग समाविष्ट हैं।
- ★ पाठयक्रम में सम्मिलित अन्य विषयों में संगीत (गायन, वाद्य), नृत्य (शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य और स्वाँग नृत्य), काष्ठ शिल्प (Wood work), आरेखण (Drawing) और चित्रकला, मृत्तिका (Clay work), कागज शिल्प हैं।
- ★ सभी बच्चों को विद्यार्थी वीज़ा के लिए आवेदन करना अनिवार्य होगा। किसी अन्य प्रकार का वीज़ा स्थानीय विदेशी पंजयन दफ्तर (F.R.O.) द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा। पर्यटक वीज़ा पर आने वाले विद्यार्थियों को छः महीने के बाद भारत छोड़ना पड़ेगा। जिन माता-पिता को अपने बच्चों के लिए विद्यार्थी वीज़ा आवेदन करना हो वे निम्नलिखित सूचनाओं के साथ स्कूल को लिखें :
  - ★ बच्चे का नाम, कुल नाम और उसकी कक्षा।
  - ★ बच्चे की जन्मतिथि और स्थान।
  - ★ पासपोर्ट नम्बर, इसकी समाप्ति की तिथि और बच्चे की राष्ट्रीयता, और
  - ★ सम्पर्क के लिए ई-मेल पता : ispsjm@yahoo.com
    अवर प्रभाग–प्रभारी (Junior wing - Incharge),
    ispsoffice@yahoo.co.uk, ispsoffice@rediffmail.com

और वरिष्ठ प्रभाग प्रभारी ispssenior@rediffmail.com

★ **सम्पर्क पता : *अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल,*** *तालनू, धर्मशाला (हि.प्र.)* www.sahajpublicschool.org

हिमालय की गोद में स्थित श्रीमाताजी के स्कूल के स्नातकों की स्मृतियाँ

★ *इस कार्य को करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल के अतिरिक्त किसी अन्य स्कूल के बारे में मैं सोच भी नहीं सकता। स्कूल न केवल आदर्श मानव विकसित करने के लिए श्रेष्ठतम आधार प्रदान करता है बल्कि समाज के अच्छे सदस्य बनने के लिए हमें आवश्यक आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन भी प्रदान करता है। स्कूल के अद्वितीय स्वभाव का यदि हम विश्लेषण करें तो पता चलता है कि अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल विद्यार्थियों के लिए केवल आदर्श स्कूल ही नहीं है, यह वह स्थल है जहाँ श्रेष्ठ मानव बनाए जाते हैं और सृजनात्मकता का सम्मान होता है। जो भी माता-पिता अपने बच्चों के हित की चिन्ता करते हैं उन्हें अच्छा मानव बनाना चाहते हैं, उन्हें इस स्कूल की सिफारिश करते हुए मुझे बिल्कुल संकोच न होगा। श्रेष्ठ मानव समाज ही अन्ततः श्रेष्ठ विश्व का कारण बनेगा।*

—ऋषि निकोलोइ, आस्ट्रेलिया

★ *धर्मशाला के पावन और स्वस्थ वातावरण में हमें व्यस्क बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ आज प्रचलित नशे, शराब आदि का कोई प्रकोप न था, केवल पूर्ण सुरक्षा एवं प्रेम की दृढ़ भावनाएं थीं। स्कूल ने हमें ऐसे वातावरण में पलने का अवसर प्रदान किया जिसकी तुलना किसी सुदृढ़ परिवार से की जा सकती है। इतनी छोटी आयु में पूर्ण सुरक्षा की भावना बच्चे की सबसे बड़ी आवश्यकता होती है। बाद में यूरोप में जो स्थिति मैंने देखी उसके बिल्कुल विपरीत इस स्कूल ने हमारी यह आवश्यकता पूरी की। मैं ऐसे बहुत से लोगों से मिली हूँ, जिन्हें अपने परिवारों का बिल्कुल भी अवलम्बन प्राप्त नहीं है। मैंने उनकी अवस्था भी देखी। आक्रामकता, घृणा, असुरक्षा की भावना उनके दिशा-निर्देश* (Guidelines) *बन चुके हैं। पाश्चात्य विश्व के परिवारों के पारस्परिक झगड़े, उच्छृंखलताएँ इसका मुख्य कारण हैं। मुझे अपने माता-पिता का सम्मान करना सिखाया गया। मुझे सिखाया गया कि अपने प्रश्नों के उत्तर मैं अपने परिवार में खोजूं और मैंने वो उत्तर खोजे। यद्यपि प्रायः हम कई-कई महीनों तक अपने माता-पिता से दूर रहते थे फिर भी मुझे ऐसा नहीं लगा कि उन्होंने मुझे अकेला छोड़ दिया है। वास्तव में माता-पिता के प्रति मेरा प्रेमभाव दृढ़ हुआ और उनके लिए सम्मान-भाव भी। वास्तव में मुझे गतिशील समाज में विकसित होने का अवसर प्रदान करने के लिए उन्हें अपने बन्धनों पर नियंत्रण लगाना पड़ा, कि किस प्रकार बच्चों की परवरिश की जाए? स्कूल के मेरे अनुभवों ने भिन्न प्रकार से मेरे व्यक्तित्व को सम्पन्न किया। सर्वप्रथम इसने मुझे अन्य संस्कृतियों के प्रति सहिष्णु दृष्टिकोण प्रदान किया। जिनका यूरोप के पब्लिक स्कूलों में (जहाँ मैं बाद में गयी) मैंने पूर्ण अभाव पाया। घर से दूर आवासीय स्कूल में रहने से मुझमें स्वतन्त्र रूप से स्थितियों का सामना करने की क्षमता*

विकसित हुई। मैंने सहयोग करना, संचालन करना तथा अपनी आयु के अपनी-अपनी पसन्द वाले, अपनी-अपनी आदतों वाले बच्चों के साथ रहना सीखा। इस भिन्न प्रकार की शिक्षा शैली के कारण जब मैं यूरोप लौटी तो गणित और विज्ञान में मेरा स्तर अपने सहपाठियों से कही ऊँचा था। स्कूल में बिताए गए मेरे वर्ष अत्यन्त शिक्षा प्रदायक थे जिन्होंने मेरे जीवन को सम्पन्नता प्रदान की, संक्षिप्त में क्योंकि इस समय नें मुझे सामान्य शैक्षिक पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भी बहुत कुछ दिया। ***—निरंजना डी.कलबरमैटन, स्विटजरलैण्ड***

★ *भारत में धर्मशाला के सहजयोग स्कूल में रहने का सौभाग्य प्राप्त करने की भावना को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। मैं यह डींग मारने की कल्पना भी नहीं कर सकता कि यदि मैं वहाँ न गया होता तो मैं या मेरा व्यक्तित्व कुछ अन्य होता, क्योंकि आज अपने जीवन में जो कुछ भी मैं हूँ, बचपन के उन दिनों में प्राप्त शिक्षा के कारण हूँ। स्पष्टत: जो शिक्षा मैंने वहाँ प्राप्त की उसका स्तर कनाडा में दी जाने वाली शिक्षा के स्तर से कहीं ऊँचा है। पाश्चात्य शिक्षा में जिसे "श्रेष्ठ" कहा जाता है वहीं भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा बोर्ड, जहाँ मैंने शिक्षा ग्रहण की, उसे "सन्तोषजनक" मानता है। दूसरी भाषा की शिक्षा के साथ साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत, नृत्य एवं कला के अनुभव और भिन्न दुनिया के प्रति अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण लेकर मैं लौटा। परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल में मैंने केवल उच्च स्तर की सैद्धान्तिक शिक्षा मात्र ही प्राप्त नहीं की, इसके साथ साथ स्कूल की शिक्षा प्रणाली में अन्तर्निहित आध्यात्मिक पक्ष के माध्यम से मैंने जीवन के गहन मूल्य भी सीखे। इन मूल्यों ने मेरे व्यक्तित्व के गुणों को विकसित किया और कनाडा में रहने वाले मेरे पूर्वजों से कहीं अधिक इन्हें परिपक्व किया। सबसे महत्वपूर्ण बात ये थी कि मुझे अपने विषय में तथा अपने चहुँ ओर के विश्व के विषय में सीखने का मौका मिला और ऐसा करते हुए मैं अपने विषय में अधिक आत्म-विश्वस्त हुआ और स्वयं को और अधिक सुरक्षित महसूस किया। ये एक ऐसा गुण है जिसका पश्चिम में अभाव है। वहाँ असुरक्षा की भावना, व्यक्तिगत महत्व, परिवार और सामाजिक अराजकता का प्राचुर्य है। सहज ध्यान- धारणा की विधियों से मैंने विश्व-विद्यालयों के पाठ्यक्रम, नौकरी के कार्य और रोज़मर्रा के जीवन की समस्याओं से उत्पन्न होने वाले तनाव को कम करना सीखा। मेरे मित्र मुझसे ईर्ष्या करते हैं कि तनाव से परिपूर्ण जीवन में भी मैं अत्यन्त शान्त एवं सन्तुलित रहता हूँ और साथ ही साथ सभी पाठयक्रमों में कक्षा में शिखर पर रहकर अपने प्राध्यापकों से उच्च प्रशंसा प्राप्त करता हूँ। मेरा चित्त अधिक केन्द्रित है और मेरा मस्तिष्क अत्यन्त निर्मल है। रात को बिना किसी प्रयत्न के मैं सो जाता हूँ और प्रात: अत्यन्त तरोताज़ा उठता हूँ। मुझे पता चला है कि मेरे आस-पास के लोगों को यह स्थिति प्राप्त नहीं है।*

—गौतमा पेमैन्ट, कनाडा

★ *श्री आदिशक्ति ने अपने साकार रूप से संपूर्ण अवधान से जिस शाला को जिस प्रकार से आशीर्वादित किया है उसे के जैसा आशीर्वादित स्थान इस धरातल पर कोई भी नहीं। यह*

शाला श्रीमाताजीने बनायी है। जीवशास्त्र के अनुसार जिन माता-पिता ने हमें जन्म दिया है, उनके बच्चे हम नहीं हैं, न कि हमारी सामूहिकता के बच्चे और हमारे राष्ट्रों के भी हम बच्चे नहीं हैं। हम देवी के (श्रीमाताजी आदिशक्ति) बच्चे हैं और उन्हीं के आत्मीय, उन्हीं के स्वाधीन हैं। हमारी माँ का अपने बच्चों के लिये अनुराग, वात्सल्य और अवधान सम्पूर्ण है, ऐसी कोई भी बात या चीज़ नहीं जो माँ हमारे लिये करती नहीं। उनकी प्रत्येक कृति अपने बच्चों के कल्याण और हित के लिये और उनकी आत्मा के कल्याण और हित के लिये होती है। हिमालय के निम्नतल में स्थित उस शाला में मेरा बचपन मैंने व्यतित किया उसे स्मरण करते हुये मेरे मन में ये भाव आते हैं। पुराने छात्रों बहुत सारे इस बात को मानंगे कि हमारा बचपन वहाँ आशीर्वादित धन्य और कल्याणमय हो गया।

मैं उस स्कूल से चार साल दूर थी। फिर मैंने वहाँ बच्चों के डॉरमेटरी के कार्यरत जो कर्मचारी थे उनके साथ काम किया। उसमें मैंने अनुभव किया कि जब मैं वहाँ पढ़ती थी तब के उन्मुक्त और अनिर्बध दिन (मुझे लगता था कि वे वैभवशाली दिन थे, पूर्ण रूप से अदृश्य, छूमंतर हो गये थे, यह बात स्पष्ट थी। (नि:संशय सब माता-पिता अभिभावक इस बात से बहुत खुश हैं।) अपने पहले-पहले प्रारंभिक दिनों से स्कूल ने बहुत बड़ी दूरी तय कर ली है और अधिक प्रगति के लिये चलना जारी है। उस समय जो कोई समस्यायें हो सकती थी और निश्चय ही बहुत सारी समस्यायें थी, उनकी मुझे याद ही नहीं। मेरे लिये बचपन के वे दिन मेरे जीवन के सबसे अच्छे दिन थे। और मैं किसी भी चीज़ के बदले में उन दिनों को देना नहीं चाहूंगा न तो अधिक अच्छा भोजन या अधिक गरम पानी या अन्य किसी चीज़ के लिये।

मेरी ऐसी भावना है कि सहज बालकों के कल्याण के लिये इस स्कूल का निर्माण किया गया। योगी होने के नाते हर एक बच्चा हमारी जिम्मेदारी है। उन में से एक-एक कर के सब कोई। किसी बालक का योग्य संवर्धन करना कठिन है क्योंकि इस संवर्धन से उन्हें सुंदर योगी बनना है। ऐसे योगी कि जिन्हें अपनी चैतन्य लहरियों में विश्वास है और ध्यान करते हैं क्योंकि वे ध्यान करना चाहते हैं, इसीलिये नहीं कि उन पर जबरदस्ती की गयी है। भले ही हम स्कूल में उपस्थित हैं या नहीं हैं, बच्चों से, रक्त-संबंध से, रिश्ते में हैं या नहीं हैं, पर हमारा यह कर्तव्य है कि प्रेम और आदर से परिपूर्ण शालेय वातावरण उन्हें निश्चित रूप से मिले और यही हमें देखना है। स्कूल की प्रिन्सिपॉल (विद्यालय की प्राचार्य) ने एक अच्छी खासी नौकरी छोड़ दी, अधिक अच्छा वेतन भी छोड़ दिया (और संभवत: अधिक आज्ञाकारी छात्र भी)! अपने बच्चों के पास रहना, अपना परिवार, इन सब को श्रीमाताजी के स्कूल में काम करने के लिये उन्होंने छोड़ दिया क्योंकि उन्हें इन योगी बालकों की चिन्ता और ध्यान है। ऐसी चीज करने के लिये हम लोगों में से कितने लोगों के पास इतनी हिम्मत है)? एक योगी होने के नाते उन्होंने उत्तरदायित्व (जिम्मेदारी) गंभीरता से स्वीकार कर लिया है और 'विश्व निर्मल धर्म' के भविष्य में वे मनोयोग से निवेशन कर रही हैं।

एक भूतपूर्व छात्र तथा एक भूतपूर्व कर्मचारी होने के नाते स्कूल के बारे में जो शिकायतें हैं उन पर मेरी पहली प्रतिक्रिया यह है कि आपको इतने भावनावेग से स्कूल के लिये मन में कुछ लगता है, तो आप वहाँ क्यों नहीं जाते तथा शिकायतों को ठिकाने लगा देने या कम से कम उसके लिये सहायता क्यों नहीं करते? स्कूल को अधिक लोगों की अत्यंत तीव्रता से आवश्यकता है। स्कूल चाहता है कि किसी भी सहज बालक का वहाँ समावेश करने के लिये वह सक्षम हो। ऐसा सहजयोगी बालक कि जिस की वहाँ आने की इच्छा है (और वह तो बहुत बड़ी बात है) पर उनको बहुत बड़ी मात्रा में कर्मचारियों की भी आवश्यकता है।

कोई भी किसी मानदण्ड को लगाकर स्कूल क्या है, इसको नाप नहीं सकता और वह किस स्थान पर है इसका भी परिमाण थोड़े दिनों में या चंद हफ्तों में लगा नहीं सकता। और स्कूल के माध्यम से जो गहन दिव्य कार्य होते हैं उसकी गहराई में डुबकी लगाकर थाह नहीं ले सकता। हम कुछ भी नहीं जानते। बस, इतना ही जानते हैं कि वह स्कूल एक आशीर्वादित पुण्यस्थान है। जब मैं एक छोटी सी छात्रा थी तब मुझे बहुत सारे सपने आते थे। जब माँ (श्रीमाताजी) स्कूल में दर्शन के लिये आती थीं और हम सब उन पर पुष्पवर्षाव करने के लिये बड़े द्वार पर प्रतीक्षा करते रहते थे।

उन सपनों में माँ हमेशा इतनी जवान थी और हमारी ओर देख कर मुस्कुराती थी, हँसती थी। स्कूल के बहुत सारे बच्चों को भी इसके समान ही सपने आते थे। और जब में डॉर्म आंटी (शयनकक्ष प्रभारी) का काम करती थी और रात में जब सब बच्चे सोते रहते थे तब मुझे ऐसे लगता था इस कक्ष में माँ थी और हर एक बच्चे के बिस्तर के बाजू में बैठी थीं। मुझे सचमुच ऐसी अनुभूति होती थी की वहाँ श्रीमाताजी उपस्थित हैं।

ISPS- International Sahaja Public School *यह एक विशेष स्थान है। ऐसा सोचना मूर्खता ही होगी की कोई भी मानव उसका प्रभारी (इन्चार्ज) हो सकता है। एक शक्ति ही है जो सब कुछ जानती है और हमारे स्कूल से जो कुछ करना है उस प्रत्येक चीज़ में जुड़ी हुई है। और वह एक अंतिम सर्वोत्तम संघटक है और वह यथार्थ रूप में जानती है कि वह क्या कर रही है।*

कुछ बोलना मेरे लिये अनुचित दिख सकता है पर ISPS *मेरी स्कूल है। और दुनिया में ऐसी कोई शालायें नहीं कि भूतपूर्व छात्र स्कूल छोड़ने के बहुत समय बाद में भी स्कूल के कल्याण और उत्कर्ष से संबंधित रहते हैं। सच बात तो यह है कि* ISPS *हमें कभी छोड़ेगी ही नहीं। हम कौन हैं, इसका वह एक एकीकृत समग्र हिस्सा है। हम उस स्थान से प्यार करते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिये स्कूल वहाँ रहे यही हम चाहते हैं।*

5. अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र सीबीडी – बेलापुर

हरे भरे वातावरण में स्थित सहजयोग अन्तर्राष्ट्रीय शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र, अपने आप में विश्व का अद्वितीय केन्द्र है। यहाँ परम पूज्य श्रीमाताजी द्वारा विकसित चैतन्य-चेतना के माध्यम से रोगियों का इलाज किया जाता है।

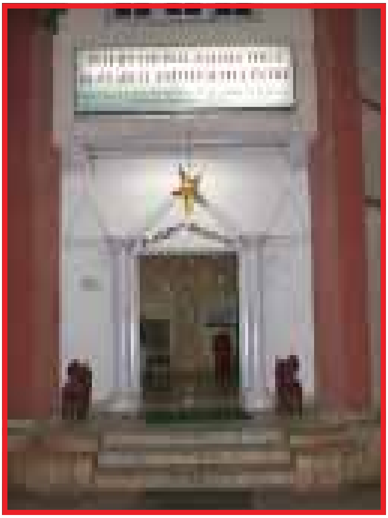

19 फरवरी 1996 को परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ने सीबीडी बेलापुर, नवी मुम्बई में इस विशाल अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना की और इसे आशीर्वादित किया। स्वर्गीय डा. यू.सी. राय, पूर्व विभागाध्यक्ष शरीर विज्ञान, Jawahar Lal Institute of Post Graduate Medical Education *पाण्डिचिरी और दिल्ली के भिन्न चिकित्सा महा-विद्यालयों में प्रोफेसर के पद पर आरूढ़ रहे, को श्रीमाताजी ने इस स्वास्थ्य केन्द्र का प्रथम निदेशक* (Director) *नियुक्त किया। उनके देहावसान के बाद श्रीमाताजी ने डा. मधुर राय को स्वास्थ्य केन्द्र का अगला निदेशक नियुक्त किया।*

श्रीमाताजी की कृपा से विश्व से आए बहुत से लाइलाज रोगी यहाँ स्वस्थ हुए हैं। लगभग पैंतीस देशों के लोगों ने – जिनमें यू.एस.ए., आस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, अफ्रीका, मलेशिया, सिंगापुर, रूस, कनाडा भी सम्मिलित हैं, इस स्वास्थ्य केन्द्र में सहजयोग उपचार से लाभ उठाया है।

भिन्न कारणों से बिगड़े हुए रोग जैसे तनाव, दमा, शक्कर रोग, आधासीसी (Migraine), *मिर्गीरोग, निराशावाद* (Depression) *और कैंसर रोग, के रोगी इस स्वास्थ्य केन्द्र में रोग मुक्त हुए हैं। केवल शारीरिक बीमारियों से पीड़ित रोगी ही इस स्वास्थ्य केन्द्र में नहीं जाते परन्तु असन्तुलित सूक्ष्म प्रणाली वाले योगी भी वहाँ पहुँच जाते है। केन्द्र में प्रविष्ट और बाह्य रोगियों की संख्या वर्ष 1996 में 954 थी, परन्तु तेजी से बढ़कर वर्ष 2004 में यह 5025 तक पहुँच गई।*

स्वास्थ्य केन्द्र में प्रवेश के लिए व्यक्ति को फैक्स/डाक या ई-मेल द्वारा रोगी का संक्षिप्त चिकित्सा इतिहास या शरीर के सूक्ष्म असन्तुलन का विवरण प्रभारी डॉक्टर को भेजना पड़ता है। तत्पश्चात केन्द्र के स्वागत कार्यालय में कमरे आदि का आरक्षण किया जाता है।

सम्पर्क पता : ***अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र***
प्लाट-1, सै. 8, परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी मार्ग
सीबीडी, बेलापुर, नवी मुम्बई-400614

टेलीफोन : *स्वागत कक्ष : (022) 27571341, (022) 27576922*
टेलिफैक्स : (022) 27576795
समय : प्रातः 10.00 से सायं 4.00 बजे तक
फैक्स : +91-22-27576795
ई-मेल : sahaja_center@vsnl.net

अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य केन्द्र में 19 फरवरी 1996 को चिकित्सकों से बात-चीत करते हुए परमपूज्य श्रीमाताजी की वार्ता से कुछ महत्वपूर्ण उद्धरण

"...सत्य-साधक। आज ये बिल्कुल अलग-बात है कि मुझे उन लोगों से बात-चीत करनी है जो पेशे से डॉक्टर हैं और ऐसी चिकित्सा प्रणाली के अनुरूप कार्य कर रहे हैं जिसे पूर्णतः वैज्ञानिक माना जाता है। मैं यहाँ पर किसी भी प्रकार से इसकी निन्दा करने के लिए या विश्वभर के चिकित्सकों द्वारा प्रयोग किए जा रहे प्रचलित सिद्धान्तों को नीचा दिखाने के लिए नहीं आई हूँ। उपलब्ध ज्ञान का किसी भी प्रकार से अपमान नहीं किया जाना चाहिए। परन्तु समस्या ये है कि जब आप जान जाएं कि ज्ञान का कोई सिद्धान्त पूर्णतः विकसित नहीं है या सक्षम नहीं है तो उपयोग की जा रही विधि से बेहतर किसी अन्य चीज़ के लिए हमें अपने मस्तिष्क खोलने चाहिएं। क्योंकि हमने चिकित्सा विज्ञान पढ़ा है, क्योंकि हम चिकित्सा पद्धतियों को जानते हैं, केवल इसलिए ये आवश्यक नहीं कि हम इनके बन्धन में बंध जाएं कि किसी भी उपलब्ध नई चीज़ को हमने नहीं अपनाना। चिकित्सा विज्ञान की आचार संहिता में, जहाँ तक मैं जानती हूँ, हम लोगों के हित के लिए कार्य कर रहे हैं, न तो अपनी जेबें धन से भरने के लिए और न ही केवल उस सिद्धान्त का प्रचार करने के लिए जिसके विषय में हम जानते हैं।

जैसे कि आप जानते हैं, विज्ञान में समय-समय पर सिद्धान्तों को चुनौती दी जाती है। प्रारम्भ से ही आप देखिए कि पहले परिकल्पनाएँ (Hypothesis) *आती हैं जो बाद में नियम बनते हैं और फिर नियमों को चुनौती दी जाती है। दूसरी बात ये है कि ये विज्ञान निर्नैतिक* (Amoral) *है। मानव के नैतिक पक्ष का विज्ञान में कोई महत्व नहीं है। तीसरी बात ये है कि यह सीमित है, क्योंकि हमारे मस्तिष्क के माध्यम से यह हमारे प्रयत्नों को देखती है, इसलिए ये सीमित है। मस्तिष्क के माध्यम से जो भी कुछ हम जानने का प्रयत्न करते हैं, आवश्यक नहीं है कि यह "पूर्ण सत्य" हो। हमेशा बने रहने वाले मतभेदों का भी यही कारण है। यदि यह*

"पूर्ण-सत्य" होता तो मतभेद न होते। अत: हमें करना ये है कि एक ऐसे बिन्दु तक पहुँचे जहाँ पूर्ण सत्य को जान सकें, पूर्ण अर्थ को जिससे सभी डॉक्टर एक ही प्रकार सोचें, और रोग निदान भी एक ही हो। इन सभी दृष्टिकोणों से थोड़ा सा विनम्र होकर हमें स्वयं देखना होगा कि इस महान देश भारत में हमारे लिए कौन-सा ज्ञान उपलब्ध है? हम बिल्कुल नहीं जानते कि सहजयोग का ये ज्ञान हजारों वर्षों से यहाँ पर विद्यमान है!"

"...अपनी विकास प्रणाली के माध्यम से हम मानव बने हैं और हमारे अन्दर बहुत-सी ऐसी चीजें हैं जिनका ज्ञान हमें नहीं है। जो भी कुछ हम बाहर देखते हैं उसका ज्ञान तो हमें है परन्तु जो अन्तर्निहित है उसका ज्ञान हमें नहीं है। क्योंकि प्राचीन ग्रन्थों में हमारे अन्तर्निहित ज्ञान के बारे में जो लिखा गया है उसे न तो हमने पढ़ा है और न ही उसे खोजने का प्रयत्न किया है। तो ये समझने की चीज है कि हमारे देश में बहुत से सन्तों और अवतरणों ने प्राचीन काल से जो भी कुछ ग्रन्थों में लिखा है उसका कोई कारण तो अवश्य होगा। आज ये शक्ति रहस्य के सिवाय कुछ भी नहीं। हमारे विकास के अन्तिम भेदन के लिए इसी शक्ति ने अंकुरित होना है। मानवीय चेतना के बाद हमें एक नई चेतना में प्रवेश करना है जो हमारी पूर्ण सोच-समझ है। इस नई चेतना जिसके बारे में जापान में मानी जाने वाली ज़ेन प्रणाली में भी बताया गया है, चीन में लाओत्से ने इसके बारे में बताया तथा बहुत से अन्य लोगों ने भी इसके बारे में बताते हुए कहा कि व्यक्ति को मस्तिष्क (मन) से ऊपर उठना है।

*"...आप यदि वैज्ञानिक है तो आपको इस बात का विचार आता है कि जो चीजें हम देखते हैं उसके पीछे भी कुछ गहन ज्ञान निहित है। ये सभी प्रकार कार्य करता है, उदाहरण के रूप में, मैंने जीन्स (*Genes*) को कार्यान्वित किया है और इन्हें इनके विषय में बताया है, इसके बारे में जानकर ये लोग बहुत हैरान हैं। कहने लगे कि अभी तक किसी ने भी फॉस्फोरस पर कार्य नहीं किया है। इस बात से मैं हैरान हूँ, ये सामान्य विवेक है, और हमारे डॉक्टर साहब भी रोगनिरोधक प्रणाली के बारे में बता रहे हैं। मैंने कहा ये पूरी तरह से सामान्य विवेक है कि यदि रोग निरोधक शक्ति कम हो जाए तो आप बीमारियों पकड़ लेंगे। इसमें महान् क्या है... ?*

अब हमें इस सिद्धान्त को देवी-देवताओं से जोड़कर देखना है, जहाँ चिकित्सक लोग असफल हो जाते हैं, वो ऐसा नहीं कर सकते। अपने घर ये लोग गणपति ले जाते हैं, गणपति को प्रणाम करके अपने कार्य पर जाते हैं। परन्तु ये लोग नहीं जानते कि हमारे अन्दर गणपति का कितना महत्व है-ये क्या कहते हैं, इनका निवास कहाँ है, इनकी कार्यशैली क्या है? केवल भारतीय देवी-देवता ही नहीं परन्तु ईसामसीह, मोहम्मद, महावीर, बुद्ध, ये सभी कार्य करते हैं। सबका निवास हमारे अन्दर है। परन्तु डॉक्टरों के लिए ये स्वीकार करना बहुत कठिन है। मैं कहूंगी कि उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहिए। धीरे-धीरे जब वो सहजयोग में उतरेंगे तो स्वीकार करने लगेंगे। एक बार जब आपको सच्चा ज्ञान प्राप्त हो जाएगा तो निदान देखकर आपको आश्चर्य होगा, निदान के लिए रोगी को मारने की आवश्यकता न होगी। अपनी अंगुलियों के

सिरों पर आप जान जाएंगे कि समस्या क्या है! केवल आप ही नहीं, कोई भी व्यक्ति जो आत्मसाक्षात्कारी है, बता देगा कि कौन से चक्र पकड़ रहे हैं और क्या समस्या है। सहजयोग में इसका कूटानुवाद (Decode) हो गया है और आप पता लगा सकते हैं कि कौन-सा कूट किस बात के लिए है।

यह शोध केन्द्र ठीक हुए रोगियों की सारी सूचना एकत्र करने के लिए स्थापित किया है। हम नहीं चाहते कि निदान क्रियाएं चलती रहें। अंगुलियों के सिरों पर हम महसूस कर सकते हैं, परन्तु रोगी अन्य अस्पतालों और स्थानों से निदान ला सकते हैं और स्वयं देख सकते हैं कि हमारा निदान ठीक है या गलत है। उन्हें चाहिए कि रोग का इलाज सहजयोग निदान के अनुरूप करें और एक बार जब रोगी ठीक हो जाए तो भविष्य में शोध कार्य करने के लिए पाए गए परिणाम लिपिबद्ध कर लिए जाएं।

"...परन्तु अब हमें ये समझ लेना चाहिए कि बहुत लोगों के लिए रोगमुक्त होने का, पूर्णतः प्रसन्न और आनन्दमय होकर सर्वशक्तिमान परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने का समय आ गया है। वैज्ञानिकों से परमात्मा की बात करना बहुत बड़ा सिरदर्द है। परन्तु परमात्मा है और वैज्ञानिक होने के नाते आपको अवश्य पता लगाना चाहिए कि परमात्मा हैं या नहीं हैं। अन्यथा, यदि आप कहते हैं कि परमात्मा नहीं है तो इसका अर्थ ये है कि आप अत्यन्त अवैज्ञानिक हैं। परमात्मा के अस्तित्व के बारे में क्या आपने पता लगाया है? अतः मैं कहूँगी कि अत्यन्त विनम्रतापूर्वक पता लगाने का प्रयत्न करें कि क्या परमात्मा हैं। विज्ञान के माध्यम से हमें देखना चाहिए कि परमात्मा हैं या नहीं।"

"...सहजयोग में आपको धन-आदि कुछ भी नहीं लेना होता, ये तो आपकी शक्तियों के माध्यम से ही कार्यान्वित होता है। आप गरीब लोगों की भली-भांति सहायता कर सकते हैं परन्तु यदि बहुत धनवान लोग हैं, वो लोग आपको उपलब्ध हैं, हम उन्हें अधिक परेशान नहीं करना चाहते और न ही वो हमारी अधिक चिन्ता करते हैं, वो केवल डॉक्टरों पर ही निर्भर करते हैं, फिर भी आप उन्हें ले सकते हैं। परन्तु हमारे लिए मध्यम वर्ग, और निम्न वर्ग, विशेष रूप से वो लोग जिनमें डॉक्टरों के पास या अस्पतालों में जाने की क्षमता नहीं है, अधिक महत्वपूर्ण हैं।"

"... यह विज्ञान आपके लिए बिल्कुल निःशुल्क है, इसे आप एक महीने में सीख सकते हैं। चिकित्सा विज्ञान सीखने के लिए आपको सात वर्ष परिश्रम करना पड़ता है। चिकित्सकों के लिए इसका ज्ञान अत्यन्त लाभदायक है क्योंकि इसके माध्यम से वे रोग के स्थान का भली-भांति पता लगा सकते हैं, अधिक बेहतर समझ सकते हैं। वे समझ सकते हैं कि यह इतना वैज्ञानिक है। इतने सुन्दर ढंग से यह कार्य कर रहा है वे आश्चर्य चकित हैं, मैं कहूँगी कि ये इतना महान् विज्ञान है कि हम इसे पराविज्ञान कह सकते हैं, जैसा डॉक्टर साहिब (स्वर्गीय डा. यू.सी. राय) ने कहा है। ये विज्ञान तर्क संगत रूप से इसकी व्याख्या कर सकता है। परन्तु

विज्ञान पूर्ण को अपने अन्दर नहीं समेट सकता। विज्ञान अभी तक एक छोटा-सा प्याला है जो अपने अन्दर 'पूर्ण' सागर को नहीं समेट सकता। अतः विज्ञान को महान् मानने वाले सभी वैज्ञानिक लोगों को यह समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि हमारे देश की सम्पदा क्या है।"

परमात्मा आपको धन्य करें।

स्वास्थ्य केन्द्र में गए सहजयोगियों के कुछ मनोरंजक अनुभव

बैल्जियम की 62 वर्षीय वास्तुकार एटिने लोयसन (Etienne Loyson) *आश्चर्यचकित हैं, "पहले मुझे उच्च-रक्तचाप था, विदेशों के डॉक्टरों ने नियमित रूप से कुछ गोलियाँ ही इसका इलाज बताईं थीं। परन्तु आज सहजयोग उपचार और श्रीमाताजी निर्मला देवी के आशीर्वाद से मैं पूर्णतः सशक्त हूँ। मैंने सारी दवाईयाँ छोड़ दी हैं और मुझे लगता है कि मैं तीस वर्ष की युवा हूँ।*

इंग्लैण्ड की कैथरीन रीड (Katherine Reid) *जो आँत की तकलीफ* (Irritable Bowels Syndrome) *से पीड़ित थी, सी.बी.डी, बेलापुर केन्द्र आने से पूर्व उन्हें बहुत सी दवाईयाँ लेनी पड़ती थीं, अपने पूर्व जीवन के मुकाबले वे आज अत्यन्त प्रसन्नचित्त महिला हैं। "सारी दवाइयाँ छोड़ कर मुझे बहुत अच्छा लगता है, मेरा स्वास्थ्य लगभग 80 प्रतिशत सुधर गया है।" "निराशा मनोविकृति* (Depressive psychosis) *से पीड़ित कनाडा की अन्ना कार्गेटी* (Anna Kargaity) *आज प्रफुल्लित हैं। वे कहती हैं, "अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करने तथा अपना व्यक्तित्व विकसित करने की क्षमता पाकर, अब जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोण सकारात्मक है।" आस्ट्रेलिया की बेलिंडा* (Belinda), *कनाडा के कुमार तथा अमरीका के ब्रियन* (Bryan) *तथा कुछ अन्य लोगों ने भी ऐसे ही लाभ प्राप्त करने के विषय में बताया।*

स्वर्गीय डा. यू.सी. राय से एक बार जब पूछा गया कि विश्वभर के आधुनिक भेषज के डॉक्टरों के पास जब इतनी उन्नत दवाईयाँ उपलब्ध हैं फिर भी क्यों इतनी अधिक संख्या में विदेशी यहाँ आते हैं, तो उन्होंने टिप्पणी की "विदेशी डॉक्टरों के पास मानव मन के लिए प्रशान्तक गोलियों तथा निराशा विरोधी दवाओं के अतिरिक्त कोई अन्य दवा नहीं है। ये दवाईयाँ केवल हानिकारक ही नहीं हैं, इनकी आदत भी हो जाती है। ध्यान धारणा के माध्यम से सहजयोग मानव मन को नियन्त्रित करता है। इस कारण से सहजयोग अस्थमा, आधासीसी (Migraine), *आँत रोग, बाँझपन, बहु-सूजन* (Multiple Sclerosis) *और स्पोंडीलाइटिस आदि रोगों को रोकने तथा इनके इलाज के लिए बहुत प्रसिद्ध हुआ है। यह सब माताजी श्री निर्मला देवी के आशीर्वाद से है, जिन्होंने सहजयोग केन्द्र की स्थापना की और विश्व के लाखों लोगों को आत्म-साक्षात्कार प्रदान किया।"*

यूनान से थियोडोर ऐफस्टाथिऔ (Theodore Efstathiou)

अपने सूक्ष्म तन्त्र पर नकारात्मकता की जमी हुई कुछ और धूल को स्वच्छ करने के लिए फरवरी 2002 में मैं सहज स्वास्थ्य केन्द्र बेलापुर में था। 19 फरवरी को केन्द्र का कार्य

आरम्भ होने की छठी वर्षगाँठ थी। इस शुभावसर पर परमेश्वरी माँ के चरण कमलों में पूजा की गई। चैतन्य प्रवाह अत्यन्त शक्तिशाली था और इस पूजा में सम्मिलित होना अत्यन्त शुभ था। ये पूजा मील का पत्थर थी और इस अवसर पर केन्द्र, इसकी कार्यशैली तथा आवश्यकता के विषय में कुछ शब्द कहने का यह बहुत अच्छा मौका है।

रोग पीड़ित लोगों के लिए

पहले भी यह प्रश्न उठाया गया था कि सहजयोगियों को इलाज के लिए इस केन्द्र में आने की आवश्यकता क्यों है? परन्तु चिकित्सकीय या तीव्र भावनात्मक समस्याओं की स्थिति में यह प्रश्न अनावश्यक हो जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को चाहिए कि किसी चिकित्सक से मिल कर रोग एवं उसका कारण निश्चित करे। सहजयोगियों में डॉक्टरों की सलाह पर चलने की प्रथा है।

इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि केन्द्र ने उन रोगों का भी निराकरण तथा सुधार किया है जहाँ चिकित्सा विज्ञान कुछ भी आराम न पहुँचा पाया। डाक्टर द्वारा बताया गया इलाज पूरा करने के बावजूद भी आप में चिकित्सालय जाने की इच्छा हो सकती है। शारीरिक समस्याओं को दूर करने का सहजयोग अभ्यास ही एकमात्र उपाय है। इस बात पर बल दिया जाना चाहिए।

बीमारी की अवस्था में, चिकित्सक रोग-लक्षणों को ही दबा देते हैं। चिकित्सा प्रणाली रोगमुक्त नहीं करती। रोग मुक्ति तो केवल तभी मिलती है जब सूक्ष्म तन्त्र की बाधा (जिसके कारण रोग होता है) दूर हो जाती है। अन्यथा रोग का कारण तो सूक्ष्म-तन्त्र में अभी तक बना हुआ है और रोगी पहले से भी बद्‌तर स्थिति की ओर बढ़ रहा है।

प्राचीन यूनानी दार्शनिक हेराक्लेटस (500 बी.सी.) की रचनाओं के केवल कुछ ही अंश बचे हैं। इन में से एक में वे कहते हैं, ''काटकर और जला कर डॉक्टर लोग भी वही करते हैं जो बीमारी करती है और इस कार्य के लिए उन्हें धन मिलता है जिसके वे अधिकारी नहीं हैं।'' चिकित्सा विज्ञान में इतनी उन्नति होने के बावजूद आज भी यह बात उतनी ही सत्य है जितनी उस समय थी।

सुक़रात ने उससे भी और अच्छी तरह इसकी व्याख्या की जब उन्होंने कहा, ''किसी डॉक्टर को स्वयं का भी ज्ञान नहीं है। यही कारण है कि वह डॉक्टर है।'' सहजभाषा में कहा जाता है कि ''कोई भी डॉक्टर आत्म साक्षात्कारी नहीं है और इसी कारण वह डॉक्टर है।''

शारीरिक समस्याओं वाले रोगियों को चाहिए कि सहजयोग चिकित्सकों के केन्द्रित चित्त और अनुभवों से लाभान्वित होने के लिए इस स्वास्थ्य केन्द्र पर जाने के विषय में सोचें।

शारीरिक रूप से स्वस्थ लोगों के प्रति

शारीरिक रूप से स्वस्थ लोगों के मन में ये प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि बिना कारण क्यों

स्वास्थ्य केन्द्र जाने का कष्ट उठाया जाए? एक बार प्रोफैसर राय ने परम पूज्य श्रीमाताजी का उदाहरण देते हुए कहा था कि सहजयोगियों में बाधाएं इतनी मजबूत हैं कि उन्हें अपने चक्रों की पकड़ महसूस ही नहीं होती।

परम पूज्य श्रीमाताजी का यह कथन अत्यन्त गम्भीर है। यह इस ओर संकेत करता है कि बिना चक्र-बाधाओं को महसूस किए आध्यात्मिक उत्थान प्राप्त करना अत्यन्त कठिन हो सकता है। समस्या को समझने के बाद ही आप इसका समाधान कर सकते हैं।

इसी तथ्य की व्याख्या करते हुए श्रीमाताजी ने बताया है कि जो रोग अस्तित्व में है उनकी कुल संख्या चक्रों के संयोजन और क्रम परिवर्तन (Combinations and Permutations) *के बराबर है। तीनों वाहिकाओं (नाड़ियों) पर इक्कीस चक्र हैं, अतः संयोजन और क्रम परिवर्तन को* 21x20x19x18......3x2x1 *के परिणाम के रूप में गणना की जा सकती है।*

इस अभिव्यक्ति की गणना Integer format *में मैंने अपने कम्प्यूटर पर करने का प्रयत्न किया तो कम्प्यूटर में संख्याएं कम पड़ गईं। जब मैंने स्टर्लिंग की लगभग विधि से इसका अनुमानित मूल्य जानने का प्रयत्न किया तो इसका परिणाम 10 की घात 18* (Ten raised to eighteenth power) *आया। यह विस्मयकारी बड़ी संख्या है जो दस लाख की पाँच घातों के बराबर है। ये दर्शाता है कि रोगों का इलाज खोजने के लिए चिकित्सा शास्त्री और जैव-तकनीशियन बीमारियों की मूल-उत्पति पद्धति खोजने के कितने निराशाजनक कार्य में लगे हुए हैं। साथ ही साथ, यह इस तथ्य का विचार भी देता है कि हम सबमें सूक्ष्म तन्त्र की दशा इतनी सीधी नहीं है जितनी चक्रों की हमारी संवेदना हमें बताती है। निःसन्देह मनुष्य चक्रों की पकड़ की इस विस्मयकारी संख्या को नहीं जान सकता।*

सूक्ष्म तन्त्र की सही-स्थिति जानने तथा भिन्न बाधाओं को ठीक करने के लिए विकसित चैतन्य चेतना वाले व्यक्ति की आवश्यकता होती है। बेलापुर स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सक इस स्तर की चैतन्य-चेतना से सम्पन्न हैं। ये वो लोग हैं जो सूक्ष्म तन्त्र को सन्तुलित करके व्यक्ति को आध्यात्मिक उत्थान के मार्ग पर ले आते हैं।

इससे पता चलता है कि सामान्य जीवनयापन करने वाले लोगों, जिन्हें अद्‌भुत अनुभव प्राप्त नहीं हुए, के लिए स्वीकरणों (Affirmations), *मन्त्रों तथा उपचार विधियों की आन्तरिक कार्य-शैली को समझना और महसूस करना आसान नहीं होता।*

केन्द्र पर दिनचर्या

स्वास्थ्य केन्द्र पर रहते हुए आपका चित्त आध्यात्मिक उत्थान के अतिरिक्त किसी अन्य चीज़ पर नहीं होता। प्रातः आठ बजे सुबह का ध्यान होता है और सायं सात बजे शाम की ध्यान-धारणा जिसमें श्रीमाताजी का एक वीडियो देखना या प्रवचन सुनना भी सम्मिलित होता है। प्रातः चार बजे उठ कर उद्यान में जा कर ध्यान और प्रार्थना करने का अवसर भी आपको

मिलेगा। इस प्रकार से बहुत सुबह के ध्यान का अन्तर भी आप महसूस कर सकेंगे। हमारी परम-पावनी माँ भी प्रातः के ध्यान पर बल देती हैं। सुबह-सुबह उनके मन्त्र बोलते हुए और बाधाएं दूर करने के लिए उनसे प्रार्थना करते हुए जब आप सैर करेंगे तो पृथ्वी माँ के देवी रूप का अनुभव आपको प्राप्त होगा क्योंकि पैरों के माध्यम से आपकी बाधाएं अपने अन्दर खींच लेने में वे आपकी सहायता करती हैं।

दिन में दो बार डॉक्टर आपको मिलेंगे और बताएंगे कि अगली बार मिलने तक आपने कौन-सा उपचार करना है। उपचार का लक्ष्य ईड़ा और पिंगला नाड़ी में सन्तुलन बनाकर सदा सुषुम्ना नाड़ी पर बने रहना है। ऐसा करते हुए वे बता सकते हैं कि अब कौन-से चक्र ठीक होने हैं। इस प्रकार वे सूक्ष्म तन्त्र में निहित बाधाओं के मक्कड़जाल तक पहुँचने का मार्ग खोजते हैं।

स्वास्थ्य केन्द्र पर उपयोग की जाने वाली विधियाँ 'सहजयोग प्रार्थना पुस्तिका'' या अन्य उपचार पुस्तकों में छपी विधियों से भिन्न नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात तो ये है कि वहाँ की भूमि चैतन्य से परिपूर्ण है। हमारी परम-पावनी माँ का चित्त स्वास्थ्य केन्द्र पर होता है और वही सारे रोग दूर करती हैं। ये बात समझ लेना आवश्यक है कि केवल श्रद्धा से ही देवी का साक्षात्कार किया जा सकता है। यहाँ आकर आप समर्पित हो जाते हैं क्योंकि चित्त-विक्षेप के लिए यहाँ और कुछ भी नहीं होता। श्रीमाताजी कहती हैं कि प्रार्थना सहजयोगी का सबसे बड़ा हथियार है। परम पावनी श्रीमाताजी के प्रति श्रद्धा और समर्पण तथा प्रभावशाली ढंग से प्रार्थना की विधि सीखने के लिए बेलापुर स्वास्थ्य केन्द्र अत्यन्त उपयुक्त स्थान है।

६. श्री पी.के. साल्वे कला प्रतिष्ठान, वैतरणा, महाराष्ट्र

भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं ललितकला अकादमी, वैतरणा, महाराष्ट्र, को परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ने एक अत्यन्त गौरवशाली परियोजना के रूप में स्थापित एवं आशीर्वादित किया है।

झीलों और बन्धों के हरे-भरे क्षेत्र में स्थित वैतरणा मुम्बई से लगभग 100 किलोमीटर तथा नासिक से परे राष्ट्रीय मार्ग सं.3 (मुम्बई आगरा मार्ग) पर स्थित है तथा मध्य रेलवे के खारदी स्टेशन से (25 किलोमीटर) यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है।

सरिताओं, तरंगों और प्राकृतिक परिदृश्य से परिपूर्ण चालीस एकड़ भूमि पर यह अकादमी बनाई गई है। घने जंगलों से घिरे हुए मोदक सागर और ताँसा बान्ध इसके समीप स्थित हैं।

हमारी परमेश्वरी माँ के आदेशानुसार अकादमी के भवन की वास्तुयोजना बनाई गई थी। इसमें बीचों-बीच एक सहन है और एक मंच है जिसपर छत है।

शिक्षा की अवधि

अकादमी सत्र की अवधि

पहला सत्र – *1 जनवरी से 15 अप्रैल (15 से 30 मार्च छुट्टियाँ)*

दूसरा सत्र – *15 जून से 15 सितम्बर*

तीसरा सत्र – *16 सितम्बर से 16 दिसंबर*

व्यक्तिगत पाठ्यक्रमों की अवधि पाठ्यक्रम के Syllabus *में दी गई है।*

लक्ष्य वक्तव्य

आत्मा बनने के लिए संगीत दिव्य-प्रेरणा है। संगीत अकादमी का यही मुख्य उद्देश्य है।

अकादमी –

ये वो संस्थान है जहाँ कला सीखी जा सकती है और शोध किए जा सकते हैं और जहाँ पर विद्यार्थियों को अन्तरअवलोकन, चिन्तन और अपने आप पर आध्यात्मिक शोध करने का पर्याप्त समय प्राप्त होता है। सूक्ष्म एवं स्थूल स्तर पर कला, अन्तर्आत्मा को पहचानने, उसे अनुभव करने और दिव्यता के स्तर तक ऊँचा उठाने का माध्यम है।

प्रस्तावना –

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी द्वारा प्रतिपादित की गई शिक्षाओं, जिनका मूल तत्व सहजयोग में निहित है, को आधार बनाकर अकादमी के नियम बनाए गए हैं। अकादमी के अन्दर और बाहर विद्यार्थियों के लिए इन विवेकशील नियमाचरणों का सम्मान करना अनिवार्य

है क्योंकि अध्ययन काल में ये विद्यार्थी अकादमी का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उपयुक्त दृष्टिकोण अपनाया जाना आवश्यक है। अकादमी के विद्यार्थी ग्राहक नहीं हैं वे तो भारतीय आध्यात्मिक संगीत के विद्यार्थी हैं, उस संगीत के जिसे श्रीमाताजी की अकादमी की पावन शिक्षाओं के अनुरूप सिखाया जाता है। यहाँ रहते हुए उन्हें हमेशा ध्यान रखना है कि यहाँ रहना उनका अधिकार नहीं है, ये तो एक आशीर्वाद है जिसकी वर्षा श्रीमाताजी उन पर करती हैं। विद्यार्थी ने यदि इसके स्वभाव को समझना है तो उसे इस सत्य की समझ होनी आवश्यक है।

अकादमी में प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए सूचना

आन्तरिक ढाँचा :

अकादमी में आपके प्रवास को सुखद बनाने और आपकी शिक्षा को स्मरणीय बनाने के लिए निम्नलिखित मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं:

1. *दो व्यक्तियों के लिए आरामदेह भारतीय शैली के कमरे और परिवार के लिए स्वतन्त्र रूप से कमरा।*
2. *स्वच्छतापूर्वक बनाया गया स्वास्थ्यप्रद पोषक भारतीय शाकाहारी और माँसाहारी भोजन।*
3. *पुस्तकालय, अध्ययन एवं अभ्यास के लिए कमरे जिनमें पुस्तकें, सी.डी. कैसेट्स और अध्ययन की वस्तुएं सन्दर्भ के लिए उपलब्ध कराई जाती है।*
4. *टी.वी., वी.सी.डी./डी.वी.डी. तथा ऑडियो आदि विद्युत उपकरण।*
5. *सम्पर्क सुविधाएं :-*
   (क) ई-मेल के लिए इंटरनेट सुविधा, वैब कान्फ्रेसिंग एवं सर्फिंग (Web conferencing and surfing)।
   (ख) टेलिफोन और फैक्स (अन्तर्राष्ट्रीय टेलिफोनों के लिए फोन कार्ड खरीदे जा सकते हैं।)
   (ग) स्कैनिंग और फोटोकॉपिंग
6. *रिकार्डिंग के लिए संगीत स्टूडियो (निर्माणाधीन) विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए उपयोगी।*

वीज़ा एवं अप्रवासन (Visa and Immigration)

1. *अकादमी में छ: महीनों से अधिक रहने के इच्छुक विद्यार्थियों को अपने सम्बन्धित देशों से भारतीय वीज़े का प्रबन्ध करना होगा। अपने देशों में भारतीय दूतावासों के स्थान जानने के लिए सम्पर्क :-*

   a. http://passport.nic.in   b. http://www.india-visa.com

2. **वाद्य यन्त्र :**
सीखने के लिए वाद्य यन्त्र या तो खरीदे जा सकते हैं या अकादमी में उपलब्ध वाद्य यन्त्रों का उपयोग किया जा सकता है। व्यक्तिगत वाद्य यन्त्र रखने का परामर्श दिया जाता है।

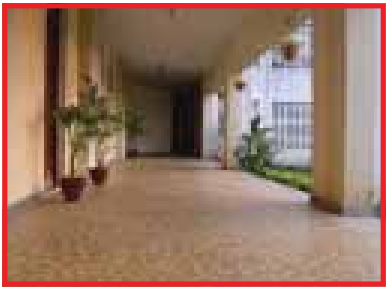

सम्पर्क सूचना :

अकादमी का पता :-

वैतरणा बाँध के समीप (मोदक सागर के नाम से प्रसिद्ध)
ग्राम-बेलवाड, डाकखाना - वैतरणा, तालुका - सहापुर,
जिला-थाणे-421304 (महाराष्ट्र) भारत।
फोन : +912527 248528 / 248530
(भारतीय समय के अनुसार 10.00 बजे प्रात: से 6.00 बजे संध्या की बीच फोन करें)
प्रिंसिपल - डा. अरुण आप्टे
मोबाइल नं. - +91 9325316580
अकादमी - homepage : www.pksacademy.com

मुम्बई दफ्तर :

श्री पी.के. साल्वे कला प्रतिष्ठान
612-बी, उर्मिला कोपरेटिव हाऊसिंग सोसायटी, शिवाजी चौक
सहर रोड, अन्धेरी ईस्ट, मुम्बई-400069
फोन : +91 22 2684 3169, फैक्स- +91 22 2683 1314
E-mail : draruapte@yahoo.co.in
(भारतीय समय के अनुसार 10.00 बजे प्रात: से 6.00 बजे सन्ध्या के बीच फोन करें)

संगीत अकादमी के उद्घाटन के अवसर पर 31 दिसम्बर 2002 और 1 जनवरी 2003 को वैतरणा, भारत में परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी द्वारा दिए गए प्रवचन से उद्धरण :

"मुझे ये कहना है कि जीवन संगीतमय होना चाहिए। 'संगीतमय' अर्थात मानव मस्तिष्क

की स्थिति को सुधारकर इसे लयबद्ध और व्यवस्थित बनाना। ये उपलब्धि पाए बिना कोई लाभ नहीं। आपमें और अन्य लोगों में क्या अन्तर होगा? आप भी अन्य लोगों की तरह से लड़ते रहते हैं।

आवश्यक बात तो ये है कि हमारे हृदयों में कहीं अधिक प्रेम एवं श्रद्धा होनी चाहिए। इससे आपको भी शान्ति मिलेगी और अन्य लोगों को भी। शान्ति के बिना संगीत अर्थहीन है। इस भवन का निर्माण हमने बाबा-मामा के आदर्शों के अनुरूप किया है। लोगों के जीवन में संगीत स्थापित करना और पूरे वातावरण को शान्त बनाना इसका उद्देश्य है। आज विश्व को शान्ति की आवश्यकता है, बाकी सब कुछ अर्थहीन हैं... ।"

"... मेरा आशीर्वाद है कि यह संस्था फले-फूले और जो लोग इसमें शिक्षा प्राप्त करें वे संगीत सीखकर अपने जीवन को संगीतमय बनाएं। मुझे आशा है कि आप मेरी इच्छा को पूर्ण करेंगे। **जब भी आपको क्रोध आए, क्रोध का दौरा जब भी आपको पड़े, जब भी आपकी शिकायत करने की इच्छा करे तो स्वयं से कहें कि मैं सहजयोगी हूँ, मैं भिन्न व्यक्ति हूँ। किस प्रकार श्रीमाताजी ने मेरा अन्तः परिवर्तन किया है।** *आप यदि इस बात को समझ जाएंगे तो आत्म-सम्मान का विवेक आपके अन्दर जागृत हो जाएगा। ये भावना जागृत हुए बिना कोई लाभ नहीं, भौतिक परियोजनाओं का कोई लाभ नहीं है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ना आपको शोभा नहीं देता। अब आप सन्त और पैगम्बर बन गए हैं। अत्यंत उच्च श्रेणी के व्यक्ति। परन्तु इस तथ्य के प्रति आप संवेदनशील नहीं है। आप ये नहीं समझते कि आप सन्त हैं, पैगम्बर हैं। आप स्वयं को गली के भिखारी सम मानते हैं, जो आप नहीं हैं। आज मैं विशेष रूप से आपको आशीर्वाद देती हूँ कि आप सब संगीतमय हो जाएं.... आज मैं इसलिए आपको आशीर्वाद देना चाहती थी कि आप स्वभाव से पूर्णतः संगीतमय, लयबद्ध और अन्य लोगों का मनोरंजन करने वाले बन जाएं, झगड़ालू नहीं... ।"*

"...सभी देशों की अपनी समस्याएँ हैं, परन्तु हमारे पास हमारे संगीत के रूप में एक अत्यन्त महान् सम्पदा है। संगीतकार नहीं, संगीत। अतः संगीतकारों को चाहिए कि सहजयोग अपनाएं। ध्यान धारणा करें। कोई संगीतज्ञ यदि धन-लोलुप है तो उसके लिए आप कुछ नहीं कर सकते। उसे या तो संगीत लोलुप होना चाहिए या धन लोलुप। वो जब धन लोलुप होते हैं तो, मैं यह सोचती हूँ वो कभी अपना सम्मान नहीं कर सकते। क्योंकि यदि आपके पास संगीत है, संगीत की प्रतिभा है तो क्यों आपको धन की चिन्ता करनी चाहिए? जितना भी धन आप उन्हें देते चले जाएं वो कभी सन्तुष्ट नहीं होंगे। मैंने बहुत से महान संगीतकारों को देखा है जो कभी भी धन लोलुप न थे, और न कभी जिन्होंने सत्ता की चिन्ता की। आज भी हमारे यहाँ बहुत से संगीतज्ञ हैं जो , मैं कहूँगी, संगीत की पराकाष्ठा (Last words) *हैं। जो लोग ऐसे हैं वे अत्यन्त विनम्र हैं। वो हमेशा आपसे कहेंगे कि ''हमें बहुत कुछ सीखना है। हमें अभी बहुत कुछ समझना है।"*

अत: बाबा मामा तथा अपने पिता की मूर्ति को देखकर मैं अत्यन्त द्रवीभूत एवं प्रभावित हुई। इसलिए नहीं कि वे मेरे भाई या पिता थे परन्तु इसलिए कि वे अत्यन्त-अत्यन्त महान मानव थे और उनकी महानता ने मेरे हृदय को छू लिया। बाबा में यह गुण था कि वह अत्यन्त प्रेममय एवं क्षमाशील व्यक्ति थे। अत्यन्त विनम्र एवं प्रेममय। शोहरत की उसने कभी चिन्ता नहीं की और न ही कभी उसने सोचा कि वह कौन-से पद पर है। उसका विनम्र स्वभाव अत्यन्त स्वाभाविक और अत्यन्त मधुर था। और बचपन से ही वे मेरे साथ थे।''

"... तो अब उनके प्रेम एवं स्नेह के परिणाम स्वरूप हमारे पास बहुत से संगीतज्ञ हैं, यहाँ बहुत से लोग हैं। जो कार्य उन्होंने सहजयोग के लिए किया उसके लिए मैं बाबा मामा तथा अपने पिता की आभारी हूँ।

परमात्मा आप सबको धन्य करें।

हाल ही में अकादमी आए एक सहजयोगी का अनुभव

1. आस्ट्रिया के Anand Schreuer

हमारी परम पूज्य श्रीमाताजी की कृपा से मुझे उस आशीर्वादित संस्था में कुछ महीने अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसे मैं ''हमारी अकादमी'' कहता हूँ।

पीछे की ओर दृष्टि डालते हुए मैं देख सकता हूँ कि अहं तथा आत्मा के अन्य शत्रुओं का वज़न कितना कम हो गया है।

इस दिव्य स्थल पर रहने का अनुभव अत्यन्त आनन्ददायक था। बहुत सारे पक्ष ऐसे हैं जिन पर विश्वास नहीं होता और जिन्हें वर्णन करना भी कठिन है। विश्व भर से आए सहज विद्यार्थियों के साथ विशाल आश्रम में रहने की बहु-सांस्कृतिक सुगन्ध है। वहाँ एक मंच है जिस पर हाल ही में अकादमी के शुभारम्भ के अवसर पर साक्षात श्री आदिशक्ति के पावन चरण कमलों में पूजा अर्पित की गई थी। इसी मंच पर हम सहजियों को ध्यान धारणा करने की अनुमति है। अकादमी का भवन अविश्वसनीय ढंग से सुन्दर और व्यवहारिकता से परिपूर्ण है और इस बात पर आश्चर्य नहीं होता क्योंकि भवन की रूपरेखा साक्षात् परम पावनी श्रीमाताजी द्वारा बनाई गई है।

पूरा आश्रम चैतन्य से परिपूर्ण है और हम निरन्तर इस चैतन्य सागर में गोते लगाते हैं। अकादमी के चहुँ ओर जंगल है और वैतरणा नाम के ग्राम समेत ग्रामीण क्षेत्र। परम पूज्य श्रीमाताजी का अपनी इस नई परियोजना पर पूरा चित्त है और यह बात हमारे लिए स्पष्ट है। श्रीमाताजी स्वयं अकादमी में होने वाली गतिविधियों की पूछ-ताछ करती हैं कि वहाँ क्या चल रहा है और कौन-कौन लोग वहाँ पर हैं? अपनी परमेश्वरी गुरु के प्रेम एवं स्नेह को उस दिव्य स्थल पर हर कदम के साथ हम महसूस कर सकते हैं।

मुड़कर पीछे की ओर देखते हुए सहज शब्दावली में यदि मैं कहूँ, तो मैं पाता हूँ कि

श्रीमाताजी ने मुझे सावधानी पूर्वक चैतन्य लहरियों में ऊपर उठा लिया और यहाँ आकर अब मैं बहुत हल्का महसूस करता हूँ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत जिसका अध्ययन मैं कर रहा हूँ वह इतना सुन्दर है कि संगीत में ही अथाह चैतन्य है और यह मानव को परिवर्तित करने में सक्षम है। गायक और श्रोता, दोनों के हृदयों को यह छू लेता है। संगीत, नृत्य और चित्रकारी के साथ सहज का सम्मिश्रण, कम से कम मेरे लिए तो चैतन्य लहरियों के विस्फोट सम हैं।

हाल ही में अकादमी के विद्यार्थियों को परम पूज्य श्रीमाताजी के श्री चरणों में संगीत अर्पण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुचिपुड़ी नृत्य का अध्ययन करने वाली सात वर्षीय बालिका अकादमी की सबसे छोटी विद्यार्थी थी। 24 दिसम्बर को अपनी अन्य बड़ी सहज बहनों के साथ मिलकर उसने श्रीमाताजी के सम्मुख नृत्य का हृदयस्पर्शी प्रदर्शन किया। उसके नृत्य से द्रवीभूत होकर बाद में बहुत से भारतीयों ने अकादमी में प्रवेश लिया।

अकादमी आवासीय छात्रों को बहुत सुन्दर कमरे की सुविधा प्रदान करती है जिसमें प्रायः दो भाई, दो बहनें रहते हैं। स्नानागार हर कमरे के साथ जुड़ा हुआ है। सारा कार्य सहजयोगी करते हैं। वे ही सफाई करते हैं और वे ही खाना बनाते हैं। हम अपने पाठ ग्रहण करने, अध्ययन करने और मौज मनाने के लिए पूरी तरह स्वतन्त्र हैं।

इस समय जन्म लेकर हमारी परम पावनी माँ द्वारा प्रदान की गई दिव्य सुविधाओं का आनन्द उठाने का अवसर प्राप्त करना कितना बड़ा वरदान है?

7. नारगोल परियोजना—गुजरात, भारत में ऐतिहासिक स्थल जहाँ पर ब्रह्माण्ड का सहस्त्रार खोला गया

नारगोल-सहजयोगियों के लिए पावन तीर्थ स्थल

दक्षिणी गुजरात के सांजन (Sanjan) से 16 कि०मी० दूर, महाराष्ट्र सीमा के समीप, सुन्दर समुद्र तटपर नारगोल नामक छोटा-सा गाँव स्थित है। सांजन और उमरगाँव के बीच की संकरी खाड़ी किसी जमाने में अत्यन्त चहल-पहल वाली बन्दरगाह हुआ करती थी और यही वो स्थान था जहाँ 1000 से भी अधिक वर्ष पूर्व पारसी लोग उतरे तथा नारगोल, सांजन तथा आस-पास के इलाकों में बस गए। वास्तव में, ये कहा जाता है कि आठवीं शताब्दी में भारत के गुजरात क्षेत्र में ज़ोरास्ट्रियन शरणार्थी पहुँचे।

श्रीमाताजी और सर सी.पी. 3 मई 1970 को नारगोल पहुँचे और Blue Heaven नामक बंगले में रुके। यह बंगला बल्सर जिले के तत्कालीन कलेक्टर का था। अगले दिन, 4 मई की शाम को श्रीमाताजी ने ब्रह्माण्ड का सहस्रार खोलने का निर्णय किया। नारगोल समुद्र तट पर 12 बजे दोपहर वे स्थानीय भाषा में 'सारे वृक्ष' नामक (Casuarina) वृक्ष के नीचे ध्यानगम्य हो गईं और 5 मई 1970 की प्रात: 04.40 बजे, ज्योंही ब्रह्माण्ड का सहस्रार खुला, उन्हें ज्योतिर्गम्य अवस्था (Englightenment) अनुभव हुई।

विएना में हुए एक साक्षात्कार में अन्तिम चक्र खोलकर सामूहिक आत्म-साक्षात्कार द्वारा मानवता का उद्धार करने के अपने दिव्य उद्देश्य की घटना को प्रेमपूर्वक पुन:स्मरण करते हुए श्रीमाताजी ने बताया:

"...मैं मार्ग और उपाय खोज रही थी, अपने अन्दर, अपनी ध्यानधारणा की शैली के माध्यम से अपने अन्दर मैं इस कार्य को कर रही थी-अर्थात् मैं सभी संयोजनों और क्रमपरिवर्तनों को कार्यान्वित कर रही थी। मैं किसी एक व्यक्ति से मिलती तो देखती कि उसमें क्या समस्या है और उन पर काबू कैसे पाया जा सकता है? इस प्रकार मैं उस व्यक्ति का अन्दर से अध्ययन करने का प्रयत्न करती।

"यह पता लगाने के लिए मैं बहुत से लोगों के पास गई परन्तु पाया कि वे सब महापाखण्डी हैं। मैं ऐसे बहुत से गुरुओं से मिली, अधिकतर से, परन्तु उनसे मिलकर मुझे आश्चर्य हुआ कि वे सब पाखण्डी थे..."

"मैं वहाँ गई परन्तु मेरे पति ने कहा, 'नहीं, मैं तुम्हें इस कार्यक्रम पर जाने की आज्ञा नहीं दूंगा।' अत: उन्होंने अपने प्रबन्ध किए...। वहाँ जाकर मैं वहाँ होने वाली हर गतिविधि को देख सकी और यही वह दिन था जब मैंने कहा कि अब अवश्य मुझे अन्तिम चक्र खोलना होगा।

CMYK

नागरोल का ब्ल्यू हैवन अतिथि आवास

अत: अन्तिम चक्र खुला और मैंने कुण्डलिनी को देखा जो हमारे अन्त:स्थित 'आदिऊर्जा' हैं, जो हमारे अन्त:स्थित 'आदिशक्ति' हैं। इन्हें मैंने दूरबीन की तरह खुलते हुए देखा। तत्पश्चात् मैंने पूरी चीज को खुला हुआ देखा और किरणों की मूसलाधार बारिश अपने सिर से चहुँ और प्रवाहित होती देखी।

मुझे लगा कि मैं खो गई हूँ; मुझमें कुछ शेष नहीं है, केवल चैतन्य (Grace) ही सर्वत्र मौजूद है। यह सब मैंने पूरी तरह से अपने साथ घटित होते हुए देखा.."

(परम पूज्य श्रीमाताजी, विएना, आस्ट्रिया, 09.07.1985)

मार्च 1972 में Life Eternal Trust के एक ट्रस्टी के साथ आकर श्रीमाताजी ने पुन: नारगोल की भूमि को आशीर्वादित किया। उसके विनम्र प्रार्थना करने पर श्रीमाताजी ने नारगोल के ऐतिहासिक सारु वृक्ष को पहचाना जिसके नीचे बैठकर ब्रह्माण्ड का सहस्त्रार खोलने के लिए उन्होंने ध्यान-धारणा की थी। उसके पश्चात् 1975 से सहजयोगी ध्यान-धारणा या हवन करने के लिए या सहस्त्रार पूजा के समय उनके चरण-कमलों में निराकार पूजा समर्पित करने के लिए वहाँ आते रहे हैं।

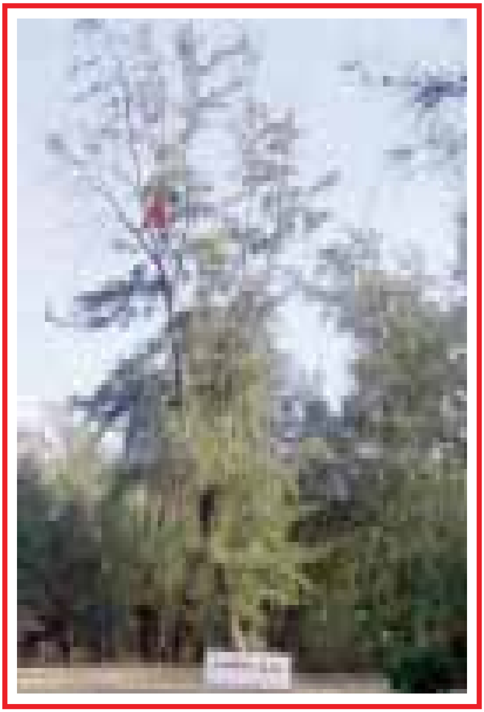

निर्मल वृक्ष

सहजयोग आरम्भ होने के 25 वर्ष पश्चात् अक्टूबर 1995 में पूरे विश्व को साक्षात् उनके चरण-कमलों में नारगोल में अन्तर्राष्ट्रीय दिवाली पूजा अर्पण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर भारत से

दो हजार पाँच सौ सहजयोगी और विदेशों से सौ सहजयोगी सम्मिलित हुए।

मार्च 2003 में स्थापना के पश्चात् से ही Life Eternal Trust गुजरात को यह ऐतिहासिक भूमि अधिग्रहण करने और उसका विकास करने का कार्य सौंपा गया है। नारगोल की इस पावन भूमि पर यह परियोजना खड़ी करने, और निकट भविष्य में इस भूमि पर एक आश्रम तथा गैर-सरकारी संस्था के लिए भवन बनाने की दिशा में काफी प्रयत्न किए जा चुके हैं। हमारी सामूहिक इच्छा है कि छिन्दवाड़ा जन्म स्थल के विकास के साथ-साथ यह स्थान भी सहजयोगियों के लिए पावन तीर्थ बने।

हाल ही में ऐतिहासिक सारु वृक्ष-'निर्मल वृक्ष', जो कि सशक्त खड़ा हुआ है और अपनी करुणा की छाया तथा अथाह चैतन्य फैला रहा है—के इर्द-गिर्द दीवार खड़ी की गई है।

आश्चर्य की बात है कि 1974 के बाद हाल ही में किए गए सर्वे में भारतीय समुद्र तट पर स्थित गुजरात में नारगोल और गोवा में कोवालम समुद्रतटों (Beaches) को सर्वोत्तम घोषित किया गया है।

★ विश्व का सहस्त्रार खोलने के विषय में परम पूज्य श्रीमाताजी द्वारा किए गए रहस्योद्घाटनों के कुछ अंश

"ज्योंही सहस्त्रार खुला पूरा वातावरण अद्‌भुत चैतन्य से भर गया और आकाश में अद्‌भुत प्रकाश छा गया। सभी कुछ (चैतन्य और प्रकाश) मूसलाधार बारिश या झरने की तरह से अत्यन्त शक्तिपूर्वक पृथ्वी पर इस प्रकार वापिस आया जिसके विषय में मैंने सोचा भी नहीं था और मैं स्तब्ध रह गई। घटना इतनी शक्तिशाली और अनापेक्षित थी कि मैं अवाक् रह गई और इसकी भव्यता को देखकर एकदम मौन हो गई।

मैंने आदिकुण्डलिनी को बहुत बड़ी भट्‌टी की तरह से उठते हुए देखा, यह भट्‌टी अत्यन्त मौन थी परन्तु इसकी लपटें इस प्रकार दिखाई देती थीं जैसे पिघली हुई धातु से बहुत से रंग फूट रहे हों। इसी प्रकार से कुण्डलिनी भी, भट्‌टी की तरह से, एक सुरंग की तरह से दिखाई दी, जैसे कोयला जलाकर विद्युत उत्पादन करने के लिए ये संयंत्र लगे हुए हैं और दूरबीन की तरह से एक के बाद एक शू, शू, शू करके वह इस प्रकार फैलती गई। इस प्रकार से।

देवी-देवता आए और अपने सिंहासनों पर, स्वर्ण-सिंहासनों पर बैठ गए और पूरे सिर को गुम्बद की तरह से खोल दिया और इस मूसलाधार बारिश ने मुझे पूरी तरह से नहला दिया। मैं सब कुछ देखने लगी और आनन्दलीन हो गई। मानो कोई कलाकार अपने सृजन को देख रहा हो, मैंने इस उपलब्धि का आनन्द महसूस किया।

इस सुन्दर अनुभव से बाहर आकर मैंने आस-पास देखा और पाया कि मनुष्य कितने अन्धे हैं! और मैं एकदम मौन हो गई तथा इच्छा की कि इस अमृत से भरने के लिए मुझे प्याले मिलने चाहिए...।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, पैरिस, फ्रांस 05.05.1982)

"आज हमारे लिए महान् दिन है, हम सभी सहजयोगियों के लिए क्योंकि इस दिन... सहस्त्रार खोला गया था। मुझे कहना चाहिए कि यह मात्र एक चमत्कार था क्योंकि मैं नहीं जानती थी कि मैं ऐसी स्थिति में पहुँच गई हूँ कि ये कार्य कर सकूं। अत: मैं प्रतीक्षा करना चाहती थी, परन्तु कुछ ऐसी घटनाएं घटी जिन्होंने मुझे ये सोचने पर विवश कर दिया कि सहस्त्रार खुलना आवश्यक है। ये ऐसी स्थिति थी जिसमें मुझे लगा कि यदि अब मैंने इस कार्य में विलम्ब किया तो इससे इन कुगुरुओं को अपनी बेवकूफी सर्वत्र फैलाने में सहायता मिलेगी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली, 07.05.1995)

जब मेरा जन्म हुआ तो लोगों को देखकर मुझे सदमा पहुंचा। मेरे विचार से इस समय मुझे बहुत साधक नहीं मिले...पहले तो मुझे लगा कि मैं कुछ जल्दी आ गई हूँ...परन्तु बाद में मैंने इन कुगुरुओं को लोगों को आकर्षित करके उन्हें वश में करने का प्रयत्न करते हुए देखा। इसने मुझे वास्तव में, सोचने पर विवश किया कि अब बेहतर होगा कि मैं ये चिन्ता छोड़ दूं कि लोग कैसे हैं और कार्य आरम्भ कर दूँ। और इस प्रकार से भारत में प्रथम ब्रह्मरन्ध्र छेदन घटित हुआ। यह 5 मई 1970 की प्रात:काल थी।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली 06.06.1993)

*"कुण्डलिनी जब आज्ञा चक्र में प्रवेश करती है तो इसे ज्योतिर्मय करती है, तब आपके अन्त:स्थित ईसामसीह ज्योतिर्मय हो उठते हैं या जाग जाते हैं। वे अहं और प्रतिअहं के इन दोनों गुब्बारों को सोख लेते हैं और पूरा आज्ञा चक्र खुल जाता है। इसी के साथ-साथ सहस्त्रार भी खुलता है। मैंने विराट के सहस्त्रार को खुलते देखा है। यह अग्नि-जिह्वाओं (*Tongues of Flames*) की तरह था। जैसे मानव मस्तिष्क की यदि आप चीर-फाड़ करें, इन्हें आड़ा काटें (*Cross Sections*) तो यह शोलों की पंखुड़ियों की तरह से दिखाई देता है। मध्य में यह पीले छेद की तरह से दिखाई देता है। सहस्त्रार का खुलना अकस्मात् होता है। एक आवाज के साथ यह खुलता है।"*

आप जानते हैं कि "मेरा निवास सहस्त्रार में है। सहस्त्र दल कमल पर मैं अवतरित हुई और इसी कारण से मैं इसका भेदन भी कर सकी।"

(परम पूज्य श्रीमाताजी, सोरंटो, इटली 06.05.1989)

वर्ष 1946 के अन्त में मैं इस परिणाम पर पहुँची कि मुझे ये कार्य अत्यन्त चुपके से करना होगा और अपनी अन्तर्गतिविधियों के माध्यम से खोज निकालना होगा कि मनुष्य के चक्रों तथा तीन नाड़ियों में समस्या का मुख्य कारण क्या है?

अन्तत: वर्ष 1970 में एक तथाकथित गुरु की गोष्ठी में मुझे जाना पड़ा क्योंकि उसने मेरे पति से इसके लिए अनुरोध किया था। मेरे पति के एक मित्र वहाँ रहते थे और उन्होंने मेरी इस यात्रा का प्रबन्ध किया। इस व्यक्ति (कुगुरु) को देखकर मैं हैरान थी क्योंकि वह मुझसे आयु

में दस वर्ष छोटा होते हुए भी मुझसे बीस वर्ष बड़ी आयु का प्रतीत होता था। परन्तु वह सभी लोगों को सम्मोहित कर लेता और लोग चीखते-चिल्लाते और कुछ तो कुत्तों की तरह से भौंकते। सम्मोहन द्वारा वह लोगों को उनके पूर्वकाल में ले जाता था।

इस घटना से मुझे बहुत बड़ा सदमा पहुँचा। एक पेड़ के नीचे बैठकर मैं देख रही थी कि वह क्या कर रहा है? रात्रि के समय मैं अकेली समुद्र तट पर चली गई और वहाँ बैठकर ध्यान करने लगी कि किस प्रकार से अपनी कुण्डलिनी का उपयोग मैं लोगों को सामूहिक आत्म-साक्षात्कार देने के लिए कर सकती हूँ। यही वह क्षण था जब यह कार्यान्वित हुआ और खड़ाक से हो गया। मैं हैरान थी कि तनिक सी गहनता में पैंठने मात्र से मैं इसे कार्यान्वित कर सकी। अनुभव इस प्रकार था: मैंने देखा कि मेरी कुण्डलिनी बड़ी तीव्रता से उठ रही है और दूरबीन की तरह से खुल रही है। इसका रंग अत्यन्त सुन्दर था, जैसा आप तपे हुए लोहे की, लालिमा में गुलाब का रंग देखते हैं परन्तु यह अत्यन्त शीतल एवं सुखद था। कुण्डलिनी मेरे ब्रह्मरन्ध्र को पार करके निकल गई, मेरा ब्रह्मरन्ध्र बचपन से ही खुला हुआ था। यह दिव्य चैतन्य लहरियाँ (पूर्ण ब्रह्म) प्रवाहित कर रहा था। इस नव अनुभव ने मुझे अपनी दिव्य शक्ति को पहचानने का एक नया आयाम प्रदान किया। एक अत्यन्त आशाजनक वास्तविकता के रूप में इसका उद्‌भव हुआ कि मेरे सामूहिक कार्य आरम्भ करने का समय आ गया है। मैंने पाया कि मेरा पूर्ण अस्तित्व महान् शान्ति एवं आनन्द से शराबोर हो गया था। मैंने अपनी आँखें खोलीं, इस कुगुरु के पास गई और उसे बताया, "अब सभी लोगों का अन्तिम चक्र खोला जा सकता है।" यह देखकर मैं हैरान थी कि सूक्ष्म केन्द्रों और तीन नाड़ियों का, जिन्हें मैं बचपन से ही जानती थी, उसे बिल्कुल भी ज्ञान न था। मैंने पाया कि बहुत से तथाकथित गुरु असत्य और धन लोलुप थे। कुछ सम्प्रदाय सम्मोहन के माध्यम से ईसामसीह विरोधी अनैतिक गतिविधियों को बढ़ावा देकर, या ये कहकर कि विश्व का अन्त होने वाला है, ये कार्य कर रहे थे।

(परम पूज्य श्रीमाताजी 'पराआधुनिक युग' (प्रथम संस्करण) अध्याय 9)

कुछ महत्वपूर्ण संस्थानों तथा परियोजनाओं की उनके सम्पर्क पते/कम्प्यूटर सूचना/समाचार पत्रिकाओं/समाचार पत्रों और विश्वभर में नियमित रूप से छपने वाली सहज पत्रिकाओं के सदस्यता शुल्क की सूची:

Sahaja Yoga Mandir
(Ashram at Delhi, India)
C-17, Qutab Institutional Area
New Delhi 110016 (India)
Tel.: +91-11-26966652
Fax: +91-11-26866801

Nirmal Dham
Sahaja Yoga Ashram
Behind BSF Camp Chhawala
Gaon, Delhi-110041, India
Ph.: +91-11-25316826

Pratishthan
NDA Road, Near Chandni Chowk,
Pune-411023, Maharashtra, India

Vishwa Nirmala Prem Ashram (NGO)
Home for the destitute women
Plot No. 9, Institutional Area,
Greater Noida, U.P. (India)
Tel. +91-120-2230681

Sahaja Yoga Health & Research Centre
Home for the destitute women
Plot No. 9, Institutional Area,
Greater Noida, U.P. (India)
Tel. +91-120-2322053

International Sahaja Public School
Talnoo, Dharamshala Cantt.
Distt. Kangra H.P.-176216 India
site : www.sahajapublicschool.org

International Sahaja School
Canajoharie, NY, USA
Canajoharie.school@sahajayoga.org

Sahaja Kindergarden and Ashram
Borotin, Czech Republic
http://www.nirmala.cz/borotin,
borotin@nirmala.czb

Nirmal Transformation Pvt. Ltd.
Plot No.10, Bagyachintamani Hsg. Soc,Kothrud, Paud Road,
Pune-411038, Maharashtra (India)
Ph No.: +91-20-25286537
email : sale@nitl.co.in
Website : www.nitl.co.in

Sahaja Yoga Research & Health Center,
Plot # 1, Sector # 8,
Param Pujjya Shri Mataji Nirmala Devi Marg,
CBD, Belapur,
Navi Mumbai-400 703,
Maharashtra, (India)
Phone: +91-22-27576795,
27571341, 6795
sahaja.center@gmail.com

Shri P K Salve Kala Pratishthan
Near Vaitarna Dam,
Village Belvad, Taluka Sahapur,
District Thane, Maharashtra, India
URL : www.pksacademy.com

Publications :

Subscription rates are subject to revision. The quoted rates are updated as on Jan. 2005.

Chaitanya Lahari (Marathi) Rs.300/- annually, 6 issues per year
Correspondence: Nirmal Transformation Pvt. Ltd.
Plot No.8, Chandragupt Hsg. Society,
Kothrud, Paud Road,
Pune 411029, Maharashtra, India
For Subscription: Demand Draft in favour of "Nirmal Transformation Pvt. Ltd." payable in Pune.

Yuvadrishti (free downloadable pdf file from NITL website)
Correspondence : www.nitl.co.in
Plot No.8, Chandragupt Hsg. Society, Kothrud, Paud Road, Pune - 411038.
Tel. 91- 20 - 25286537

Chaitanya Lahari (Hindi)
Correspondence: Nirmal Transformation Pvt. Ltd.
For Subscription: Demand Draft in favour of Nirmal Transformation Pvt. Ltd. payable in Delhi. Rs. 360/- annually 6 issues per year

Divine Cool Breeze (Indian Edition) Rs.360/- annually 6 issues per year
Correspondence: Nirmal Transformation Pvt. Ltd.
For Subscription: Demand Draft in favour of Nirmal Transformation Pvt. Ltd. payable in Delhi.
For more information like books and others visit www.nitl.co.in

Divine Cool Breeze (International Edition)
Annual Subscription
From 30th July 2006 onwards the address for sending checks/bank drafts for Divine Cool Breeze Magazine Subscription is given below. The checks should always be in favour of "Divine Cool Breeze".

Divine Cool Breeze	US ($ 30)* Per Annum for six issues
C/O Sarvesh Prakash Singh	US ($ 5.50)* for each back issue
42036 Glynn Tarra Place	US ($11.00)* for the special issues.
Leesburg, VA 20176	(* *Paypal*)
dcb108@yahoo.com	

A few selected URLs (online site address) to view International Sahaja Yoga sites and related Sahaja information like Newsletter:

http://www.nitl.co.in

http://www.sahajayoga.org/ Sahaja Yoga International Site

http://www.sahajayoga.org/swan/ Sahaja world wide announcements and news

http://www.sahajayoga.org.in/ India News Letter/SITA India

http://www.nirmalnagari.org

http://www.sol.com.au/kor/home.htm Knowledge of Reality; Australia magazine

http://www.amruta.org

http://www.sahaj-az.blogspot.in/2009/01/nirmala-vidya.html

http://www.valaya.co.uk/IN-DEEP.htm Excerpts of Mother's talks

http://www.daisyamerica.com/ Sahaja Book Publication

http://www.sakshi.org Sakshi Pokhari - The Pond of the Witness

http://www.sahajvidya.freeuk.com/jsmsy Excerpts of Mother's talks

http://www.shrimataji.net Rare photographs of Puja and other photographs

http://www.sahajayoga.es/uma/ Promised land of Spain

http://sahasrara.nirmala.info/ Sahaja Yoga contacts and other related information

http://www.divinecoolbreeze.com/ (Divine Cool Breeze Magazine)

http://www.sahajayoga.ca/newsletter/index.htm (Shaja path Newsletter)

http://www.sahajayogaradio.org/ (Radio)

http://www.sahajahealthcentre.com/ (International Health Center)

http://www.sahajaworldfoundation.org (World foundation)

सहजयोग परियोजनाएं एवं प्रकाशित पुस्तकें

1970 से सहजयोग विकास प्रक्रिया में एकत्र की गई सम्पदा की यह पूर्ण सूची नहीं हैं परन्तु यह विश्व के कोने-कोने में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा अन्य प्रकाशनों (जिनकी सूचना विशाल सामूहिकताओं से मिल पाई है) का संकलन करने का प्रयत्न मात्र है। सम्भवतः इनमें से कुछ पुरानी पुस्तकें अभी भी उपलब्ध हों, और हो सकता है कि कुछ अब उपलब्ध न हों। इस सूची का लक्ष्य साहित्य अध्ययन की सिफारिश भी नहीं है। इसका उद्देश्य तो सहजयोग में किए गए कार्यों का स्मरण करवाना है। इसमें श्रीमाताजी द्वारा आशीर्वादित कविताएं लेख और पुस्तकें सम्मिलित हैं।

★ सहज साहित्य से सम्बन्धित परियोजनाएं

विश्व भर में भिन्न धर्मों के ग्रन्थों तथा पुरालेखों के संकलन को ध्यान में रखते हुए, विश्व सामूहिकता के हम सभी सहजयोगियों के लिए आवश्यक है कि परम पूज्य श्रीमाताजी के चरणकमलों में नतमस्तक हो कर सामूहिक रूप से प्रार्थना करें कि परमेश्वरी माँ के शब्दों को अपने अन्तस में समेटे हुए सभी पुस्तकें और पुरालेख, भविष्य में इस सुन्दर विश्व में अवतरित होने वाली पीढ़ियों के लिए धरोहर के रूप में उपलब्ध हों। उनके प्रवचन विश्व के लिए मन्त्र सम हैं, यही हमारे वेद, पुराण और महान धर्म-ग्रन्थ बनेंगे। इनके माध्यम से पूरा विश्व श्री आदिशक्ति माता जी श्री निर्मला देवी के पृथ्वी पर अवतरण का साक्षी हो सकेगा।

इस दिशा में आरम्भ की गई परियोजनाओं के पीछे इच्छा एवं उद्देश्य ये था कि परमपूज्य श्री माताजी द्वारा अंग्रेजी में दिए गए अधिकाधिक प्रवचनों को शुद्धतापूर्वक प्रतिलिखित किया जा सके ताकि उपफल के रूप में एक महत्वपूर्ण स्रोत का सृजन हो जो शोधकर्ताओं, विद्या-विशारदों तथा उन देशों को उपलब्ध हो सके जो इन प्रतिलेखों का रूपान्तरण अन्य भाषाओं में करना चाहते हों।

परन्तु इस विस्तृत सूची में शोध-पत्रों तथा उन अन्य दस्तावेजों की सूची सम्मिलित नहीं है जो पहले ही पत्र-पत्रिकाओं और अखबारों में छप चुके हैं। साथ ही साथ समय समय पर प्रकाशित सहजयोग लेखों तथा शोधपत्रों की सूची भी बनाई जा रही है, इसे नकारा नहीं गया है।

★ अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग पुस्तक परियोजना (SWAN के अनुसार)

पृष्ठभूमि :

इस परियोजना को श्रीमाताजी ने वर्ष 2003 में स्वीकृति प्रदान की थी और उसी वर्ष सितम्बर माह से इस पर कार्य आरम्भ हो गया था।

उद्देश्य :

मुख्य धारा प्रकाशकों द्वारा परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी लिखित 10-11 पुस्तकों को प्रकाशित करवाना। आरम्भ में ये पुस्तकें daisyamerica LLC *द्वारा प्रकाशित की जाएंगी और बाद में प्रकाशन तन्त्र का विस्तार किया जाएगा।*

इस प्रकार सामान्य पाठक (जिनमें से बहुत से शायद कभी भी सहज गोष्ठी में भाग न ले पाएें) भी श्रीमाताजी की शिक्षाओं तथा अन्तर्दृष्टि तक पहुँच सकेंगे। बाद में यदि उनकी इच्छा होगी तो, यह ऐसे पाठकों को आत्म-साक्षात्कार का अनुभव पाने तथा सहज सामूहिकता से जुड़ने की योग्यता प्रदान करेगी।

विधि :

भिन्न देशों के सहजयोगियों की एक टीम ने श्रीमाताजी के अंग्रेजी भाषा में दिए गए ऑडियो और वीडियो टेपों में सुरक्षित प्रवचनों का सत्यापित प्रतिलेखन आरम्भ कर दिया है।

इन प्रतिलेखों से सम्पादकगण, दिए गए परामर्शों के अनुसार, निम्नशीर्षकों की पुस्तकों का संकलन करेंगे:-

1. ***सहजयोग परिचय***
2. ***द्वार प्रहरी - (अबोधिता एवं विवेक, श्री गणेश तथा भगवान ईसामसीह)***
3. ***स्वयं के गुरु किस प्रकार बनें (आदिगुरु दत्तात्रेय)***
4. ***शीतल अग्नि (कुण्डलिनी तथा आत्म साक्षात्कार)***
5. ***आन्तरिक संसार (सूक्ष्म तन्त्र एवं चक्र)***
6. ***अन्तरपरिवर्तन का अभ्यास (शुद्धिकरण तकनीक, सन्तुलन, ध्यानधारणा-विधि, अन्तर्अवलोकन)***
7. ***ज्योतित मस्तिष्क (बुद्ध, बौद्धमत और हँसा)***
8. ***प्रकाश पुंज (देवी-देवता)***
9. ***धर्मों का सौभाग्य तथा दुर्भाग्य (इस्लाम, ईसाईमत, हिन्दूधर्म, यहूदी धर्म)***
10. ***दैन नन्दिनी (श्रीमाताजी के प्रवचनों से उद्धरण)***

न्यूयार्क के अलेन व्हैरी (Alan Wheery) *इस परियोजना के निदेशक* (Director) *हैं, लन्दन, यू.के. के कैन विलियम्ज़*(Ken Williams) *मुख्य प्रबन्ध सम्पादक* (Managing Editor) *। श्रुति गुप्ता और एन. केपाजोली* (Ann Capazzoli)*, न्यूयार्क और आस्ट्रिया के अन्टोन ग्रेबमेयर* (Anton Grabmayer) *भी प्रबन्ध सम्पादक हैं और आरम्भिक प्रतिलेखन* (Transcription) *परियोजना में मिल कर जोड़ों* (Paris) *में कार्यरत योगियों का नेतृत्व कर रहे हैं।*

टीम के सदस्यों का ऐसा स्थापित सहजयोगी होना अनिवार्य है जिनमें सन्तुलन तथा हँसाचक्र के पर्याप्त गुण हों तथा जिन्हें सहज शब्दावली का भी आवश्यक ज्ञान हो। अंग्रेजी भाषा में, बिना किसी त्रुटि के, कार्य करने की योग्यता भी उनमें होनी आवश्यक है।

पूर्ण प्रतिलेखों से ये सम्पादक उपरोक्त विषयों को पूर्णत: समन्वित करके ऐसी पुस्तकें संकलित करेंगे जिन्हें वे पाठक भी पढ़ सकें, समझ सकें और आनन्द उठा सकें जिन्हें सहजयोग का बिल्कुल पूर्व-ज्ञान न हो। प्रकाशित होने से पूर्व सभी पुस्तकों का डेविड स्पायरो (David Spiro) *और ग्रेगोर डी कलबरमैटन* (Gregoire de kalbermatten) *को भेजना अनिवार्य होगा।*

इसका उद्देश्य परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी द्वारा अंग्रेजी में दिए गए अधिकाधिक प्रवचनों को शुद्धतापूर्वक प्रतिलिखित किया जा सके ताकि उपक्रम के रूप में एक महत्वपूर्ण स्रोत का सृजन हो जो शोधकर्ताओं, विद्या-विशारदों तथा उन देशों को उपलब्ध हो सके जो इन प्रतिलेखों का रूपान्तरण अन्य भाषाओं में करना चाहते हैं।

~~~~~~~~~~~~

Compiled Listing of Books/Compilation/Periodical in Sahaj World

	Name of Book	Author	Language
➻	Corruption–India's Enemy Within 2001	Sir C P Srivastava	English
➻	Bhrashtachar–Bharat ki Bhiteri Shatru (Hindi Version of Corruption) 2002	Sir C P Srivastava	Marathi/ Hindi
➻	Nirmalanjali	Prayer/ Song Book	Hindi/ Marathi
➻	Sahaja Yoga Songbook	Compilation	English
➻	Pushparpan	Compilation	Hindi
➻	Sahaja Pushpanjali 1995	compiled by Sushil Kejriwal(Songs)	Hindi
➻	Sahajamala (Book of Poems), 2000	Armaity H. Bhabha	English
➻	Sahaja Geetarpan 1995	compiled by Sushil Kejriwal(Songs)	Hindi
➻	Sahaja Yoga Geetanjali	Compiled book of songs (English, Hindi, Marathi)	English
➻	Sahaja Yoga Parichay Pustika	Compilation	Hindi, English, Marathi, Tamil, Telgu, Gujrati, Konkani, Bengali
➻	Sahaja Yoga The Unique Discovery	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	English
➻	Sahaja Yoga - A Guide for Parents, Teachers and Students	Helga Fein	English
➻	Mantra Folder	Compilation	English
➻	The Joy of Spreading Sahaja Yoga 2013	Excerpt from Speeches of Shri Mataji Nirmala Devi	English,
➻	Sahajayoga Prachar-Prasaracha Anand 2013	Excerpt from Speeches of Shri Mataji Nirmala Devi	Marathi
➻	Sahajayoga Prachar-Prasar ka Anand 2013	Excerpt from Speeches of Shri Mataji Nirmala Devi	Hindi
~~~~~~~~~~~~

➻ Divine Light Miracle Photographs of Shri Mataji 1998	Geoffrey Godfrey and R K Pal	English
➻ The Divine Mother 1008 Photographs of Shri Mataji The Great Guru, 2000	Geoffrey Godfrey	English
➻ Islam Enlightened, 1998	Javed Khan	English
➻ The Light of the Koran Knowledge through Sahaja Yoga 1998	Flore Descieux, Transl: Caroline Mc Carthy	English
➻ Geeta Enlightened, 1986	Yogi Mahajan	English
➻ Bible Enlightened – Religions and Yoga (Vol. First, Second and Third), 2003	Dr. Dan Costian	English
➻ Music and Sahaja Yoga, 1997	Dr. Arun Apte and	English
➻ Sahaja Yoga 1991 (English) 1998 (Hindi) Marathi	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	English/Hindi Marathi
➻ Sahaja Yoga Research and Health Centre	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	English
➻ Sahaja Yoga : A Jungian Approach	Jose Antonio	English
➻ Education Enlightened – A Guide for Schools	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	English
➻ Prabodhit Shiksha – Vidyalayon ke liye Margadarshak	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	Hindi
➻ Prabodhit Shikshan – Shaleya Margadarshak	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	Marathi
➻ Meta Modern Era 1996, 2007	H.H. Shri Nirmala Devi	English Russian
➻ Para Aadhunic Yug (Hindi Version of Meta Mordern Era) 2000	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	Hindi
➻ My Memories, 2000	Babamama (H.P. Salve)	English
➻ Mere Sansmaran (Hindi Version of My Memoirs) 2002	Babamama (H. P. Salve) Translation. O.P Chandna	Hindi
➻ Sahaja Yoga Prakritik Jadi Bution Dwara Rog Niwaran	Compilation - Booklet	Hindi
➻ The Advent, 1979	Gregoire De Kalbermatten	English
➻ Avataran 2013	Gregoire De Kalbermatten	Hindi
➻ Legend of Dagad Trikon, 2005	Fiction Gregoire De Kalbermatten	English

➻	L'Avenement (French edition of The Advent) 1985	Trans: Lotus heart	French
➻	El Advenimiento (Spanish edition of The Advent) 1994	Gregoire De Kalbermatten	Spanish
➻	The Third Advent, 2003	Gregoire De Kalbermatten	English
➻	Jail Break	Yogi Mahajan	English
➻	Miracles of God		English
➻	The Search for the Divine Mother 1997	Gwennael Verez	English
➻	Eternally Inspiring Recollection of our Holy Mother. Vol-I (Stories from India)-2006 Vol-II (Stories from Western Europe)-2007 Vol-III (Stories from East Europe, Middle East)-2007 Vol-IV (Australia, New Zealand & S.E. Asia)-2007 Vol-V (Stories from The Americas)-2007 Vol-VI (United Kingdom)-2008 Vol-VII, Part 1 Vol-VII, Part 2 Vol-VIII	Compilation (Linda Williams)	English
➻	Param Pavni Maa ki Shashwat Prerak Anusmrutiyan Vol-I (Stories from India) Vol-II (Stories from Western Europe) Vol-III (Stories from East Europe, Middle East) Vol-IV (Australia, New Zealand & S.E. Asia) Vol-V (Stories from The Americas)	Compilation (Linda Williams)	Hindi
➻	Keys of Wisdom, 2006	Fiction (Linda Williams)	English
➻	Cooking With Love - Divine Recipes 2003	Recipes of H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	English Russian
➻	Annapurna - Divine Recipes	Recipes of H.H. Shri	Hindi
➻	Lal Bahadur Shastri – A Life of Truth in Politics, 1995, 2007	Sir C.P. Shrivastava (Russian trans: Mr. Firsov)	English Russian
➻	Lal Bahadur Shastri – Rajniti Mein Satyanistya Jivan, 2000 (Hindi version)	Sir C.P. Shrivastava (Trans: Shankar Nene)	Hindi
➻	Navaratri Talks (Nine Nights of Worship) —Pune 1988, 2002	Talks of H.H. Shri Mataji on Navaratri 1988, Pune	English
➻	Navaratri Pravachan— Pune 1988 (Hindi Version) 2003	Talks of H.H. Shri Mataji on Navaratri 1988, Pune	Hindi

➻	Medical Science Enlightened New Insight into Vibratory Awareness for Holistic Health Care, 1993	Professor Dr. Umesh C. Rai, M.D.	English
➻	The Ascent	Yogi Mahajan	English
➻	Utthan (Hindi Version of The Ascent) 1994	Yogi Mahajan translation by CL Patel	Hindi
➻	Realized Saints	Yogi Mahajan	English
➻	Sufi Odes to Divine Mother	Yogi Mahajan	English
➻	Great Women of India	Yogi Mahajan	English
➻	The Face of God	Yogi Mahajan	English
➻	Parmatma Ka Swaroop	Yogi Mahajan	Hindi
➻	Ishwarache Darshan	Yogi Mahajan	Marathi
➻	Tenth Incarnation	Yogi Mahajan	English
➻	Shri Kalki	Yogi Mahajan	English
➻	The Last Judgement	Yogi Mahajan	English
➻	New Millenuim Fulfills Ancient Prophecies	Yogi Mahajan	English
➻	Nav Sahasrabdi (Hindi Version of New Millenuim Fulfills Ancient Prophecies) 2000	Yogi Mahajan translation by O.P. Chandna	Hindi
➻	Navin Sahasrakat Prachin Bhavishyavanya	Yogi Mahajan	Marathi
➻	Unique Discovery	Booklet	English
➻	Divine Knowledge through Vibrations 1992	P. T. Rajasekharan & R. Venkatesan	English
➻	A Collection of Prayer and Praise—Sahaja Yoga, 1990	Compilation	English
➻	Sahaja Yoga Puja Book 1990	French Compilation– From Le Puja	English
➻	Sahaja Yoga Mantra Book 1989 (Nirmal Vidya)	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	English
➻	Prayers, Praises and Protocol to Her Holiness Shri Mataji Nirmala Devi	Collection	English
➻	Come the Mother Calls— A Tribute of Love to Shri Mataji Nirmala Devi	Compilation	English
➻	Children in Sahaja Yoga 1991	Compilation	English
➻	Cabella 94 (photographs by Michael Markl, Vienna) 1995	Compilation—printed by Adolf Holzhausens Nfg., Vienna	English

➻ Nirmal Dham— A Project of H.H. Shri Mataji Nirmala Devi Foundation	Compilation Souvenir	English
➻ Grace	Compilation	English
➻ Sant Kabir Aur Sahaja Yog, 1999 (Ek Vaigyanik Drishti)	R.R.Singh	Hindi
➻ Shri Ganesha Puja 1999	Compilation- Souvenir	Hindi/English
➻ The Age of Ascent	Compilation- Souvenir	English
➻ Vibrations, 2000	Compilation- Souvenir	English
➻ Shiva Tattwa, 2000	Compilation	English/ Hindi
➻ Birthday Messages		
➻ Health, Peace, Morality Culture "East-West" (9th. All Russian Scientific and Practical Conference) 9-10 June, 1998	Compilation Moscow, Russia	English/ Russian
➻ A Seeker's Journey – Searching for Clues to Life's Meaning, 1995	Greg Turek , Australia	English/French Russian German, Chinese
➻ Actualise Your Self-Realization	Edwin Hou	Chinese
➻ Sahaja Yoga Meditation Beginers Guide	Kwong Ming Wai	Chinese
➻ Nirmal Fragrance, 2005, 2006, 2008 2013	Compilation (Rabi Ghosh)	English
➻ Nirmal Surabhi, 2006, 2007, 2013	(Translation of Nirmal Fragrance By O.P.Chandna)	Hindi
➻ Children in Sahaja Yoga 2007		Russian
➻ Marriages in Sahaja Yoga 2007		English
➻ Raising Children in Sahaja Yoga	Compilation	English
➻ Men & Women in Sahaja Yoga	Compilation	English
➻ The Light of the World	Compilation	English
➻ Hope, Faith and Love "The Road to God"	Vladimir Mikhanovsky	English
➻ Journey Within		English
➻ Navaratri 2010 Booklet		English
➻ Shri Krishna Puja 2009 Booklet		English
➻ Medical A-Z		English
Periodicals and Magazines		
➻ Akashwani Volume I	Yuva Shakti, bound	English
➻ Akashwani Volume II	Yuva Shakti, bound	English
➻ Anant Jeevan, 1979-1980		English/ Hindi

➻ The Divine Cool Breeze USA, 1987-2005 English		
➻ Chaitanya Lahiri		Hindi
➻ The Divine Cool Breeze, India		English
➻ Yuvadrishti		English/ Hindi
➻ Hermes		Germany
➻ The Knowledge of Reality		
➻ The Life Eternal		English/ Hindi
➻ Maha Avatar, 1980		English/ Hindi
➻ Nirmala Yoga, 1981-1985		English/ Hindi
➻ Sahaj Amrit		English
➻ Open Heart		English
Books and Studies by Sahaja Yogis		
➻ Know Thyself	Calin Costian	English
➻ Sahaja : An Introduction to Shaja Yoga	Christopher Greaves	English
➻ La beaute' de l'e'trehumain	Olivier Ibanez	English
➻ Silence Your Mind	Ramesh Manocha	English
➻ Enlightened Sufis	John Noyce	English
➻ Exploring Early Christian and Gnostic Texts	John Noyce	English
➻ Sahaja Studies	John Noyce	English
➻ Saints, Sufis and Yogis : A Biographical Dictionary of Realised Souls	John Noyce	English
➻ Seeking and Finding : a sourcebook of historical texts on kundalini, yoga, realisation, Sahaja & nirvikalpa samadhi	John Noyce	English
➻ Visions and Prophecies of the Divine Feminine : a sourcebook of historical texts	John Noyce	English
➻ The Wisdom Tradition	John Noyce	English
➻ An Experiential Treatise on Sahajayoga	V.N.Phadke	English (from Marathi)
➻ Meditation	Nigel Powell	English
➻ Sahaja Yoga-The secret to Self-unfoldment and Transformation	Saraswati Raman	English
➻ Expecting to fly : In search of the Spirit	Patrick Sheridan	English German translation
➻ Thr Truth About Kundalini	Udo Szekulics & Mala Rao-Szekulics	English

➻ ASeeker's Journey	Greg Turek	English
➻ The Search for the Divine Mother	GwenaelVerez	English
Poetry and Fiction by Sahaja Yogis		
➻ The Legend of Dagad Tikon	Gregoire de Kalbermatten	English
➻ Proceed-Haiku collection	Dragos Ionel	English
➻ Simple Poems	Dragos Ionel	English
➻ The Final Act	Derek Johannesen	English
➻ Journey into Spirit	Paul Keetley	English
➻ Let Our Spirits Run Free	Yogi Mahajan Pragya M.Pradhan	English
➻ The Quest of the Sparrows	Kartik Sharma Ravi Nirmal Sharma	English
➻ The Awakening of Navi Septa - 1 The Keys of Wisdom	Linda Williams	English
➻ The Awakening of Navi Septa - 2 The Mountain Mouse	Linda Williams	English
➻ The Awakening of Navi Septa - 3 The Swarm of Bees	Linda Williams	English
➻ Beyond all doubt is Jerusalem The Golden City	Nick Burrin	English
➻ Sahaja	Christopher Greaves	English
Books for children by Sahaja Authors		
➻ Nirmala's Story	Radha Cody Alia Einstein Diez	English
➻ The Chalk Giant	Christopher Greaves	English
➻ Alicia and Little Star	Dragos Ionel Richard Payment	English
➻ Alicia and White Angel	Dragos Ionel	English
➻ Kids are from Heaven	Dragos Ionel	English
➻ The Snow Man who was cold	Sia Reddy Ulrike Brokoph	English
➻ Oakee Doakee and the Ego	BombEdward Saugstad	English
➻ Oakee Doakee and the Hate	WaveEdward Saugstad	English
➻ Coloring Book of Deities	Sona Agarwal	English
➻ Sahaja Children's Colouring Book	Sarita Keatley	English
➻ Qualities and Chakras Paintbook	BombEdward Saugstad	English

विश्व निर्मल धर्म

परमात्मा क्यों चाहते हैं कि आप उन्हें पहचानें? क्योंकि आपमें वे अपना प्रतिबिम्ब देखना चाहते हैं। इसीलिए उन्होंने आपका सृजन किया है और वे आपमें अपना प्रतिबिम्ब देखना चाहते हैं। देवी के साथ भी ऐसा ही है, उन्होंने आपको आत्मसाक्षात्कार दिया है क्योंकि वे आपमें अपना प्रतिबिम्ब देखना चाहती हैं। अत: उस प्रतिबिम्ब के लिए जो अत्यन्त पावन, सुन्दर, स्नेह एवं करुणामय है, और सर्वोपरि, विवेक से परिपूर्ण है, आपको स्वयं को तैयार करना होगा।

(परम पूज्य श्रीमाताजी, कबेला, इटली 20.08.2000)

सम्पूर्ण विश्व में सहजयोग

ध्यान मूलम गुरुर मूर्तिम
पूजा मूलम गुरू पदम्
मंत्र मूलम गुरू वाक्यम
मोक्ष मूलम गुरू कृपा

श्रीमाताजी का विश्व को संदेश

गुरूपूजा, कबेला, इटली२००८

सभी सहजयोगियों के लिए आज एक महान दिन है। क्योंकि आपके भीतर सहस्रार खुला, आप सब परमात्मा के अस्तित्व को महसूस कर पाए। केवल यह कहना काफी नहीं था कि परमात्मा है तथा यह कहना कि परमात्मा नहीं है, ये गलत है, बहुत गलत है तथा इस प्रकार की बातें कहने वालों को कष्ट उठाने पड़े। केवल साक्षात्कार लेने के पश्चात् ही आपको ज्ञान होता है (जान जाते है) कि परमात्मा है तथा चैतन्य लहरियाँ हैं। संपूर्ण विश्व में यह एक महान शुरुआत है। आज इसी कारण में आपसे कहती हूँ कि यह आपके लिए महानतम दिनों में से एक दिन है।

आप में से बहुत से लोगों ने अपनी हाथों पर तथा मस्तिष्क में से शीतल लहरियों का अनुभव किया है। कुछ लोगों ने सहजयोग में प्रगति की है और कुछ लोग अभी भी पीछे ही हैं। कुछ लोग अभी तक अपनी पुरानी पकड़ों के साथ चल रहे हैं। किंतु अब मुझे कहना है कि आपमें से बहुत से लोग गुरु-अर्थात शिक्षक बन सकते हैं। तथा आपको एक गुरु की भाँति आचरण करना होगा। एक शिक्षक की रूपान्तर के लिए आप को सहजयोग का ज्ञान होना चाहिए। और उसका अनुभव भी पूर्णतया होना चाहिए और उसके अनुसार बर्ताव भी करना चाहिए, इसके बाद आप महान गुरू बन सकते हैं। यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, एक गुरू के लिए बहुत समझदारी भी।

सर्वप्रथम आपमें कोई अहंकार नहीं होना चाहिए। आपके किसी भी चक्र में कोई पकड़ नहीं होनी चाहिए। आपको हर समय पूर्ण रूप से स्वच्छ बने रहना होगा। तथा आपके दोनों हाथों से चैतन्य लहरियाँ बहती रहनी चाहिए। यदि लहरियाँ एक हाथ से आ रही हों तथा दूसरे हाथ से नहीं तो आप एक गुरू नहीं बन सकते। अतः आपको एक परिपूर्ण सहजयोगी बनना होगा, केवल तथी आप एक गुरू बन सकते हैं।

और आपमें से कई लोग बन सकते हैं पर आपको पहले पता लगाना होगा, क्या आप गुरू बनने के लायक हैं, अथवा नहीं ? विनम्रता से आप समझ जाएंगे। जो यह सोचते हैं कि वे गुरू बन सकते हैं, उन्हें गुरू बनना चाहिए, क्योंकि अब मैं एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा नहीं कर सकती और आपको मेरा कार्य करना होगा, जो कि लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्रदान करना है। किंतु उसके लिए आपको सामूहिक रूप से आत्मसाक्षात्कार प्रदान कर सकते हैं तभी आप एक गुरू बन सकते हैं।

आप मेरी फोटाग्राफ का उपयोग कर सकते हैं, किंतु साक्षात्कार फोटो से नहीं बल्की आपसे होना चाहिए। केवल तभी आप गुरू बन सकते हैं। वे महिला हों अथवा पुरूष, दोनो

ही गुरू बन सकते हैं और हर जगह सहजयोग को फैला सकते हैं। मेरे संपूर्ण यात्रा कार्यक्रम में कनाड़ा छूट गया तथा मैं आपसे अनुरोध करती हूँ कि आपमें से कुछ लोग कनाड़ा जाएं क्योंकि यह एक बेहद खूबसूरत जगह है तथा वहाँ पर बहुत सुन्दर सहजयोगी जन हैं। आप लोगों को अब मेरा कार्य करना है। मैं हर जगह नहीं जा पाऊँगी किंतु आपको दूसरे देशों में जाना होगा तथा नए सहजयोगी बनाने होंगे। आप यह कर सकते हैं।

आरम्भ में आप मेरी फोटोग्राफ का उपयोग कर सकते हैं, किंतु बाद में नहीं। आपको केवल फोटोग्राफ को वहाँ रखना है। आप अपनी शक्तियों का प्रयोग करें तथा आत्मसाक्षात्कार प्रदान करें। आप यह कर सकते हैं तथा इस प्रकार हम सहजयोग को पूरे विश्व में फैला सकते हैं। अब तक मैंने इस कार्य में कोई कसर नहीं छोड़ी, किंतु मुझे नहीं लगता कि अब मैं और अधिक यात्रा कर पाऊँगी। अतः मैं आप से कह रही हूँ कि आपको इसकी जिम्मेदारी ले लेनी चाहिए और ये कार्य करना चाहिए। (आप अवश्य इसे कर सकते हैं।) इसका अर्थ यह नहीं कि आप मुझे हटा दें-नहीं, कदापि नहीं। मैं आपके साथ हूँ। तथा जहाँ भी आप कार्य करें, वहाँ आप मेरी फोटोग्राफ को स्थापित करें। किंतु आत्मसाक्षात्कार आपको ही प्रदान करना होगा तथा सामूहिक साक्षात्कार प्रदान करने का प्रयास करें। अगर वे इस तरह से कार्यान्वित नहीं हो रहा है तो जान लें कि आप गुरू नहीं हैं। यदि आप सामूहिक आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं, केवल तभी आप गुरू हैं अन्यथा आप नहीं हैं।

मैंने कहा कि आप मेरे फोटोग्राफ का उपयोग कर सकते हैं, किंतु लोगों को साक्षात्कार आपको ही देना होगा। यह एक गुरू होने का लक्षण है। तब आपको ज्ञात होगा कि कौन से भिन्न केन्द्र हैं तथा लोगों में क्या कमियाँ हैं। मैंने बहुत स्पष्ट रूप से बता दिया है। इसी प्रकार, आप पाएंगे कि जो साक्षात्कार के लिए आते हैं, उनमें कुछ दोष हैं तथा उनमें कौन से चक्र पकड़े हैं। उन चक्रों को शुद्ध करना आपको आता है, अतः आप उन्हें बताएं कि कैसे शुद्ध करना है।

अब आप सहजयोग में पारंगत हो गए हैं, इसलिए अब आपको पता होना चाहिए कि क्या (युक्ति) करना है। यदि आप सोचते हैं कि आप पारंगत हो गए हैं, यदि आपको विश्वास है कि आप पारंगत हो गए हैं, तो फिर आप गुरू बन सकते हैं। किंतु सर्वप्रथम आप पता लगाएं तथा स्वयं जाँचे कि क्या आप एक गुरू हैं अथवा नहीं। आपकी यह जिम्मेदारी है कि अब आप लोगों को साक्षात्कार प्रदान करें और आप प्रदान कर सकते हैं अगर आपमें लहरियाँ हैं, जैसी एक गुरू में होनी चाहिए। अथवा ये महिलायें भी कर सकती हैं, उन्हें गुरूई कहते हैं, न कि गुरू, अपितु गुरूई। किंतु उन्हें भी गुरू कहा जा सकता है तथा वे भी इस कार्य को बहुत अच्छे ढंग से कर सकती हैं। फिर लोगों की समस्याओं को दूर करना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा। यह एक बहुत बड़ी शक्ति है जो आपने प्राप्त की है। आप सब को इसे इस्तेमाल करना चाहिए।

सहजयोग किस प्रकार बढ़ेगा-

सबसे पहले, यदि आप चाहें तो एक समूह का प्रयोग कर सकते हैं तथा बाद में आप इसे व्यक्तिगत रूप से करें। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं, आप सभी कि आप गुरू बन जाएं तो संपूर्ण विश्व में कितने सहजयोगी हो जाएंगे ? जो कुछ भी आप सिखाएं, आप अवश्य आचरण में लाएं। जो व्यक्ति शराब पीता हो वह कभी भी एक गुरू नहीं बन सकता। जो व्यक्ति इश्कबाज़ है तथा जिसका जीवन लम्पटपूर्ण है वह कभी भी एक गुरू नहीं बन सकता। अत: पहले स्वयं को परखें, क्या आप शुद्ध हैं या नहीं ? यदि बहुत से बाधित लोग गुरू बनने का प्रयत्न करें, वे कभी भी नहीं बन सकते। ईमानदारी से फोटोग्राफ के सम्मुख जाँचे कि आप बाधित हैं, फिर आप एक गुरू नहीं हो सकते।'

अत: अब गुरू बनने के लिए स्वयं की आलोचना करें, स्वयं को पूर्ण रूप से जानें फिर एक गुरू बन सकते हैं। मैं किसी को व्यक्तिगत रूप से नहीं बताना चाहती हूँ, किंतु आप सभी पता लगा सकते हैं। मान लें, चार-पाँच लोग आपस में मिलें तथा वे एक दूसरे से पता लगाएं कि क्या वे ठीक हैं या नहीं, क्या कोई कमी है, क्या वे पकड़े हुए हैं। किंतु यदि वे कह दें कि आप ठीक हैं, फिर आप गुरू बन सकते हैं तथा आप सहजयोग का प्रचार कर सकते हैं। यह आपकी जिम्मेदारी है। इस प्रकार सहजयोग बढ़ेगा। अन्यथा, मेरे अलग हो जाने के बाद अथवा मेरा कहीं न जाना, इस कारण से सहजयोग व्यर्थ हो जाएगा। अत: यह आप पर है कि आप मशाल, प्रकाश को थामें। अब यह आपकी जिम्मेदारी है। आपने अपने साक्षात्कार को प्राप्त कर लिया है। मैंने जिम्मेदारी के साथ जन्म लिया था। मैंने पूर्ण समझ के साथ जन्म लिया था। तथा इस समय आपको स्वयं को समझना होगा। जब तक कि आप स्वयं को साक्षात्कार प्रारंभ नहीं कर लेते, तब तक स्वयं को मत कोसें। परंतु सतर्क रहें। अहंकारी मत बनें। आपको बहुत ही विनम्र होना होगा, सब के साथ बहुत विनम्र। तथा इसे कार्यान्वित करें, क्योंकि यदि वे साक्षात्कारी आत्माएं नहीं हैं, आप उन्हें निकम्मा नहीं ठहराएं, अपितु धैर्यपूर्वक तथा मधुरता से उन्हें कहें कि 'आप ठीक नहीं हैं।' उन्हें बताएं कि किस प्रकार ध्यान करें, कैसे सुधार लाएं। वइ इस समय एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी हैं। वास्तव में, मैंने यह कार्य किया है तथा आप भी इस कार्य को कर सकते हैं।

अत: आप सबको गुरू बनना होगा। यह गुरूपूर्णिमा का दिन है तथा मैं आपको आशीष देती हूँ कि आप सभी गुरू बन जाएं। जो भी आपने अब प्राप्त किया है, इसे बर्बाद मत होने दें, इसे गँवा न दें, अपितु इसे लोगों की भलाई के लिए इस्तेमाल करें। यदि आव चाहें, शुरू में, चार-पाँच लोग इक्ट्ठा हो जाएं, फिर आप अलग हो जाएं। आपको इसके लिए समय देना होगा। आपने अपना साक्षात्कार प्राप्त किया है, किंतु आपको साक्षात्कार देना होगा अन्यथा आपकी स्थिति ठीक नहीं है, सामान्य नहीं है।

अत: आज मैं आपको कहना चाहती हूँ कि एक गुरू के लिए कौन से गुणों की

आवश्यकता है। सर्वप्रथम, उसे एक निर्लिप्त व्यक्ति होना पड़ेगा। इसका अर्थ ये नहीं कि आप अपना परिवार या कोई चीज़ छोड़ दें, किंतु आपमें एक निर्लिप्त मनोवृत्ति होनी चाहिए, कि आपके परिवार में कोई गलत काम करे तो आप उससे दूर जो जाएं।

खुशियाँ फैलाने के लिए:-

दूसरी बात, अपने साक्षात्कार के माध्यम से आप समझ सकते हैं कि आप खुशियाँ फैला सकते हैं तथा उनकी समस्याएं सुलझा सकते हैं। जो भी कुछ मैंने किया है वह आपने देखा है- आप यह कर सकते हैं। आपके पास करने की शक्ति है, लेकिन आपको ज़रा भी पाखण्ड नहीं, कोई पाखण्डी नहीं होना चाहिए, अन्यथा आप सहजयोग का काम खराब कर देंगे।

अत: यदि आप स्वयं के बारे में आश्वस्त हैं, तभी आप गुरू बनें तथा सहजयोग का कार्य करें। मैं मानती हूँ मैं आपको अपना सम्पूर्ण आशीष प्रदान करती हूँ तथा मेरा पूरा समर्थन कि आप जिम्मा लें और गुरू बनें। आप सभी पूजाएं भी करवा सकते हैं फिर आप फोटोग्राफ का उपयोग कर सकते हैं। आपने यह समझा है कि इसे किस प्रकार कार्यान्वित करना है। तथा यदि किसी व्यक्ति में कुछ दोष है अथवा चक्र पकड़े हैं तो आप उस व्यक्ति को बताएं कि कैसे इसे ठीक करें-फोटोग्राफ के सम्मुख सबसे अच्छा रहेगा तथा बहुत विनम्रता से आप उन्हें बताएं कि क्या करना है। तथा आप सभी लोगों को बचा सकते हैं।

अत: मैं उपलब्ध नहीं हूँ- मेरे हिसाब से मैंने भरपूर कार्य किया है तथा मैं सोचती हूँ कि मैं इसे पूरा नहीं कर सकती। मेरी वृद्ध आयु की वजह से नहीं, परंतु मैं आपको सहजयोग फैलाने की एक संपूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना चाहती हूँ। आपने इसे नि:शुल्क प्राप्त किया है तथा आपको भी लोगों को इसे नि:शुल्क प्रदान करना होगा, उनसे पैसा नहीं लेना है, या केवल पूजाओं के दिन ही ले सकते हैं। सतर्क रहें कि जब तक आपकी पुष्टि न हो जाएं तथा आप विश्वस्त न हो जाएं कि आपने कम से कम सौ सहजयोगी, अच्छे सहजयोगी बना लिए है, फिर वे आपकी पूजा भी कर सकते हैं। किंतु सबसे अच्छा होगा कि आप प्रतीक्षा करें तथा देखें। जब तक कि आपमें से हर एक ने एक हजार लोग न तैयार कर लिए हों तब तक आप पूजा के चक्कर में न पड़ें। इसके बाद आपको पूजा का अधिकार है। किंतु जब तक आप पूर्णरूप से ठीक नहीं हो जाते आप मेरे फोटोग्राफ के द्वारा पूजा कर सकते हैं। आत्मविश्वास प्राप्त करना ही अब मुख्य बात है। स्वयं को दोष मत दें आप सभी साक्षात्कारी आत्माएं हैं, किंतु जिन्हें लगता है कि वे गुरू बन सकते हैं- वे बन सकते हैं तथा कोशिश करें। आपको साधकों के साथ धीरज से काम लेना होगा। आप क्रोधी एवं गुस्सैल नहीं हो सकते। जब तक वे आपको परेशान नहीं करते, आप अपना आपा न खोएं। आप शांत बने रहें।

अधिकतर गुरू गुस्सैल हैं या पूर्व में रहे हैं तथा इसी कारण मैं सोचती हूँ कि वे अपने क्रोध ा में व्यस्त रहें तथा कोई अच्छी चीज़ नहीं दे पाए। वे कभी भी साक्षात्कार नहीं दे पाए। अत: मुझे आपको सावधान करना है: अपने क्रोध को नियंत्रित करें। स्वयं को देखें क्या आप

क्रोधित होते हैं, फिर आप एक गुरू नहीं बन सकते। गुरू को एक प्रेममय व्यक्ति होना चाहिए, बहुत प्रेममय एवं समझदार। फिर आपको विनम्र होना होगा, न लोगों को अपशब्द कहें, न उन पर चिल्लाएं। यदि वे दुर्व्यवहार करें, आप उन्हें बाहर जाने के लिए कह सकते हैं, लेकिन चिल्लाएं नहीं। यदि आपको लगता है कि कोई व्यक्ति दुर्व्यवहार कर रहा है, आप उस व्यक्ति को बाहर जाने के लिए कह दें। लेकिन आपको उस व्यक्ति पर चिल्लाने अथवा गुस्सा करने की कोई जरूरत नहीं है।

अत: अब यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आपने अपना साक्षात्कार प्राप्त किया है, इसलिए लोगों को साक्षात्कार देने के लिए आप चार या पाँच लोग मिलकर एक सहजयोग टोली बनाएं, कोशिश करें। नि:संदेह, मेरा फोटोग्राफ वहाँ होगा लेकिन फिर भी आप अवश्य प्रयास करें। समझने का प्रयत्न करें कि अब आपकी जिम्मेदारी क्या है। यदि एक एक पद दिया गया है तो आपको सदैव उस पद की जिम्मेदारी का वहन करना होता है। ठीक इसी प्रकार, यदि आप गुरू बनते हैं तो आपके पास जिम्मेदारी की एक निश्चित मात्रा होती है कि शुरू में आपका खुद का आचरण बहुत अच्छा हो।

शुरुआत में आप उनसे नहीं कह सकते कि 'चर्च मत जाओ' या 'यज्ञ मत करो'। आप उन्हें साक्षात्कार दें तथा फिर आप उनसे बात कर सकते हैं। शुरुआत में, आप उन्हें नहीं बताएं अन्यथा वे आपको टालने लगेंगे। उन्हें उसी रूप में स्वीकार कर लें जैसे वह हैं। शुरुआत में, यदि सम्भव हो तो आप लोगों को रोगमुक्त भी नहीं करें। प्रारम्भ करते हुए आप मेरे फोटोग्राफ का उपयोग कर सकते हैं किन्तु उन्हें रोगमुक्त न करें। बाद में, जब आप आश्वस्त हों, तो चार-पाँच लोग मिलकर उस व्यक्ति का उपचार करें। रोगमुक्ति बहुत आसान नहीं है तथा आप पकड़े जा सकते हैं, अत: किसी पर कार्य करने से पहले आप बन्धन अवश्य लें। बन्धन बहुत अच्छा है। आपको यहाँ तक कि, बाहर जाने से पहले भी बन्धन लेना चाहिए।

यदि संभव हो सके तो आप एक अच्छा भाषण भी तैयार करें। अब आपको बहुत सारी बातें मालूम हैं तथा आप उनसे बात कर सकते हैं। यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

शक्ति तथा प्राधिकार

अब मैं वर्ष १९७० से कार्य कर रही हूँ तथा आज बहुत वर्षो तक मैंने कठिन परिश्रम किया है, अब मैं यह नहीं कर सकती। मुझे वापस लौटकर थोड़ा विश्राम करना है, जैसा सबने कहा है तथा आप भी मानेंगे। किंतु, यदि यह जरुरी हो तो, आप मेरे बारे में बता सकते हैं। किंतु मेरे फोटोग्राफ का उपयोग करें। वे जिन्हें लगता है कि वे अगुआ हो सकते हैं तथा गुरू के जैसे हो सकते हैं, उन्हें सबसे पहले अपनी चैतन्य लहरियाँ देखनी चाहिए। मेरे फोटोग्राफ पर ध्यान करें तथा पता लगाएं। आपको पूर्ण रूप से ईमानदार होना होगा कि आप शत प्रतिशत ठीक हैं तथा कोई पकड़ नहीं है फिर आप एक गुरू बन सकते हैं। आपको होना होगा। पहले हो सकता है आपको दो लोग मिलें, फिर तीन। मैंने पाँच लोगों से शुरुआत की थी। अत:,

आप अनुमान लगा सकते हैं कि व्यक्ति को इसके साथ कैसे चलना है। सबसे पहले दो, तीन, पाँच तथा अधिक से कोशिश करें। इसके बाद आप विज्ञापन भी कर सकते हैं। यदि आपने दस लोगों को साक्षात्कार प्रदान कर दिया है तो आप अपना संगठन या जो भी आप इसे कहना चाहें, भी शुरू कर सकते हैं। तथा इसे कार्यान्वित कर सकते हैं।

अब आपके साथ शक्ति है, आपके पास अधिकार है, किंतु आपमें एक तबियत भी होनी चाहिए। आरम्भ में, आपको बहुत धैर्यवान एवं दयालु –बहुत दयालु होना पड़ेगा। फिर धीरे-धीरे आपको मालूम होगा कि आप लोगों को रोगमुक्त भी कर सकते हैं। प्रारंभ करते हुए आप मेरे फोटोग्राफ का उपयोग कर सकते हैं तथा बाद में आप देखेंगे कि आप रोगमुक्त कर सकते हैं। सबसे पहले चैतन्य लहरियों पर, आप पाएंगे कि कौन से चक्र पकड़े हैं, कौन से ठीक हैं, कौन से खराब हैं। इसके बाद इन्हें ठीक करें। यदि कुछ गलत है तो आप इसे अवश्य ठीक करें इसके बाद गुरू बनें। यह मान लेने से कि 'मैं गुरू हूँ' आप गुरू नहीं बन जाते, किंतु आपका स्वयं पर बहुत, बहुत अधिकार होना चाहिए। आपको स्वयं को प्रारंभ में आप धनार्जन नहीं कर सकते। किंतु जब आपके पास लगभग तीन हजार लोग हों, आप सभी पूजा दिनों को मना सकते हैं तथा पूजा कर सकते हैं। किंतु आपमें से प्रत्येक कम से कम तीन हजार शिष्य अवश्य बनाएं। फिर आप पूजा के लिए कह सकते हैं। ऐसे कुछ लोग हैं जो कभी भी गुरू नहीं बन सकते। जो पकड़े हुए हैं तथा जिनमें समस्याएं हैं। यदि आपमें समस्याएं हो तो गुरू न बनें अन्यथा यह आपको प्रभावित करेगा। किंतु यदि आप सोचते हैं कि आप निर्मल हैं तथा खुले हुए हैं, फिर आप गुरू बन सकते हैं। क्या कोई प्रश्न है ?

मैं अंतर्राष्टीय सहजयोग के लिए एक केन्द्र खोल रही हूँ तथा जब आपने तीन सौ सहजयोगी बना लिए हों, आप उनसे पूजा करने के लिए कह सकते हैं तथा धन ले सकते हैं। इससे पहले, यदि आप कुछ धन प्राप्त करें तो उस केन्द्र पर भेज दें। उस केन्द्र में लगभग ग्यारह सदस्या होंगे तथा मैं यह घोषित करूंगी। यदि आपका कोई प्रश्न है तो अभी मुझसे पूछें।

पहले तीन सौ लोगों से आप कोई पैसा न लें। हॉल के सिवाय, लाऊडस्पीकर के सिवाय अथवा अन्य खर्चों के सिवाय। किंतु आप स्वयं के लिए कोई पैसा न लें। क्या अब आप दुबारा हाथ खड़े कर सकते हैं, कितने लोग गुरू होना चाहते हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

गुरुर ब्रह्मा गुरुर विष्णु
गुरुरदेवो महेश्वरः
गुरुर साक्षात् माताजी श्रीनिर्मला देव्यै
तस्मे श्रीगुरवे नमः

गुरू पूजा के बाद डब्ल्यू.सी ब्रदर्स के साथ की गयी बातचीत का सारांश

कबेला, इटली२००८

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *''..... ?'' (खुशी से हँसते हुए)*

श्रीमाताजी : *आपने क्या कहा ?*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *''..... ?''*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *माताजी, उनको क्या चाहिए ..... ?*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *हम रूस जाएंगे।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *वे रूस जा रहे हैं। (हिंदी में)*

श्रीमाताजी (हिंदी में) : *कौन रूस जा रहे हैं ?*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स (सब हिंदी में एक साथ जवाब देते हैं) : *सभी जा रहे हैं माताजी।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *माताजी, वहाँ साढ़े छः हजार लोग होंगे। दस दिन में वहाँ, तोलिगट्टी में साढ़े छः हजार रूसी और युक्रेनिअन योगी होंगे, आपके दर्शन के लिये।*

श्रीमाताजी (हिंदी में): *अब आप लोगों की जिम्मेदारी है।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जी, माताजी*

(थोड़ा रुक कर)

श्रीमाताजी : *मैं कहती हूँ कि आप ये जिम्मेदारी लें, पर आप मुझसे सम्पर्क कर सकते हैं। आप मुझे पत्र भी लिख सकते हो।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *हम ये करेंगे, माताजी।*

आप हर वक्त हमारे साथ हमारे सहस्रार पर हो।

आप हमारे सहस्रार में रहिये।

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *आप हर वक्त हमारे साथ सहस्रार में हैं।*

श्रीमाताजी : *(हँसती हैं और फिर कुछ हिंदी में बोलती हैं) गाड़ी कहाँ है ?*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *गाड़ी बाहर है।*

श्रीमाताजी : *आप लोगों ने केंद्रीय समिति बनानी चाहिए। केंद्रीय समिति चाहे लंडन में हो या यहाँ हो या जहाँ आप चाहें। एक केंद्रीय समिति और फिर आप उन्हें सूचित कर सकते हो कि क्या चल रहा है।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जी!*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *श्रीमाताजी, हमारे पास हैं।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *विश्व परिषद की तरह।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *माताजी हमारे पास परिषद है।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *परिषद की तरह!*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *हमारे पास परिषद है।*

श्रीमाताजी : *आपने बताते रहना चाहिए कि क्या चल रहा है। किसी केन्द्रीय समिति के पास पाँच लोग हाने चाहिए।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *संचार। संचार के लिए।*

श्रीमाताजी : *अहा...नहीं, नहीं! संचार के लिये*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जी माताजी!*

श्रीमाताजी : *मेरा मतलब है कि अगर कुछ समस्या या कुछ हो तो आप भाग ले सके....*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जय, श्रीमाताजी!*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *(सवाल हिंदी में) यहाँ पे? कबेला में? कबेला में बनाये?*

श्रीमाताजी : *क्या? (माताजी किससे इशारों में पूछती हैं कि यहाँ बनाने का क्या मतलब है डब्ल्यू.सी. का?)*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *समिति, परिषद ?*

श्रीमाताजी : *नहीं, कहीं भी बताओ।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जी, अच्छा जी!*

श्रीमाताजी : *यहाँ भी!*

श्रीमाताजी : *चार, पाँच ले लो।*

श्रीमाताजी : *यहाँ एक, भारत में एक बनाओ।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जय श्रीमाताजी!*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *प्रणाम श्रीमाताजी !*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जी, माताजी।*

श्रीमाताजी : *तो, कोई यहाँ समस्या है तो आप बताये हिंदुस्तान में!*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जी, श्रीमाताजी!*

श्रीमाताजी : *और फिर मुझे बताईये।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जी श्रीमाताजी, ये ठीक है।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *अब हम समझे, अब हम समझे!*

श्रीमाताजी : *आप आँखों में जरा काजल लगाईये। आप नहीं लगाते? बेहतर होगा कि आप लगाये। आप अधिक पढ़ते हो क्या?*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *मैं पढ़ता हूँ?...........इतना अधिक नहीं।*

श्रीमाताजी : *आपकी आँखें कुछ खराब हो रही हैं।*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *हाँ!*

श्रीमाताजी : *अब हम चलें?*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जय श्रीमाताजी!*

श्रीमाताजी : *आप सबको देख कर अच्छा लगा!*

डब्ल्यू.सी. ब्रदर्स : *जय श्रीमाताजी!*

श्री सहस्रार स्वामिनी श्री कल्की साक्षात्,
श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देवी

आज मैं आपको सहस्रार पर एक महत्वपूर्ण मंत्र बताने जा रही हूँ। आप इसे पीछे से शुरु करें।

अपना दायाँ हाथ मेरी ओर करें और अपने बायें हाथ को पीछे रखें, या यहाँ मध्य में रखें..... या फिर आप कह सकते हैं कि जहाँ पर बारीक फुहार की बिंदू है वहाँ।

(श्रीमाताजी, कुछ तैयारियों की सूचना मराठी में देती हैं और पानी मंगवाने का निवेदन करती हैं।)

इस अवसर पर श्रीमाताजी के सुझाव पर निम्नलिखित संस्कृत नामों का मंत्र उच्चारण किया जा रहा है-

मंत्र लघु रूप में:-

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्री (एक-एक करके नीचे दिये गये नाम) साक्षात् श्री निर्मला देवी नमो नमः।

श्री महागणेश
श्री महाभैरव
श्री महत् मनसा (Great Super Ego)
श्री महत् अहंकार (Great Ego)
श्री हिरण्यगर्भ
श्री सत्यसाक्षात
श्री महत् चित्त
श्री आदिशक्ति
श्री विराट
श्री कल्की
श्री सदाशिव
श्री अर्धमात्रा
श्री बिन्दू
श्री वलय
श्री आदिब्रह्मतत्व
श्री सर्वस्वास
श्री सहस्रार स्वामिनी
श्री मोक्षप्रदायिनी
श्री महायोगदायिनी

आभाराभिव्यक्ति

निर्मल सुरभि सुगन्धित फूलों का वो गुलदस्ता है श्रीमाताजी साक्षात् जिसके स्रोत एवं मंज़िल हैं। ये संकलन उस परमेश्वरी प्रेरणा का परिणाम है जिसे इन निर्मल पुष्पों को सजाने की कल्पना के समय से ही महसूस करता रहा ताकि सदैव ये अपनी दिव्य सुरभि बिखेरते रहें। दूसरी ओर ये संकलन सामूहिक प्रयास है क्योंकि शीतलता अपनी बात स्वयं कहती है। इस संचयन (संकलन) के माध्यम से प्रेम बाँटा गया है, और परमेश्वरी प्रेम 'पूर्ण' को प्राप्त करने के बारे में बताता है।

श्रीमाताजी कहती हैं, ''....... यह आपके अपने अन्दर सामूहिकता की भावना के विकास का प्रश्न है। इस प्रकार से आप ऐसे सामूहिक व्यक्ति बनते हैं जो सामूहिकता का आनन्द लेता है, सामूहिक रूप से कार्य करता है तथा सामूहिकता के साथ रहता है। ऐसे व्यक्ति में नई प्रकार की शक्तियाँ विकसित होती हैं। ये शक्तियाँ अत्यन्त सूक्ष्म हैं फिर भी हर अणु-परमाणु और मानव में कहीं पर भी प्रवेश कर सकती हैं। आपका स्वभाव यदि सामूहिक होगा केवल तभी इन शक्तियों का सर्वत्र प्रवेश सम्भव होगा। बिना पूर्णतः सामूहिक हुए आप वो बुलन्दियाँ प्राप्त नहीं कर सकते जो आज सहज-योग के लिए आवश्यक है।''

(20.7.1997 कबैला, इटली)

सुरभित करने वाली भिन्न सूचनाएं, कला-कार्य, फोटो-संचयन तथा अन्य अभिलेख, दस्तावेज, निःसन्देह, श्री-आदिशक्ति के विश्व भर में रहने वाले बच्चों का प्रेम है, जिन्होंने इस संकलन को इस रूप में लाने के लिए सम्पादन से लेकर पथ-प्रदर्शन तक का कार्य किया ताकि सभी सहजयोगी बच्चे इस दिव्य-सुरभि से सुरभित हो सकें। ''जब श्रीमाताजी स्वयं कारण एवं परिणाम हैं (Cause and the effects) *तो हम स्वयं को धन्यवाद नहीं देते, ''और वे (श्रीमाताजी) तो स्वयं कर्ता भी हैं और भोक्ता भी।'' फिर भी जिन भाई-बहनों के प्रेम एवं सामूहिक चित्त ने इस निर्मल संकलन में सुरभि प्रसारित करने में योगदान दिया है उनके प्रति कृतज्ञ एवं आभारी हूँ। परन्तु उससे पूर्व श्री आदि-शक्ति के हम सौभाग्यशाली बच्चे श्री.सी. पी. के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करना चाहेंगे। अत्यन्त कृपा करके उन्होंने इस संकलन के प्रथम संस्करण का विमोचन किया।*

भारत-	*वी.जे नालगिरकर*	*अजय के. शर्मा*
	आर.के. पुगलिया	*वीरेन्द्र वर्मा*
	ओ.पी. चान्दना	*डॉ. आर.के. मज़ारी*
	शान्तनु बैनर्जी	*जी एल अग्रवाल*
	मनोज कुमार	*आरमैती एच भाभा*
	डॉ. अरुण आप्टे	*डॉक्टर मधुर रॉय*
	कौशिक पंचाल	*महेश कुबाल*
	सी.एस. मिश्रा	*गौरव अग्रवाल*

	शैल जखमोला	*वैभव मित्तल*
	गुरदीप कौर	*डॉ. बी.एल. धर*
	सुरेश थैकर	*डॉ. आर.आर. सिंह*
	डॉ. दीपाली बन्दकर	*मुनीश पाण्डेय*
ऑस्ट्रिया	*टोनी ग्रैबमेयर*	
इंग्लैण्ड	*शकुन्तला तान्दले*	*लिन्डा विलियम्ज़*
आस्ट्रेलिया	*जॉन नोएस*	*जॉन दोबी*
न्यूजीलैण्ड	*पॉम मैथ्यू*	
मास्को	*मैक्सिम बेलेनिन*	
रूस	*एनास्टेसिया पौल्यूनिना*	
कनाडा	*रिचर्ड पेमेन्ट (वेनकूवर)*	*फेलिसिटी पेमेन्ट*
	गौतमा पेमेन्ट	*एडवर्ड सासडैड*
	आयोना पोपा (टोरोन्टो)	
पौलेण्ड	*हाना तर्कज़ियन –(जेलस्का)*	
हांगकांग	*एडविन हू*	

......तथा बहुत से अन्य भाई-बहन जिन्होंने निर्मल पुष्पों के गुलदस्ते के इस संकलन में अपना प्रेम-सहयोग प्रकट किया है, उन सबका आभारी हूँ। उनके पावन चित्त ने इस संकलन की सुगन्ध को बढ़ा दिया है। और भी बहुत से योगियों के प्रति हम अपना हार्दिक आभार प्रकट करना चाहेंगे, उन सबके प्रति जो भिन्न वैबसाइटों में संजोए अपने व्यक्तिगत अभिलेखों के सहज खजाने से अपनी अमूल्य सम्पदा प्रदान करके इस संकलन को लाने में माध्यम बने। पिछले दो संस्करणों में जिन त्रुटियों की ओर ध्यान नहीं गया था उन पर चित्त डालकर त्रुटियाँ सुधारने के कार्य में योगदान देने वाले भाई-बहनों के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट किया जाता है।

जय श्रीमाताजी

हमारी हार्दिक प्रार्थना है कि इस संकलन के माध्यम से की गई हमारी सामूहिक प्रार्थना, श्रद्धा एवं पूर्ण समर्पण परमपूज्य श्रीमाताजी अपने पावन चरण कमलों में स्वीकार करें।

रबि घोष, भारत
ghosh_rabi@hotmail.com

"....परमात्मा का धन्यवाद है कि मैं वैज्ञानिक नहीं हूँ, अन्यथा मेरा पूरा जीवन बम्ब बनाने में ही निकल जाता। परमात्मा का धन्यवाद है कि मैं मनोवैज्ञानिक नहीं हूँ अन्यथा पागलों को सुनते सुनते मैं स्वयं पागल हो गई होती। परमात्मा का धन्यवाद है कि मैं राजनीतिज्ञ नहीं हूँ, आप जानते हैं कि ये लोग कैसे होते हैं!

....परमात्मा का धन्यवाद है कि मैं इनमें से कुछ नहीं हूँ। मैं तो मात्र आप की माँ हूँ जो आपके लिए चिन्तित है — आपके परमहित (ultimate well being) *के लिए, सतही चीजों के लिए नहीं, पूर्णत: चिन्तित है।"* **(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी, कोवलम, केरल, भारत, फरवरी, 1979)**

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना पूर्व आज्ञा के इस पुस्तक के किसी भी भाग की प्रतिलिपि या किसी भी रूप में प्रसारण वर्जित है। कोई भी व्यक्ति अनधिकृत रूप से यदि इसका प्रकाशन करता है तो उस पर हानिपूर्ति का दावा किया जाएगा।

निर्मल सुरभि सुगन्धित फूलों का वो गुलदस्ता है श्रीमाताजी साक्षात् जिसके स्रोत एवं मंज़िल हैं। ये संकलन उस परमेश्वरी प्रेरणा का परिणाम है जिसे इन निर्मल पुष्पों को सजाने की कल्पना के समय से ही महसूस करता रहा ताकि सदैव ये अपनी दिव्य सुरभि बिखेरते रहें। दूसरी ओर ये संकलन सामूहिक प्रयास है क्योंकि शीतलता अपनी बात स्वयं कहती है। इस संचयन (संकलन) के माध्यम से प्रेम बाँटा गया है, और परमेश्वरी प्रेम 'पूर्ण' को प्राप्त करने के बारे में बताता है।

श्रीमाताजी कहती हैं

"... यह आपके अपने अन्दर सामूहिकता की भावना के विकास का प्रश्न है। इस प्रकार से आप ऐसे सामूहिक व्यक्ति बनते हैं जो सामूहिकता का आनन्द लेता है, सामूहिक रूप से कार्य करता है तथा सामूहिकता के साथ रहता है। ऐसे व्यक्ति में नई प्रकार की शक्तियाँ विकसित होती हैं। ये शक्तियाँ अत्यन्त सूक्ष्म हैं फिर भी हर अणु–परमाणु और मानव में कहीं पर भी प्रवेश कर सकती हैं। आपका स्वभाव यदि सामूहिक होगा केवल तभी इन शक्तियों का सर्वत्र प्रवेश सम्भव होगा। बिना पूर्णतः सामूहिक हुए आप वो बुलन्दियाँ प्राप्त नहीं कर सकते जो आज सहज–योग के लिए आवश्यक है।"

(20.7.1997 कबैला, इटली)

NITL